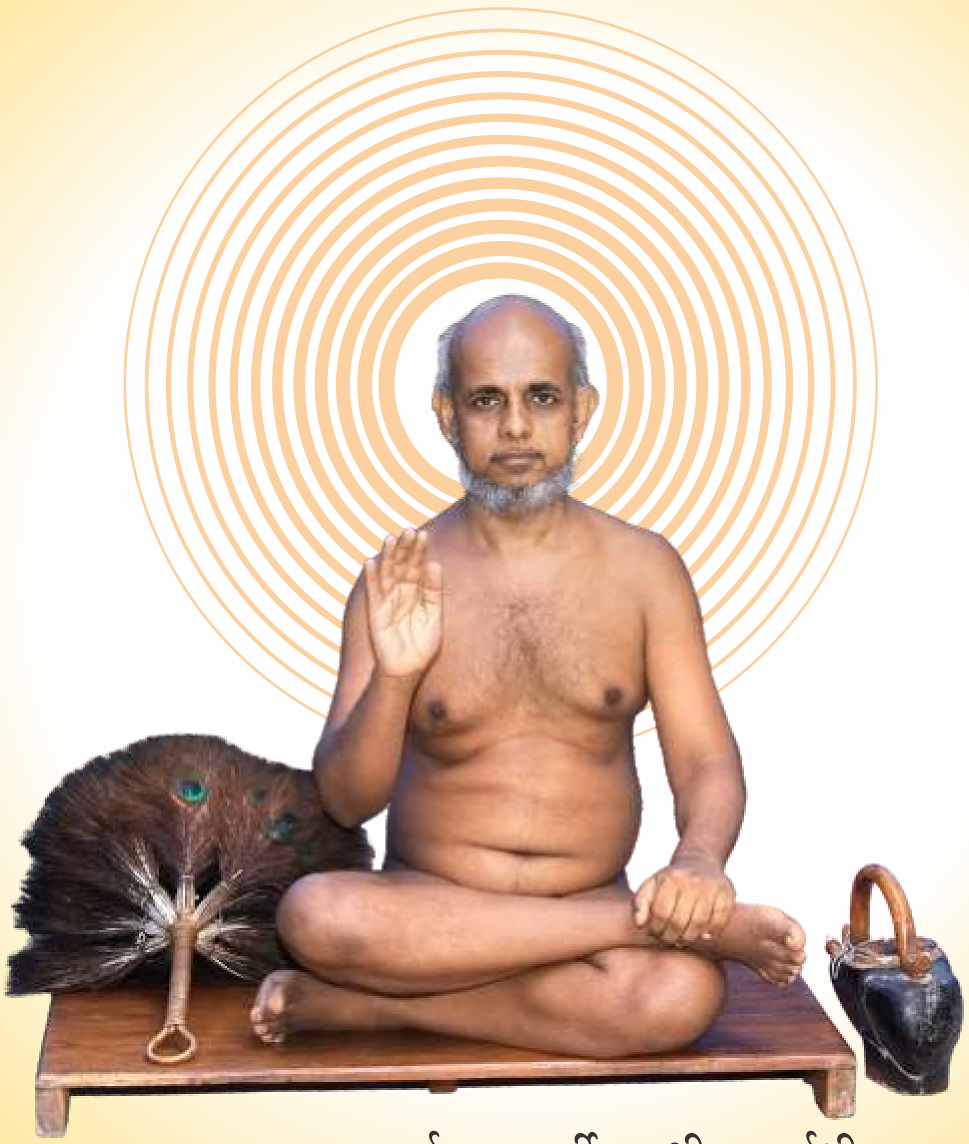

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

प्राकृत शब्दानुशासन

संकलनकार
त्रिविक्रमदेव

सम्पादक
परशुराम शर्मा

प्रकाशक :
जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर (महाराष्ट्र)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

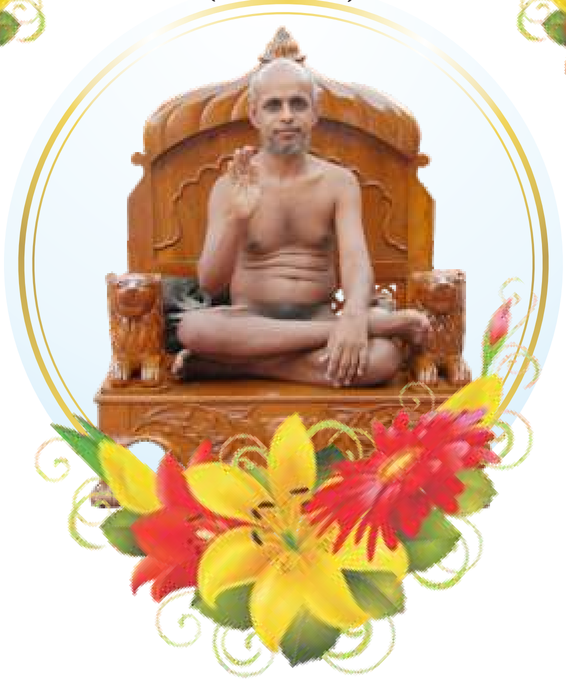

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

बी. बी.
येन्सेलो
बुक बाइंडर
सोलापूर.

JĪVARĀJA JAINA GRANTHAMĀLĀ No. 4
General Editors :
Prof. Dr. A. N. UPADHYE & Prof. Dr. HIRALAL JAIN

PRAKRIT GRAMMAR
OF
TRIVIKRAMA

WITH HIS OWN COMMENTARY

OR

PRĀKṚTA-ŚABDĀNUŚĀSANAM SAVṚTTIKAM

Critically Edited with Various Readings, an Introduction and Appendices etc.

BY

DR. P. L. VAIDYA, M.A. (Cal.), D.Litt. (Paris)
Retired Professor of Sanskrit and Allied Languages
Nowrosjee Wadia College, Poona;
Sometime Mayurbhanj Professor and Head of the Department
of Sanskrit and Pali, Banaras Hindu University

Published by
JAINA SAMSKṚTI SAMRAKṢAKA SAMGHA,
SHOLAPUR

1954

Price Rs. Ten only

All Rights Reserved

JĪVARĀJA JAINA GRANTHAMĀLĀ

1 *Tiloyapaṇṇatti* of Yativṛṣabha, an Ancient Prākrit Text dealing with Jaina Cosmography, Dogmatics etc. Prākrit Text and Hindi Translation, Part I, edited by Drs. A. N. Upadhye and H. L. Jain, Double Crown, pp. 38–532, Sholapur 1943. Rs. 12

2 *Yaśastilaka and Indian Culture*, or Somadeva's Yaśastilaka and Aspects of Jainism and Indian Thought and Culture in the 10th Century, by Prof. K. K. Handiqui, Vice-Chancellor, Gauhati University, Double Crown, pp. 8–540, Sholapur 1949. Rs. 16

3 *Tiloyapaṇṇatti*, as above No. 1, Part II, with Indices etc., Double Crown, pp. 116–540, Sholapur 1951, Rs. 16

5 *Pāṇḍavapurāṇam* of Śubhacandra, A Sanskrit Text dealing with the Pāṇḍava Tale with Hindi Translation etc.

Printed by S. R. Sardesai, B.A., LL.B., Navin Samarth Vidyalaya's Samarth Bharat Press, 41 Budhwar Peth, Poona 2.
Published by Walchand Devachand Shaha, B.A., Hony. Secretary, Jaina Saṁskṛti Saṁrakṣaka Sangha, Phaltan Galli, Sholapur.

श्रीत्रिविक्रमदेव-विरचितं

प्राकृतशब्दानुशासनम्

स्वोपज्ञवृत्तियुतम्

श्रीः

जीवराज-जैन-ग्रन्थमालायाः चतुर्थो ग्रन्थः

ग्रन्थमालासंपादकौ

प्रा. आदिनाथ उपाध्यायः * प्रा. हीरालालो जैनः

श्री-त्रिविक्रमदेव-विरचितं

प्राकृतशब्दानुशासनम्

स्वोपज्ञवृत्तियुतम्

तच्च

पाठान्तर-परिशिष्टादिभिः समलंकृत्य
पुण्यपत्तनस्थ-वाडियाकॉलेजनिवृत्तेन
तथा काशीविश्वविद्यालयस्थमयूरभञ्जप्राध्यापकपदान्निवृत्तेन
संस्कृत-प्राकृतादि-भाषाप्रधानाध्यापकेन
वैद्योपाह्वश्रीपरशुरामशर्मणा
संपादितम्

प्रकाशकः

शोलापुरीय-जैन-संस्कृति-संरक्षक-संघः

विक्रमसंवत् २०११] वीरनिर्वाणसंवत् २४८१ [ऐशवीयसंवत् १९५४

[सर्वेऽधिकाराः स्वायत्ताः]

मूल्यं दश रूपिकाः

जीवराज जैन ग्रन्थमालाका परिचय

सोलापूर निवासी ब्रह्मचारी जीवराज गौतमचन्द्रजी दोशी कई वर्षोंसे संसारसे उदासीन होकर धर्मकार्यमें अपनी वृत्ती लगा रहे है। सन् १९४० में उनकी यह प्रबल इच्छा हो उठी कि अपनी न्यायोपार्जित संपत्तिका उपयोग विशेष रूपसे धर्म और समाजकी उन्नति के कार्यमें करें। तदनुसार उन्होंनें समस्त भारतका परिभ्रमण कर जैन विद्वानोंसे साक्षात् और लिखित सम्मतियाँ इस बातकी संग्रह कीं कि कौन से कार्य में संपत्तिका उपयोग किया जाय। स्फुट मतसंचय करलेनेके पश्चात् सन् १९४१ के ग्रीष्म कालमें ब्रह्मचारीजीने तीर्थक्षेत्र गजपंथा (नाशिक) के शीतल वातावरणमें विद्वानोंकी समाज एकत्रित की, और उहापोहपूर्वक निर्णयके लिए उक्त विषय प्रस्तुत किया। विद्वत् संमेलनके फलस्वरूप ब्रह्मचारीजीने जैन संस्कृति तथा साहित्य के समस्त अंगो के संरक्षण, उद्धार और प्रचार के हेतु 'जैन संस्कृति संरक्षक संघ' की स्थापना की, और उसके लिए ३००००) तीस हजारके दानकी घोषणा कर दी। उनकी परिग्रहनिवृत्ति बढ़ती गई, और सन् १९४४ में उन्हो में लगभग २०००००) दो लाख की अपनी संपूर्ण संपत्ति संघको ट्रस्ट रूपसे अर्पण की। इसी संघके अंतर्गत 'जीवराज जैन ग्रंथमाला' का संचालन हो रहा है। प्रस्तुत ग्रंथ इसी मालाके चतुर्थ पुष्प हैं।

ब्रह्मचारी जीवराज गौतमचन्द्रजी

अनुक्रमणिका

प्रधानसंपादकीयं वक्तव्यम्—GENERAL EDITORS' NOTE vii–viii

संपादक-प्राक्-कथनम्—PREFACE ix–x

प्रस्तावना—INTRODUCTION xi–xxxviii

संदर्भ-ग्रन्थ-लेखसूची—BIBLIOGRAPHY xxxix–xlii

त्रिविक्रमदेव-विरचितं प्राकृतशब्दानुशासनम् १-३४०

प्रथमं परिशिष्टम्–

त्रिविक्रमसूत्रपाठः हेमचन्द्रीयसूत्रपाठेन सह संतुलितः ३४१–३७७

द्वितीयं परिशिष्टम्—

सूत्राणामकारादिक्रमेण सूची ३७८-३९९

तृतीयं परिशिष्टम्—

छन्दश्छायापल्लवेनाभिमतः त्रैविक्रमीयः सूत्रपाठः ४००–४१५

चतुर्थं परिशिष्टम्—

अपभ्रंशपद्यसूची ४१६–४२१

पञ्चमं परिशिष्टम्—

त्रिविक्रमशब्दानुशासनस्था देश्यशब्दसूची ४२२–४५६

षष्ठं परिशिष्टम्—

धात्वादेशसूची ४५७–४७१

(अ) संस्कृत-प्राकृत ४५७–४६१

(आ) प्राकृत-संस्कृत ४६२–४७१

सप्तमं परिशिष्टम्—

भरतनाट्यशास्त्रनिबद्धं प्राकृतभाषाणां स्वरूपम् ४७२–४७५

त्रुटिशोधनम् ४७७–४७८

GENERAL EDITORS' NOTE

MOST of the Prakrit Grammars, perhaps with the exception of Vararuci's *Prākṛta-prakāśa*, have enjoyed greater popularity only in a particular region of India. This is true of Trivikrama's Prakrit Grammar (*Prākṛta-Śabdānuśāsanaṁ savṛttikam*) as well. It marks a new epoch of the study of Prakrit grammars in Southern India. Thorough as Trivikrama's Grammar is, it immediately attracted eminent authors like Siṁharāja, Lakṣmīdhara and Appaya Dīkṣita, who commented on his Sūtras mostly drawing on his commentary; and thus quite a rich material has grown round about his grammar.

Trivikrama's Grammar had already attracted the attention of earliest Prakritists like Pischel, Laddu and others, but a critical edition of it was an urgent desideratum. Br. Jīvarāja Gautamachandraji earnestly desired that a critical edition of it with a Hindi digest should be published in the Jīvarāja Jaina Granthamālā which is started under his enlightened patronage. Dr. P. L. Vaidya was unquestionably the most worthy choice for editing this grammar. He has led the front of Prakrit studies for over a quarter of a century in India; and he is the veritable *pathi-kṛt* in editing Prakrit and Apabhraṁśa works. In him he admirably combines an old Paṇḍita and a modern orientalist; and by these qualities he has enriched the Prakrit studies. Dr. Vaidya has given to us a model edition, rich with useful Appendices. In his learned Introduction he confirms the view that Trivikrama himself is the author of Sūtras; and in addition, he has set forth his mature observations on the principles of text-constitution of Prakrit works.

The authorities of the Jīvarāja Jaina Granthamālā offer their sincere thanks to Dr. P. L. Vaidya, who, despite his other heavy work and physical fatigue, completed this critical edition and kindly placed it at their disposal for publication in this Series.

The General Editors record their sense of gratitude to Br. Jīvarāja Gautamachandraji for his enlightened generosity, to the members of the Trust Committee and Prabandha-samiti for their active interest in the Series, and to Dr. P. L. Vaidya for his willing and accommodative cooperation. They trust that this critical edition of Trivikrama's Grammar will give fresh impetus to the study of various problems connected with Middle-Indo-Aryan grammar and vocabulary. A Hindi Digest of Trivikrama's Grammar is being planned as a companion volume to this edition.

Vīra Nirvāṇa Day
26-10-1954

H. L. JAIN & A. N. UPADHYE
General Editors

PREFACE

In the month of July 1941, my friend Dr. A. N. Upadhye, Professor of Ardhamāgadhī at the Rajaram College, Kolhapur, wrote to me to say that I should undertake a critical edition of Trivikrama's Prakrit Grammar or Prākṛta-Śabdānuśāsana with his own commentary for the Jīvarāja Jaina Granthamālā which he, along with Professor Dr. Hiralal Jain of Nagpur as Joint General Editor, was about to start at the request and under the patronage of Brahmachari Jīvarāja Gautamchandra of Sholapur. He wrote to me in that letter that though there were two earlier editions of this work in print, the one in the Grantha Pradarśanī Series was incomplete and no longer in the market, and the other in the Chaukhamba Sanskrit Series of Banaras, though available in the market, was not a satisfactory edition, because the text was not critically edited, because there was no information about the manuscripts used, and further because the edition was not formally issued to the public even to this day.

It was with some reluctance that I agreed to undertake the edition of this work, chiefly on account of my long acquaintance with the General Editors. I never then thought that the work would entail so much time and trouble for me. I must however state that the delay in its publication was entirely my fault. Of course, the collection of material took some years, but there are three main reasons for this delay. First, I had just then finished my work on Puṣpadanta's Mahāpurāṇa in Apabhraṃśa, and my experiences in editing the three big volumes of that work, almost single-handed, brought on me some fatigue. Secondly, I was called upon in 1943 to undertake the critical edition of the Karṇaparvan of the Mahābhārata in the huge international undertaking of the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, which has been published only in September 1954 ; and thirdly, in 1947, after my retirement from the Nowrosjee Wadia College, Poona, I had to go to the Banaras Hindu University as Mayurbhanj Professor and Head of the Department of

Sanskrit and Pali. This Office and the Banaras climate brought on me further fatigue and to some extent ill-health. It was only in 1952 that I could devote my time for this work; and had it not been for the constant pressure and encouragement from the General Editors, I might not have completed my task at all.

I must express here my deep sense of gratitude to the two General Editors, and Brahmachari Jivarajjee, and more particularly to Dr. Upadhye, who supplied to me the transcripts from Madras and Tanjore, a manuscript in Devanāgarī script from Sholapur, collations from the Kolhapur manuscript in old Kannaḍa script, which latter was a laborious task indeed; he further lightened my work of going through the proofs as he throughout read one proof of every page, and made several useful suggestions for the improvement of the work, so much so that the credit of goodness and thoroughness of this edition must go to him. I also am glad to express my thanks to the Librarians of the Government Mss. Library at Madras, the Saraswati Mahal Library of Tanjore, and to Professor H. R. R. Aiyengar of the Oriental Institute, Mysore, for supplying to me transcripts from their libraries.

Before concluding, I must not fail to express my gratitude to the Manager and Staff of the Samarth Bharat Press, Poona, for excellent printing.

Poona
1st November 1954

P. L. VAIDYA

INTRODUCTION

THIS edition of Trivikrama's Prakrit Grammar called Prākṛtaśabdānuśāsana with the Vṛtti is based upon the following material :

1. PRINTED EDITIONS

G—This is a printed edition of the text in the Grantha Pradarśanī Series, Vizagapatam, 1896. It contains only the first chapter of Trivikrama's Grammar. This edition is based upon two Mss.; one is called क which is a composite Ms. prepared partly from a palm-leaf manuscript in the possession of the teacher or father of the Editor, Venkata Ranganatha Śarma, and partly from the Saraswathi Mahal Library at Tanjore ; the other is called ख, a palm-leaf manuscript belonging to one Krishnamūrti Śāstri. The Editor V. R. Śarma thought that the Sūtras were in a versified form, and therefore indicated in his Sūtrapāṭha where the stanza should end. He also used Hemacandra's Prakrit Grammar and Deśīnāmamāla to check his text. In my opinion, he did not hesitate to go beyond his Mss. and emended his text so as to make it agree with the contents of Hemacandra's Grammar. This fact makes this edition as having no independent critical value.

B—This also is a printed edition issued by the Chaukhamba Series of Banaras. It is also based on two manuscripts, the provenance of which is not known to me. One of these is called क and is incomplete, and the other is called ख, of which the last few folios seem to be missing. This edition gives the entire text of Trivikrama's Grammar and has several appendices and a word-index. I learn that this edition is based on material collected by the late Dr. T. K. Laddu of the Government Sanskrit College, Banaras, which, after his death, was edited by the late Professor Batuk Nath Sharma with the collaboration of Professor Baldeva Upadhyaya of Banaras Hindu University. This edition is not yet formally issued and so lacks some material information about manuscripts used etc.

2. MANUSCRIPTS :

We have used for this edition two transcripts, one from the Saraswathi Mahal, Tanjore, and the other from the Government Mss. Library at Madras, and two original manuscripts, one from Kolhapur written in old Kannaḍa script and the other from Sholapur in Devanāgarī script. There are two more manuscripts of the work in the Oriental Institute, Mysore, from which some portions in transcript were obtained, rather late in the progress of this edition, but the portion used does not indicate that my text as based on the above material is much different from the Mysore Mss. In this connection I must state that for some classes of works, transcripts, which are no better than new manuscripts, do not offer real help. Photographic copies are the best, as the Editor sees with his own eyes what the manuscript records. Further, the scribes do not always decipher the original manuscript correctly, nor do they give any help at places, where it is most needed. The transcripts which I used for this edition are :

M—This is a transcript obtained from the Government Oriental Library, Madras, from its Ms. No. 15318 (वाल्मीकि-सूत्रम् सवृत्ति) described in their Catalogue as follows :

Substance, paper ; size 11 × $8\frac{5}{8}$ inches ; pages 272. Lines 20 on a page. Character Devanāgarī ; condition good. Appearance new. The commentator is Trivikrama ; breaks off in the fourth pāda of the third adhyāya.

There is another manuscript of this work in the Library bearing No. 1549 from which the missing portion in the fourth pāda is made good. Even this manuscript is in a damaged condition.

T—This is a transcript obtained from the Saraswathi Mahal Library at Tanjore. There are three manuscripts of this work in the Library bearing Nos. 10005 (T_1), 10006 (T_2) and 10007 (T_3). Of these T_1 has 155 folios, and T_2 203 folios, and both are complete. T_3 is only fragmentary and has 25 folios. The first two Mss. are in Telugu script and T_3 in Grantha script. Further T_1 has several missing portions due to the

fact that the palm-leaves are broken and hence portions are lost. T_2 is slightly better preserved, and luckily for us, portions on broken leaves in T_1 could be filled up with the help of T_2. T_3 breaks off at page 69 (गहरो गुम्र:). All the three Mss. show peculiarities of these two scripts. They make hardly any discrimination between म and ह; and य and ष. Anusvāra and repha often take the place of a double consonant. These peculiarities do not present much difficulty to the editor of a work in Sanskrit, but to the editor of a Prakrit work on the subject of Grammar, they create untold difficulties and confusion in his work.

One very interesting point about T_1 and T_2 should be specially noted here. After folio 138 in T_1 and 180 in T_2 a portion beginning with °अहरो वार्धि: (our Text on page १२९, (६२५) मणिणाअहरो वार्धि:) upto सराहो निद्दा° (our text on page १३०, (६०४) दर्पोद्धुर: । सराहो (६७५) निद्रालु:) which constituted the contents of a folio, seems to be added, though it was out of place there. It seems to have come there because both T_1 and T_2 were copies of an older Ms. with a misplaced folio, and the copyist blindly copied the portion at a wrong place in T_1 and T_2, and naturally missing in its proper place. As this very portion is missing in the Banaras edition, it appears that editors or the late Dr. T. K. Laddu had based his text on these manuscripts !

The original Manuscripts used for this edition are :

K—This is a palm-leaf manuscript, measuring 14·5 × 1·7 inches. It belongs to the collection of Śrī Lakṣmīsena Bhaṭṭāraka Maṭha, Kolhapur. The label on the board is Prākṛta Vyākaraṇa in the first line in black ink and Trivikrama-Kavi in the second line in red and black ink in Devanāgarī script; and bears No. 202. On the other board at the end we have Prākṛta Vyākaraṇa in Kannaḍa script. It is a well-preserved manuscript, but its appearance is not very old. It may be about 200 years old. It has 123 folios, 123b being blank. On one of the blank leaves of this manuscript, we find the following stanzas on the use of Prakrit dialects, taken apparently from the Ṣaḍbhāṣācandrikā (Cf. BSS edition, page 4, lines 4–8) :

अथेदानीं भाषाणां स्वरूपं विनियोगश्च कथ्यते—

भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृता चेति भेदतः ।
कौमारपाणिनीयादिसंस्कृता संस्कृता भवेत् ॥
इयं तु देवतादीनां मुनीनां नायकस्य च ।
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रमन्त्रिकञ्चुकिनामपि ॥ etc.

The entire manuscript is written in old Kannaḍa characters. The hand-writing is uniform, and the manuscript carefully written throughout. Here and there some corrections are made in a different hand in-between the lines and also on the margin. The writing is of that usual mode—scratching with stylus and then rubbing with black soot. The written portion on a page shows three divisions, with marginal blank space on both the sides and blank space surrounding the two string-holes in-between. Each page contains six to seven lines, and each line about sixty letters. In this script, it may be noted, i and ī, accompanying consonants, are not distinguished ; for instances, *Vira* and *Vīra* are similarly represented. For the nasal conjuncts, anusvāra is used and not parasavarṇa. The fat zero indicates that the following consonant is to be doubled. There is no special sign for anunāsika, anusvāra serving the purpose of both. The manuscript opens thus :

श्रीमत्पंचगुरुभ्यो नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥ निर्विघ्नमस्तु ॥ श्रीवीरप्राभ्याचल° etc.

The colophon of the first pāda of the first adhyāya reads thus :

इति श्रीमदर्ह(र्ग)नंदित्रैविद्यश्रुतधर[मुनिचंद्र]श्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभावश्रीविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ प्रथ(स्थ)मस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

श्रीविक्रम in the above colophon is obviously a slip for Trivikrama. The letters put in round brackets are first written and then struck off, and the word Municandra in square brackets is added above the line in a different hand. The concluding portion runs thus :

इति श्रीमदर्हन्नंदित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभावश्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ तृतीयस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ समाप्तश्च तृतीयोध्यायः । संपूर्णं चेदं प्राकृतव्याकरणं ॥ सप्रत्यय° etc.; विघ्नान्तः etc.; वक्तारः संतु etc. प्राकृतव्याकरणं संपूर्न्नं ॥ श्रीजिनाय नमः । शुभमस्तु । भद्रमस्तु लेखकपाठकयोः ॥

Then in a different hand—

अपकर्त्तर्यपि संतः शुभानि कर्म्माणि कर्त्तुमीहंते ।
चिक्तं सदोषकर्तरि ना यो (नरि ?) योजयत्यशुभं ॥

This verse on the palm-leaf is not covered with black soot.

S—This manuscript was procured for me by Dr. A. N. Upadhye from Sholapur. It is a modern paper manuscript, and probably prepared from K described above, as the missing portions, mistakes etc. are identical in both, though this manuscript has added a number of its own. It has got 112 folios, 12½ × 6½ inches with 11 lines to a page and about 38 letters to a line. After the last stanza, i.e. वक्तारः सन्तु etc., the manuscript ends thus :

प्राकृतव्याकरणं संपूर्णं । शुभमस्तु । भद्रमस्तु लेखकपाठकयोः । स्वस्ति श्रीमत्सुरासुरवृंदवंदितपादपाथोजश्रीमन्नेमीश्वरसमुत्पत्तिपवित्रीकृतगौतमगोत्राईतद्विजश्रीमद्ब्रह्मसूरिशास्त्रितनूजश्रीमद्दोर्बलिजिनदासशास्त्रिणामंतेवासिना विजयचंद्राभिदे(धे)न जैनक्षत्रियेणालेखीति ॥ ॐ शांतिः ॥ प्रभवनामसंवत्सरे फाल्गुणमासे प्रथमदिवसे सौम्यवासरे संपूर्णमाहुः ॥ ग्रंथसंख्या ३५००.

I understand that दोर्बलिजिनदासशास्त्रिन् mentioned in the colophon above died some 25 years back, and his pupil विजयचंद्र is still living at Śravaṇa Belgol. The manuscript thus is not more than 50–60 years old.

Constitution of Prakrit Texts

The work of editing a text in Prakrit requires adoption of certain methods which are considerably different from those applicable to texts in the Sanskrit language. Many individual attempts have been made by conscientious editors to enunciate the principles of textual criticism as applicable to Prakrit texts, but they are only partially successful. I am making one

more such attempt, having considerable experience of editing Prakrit works, and remembering the difficulties I have experienced. These difficulties can be classified as under: (i) Want of reliable Manuscripts; (ii) Variety of Prakrit Dialects characteristics of which are not easy to determine; (iii) Conflicting directions and statements of Prakrit Grammarians divided into different schools. Under the circumstances, it is not easy to evolve a set of principles which could be universally applicable. Individual editors are thus left to their own whims and vagaries, and to the principle of eclectics. It may be said that time has not yet come to fix up the principles of textual criticism as applicable toPrakrit works. My attempt here is to clarify the situation, and suggest methods with a view that they may be of some use to future editors.

(1) *Dearth of Reliable Manuscripts:*—It is not now possible to catch hold of author's autograph copies of works in Prakrit. Copies of Prakrit works, found in libraries and private collections, are far removed from their original. The scripts in which manuscripts of Prakrit works are found, are usually limited to one or two only. I know the existence of a Śāradā manuscript of Śākuntala where Prakrit passages are found; I also know of manuscripts of Ānandavardhana's Dhvanyāloka in that script containing stanzas in Prakait; I know also manuscripts in Bengali script of some Sanskrit dramas containing Prakrit passages; there are similar manuscripts in Telugu or old Kannaḍa, in Tamil and Malayālam; but it is rarely that a large number of manuscripts in different scripts is ever used for the editing of a Prakrit work.

Copies of manuscripts of every successive degree are usually considerably spoiled by copyists. If they happen to be illiterate, they make an attempt to reproduce letters of the original manuscript without understanding the meaning of the text which is beyond their comprehension. If they happen to be literate and versed in Sanskrit, they are likely to be faithful in making the copy, but their prejudices are responsible for considerable Sanskritisation of the Prakrit text, and also for bringing the Prakrit text in line with Sanskrit. Take the case of Śūdraka's Mṛcchakaṭika, a drama which abounds in Prakrit

passages in a variety of dialects. We now hardly have three or four genuine manuscripts of this play in the libraries of the world. There are many Prakrit works available only in a single manuscript. The question which troubles a conscientious editor, therefore, is, whether we should faithfully reproduce the manuscript, and pass it on as the correct form as understood by, or as current in the age of, the author; or, we should use our knowledge of comparative grammar and textual criticism to modify it and bring it into line with modern trends. The question, in my opinion, should be solved on the principle of eclectics, as I shall show presently.

(2) *The variety of Prakrit Dialects and want of uniformity in their names*:—The oldest grammarian of Prakrit dialects is Vararuci. No doubt we have some information on the subject available in Bharata's Nāṭyaśāstra (XVII 7-23; 59-63) which we are giving in the seventh appendix to the present volume, but it is extremely scanty. The names which Bharata uses for Prakrit dialects seem to be discarded by Hemacandra and Trivikrama. Vararuci, thus, is the oldest grammarian of the Prakrit dialects; and has obviously influenced the subsequent grammarians of both the schools noted below. He, according to the existing text-tradition, treats of four dialects, Māhārāṣṭrī, Māgadhī, Paiśācī and Śaurasenī. Some of his commentators have commented on the first eight or nine adhyāyas of his work dealing with principal Prakrit, and ignored the remaining adhyāyas. Mārkaṇḍeya mentions a still larger number of Prakrit dialects and seems to follow Bharata to some extent. Sir George Grierson says that, like Vararuci, Mārkaṇḍeya belongs to the Eastern school of Prakrit Grammarians. Puruṣottama and Rāmaśarman Tarkavāgīśa belong to this school.

Caṇḍa, Hemacandra, Trivikrama and Śrutsāgara belong to a school which is different from the above school, and according to Grierson, constitutes the Western school of Prakrit Grammarians. They classify the Prakrit dialects as Prākṛata, (corresponding to Māhārāṣṭrī), Śaurasenī, Māgadhī, Paiśācī, Cūlikāpaiśācī and Apabhraṁśa. Hemacandra mentions Ārṣa Prākṛta, meaning thereby Ardhamāgadhī or language of the

Jaina canon. Although all these grammarians have modelled their grammars on Pāṇini, they were unable to ignore the variety of forms available in the Prakrit language, and hence unable to fix the form of the language or dialect as Pāṇini has done. There is no work of the type of Prātiśākhyas for the Prakrit languages, with the result that phonetic values of sounds in Prakrit remained fluid, one using प, ब, ज, and another using फ, ढ, झ for the same sound. Besides, almost all grammarians state that the rules framed by them are applicable *generally*, and characteristics of one dialect may be noticeable in another dialect. This principle has added to the chaos, initiated by scribes of manuscripts.

(3) *Conflicting Directions and Statements of Prakrit Grammarians about the Characteristics of Dialects*, associated with the two types mentioned above, are equally responsible for the chaos noticeable in manuscripts, and modern editions. I give below a list of such rules picked up from Hemacandra and Trivikrama for the present. If I bring in the rules of Vararuci, Mārkaṇḍeya, Puruṣottama and Ramaśarman Tarkavāgīśa *vis-a-vis* with their rules, one will easily see that the characteristics of Prakrit dialects had either undergone changes as time advanced, or the grammarians were not themselves quite sure about rules they have framed, or the strata of literature analysed by them was not necessarily identical. I give below a list of principal rules from Trivikrama and Hemacandra to illustrate my point of view:

(1) The word प्रायः, generally, occurring in a number of sūtras, e.g., 1.3.1.; 1.1.14; 1.3.8; 3.2.63 in Trivikrama and in several sūtras of Hemacandra. This word allows a lack of rigidity in their application.

(2) The sūtra बहुलम् occurring in both Trivikrama and Hemacandra, which means क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव, and Hemacandra's statement आर्षे तु सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते.

(3) The word क्वचित् and वा, explicitly and implicitly, occurring in a large number of sūtras, in both Trivikrama and Hemacandra.

(4) In compound words the initial letter of the second member is allowed certain changes under the principle वाक्यविभक्त्यपेक्षया अन्यत्वमनन्यत्वं च.

(5) The principle of श्रुतिसुख as against अर्थसुख.

(6) The sūtras नो णः and आदेस्तु or वादौ, occurring in Hemacandra and Trivikrama which allow retension of initial न against the compulsory change of न to ण recommended by grammarians of the Eastern School.

(7) Application of the rule regarding यश्रुति as in 1.3.10 in Trivikrama and in i. 180 in Hemacandra.

(8) Optional doubling of consonants after ए and ओ.

(9) Shortening of ए and ओ when followed by a conjunct to इ and उ, giving us एक, एक्क, इक्क.

(10) Substitution of one vowel for another under the sūtra अचोऽचाम् in 2.4.71 in Trivikrama's Grammar.

In the case of Apabhraṁśa, in addition to options mentioned above, the following rules create chaos :—

(1) प्रायोऽपभ्रंशेऽचोऽच् 3.3.1
(2) ह्रोः स्तोरुच्चारलाघवम् 3.4.64
(3) हल्स्यैङः 3.4.66
(4) बिन्दोरन्ते 3.4.65
(5) तद्व्यत्ययश्च 3.4.69

It is no wonder therefore that a variety of forms, which in no way change the meaning of the term are found in manuscripts.

In addition, want of a special sign for the अनुनासिक and for short forms of ए and ओ, have created confusion in manuscripts.

Further, scribes and the methods they adopt in preparing manuscripts are responsible for a lot of confusion. These peculiarities of scribes are classified as under :

(1) Something like the mark of अनुस्वार used to indicate the doubling of the following consonant.

(2) Non-doubling of consonants erratically.

(3) Confusion in the following pairs of letters:

ए and इ; ओ and उ; ओ and वो; ड and ढ; ज and झ; च and व; थ and ध; भ and ह; र and रु; प and व; प and य; ल and क; च and च्छ; त्थ and च्छ.

(4) Incorrect application of the rule पूर्वमुपरि वर्गस्य युजः, 1.4.94.

(5) Aspiration of certain letters which gives ख for व; प for फ; ज for झ promiscuously.

(6) Copies prepared from dictation.

The case of the treatment of न in Prakrit and its dialects is a point on which further discussion is necessary. The following note would be found useful by the reader:

न *and* ण *in Prakrit*:—According to Bharata न initial, medial and conjunct in Sanskrit words is changed to ण except in some local dialects (e.g., Paiśācī). This rule seems to be observed by all non-Jaina writers and also by some Jaina writers. But Hemacandra and Trivikrama, both of whom are Jains, and their followers like Śrutasāgara, have laid down that initial न in Sanskrit words may be optionally changed to ण, while medial न, single and double, should be invariably changed to ण. Further, Hemacandra holds that there cannot be न, either initial or medial, in Deśī words. In his Deśīnāmamālā, page 208, BSS edition, he states:

नकारादयस्तु [शब्दाः] देश्यामसंभविन एवेति न निबद्धाः। यच्च "वादौ" (१·२२९) इति सूत्रितमस्माभिः, तत्संस्कृतभवप्राकृतशब्दापेक्षया न देश्यपेक्षयेति सर्वमवदातम्।

Hemacandra's view stated in the above passage, is that a Deśī word with initial न is impossible or does not exist; that his sūtra वादौ (i.229) refers only to such Prakrit words as are derived from Sanskrit, and hence it does not refer to Deśī words at all.

Trivikrama, on the other hand, does not seem to accept the above view of Hemacandra. Under 2.4.127 Trivikrama gives निरप्पइ as a धात्वादेश or Deśī root, but adds णत्वे णिरप्पइ, which latter form indicates that he believed that initial न might

occur even in Deśī words. Words like आरनाल, अनिल, अनल etc., having medial न, are known to exist in early Prakrit works, say, in the Ardhamāgadhī or Ārṣa dialect, and accepted as such by Hemacandra. They may be regarded as borrowed either from Sanskrit or from local dialects having the influence of Paiśācī.

It will be seen from the above discussion that Prakrit grammarians of the so-salled Western School are not unanimous with regard to the change of न to ण. This has resulted in a state of chaos and confusion in MSS., and also in modern editions. I would suggest the following course in this respect. If the Prakrit work to be edited is a Jaina work, keep initial न if the word can be traced to Sanskrit, and change medial न to ण. Monosyllabic words like णं for ननु should be regarded as Deśī words, but नूणं for नूनम् may have initial न. In the case of non-Jaina Prakrit works, have ण for न everywhere. Jacobi seems to have framed a rule of his own with reference to न्न occurring medially, that it should be न्न if the Sanskrit word does not contain ण, but should be ण्ण if the original Sanskrit has ण. For instance दिन्न from दत्त should retain the dental न; कन्या should be कन्ना; but कर्ण should give us कण्ण. Grammarians do not give their support to Jacobi's view. Manuscripts also do not support the above view, and hence I have now come to the conclusion stated above. When this rule is followed, the vagaries of MSS. may be ignored.

These are in brief the difficulties which the editor of a work written in Prakrits is required to face. The causes noted above, and the list of vagaries in manuscripts and scribes look formidable; but he has to evolve a system out of this chaos. The following principles may guide him to some extent in this respect:

(1) Make an effort first to determine whether the work in Prakrit or its dialects belongs to the Jaina or non-Jaina school of thought. It is quite possible that non-Jaina works preserved in Jaina Bhoṇḍāras may present certain difficulties.

(2) Make an effort to determine the dialect or dialects used in the work. When the dialect in which the work or

passage is written is determined, proceed to see that the text you adopt conforms to the standard rules of the dialect found in a system of grammar.

(3) If the work in Prakrits comes from a Jaina source, the text should conform to the rules of Hemacandra and Trivikrama.

(4) If the Prakrit work comes from a non-Jaina source, the text should conform to the rules given by Vararuci, Puruṣottama, Mārkaṇḍeya or Rāmaśarman Tarkavāgīśa.

(5) The following categories of manuscript vagaries should be ignored while recording variants : न and ण; अनुस्वार and अनुनासिक; short ए and इ and ओ and उ; incorrect application of पूर्वमुपरि वर्णस्य युजः; अनुस्वार used to indicate doubling of the following consonant; and letters obtained merely by aspiration.

These are my ideas for the guidance of future editors of Prakrit works. It does not mean that I have followed them in editing the present text, because I want to know the reaction of scholars engaged in editing such texts to the above set of principles.

There are still some ticklish points which deserve elucidation here. The rule बहुलम् in both Hemacandra and Trivikrama has to be used with caution. The old school of grammarians did not regard this rule as creating chaos; they rather held that it should be interpreted as to yield the doctrine of व्यवस्थितविभाषा. The modern editor should follow this principle of व्यवस्थितविभाषा, and evolve certain principles based on eclectics. I give here a few specific illustrations of the application of the above doctrine.

The grammarians allow for Sanskrit खलु two forms in Prakrit, viz., खु and हु. Manuscripts are found to use them promiscuously; but the modern editor should see that हु should not be used, though found in his manuscripts, *after* an anusvāra. For, Trivikrama says, under 3.1.54, बहुलाधिकारादनुस्वारात्परो हु न प्रयोक्तव्यः. Thus, एवं खलु in Sanskrit should be एवं खु and not एवं हु.

Similarly, we have for Sanskrit अपि several forms in Prakrit, such as पि, वि, मि, अवि. We should have in Prakrit किं पि, किमवि and even किं मि and तह वि; but should not allow किं वि. Note in this connection अपेर्विः पदान्ते and अनुस्वारात् पिः as found in Puruṣottama's Prakṛtānuśāsana, IV. 3–4. The same principle should govern our choice for substitutes of इव such इव, पिव, विव, मिव, व, व्व. Of these पिव and मिव can be used after an anusvāra; but विव and व should not be; व्व can be used only after a short vowel.

The general tendency of the Prakrit languages is not to allow a conjunct consonant at the beginning of a word. च्चेव or च्चेव्व seems to be not quite good, but if the ending vowel of the preceding word happens to be ए or ओ, we may allow the double consonant. Thus, we have सो च्चेव or सो च्चेव्व; सो च्चिअ, ते च्चेअ. The variants of such words in manuscripts may be ignored as they do not change the sense of the expression in any way. Or, if an editor wants to swell his critical apparatus, he may note all manuscript variants fixing his text according to principles stated above.

Sūtras on Prakrit Grammar Earlier than Hemacandra and Trivikrama

The following passages are found in Hemacandra's Grammar: अत्र केचिद् ऋत्वादिषु (तस्य) दः इत्यारब्धवन्तः, स तु शौरसेनी-मागधीविषय एव दृश्यते इति नोच्यते, under रुदिते दिना ण्णः 1.209; and केचित्तु केवलानन्तर्यार्थयोर्णवरणवरि इत्येकमेव सूत्रं कुर्वते, तन्मते उभावप्युभयार्थौ under आनन्तर्ये णवरि 2.188. The first of these is reproduced by Trivikrama under णर्दिना रुदिते 1.3.49 in identical terms, and the second under आनन्तर्ये णवरिअ 2.1.46 with a slight change, आहुः for कुर्वते. These quotations raise an important issue as to what works in the sūtra style Hemacandra had before him. On examination I find ऋत्वादिषु तो दः in Vararuci, 2.7. I was not able to trace the second either in Vararuci or in Puruṣottama, both of whom give separate sūtras for णवर and णवरि. In my opinion the references do not indicate the existence of Vālmīkisūtras, because Hemacandra and Trivikrama cannot refer to a sage of high antiquity by the slightful term केचित्. Neither the sūtras in Hemacandra can be ascribed to Vālmīki

because Hemacandra calls them his own, nor does Trivikrama state anywhere that the sūtras belong to Vālmīki and Vṛtti alone is composed by him. On the contrary, Trivikrama, in the introductory stanza 9, says that the sūtras are his own composition (निजसूत्र) and that he writes a commentary to help those who want to understand the correct meaning of the sūtras. I feel further that the sūtras in Hemacandra are his own as also in Trivikrama. None of them, at any rate Hemacandra, can be accused of plagiarism of the so-called Vālmīki-sūtras.

Chronologically, the first reference to Vālmikisūtra is found in the following passage from a work *Śambhurahasya* (the genuineness of which is yet to be proved):

को विनिन्देदिमां भाषां भारतीमुग्धभाषिताम् ।
यस्याः प्रचेतसः पुत्रो व्याकर्ता भगवानृषिः ॥ २६७ ॥ १३
गार्ग्यगालवशाकल्यपाणिन्याद्या यथर्षयः ।
शब्दराशेः संस्कृतस्य व्याकर्तारो महत्तमाः ॥ १४ ॥
तथव प्राकृतादीनां षड्भाषाणां महामुनिः ।
आदिकाव्यकृदाचार्यो व्याकर्ता लोकविश्रुतः ॥ १५ ॥
यथैव रामचरितं संस्कृतं तेन निर्मितम् ।
तथव प्राकृतेनापि निर्मितं हि सतां मुदे ॥ १६ ॥
पाणिन्यादैः शिक्षितत्वात्संस्कृती स्याद्यथोत्तमा ।
प्राचेतसव्याकृतत्वात्प्राकृत्यपि तथोत्तमा ॥ १७ ॥
प्राकृतं चार्षमेवेदं यद्धि वाल्मीकिशिक्षितम् ।
तदनार्षं भवे(वदे ?)द्यो वै प्राकृतः स्यात्स एव हि ॥ १८ ॥

The above passage, first cited by K. P. Trivedi in his Introduction (page 13) to *Ṣaḍbhāṣācandrikā* has been repeated in *Mallikāmārutam* as from Śambhurahasya from the Vani Vilas Press, Srirangam. The work *Śambhurahasya*, from its contents and language, cannot claim a very high antiquity, and may have grown from time to time like the Purāṇas. In my opinion, it may belong to 14th century or later. Based on this passage, perhaps, Lakṣmīdhara wrote in his Ṣaḍbhāṣācandrikā:

वाग्देवी जननी येषां वाल्मीकिर्मूलसूत्रकृत् ।
भाषाप्रयोगास्ते ज्ञेयाः षड्भाषाचन्द्रिकाध्वना ॥ १५ ॥

There is a manuscript, No. 1548, in the Government Mss. Library in Madras, called *Vālmīkisūtram*. The scribe Deśikācārya seems to have added the following stanzas at the beginning of this Ms. :—

येन श्रीरामचरितमधिगम्य सुरर्षितः ।
श्रीमद्रामायणं प्रोक्तं तस्मै वाल्मीकये नमः ॥ १ ॥
येन निर्मलिता ना(गा)वः षड्भाषाकृतयो नृणाम् ।
विमलः सूक्ककतकस्तस्मै वाल्मीकये नमः ॥ २ ॥
स्वान्तस्य काव्येन गिरां च षण्णां
सूत्रैर्नराणां कलुषं प्रपत्त्या ।
पराकरोद्यः प्रथमः कवीनां
वाल्मीकिमेनं मुनिमानतोऽस्मि ॥ ३ ॥

These stanzas seems to be the composition of the scribe Deśikācārya who prepared the manuscript on 20th October 1883 (see Dr. Upadhye's article : Vālmīkisūtra : A myth, in Bhāratīya Vidyā, Vol. II. ii. pp. 160–176). Of the three verses the first two are an imitation of the first two stanzas of Pāṇinīya Śikṣā, and the third an imitation of

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन ।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि ॥

and as such we should not attach any value to them.

Coming to Lakṣamīdhara's successor, Appaya Dīkṣita, we find the following stanzas in his Prākṛta-Maṇi-Dīpa (Mysore, Oriental Research Institute, Publication No. 92):

ये त्रिविक्रमदेवेन हेमचन्द्रेण चेरिताः ।
लक्ष्मीधरेण च ग्रन्था भोजेन च महीक्षिता ॥ ४ ॥
ये पुष्पवननाथेन ये वा वाररुचा अपि ।
वार्तिकार्णवभाष्याद्या अप्पयज्वकृताश्च ये ॥ ५ ॥
ते विस्तृतत्वाप्रायेण संक्षेपरुचिभिर्जनैः ।
अगृहीता विलम्बन्ते संध्यार्ककिरणा इव ॥ ६ ॥
अतः प्राकृतशब्दानामन्धे तमसि मज्जताम् ।
प्रकाशनाय क्रियते संक्षिप्ता मणिदीपिका ॥ ७ ॥

It should be noted that Appaya Dīkṣita has mentioned by name Trivikrama, Hemacandra, Bhoja and Vararuci along with

Lakṣmīdhara and Puṣpavananātha (who to me appears to be no other than Vasantarāja, the author of a commentary on Vararuci), but did not think worth his while to mention Vālmīki, perhaps he did not believe that the sūtras on which Trivikrama wrote a commentary, were composed by Vālmīki.

The passage from *Śambhurahasya* quoted above is the first indication or source of the myth that Vālmīki, the author of the Rāmāyaṇa composed the sūtras on Prakrit Grammar. As the sūtras of Trivikrama are based on those of Hemacandra, many of them identical and almost all of them giving the same substance, we have to suppose that even Hemacandra must have used the sūtras of Vālmīki; but Hemacandra calls his work of sūtras as स्वोपज्ञवृत्तिसहितम्. Trivikrama also says निजसूत्रमार्गमनुजिगमिषताम्. The myth therefore of ascribing the sūtras of Trivikrama to Vālmīki must have come into vogue later than the age of Trivikrama, and the passage from *Śambhurahasya* quoted above must also belong to that period. If *Śambhurahasya* passage belongs to 14th century A.D., Lakṣmīdhara (1541–1565 A.D.) can well say वाल्मीकिमूलसूत्रकृत्. I am prepared to confess that Lakṣmīdhara may not have started the canard, but, it must be said, the popularity of his work gave currency to the myth. The relative chronology of Hemacandra (1172 A.D.), Trivikrama (1236–1300 A.D.), Sinharāja (1300–1400 A.D), Lakṣmīdhara (1541–1565 A.D.) and Appaya Dīkṣita (1554–1626 A.D.) should be noted in this connection. The champions of the theory that Vālmīki is the author of the sūtras on which Trivikrama wrote the commentary among modern scholars are Hultzsch, K. P. Trivedi, Nitti-Dolci and editor of the Prakṛta-Maṇi-Dīpa; Pischel gave up the theory during his life-time as the late Dr. T. K. Laddu states in his paper on Trivikrama. Bhaṭṭanāthaswamin and Laddu held that Trivikrama was the author of both sūtras and vṛtti. Dr. A. N. Upadhye has discussed the point fully and has shown how worthless the theory is.

THE SŪTRAPĀṬHA OF TRIVIKRAMA

Trivkrama's Prākṛta-Śabdānuśāsana, as presented in this edition contains 1036 sūtras. The sūtrapāṭha as given in the appendix to Ṣaḍbhāṣācandrikā by K. P. Trivedi, contains the

same number of sūtras with णिम्माणं णिम्मिणं between 1.2.46 and 1.2.48 which I have omitted, and dropping सप्तम्याम 3.4.53 which I have added. The text of the sūtras given in *Prākṛta-Maṇi-Dīpa* has the same number of sūtras. It also omits णिम्माणं णिम्मिणं of Trivedi, and adds सप्तम्याम as I have done. The छन्दश्शब्दापथः सूत्रपाठः published by Bhaṭṭanāthaswamin omits सप्तम्याम.

Of these 1036 sūtras of Trivikrama, Siṁharāja in his *Prākṛta-Rūpāvatāra* has commented on 575 sūtras and Lakṣmīdhara in his *Ṣaḍbhāṣācandrikā* on 994 sūtras, the latter thus ignoring some 42 sūtras. These 1036 sūtras of Trivikrama are divided into three adhyāyas, each adhyāya being again divided into four pādas. Trivikrama at one place proudly refers to his work on Prakrit Grammar as द्वादशपदी (on page 306 under 3.4.71) on the analogy of द्वादशलक्षणी system of Pūrvamīmāṁsā. The Prakrit portion of *Siddha-Hema-Śabdānuśāsana* hs only one adhyāya divided into four pādas and contains 1119 sūtras.

Comparison of the Sūtrapāṭha of Trivikrama and Hemacandra

Trivikrama's Sūtrapāṭha contains 1036 sūtras divided into twelve pādas and three adhyāyas, as against 1119 in four pādas of the eighth adhyāya of Hemacandra's *Siddha-Hema-Śabdānuśāsana* (i–271; ii–218; iii–182 and iv–448). The subject-matter covered by both is almost the same. Trivikrama has newly added the following sūtras : 1.1.1–16; 1.1.38; 1.1.45; 1.2.109 (पुआख्याद्याः); 1.3.14; 1.3.77; 1.3.100; 1.3.105 (गोणाद्याः); 1.4.83; 1.4.85; 1.4.107; 1.4.120; 1.4.121 (गहिआद्याः); 2.1.30 (घरहुलगाः); 2.2.9; 3.1.129; 3.4.65–67 and 3.4.72 (झावडगाः); in all 32. Of these, 17 sūtras relate to new technical terms used by Trivikrama; four sūtras relate to the groups of Deśī words for which Hemacandra has only one sūtra in his Grammar and an entire work, the *Deśīnāmamālā*; and the remaining sūtras add a few new words not treated by Hemacandra. Thus the subject-matter of 1119 sūtras of Hemacandra has been compressed by Trivikrama in about 1000 sūtras. This he was able to do by compressing two or more

sūtras in one. There are about 100 sūtras which have identical wording in both Hemacandra and Trivikrama; while there are a few in which Trivikrama has only changed the order of words or Ādeśas given by Hemacandra.

Hemacandra wrote his Prakrit Grammar as a continuation of his Sanskrit Grammar. The treatment of Sanskrit grammar covered seven adhyāyas, the eighth, the last, being devoted to Prakrits. He therefore had to continue the same scheme of adhyāya, pāda, sūtra, anuvṛtti and technical terms used in the first seven adhyāyas for the eighth adhyāya also. His division of the subject of Prakrit Grammar into four pādas is somewhat better or more systematic than the division adopted by Trivikrama. Hemacandra's first pāda (271 sūtras) deals with some preliminaries and treatment of vowels and single consonants; second pāda (218 sūtras) deals with the treatment of conjunct consonants (1-124); Prakrit substitutes for some Sanskrit words (125–144); some suffixes (145-173); the nipātas or Deśī words (174); and indeclinables (175–218); the third pāda deals with rules of declension (2–129); rules of syntax (130–137); conjugation and participles (138–182); and the fourth pāda gives the Dhātvādeśas (1–259); and dialects—Śaurasenī (260–286); Māgadhī (287–302); Paiśācī (303–324); Cūlikāpaiśācī (325–328) and Apabhraṁśa (329-448). Barring the huddling up the Dhātvādeśas and dialects into one pāda, we do not find anything faulty in Hemacandra's method of treatment. The case with Trivikrama, on the other hand, is different. He wrote his grammar of principal Prakrit and its dialects only. He had to frame his own terminology (1.1.1–16). He has divided his work into three adhyāyas, each adhyāya having four pādas. It was expected of him to arrange the subject-matter more systematically. It must be said, however, that the expectation is not fulfilled. The invention of technical terms like ह, दि, स, ग etc., is not very happy. At any rate the introduction of these terms has made his sūtras less clear than those of Hemacandra. The rest of his work covers the same field as Hemacandra's work. Hemacandra refers to Deśī words under one sūtra only, viz., गोणादयः while Trivikrama has six sūtras for the same topic. It must go to the

credit of Trivikrama to have classified the Deśī words into six groups. His treatment of syntax is scanty, and he unnecessarily splits up the Dhātvādeśas into two pādas in two different adhyāyas, without much reason. Again Hemacandra arranges the Ādeśas according to the initial letter of the Sanskrit root, e.g., कथ्, गम्, etc. Trivikrama does not seem to have followed any system in arranging his roots. Among the list of Deśī words, we find a few which are not traceable to Deśīnāmamālā. Such words may be regarded as Trivikrama's contribution. In the section on Apabhraṁśa he has copied *all* the illustrations from Hemacandra, and has added nothing new excepting perhaps the Sanskrit Chāyā, but omitted several illustrations given by Hemacandra.

Trivikrama wanted to score a point over Hemacandra first by reducing the number of sūtras; reducing the volume of the text by introducing shorter terms like ह्र for ह्रस्व; दि for दीर्घ; स for समास and ग for गण; and bringing all the Deśī words into the fold of grammar for which Hemacandra had to write a special book, the Deśīnāmamālā. All this seems to have been done under the influence of the doctrine : अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः; but he seems to be unaware of the fact that a saṁjñā or technical term has the same value of a *mātrā* or half a *mātrā*, irrespective of the number of syllables it contains. So दि and दीर्घ, स and समास have the same metrical value, as सर्वनामस्थान, आर्धधातुक etc. For all practical purposes, thus, the volume of Trivikrama's grammar is the same as that of Hemacandra. The clarity which Hemacandra's work has, is considerably impaired in Trivikrama's work.

Comparison of Trivikrama and Lakṣmīdhara

The interval between the age of Trivikrama and Lakṣmīdhara seems to be about two hundred years or so. This period created some new myths. One of them was that the sūtras on which Trivikrama wrote his commentary, were not his sūtras, but those of Vālmīki, the author of the Rāmāyaṇa; and the second was that Trivikrama's commentary was very difficult and required some elucidation. I do not subscribe to the views of Lakṣmīdhara on both the points. I know the

expression निजसूत्रमार्गमनुजिगमिषताम् is capable of being construed in two ways : (i) निजानां स्वीयानां सूत्राणां मार्गः अर्थः, and (ii) निजः स्वाभाविकः सूत्रार्थः, the first construing निज with सूत्र and the second with सूत्रार्थ. Hultzsch suggested the latter sense saying that it was natural with South Indians. Bhattanāthaswāmin has shown that Hultzsch was wrong, and yet the editor of Appaya Dīkṣita's Prākṛta-Maṇi-Dīpa supports it. It is this latter sense that gave rise to the myth that Vālmīki was the author of the sūtras. I have already discussed the question above and need not repeat my views here. Next, Lakṣmīdhara held the view that the text of Trivikrama's Vṛtti was difficult and pregnant with sense :—

वृत्तिं त्रैविक्रमीं गूढां व्याचिख्यासन्ति ये बुधाः ।
षड्भाषाचन्द्रिका तैस्तद्व्याख्यारूपा विलोक्यताम् ॥ १६ ॥

The above statement of Lakṣmīdhara may be all right if its purpose is to justify his work. I however do not find Trivikrama's work difficult; Lakṣmīdhara's so-called sub-commentary, on the other hand, is more difficult. For instance, compare Lakṣmīdhara on pages 16–17 under 1.1.39; page 91 under 2.3.31, and page 259 under 3.2.47, where his text is more difficult, and rendered so intentionally to show off his knowledge of Pūrvamīmāṁsā. In another case, while giving the senses of Deśī words, pages 163–184, he did not correctly understand Trivikrama and his methodology, and has assigned wrong senses, which are not supported by Deśīnāmamālā, which for this purpose is more authentic than even Trivikrama. It may be that by the time Lakṣmīdhara wrote his *Ṣaḍbhāṣā-candrikā*, the text of Trivikrama had already become corrupt; but it appears quite clear that he wrongly read Trivikrama's Vṛtti, and did not use Hemacandra's great work on Deśī words, which would have given him correct lead in cases of doubt. Lakṣmīdhara's Vārtikas on अपुष्पगाः स्केन, 3.1.132, are a good illustration how he lacked the critical faculty. My view is that Lakṣmīdhara had no genuine acquaintance with Prakrit works, particularly, with literary works, and he wrote his work just to show his acquaintance with the Prakrit Grammar. Lakṣmīdhara, thus, cannot be considered to be a reliable guide to Trivikrama.

Personal History and Date of Trivikrama

Like several writers of fame in Indian Literature, Trivikrama leaves but a scanty record about himself and about his date. He gives in the introductory and concluding stanzas of the present work some information, and it runs as follows: Trivikrama comes of a good family of Bāṇa. His grand-father was Ādityavarman. His parents are Mallinātha and Lakṣmī. He had a brother named Bhāma (variants : सोम, राम, वाम, चाम) known for his excellent behaviour and learning. Trivikrama seems to have studied under Arhanandi, a master of the sacred literature (of the Jainas), and a monk possessing three lores. Trivikrama calls himself to be a good poet (sukaviḥ), although no literary work of his has come down to us. The concluding verses of his grammar which however are not found in all the manuscripts (two Tanjore manuscripts do not give them, nor one of the two used for the Banaras edition), but can be surely considered to be his composition (मम in the second verse), state that people should mutter as a sacred mantra his Śabdānuśāsana, dealing with basic forms of words, suffixes, rules of syntax, verbal forms and deśya words, couched in short sūtras, and with an ample stock of illustrations, for the attainment of their objective. Those who appreciate works of art and the logicians will be pleased to read his poem (kāvya, not necessarily the grammar), because the sweetness of words, entering inside, will fatten the ears; the newness of sense in every word, will please a man of good words; and the sentiment or aesthetic feeling will pervade the whole world as if on account of the greatness of the work. All persons are capable to express their own ideas; Trivikrama, however, is unique in (nicely) expressing his own ideas which faithfully represent his own views, and also in faithfully representing the ideas of others. It is a pity that no poetic work of Trivikrama has come down to us to verify the above statement.

As regards Trivikrama's religion, we can say definitely that he was a follower of Jainism, as is clear from his salutation to Vīra, i.e., Mahāvīra, in the opening verse. The references to Vīrasena and Jinasena in stanza 4 indicate, equally clearly,

his reverence to these ācāryas, and go to prove that Trivikrama was a follower of the Digambara sect of the Jainas; and his reference to Hemacandra in stanza 11 goes to suggest, that though a follower of Digambara sect, he could easily rise above the sectarian prejudices, which in those days were not as strong as they are to-day.

Hemacandra makes some distinction between Ārṣa (i.e., Ardha-Māgadhī of the Canon of the Śvetāmbara Jainas) and Prakrit (i.e., Māhārāṣṭrī or Principal Prakrit). Trivikrama also makes reference to Ārṣa in stanza 7; but he says that Ārṣa and Deśya are *rūḍha* forms of the language; they are quite independent; and hence, do not stand in need of grammar; tradition alone can give information on these forms. On the contrary, the Prakrit languages, the stock of words in which can be traced to siddha and sādhyamāna Sanskrit, can be subjected to rules of grammar; and it is this stock of words which is treated in Trivikrama's grammar. Trivikrama, quite modestly, says that he has picked up only a few words from the flood of ocean of the writings of Vīrasena and Jinasena. In stanza 9, he says he writes a commentary on his own sūtras in order that men should obtain mastery over the subject, and that his commentary follows the traditional methods (of Hemacandra?). Although, Trivikrama says, he has selected only a few words, they will work like a mirror, as such is the greatness of his commentary. The method followed in treating the Prakrit forms, is the traditional method adopted by ancient masters down to Ācārya Hemacandra.

As to Trivikrama's date, we have equally scanty information. He mentions Vīrasena and Jinasena of Dhavalā and Jayadhavalā fame who belonged to the middle of the 9th century of the Christian era. He mentions Hemacandra who died in A.D. 1172. Trivikrama, thus is later than the last quarter of the 12th century, but not much later than Hemacandra. Dr. Upadhye holds that he wrote his grammar soon after A.D. 1236.

Luckily for us, we have three works, Siṁharāja's *Prākṛta-Rūpāvatāra*, Lakṣmīdhara's *Ṣaḍbhāṣācandrikā*, and Appaya

Dīkṣita's *Prākṛta-Maṇi-Dīpa*, which are later than Trivikrama. Of these, Appaya Dīkṣita is the youngest, who died in A.D. 1626, and was a prolific writer. His work mentioned above cannot be his last work, but rather a work of his younger days. He died at the mature age of 72. Lakṣmīdhara is specifically mentioned in his work, who thus seems to have lived in the last quarter of the 15th century or the first quarter of the 16th century, say, between A.D. 1475 and 1525. Siṁharāja is not mentioned either by Lakṣmīdhara or Appaya Dīkṣita, but seems to be older or almost a senior contemporary, and may be assigned to the first half of the 15th century. All these indications prove that we can safely assign Trivikrama to the latter half of the 13th century.

We have no definite data to determine the province of the residence of Trivikrama. But his being a follower of Digambara Jainism, the names of his father, brother and teacher, and above all, the popularity of his work and provenance of manuscripts of his work, go to indicate that he must have been a Southerner, probably an Āndhra with close contacts with Karnāṭaka. The inclusion of some Deśya words like बोंदि सायंभोजनम् which cannot be traced to Hemacandra's *Deśīnāmamālā*, and may be traced in the Dravidian languages, goes to confirm the above view.

* * * *

The Appendices

There are in this Volume seven appendices. The first of these gives the Sūtrapāṭha of Trivikramaśabdānuśāsana in which Sūtras are given in their natural order, divided into adhyāyas and pādas. Below on the same page I have given corresponding sūtras from Hemacandra's Grammar with their pāda and sūtra numbers. It is easy for the reader to compare and judge how far Trivikrama has based his sūtras on those of Hemacandra, and what new additions he has made. The second appendix gives the sūtras of Trivikrama in the alphabetical order with page references as also the adhyāya, pāda and sūtra number. In the third appendix I have given

the so-called metrical form of the sūtras of Trivikrama from Bhaṭṭanātha Swamin's pamphlet with suitable changes to agree with our sūtra text. A special note on this appendix is given below. The fourth appendix gives in alphabetical order the first line of the Apabhraṁśa verses which Trivikrama has taken from Hemacandra's Grammar along with their references to the latter. The fifth appendix gives, in alphabetical order, the Deśya or Deśī words found in Trivikrama's work together with suitable references to HD or Hemacandra's *Deśīnāmamālā*, whenever possible. A special note on this appendix is given below. The sixth appendix gives the so-called Dhātvādeśas. See also a special note below. The seventh appendix gives the text of Metrical Grammar of Prakrits found in Bharata's *Nāṭyaśāstra*, XVII. 7–25; 59–63. The text given is from the GOS edition, Vol. II, with some emendations (marked with *) and a summary of his teachings in English for the benefit of the reader who may not be able to follow the text of Bharata.

It was possible for me to give a general index of all Prakrit words with their equivalents in Sanskrit; but I dropped the idea because we have now several dictionaries of Prakrit available, and the reader can use them with ease.

The third appendix gives the sūtras of Trivikrama in a metrical form. Although I do not consider that Trivikrama wrote his Prakrit Grammar in verse, I thought it fit to discuss this question, because in the Sanskrit introduction to Trivikrama's Grammar in the Grantha Pradarśanī Series, the learned editor, Paṇḍita Venkaṭa Ranganātha Sharma, and Bhattanātha Swamin in his article on Trivikrama in IA, have stated that the sūtras of Trivikrama are metrical in form. See for instance, Pandit Sharma's statement :

एवमध्यायत्रयात्मकस्याप्यस्य व्याकरणस्य सर्वाणि सूत्राणि छन्दश्छाया-पन्नानीत्ययमंशोऽस्मत्पितृव्यपादानां श्री श्रीनिवासभट्टनाथाचार्यवर्यगुरूणामुपज्ञा। अत एव एतस्मिन्मुद्रणे सूत्रपाठस्तः शोधितमातृकानुसारेणव मुद्रितः ॥

It appears that there was some tradition which indicated that Trivikrama's Grammar was written in a metrical form. This tradition seems to have been translated into action by

this editor. Bhaṭṭanātha Swamin also published, at the request of the late Dr. T. K. Laddu, the sūtras in the metrical form in a pamphlet. I have reproduced this metrical form of the sūtras with some necessary modification so that the sūtras should agree in wording with those in this edition.

I must admit that there have been instances of grammatical sūtras being written in a metrical form. Bharata, for instance, wrote his description of the characteristics of the Prakrit Language and its dialects in a metrical form (See Appendix VII to this volume). Mārkaṇḍeya wrote his *Prākṛta-Sarvasva* in Kārikās. Rāmaśarmatarkavāgīśa also wrote his *Prākṛta-Kalpataru* in a metrical form. In all these instances, the versification, though the subject-matter is terse and dry, seem to possess some qualities of verse. The topics are treated in a suitable metrical form, and their versification has some characteristics and qualities of musical tunes. Trivikrama's sūtras, as given in this appendix, do not possess even a shade of these qualities. I must, however, admit that there are some sūtras of Trivikrama, for instance, प्रायो लिति न विकल्पः 1. 1. 14, which lend support to the view that such sūtras have metrical tunes; but the vast majority of the sūtras do not possess any such characteristics. There are no introductory nor concluding stanzas. Most of the sūtras are put, mechanically, into the form of Āryā or Anuṣṭubh metre. The sūtras are cut up anywhere, e.g., see the stanzas 19, 20, 23, 33, 48, 92, 96, 97, 100, 104, 126, 135, 136, 143, 148, 153, 159, 161, 165, 167, 173, 174, 183, 184, 185, 187, 188, 189, 191, 194, 196, 197, 198. The adhyāya ends and pāda ends have no indication, and the stanza is not completed at such places; e.g., see 1. 1.; 1. 3; 1. 4; 2. 1; 2. 2; 2. 4; 3. 1; 3. 2; 3. 3; and 3. 4. Even the last stanza of the work is left incomplete. I would, therefore, request the reader to compare the versification of Trivikrama's sūtras with that of Bharata, Mārkaṇḍeya and Rāmāśarma Tarkavāgīśa, and decide for himself whether he agrees with the views of Bhaṭṭanāthaswamin.

Trivikrama claims for his verification the qualities of a sweet and pleasing sound :

विश्रान्तः श्रोत्रं पदमधुरिमा मेदुरयति.

Let the reader judge for himself whether the metrical form of the sūtras as printed in this appendix would justify this claim! Even the Kārikās giving the list of anit roots, शक्लृपच्, etc., are more sonorous than the Kārikās of Trivikrama. I therefore do not think that Trivikrama ever wrote his sūtras in that form.

The fifth Appendix contains some 1600 Deśya or Deśī words which are recorded in Trivikrama's Grammar. About the implications of the term Deśya or Deśī, the reader is referred to my article : *Observations on Hemacandra's Deśīnāmamālā*, ABORI, VIII. pp. 63–71, and more particularly to Hemacandra's definition of Deśī :

जे लक्खणे ण सिद्धा ण पसिद्धा सक्कयाहिहाणेसु ।
ण य गउणलक्खणासत्तिसंभवा ते इह णिबद्धा ॥
देसविसेसपसिद्धीइ भण्णमाणा अणन्तया हुन्ति ।
तम्हा अणाइपाइअपयट्टभासाविसेसओ देसी ॥ HD. I. 3–4.

Modern philology has made considerable advance in recent years to find fault with the above definition of the term Deśī; but, we owe to Hemacandra a deep debt of gratitude to have preserved for us a tremendously exhaustive list of such words and their senses. It is possible to discover a few more Deśī words, some of which we find incorporated in Trivikrama's Grammar. It is easy to prove that Trivikrama has drawn largely upon Hemacandra's vocabulary of such Deśī words, and I have tried to trace as many of such words as was possible for me to do; but I was not able to trace some, because my manuscripts could not give me any clue as to their correct form, or because Trivikrama has added them anew from contemporary sources or sources later than Hemacandra.

Trivikrama gives the Deśī words in a classified form as under :

(1) वा धुआद्याद्याः 1. 2. 109, saying that it is possible to explain the forms as derived from Sanskrit due to change in the vowel-structure : स्वराद्यादेशविशेषिताः;

(2) गोणाद्याः 1. 3. 105, saying that he does not attempt to trace the original basic word or its prefixes and suffixes or changes in the form due to dropping or change of letters : अनुक्तप्रकृतिप्रत्ययलोपागमवर्णविकाराः ;

(3) गहिआद्याः 1. 4. 121, saying that some sort of Etymological explanation can be found for words in the list: निर्वचनगोचराः ;

(4) वरइत्तगास्तूनाद्यैः 2. 1. 30, saying that the words listed have some Taddhita pratyayas or suffixes, coupled with some changes in vowels etc : स्वराद्यादेशविशेषिताः ;

(5) अपुण्णगाः क्तेन 3. 1. 132, saying that the list contains past passive participles in क्त, either from roots traceable to Sanskrit or Deśī stock : क्तप्रत्ययेन सह निपात्यन्ते; and

(6) झाडगास्तु देश्याः सिद्धाः 3. 4. 72, saying that the words listed are pure deśī words known to exist in popular literature and no attempt is made to trace them to Sanskrit : देशविशेषव्यवहारादुपलभ्यमानाः सिद्धाः निष्पन्नाः प्रसिद्धा वा. It is words listed here which have come down to us in the most corrupt form, and my attempt to trace them to HD have failed in some cases.

The Sixth Appendix contains the Dhātvādeśas arranged alphabetically. It is divided into two parts, Part I giving Sanskrit roots with their Prakrit Substitutes, and Part II giving Prakrit substitutes for Sanskrit roots. Hemacandra has given the list of these substitutes in his Grammar in the fourth pāda, and has arranged the roots according to the initial letter in their Sanskrit form such as कथ्, गम् etc. Trivikrama does not seem to follow any definite principle in giving these substitutes; he has cut them up into 2. 4 and 3. 1, and also in 3. 4. I have collected all the so-called substitutes from Trivikrama and given them in the two parts. It would not be very difficult for the reader to compare the Prakrit substitutes in Part II with a similar list from Hemacandra's Grammar given at the end on pages 117*–128* of the revised edition of the work published as Appendix to Kumārapālacarita in Bombay Sanskrit and Prakrit Series, No. LX, or on pages 407–416 in its reprint to be soon published.

In this connection it should be noted that Hemacandra held that the so-called Dhātvādeśas were in reality roots drawn from the stock of Deśī vocables, and that they were shown technically as substitutes for Sanskrit roots with the simple object that they could, that way, be used to form verbal derivatives with the help of suffixes. Note particularly the following passage from Hemacandra :

एते चान्यैर्देशीषु पठिता अपि अस्माभिर्धात्वादेशीकृताः विविधेषु प्रत्ययेषु प्रतिष्ठन्तामिति। तथा च—वज्जरिओ कथितः। वज्जरिऊण कथयित्वा। वज्जरणं कथनम्। वज्जरन्तो कथयन्। वज्जरिअव्वं कथयितव्यम्। इति रूपसहस्राणि च सिध्यन्ति। संस्कृतधातुवच्च प्रत्ययलोपागमादिविधिः॥ हेव्या—4. 2.

* * * *

BIBLIOGRAPHY

A—Texts on Prakrit Grammar

Audāryacintāmaṇi of Śrutasāgara (Sūtrapāṭha only) by Bhaṭṭanāthaswamin (pp. 29–44). No date.

Prākṛta-Kalpataru of Rāmaśarman Tarkavāgīśa, edited by L. Nitti-Dolci, Śākhā I, Paris 1939.

Prākṛta-Lakṣaṇam of Caṇḍa, ed. by Hœrnle, A. S. B., Calcutta, 1880.

Prākṛtaprakāśa of Vararuci with the Manoramā Comm. of Bhāmaha, ed. by E. B. Cowell, Hertford, England; 1st Edition 1854; 2nd edition 1868; Revised edition in Poona Oriental Series by Dr. P. L. Vaidya, Poona, 1931; with Commentaries Prākṛtasaṃjīvanī by Vasantarāja, and Subodhinī by Sadānanda, Sarasvati Bhavan Series, Benaras, 1927.

Prākṛta-Maṇi-Dīpa of Appaya Dīkṣita, Part I, Oriental Research Institute, Mysore, Publication No. 92, ed. by T. T. Srinivasagopalacarya with his subcommentary, 1953.

Prākṛtamañjarī, attributed to Kātyāyann, N. S. Press, Bombay, 1913.

Prākṛta-Rūpāvatāra of Siṁharāja, ed. by E. Hultzsch, Royal Asiatic Society, Prize Publication Fund, No. 1. London, 1909.

Prākṛta-Sarvasva of Mārkaṇḍeya, ed. by S. P. Bhaṭṭanāthaswamin, Grantha Pradarśanī, Vizagapatam, 1927.

Prākṛtānuśāsana of Puruṣottama, ed. by L. Nitti-Dolci, Paris, 1938.

Prākṛta-Vyākaraṇa of Trivikrama, Adhyāya I, ed. in Grantha Pradarśanī, Vizagapatam, 1896.

Siddha-Hema-Śabdānuśāsana or *Hemacandra's Prakrit Grammar* (HG; हेव्या), ed. by R. Pischel, Halle, 1877–1880; BSPS No, LX (Appendix to Kumārapālacarita), ed. by S. P. Pandit; Revised edition, 1936, by Dr. P. L. Vaidya.

Ṣaḍbhāṣācandrikā (C) of Laṣkmīdhara, ed. by K. P. Trivedi, BSPS, No. LXXI, Poona, 1916.

Trivikrama-Sūtrapāṭha (metrical) Published by Bhaṭṭanāthaswamin, pages 1–28. No date.

B—General Works on Prakrit Grammar

Lassen C. Institutiones Linguae Pracriticæ, Bonn, 1837.

Mehendale M. A., Historical Grammar of Inscriptional Prakrits, Poona 1948.

Nitti-Dolci L. Les Grammariens Prakrits, Paris, 1938.

Pischel R. Grammatik der Prakrit Sprachen (Grundriss), Strassburg, 1900.

Sircar D. C. A Grammar of the Prakrit Language, University of Calcutta, 1943.

Sukumar Sen, Comparative Grammar of Middle Indo-Aryan Linguistic Society of India, Calcutta 1951.

Tagare G. V. Historical Grammar of Apabhraṁśa, Poona 1948.

C—Select Articles and Papers on Prakrits

Alsdorf L. A Specimen of Archaic Jaina-Mahārāṣṭrī, Indian and Iranian Studies presented to G. A. Grierson, School of Oriental Studies, London, VIII, 1936.

Alsdorf L. Apabhraṁśa Studien, Leipzig 1937.

A. Banerji-Śastri. The Evolution of Māgadhī, Oxford 1922.

Bhaṭṭanāthaswamin, Trivikrama and his followers, IA, XL, pp. 219–223.

Bloch Th. Vararuci und Hemacandra, Gutersloh 1893.

Chatterji S. K. Calcutta Hindusthani: A study of Jargon dialect, Lahore, 1931.

Clerk W. E. Māgadhī and Ardhamāgadhī, JAOS, XLIV.

Ghatage A. M. Māhārāṣṭrī Language and Literature, Journal of the Uni. of Bombay, IV, 6, May 1936.

Ghatage A. M. Introduction to Ardhamāgadhī, Kolhapur, 1942.

GHOSH M. M. Prakrit Verses of Bharata-Nāṭyaśāstra, IHQ VIII, 1932.

GHOSH M. M. Māhārāṣṭrī, a later phase of Śaurasenī, Journal of the Dept. of Letters, Calcutta University, XXIII, 1933.

GRIERSON G. A. The Prakrit Vibhāṣās, JRAS. 1918, pp. 489–517.

GRIERSON G. A. The Śaurasenī and Māgadhī Stabakas of Prākrita-Kalpataru, IA. LVI–LVII. (Supplement).

GRIERSON G. A. The Eastern School of Prakrit Grammarians, Sir Asutosh Mukerji Silver Jubilee Vol. III ii, pp. 119–141.

GRIERSON G. A. The Prakrit Dhātvādeśas, Mem. Asiatic Society of Bengal, VIII, No. 2, 1924.

GRIERSON G. A. Paiśācī and Cūlikāpaiśacī, IA. LII, pp. 16–17.

GRIERSON G. A. The Apabhraṁśa Stabakas of Prākrita-Kalpataru, IA, LI, pp. 13–28 ; LII, 197 ff.

GRIERSON G. A. Paiśācī in Prākrita-Kalpataru, IA., pp. 114 ff.

GRIERSON G. A. Apabhraṁśa according to Mārkaṇḍeya and Dhakki Prakrit, JRAS 1913, pp. 875–883.

GRIERSON G. A. The Pronunciation of Prakrit Palatals, JRAS. 1913, pp. 391–396.

GRIERSON G. A. The Bṛhatkathā in Mārkaṇḍeya, JRAS. 1913, p. 319.

HULTZSCH E. Neue Beiträge Zur Kenntnis der Śaurasenī, ZDMG, 66 (1912) pp. 709–726.

KATRE S. M. Prakrit Languages and their Contribution to Indian Culture, Bhāratīya Vidyā Bhavan, Bombay, 1945.

LADDU T. K. Prolegomena Zu Trivikramas Prakrit Grammatik, Halle, 1912 ; English translation by P. V. Ramanujaswamin, ABORI, X, pp. 177–218.

PISCHEL R. Materialen Zur Kenntnis des Apabhraṁśa, Berlin, 1902.

RAMANUJASWAMIN P. V. Hemacandra and Paiśācī Prakrit, IA. 1922, pp. 51–54.

RANGANATHASWAMIN Paiśācī Dialect, IA 1920, p. 114.

SCHMIDT R. Elementarbuch der Śaurasenī, Hannover, 1924.

UPADHYE A. N. Kanarese Words in Deśī Lexicons, ABORI, XII, 3, pp. 274–284.

UPADHYE A. N. A Note on Trivikrama's Date, ABORI, XIII, pp. 171–172.

UPADHYE A. N. Paiśācī Language and Literature, ABORI, XXI. pp. 1–37.

UPADHYE A. N. Vālmīkisūtra : A Myth, Bhāratīya Vidyā, Vol. II ii, pp. 160–176.

UPADHYE A. N. Śubhacandra and his Prakrit Grammar, ABORI, XIII, pp. 37–58.

VAIDYA P. L. Observations on Hemacandra's Deśīnāmamālā, ABORI, VIII, pp. 63–71.

VAIDYA P. L. On the use of Prakrit Dialects in Sanskrit Dramas, ABORI, XXXIII, pp. 15–25.

WOOLNER A. C. Introduction to Prakrit, Lahore, 1917.

D—MISCELLANEOUS

Deśīnāmamālā (HD) of Hemacandra, ed. by R. Pischel and G. Bühler, BSS. No. XVII ; Revised edition by P. V. Ramanujaswami, Poona, 1938.

Pāialacchī Nāmamālā of Dhanapāla, ed. G. Bühler, Gottingen, 1879.

॥ श्रीः ॥

श्रीत्रिविक्रमदेवविरचितं
स्वोपज्ञवृत्तियुतं
प्राकृतशब्दानुशासनम् ।

श्रीवीरप्राच्याचलसमुदितमखिलप्रकाशकं वन्दे ।
दिव्यध्वनिपटुदीधितिमहमक्षरपद्धतिप्राप्त्यै ॥ १ ॥
श्रुतमर्तुरर्हनन्दित्रैविद्यमुनेः पदाम्बुजभ्रमरः ।
श्रीबाणसुकुलकमलद्युमणेरादित्यवर्मणः पौत्रः ॥ २ ॥
श्रीमल्लिनाथपुत्रो लक्ष्मीगर्भामृताम्बुधिसुधांशुः ।
भामस्य वृत्तविद्याधाम्नो भ्राता त्रिविक्रमः सुकविः ॥ ३ ॥
श्रीवीरसेनजिनसेनार्यादिवचःपयोधिपूरात्कतिचित् ।
प्राकृतपदरत्नानि प्रकृतिकृती सुकृतिभूषणाय चिनोति ॥ ४ ॥

Of the six Mss. consulted for this edition, K begins: श्रीमत्पंचगुरुभ्यो नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥ निर्विघ्नमस्तु. M begins: श्रीः। प्राकृतव्याकरणं त्रैविक्रमीयम्. S begins: श्रीवीतरागाय नमः। शुभमस्तु। निर्विघ्नमस्तु। त्रिविक्रमविरचितं प्राकृतव्याकरणम्. T श्रीः। प्राकृतव्याकरणम्। हरिः ॐ। शुभमस्तु। ॐ. INTRODUCTORY STANZAS: 1. (*cd*) S °प्राप्ते for °प्राप्त्यै; T_1 दिव्यध्वनिपट...प्राप्त्यै; T_3 दिव्यध्वन्यपरदीधितिमहमहमक्षर°. 2. (*a*) K शृतभक्तिर्; M श्रीमर्तुर्; S श्रुतभक्तिर् for श्रुतमर्तुर्. T_1 damaged: (*c*) GM श्रीबाणसकुल° for श्रीबाणसुकुल°. (*d*) K °द्युमणिर् corr. to °द्युमणेर्; S °द्युमणिर् for °द्युमणेर्. K °शर्मणः for °वर्मणः. 3. (*b*) M °गर्माम्बुधि° for °गर्भामृताम्बुधि°. (*c*) G सोमस्य; KS रामस्य; T_1 चास्य; T_2 चामस्य; T_3 वामस्य for भामस्य. M वृत्ति° for वृत्त°. (*d*) M स कविः for सुकविः 4. (*a*) M °जिनार्यादि° for °जिनसेनार्यादि°. (*b*) T_3 वाच्यं for °वचः°. K °पयोधेः पारात्; M °पयोधिहारात्; S पयोनिधेः पारात्; T_3 °पयोनिधेः पूरात् for °पयोधिपूरात्. K S om. कतिचित्. (*c*) G प्राकृतकृति। K प्राकृतिकृति; S प्रकृतिकृति; T_1 प्रकृतीकृती for प्रकृतिकृती. (*d*) T_1 सुकृती for सुकृति°. M चिनोमि; T_3 विचिनोति for चिनोति.

अनल्पार्थः सुखोच्चारः शब्दः साहित्यजीवितम् ।
स च प्राकृतमेवेति मतं सूत्रानुवर्तिनाम् ॥ ५ ॥

प्राकृतं तत्समं देश्यं तद्भवं चेत्यदस्त्रिधा ।
तत्समं संस्कृतसमं नेयं संस्कृतलक्ष्मणा ॥ ६ ॥

देश्यमार्षं च रूढत्वात्स्वतन्त्रत्वाच्च भूयसा ।
लक्ष्म नापेक्षते, तस्य संप्रदायो हि बोधकः ॥ ७ ॥

प्रकृतेः संस्कृतात्साध्यमानात्सिद्धाच्च यद्भवेत् ।
प्राकृतस्यास्य लक्ष्यानुरोधि लक्ष्म प्रचक्ष्महे ॥ ८ ॥

प्राकृतपदार्थसार्थप्राप्त्यै निजसूत्रमार्गमनुजिगमिषताम् ।
वृत्तिर्यथार्थसिध्यै त्रिविक्रमेणागमक्रमात्क्रियते ॥ ९ ॥

तद्भवतत्समदेश्यप्राकृतरूपाणि पश्यतां विदुषाम् ।
दर्पणति येयमवनौ वृत्तिस्त्रैविक्रमी जयति ॥ १० ॥

प्राकृतरूपाणि यथा प्राच्यैरा हेमचन्द्रार्यात् ।
विवृतानि तथा तानि प्रतिबिम्बन्तीह सर्वाणि ॥ ११ ॥

---

5. (*a*)G अनल्पार्थसुखोच्चारः. (*b*) B शब्दसाहित्य° for शब्दः साहित्य°. (*d*) KS सूक्तानु° for सूत्रानु°. 6. (*d*) GS °लक्षणात् for °लक्ष्मणा. 7. (*a*) Gp देश्यमार्षसत्रूक्षत्वात् (sic). (*c*) BT नापेक्ष्यते for नापेक्षते. 9. (*a*) K °पदार्थस्यार्थप्राप्त्यै for पदार्थसार्थप्राप्त्यै. (*d*) GM °णागमक्रमेण क्रियते; K °णागमः क्रियते for °णागमक्रमात्क्रियते. 10. (*a*) G तत्समतद्भव°; T_1 तद्भवतत्सं-देश्य° for तद्भवतत्सम°. (*c*) BM दर्पणतयैवमवनौ; K दर्पणयति येयमवनौ; T_1 दर्पण तमेवमवनौ; $T_{2\cdot3}$ दर्पणतयेयमवनौ. (*d*) B जयतु for जयति. 11. (*b*) B T_1 प्राच्यैरा हेमचन्द्रास्यात्; G प्राच्यैराहेमचन्द्रमाचार्यैः; Gp प्राचेतसहेमचन्द्राद्यात्; S प्राच्यैरा हेमचन्द्रार्यात्. (*d*) After सर्वाणि Gp adds : छाया गीर्वाणवाण्याः षट् सर्वलोकसमर्चिताः । प्रतिभान्ति सदा श्रीदा गायत्र्या इव कुक्षयः ॥१॥ मनुष्याणां हि सर्वेषां वागर्थमनुवर्तते । कवीनां तु समर्थानां वाचमर्थोऽनुवर्तते ॥ २ ॥

सिद्धिर्लोकाच्च ॥ १ ॥

सिद्धिरिह प्रस्तुता प्राकृतशब्दसंबन्धिनी परिगृह्यते। सा च लोकाद्भवति। यस्मात् ऋऌवर्णाभ्यामैकारौकाराभ्यामसंयुक्तङञकाराभ्यां शषाभ्यां द्विवचनादिना च रहितः शब्दोच्चारो लोकव्यवहारादेवोपलभ्यते, देश्याश्च शब्दाः, तस्मात्सिद्धिर्लोकादिति वेदितव्यम्। चकाराद्वक्ष्यमाणाच्च लक्षणादनैकान्ताच्च ॥१॥

अनुक्तमन्यशब्दानुशासनवत् ॥ २ ॥

यदिह स्वरादिसंज्ञात्वेन संधिप्रभृतिकार्यत्वेन चानुक्तं तदन्यशब्दानुशासनवत्। कौमारजैनेन्द्रपाणिनीयप्रभृतिषु व्याकरणेषु यथोक्तं तथैव वेदितव्यम् ॥ २ ॥

संज्ञा प्रत्याहारमयी वा ॥ ३ ॥

इह प्राकृतव्याकरणे संज्ञा प्रत्याहारस्वरूपा व्यवह्रियते। वाग्रहणाद्वक्ष्यमाणाच्च। पुनः प्रत्याहारग्रहणं भूयोव्यवहारप्रदर्शनार्थम्। यथा—स्वरः अच्; ए ओ एङ्; ऐ औ ऐच्; व्यञ्जनं हल्; स्वादिः सुप्; त्यादिः तिङ्; इत्यादि ॥ ३ ॥

Sūtra 1. K om. सिद्धिरिह. B om. प्रस्तुता. BT_1 प्राकृतसंबन्धिनी; $KST_{2\cdot3}$ प्राकृतशब्दार्थसंबन्धिनी; M प्राकृतपदसंबन्धिनी for प्राकृतशब्दसंबन्धिनी. B गृह्यते; K परिगृह्यंते for परिगृह्यते. KS चैकारौकाराभ्यां; M ऐऔभ्यां for ऐकारौकाराभ्यां. B असंपृक्त° for असंयुक्त°; M om. असंयुक्त°. M om. शषाभ्यां. B om. च. K विरहितः for रहितः. M वक्ष्यमाणाल्लक्षणात् for वक्ष्यमाणलक्षणात्. GT_3 अनेकान्ताल्लक्षणाच्च for अनेकान्ताच्च. 2. B om. संधिप्रभृतिकार्यत्वेन च. $T_{1\cdot2}$ °नानुक्तं for चानुक्तं. $BMT_{1\cdot2}$ तत्सर्वमन्य° for तदन्य.° KS °पाणिनीयादिव्याक°; T_3 °जैनेन्द्रब्राह्मचन्द्रपाणिनीय° for °पाणिनीयप्रभृतिषु व्याक°. $BT_{1\cdot2}$ तत्तथैवेति for तथैव. 3. T_3 प्रत्याहाररूपा for प्रत्याहारस्वरूपा. M वक्ष्यमाणाल्लक्षणाच्च for वक्ष्यमाणाच्च. M पुनर्ग्रहणं for पुनःप्रत्याहारग्रहणं. G व्यवहारस्य दर्शनार्थम्; T व्यवहारदर्शनार्थम् for व्यवहारप्रदर्शनार्थम्. K स्वादिषु सुप् for स्वादिः सुप्.

सुप्स्वादिरन्त्यहला ॥ ४ ॥

सुप्सु स्वादिषु विभक्तिषु आदिर्वर्णो वचनं वा अन्त्यहला अन्त्यव्यञ्जनेन सह इत्संज्ञो भवति। यथा—सु औ जस्, सुस्; अम् औट् शस्, अस्; एवं टास्, ङेस्, ङसिस्, ङस्, ङिप्। पञ्चम्या ङस् इति वक्तव्ये ङसिस् इति ङसः षष्ठ्येकवचनस्य संदेहार्थम् ॥ ४ ॥

ह्रो ह्रस्वः ॥ ५ ॥

एकमात्रो यो वर्णो ह्रस्व इति प्रसिद्धस्तस्य ह्र इति संज्ञा ॥ ५ ॥

दिर्दीर्घः ॥ ६ ॥

द्विमात्रो यो वर्णो दीर्घ इति रूढस्तस्य दिः इति संज्ञा ॥ ६ ॥

शषसाः शुः ॥ ७ ॥

श ष स इत्येते वर्णाः शुसंज्ञका भवन्ति ॥ ७ ॥

सः समासः ॥ ८ ॥

समासः ससंज्ञको भवति ॥ ८ ॥

---

4. S सुप्स्वादिषु for सुप्सु स्वादिषु. K आदिवर्णो for आदिर्वर्णो. T सहसंज्ञा भवन्ति for सहेत्संज्ञो भवति. KS om. यथा. B om. एवं. B reads: टा भ्यां भिस् टास्; ङे, भ्यां भ्यस् ङेस्; ङसि भ्यां भ्यस् ङसिस्; ङस् ओस् आम् ङाम्; ङि ओस् सुप् ङिप् for टास्...ङिप्. B om. वक्तव्ये. M S इति तु for इति. 5. For Sūtras 5 and 6, M reads दि दीर्घः ह्रो ह्रस्वः, but the order of the Com. is as in our text. M एकमात्रवर्णो for एकमात्रो यो वर्णो. G वर्णो यो; S om. वर्णो. S ह्रा इति. for ह्र इति. T_3 adds भवति after संज्ञा. 6. K M S दि दीर्घः for the Sūtra. B GT_1 यो द्विमात्रो; M यो द्विमात्रको for द्विमात्रो यो. G प्रसिद्धः for रूढः. K M दि; ST दी for दिः. 7. M शुम्; T_{1-3} शु for शुः in the Sūtra. G इत्येते त्रयो वर्णाः for इत्येते वर्णाः. K M शुसंज्ञा; S सुसंज्ञा for शुसंज्ञका. *8 K M S ससंज्ञो for ससंज्ञको.*

आदिः खुः ॥ ९ ॥

आदिर्वर्णः खुसंज्ञको भवति ॥ ९ ॥

गो गणपरः ॥ १० ॥

आदिरिति वर्तते । गणप्रधानो य आदिशब्दः स गसंज्ञको भवति । यथा गुणादिरित्यादौ गुणग इत्यादि ॥ १० ॥

द्वितीयः फुः ॥ ११ ॥

शब्दस्य द्वितीयो वर्णः फुसंज्ञको भवति ॥ ११ ॥

संयुक्तं स्तु ॥ १२ ॥

व्यञ्जनेन युक्तं संयुक्तम्, तस्य स्तु इति संज्ञा ॥ १२ ॥

तु विकल्पे ॥ १३ ॥

विकल्पे विभाषायां तु शब्दः प्रयुज्यते वाशब्दवत् ॥ १३ ॥

प्रायो लिति न विकल्पः ॥ १४ ॥

यः कार्यार्थं सूत्रेऽनुबध्यते न तु प्रयोगे दृश्यते स इत्। अनुबन्ध इति व्याकरणान्तरे लक्षणम्। लकारः इत् यस्यासौ लित्। लिति कार्ये विकल्पः प्रायो न भवति ॥ १४ ॥

शिति दीर्घः ॥ १५ ॥

शानुबन्धे कार्ये सति पूर्वस्य स्वरस्य दीर्घो भवति। यथा 'शि स्लुङ् न पुनरि तु [१-१-२८]। अत्र नपुनःशब्दे अन्त्यव्यञ्जनस्य शानुबन्धेकारलोपयोः पूर्वस्याचो दीर्घः। णउणाइ, णउणा ॥ १५ ॥

---

9. T₁ आदि ओ for the Sūtra. G आदिवर्णः; MS om. वर्णः. S खुसंज्ञो; T₁ असंज्ञको for खुसंज्ञको. 10. G आदिरित्यनुवर्तते. Gp तस्य गसंज्ञा भवति; K M S स गसंज्ञो भवति. 11. M षुः for फुः in the Sūtra. M षुसंज्ञो; S फुसंज्ञो for फुसंज्ञको. 12. B Gp T संयुक्तः स्तुः; M संयुक्तस्तु for the Sūtra. G व्यञ्जनेन संयुक्तो वर्णः स्तुसंज्ञको भवति; M व्यञ्जनेन युक्तस्य स्तु इति संज्ञा. 14. T₁ प्रत्ययो for प्रायो in the Sūtra. B om. प्रयोगे. BT₁₋₂ सोऽनुबन्ध इति *व्याकरणान्तरे लक्षणम्. G यस्य स for यस्यासौ. 15.* S शीति for शिति in the Sūtra. G पूर्वस्याचो for पूर्वस्य स्वरस्य. K M S शानुबन्धयोरीकारलोपयोः for शानुबन्धेकारलोपयोः. M om. णउणाइ णउणा; B T add पक्षे णउण after णउणा.

सानुनासिकोच्चारं ङित् ॥ १६ ॥

ङकारानुबन्धं कार्यं सानुनासिकोच्चारं भवति। यथा—'कामुकयमुनाचामुण्डातिमुक्तके मो ङ्लुङ्' [१·३·११] काउँओ। जउँणा। अत्र मकारस्य ङानुबन्धे लोपे शेषस्य स्वरस्य सानुनासिक उच्चारः ॥ १६ ॥

बहुलम् ॥ १७ ॥

अधिकारोऽयमा शास्त्रपरिसमाप्तेः। यत्प्राकृते लक्षणमुच्यते तद्बहुलं भवतीति वेदितव्यम्। ततश्च 'क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव' भवति। तच्च यथास्थानं दर्शयिष्यामः ॥ १७ ॥

दिह्रौ मिथः से ॥ १८ ॥

से समासे दिह्रौ दीर्घह्रस्वौ मिथः अन्योन्यस्य बहुलं भवतः। तत्र ह्रस्वस्य दीर्घः—अन्तर्वेदिः अन्तावेई। सप्तविंशतिः सत्तावीसा॥ क्वचिद्विकल्पः—वारिमती वारीमई वारिमई। पतिगृहं पईहरं पइहरं। युवतिजनः जुवईजणो जुवइजणो। वेणुवनं वेणूवणं वेणुवणं॥ दीर्घस्य ह्रस्वः—णिअम्बसिलखलिअवीइमालस्स, नितम्बशिलास्खलितवीचिमालस्य। यमुनातटं जउँणअडं

---

16. B यत्कार्यं तत् for कार्यं. K S अनुनासिकोच्चारं for सानुनासिकोच्चारं. S मोत् (?) for मो ङ्लुङ्. K S काउंओ for काउँओ; in fact Mss do not show the अनुनासिक sign even where it is needed. After जउँणा G adds अणिउँत्तओ चाउँण्डा. K S ङानुबन्धो लोपः for अनुबन्धे लोपे. S अनुनासिक उच्चारः. G सानुनासिकोच्चारः for सानुनासिक उच्चारः. 17. B प्राकृतलक्षणं for प्राकृते लक्षणं. S om. क्वचिदप्रवृत्तिः After क्वचिदन्यदेव, G adds: विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति. G M om. भवति. 18. M om. से; After मिथः M adds परस्परं. B अन्योन्यं for अन्योन्यस्य. After अन्तावेई B adds अन्तवेई. After सत्तावीसा B adds सत्तवीसा. B M S om. क्वचिद्विकल्पः G K वारिमयी for वारिमई. S om. वारिमइ. K M पईघरं पइघरं for °हरं S om. पइहरं. After जुवइजणो G M add: ताम्यति युवतिसार्थकः, तम्मइ जुवईसत्थओ (रत्ना. १·१६); Gp भम्मइ जुवईसत्थओ इति प्रचुरः पाठः. After वेणुवणं G adds: सितासितं सिआसिअं सीआसीअं। भुजयन्त्रं भुअयन्तं भुआयन्तं.

जउँणाअडं । नदीस्रोतः णइसोत्तं णईसोत्तं । गौरीगृहं गोरिघरं गोरीघरं । वधूमुखं वहुमुहं वहूमुहं ॥ १८ ॥

संधिस्त्वपदे ॥ १९ ॥

संस्कृतोक्तः संधिः सर्वः प्राकृते भवति तु, अपदे एकपदे न भवति । तुशब्दो विकल्पार्थः । व्यासर्षिः वासेसी वासइसी । विषमातपः विसमाअवो विसमआअवो । कवीश्वरः कईसरो कइईसरो । स्वादूदकं साऊअअं साउउअअं ॥ अपद इति किम् । मुद्धाए मुद्धाइ मुग्धायाः । वच्छाओ वच्छाउ वृक्षात् । महइ महति, पूजयतीत्यर्थः ॥ बहुलाधिकारात्क्वचिदेकपदेऽपि ॥ करिष्यति काही काहिइ । द्वितीयः बीओ बिइओ ॥ १९ ॥

न यण् ॥ २० ॥

संधिरित्यनुवर्तते । 'इको यणचि' [पा० ६·१·७७] इति यः संस्कृते यणादेशः संधिरुक्तः स प्राकृते न भवति । इवर्णस्य यत्वमुवर्णस्य च वत्वं न भवतीत्यर्थः ॥ यणिति यवरलानां परिग्रहेऽपि प्राकृते ऋवर्णऌवर्णयोः प्रयोगाभावाद्यत्ववत्वयोरेवायं निषेधः । नखप्रभावल्यरुणः णहप्पहावलिअरुणो । संध्यावध्ववगूढः, संझावहुअवऊढो ॥ यणिति किम् । गूढोदरतामरसानुसारिणी, गूढोअरतामरसाणुसारिणी ॥ २० ॥

K जउणअडं for जउँणअडं. K om. णईसोत्तं. K गउरिघरं for गोरिघरं. After वहूमुहं G adds: सखीजनः सहीअणो सहिअणो (कर्णपूरं कण्णऊरं कण्णउरं- पीतापीतं पीआपीअं पिआपिअं, लक्ष्मीपतिः लच्छीवई लच्छिवई). 19. B M om. अपदे. S om. साउउअअं, After इति किम्, G adds: (पाओ पादः । पई पतिः) B S T वच्छाइ वत्साः; K वत्साइ वत्साओ वत्साः. B om महति. B एकपदे च for एकपदेऽपि. G बीओ बिइओ (बिइज्जो) द्वितियः for द्वितियः बिइओ. 20. B om. संधिरित्यनुवर्तते. G M यणादेशरूपः for यणादेशः. B T om. संधिरुक्तः. K om. च. B भवति for भवतीत्यर्थः. G ऋऌवर्णाभावात् for ऋऌवर्णयोः प्रयोगाभावात्. S om. °वत्व.° After निषेधः, G adds: (न वेरिवग्गे वि अवआसो, न वैरिवर्गेऽप्यवकाशः) वन्देमि अज्जवइरं, वन्दे आर्यवैरम् (वज्रम् ?). B S T om. गूढोदरतामरसानुसारिणी. K adds: गूढोअर in marg.

एङः ॥ २१ ॥

नेत्यनुवर्तते । एङित्येदोतौ । एदोतोः संस्कृतोक्तः संधिः प्राकृते न भवति । देवीए आसणं । पंचालादो आगओ । देवो अहिणंदणो ॥ अहो अच्छरिअं इत्यादयः संस्कृतवदेव ॥२१॥

शेषेऽच्यचः ॥ २२ ॥

युक्तस्य हलो लोपे योऽवशिष्यतेऽच् स शेषः, तस्मिन्नचि परे अचः संधिर्न भवति । गगन एव गन्धकुटीं कुर्वन्ति, गअणे च्चिअ गन्धउडिं कुणन्ति । फणामणिप्रदीपाः, फणामणिप्पईवा । ज्योत्स्नापूरितकोशः, जोण्हाऊरिअकोसो ॥ बहुलाधिकारात्क्वचिद्विकल्पः । कुम्भकारः कुम्भआरो कुम्भारो । सुपुरुषः सुउरिसो सूरिसो ॥ क्वचित्संधिरेव । शातवाहनः सालाहणो । चक्रवाकः चक्काओ ॥ सालवाहणो चक्कवाओ इत्येतौ प्रायोग्रहणाद्वस्य लोपाभावे भवतः । वलोपे तु संधिरेव ॥२२॥

तिङः ॥ २३ ॥

अच इत्यनुवर्तते, अचीति च । तिङिति तिबादिविभक्तिः । तिङ्संबन्धिनोऽचः अचि परे संधिर्न भवति । भवतीह, होइ इह । पिबतूदकं, पिबउ उदअं ॥२३॥

लोपः ॥ २४ ॥

अचः अचि परे बहुलं लोपो भवति । त्रिदशेशः तिअसीसो । निश्वासोच्छ्वासौ णीसासूसासा ॥ २४ ॥

---

21. S T om. एङित्येदोतौ. B om, पञ्चालादो आगओ. After आगओ, G adds लद्धो (?) and K adds उक्कोओ. S देहो for देवो. K S T अच्चरिअं for अच्छरिअं. 22. M om. युक्तस्य. B योऽच् शिष्यते for योऽवशिष्यते. M तस्मिन्परे for तस्मिन्नचि परे. B गगणे for गअणे. B °ऊरिद° for °ऊरिअ. K °ओसो for °कोसो Gp विभाषा for विकल्पः. B °ग्रहणाच्च वस्य for °ग्रहणाद्वस्य. B K M T लोपे for वलोपे. M om. तु; K च for तु. 23. B अच इत्येतदनुवर्तते. S. $T_{1\cdot3}$ अचीति वा for अचीति च. तिङ्विभक्तिः for तिबादिविभक्तिः G M पिज्जउ for पिबउ. 24. B णीसासूसासौ; K S $T_{2\cdot3}$ णीसासूसासो for °सासा.

अन्त्यहलोऽश्रदुदी ॥ २५ ॥

लोप इत्यनुवर्तते । शब्देष्वन्त्यहलः अन्त्यव्यञ्जनस्य लोपो भवति । अश्रदुदी श्रदित्यव्ययमुदित्युपसर्गं वर्जयित्वा । यावत् जाव । यशस् जसो । तमस् तमो । जन्मन् जम्मो ।। अश्रदुदीति किम् । श्रद्धा सद्धा । श्रद्धाति सद्दहइ । श्रद्धानं सद्दहणं । उद्गतं उग्गअं । उन्नतं उण्णअं ।। समासे तु वाक्यविभक्त्यपेक्षया अन्त्यत्वमनन्त्यत्वं च । तेनोभयमपि भवति । सद्भिक्षुः सब्भिक्खू सभिक्खू । सज्जनः सज्जणो सजणो । एतद्गुणाः एअग्गुणा एअगुणा । तद्गुणाः तग्गुणा तगुणा ।।२५।।

निर्दुरि वा ॥ २६ ॥

निर् दुर् इत्येतयोरुपसर्गयोरन्त्यहलो वा लोपो भवति । निःसहं णिस्सहं णिसहं । निर्घोषः णिग्घोसो णिघोसो । दुःसहः दुस्सहो दूसहो । दुःखितः दुक्खिओ दुहिओ । दुर्भगः दुब्भओ दूहवो ।।२६।।

अन्तरि च नाचि ॥ २७ ॥

अन्तर्शब्दे चकारान्निर्दुरोश्च अन्त्यहलोऽचि परे लोपो न भवति । अन्तरप्पा । णिरवसेसं । दुरुत्तरं । दुरवगाहं।। क्वचित् अन्ताउवरि इति च दृश्यते।।

शि श्लुक् नपुनरि तु ॥ २८ ॥

नपुनर्शब्दे अन्त्यव्यञ्जनस्य शानुबन्ध इकार श्लुक् च वा भवति । शित्त्वात्पूर्वस्य दीर्घः । णउणाइ णउणा ।। पक्षे णउण । पुनर्शब्देऽपि पुणाइ इति दृश्यते ।।२८।।

---

25. M अश्रदुति; P अश्रदुदि for अश्रदुदी in the Sūtra. K आव for जाव. K असो for जसो. G सद्दहाणं for सद्दहणं. M वाक्यविभक्त्यपेक्षायां for °पेक्षया. G चेति for च. M om. भवति. T एअंगुणा for एअग्गुणा. B M om. तद्गुणा तग्गुणा तगुणा. 26. G निर् दुर् for निस् दुस्. K लोपो वा for वा लोपो. B om. Sk equivalents निःसहं, दुःसहं, दुखितः and दुर्भगः. G निःसहः णिस्सहो णिसहो for निःसहं etc. B दुब्भवो for दुब्भओ. 27. T नाचिः for नाचि in the Sūtra. After भवति G reads: अन्तरात्मा अन्तरप्पा । निरन्तरं णिरन्तरं. G om. अन्तरप्पो. M अन्तउपरि; K S अन्ताउपरि for अन्ताउवरि. G वर्तते for दृश्यते. 28. B G M T लुक्. for श्लुक्. B om. पक्षे; M om. पक्षे णउण. After णउण G K add णउणो. M पुणा for पुणाइ.

अविद्युति स्त्रियामाल् ॥ २९ ॥

स्त्रीलिङ्गे वर्तमानस्यान्त्यहल आत्वं भवति । लानुबन्धान्नित्यम् । अविद्युति विद्युच्छब्दं वर्जयित्वा । लोपापवादः । सरित् सरिआ । प्रतिपद् पडिवआ । संपद् संपआ ॥ बहुलाधिकारादीषत्स्पृष्टयश्रुतिरपि । सरिया । पडिवया । संपया ॥ अविद्युतीति किम् । विज्जू । विज्जुला ॥२९॥

रो रा ॥ ३० ॥

स्त्रियां वर्तमानस्यान्त्यरेफस्य रा इत्ययमादेशो भवति । गिर्, गिरा । पुर्, पुरा । धुर्, धुरा ॥ ३० ॥

हः क्षुत्ककुभि ॥३१॥

क्षुध् ककुभ् इत्येनयोरन्त्यहलो हकारो भवति । छुहा । कउहा ॥३१॥

धनुषि वा ॥३२॥

ह इत्यनुवर्तते । धनुःशब्देऽन्त्यहलो हो वा भवति । धणुहं धणू ॥३२॥

सशाशिषि ॥ ३३ ॥

वेत्यनुवर्तते । आशिर्शब्देऽन्त्यहलः सशादेशो वा भवति । शित्वात्पूर्वस्य दीर्घः । आसीसा आसी ॥ ३३ ॥

स आयुरप्सरसोः ॥ ३४ ॥

वेत्यनुवर्तते । आयुष् अप्सरस् अनयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सकारो वा भवति । दीहाउसो दीहाऊ । अच्छरसा अच्छरा ॥ ३४ ॥

---

29. T सरीआ for सरिआ. G om. सरिया । पडिवया । संपया. G अविद्युति किम् for अविद्युतीति किम्. 30. S अन्त्यस्य रेफस्य for अन्त्यरेफस्य. T om. अन्त्य°. K M om. गिर्, पुर्, धुर्. S पूः for पुर्. S om. धुर्. 31. K M क्षुत् for क्षुध्. K ककुप् for ककुभ्. M हकारादेशो for हकारो. 32. M ह इति वर्तते for ह इत्यनु°. 33. G सादेशो; M सकारो for सशादेशो. M आसिसा for आसीसा. K om. आसी. After आसी G adds: पक्षे आत्वम् । आसीआ. 34. G M om. वेत्यनुवर्तते. G om. आयुष् अप्सरस्. G आउसो आऊ for दीहाउसो दीहाऊ. T अच्चरा अच्चरसा अप्परा: for अच्छरसा...

दिक्प्रावृषि ॥ ३५ ॥

स इति वर्तते । दिक् प्रावृष् इत्येतयोरन्त्यहलः सो भवति । योगविभागान्नित्यम् । दिसा । पाउसो ॥ ३५ ॥

शरदामत् ॥ ३६ ॥

शरत्प्रकाराणामन्त्यहलोऽत्वं भवति । शरद्, सरओ । भिषक्, भिसओ ॥ ३६ ॥

तु सक्खिणभवन्तजम्मणमहन्ताः ॥ ३७ ॥

साक्ष्यादयः शब्दा विहितान्त्यव्यञ्जनादेशा वा निपात्यन्ते । सक्खिणो सक्खी । भवन्तो भवं । जम्मणं जम्मो । महन्तो महं ॥३७॥

यत्तत्सम्यग्विष्वक्पृथक्को मल् ॥ ३८ ॥

यदादीनामव्ययानामन्त्यस्य हलो मकारो भवति । लित्वान्नित्यम् । यत्, जं । तत्, तं । सम्यक्, सम्मं । विष्वक्, वीसुं । पृथक्, पिहं ॥३८॥

मोऽचि वा ॥ ३९ ॥

म इति वर्तते । अन्त्यमकारस्याचि परे मकारो वा भवति । लोपापवादः । उसहमजिअं च वन्दे । वन्दे उसहं अजिअं ॥ ३९ ॥

बिन्दुल् ॥ ४० ॥

शब्दानामन्त्यमकारस्य बिन्दुर्भवति । लित्वान्नित्यम् । फलं । वच्छं । सव्वं । गिरिं । वहुं ॥ ४० ॥

---

35. M दिक्प्रावृषोः for दिक् प्रावृष् इत्येतयोः. 36. Gp reads अल् for अत् in the sūtra. K om. शरद्. 37. M T सक्खिणादयः for साक्ष्यादयः. G M om. वा. After निपात्यन्ते G M add: तुशब्दो विकल्पार्थः G gives साक्षी, भवान्, जन्मन् and महान् before their Pr. equivalents. 38. B om. हलो. G M T लित्वान्न विकल्पः for लित्वान्नित्यम्. B K S om. Sk words. Gp विस्सं for वीसुं. Gp पुहं for पिहं. 39 G S T अजअं for अजिअं. 40. P reads बिन्दुर्ल् for the sūtra. G लित्वान्न विकल्पः for लित्वान्नित्यम्. G फलं भवं गिरिं हरिं for फलं...वहुं. K वत्सं for वच्छं. T om. वच्छं. विच्भं for सव्वं.

हलि ङञणनाम् ॥ ४१ ॥

म इति निवृत्तम् । ङ ञ ण न इत्येतेषां हलि व्यञ्जने परे बिन्दुर्भवति । ङस्य—पङ्क्तिः, पंती । पराङ्मुखःपरंमुहो ।।ञस्य—कञ्चुकः,कंचुओ । लाञ्छनम्, लंछणं ।। णस्य—षण्मुखः, छंमुहो । उत्कण्ठा, उक्कंठा ।। नस्य-सन्ध्या, संझा । विन्ध्यः, विंझो ।। ४१ ।।

स्वरेभ्यो वक्रादौ ॥ ४२ ॥

वक्रादिषु प्रथमादिभ्यः स्वरेभ्यो यथादर्शनं बिन्दुर्भवति । वंकं वक्रम् । कुंमलं कुड्मलम् । बुंधणं बुध्नम् । पुंछं पुच्छम् । मुंढा मूर्धा । गुंछं गुच्छम् । कंकोडो कर्कोटः । गिंठी गृष्टिः। दंसणं दर्शनम् । फंसो स्पर्शः । अंसू अश्रु । मंसू श्मश्रु । तंसं त्र्यश्रम् । मंजारो मार्जारः । विंछिओ वृश्चिकः । एषु प्रथमात् ।। मणंसिणी मनस्विनी । मणंसिला मनःशिला । वअंसो वयस्यः । पंसत्थं पार्श्वस्थम् । पडिंसुआ प्रतिश्रुत् । एषु द्वितीयात् ।। उअरिं उपरि । अणिउंतअं अतिमुक्तकम् । अनयोस्तृतीयात् ।। क्वचिच्छन्दःपूरणेऽपि । देवंणाअसुवत्तं देवनागसुवक्त्रम् ।। क्वचित् गिट्ठी, मज्जारो, मणासिला मणोसिला इति च दृश्यते ।। ४२ ।।

---

41. G ङ्ञणनानाम् for ङञणनाम् in the Sūtra. G अन्त्यहल इति for म इति. B K S T ङ for ङस्य, ञ् for ञस्य, ण for णस्य and न for नस्य. B छंमुहो for छंमुओ. K om. विन्ध्यः. 42. K om. Sk. equivalents of Pr. words. G कुंपलं; K गुप्पलं for कुंमलं. K बुन्धं for बुन्धणं. B पुंजं; G पुंछो for पुंछं. B गुंजं; G गुंछो for गुंछं. BT काकोंटः fror कर्कोटः. B om. गिंठी गृष्टिः; K गुंठि गृष्टि for गिंठी गृष्टिः B om. फंसो...मूर्धा. K om. वअंसो. G K om. पंसत्थं पार्श्वस्थम्. B पडिंसिआ; Gp पडंसुआ; M पडुंसुआ for पडिंसुआ. B उपरिं; K उवरिं for उअरिं. Gp K अइमुंतअं for अणिउंतअं. B gives the list of words in वक्रादिगण in a versified form as: पुच्छाश्रुबुध्नदर्शनकुड्मलपार्श्वस्थगुच्छकाकोंटाः । पशु (?) श्मश्रु-वयस्यप्रतिश्रुदतिमुक्तगृष्टिमार्जाराः॥स्पर्शनमनःशिलोपरिमनस्विवृश्चिकमनस्विनीत्र्यश्राः। मूर्धेति च......पूर्तौ तु देवनागोऽपि; G K M give these words in prose. K om. क्वचित्

क्त्वासुपोस्तु सुणात् ॥ ४३ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य सुपश्च संबन्धिनः सुकाराण्णकाराच्च परोबिन्दुर्भवति तु । सुकारात्—वच्छेसु वच्छेसुं । अम्हेसुं अम्हेसु । तुम्हेसुं तुम्हेसु ॥ क्त्वाप्रत्ययस्य णकारात्—काऊणं काऊण । काउआणं काउआण ॥ सुपः संबन्धिनो णकारात्-वच्छेणं वच्छेण । वच्छाणं वच्छाण । ममाणं ममाण । तुम्हाणं तुम्हाण ॥ अम्हाणं अम्हाण ॥ सुणादिति किम् । करिअ । अग्गिणो ॥४३॥

लुङ् मांसादौ ॥ ४४ ॥

वेति वर्तते । बिन्दुरित्यधिकृतः। तस्य बिन्दोरिति षष्ठयन्तपरिणामः। बिन्दोर्मांसादिषु लुग्वा भवति । मासं मंसं । मासलं मंसलं । पासू पंसू । कासं कंसं । कह कहं । इआणि इआणिं । दाणि दाणिं । कि करेमि किं करेमि । समुहं संमुहं । नूण नूणं । एव एवं ॥ ४४ ॥

संस्कृतसंस्कारे ॥ ४५ ॥

लुगिति वर्तते । संस्कृतसंस्कारयोर्बिन्दोर्लुग् भवति । योगविभागा-न्नित्यम् । सक्कअं । सक्कारो ॥ ४५ ॥

ङे तु किंशुके ॥ ४६ ॥

किंशुके बिन्दोः ङानुबन्ध एकारो भवति तु । केसुओ किंसुओ ॥४६॥

---

43. B वा बिन्दुर्भवति for बिन्दुर्भवति तु. K om. तु । सुकारात्. S om. अम्हेसुं अम्हेसु । तुम्हेसुं तुम्हेसु. G क्त्वासंबंधिनः for क्त्वाप्रत्ययस्य. K om. णकारात्. B om. काऊण. B om. सुपः संबन्धिनो णकारात् K om. ममाणं ममाण । तुम्हाणं तुम्हाण. After अग्गिणो K adds अग्नेः. 44. G M त्विति for वेति. K S बिन्दुरित्यधिकृतस्य बिन्दोरिति; M बिन्दुरित्यधिकृत्य बिन्दोरिति. M भवति तु for वा भवति: G om, करेमि in both places. K णूण णूणं.for नूण नूणं. G एव्व एव्वं. K gives Sk equivalents of Pr. words at the end, while B reads: मांसादिस्तु तदानीं कथमेवं किं करोमि नूनमिदानीम् । कास्यमांसलसंमुखपांसुलपांसव (?) इत्याकृति हि गणः 45. G लुगित्यनुवर्तते for लुगिति वर्तते. B M S om. योगविभागान्नित्यम्. 46. B ङेत्;M दे for ङे in the sūtra. B G M om. तु. T किस्सुओ for किंसुओ.

वर्गेऽन्त्यः ॥ ४७ ॥

त्वित्यनुवर्तते । बिन्दोर्वर्गे परे प्रत्यासन्नस्तस्यैव वर्गस्यान्त्यो भवति तु । पङ्को पंको । अङ्गणं । अंगणं । लञ्छणं लंछणं । सञ्ञा संञा । कण्टओ कंटओ । मण्डणं मंडणं । अन्तरं अन्तरं । पन्थो पंथो । छन्दो छंदो । बन्धू बंधू । कम्पइ कंपइ । आरम्भो आरंभो ॥ वर्ग इति किम् । संसओ ॥ नित्यमिच्छन्त्यन्ये ॥ ४७ ॥

विंशतिषु त्या श्लोपल् ॥ ४८ ॥

विंशतिप्रकारेषु ति इत्यवयवेन सह बिन्दोर्लोपो भवति । शित्वात्पूर्वस्य दीर्घः । लित्वान्नित्यम् । वीसा विंशतिः । तीसा त्रिंशत् । तेवीसा त्रयोविंशतिः । तेत्तीसा त्रयस्त्रिंशत् । दाढा दंष्ट्रा । सीहो सिंहः । सिंहो सिंघो इति च दृश्यते ॥ नाम्नि–सिंहदन्तो । सिंहराओ ॥ ४८ ॥

स्नमदामशिरोनभो नरि ॥ ४९ ॥

स्नं सान्तं नान्तं च शब्दरूपं नरि पुंलिङ्गे प्रयोक्तव्यम् । अदामशिरोनभः । दामन्, शिरस्, नभस् इत्येतान्वर्जयित्वा ॥ सान्तं यथा–जसो यशः । तमो तमः । उरो उरः । तेओ तेजः । पओ पयः ॥ नान्तं यथा– जम्मो जन्म । कम्मो कर्म । वम्मो वर्म ॥ अदामशिरोनभः इति किम् । दामं । सिरं । णहं ॥ यच्च

---

47 G M त्विति वर्तते for त्वित्यनुवर्तते. B S परे सति तस्यैव for परे प्रत्याशन्नस्तस्यैव. B T om. तु; after तु G adds वङ्को वंको. After अंगणं S adds अङ्कणं अंकणं. G om. पन्थो पंथो. S T चंदो चन्दो for छन्दो छंदो. G K S om. बन्धू बंधू. After कंपइ K adds चंपइ चम्पइ. 48 S om. श्लोपल् in the Sūtra. T शोपल् for श्लोपल् in the Sūtra. B इत्यनेन; G इत्यव्ययेन for इत्यवयवेन. K S स्यात् for भवति. K does not give Sk equivalents of Pr. words. G om. तेवीसा तेत्तीसा. K बावीसा for तेत्तीसा. B सिग्घो for सिंघो. After दृश्यते B reads an additional sūtra. नाम्नि सिंहदन्तः । सिहदन्तो ॥ नाम्नीति किम् । सीहरवो सिग्घरवो. G सिंहदन्तो for सिंहदत्तो. सिंघरओ K T, संघराओ for सिंहराओ. 49 B सनं T सिन; for स्न° in the Sūtra. B सनं for

सदस् सअं । वयस् वअं, सुमनस् सुमणं, शर्म सम्मं इति च दृश्यते तद्बहु-लाधिकारात् ॥ ४९ ॥

शरत्प्रावृट् ॥ ५० ॥

नरीत्यनुवर्तते । शरत्प्रावृषौ पुंसि प्रयोक्तव्यौ । सरओ । पाउसो ॥ ५० ॥

अक्ष्यर्थकुलाद्या वा ॥ ५१ ॥

नरीति वर्तते । अक्षिपर्यायाः कुलादयश्च शब्दाः पुंलिङ्गे वा प्रयोक्तव्याः । अक्ष्यर्थाः—एस अच्छी । णच्चाविआइँ तेणम्ह अच्छीइं, नर्तिते तेनास्माकमक्षिणी ॥ अञ्जल्यादिपाठात्स्त्रीलिङ्गेऽपि । एसा अच्छी ॥ चक्खू चक्खूइं । नअणा नअणाइं । लोअणा लोअणाइं ॥ कुलादिः—कुलो कुलं । वअणो वअणं । माहप्पो माहप्पं । दुक्खो दुक्खं । भाअणो भाअणं । विज्जुला विज्जुलाइं । छन्दो छन्दं ॥ कुलादिः—कुल, वचन, माहात्म्य, दुःख, भाजन, विद्युत्, छन्दस् इत्यादि ॥ नेत्ता नेत्ताइं, कमला कमलाइं इत्यादि संस्कृत-वदेव ॥ ५१ ॥

स्त. B सान्तः for सान्तं. B K om. यथा. After तमः B adds सदो मणो. B नान्तः for नान्तं. B K om. यथा. G मम्मो for कम्मो; S om. कम्मो. S चम्मो for वम्मो. B अन्यच्च for यच्च. B K om. वयस् वअं. B om. तद्. 50. S reads शरत्प्रावृदी for the Sūtra. B M om. नरीत्यनुवर्तते; K नरि इति वर्तते. B T प्रयोज्यौ for प्रयोक्तव्यौ. 51. M कुलाद्याः for कुलादयः B T प्रयोज्याः for प्रयोक्तव्याः G M S अक्ष्यर्थः for अक्ष्यर्थाः B णच्चाविआ तेणम्हाणमच्छी. G K कुलादि for कुलादिः. B हाअणा हाअणाइं for भाअणो भाअणं; K भाअणाइ for भाअणो. G विज्जुणा विज्जुए; M विज्जुणा विज्जुए for विज्जुला विज्जुलाइं B T read कुलादिः । कुलगो विद्युच्छन्दोभाजनमाहात्म्यदुःख-वचनानि in place of the list in prose. B K M om. कमला कमलाइं.

क्लीबे गुणाद्याः ॥ ५२ ॥

वेत्यनुवर्तते। गुणादयः शब्दा नपुंसके वा प्रयोक्तव्याः। गुणाइं गुणा। देवाइं देवा। मण्डलग्गं मण्डलग्गो। खग्गं खग्गो। बिन्दूइं बिन्दुणो। कररुहं कररुहो। रुक्खाइं रुक्खा। गुणादयः—गुण, देव, मण्डलाग्र, खड्ग, बिन्दु, कररु, हवृक्ष इत्यादि ॥ ५२ ॥

स्त्रियामिमाञ्जल्याः ॥ ५३ ॥

इमान्ता अञ्जल्यादयश्च शब्दाः स्त्रीलिङ्गे वा प्रयोक्तव्याः। एसा गरिमा एस गरिमो। एसा महिमा एस महिमो। एसा णिल्लज्जिमा एस णिल्लज्जिमो। एसा धुत्तिमा एस धुत्तिमो॥ अञ्जल्यादिः—एसा अञ्जली एस अञ्जली। बलीए बलिणा। णिहीए णिहिणा। रस्सीए रस्सिणा। पण्हा पण्हो। अच्छीए अच्छिणा। गण्ठीए गण्ठिणा। कुच्छीए कुच्छिणा। चोरिआ चोरिअं। विहीए विहिणा। पिट्ठी पिट्ठं। पृष्ठमित्त्वे कृते स्त्रियामेवेत्येके॥ अञ्जल्यादिः—अञ्जलि बलि निधि रश्मि प्रश्न अक्षि ग्रन्थि कुक्षि चौर्य विधि पृष्ठ इत्यादि॥ इमेति तन्त्रेण त्वादेशस्य डिमा इत्यस्य पृथ्व्यादेरिमनिचश्च संग्रहः। त्वादेशस्य स्त्रीत्वमेवेच्छन्त्येके॥ ५३ ॥

इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ
प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥ १॥

---

52. M om. वेत्यनुवर्तते; S त्वनुवर्तते. BT प्रयोज्याः for प्रयोक्तव्याः: B T read: गुणदेवमण्डलाग्रा; खड्गो बिन्दुश्च कररुहो वृक्षः for the list. 53. M om. शब्दाः. BT प्रयोज्याः for प्रयोक्तव्याः. S om. एसा महिमा एस महिमो. B T णिल्लच्छिमा for णिल्लज्जिमा. B थुगिमा थुंगिमो for धुत्तिमा धुत्तिमो. Bp गन्धीए गन्धिणो; K गण्डीए गण्डिणो; M दिट्ठीए दिट्ठिणा for गण्ठीए गण्ठिणा. B T read for the list कुक्षिबलनिधिरश्मिप्रश्नाक्षिग्रन्थिचौर्यविधिपृष्ठाः Colophon: K om देव°. T मुनिचन्द्र° for श्रुतधर° in s. M. B T इति. श्रीत्रिविक्रमदेव°; B श्रीविक्रमदेव;° M त्रैविक्रम° for त्रिविक्रम.° M प्रथम-स्याध्यायस्य for प्रथमाध्यायस्य.

द्वितीयः पादः ॥

निष्प्रती ओत्परी माल्यस्थोर्वा ॥ १ ॥

निर् प्रति इत्येतावुपसर्गौ माल्यशब्दे स्थाधातौ च परे ओत् परि इत्येवंरूपौ यथासंख्यं वा भवतः । ओमल्लं णिम्मल्लं निर्माल्यम् । ओमालयं वहइ । परिट्ठा पइट्ठा प्रतिष्ठा । परिट्ठिअं पइट्ठिअं प्रतिष्ठितम् ॥१॥

आदेः ॥ २ ॥

आदेरित्यधिकारोऽयम् ' अस्तोरखोरचः ' [१·३·७] इति सूत्रात्प्रागविशेषेण वेदितव्यः ॥ २ ॥

लुगव्ययत्यदाद्यात्तदचः ॥ ३ ॥

अव्ययात्त्यदादेश्च परस्य तदचः तयोरेवाव्ययत्यदाद्योरादेरचो बहुलं लुग्भवति । अम्हे एत्थ अम्हेत्थ, वयमत्र । जइ इमा जइमा, यदीमाः । जइ अहं जइहं, यद्यहम् ॥ ३ ॥

वालाब्वरण्ये ॥ ४ ॥

लुगित्यनुवर्तते । अलाबू अरण्य इत्येतयोरादेर्लुग्वा भवति । लाऊ अलाऊ । रण्णं अरण्णं ॥ ४ ॥

अपेः पदात् ॥ ५ ॥

वेति वर्तते । पदात्परस्यापीत्युपसर्गस्यादेर्लुग्वा भवति । किं पि किमवि । तं पि तमवि । केण वि केणावि । कहं पि कहमवि ॥ पदादिति किम् । अवि णाम ॥ ५ ॥

---

1. T₁ नीप्रेती for निष्प्रती in the Sūtra. B ओपरी for ओत्परी in the Sūtra. G K S परयोः for परे. B ओ for ओत्. B om. °रूपौ. Gp प्राप्नुतः for भवतः. B om. ओमालयं वहइ. S वइट्ठिअं for पइट्ठिअं. K om. निर्माल्यम्, प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठितम्. 2. Gp om. सूत्रात्. B T₁.₂ पृथग्विशेषणं वेदितव्यम् for प्रागविशेषेण वेदितव्यः. 3. G °त्यदाद्यात्तत्तदचः for त्यदाद्यात्तदचः in the Sūtra. G त्यदाद्यात् for त्यदादेः. B T om. तदचः. 4. B om. आदेः. B om. बहुलं. Gp adds वा after बहुलं. 5. G अनुवर्तते for वर्तते. G अव्ययस्य for उपसर्गस्य.

इतेः ॥ ६ ॥

पदादिति वर्तते । पदात्परस्य इतिशब्दस्यादेर्लुग्भवति । योगविभागान्नित्यम् । किमिति किं ति । यदिति जं ति । तदिति तं ति । युक्तमिति जुत्तं ति ॥ पदादित्येव ॥ इअ विंझगुहाणिलआए, इति विन्ध्यगुहानिलयायाः ॥६॥

तोऽचः ॥ ७ ॥

अचः स्वरात्परस्य इतिशब्दस्यादेरिकारस्य तकारो भवति । तह त्ति तथेति । झ त्ति झटिति । पिओ त्ति प्रिय इति ॥ अच इति किम् । किं ति ॥ ७ ॥

शोर्लुप्तयवरशोर्दिः ॥ ८ ॥

शोः शषसानां लुप्तयवरशोः लुप्तयवरशषसानामादेः स्वरस्य दिर्दीर्घो भवति । संयोगे उपर्यधो वा वर्तमानानां यवरशषसानां लोपे सति येऽवशिष्टाः शषसाः तेषामादेरचो दीर्घो भवतीत्यर्थः । शस्य यलोपे—कश्यपः कासवो । आवश्यकम् आवासयं । पश्यति पासइ ॥ वलोपे—अश्वः आसो । विश्वासः वीसासो । विश्वसिति वीससइ ॥ रलोपे—विश्रामः वीसामो । विश्राम्यति वीसामइ । मिश्रम् मीसं । संस्पर्शः संफासो ॥ शलोपे—दुश्शासनः दूसासणो । मनश्शिला मणासिला ॥ षस्य यलोपे—शिष्यः सीसो । पुष्यः पूसो । मनुष्यः मणूसो ॥ वलोपे—विष्वाणः वीसाणो । विष्वक् वीसुं ॥ रलोपे—कर्षकः कासओ । वर्षा वासा । वर्षः वासो ॥ षलोपे—निष्षिक्तः णीसित्तो ॥ सस्य यलोपे-सस्यम् सासं । कस्यचित् कासइ ॥ वलोपे—विकस्वरः विआसरो । निस्स्वः णीसो ॥ रलोपे-

---

6. T_1 इत विन्ध्य° for इति विन्ध्य°. 7. B om. स्वरात्. K S तकारादेशो for तकारो. K झडिति for झटिति. B S पिअ त्ति for पिओ त्ति. 8. Before शोः G adds अच इत्यस्य षष्ठ्यन्तविपरिणामः. B om. लुप्तयवरशोः. B परस्य for स्वरस्य. B T उपर्यधोभावेन वर्तमानानां for उपर्यधो वा वर्त°. B T_1 om. यवरशषसानां. K लोपो भवति for लोपे सति. T_2 ये अविशिष्टाः for येऽवशिष्टाः. G कासओ; T कासपो. B T वस्य लोपे for वलोपे. B वीससिइ for वीससइ. B सप्पासं for संफासो. After दूसासणो S adds सुदर्शनः सुदासणो. G विष्वासं वीसाणं for विष्वाणः वीसाणो.

उत्सः ऊसो । विस्रम्भः वीसम्भो ॥ सलोपे—निस्सहः णीसहो ॥ बहुलाधिकारा-ल्लोपे कचिदन्यस्याच आदेर्दीर्घः । जिह्वा जीहा ॥ 'दीर्घान्न' [१·४·८७] इति प्रतिषेधात् 'शेषादेशस्याह्नोऽचोऽस्वोः' [१·४·८६] इति सूत्रोक्तं द्वित्वं न भवति ॥ ८ ॥

हे दक्षिणेऽस्य ॥ ९ ॥

दिरित्यनुवर्तते । दक्षिणशब्दे अस्य अवर्णस्य दीर्घो भवति हे क्षस्य हकारे सति । दाहिणो ॥ हे इति किम् । दक्खिणो ॥ ९ ॥

तु समृद्ध्यादौ ॥ १० ॥

अस्येत्यनुवर्तते । समृद्ध्यादिषु शब्देषु आदेरवर्णस्य दीर्घो भवति तु । सामिद्धी समिद्धी समृद्धिः । पाडिसिद्धी पडिसिद्धी प्रतिसिद्धिः । सारिच्छो सरिच्छो सदृक्षः। माणंसी मणंसी मनस्वी । पासुत्तो पसुत्तो प्रसुप्तः । पाडिप्फद्धी पडिप्फद्धी प्रतिस्पर्धी । पाडिवआ पडिवआ प्रतिपत् । पावासू पवासू प्रवासी । आहिआई अहिआई अभिजातिः । पाअडं पअडं प्रकटम् । पाअअं पअअं प्रकृतम् । पासिद्धी पसिद्धी प्रसिद्धिः । पारकेरं परकेरं पारक्कं परक्कं परकीयम् । चाउरन्तं चउरन्तं चतुरन्तम् । आफंसो अफंसो अस्पर्शः । पावअणं पवअणं प्रवचनम् । पारोहो परोहो प्ररोहः । इत्यादि ॥ १० ॥

K adds भोजनं after वीसाणो. B T_2 वीसं; T_1 वीसी for वीसुं. G om. वलोपे. S पिकस्वरः पिकासरो for विकस्वरः विआसरो. T अन्यस्य च for अन्यस्याचः. 9. G हि for हे in the Sūtra and Com. T दक्षिणे अस्य for दक्षिणेऽस्य in the Sūtra. K हे क्षस्य for the Sūtra. 10. B om. शब्देषु. BT माणंसिणी मणंसिणी मनस्विनी for माणंसी ...मनस्वी. BT पाडिप्पद्धी पडिप्पद्धी; G प्रतिस्पर्द्धिः; T_2 पाडिप्पत्थी पडिप्पत्थी for पाडिप्फद्धी पडिप्फद्धी. B T आमिआई अमिआई for आहिआई अहिआई. K S om. पाअडं पअडं प्रकटम्. G om. पाअअं पअअं प्रकृतम्. B om. पारक्कं परक्कं. K reads परकरं twice for परक्कं. B T आपंसो अपंसो for आफंसो अफंसो. B T add: प्रसिद्धिसदृक्षमनस्विनीप्रसुप्तप्रवासिचतुरन्ताः । अभिजात्यस्पर्शप्रवचनप्ररोहपरकीयाः । प्रतिपत्प्रकटप्रकृताः सह प्रतिस्पर्धिना समृध्यादिः.

स्वप्नादाविल् ॥ ११ ॥

स्वप्नादिषु शब्देष्वादेरवर्णस्य इत्वं भवति । लित्त्वान्नित्यम् । सिविणो सिमिणो स्वप्नः । विअणं व्यजनम् । विलिअं व्यलीकम् । किविणो कृपणः । मिइङ्गो मृदङ्गः । ईसि ईषत् । वेडिसो वेतसः । दिण्णं दत्तम् । उत्तिमो उत्तमः । मिरिअं मरिचम् ॥ बहुलाधिकाराण्णत्वाभावे दत्ते तु इत्वं न भवति । दत्तं ॥ ११ ॥

पक्काङ्गारललाटे तु ॥ १२ ॥

पक्व अङ्गार ललाट इत्येतेषु आदेरस्य इत्वं भवति तु । पिक्कं पक्कं । इङ्गारो अङ्गारो । णिडालं णडालं ॥ १२ ॥

सप्तपर्णे फोः ॥ १३ ॥

सप्तपर्णे फोः द्वितीयस्य इत्वं भवति तु । छत्तिवण्णो छत्तवण्णो ॥ १३ ॥

मध्यमकतमे च ॥ १४ ॥

चकारः फोरित्यस्यानुवृत्त्यर्थम् । मध्यमकतमयोर्द्वितीयस्याच इत्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । मज्झिमो । कइमो ॥ १४ ॥

हरे त्वी ॥ १५ ॥

हरशब्दस्यादेरच ईत्वं भवति तु । हीरो । हरो ॥ १५ ॥

उल् ध्वनिगवयविष्वचो वः ॥ १६ ॥

ध्वनिगवयविष्वक्शब्देषु वकारसंबन्धिनः अवर्णस्य उत्वं लिद्भवति । झुणी । गउओ । वीसुं ॥ १६ ॥

---

11. B T विलीअं for विलिअं. G मुइंगो; T मइंगो for मिइङ्गो. After मरिचम् G adds इत्यादि. B S T om. दत्ते तु. S om. दत्तं. After दत्तं B T add : वेतसकृपणमृदङ्गोत्तमदत्तेषव्यलीकमरिचाश्च । व्यअन (व्यजन ?) मिति स्वप्नादिर्भाषाविद्भिः समाख्यातः. 12. G अवर्णस्य; K S अकारस्य for अस्य. T_2 पंकं पिंकं for पिक्कं पक्कं. G K इङ्गालो अङ्गालो for इङ्गारो अङ्गारो. T णीडाळं for णिडालं. 13. T_1 सप्तवर्णे in the Sūtra and Com. for सप्तपर्णे. S छत्तिपण्णो छत्तपण्णो for छत्तिवण्णो छत्तवण्णो. 14. G °नुवृत्यर्थः; K S °नुकर्षणार्थम् for °नुवृत्त्यर्थम्. T द्वितीयस्यास्य for द्वितीयस्याच. G इद्भवति for इत्वं भवति. K S पृथग्योगो नित्यार्थः; T पृथक्प्रयोगान्नित्यम्. 15. T_1 त्वि; T_2 त्वं for त्वी in the Sūtra. G अवर्णस्य; T अस्य for अच. 16. B T °विष्वचि for °विष्वचो in the Sūtra. B T अस्य for अवर्णस्य. B T धुणी; S झाणि for झुणी. B T गउआ; K गवुओ for गउओ.

ज्ञो णोऽभिज्ञादौ ॥ १७ ॥

उत्वमनुवर्तते । अभिज्ञादिषु ज्ञकारादेशस्य णस्य संबन्धिनः अवर्णस्य उत्वं भवति । अहिण्णू अभिज्ञः । सव्वण्णू सर्वज्ञः । आगमण्णू आगमज्ञः । कअण्णू कृतज्ञः ॥ ण इति किम् । अहिज्जो अभिज्ञः ॥ अभिज्ञादाविति किम् । पण्णो प्राज्ञः । अहिण्णा अभिज्ञा ॥ येषां ज्ञादेशणकारसंबन्धिनः अस्य उत्वं दृश्यते तेऽभिज्ञादयः ॥ १७ ॥

स्तावकसास्ने ॥ १८ ॥

स्तावकसास्नाशब्दयोरादेरस्य उत्वं भवति । थुवओ । सुण्हा ॥ १८ ॥

चण्डखण्डिते णा वा ॥ १९ ॥

चण्डखण्डितशब्दयोर्णकारेण सहितस्यादेरवर्णस्य उद्भवति तु । चुडं चण्डं । खुडिओ खण्डिओ ॥ १९ ॥

प्रथमे प्थोः ॥ २० ॥

प्रथमशब्दे पकारथकारसंबन्धिनोऽवर्णस्य युगपत्क्रमेण च उत्वं भवति तु । पुढुमं पढुमं पुढमं पढमं ॥ २० ॥

आर्यायां र्यः श्वश्र्वामूल् ॥ २१ ॥

श्वश्रूवाचिन्यार्याशब्दे र्यकारसंबन्धिनोऽवर्णस्य ऊत्वं लिद्भवति । अज्जू ॥ श्वश्र्वामिति किम् । अज्जा माता ॥ २१ ॥

---

17. S अस्य for अवर्णस्य. G लिद्भवति for भवति. B K T अभिण्णू for अहिण्णू. B T आअमण्णू for आगमण्णू. S अभिजो for अहिज्जो. G om. अभिज्ञादाविति किम् । पण्णो प्राज्ञः । अहिण्णा अभिज्ञा. B T अहिण्णो अभिज्ञः for अहिण्णा अभिज्ञा. T एषां for येषां. 18. G लिद्भवति for भवति. T_3 थुवयो for थुवओ. 19. G अस्य for अवर्णस्य. G K उत्वं वा भवति for उद्भवति. B S om. तु. After चण्डं K S add खुडं खंडं. T_2 खुडिअं खंडिअं for खुडिओ खण्डिओ. 20. B पथोः for प्थोः in the Sūtra. K पकारथकारयोः; S ष्ठोः for °थकारसंबन्धिनोः. B S om. तु. B T पुडुमं पडुमं पुडमं पडमं; S पुढुमं पठुमं पुठमं पठमं; K पुढुमं for पुढुमं etc. 21. B S यकार° for र्यकार°. T_1 अम्मू; T_2 अंजू for अज्जू. B om. माता.

आसारे तु ॥ २२ ॥

आसारे आदेरवर्णस्य ऊत्वं भवति तु । ऊसारो आसारो ॥ २२ ॥

तोऽन्तर्येत् ॥ २३ ॥

अन्तर्शब्दे तकारसंबन्धिनोऽवर्णस्य एत्वं लिद्भवति । अन्तःपुरम् अन्तेउरं । अन्तश्चारी अन्तेआरी ॥ क्वचिन्न भवति । अन्तर्गतम् अन्तग्गअं । अन्तोवीसम्भणिवेसिआण अन्तर्विश्रम्भनिवेशितानाम् ॥ २३ ॥

पारावते तु फोः ॥ २४ ॥

पारावतशब्दे फोर्द्वितीयस्यास्य एत्वं भवति तु । पारेवओ पारावओ ॥ २४ ॥

उत्करवल्लीद्वारमात्रचः ॥ २५ ॥

उत्करवल्लीद्वारशब्देषु मात्रच्प्रत्यये आदेरवर्णस्य एत्वं वा भवति । उक्केरो उक्करो । वेल्ली वल्ली । देरं दारं । पक्षे दुआरं ॥ मात्रच्—एत्तिअमेत्तं एत्तिअमत्तं एतावन्मात्रम् ॥ बहुलाधिकारान्मात्रशब्देऽपि । भोअणमेत्तं भोजन-मात्रम् ॥ २५ ॥

शय्यादौ ॥ २६ ॥

शय्यादिष्वादेरवर्णस्य एत्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । सेज्जा शय्या । एत्थ अत्र । गेज्झं ग्राह्यम् । गेन्दुअं कन्दुकम् ॥ २६ ॥

त्वार्द्रे उदोत् ॥ २७ ॥

आर्द्रशब्दे आदेरवर्णस्य उत्वमोत्वं च वा भवतः । उल्लं ओल्लं । पक्षे अल्लं अद्दं । बाहसलिलप्पवहेण ओल्लेइ, बाष्पसलिलप्रवाहेणार्द्रयति ॥ २७ ॥

---

22. Before मात्रा G adds संस्कृते. 23. S एत् for एल् in the Sūtra. S om. लित्. K अंतेचारि for अन्तेआरी. After अन्तेआरी B adds अन्तसहम् अन्तेसहं. B अन्तव्वीसम्भ°; Gp अन्तावीसम्भ° for अन्तो-वीसम्भ°. 24. K पारावते for पारावतशब्दे. 25. B °द्वारमात्रचि for °मात्रचः in the Sūtra. T °द्वारशब्दे for °द्वारशब्देषु. G °प्रत्ययेऽपि चादे° for °प्रत्यये चादे°. T₁ om. उक्करं. G दुआरं; S वेरं, पक्षे वेरं, वारं दुआरं for वेल्ली... दुआरं. G om. मात्रच्. B S om. एत्तिअमत्तं. G om. बहुलाधिकारात्. 26. After एत्वं T₁ adds नित्यं. T गेंडुअं for गेन्दुअं. 27. B S T वार्द्रे for त्वार्द्रे in the Sūtra. S इदोत् for उदोत् in the Sūtra. S इत्वं for उत्वं G भवति for भवतः. G °पवाहेण for °प्पवहेण.

स्वपि ॥ २८ ॥

उदोदित्यनुवर्तते । स्वपिधातोरादेरवर्णस्य उदोतौ भवतः । पृथग्योगान्नित्यम् । सुवइ सोवइ ॥ २८ ॥

ओदाल्यां पङ्क्तौ ॥ २९ ॥

पङ्क्तौ पङ्क्तिवाचिन्यालीशब्दे आदेरवर्णस्य ओत्वं भवति । ओली ॥ पङ्क्ताविति किम् । आली सखी ॥ २९ ॥

फोः परस्परनमस्कारे ॥ ३० ॥

ओदित्यनुवर्तते । परस्परनमस्कारशब्दयोः फोर्द्वितीयस्यास्य ओत्वं भवति । परोप्परं । णमोक्कारो ॥ ३० ॥

पद्मे मि ॥ ३१ ॥

पद्मशब्दे आदेरवर्णस्य मकारे परे ओत्वं भवति । पोम्मं ॥ मीति किम् । पदुमं ॥ ३१ ॥

त्वर्पौ ॥ ३२ ॥

अर्पौ अर्पयतौ धातावादेरस्य ओद्भवति तु । ओप्पेइ अप्पेइ । ओप्पिअं अप्पिअं ॥ ३२ ॥

ईल् खल्वाटस्त्यानयोरातः ॥ ३३ ॥

खल्वाटस्त्यानयोरादेराकारस्य ईत्वं लिद्भवति । खल्लीडो । ठीणं॥ संखाअमिति तु 'स्त्यः समः खा' [२·४·१२४] इति खादेशे क्तप्रत्ययान्ते सिद्धम् ॥ ३३ ॥

---

28. G. उदोदित वर्तते. 29. T_1 दोल्यां for ओदाल्यां in the Sūtra. B om. पंक्तौ in Com. 31. T_1 मी for मि in the Sūtra. G ओद्भवति for ओत्वं भवति. G पउमं for पदुमं. 32. B T om. अर्पौ. G: अर्पिबातौ for अर्पयतौ धातौ. Gp ओत्वं for ओद्. 33. T_1 ई for ईल् in the Sūtra. G °स्त्यान आतः for °स्त्यानयोरातः in the Sūtra. B T_1 अवर्णस्य; G आतः for आकारस्य. G om. लित्. After भवति G adds लित्त्वान्नित्यम्. K ठीणं थीणं; B थीणं for ठीणं. B om. तु after संखाअमिति. After खादेशे K S add कृते. S adds रूपं after क्तप्रत्ययान्ते.

इत्तु सदादौ ॥ ३४ ॥

आत इत्यनुवर्तते। सदा इत्यादिष्वादेराकारस्य इत्वं भवति तु। सइ सआ सदा। कुप्पिसो कुप्पासो कूर्पासः। णिसिअरो णिसाअरो निशाकरः। इत्यादि ॥ ३४ ॥

आचार्ये चो ह्रश्च ॥ ३५ ॥

आचार्यशब्दे चकारसंबन्धिन आतो ह्रो ह्रस्वो भवति। चकारादित्वं च। आअरिओ आइरिओ ॥ ३५ ॥

श्यामाके मः ॥ ३६ ॥

ह्र इत्यनुवर्तते। श्यामाके मकारस्यातो ह्रो ह्रस्वो भवति। सामओ ॥ ३६ ॥

न वाव्ययोत्खातादौ ॥ ३७ ॥

अव्ययेषु उत्खातादिषु च आदेरातो ह्रस्वो न वा भवति। अव्यये-जह जहा यथा। तह तहा तथा। अहव अहवा अथवा। व वा। ह हा इत्यादि ॥ उत्खातादिः—उक्खअं उक्खाअं उत्खातम्। कुमरो कुमारो कुमारः। खइरं खाइरं खादिरम्। बलआ बलाआ बलाका। पअअं पाअअं प्राकृतम्। चमरो चामरो चामरः। कलओ कालाओ कलादः स्वर्णकारः। हलिओ हालिओ हालिकः कृषीवलः। णराओ णाराओ नाराचः। तलविण्टं तालविण्टं तालवृन्तम्। ठविओ ठाविओ स्थापितः। पट्ठविओ पट्ठाविओ प्रस्थापितः। संठविओ संठाविओ संस्थापितः। इत्यादि ॥ केचिद् ब्राह्मणपूर्वाह्णयोरपीच्छन्ति। बम्हणो बाम्हणो। पुव्वण्हो पुव्वाण्हो ॥ ३७ ॥

---

34. B T आदित्यनुवर्तते for आत इत्यनुवर्तते. S किप्पिसो for कुप्पिसो. 35. B K T आचार्ये for आचार्यशब्दे. B G om. ह्रो. B $T_{1\cdot3}$ om. चकारादित्वं च. T_1 आकरिओ for आअरिओ. 36. B G T om. ह्रो. 37. B T अव्यये for अव्ययेषु. B T उत्खातादौ for उत्खातादिषु. B om. Sk equivalents promiscuously. After तथा G adds सिअ सिआ 'स्याद्भव्यचैत्य' [१·४·१००] इत्यादिना इत्वम्. After तालबिंटं G T add तलवेंटं तालवेंटं। तलवोंटं तालवोंटं. T_2 तलहंटं तालहंटं for तलबिंटं तालबिंटं. After पुव्वाण्हो B T add: उत्खाताव्ययमथवा ह हा यथातथेत्यपि च। प्राकृतकुमारचामरसंस्थापिततालवृन्तनाराचाः। प्रस्थापितसंस्थापितकलादखादिरहालिकबलाकाः। संयोगे ह्रो न स्याद् ब्राह्मणपूर्वाह्णयोर्दीर्घः.

घञि वा ॥ ३८ ॥

घञ्निमित्तो यो वृद्धिरूप आकारस्तस्यादिभूतस्य ह्रस्वो वा भवति । पुनर्वाग्रहणादुत्तरत्र न विकल्पः । पवहो पवाहो प्रवाहः । पहरो पहारो प्रहारः । पअरो पआरो प्रकारः प्रचारो वा । पत्थओ पत्थाओ प्रस्तावः ॥ क्वचिन्न भवति । रागः राओ । भागः भाओ ॥ ३८ ॥

स्वरस्य बिन्द्वमि ॥ ३९ ॥

बिन्दौ अमि द्वितीयैकवचने च परे स्वरस्य ह्रस्वो भवति । बिन्दौ— मांसम् मंसं । मांसलम् मंसलं। पांसुः पंसू। कांस्यम् कंसं। वांशिकः वंसिओ । काञ्चनम् कंचणं । लाञ्छनम् लंछणं ॥ अमि—गङ्गं । मालं । नइं । वहुं । वच्छं ॥ ३९ ॥

संयोगे ॥ ४० ॥

संयोगे परे पूर्वस्य स्वरस्य ह्रस्वो भवति । आ—आम्रम् अम्बं । ताम्रम् तम्बं । विरहाग्निः विरहग्गी । अमात्यः अमच्चो । काव्यम् कव्वं ॥ ई—मुनीन्द्रः मुणिन्दो । तीर्थम् तित्थं । शीघ्रम् सिग्घं ॥ ऊ—चूर्णम् चुण्णं । सूत्रम् सुत्तं । पूर्वम् पुव्वं ॥ ए—नरेन्द्रः णरिन्दो । म्लेच्छः मिलिच्छो ॥ ऐ—दृष्टैकस्तनपट्टम् दिट्ठेक्कत्थणवट्टं ॥ ओ—अधरोष्ठः अहरुट्ठो । नीलोत्पलम् णीलुप्पलं ॥ एदोतोः क्वचित्स्वरूपेणैव ह्रस्वः । एकः ऍक्को । नेत्रम् णॆत्तं । ग्राह्यम् गॆज्झं । स्तोकम् थॊक्कं । तुण्डम् तॊण्डं । इत्यादि ॥ ४० ॥

---

38. S घञ्निमित्ते for °निमित्तो. B T पत्थावो for पत्थाओ. 39. B यथा for बिन्दौ. T_1 पस्सू for पंसू. T_1 om. नइं वहुं वच्छं; T_3 reads नळं बहु पेच्छं for नइं...वच्छं. 40. B T अमच्छो for अमच्चो. B T चूर्णः चुण्णो for चूर्णं चुण्णं. B T °थणपट्टं for °थणवट्टं. B T स्वरूपेण ह्रस्वः for स्वरूपेणैव ह्रस्वः. No MS. gives any mark for short ए and ओ. B थोकं for थॊक्कं.

त्वेदितः ॥ ४१ ॥

संयोग इति वर्तते । आदेरिकारस्य संयोगे परे एत्वं तु भवति । पेण्डं पिण्डम् । धम्मेल्लं धम्मिल्लम् । सेन्दूरं सिन्दूरं सिन्दूरम् । बेल्लं बिल्लं बिल्वम् । वेण्हू विण्हू विष्णुः ॥ क्वचिन्न भवति । चिन्ता ॥ ४१ ॥

मिरायां लित् ॥ ४२ ॥

इत इत्यनुवर्तते एदिति च । मिराशब्दे इतः एत्वं लिद्भवति । मेरा सीमा ॥ ४२ ॥

मूषिकविभीतकहरिद्रापथिपृथिवीप्रतिश्रुत्यत् ॥ ४३ ॥

मूषिकादिष्वादेरिकारस्य अकारादेशो भवति । मूषिकः मूसओ । विभीतकः वहेडओ । हरिद्रा हलद्दी । पथि पहो । अकारान्ते सत्यपि पथशब्दे पथिशब्दस्य रूपान्तरनिवृत्त्यर्थोऽयं योगः । पृथिवी पुहवी पुढवी । प्रतिश्रुत् पडंसुआ प्रतिध्वनिः ॥ ४३ ॥

रस्तित्तिरौ ॥ ४४ ॥

अदित्यनुवर्तते । तित्तिरिशब्दे रसंबन्धिन इकारस्य अत्वं भवति । तित्तिरो ॥ ४४ ॥

इतौ तो वाक्यादौ ॥ ४५ ॥

वाक्यादिभूते इतिशब्दे तकारसंबन्धिन इतः अद्भवति । इअ विअसिअ-कुसुमसरो, इति विकसितकुसुमशरः ॥ वाक्यादाविति किम् । पिओ त्ति ॥ ॥ ४५ ॥

---

41. BT वेण्णू विण्णू for वेण्हू विण्हू. 42. B T सोमेति यावत् for सीमा. 43. B T अकार for अकारादेशो. S पथिशब्दनिवृत्त्यर्थो for पथिशब्दस्य रूपान्तरनिवृत्त्यर्थो. B °निवृत्त्यर्थम् for °निवृत्त्यर्थो. G पडसुआ for पडंसुआ. After प्रतिध्वनिः K adds इत्यर्थः. 44. T रेफसंबन्धिनः for रसंबन्धिनः. G स्यात् for भवति. 45. G S इतो तौ for इतौ तो in the Sūtra. B T विअसिअकुमुअसरो for °कुसुमसरो. B T विकसितकुमुदसरः for °कुसुमशरः.

वेङ्गुदशिथिलयोः ॥ ४६ ॥

इङ्गुदशिथिलयोरादेरित अत्वं वा भवति । अंगुअं इंगुअं । सढिलं सिढिलं । पसढिलं पसिढिलं ॥ णिम्माअं णिम्मिअं इत्येतौ निर्मातृ-निर्मिताभ्यां भविष्यतः ॥ ४६ ॥

उ युधिष्ठिरे ॥ ४७ ॥

वेत्यनुवृत्तिः । युधिष्ठिरे आदेरित उत्वं वा भवति । जुहुट्ठिलो जुहिट्ठिलो ॥ ४७ ॥

द्विर्नीक्षुप्रवासिषु ॥ ४८ ॥

उत्वमित्यनुवर्तते । द्विशब्दे नीत्युपसर्गे इक्षुप्रवासिशब्दयोश्च आदेरित उत्वं भवति । पृथग्योगान्न विकल्पः ॥ द्विमात्रः दुमत्तो । द्विजातिः दुआई । द्विविधः दुविहो । द्विरेफः दुरेहो । द्विवचनम् दुवअणं । दुहा वि सो सुरवहू-सत्थो, द्विधापि स सुरवधूसार्थः॥ बहुलाधिकारात्क्वचिद्विकल्पः । दुउणो विउणो द्विगुणः। दुइओ विइओ द्वितीयः॥ क्वचिन्न भवति । द्विजः दिओ । द्विरदः दिरओ । द्विधागतः। दिहागओ ॥ क्वचिदोत्वमपि । द्विवचनम् दोवअणं ॥ नि—णुमज्जइ । निमज्जइ । णुमन्तो निमन्त्रः ॥ क्वचिन्न भवति । निपतति णिवडइ ॥ इक्षुः उच्छू । प्रवासी पवासू ॥ ४८ ॥

---

46. T वेंगुदि° in the Sūtra and Com. T₁ अकारत्वं for अत्वं. B णिम्मअं for णिम्मिअं. G T निर्मात° for निर्मातृ°. 47. KT₁ उत् for उ in the Sūtra. B K T om. वेत्यनुवृत्तिः. B K जहुट्ठिलो जहिट्ठिलो; T₂ जुहुट्ठिरो जहट्ठिरो for जुहुट्ठिलो जुहिट्ठिलो. 48. B उत्वमनुवर्तते; T उ इत्यनुवर्तते. B T पृथग्योगान्नित्यम् for °योगान्न विकल्पः. B T द्विधाविधः दुहाविओ; K द्विधामतः विहामओ for द्विविधः दुविहो After दुउणो B T add दिउणो. T om. दुहावि...सार्थः. G द्विधागतिः दिहागई for द्विधागतः दिहागओ. B om. णुमन्तो निमन्त्रः; G notes a p णुमन्तो BT add इच्छू after इक्षुः. After पवासू B adds पावासू.

तु निर्झरद्विधाकृञोरोत्ता ॥ ४९ ॥

निर्झरशब्दे द्विधाकृञ्शब्दे च आदेरितो नकारेण सह ओत्वं तु भवति। ओज्झरो णिज्झरो निर्झरः । दोहाकिज्जइ दुहाकिज्जइ द्विधाक्रियते । दोहाइअं दुहाइअं द्विधाकृतम् ॥ कृञिति किम् । दिहागअं द्विधागतम् ॥ ४९ ॥

ईतः काश्मीरहरीतक्योर्लालौ ॥ ५० ॥

काश्मीरहरीतकीशब्दयोरीकारस्य आ अ इत्येतौ लितौ यथासंख्येन भवतः । कम्हारो । हरडई ॥ ५० ॥

गभीरग इत् ॥ ५१ ॥

ईत इत्यनुवर्तते । गभीरादिष्वादेरीकारस्य इत्वं भवति । गहिरो गभीरः । सिरिसो शिरीषः । आणिअं आनीतम् ॥ क्वियामीकारोऽपि दृश्यते । आणीदा भुअणब्भुएक्कजणणी [कर्पूर० १.२५], आनीता भुवनाद्भुतैकजननी॥ गहिअं गृहीतम् । विलिअं व्रीडितम् । विइओ द्वितीयः । पईविअं प्रदीपितम् । तइओ तृतीयः। जिअओ जीवन् । ओसिअन्तो अवसीदन् । पसिअ प्रसीद । वम्मिओ वल्मीकः इत्यादि ॥ तआणिं इति तु तदानींशब्दस्य 'स्वरस्य बिन्दुमि' [१.२.३९] इति ह्रस्वे सिद्धम् ॥ ५१ ॥

वा पानीयगे ॥ ५२ ॥

पानीयादिष्वादेरीकारस्य इत्वं वा भवति । पाणिअं पाणीअं पानीयम् । अलिअं अलीअं अलीकम् । करिसं करीसं करीषम् । उवणिअं उवणीअं उपनीतम् । जिअइ जीअइ जीवतीत्यादि ॥ ५२ ॥

---

49. Gp त्वोर्निर्झर°; T त्वो निर्झर° in the Sūtra. S °द्विधाकृञो in the Sūtra. B दोहाकिअं दुहाकिअं द्विधाकृतम् for दोहाइअं दुहाइअं. K om. दुहाइअं. S कृञिति for कृञिति. G om. द्विधागतम्. 50. B T यथासंख्यं for यथासंख्येन. B कंहारो; T_2 कोम्हारो for कम्हारो. 51. G इतः for ईतः in the Sūtra. $T_{1,2}$ आणीअं for आणिअं. After व्रीडितम् G adds किलिअं क्रीडितम्. B T_1 पडिवअं; T_3 पडिविअं for पईविअं. G जिअउ जीवतु; K जीअंतो for जिअओ जीवन्. T_1 पसीअ for पसिअ. 52. B T स्यात् for भवति. B पाणियं पाणीयं for पाणिअं पाणीअं T_1 करीअं for करीसं. T_1 om. उवणिअं.

उलू जीर्णे ॥ ५३ ॥

जीर्णशब्दे ईत ऊत्वं भवति । लित्वान्न विकल्पः । जुण्णं ॥ क्वचिन्न । जिण्णे भोअणमत्ते, जीर्णे भोजनमात्रे ॥ ५३ ॥

तीर्थे ह्रूलू ॥ ५४ ॥

तीर्थे ईत ऊत्वं भवति हि हकारे सति । तूहं ॥ हीति किम् । तित्थं ॥ ५४ ॥

विहीनहीने वा ॥ ५५ ॥

विहीनहीनयोरीत ऊत्वं वा भवति । विहूणं विहीणं । हूणं हीणं ॥ अनयोरिति किम् । पहीणजरमरणा ॥ ५५ ॥

एलू पीठनीडकीदृशपीयूषविभीतकेदृशापीडे ॥ ५६ ॥

पीठादिष्वादेरीत एत्वं भवति । लित्वान्न विकल्पः । पेढं । नेडं । केरिसो । पेऊसं । बहेडओ । एरिसो । आमेलो ॥ बहुलाधिकाराच्च पीठनीडयोर्विकल्पः । पीढं । नीडं ॥ ५६ ॥

त्वदुत उपरिगुरुके ॥ ५७ ॥

उपरिगुरुकयोरादेरुकारस्य अत्वं तु भवति । अवरि उवरि । गरुओ गुरुओ ॥ कप्रत्ययपरिग्रहाद्गुरौ न भवति । गुरू ॥ ५७ ॥

---

53. B T लित्वान्नित्यम् for लित्वान्न विकल्पः. After क्वचिन्न G adds भवति; T adds स्यात्. T₁ om. जिण्णे ... मात्रे. 54. G ह्रूत् for ह्रूलू. Gp तीर्थशब्दे for तीर्थे. T उत्वं for ऊत्वं. G om. भवति. T तुहं for तूहं. 55 BT तु for वा. T₁ om. विहीनं and हीनम्. S वहिण° for पहीण°. S °मलणो for °मरणा 56. T adds लित् after एत्वं. B लित्वान्नित्यम्; T om. लित्वान्न विकल्पः. T₁ पेद्दं; T₂ पेडं for पेढं. G नेड्डं for नेडं. S आपेलो for आमेलो. 57. B अद्भवति तु; T₂ अत्वं भवति तु. T₁ om. तु. G om. गुरू.

मुकुलादौ ॥ ५८ ॥

उत इत्यनुवर्तते, अदिति च । मुकुलादिष्वादेरुकारस्य अद्भवति । पृथ-ग्योगान्न विकल्पः ॥ मउलं मुकुलम् । मउडं मुकुटम् ॥ मवुटं यद्यपि संस्कृते तथाप्ययं योगो मुकुटशब्दस्य रूपान्तरनिवृत्त्यर्थः ॥ मउरं मुकुरम् । अगरू अगुरुः । गलोई गुडूची । गरुई गुर्वी । जहुट्ठिलो युधिष्ठिरः । सोअमल्लं सौकुमार्यम् । इत्यादि ॥ बहुलाधिकारात्क्वचिदात्वमपि भवति । विद्रुतः विद्दाओ ॥५८॥

रो भ्रुकुटिपुरुषयोरित् ॥ ५९ ॥

अनयो रेफसंबन्धिन उकारस्य इत्वं भवति । भिउडी । पुरिसो । पउरिसं पौरुषम् ॥ ५९ ॥

क्षुत ईत् ॥ ६० ॥

क्षुत उत ईत्वं भवति । छीअं ॥ ६० ॥

दोदोऽनुत्साहोत्सन्न ऊच्छसि ॥ ६१ ॥

उदित्युपसर्गस्य उतः शकारसकारयोः परयोर्दा दकारेण सह ऊत्वं भवति उत्साहोत्सन्नशब्दौ वर्जयित्वा । उच्छ्वासः ऊसासो । उच्छ्वसिति ऊससइ । उद्गताः शुका यस्मिन्स उच्छुकः ऊसुओ । उत्सुकः ऊसुओ । उत्सवः ऊसओ । उत्सरति ऊसरइ । उत्सिक्तः ऊसित्तो ॥ अनुत्साहोत्सन्न इति किम् । उच्छाहो । उच्छण्णो ॥ ६१ ॥

---

58. B om. मकुटम्. B मुकुरः for मुकुरम्. B गुलूची. T गुरुई for गुर्वी. B T_1 om. अपि. B विदाओ for विद्दाओ. 59. T_1 रूत् भ्रुकुटिपुरुषयोः; $T_{2.3}$ र इत् भ्रुकुटिपुरुषयोः for the Sūtra. B भ्रुकुटी° in the Sūtra. B T भ्रुकुटीपुरुषयोः for अनयोः. T_1 पुरीसो for पुरिसो. 60. S क्षुभ for क्षुत in the Sūtra. B इत् for ईत् in the Sūtra. After छीअं B T add पक्षे छुअं. 61. K तो तो in the Sūtra before correction. T दो तो in the Sūtra. T उतः उदित्युप°. B om. उतः. K परयोस्तकारेण before correction. B T om. दा. G om. उत्सुकः ऊसुओ; K ऊसुवो for ऊसुओ. After उच्छण्णो Gp adds शसीति किम्। उग्गओ उग्गओ.

दुरो रलुकि तु ॥ ६२ ॥

ऊदित्यनुवर्तते । दुर् इत्युपसर्गस्य रलुकि रेफलोपे सति आदेरुत ऊद्वा भवति । दूसहो दुसहो दुःसहः । दूहओ दुहओ दुर्भगः ॥ रलुकीति किम् । दुस्सहो विरहो ॥ ६२ ॥

सुभगमुसलयोः ॥ ६३ ॥

ऊदित्यनुवर्तते । सुभगमुसलयोरुत ऊद्वा भवति । सूहओ सुहओ सुभगः । मूसलं मुसलं मुसलम् ॥ ६३ ॥

ह्रश्चौत्कुतूहले ॥ ६४ ॥

कुतूहले आदेरुत ओत्वं भवति ह्रश्च तत्संनियोगेन ऊतो ह्रस्वश्च । कोउहलं कुऊहलं कोउहल्लं कुतूहलम् ॥ ६४ ॥

स्तौ ॥ ६५ ॥

ओदिति वर्तते । स्तौ संयुक्ते परे आदेरुत ओत्वं भवति । तुण्डम् तोण्डं । पुष्करम् पोक्खरं । कुट्टिमम् कोट्टिमं । पुस्तकम् पोत्थअं । मुस्ता मोत्था । मुद्गरः मोग्गरो । पुद्गलः पोग्गलो । कुन्दम् कोन्दं । व्युत्क्रान्तम् वोक्कन्तं ॥ ६५ ॥

सूक्ष्मेऽद्वोतः ॥ ६६ ॥

सूक्ष्मशब्दे ऊत अत्वं वा भवति । सण्हं सुण्हं ॥ ६६ ॥

अल् दुकूले ॥ ६७ ॥

ऊत इत्यनुवर्तते । दुकूले ऊत अल् इत्यादेशो भवति । लकारो नानुबन्धः । दुअल्लं दुऊलं ॥ ६७ ॥

---

62. T om. ऊदित्यनुवर्तते. B T om. दुःसहः. B T om. दूहओ दुहओ दुर्भगः. B T om. विरहो. 63. B K S T °मुसले for °मुसलयोः in the Sūtra. K त्वित्यनुवर्तते for ऊदित्यनु°. G उद्भवति तु for ऊद्वा भवति. T_2 सूहवो for सूहओ. B T om. सुभगः. B T om. मुसलम्. 64. T_1 ह्रश्चोत् for ह्रश्चौत् in the Sūtra. K कुतूहलशब्दे for कुतूहले. K कोदूहलं कुदूहलं; S कोदूहलं. B om. कोउहल्लं; K कुऊहल्लं; S कोदुहल्लं for कोउहल्लं. 65. B T ओदित्यनुवर्तते for ओदिति वर्तते. After तोण्डं G K add मुण्डं मोण्डं. S पोत्थओ for पोत्थअं. B T मुक्तगरः मोत्तअरो for मुद्गरः मोग्गरो. B T पुद्गरः for पुद्गलः. K S कुन्तं कोन्तं for कुन्दं कोन्दं. 67. G वोत for ऊत.

ईदुद्व्यूढे ॥ ६८ ॥

उद्व्यूढे ऊत ईत्वं वा भवति । उव्वीढं उव्वूढं ॥ ६८ ॥

उल् कण्डूयहनूमद्वातूले ॥ ६९ ॥

कण्डूयतौ धातौ हनूमद्वातूलयोश्च आदेरूत उत्वं लिद्भवति । कण्डुअइ । हणुमन्तो । वाउलो ॥ ६९ ॥

वा मधूके ॥ ७० ॥

मधूके ऊत उत्वं वा भवति । महुअं महूअं ॥ ७० ॥

इदेन्नूपुरे ॥ ७१ ॥

वेत्यनुवर्तते । नूपुरे ऊत इदेतौ वा भवतः । णिउरं णेउरं णूउरं ॥७१॥

ओल् स्थूणातूणमूल्यतूणीरकूर्परगुडूचीकूष्माण्डीताम्बूलीषु ॥ ७२॥

एषु ऊत ओत्वं लिद्भवति । थोणा । तोणं । मोल्लं । तोणीरं । कोप्परं । गलोई । कोहण्डी । तम्बोली ॥ बहुलाधिकारात्स्थूणातूणयोर्विकल्पः । थूणा । तूणं ॥ ७२ ॥

ऋतोऽत् ॥ ७३ ॥

आदेः ऋकारस्य अत्वं भवति । घृतं घअं । तृणं तणं । कृतं कअं । वृषभः वसहो । मृगः मओ ॥ ७३ ॥

आद्वा मृदुत्वमृदुककृशासु ॥ ७४ ॥

ऋत इत्यनुवर्तते । एषु आदेः ऋकारस्य आत्वं वा भवति । माउत्तं मउत्तं । माउअं मउअं । कासा कसा ॥ ७४ ॥

---

68. T_1 ईंदूद्व्यूढे for the Sūtra. 69. B कण्डूयति° for कण्डूय° in the Sūtra. 72. Gp splits this Sūtra into two and so reads as follows:- ओत् स्थूणातूणे । अनयोरूत ओत्वं वा भवति । थोणा थूणा । तोणं तूणं ॥ कूर्परमूल्य-कूष्माण्डताम्बूलगुडूचीतूणीरे ॥ एषु ऊत ओद्भवति । पृथग्योगान्न विकल्पः । कोप्परं । मोल्लं । कोहंडी । तम्बोलं । गलोई । तोणीरं. K कोहण्डी कोहली; T_1 कोम्हडी; T_2 कंण्डी for कोहण्डी. 74. K मृदुतादिषु; T_1 मृद्वादिषु; T_2 मृदुत्वादिषु for एषु. G T_2 माउत्तणं मउत्तणं for माउत्तं मउत्तं. K माउक्कं मउक्कं मृदुकम्; S माउकं मउकं. S काशा कशा for कासा कसा.

इत् कृपादौ ॥ ७५ ॥

कृप इत्यादिषु शब्देषु आदेः ऋत इत्वं भवति । लित्वान्न विकल्पः । किवो कृपः। णिवो नृपः। किवा कृपा । किवणो कृपणः । किवाणो कृपाणः। किसो कृशः । किसाणू कृशानुः । किई कृतिः । विसो वृषः । मूसिओ मूषिकः । किसरो कृसरः विलेपविशेषः । किच्छं कृच्छ्रम् । किसओ कृषकः । तिसिओ तृषितः । इसी ऋषिः । धिई धृतिः । विंछिओ विञ्छुओ वृश्चिकः। वित्तं वृत्तम् । वित्ती वृत्तिः। पिच्छी पृथ्वी । किवा कृत्या । घुसिणं घुसृणम् । घिणा घृणा । इद्धी ऋद्धिः । समिद्धी समृद्धिः । गिद्धी गृद्धिः । विद्धकई वृद्धकपिः । छिहा स्पृहा । विसी वृसी । हिअअं हृदयम् । उक्किट्ठं उत्कृष्टम् । मिट्ठं मृष्टं रस एव, अन्यत्र मट्ठं । दिट्ठं दृष्टम् । विइण्हो वितृष्णः । सइ सकृत् । दिट्ठी दृष्टिः । गिट्ठी गृष्टिः । सिट्ठी सृष्टिः । सिआलो शृगालः। वाहित्तं व्याहृतम् । बिंहिअं बृंहितम् । तिप्पं तृप्रम् । सिट्ठं सृष्टम् । सिङ्गारो शृङ्गारः । भिङ्गो भृङ्गः । मिओ मृगः । भिऊ भृगुः । भिङ्गारो भृङ्गारः इत्यादि ॥ ७५ ॥

शृङ्गमृगाङ्कमृत्युधृष्टमसृणेषु वा ॥ ७६ ॥

शृङ्गादिषु ऋत इत्वं वा भवति । सिङ्गं सङ्गं । मिअङ्को मअङ्को । मिच्चू मच्चू । धिट्ठो धट्ठो । मसिणं मसणं ॥ ७६ ॥

पृष्ठेऽनुत्तरपदे ॥ ७७ ॥

पृष्ठशब्दे अनुत्तरपदे ऋत इत्वं वा भवति । पिट्ठं पट्ठं ॥ अनुत्तरपद इति किम् । महिवट्ठं महीपृष्ठम् ॥ ७७ ॥

---

75. B T om. आदेः. B T लित्त्वान्नित्यम् for लित्वान्न विकल्पः. B T om. विसो वृषः. T gives Sk. equivalents at the end. Gp किसरा कृशरा. B T om. विलेपविशेषः. G किसिओ कृषिकः for किसओ कृषकः. G om. तिसिओ तृषितः. B विञ्छिओ for विञ्छुओ. B पिंहो for पिच्छी. B किच्छा for किच्चा. G adds दुर्गा after कृत्या. B गिट्ठो for गिद्धी; G गिट्ठी गृष्टिः for गिद्धी. B K T वृद्धकविः for °कपिः. B पिहा for छिहा. After दृष्टम् G adds हिअं हृतम्. B तृप्तम्. for तृप्रम्. After तृप्रम् G adds दुःखं मोघं अधर्मः पापं काष्ठं आज्यं वा. G om. मिओ मृगः. 76. B T स्यात् for भवति. 77. G पिट्ठो पिट्ठिपरिट्ठविअं; S पिट्ठं पट्ठिं; T पिट्ठो पट्ठं. B T महिपट्ठं for महिवट्ठं.

उद् वृषभे वुः ॥ ७८ ॥

वृषभे वृ इत्येतस्य उत्वं वा भवति । उसहो वसहो ॥ ७८ ॥

वृन्दारकनिवृत्तयोः ॥ ७९ ॥

उदित्यनुवर्तते । अनयोः ऋत उद्वा भवति । वुन्दारओ वन्दारओ । णिउत्तं णिअत्तं ॥ ७९ ॥

ऋत्वगे ॥ ८० ॥

ऋत्वादिषु शब्देषु आदेः ऋत उत्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । उऊ ऋतुः । उसहो ऋषभः । पाहुडं प्राभृतम् । पहुडि प्रभृति । भुई भृतिः । णिहुअं निभृतम् । परहुअं परभृतम् । विउअं विवृतम् । संवुअं संवृतम् । णिउअं निर्वृतम् । णिव्वुई निर्वृतिः । णिउत्ती निवृत्तिः । पउत्ती प्रवृत्तिः । पाउसो प्रावृट् । वुत्तन्तो वृत्तान्तः । वुन्दं वृन्दम् । वुन्दावणं वृन्दावनम् । पुहई पृथिवी । वुड्ढो वृद्धः । उज्जू ऋजुः । मुणालं मृणालम् । पुट्ठो पृष्टः । पउट्ठो प्रवृष्टः । वुट्ठी वृष्टिः । परामुट्ठो परामृष्टः । भाउओ भ्रातृकः । पिउओ पितृकः । जामाउओ जामातृकः । माउआ मातृका । इत्यादि ॥ ८० ॥

गौणान्त्यस्य ॥ ८१ ॥

गौणपदस्य योऽन्त्य ऋत् तस्य उद्भवति । माउमण्डलं मातृमण्डलम् । माउहरं मातृगृहम् । पिउहरं पितृगृहम् । माउसिआ माउच्छा मातृष्वसा । पिउसिआ पिउच्छा पितृष्वसा । पिउवणं पितृवनम् । पिउवई पितृपतिः ॥ ८१ ॥

---

78. S इत्यस्यावयवस्य for इत्येतस्य. B T स्यात् for भवति. 79. B S T om. वा. K निवृत्तं निवत्तं for णिउत्तं णिअत्तं. 80. K उद् ऋतः for ऋत्वगे for the Sūtra. S हुई वृतिः for भुई भृतिः. T परीहुअं for परहुअं. B om. विउअं विवृतम्. T निउअं निवृतम् for विउअं विवृतम्. B om. णिउअं निर्वृतम्. णिव्वुई निर्वृतिः. G पुहवी for पुहई. G om. वुड्ढो वृद्धः. T उजू for उज्जू. After ऋजुः B adds तैलादित्वाद् द्वित्वम्. B T स्पृष्टः for पृष्टः. B T वुड्ढी वृद्धिः for वुड्ढी वृद्धिः. T, भ्रातृकं for भ्रातृकः. After मातृका B adds पाउडं प्राकृतम् । प्रत्यादित्वात्तस्य डः. 81. B T गौणस्य उपसर्जनस्य; K गौणशब्दस्य उपसर्जनपदस्य अमुख्यस्य; S गौणशब्दस्य for गौणपदस्य B T ऋकारः for ऋत्. B om. Sk. equivalents. T_1 माउमण्डणं for °मण्डलं. T_1 om. from पिउहरं down to पितृपतिः. $BT_{1,3}$ माउघरं; T_2 माइघरं for माउहरं. BT om. पिउहरं.

इदुन्मातुः ॥ ८२ ॥

गौणस्य मातृशब्दस्य ऋत इदुतौ भवतः । माइहरं माउहरं मातृगृहम् ॥ क्वचिदगौणस्यापि । माईणं माऊणं मातृणाम् ॥ ८२ ॥

वृष्टिपृथङ्मृदङ्गनप्तृकवृष्टे ॥ ८३ ॥

इदुदित्यनुवर्तते । वृष्ट्यादिषु ऋत इदुतौ भवतः । विट्ठी वुट्ठी वृष्टिः । पिहं पुहं पृथक् । मिअङ्गो मुअङ्गो मृदङ्गः । णत्तिओ णत्तुओ नप्तृकः । विट्ठी वुट्ठी वृष्टिः ॥ ८३ ॥

तु बृहस्पतौ ॥ ८४ ॥

बृहस्पतौ ऋत इदुतौ तु भवतः । बिहप्फई बुहप्फई बहप्फई ॥८४॥

उदूदोल् मृषि ॥ ८५ ॥

मृषाशब्दे ऋत उत्वं ओत्वं ऊत्वं च भवति । ल्त्विान्न विकल्पः । मुसा मूसा मोसा । मुसावाओ मूसावाओ मोसावाओ मृषावादः ॥ ८५ ॥

वृन्त इदेङ् ॥ ८६ ॥

वृन्ते ऋत इदेङ् वा भवति । ए ओ एङ्, इच्च एङ् च इदेङ् । इत्वमेत्वमोत्वमित्यर्थः । विण्टं वेण्टं वोण्टं ॥ ८६ ॥

ढिरादृते ॥ ८७ ॥

आदृते ऋतो ढिरादेशो भवति । आढिओ ॥ ८७ ॥

---

82. T₁ उदुन्मातुः for इदुन्मातुः in the Sūtra. T₁ मातृकाशब्दस्य for मातृशब्दस्य. B माइघरं माउघरं for माइहरं माउहरं. BT om. मातृगृहम्. BT₁om. माऊणं. After मातृणाम् Gp adds माइआ माउआ मातृका. 83. B वुड्ढी; S उट्ठी for वुट्ठी. T₁ पीहं for पिहं. G T₁ मिइङ्गो मुइङ्गो. S उट्ठो for वुट्ठो. 84. B T om. बृहस्पतौ in Com. T₁ वीहप्पई उहप्पई for बिहप्फई बुहप्फई. 85. G भवन्ति for भवति. B T om. मूसावाओ मोसावाओ. 86. G इदेङौ वा भवतः for इदेङ् वा भवति. S om. एओ एङ्, इच्च एङ्च इदेङ्. G इदेङौ for इदेङ्. T₁ विंदं वेंदं वोंदं for विण्टं etc. 87. T₁ डीरादृते; T₂-₃ डिरादृते for the Sūtra. T डीरादेशो for ढिरादेशो. T₁ आडीओ; T₂ आडिओ; for आढिओ.

दृप्तेऽरि सा ॥ ८८ ॥

दृप्ते ऋतः पकारतकाराभ्यां सह अरि इत्यादेशो भवति । दरिओ । दरिअसीहेण ॥ ८८ ॥

केवलस्य रिः ॥ ८९ ॥

ऋतः केवलस्य व्यञ्जनेनासंपृक्तस्य रि इत्यादेशो भवति । रिद्धी ऋद्धिः । रिच्छो ऋक्षः ॥ ८९ ॥

दृश्यक्सक्किपि ॥ ९० ॥

अक् क्स क्विप् इत्येतदन्ते दृशिधातौ ऋतो रित्वं भवति । अक्-सरिसो सदृशः ॥ क्स—सरिच्छो सदृक्षः । क्विप्—सरी सदृक् । सरिवण्णो सरिरूवो ॥ एवं एआरिसो । भवारिसो । जारिसो । तारिसो । केरिसो । एरिसो । तुम्हारिसो ॥ अक्सयोः साहचर्यात् त्यदादिविहितः क्विप् इह परिगृह्यते ॥९०॥

ऋत्वृजुऋणऋषिऋषभे वा ॥९१ ॥

एषु ऋतो रित्वं वा भवति । रिऊ उऊ । रिज्जू उज्जू । रिणं अणं । रिसी इसी । रिसहो उसहो ॥ ९१ ॥

क्लृप्त इलिः ॥ ९२ ॥

क्लृप्त इत्यत्र आदेरच इलि इत्यादेशो भवति । किलित्तं । किलित्तकुसुमोवआरेसु, क्लृप्तकुसुमोपचारेषु ॥ ९२ ॥

---

88. T_1 दृप्तेरि पता for the Sūtra. $T_{1\cdot 2}$ दरीओ for दरिओ. T_2 अवसंतेण; T_3 दरिअवसंतेण for दरिअसीहेण. 89. T_1 रीः for रिः in the Sūtra. T री for रि. B T_1 om. रिद्धी रिद्धिः. T_1 रीच्छो for रिच्छो. 90. Bp. दृशि टक् सक् क्विपि for the Sūtra. B °क्विपि; T °सक्कपि in the Sūtra. T_1 टक् for अक्. T_1 सक्. for क्स. B T_2 क्विन् for क्विप्. G om. सरी सदृक्. B T सक्क्विनोः साहचर्यात् त्यदादीत्यादिसूत्रविहितः कन् (T_1 कप्; T_2 क्विन्) इह परिगृह्यते. 91. B T स्यात् for भवति. B T रिजू उजू for रिज्जू उज्जू. BT उणं for अणं. BT उसी for इसी. 92. B T om. किलित्तकुसुमोवआरेसु down to °पचारेषु. K °वहारेसु...°पहारेषु for किलित्त...वआरेसु...पचारेषु.

चपेटाकेसरदेवरसैन्यवेदनास्वेचस्त्वित् ॥ ९३ ॥

एषु एचः संध्यक्षराणामित्वं भवति तु । चविडा चवेडा चपेटा । किसरं केसरं केसरम् । दिअरो देअरो देवरः । सिन्नं सेन्नं ॥ दैत्यादित्वात् [१·२·१०३] सइन्नं सैन्यम् । विअणा वेअणा वेदना ॥ महिला महेला इत्येतौ तत्समावेव ॥ ९३ ॥

सैन्धवशनैश्चरे ॥ ९४ ॥

एच इत्यनुवर्तते । सैन्धवशनैश्चरयोरादेरेच इत्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । सिन्धवं । सणिच्छरो ॥ ९४ ॥

त्वत्सरोरुहमनोहरप्रकोष्ठातोद्यान्योन्ये वश्च क्तोः ॥ ९५ ॥

एषु एचः अत्वं तु भवति, तत्संनियोगे यथासंभवं ककारतकारयोश्च वकारादेशः । सररुहं सरोरुहं । मणहरं मणोहरं । पवट्ठो पओट्ठो । आवज्जं आओज्जं । अण्णण्णं अण्णोण्णं ॥ सिरवेअणा सिरोवेअणा इत्येतौ शिरोवेदनायाः साध्यमानसिद्धावस्थयोरेव भवतः ॥ ९५ ॥

कौक्षेयक उत् ॥ ९६ ॥

कौक्षेयक आदेरेच उत्वं भवति तु । कुच्छेअअं कोच्छेअअं ॥ ९६ ॥

शौण्डगेषु ॥ ९७ ॥

शौण्डादिष्वादेरेच उत्वं भवति । योगविभागान्न विकल्पः । सुण्डो शौण्डः । सुद्धोअणी शौद्धोदनिः । मुञ्जाअणो मौञ्जायनः । सुन्देरं सुन्दरिअं सौन्दर्यम् । सुगन्धत्तणं सौगन्ध्यम् । दुवारिओ दौवारिकः । सुवण्णिओ सौवर्णिकः । पुलोमी पौलोमी ॥ इत्यादि ॥ ९७ ॥

---

93. S °केशर° in the Sūtra. 94. K S इत्भवति for इत्वं भवति. B T सणिच्चरो for सणिच्छरो. 95. B T भवति तु for तु भवति. B तत्संनियोगेन for °संनियोगे. B T कतकारयोश्च for ककारतकारयोश्च. After वकारादेशः B T add भवति. K gives Sk equivalents of all Pr. words in Com. 96. K कौक्षेयकस्य for कौक्षेयक. 97. B T₁·₃ सुंडोअणी शौण्डोदनिः for सुद्धोअणी शौद्धोदनिः. B T om. सुन्दरिअं.

गव्यउदाईत् ॥ ९८ ॥

गोशब्दे एचः अउ आई इत्येतौ भवतः । गउओ हरस्स । एसा गाई ॥ ९८ ॥

ऊ स्तेने वा ॥ ९९ ॥

स्तेने संध्यक्षरस्य ऊत्वं वा भवति । थूणो थेणो ॥ ९९ ॥

सोच्छ्वासे ॥ १०० ॥

सोच्छ्वासशब्दे एच ऊ भवति । पृथग्योगान्न विकल्पः । सूसासो ॥ ॥ १०० ॥

ऐच एङ् ॥ १०१ ॥

ऐचः ऐकारौकारयोः एङ् एकारौकारौ यथासंख्यं भवतः । ऐ-शैलः सेलो । त्रैलोक्यं तेल्लोक्कं । ऐरावणः एरावणो । कैलासः केलासो । वैद्यः वेज्जो । कैटभः केढवो । वैधव्यं वेहव्वं ।। औ—कौमुदी कोमुई । यौवनं जोव्वणं । कौस्तुभः कोत्थुहो । कौशाम्बी कोसम्बी । क्रौञ्चः कोञ्चो । कौशिकः कोसिओ ।। १०१ ।।

अइ तु वैरादौ ॥ १०२ ॥

ऐच इत्यनुवर्तते । वैरादिष्वादेरैच अइ इत्यादेशो भवति तु । वैरम् वइरं वेरं । वैशंपायनः वइसंपाअणो वेसंपाअणो । वैशिकम् वइसिअं वेसिअं । वैश्रवणः वइसवणो वेसवणो । चैत्रः चइत्तो चेत्तो । कैलासः कइलासो केलासो । वैतालिकः वइआलिओ वेआलिओ । कैरवम् कइरवं केरवं । दैवम् दइवं देवं । इत्यादि ।। १०२ ।।

---

100. G K ऊद्भवति for ऊ भवति. B T पृथग्योगान्नित्यम् for °योगान्न विकल्पः. 101. S एच in the Sūtra and Com. for एङ्. B कइलासो for केलासो. K केडवो for केढवो. G कौशाम्बो कोसम्बो for कौशाम्बी कोसम्बी. 102. K S om. वैशंपायनः वइसंपाअणो वेसंपाअणो. G वैदेशिकं वइदेसिअं वेदेसिअं for वैशिकं...वेसिअं. After केलासो B T add वैद्यः वइज्जो वेज्जो । कैटभः कइडहो केडहो । वैधव्यं वइहव्वं वेहव्वं. After दइवं G adds दइव्वं. After देवं G adds देव्वं.

दैत्यादौ ॥ १०३ ॥

दैत्यादिष्वादेरैच अइ इत्यादेशो भवति ॥ पृथग्योगान्न विकल्पः । दइच्चो दैत्यः । दइण्णं दैन्यम् । दइवअं दैवतम् । कइअवं कैतवम् । वइअब्भो वैदर्भः । वइसाहो वैशाखः । अइसरिअं ऐश्वर्यम् । वइअणणो वैजननः । भइरओ भैरवः । वइएसो वैदेशः । वइसाणरो वैश्वानरः । वइदेहो वैदेहः । वइसालो वैशालः । सइरं स्वैरम् । चइत्तं चैत्यम् ॥ चैत्ये विश्लेषे न भवति । चेइअं ॥ १०३ ॥

नाव्यावः ॥ १०४ ॥

नौशब्दे ऐचः आव इत्यादेशो भवति । णावा ॥ १०४ ॥

गौरव आत् ॥ १०५ ॥

गौरवे ऐच आत्वं भवति । गारवं ॥ १०५ ॥

पौरगे चाउत् ॥ १०६ ॥

पौरादिषु चकाराद्गौरवे च ऐच अउ इत्यादेशो भवति । पउरो पौरः। सउरो सौरः । मउली मौलिः । कउरवो कौरवः । गउडो गौडः । कउलो कौलः । कउसलं कौशलम् । पउरिसं पौरुषम् । कउच्छेअअं कौक्षेयकम् । सउहं सौधम् । मउणं मौनम् । गउरवं गौरवम् ॥ १०६ ॥

उच्चैर्नीचैसोरअः ॥ १०७ ॥

उच्चैर्नीचैःशब्दयोरैच अअ इत्यादेशो भवति । उच्चअं णीचअं ॥ उच्चनीचाभ्यां कप्रत्यये सिद्धं तथापि उच्चैर्नीचसो रूपान्तरनिवृत्त्यर्थं वचनम् ॥ १०७ ॥

---

103. T Bp दैत्यगेषु for the Sūtra. B T इत्ययमादेशो for इत्यादेशो. B T पृथग्योगान्नित्यम् for °योगान्न विकल्पः. B T read Sk equivalents first and Pr. word thereafter under this Sūtra. B S T वइअवणो for वइअणणो. After वैशालः G adds विशालायां भवः. B S T चैत्यविशेषे for चैत्ये विश्लेषे. 107. B सिद्धेऽपि for सिद्धं तथापि; G om. तथापि. B S T उच्चैर्नीचसोस्तु for उच्चैर्नीचसो.

ई धैर्ये ॥ १०८ ॥

धैर्ये ऐच ईत्वं भवति । धीरं । धीरं हरइ विसाओ, धैर्यं हरति विषादः ॥ १०८ ॥

वा पुआइयाद्याः ॥ १०९ ॥

पुआई इत्यादय शब्दाः स्वराद्यादेशविशेषिता वा निपात्यन्ते । (१) पुआई पिशाच उन्मत्तश्च । (२) ऊणंदिअं आनन्दितम् । (३) टोंबरो तुम्बुरुः । (४) माहिवाओ माघवातः । (५) मइकोडी शतकोटिः । (६) माइन्दो माकन्दः । (७) ओन्दुरो उन्दुरुः । (८) अलिआ आली । (९) तणसोल्लं तृणशूल्यम् मल्लिकेत्यर्थः । (१०) रिट्टो अरिष्टो दैत्यः काको वा । (११) हुलिअं लघु शीघ्रमित्यर्थः । (१२) किरो किरिः । वराह इत्यर्थः । (१३) वामरोरो वामलूरः वल्मीकम् । (१४) वन्द्रं वृन्दम् । (१५) हेरिम्बो हेरम्बः । (१६) चिक्कं स्तोकम् । (१७) चलणाओहो चरणायुधः ।

---

108. BT om. धैर्यं हरति विषादः. 109. (1) HD. 6.80. B पुआयी for पुआई. (2) HD. 1.141. (3) HD. 4.3. B तोम्बरो. G टिंबरु; T_2 डोंबरो; T_3 दोंबरो for टोंबरो. (4) HD. 6.131. (5) Sk शतकोटिः (6) HD. 6.128. (7) Sk उन्दुरुः. G उंदुरो. (8) HD. 1.16. Gp. आलिआ. (9) HD. 5.6. G तणसोल्ली; 'I' तळसोल्लं तृणशून्यम् for तणसोल्लं. GT मल्लिका for मल्लिकेत्यर्थः. (10) HD. 7.6. BST अरिट्ठो for रिट्ठो. S om. काको वा. (11) Sk लघुकम्. BT दरिअं for हुलिअं. (12) HD. 2.30. (13) Sk BST वामलूरो; Gp हमलूरो for वामरोरो. After वल्मीकम् BT add वसो वृक्षः, मूसिओ मूषिकः; Gp विसो वृषः मूषिकः. (14) HG. 2.79. B T वंतं वृन्तम्; Gp बिंबं वृन्दम् for वन्द्रं वृन्दम्. (15) HD. 8.72. (16) HD. 3.21. G चिक्का for चिक्कं. After स्तोकम् BT add स्पृष्टं च. (17) HD 3.7. (चलणाउहो). G चलणाऊहो for °ओहो.

(१८) पुआइणिआ पिशाचिनी । (१९) मूसलं मांसलम् । (२०) महालवक्खो महालयपक्षः । (२१) चंचरिओ चञ्चरीकः ॥ १०९ ॥

इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ
प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

(18) HD, 6.54. B उआणिआ, G पुआइणी; S पुआइणिसा; T_1 पुआइणंआ; $T_{2,3}$ पुआइणीआ for पुआइणिआ. After पिशाचिनी BT add उन्मत्ता दुःशीला च. Gp उन्मत्तादुःशील्योर्वयणिया. (19) HD. 6.1.7. After मांसलम BT add मुसलं. (20) HD. 6.127. BT महल्लअपक्खो; S महल्लपक्खो for महालवक्खो. (21) HD. 3.6. BT चंचरीओ for चंचरिओ. Colophon: BKS om. from °मदर्हनन्दि down to श्रीमत्; T has only प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः.

तृतीयः पादः ॥

एत् साज्झला त्रयोदशगेऽचः ॥ १ ॥

आदेरित्यनुवर्तते । त्रयोदशादिष्वादेरचः साज्झला सस्वरव्यञ्जनेन परेण सह एत्वं भवति । तेरह त्रयोदश । थेरो स्थविरः, वृद्धो ब्रह्मा वा । एक्कारो अयस्कारः। वेइल्लं विचकिलम् ॥ मुद्धविअइल्लपसूणपुञ्जा [कर्पूर० १·१९] इति च दृश्यते ॥ तेवीसा त्रयोविंशतिः, तेत्तीसा त्रयस्त्रिंशत् । इत्यादि ॥१॥

कदले तु ॥ २ ॥

एत्साज्झलेत्यनुवर्तते । कदले आदेरचः परेण सस्वरव्यञ्जनेन सह एद्भवति तु । केलं कअलं । केली कअली ॥ २ ॥

कर्णिकारे फोः ॥ ३ ॥

कर्णिकारे फोर्द्वितीयस्याचः परेण साज्झला सह एत्वं भवति तु । कण्णेरो कण्णिआरो ॥ ३ ॥

नवमालिकाबदरनवफलिकापूगफलपूतर ओत् ॥ ४ ॥

एष्वादेरचः परेण साज्झला सह ओत्वं भवति । लिङ्गान्न विकल्पः । णोमालिआ नवमालिका । बोरं बदरम् । णोहलिआ नवफलिका । पोफलं पूगफलम् । पोरो पूतरः, अधमो जलजन्तुर्वा ॥ ४ ॥

N. B—From this pāda onwards, variants form M are included in the Notes. 1. M आदित्यनुवर्तते. K तेरहा त्रयोदशा for तेरह त्रयोदश. BT₁·₂ om. वृद्धः. B वेइल्लं; M पेइल्लं पक्किलम्; T₁·₂ वेइळं; T₃ वेइळ्ळं for वेइल्लं. BT मुद्धविअइल°; T₂; °विचिकिल° for मुद्धविअइल्ल°. G °पुञ्जाइं; T₃ °विज्जा for °पुञ्जा. After °पुञ्जा G adds मुग्धविचकिलप्रसूनपुञ्जानि. K तेत्रीस for तेवीसा. BT₁ तेतीसा; T₃ तेतिसा for तेत्तीसा. 2. T कदळे for कदले in the Sūtra. T₁ एत्सज्झल चेत्यनुवर्तते. BMT om. स in सस्वर°. BS एत्वं भवति तु for एद्भवति तु. M om. तु. T केळं केळी कअलं कअळी for केलं ...कअली. 3. T₁·₂ कर्णिकारे तु फोः for the Sūtra. Gp द्वितीयाचः परेण सस्वरव्यञ्जनेन for द्वितीयस्याचः परेण साज्झला. B T om. सह. B M T तु भवति for भवति तु S T₁ कण्णीआरो for कण्णिआरो. 4. K om. परेण. B om. सह. T₁·₂ तु भवति for भवति. BT लिङ्गान्नियम् for लिङ्गान्न विकल्पः. G णोहालिआ; T₃ णोहणिआ for णोहलिआ. T पोफळं for पोफलं. M om. अधमो जलजन्तुर्वा.

तु मयूरचतुर्थचतुर्वारचतुर्दशचतुर्गुणमयूखोलूखलसुकुमारोदूखललवण-कुतूहले ॥ ५ ॥

मयूरादिष्वादेः स्वरस्य परेण सस्वरव्यञ्जनेन सह ओत्वं तु भवति । मोरो मऊरो मयूरः । चोत्थो चउत्थो चतुर्थः । चोव्वारो चउव्वारो चतुर्वारः । चोद्दह चउद्दह चतुर्दश । चोद्दही चउद्दही चतुर्दशी । चोग्गुणो चउग्गुणो चतुर्गुणः । मोहो मऊहो मयूखः । ओहलं उलूहलं उलूखलम् । सोमालो सुउमालो सुकुमारः । ओहलो उऊहलो उदूखलः । लोणं लअणं लवणम् । कोहलं कुऊहलं कुतूहलम् ।। मोरः संस्कृतेऽपीति केचित्, तदप्रसिद्धम् ॥ ५ ॥

निषण्ण उमः ॥ ६ ॥

निषण्णे आदेरचः परेण साञ्जला सह उम इत्यादेशो भवति तु । णुमण्णो णिसण्णो ॥ ६ ॥

अस्तोरखोरचः ॥ ७ ॥

अधिकारोऽयं 'शोः सल्' [१·३·८७] इति यावत् । यदित ऊर्ध्वमनुक्रमिष्यामः तदस्तोरसंयुक्तस्य अखोरनादेरचः परस्य भवतीति वेदितव्यम् ।। ७ ।।

---

5. B T एष्वादेः for मयूरादिष्वादेः. B $T_{1\cdot2}$ om. स in सस्वर°. T_3 मयूरं for मयूरः. BS चोद्दहो चउद्दहो for चोद्दह चउद्दह. G K चोद्दसी चउद्दसी for चोद्दही चउद्दही. K M सोमारो सुउमारो for सोमालो. T ओहळं for ओहलं. T_1 उळहलं for उलूहलं. T om. ओहलो उऊहलो उदूखलः. $T_{1\cdot2}$ कउहळं; T_3 कोउहळं for कुऊहलं. GK कश्चित् for केचित्. 6. T om. निषण्णे. B om. सह. After सह T adds निषण्णे. B T om. तु. T_1 णीसण्णो for णिसण्णो. 7. K S T_2 °क्रमिष्यते for °क्रमिष्यामः. G अनादौ वर्तमानस्याचः for अनादेरचः. Gp अचः स्वरात्परस्य for अचः परस्य.

प्रायो लुक् कगचजतदपयवाम् ॥ ८ ॥

असंयुक्तानामनादौ वर्तमानानामचः परेषां क ग च ज त द प य व इत्येतेषां प्रायो लुग्भवति । क–लोकः लोओ । शकटः सअडो । तीर्थकरः तित्थअरो ॥ ग–नगरम् णअरं । नगः णओ । मृगाङ्कः मिअङ्को ॥ च–शची सई । कचग्रहः कअग्गहो ॥ ज–गजः गओ । रजतम् रअअं । प्रजापतिः पआवई ॥ त–स्तुतः सुओ । यतिः जई । रतिः रई । रसातलम् रसाअलं ॥ द–नदी णई । मदनः मअणो । गदा गआ ॥ प–रिपुः रिऊ । विपुलम् विउलं । सुपुरुषः सुउरिसो ॥ य–जयः जयो । वियोगः विओओ । नयनम् णअणं ॥ व–लावण्यम् लाअण्णं । वडवानलः वडआणलो ॥ वग्रहणाद्बकारस्यापि । विबुधः विउहो ॥ प्रायोग्रहणात्क्वचिन्न भवति । सुकुसुमं । पआगजलं । सुगओ । अगरू । सचावं । विजणं । सुतारं । विदुरो । सपावं । समवाओ । देवो । दाणवो ॥ अस्तोरित्येव । अक्को । सग्गो । चच्चा । अज्जुणो । धुत्तो । उद्दामो । विप्पो । सव्वं ॥ अखोरित्येव । कुलं । गङ्गा । चरो । जडो । तमो । दआ । परो । वरो ॥ अच इत्येव । संकरो । संगमो । कंचणं । वंचणा । धणंजओ । अंतरं । चंदणं । कंपो । सअंवरो ॥ समासे तु वाक्यविभक्त्यपेक्षया

8. KS शकटं सअडं for शकटः सअडो. M om. नगरम् णअरं. After कअग्गहो B adds रचना रअणा. After पआवई B adds भजनं भअणं. After गआ B adds कदनं कअणं. After जओ B adds प्रियः पिओ. G दवानलः दआणलो for वडवानलः वडआणलो. After वडआणलो BT विविधः add विइ-(Tउ) हो; GST om. वग्रहणाद् बकारस्यापि. After बकारस्यापि K adds ग्रहणं. After सुकुसुमं T adds कुंभजलं. T om. पआगजलं. B अगरई for अगरू. S सआवं for सचावं. After सचावं G S add सचापम्. K reads देवो दाणवो समवाओ for समवाओ देवो दाणवो. BT अंको for अक्को. After अक्को B T add ससङ्को. BT संग्गो for सग्गो. After सग्गो B adds सङ्का. BT युत्तो for धुत्तो. After विप्पो BT add सच्चं. K सव्वो for सव्वं. After सव्वं B adds अक्को सग्गो. After परो T adds परः. T om. वरो. After वरो T_3 adds जसो । वअणं. K reads चंचलं चंचणं G पंचाणं for वंचणा. T अंतरिअं for अंतरं. B T °पदत्वमपेक्ष्यते for °मपि विवक्ष्यते; M °मपि स्यात्. After भवति

भिन्नपदत्वमपि विवक्ष्यते, तेन तत्र यथादर्शनमुभयमपि भवति। सुहकरो सुहअरो सुखकरः। आअमिओ आगमिओ आगमिकः। जलअरो जलचरो जलचरः। सुअणो सुजणो सुजनः। बहुअरो बहुतरो बहुतरः। सुअहो सुहदो शुभदः सुखदो वा। इत्यादि॥ बहुलाधिकारात् क्वचिदादेरपि भवति। चिह्नं इण्हं। स पुनः सो उणो। न पुनः ण उणो। स च सो अ॥ क्वचिच्चस्य जः। पिशाची पिसाजी॥ ८॥

नात्पः॥ ९॥

आदवर्णात्परस्य अनादेः पः पकारस्य लुङ् न भवति। सवहो शपथः। सावो शापः॥ आदिति किम्। विउलो विपुलः। अनादेरिति किम्। परउट्ठो परपुष्टः॥ ९॥

यश्रुतिरः॥ १०॥

आदित्यनुवर्तते। 'प्रायो लुक्कगचज°' [१·३·८] इत्यादिना लुकि सति योऽवशिष्यते अवर्णः, सः अवर्णात्परः लघुप्रयत्नतरयकारश्रुतिर्भवति। शकटम् सयढं। आकरः आयरो। प्रकारः पयारो। आकाशः आयासो। नगरम् णयरं। सागरः सायरो। वचनम् वयणं। आचारः आयारो। रजतम् रययं। भाजनम् भायणं। प्रजापतिः पयावई। कृतम् कयं। पातालम्

B adds सहचरो सहअरो सहचरः. T_1 सहचरो सहभरो सहचरः.सुहकरोः सुखकरः. BT आअओ आगओ आगतः for आअमिओ आगमिकः. After बहुतरः B adds वित्तअरो वित्तपरो वित्तपरः, धीरअमो धीरयमो धीरतमः, गणवारो गणआरो गणवारः. G इंधं; $T_{1\cdot2}$; इत्थं; T_3 इद्धं. G सो वण for सो उणो. G ण उण for णउणो. 9. GM om. आद्. BT om.अनादेः. BMST om. विउलो विपुल.। अनादेरिति किम्. B T परिउट्ठो परिपुष्टः for परउट्ठो परपुष्टः. 10. S आदिति वर्तते for आदित्यनुवर्तते. BMT प्रायो लुगित्यादिना for प्रायो लुक्कगचज इत्यादिना. B T प्रकाशः पआसो for प्रकारः पआरो. The Mss. have no special sign to indicate the यश्रुति, they promiscuously use य or the vowel; we follow the majority of Mss. in giving the illustrations. G om. सागरः सायरो. G om. पातालं पायालं. T reads पाताळं

पायालं । पदम् पयं । गदा गया । नादवती णायवई । नयनम् णयणं । जाया जाया । लावण्यम् लायण्णं ।। अवर्ण इति किम् । सउणो शकुनः । पउणो प्रगुणः । पउरं प्रचुरम् । राईवं राजीवम् । रई रतिः । साऊ स्वादुः । वाऊ वायुः । कई कपिः कविर्वा ।। आदित्येव । विअडं विकटम् । देअरो देवरः ।। क्वचिद्भवति । पियइ पिबति ।। १० ।।

कामुकयमुनाचामुण्डातिमुक्तके मो ङ्लुक् ।। ११ ।।

कामुकादिषु मकारस्य लुग्भवति । ङानुबन्धत्वाच्छेषस्य स्वरस्य सानुनासिक उच्चारः । कामुकः काउँओ । यमुना जउँणा । चामुण्डा चाउँण्डा । अतिमुक्तकम् अइउँतअं ।। क्वचिद् अइमुत्तअं अइमुंतअं इति च दृश्यते ।। ११ ।।

खोऽपुष्पकुब्जकर्परकीले कोः ।। १२ ।।

'उकारेणानुबन्धेन स्ववर्ग्याः परिगृह्यन्ते' इति व्याकरणान्तरे सिद्धम् । यथा कुः कवर्गः । चुः चवर्गः । एवं टुतुपवः ।। अपुष्पवाचिनि कुब्जशब्दे कर्परकील्योश्च कोः कवर्गस्य खो भवति । खुज्जो ।। पुष्पे तु-बन्धेउं कुज्जपसूणं ।। खप्परं । खीलओ ।। १२ ।।

पाआळं. G om. पदं पयं. T_1 पादं for पदं. G om. नादवती णाअवई. K S om. लावण्यम् लायण्णं. G पउओ प्रचुरः for पउरं प्रचुरम. G T om. कविर्वा. G दिअरो for देअरो. T पीअइ for पियइ. 11. G °नासिकोच्चारः. The Mss. have no sign for अनुनासिक; they use अनुस्वार for it. B अतिमुत्तकः for अतिमुक्तकम्. B अइउंत्तओ; G अणिउँत्तअं; S अतिउत्तकं; T अइउंतकं for अइउतअं. B अइमुत्तअं for अइमुत्तअं. BT om. अइमुंतअं; B अइमुत्तअं for अइमुंतअं. B T om. अइमुंतअं; S अइउत्तअं for अइमुंतअं. 12. M कोः कवर्गस्य कुचुटुतुपु इति व्याकरणान्तरसिद्धत्वात् for उकारेण... सिद्धम्. B °कूर्पर°; T_1 कर्पूर° for °कर्पर° in the Sūtra and Com. BT प्रसिद्धम् for सिद्धं. BT टुतुपुपु; S टु तु पु for टुतुपवः. B बन्धुअ; K बन्धूअ for बन्धेउं. BT खप्परो for खप्परं. B खिलिओ; S खिलओ; T_1 खींदो; T_2 खलओ for खीलओ.

छागशृङ्खलकिराते लकचाः ॥ १३ ॥

कोरित्यनुवर्तते । शृङ्खलकिरातेषु कवर्गस्य ल क च इत्येते यथासंख्यं भवन्ति । छागः छालो । छागी छाली । शृङ्खलम् संकलं । किरातः चिलाओ । पुलिन्दपर्याय एव । कामरूपिणि तु नेष्यते । नमिमो हराकिराअं ॥ १३ ॥

वैकादौ गः ॥ १४ ॥

एकादिषु कोर्गकारो वा भवति । एगो । पक्षे एक्को एओ । आगरिसो आआरिसो आकर्षः । लोगो लोओ लोकः । असुगो असुओ असुकः । तित्थगरो तित्थअरो तीर्थकरः । उज्जोअगरो उज्जोअअरो उद्योतकरः । सावगो सावओ श्रावकः । अमुगो अमुओ अमुकः । आगारो आआरो आकारः । इत्यादि ॥ १४ ॥

खोः कन्दुकमरकतमदकले ॥ १५ ॥

एषु खोरादेः कवर्गस्य गो भवति । पृथग्योगान्न विकल्पः । गन्दुओ कन्दुकः । मरगअं मरकतम् । मदगलो मदकलः ॥ १५ ॥

पुन्नागभागिनीचन्द्रिकासु मः ॥ १६ ॥

एषु कोर्मो भवति । पुण्णामो । भामिणी । चन्दिमा ॥ १६ ॥

शीकरे तु भहौ ॥ १७ ॥

शीकरे कवर्गस्य भकारहकारौ तु भवतः । सीहरो सीभरो सीअरो ॥ १७ ॥

---

13. G लकचं for लकचाः in the Sūtra. G इत्येतत् for इत्येते. G T भवति for भवन्ति. G $T_{2\cdot3}$ om. छागी. B° रूपिणस्तु for °रूपिणि तु. 14. S उद्योगकरः for उद्योतकरः. M om. इत्यादि. 15. M कुसुदक°; T_1 कन्तुक° for कन्दुक° in the Sūtra. M T °योगान्नित्यम् for °योगान्न विकल्पः. G गेन्दुअं; S गंदअं; T गंदुअं for गन्दुओ. G मयगलो for मदगलो. 16. B °भगिनी° for भागिनी° in the Sūtra. G T पुण्णामाइं वसन्ते for पुण्णामो. 17. M श्रीकरे तु हभौ; S शिखरे तु हभौ for the Sūtra. B T कोः for कवर्गस्य. K S हभौ for भकारहकारौ. S सिहरो सिखरो for सीहरो ...सीअरो.

ऊत्वे दुर्भगसुभगे वः ॥ १८ ॥

अनयोरुत ऊत्वे सति कोर्वकारो भवति । दूहवो । सूहवो ।। ऊत्व इति किम् । दुहओ सुहओ ॥ १८ ॥

निकषस्फटिकचिकुरे हः ॥ १९ ॥

एषु कवर्गस्य हत्वं भवति । णिहसो । फलिहो । चिहुरो ।। चिहुरः संस्कृतेऽपीति भङ्गाचार्यः ॥ १९ ॥

खघथधभाम् ॥ २० ॥

ह इति वर्तते । असंयुक्तानामनादौ वर्तमानानामचः परेषां ख घ थ ध भ इत्येतेषां प्रायो हकारो भवति । ख—शाखा साहा । मुखम् मुहं । लिखति लिहइ ॥ घ—मेघः मेहो । जघनम् जहणं । श्लाघते सलाहइ ॥ थ—नाथः णाहो । रथः रहो । मिथुनम् मिहुणं । कथयति कहेइ ॥ ध—साधुः साहू । सुधा सुहा । बाधते बाहइ ॥ भ—शुभम् सुहं । स्वभावः सहावो । स्तनभरः थणहरो । शोभते सोहइ ॥ अस्तोरित्येव । सौख्यम् सोक्खं । आख्याति अक्खइ । अर्घः अग्घो । कत्थइ कथ्यते । गृद्धः गिद्धो । उद्धरति उद्धरइ । दर्भः दब्भो ॥ लभ्यते लब्भइ ॥ अखोरित्येव । खगा । घटा । थणो । धणं । भरो ॥ अच इत्येव । संखो । संघो । कंथा । बंधो । रंभा ॥ प्राय इत्येव । सरिसवखलो सर्षपखलः । पलअघणो प्रलयघनः । अत्थिरो अस्थिरः । जिणधम्मो जिनधर्मः । पणट्ठभवो प्रनष्टभवः ॥ २० ॥

---

18. BKST सुभगदुर्भगे in the Sūtra. T₁ वा for वः in the Sūtra. 19. KS कोः for कवर्गस्य. After णिहसो BT add णीहसो. After चिहुरो K adds चिकुरः. G दुर्गाचार्यः for भङ्गाचार्यः against Mss. on the authority of हेमचन्द्र; T आहुराचार्याः. 20. K लाहइ for सलाहइ BT कहअइ; G कहइ for कहेइ. B K T सुहावो; G सहाओ for सहावो. T सुक्खं for सोक्खं. After उद्धरइ T adds उद्धइ उद्धाइ. GK खमो; S खग्गो for खगा. G K S घंटा for घटा. G थेणू; T₁ घणो for थणो. T om. अत्थिरो अस्थिरः. G S °भओ for °भवो. T₁-₃ पणट्ठपहवो प्रनष्टप्रभवः for पणट्ठभवः.

धः पृथकि तु ॥ २१ ॥

पृथक्शब्दे थस्य धकारो भवति तु । पुधं पिधं पुहं पिहं ॥ २१ ॥

चोः खचितपिशाचयोः सल्लौ ॥ २२ ॥

त्वित्यनुवर्तते । खचितपिशाचयोः चोश्चवर्गस्य सकार–द्विरुक्तल्कारौ यथासंख्यं तु भवतः । खसिओ खइओ । पिसल्लो पिसाओ ॥ स्त्रियां क्वचिज्जत्वमपि । पिसाजी ॥ २२ ॥

झो जटिले ॥ २३ ॥

चोरिति वर्तते । जटिले चवर्गस्य झत्वं तु भवति । झडिलो जडिलो ॥ २३ ॥

टोर्बडिशादौ लः ॥ २४ ॥

बडिशादौ टवर्गस्य लत्वं तु भवति । बलिसं बडिसं । गुलो गुडो । णलं णडं । चविलो चविडो । आमेलो आमेडो । णाली णाडी । वेलू वेणू । दालिमं दाडिमं । फालेइ फाडेइ ॥ बडिशगुडनडचपेटापीडनाडीवेणुदाडिमपाटीति । पाटीति पाटयति इति णिजन्तः पटिधातुरिह गृह्यते ॥ २४ ॥

स्फटिके ॥ २५ ॥

टोरित्यनुवर्तते । स्फटिके टवर्गस्य लो भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । फलिहो ॥ २५ ॥

लरङ्कोठे ॥ २६ ॥

अङ्कोठे ठोर्लत्वं भवति । रित्त्वाद् द्वित्वम् । अङ्कोल्लं ॥ २६ ॥

---

21. S ढः; T_2 थः for धः; $T_{1\cdot3}$ damaged. G notes that all Mss. used read ढः for धः. 22. T_1 खसीओ; T_2 खस्सिओ for खसिओ. S विसालो for पिसाओ. 23. GT चोरित्यनुवर्तते. After वर्तते B adds त्विति च. T झटिलो जटिलो for झडिलो. 24. M om. बडिशादौ. Before बडिशादौ B T read त्वित्यनुवर्तते. B दाडिवं for दाडिमं. BT पालेइ पाडेइ for फालेइ फाडेइ. B °दाडिमाः, T दाडिम for °दाडिम. B T om. पाटीति. G पटधातुः for पटिधातुः 26. B अङ्कोडे in the Sūtra and Com. $T_{1\cdot2}$ अक्कोठे, for अङ्कोठे. G अङ्कोल्लतेल्लतुप्पं; Gp S अङ्कोल्लतेल्लं for अङ्कोल्लं.

ढः कैटभशकटसटे ॥ २७ ॥

कैटभशकटसटाशब्दे टेर्ढकारो भवति। केढवो। सअढो। सढा ॥ २७ ॥

ठः ॥ २८ ॥

असंयुक्तस्यानादौ स्थितस्याचः परस्य ठकारस्य ढो भवति। मठः मढो। कमठः कमढो। शठः सढो। कुठारः कुढारो ॥ अस्तोरित्येव। चिट्ठइ ॥ अखोरित्येव। ठाइ ॥ अच इत्येव। कंठो ॥ २८ ॥

पिठरे ह्स्तु रश्च ढः ॥ २९ ॥

ठ इति वर्तते। पिठरे ठस्य ह्त्वं भवति तु, तत्संनियोगे रस्य च ढत्वम्। पिह्ढो पिढरो पिठरः ॥ २९ ॥

लल् डोऽनुड्वगे ॥ ३० ॥

अस्तोरखोरचः परस्य डकारस्य लकारो भवति, अनुड्वगे उड्वादीन् वर्जयित्वा। लित्त्वान्न विकल्पः। वडवामुखम् वलआमुहं। गरुडः गरुलो। तडाकम् तलाअं। क्रीडति कीलइ ॥ अस्तोरित्येव। कुड्डं कुड्यम् ॥ अखोरित्येव। डमरुओ डमरुकः ॥ अच इत्येव। तोंडं तुण्डम् ॥ अनुड्वग इति किम्। उडु। निबिडं। गउडो। नाडी। पीडिअं। नीडं इत्यादि ॥ ३० ॥

टो डः ॥ ३१ ॥

अस्तोरखोरचः परस्य टकारस्य डत्वं भवति। भटः भडो। नटः णडो। घटः घडो। घटते घडइ ॥ अस्तोरित्येव। खट्टंगं खट्वाङ्गम् ॥ अखोरित्येव। टक्को देशः ॥ अच इत्येव। घंटा ॥ क्वचिन्न भवति। अटति अटइ ॥ ३१ ॥

---

27. G °शब्देषु for °शब्दे. B ढत्वं; T डत्वं for ढकारो. B कइढवो for केढवो. B सअढं for सअढो. 28. B T वर्तमानस्य for स्थितस्य. S om. मठः मठो. 29. G इत्यनुवर्तते for इति वर्तते. S रस्य ढः; T डत्वम् for ढत्वम्. 30. BMT लित्त्वान्नित्यम for लित्त्वान्न विकल्पः B om. डमरुकः; T डमरुअं for डमरुओ. G तडी for नाडी. 31. S असंयुक्तस्यानादौ वर्तमानस्याचः परस्य for अस्तोरखोरचः परस्य. B T टस्य for टकारस्य. After णडो B adds पटः पडो. B टक्को देशे; T टक्को टंकः for टक्को देशः.

वेतस इति तोः ॥ ३२ ॥

ड इत्यनुवर्तते। वेतसे अत इत्वे सति तोस्तवर्गस्य डो भवति। वेडिसो ॥ इतीति किम्। वेअसो ॥ अत एव विधानात् स्वप्नादौ वेतसस्य अत इत्वं वा भवतीति वेदितव्यम् ॥ ३२ ॥

प्रतिगेऽप्रतीपगे ॥ ३३ ॥

तोरित्यनुवर्तते। प्रत्यादिषु तोस्तवर्गस्य डो भवति, अप्रतीपगे प्रतीपादीन्वर्जयित्वा। प्रतिपन्नम् पडिवण्णं। प्रतिभासः पडिहासो। प्रतिहारः पडिहारो। प्रतिस्पर्द्धी पाडिप्फद्धी। प्रतिनिवृत्तम् पडिणिअत्तं। प्रतिकरोति पडिकरेइ। प्रतिपत् पडिवआ। प्रतिश्रुत् पडंसुआ। प्रतिमा पडिमा। प्रभृति पहुडि। मृतकम् मडअं। भिन्दिपालः भिण्डिवालो। पताका पडाआ। प्राभृतम् पाहुडं। बिभीतकः बहेडओ। व्यापृतः वावडो। कन्दरिका कण्डरिआ औषधविशेषः। हरीतकी हरडई। इत्यादि ॥ अप्रतिपग इति किम्। प्रतीपम् पईवं। प्रतिज्ञा पइण्णा। संप्रति संपइ। प्रतिसमयम् पइसमअं। प्रतिष्ठा पइट्ठा। प्रतिष्ठानम् पइट्ठाणं। इत्यादि ॥ ३३ ॥

दंशदहोः ॥ ३४ ॥

दंशतिदहत्योर्धात्वोस्तवर्गस्य डत्वं भवति। डंसइ। डहइ ॥ ३४ ॥

---

32. B अत इत्यनु°; T₁ स इत्यनु° for ड इत्यनु°. G इति सति for इत्वे सति. 33. B T om. तोः. T₁ पडीहासो for पडिहारो. B M T पडिप्फद्धी for पाडिप्फद्धी. B पडिणिउत्तं; T पडिणिवुत्तं for पडिणिअत्तं. B K पडिसुआ; T पडिस्सुआ for पडंसुआ. After वावडो B adds व्याहृतं वाडिडो. T₁ वावसो for वावडो. G कन्दलिका कंदलिआ for कन्दरिका कण्डरिआ. T हरीडई for हरडई. After पइसमअं B adds प्रतिसमअं पइसमअं. B K T प्रतिस्थानं for प्रतिष्ठानम्.

दम्भदरदर्भगर्दभदष्टदशनदग्धदाहदोहददोलादण्डकदने तु ॥ ३५ ॥

दम्भादिषु तवर्गस्य डो भवति तु । डम्भो दम्भो । डरो दरो । डब्भो दब्भो । गड्डहो गद्दहो । डट्ठो दट्ठो । डसणं दसणं । डड्ढो दड्ढो । डाहो दाहो । डोहलं दोहलं । डोला दोला । डण्डो दण्डो । कडणं कदनं । दरशब्दे भयार्थवृत्तावेव । अन्यत्र दरदलिअं ॥ दोहदे दम्भादिसाहचर्यादाद्यस्यैव ॥ ३५ ॥

तुच्छे चच्छौ ॥ ३६ ॥

तुच्छे तवर्गस्य चकारछकारौ तु भवतः । चुच्छं छुच्छं ॥ ३६ ॥

टल् त्रसरवृन्ततूबरतगरे ॥ ३७ ॥

एषु तवर्गस्य टकारो भवति। लित्वान्न विकल्पः। टसरो । वेण्टं । तालवेण्टं । टूबरो तूबरः शृङ्गरहितोऽनड्वान्, श्मश्रुरहितः पुरुषो वा । टगरो तगरः ओषधिविशेषो वृक्षविशेषो वा ॥ ३७ ॥

हः कातरककुदवितस्तिमातुलिङ्गे ॥ ३८ ॥

एषु तवर्गस्य हत्वं भवति । काहलो । कउहं । विहत्थी । माहुलिङ्गं ॥ मातुलुङ्गस्य तु माउलुङ्गं ॥ ३८ ॥

तु वसतिभरते ॥ ३९ ॥

अनयोस्तवर्गस्य हत्वं वा भवति । वसही वसई । भरहो भरओ ॥ ३९ ॥

---

35. S °धर for °दर° in the Sūtra. After °दर्भ° in the Sūtra MT add °गर्भ. S कदनेषु for कदने. T₁ दर्भादिषु for दम्भादिषु. B डसणो दसणो for डसणं दसणं. After दसणं K adds डट्ठं दट्ठं. After दरदलिअं BT add अर्धदलितम्. After आद्यस्यैव G adds: बहुलाधिकारात् सद्दो (शब्द) इति तु सिद्धम्. 36. G तकारस्य for तवर्गस्य. After छुच्छं G adds तुच्छम्. 37. M om. the Sūtra. and Com. T डसरो for टसरो. S om. तालवेण्टं. After पुरुषो वा B T add अनको वा. S om. तगरः ओषधिविशेषो वृक्षविशेषो वा. G औषध° for ओषधि°. 38. M om. the Sūtra and Com. G °मातुलिङ्गेषु for मातुलिङ्गे in the Sūtra; S °मातुलुंगे in the Sūtra. BT काहरो for काहलो. B T om. मातुलुङ्गस्य तु माउलुङ्गं. 39. M om. the Sūtra and Com. GT वसतिभरते तु for the Sūtra. KS तु for वा.

लः पलितनिम्बकदम्बे ॥ ४० ॥

एषु तवर्गस्य लो भवति वा । पलिलं पलिअं । लिम्बो णिम्बो । कलम्बो कअम्बो ॥ ४० ॥

दोहदप्रदीपशातवाहनातस्याम् ॥ ४१ ॥

दोहदे प्रपूर्वकदीप्यतिधातौ शातवाहने अतस्यां च तवर्गस्य लत्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । दोहलो । पलीवेइ । पलित्तं । साल्वाहणो साला-हणो । अलसी ॥ ४१ ॥

रल् सप्तत्यादौ ॥ ४२ ॥

सप्तत्यादौ तवर्गस्य रत्वं भवति । लित्वान्नित्यम् । सप्ततिः सत्तरी । सप्तदश सत्तरह । एकादश एआरह । द्वादश बारह । त्रयोदश तेरह । पञ्चदश पण्णरह । अष्टादश अट्ठारह । गग्गरं गद्गदम् इत्यादि ॥ ४२ ॥

अद्रुमे कदल्याम् ॥ ४३ ॥

अद्रुमवाचिनि कदलीशब्दे तोः रत्वं भवति । करली ॥ अद्रुम इति किम् । कअली केली ॥ ४३ ॥

कदर्थिते खोर्वः ॥ ४४ ॥

कदर्थिते खोरादेस्तवर्गस्य वत्वं भवति । कवट्ठिओ ॥ ४४ ॥

पीते ले वा ॥ ४५ ॥

व इति वर्तते । पीते स्वार्थिकलकारे सति तोर्वकारो भवति । पीवलं पीअलं ॥ ल इति किम् । पीओ ॥ ४५ ॥

---

40. G लो निम्बपलितयोः; S लःपलितबिम्बकदंबे for the Sūtra. B °नितम्ब° for निम्ब° in the Sūtra. G अनयोः for एषु. B T om. वा. B णिलम्बो णिअम्बो for लिम्बो णिम्बो. After कअम्बो G adds: इत्येतौ कडम्बकदम्बयोर्व-त्वलोपयोर्भवतः. 41. G °सात° in the Sūtra and Com. G T प्रपूर्वं दीप्यतौ धातौ; S प्रपूर्वदीप्यतौ धातौ for प्रपूर्वकदीप्यतिधातौ. B K T डोहलो for दोहलो. S om. सालाहणो. 42. KS सप्तत्यादिषु for सप्तत्यादौ. K S लित्वाच्च विकल्पः for लित्वान्नित्यम्. 43. After भवति K adds कदली. 44. T कवत्थिओ for कवट्ठिओ. 45. T पीतले वा for the Sūtra. G तोरिति वर्तते; B T व इत्यनुवर्तते for व इति वर्तते. B पविलो पीअलो for पीवलं पीअलं.

डो दीपि ॥ ४६ ॥

दीप्यतौ धातौ तवर्गस्य डकारो वा भवति । डिप्पइ दिप्पइ ॥४६॥

ढः पृथिव्यौषधनिशीथे ॥ ४७ ॥

एषु तवर्गस्य ढो वा भवति । पुढवी पुहवी । ओसढं ओसहं । णिसीढो णिसीहो ॥ ४७ ॥

प्रथमशिथिलमेथिशिथिरनिषधेषु ॥ ४८ ॥

ढ इति वर्तते । प्रथमादिषु तोर्ढत्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । पढमं पुढमं । सिढिलं सढिलं । मेढी । सिढिरो । णिसढो ॥ ४८ ॥

णर्दिना रुदिते ॥ ४९ ॥

रुदिते तवर्गस्य दि इत्यवयवेन सह णत्वं भवति । रित्वाद् द्वित्वम् । रुण्णं ॥ अत्र केचिद् ऋत्वादिषु तो द इत्यारब्धवन्तः, तच्छौरसेनीमागधीविषय एव दृश्यत इति नोच्यते । प्राकृते तु ऋतुः उऊ । रजतम् रअअं । एतत् एअं । गतः गओ । आगतः आगओ । सांप्रतम् संपअं । यतः जओ । ततः तओ । कृतम् कअं । हतम् हअं । हताशः हआसो । श्रुतः सुओ । सुकृती सुकिई । निर्वृतिः णिव्वुई । तातः ताओ । कातरः काअरो । द्वितीयः दुईओ इत्यादयः प्रयोगा भवन्ति । क्वचित्संभवेऽपि 'तद्वयत्ययश्च' [३·४·६९] इति सिद्धम् ॥ ४९ ॥

---

46. T_1 धो दीपि; T_3 धो दीपिः for the Sūtra. T तवर्गस्य धो भवति for तवर्गस्य डकारो वा भवति. T धिप्पइ for डिप्पइ. 47. BT °ओषधि° in the Sūtra. T om. वा. BT ओसढी ओसही for ओसढं ओसहं. After णिसीहो T adds निशिथः. 48. T °मैथिल° for °मेथि° in the Sūtra. T_2 °शिशिर° for °शिथिर° in the Sūtra. T_1 °निषेधेषु for °निषधेषु in the Sūtra. T_3 थ इति for ढ इति. G om. पृथग्योगान्नित्यम्. G T om. पुढमं. B T om. सढिलं. T मेढिलो for मेढी. G T सिढिलो for सिढिरो. T णिसेढो for णिसढो. 49. M ना रुदिते; T_1 णो रदिना रुदिते; T_2 णो ररदिना रुदिते; T_3 र्णा दिना रुदितेः for the Sūtra. G om. तो. T om द B T सुकृतिः for सुकृती. After सुकिई S adds आकृतिः आकिई. B T निर्वृतः णिव्वुओ for निर्वृतिः णिव्वुई. After णिव्वुई G adds निर्वातः णिव्वाओ. G om. कातरः काअरो. T om. कतरः कअरो. B T बीओ for दुईओ. B T प्रयोगा बहवः संति or प्रयोगा भवन्ति.

णो वातिमुक्तके ॥ ५० ॥

अतिमुक्तके तवर्गस्य णत्वं वा भवति । अणिउँत्तअं अइउँत्तअं अइमुत्तअं ॥ ५० ॥

गर्भिते ॥ ५१ ॥

ण इत्यनुवर्तते । गर्भिते तवर्गस्य णत्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । गब्भिणो ॥ ५१ ॥

नः ॥ ५२ ॥

अस्तोरखोरचः परस्य नकारस्य णकारो भवति । कनकं कणअं । धनं धणं । माणइ मानयति ॥ ५२ ॥

आदेस्तु ॥ ५३ ॥

न इत्यनुवर्तते । शब्दानामादेर्नकारस्य णत्वं भवति तु । नदी णई नई । नयति णेइ नेइ ॥ अस्तोरित्येव । न्यायः नाओ ॥ ५३ ॥

नापिते ण्हः ॥ ५४ ॥

नापिते नकारस्य ण्ह इत्यादेशस्तु भवति । ण्हाविओ णाविओ नाविओ ॥ ५४ ॥

पो वः ॥ ५५ ॥

असंयुक्तस्यानादौ वर्तमानस्याचः परस्य पकारस्य वकारः स्यात् प्रायः। शपथः सवहो । शापः सावो । उपसर्गः उवसग्गो । प्रदीपः पईवो । पापम् पावं । उपमा उवमा । कपिलः कविलो । कुणपम् कुणवं । कलापः कलावो ।

---

50. After अणिउँत्तअं B adds अणिउत्तअं अइंउत्तअं. 51. G णमित्यनुवर्तते. T om. पृथग्योगान्नित्यम्. G T गब्भिणो for गब्भिणो. 52. K S णो for णकारो. T₂ कणकं for कणअं. T धणअओ for धणं. B माणेइ for माणइ. T माणअंति मानयन्ति for माणइ मानयति. 53. S T णो for णत्वं. 54. G वा for तु. S om. तु. G K T om. णाविओ. 55. Before असंयुक्तस्य G reads प्रायः, but om. it at the end of the sentence. G भवति for स्यात्. K S T प्रायो भवति for स्यात्प्रायः. T कुणपः कुणवो for कुणपं कुणवं. After महीवालो B T add नरपतिः नरवई.

कपालम् कवालं । महीपालः महीवालो । गोपायति गोवाअइ । तपति तवइ ॥ अस्तोरित्येव । विप्रः विप्पो ॥ अखोरित्येव । पडइ पतति । पढइ पठति ॥ अच इत्येव । कंपइ कम्पते ॥ प्राय इत्येव । कपिः कई । रिपुः रिऊ ॥ एतेन पकारस्य प्रासयोर्लोपवकारयोर्यस्मिन्कृते श्रुतिसुखमुत्पद्यते स तत्र विधेयः ॥ ५५ ॥

फः पाटिपरिघपरिखापरुषपनसपारिभद्रेषु ॥ ५६ ॥

प इत्यनुवर्तते । णिजन्ते पटिधातौ परिघादिषु च पस्य फत्वं भवति । पाटयति फालेइ फाडेइ । परिघः फलिहो । परिखा फलिहा । परुषः फरुसो । पनसः फणसो ॥ फनसः संस्कृतेऽपीति केचित् ॥ पारिभद्रः फालिहद्दो ॥५६॥

नीपापीडे मो वा ॥ ५७ ॥

नीपे आपीडे च पस्य मो वा भवति । नीमो नीवो । आमेडो आवेडो ॥ ५७ ॥

रल् पापर्द्धौ ॥ ५८ ॥

पापर्द्धौ पस्य रो भवति । लित्वान्न विकल्पः । पारद्धी । पापर्द्धि-र्मृगया ॥ ५८ ॥

प्रभूते वः ॥ ५९ ॥

प्रभूते पस्य वो भवति । वहुत्तं ॥ ५९ ॥

T गोपयति गोवइ for गोपायति गोवाअइ. G om. पडइ पतति. B पटइ for पडइ. T om. पढइ पठति. B कविः for कपिः. After एतेन B T add पकारेण. M पस्य for पकारस्य. 56. G om. पारि in °पारिभद्रेषु in the Sūtra. M °पुरुष° for परुष in the Sūtra. T om. च. T om. फाडेइ. T_2 फरिखा फळिहा for फलिहा. K फलुसो for फरुसो. S om. फनसः... केचित्. G om. इति केचित्. T_3 पारिभद्रं for पारिभद्रः. K पालिभद्दं; T_3 फारिभद्दं for फालिहद्दो. 57. G आमेलो; T आमेलो आवेलो for आमेडो. 58. BT लित्वान्नित्यम् for लित्वान्न विकल्पः. G K om. पापर्द्धिर्मृगया.

फस्य भहौ वा ॥ ६० ॥

अस्तोरखोरचः परस्य फकारस्य भकारहकारौ यथादर्शनं व्यवस्थित-विभाषया भवतः । क्वचिद् भः । रेफः रेभो । शिफा सिभा ॥ क्वचित्तु हः । मोत्ताहलं मुक्ताफलम् ॥ क्वचिदुभावपि । सफलम् सहलं सभलं । शेफालिका सेहालिआ सेभालिआ । शफरी सहरी सभरी । गुभइ गुहइ गुम्फति ॥ अस्तोरित्येव । पुप्फं पुष्पम् ॥ अखोरित्येव । फणी ॥ अच इत्येव । गुंफइ ॥ प्राय इत्येव । कसणफणी कृष्णफणी ॥ ६० ॥

बो वः ॥ ६१ ॥

अस्तोरखोरचः परस्य बकारस्य वो भवति । शबलः सवलो । अलाबुः अलावू ॥ ६१ ॥

ङ्वयौ कबन्धे ॥ ६२ ॥

कबन्धे बस्य वकारयकारौ भवतः । ङित्त्वात्सानुनासिक उच्चारो वकारस्य । कबन्धः कवँधो कयंधो ॥ ६२ ॥

भिसिन्यां भः ॥ ६३ ॥

बिसिनीशब्दे बस्य भो भवति । भिसिणी ॥ ६३ ॥

वो भस्य कैटभे ॥ ६४ ॥

कैटभे भस्य वो भवति । कइढवो ॥ ६४ ॥

त्वभिमन्यौ मः ॥ ६५ ॥

व इत्यनुवर्तते । अभिमन्यौ मस्य वो भवति तु । अहिवण्णू अहिमण्णू ॥ ६५ ॥

---

60. M T₃ हभौ in the Sūtra. M om. वा in the Sūtra. T₃ हकारभकारौ for भकारहकारौ. BT °विभाषायां for °विभाषया. G मुत्ताहलं for मोत्ताहलं. G सोहलिआ for सेहालिआ. B गुंहइ गुंभइ for गुभइ गुहइ. K गुफति for गुम्फति. BT गुप्फं गुल्फम् for पुप्फं पुष्पम्. 61. G K असंयुक्तस्यानादौ स्थितस्य for अस्तोरखोः. 62. T वयौ for ङ्वयौ in the Sūtra. K बकारस्य for बस्य. G ङित्त्वाद्वकारस्यानुनासिकः; S ङित्त्वाद्वकारः सानुनासिकः for ङित्वा...वकारस्य. 63. G M भकारो for भो. 64. G K बत्वे for वो. G केढवो; T केडवो for कइढवो. 65. T om. तु. S om. अहिमण्णू.

मन्मथे ॥ ६६ ॥

म इत्यनुवर्तते । मन्मथे आदेर्मस्य वो भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । वम्महो ॥ ६६ ॥

तु ढो विषमे ॥ ६७ ॥

विषमशब्दे मस्य ढो भवति । विसढो विसमो ॥ ६७ ॥

यो जर्तीयानीयोत्तरीयकृत्येषु ॥ ६८ ॥

त्वित्यनुवर्तते । तीये अनीये च प्रत्यये उत्तरीयशब्दे कृद्विहितयप्रत्यये च यकारस्य जकारो भवति । रित्त्वाद् द्वित्वम् । तीये–द्वितीयः विइज्जो विइओ । तृतीयः तइज्जो तइओ ॥ अनीये–करणीयम् करणिज्जं करणीअं । विस्मयनीयम् विम्हअणिज्जं विम्हअणीअं । यापनीयम् जावणिज्जं जावणीअं । उत्तरीयम् उत्तरिज्जं उत्तरीअं ॥ कृत्ये–पेया पेज्जा पेआ । मेयम् मेज्जं मेअं ॥ ६८ ॥

इन्मयटि ॥ ६९ ॥

य इत्यनुवर्तते । मयट्प्रत्यये यस्य इकारो भवति तु । विषमयः विसमइओ विसमओ ॥ ६९ ॥

छायायां होऽकान्तौ ॥ ७० ॥

अकान्तौ वर्तमाने छायाशब्दे यस्य हत्वं तु भवति । वच्छस्स छाहा वच्छस्स छाआ । पुद्गलपर्यायः ॥ सच्छाहं सच्छाअं ॥ अकान्ताविति किम् । मुहच्छाआ । मुखकान्तिरित्यर्थः ॥ ७० ॥

यष्ट्यां लल् ॥ ७१ ॥

यष्ट्यां यस्य लत्वं भवति । लित्त्वान्न विकल्पः । लट्ठी यष्टिः । वेलुलट्ठी वेणुयष्टिः । चूअलट्ठी चूतयष्टिः । महुलट्ठी मधुयष्टिः ॥ ७१ ॥

---

66. M म इत्यनुवृत्तिः for म इत्यनुवर्तते. 67. B डो in the Sūtra and Com. B विसडो; T₁ विसवो for विसढो. M ढस्तु स्यात् for ढो भवति. 68. T नीये for अनीये. B M कृद्विहितप्रत्यये; T₁ कचिद्विहितप्रत्यये for कृद्विहितयप्रत्यये. G om. द्वितीयः विइज्जो विइओ. G कृद्ये for कृत्ये. 69. T इम्मयटि for the Sūtra. S मयटि प्रत्यये for मयट्प्रत्यये. 70. M अकान्तिवाचिनि for अकान्तौ वर्तमाने. B om. तु. 71. BT om. लित्त्वान्न विकल्पः. BT वेणुलट्ठी for वेलुलट्ठी. T om. महुलट्ठी मधुयष्टिः.

कतिपये वहशौ ॥ ७२ ॥

कतिपये यस्य वत्वहत्वे भवतः । हत्वे शिरवात्पूर्वस्य दीर्घः । कइअवं कइवाहं ॥ ७२ ॥

अर्थपरे तो युष्मदि ॥ ७३ ॥

अर्थपरे युष्मच्छब्दे यस्य तकारो भवति । तुम्हच्चिअं यौष्माकम् । तुम्हकेरो युष्मदीयः ॥ अर्थपर इति किम् । जुम्हदम्हप्पअरणं, युष्मदस्मत्प्रकरणम् ॥ ७३ ॥

आदेर्जः ॥ ७४ ॥

पदादेर्यस्य जो भवति । यशः जसो । यमः जमो । युवतिः जुवई । याति जाइ ॥ आदेरिति किम् । अवअवो । विणओ ॥ बहुलाधिकारात्सोपसर्गस्यानादेरपि । संजोओ संयोगः । संजमो संयमः । अपजसो अपयशः ॥ क्वचिन्न भवति । प्रयोगः पओओ ॥ ७४ ॥

भ्यौ बृहस्पतौ तु बहोः ॥ ७५ ॥

बृहस्पतौ बकारहकारयोर्यथासंख्यं भकारयकारौ तु भवतः । भयप्पई बहप्पई ॥ ७५ ॥

रो डा पर्याणे ॥ ७६ ॥

पर्याणे रेफस्य डा इत्ययमादेशो भवति । पडाआणं पल्लाणं ॥ ७६ ॥

लो जठरवठरनिष्ठुरे ॥ ७७ ॥

र इति वर्तते । जठरादौ रस्य लत्वं वा भवति । जठरं जढलं जढरं । वठरः वढलो वढरो । निष्ठुरः णिट्ठुलो णिट्ठुरो ॥ भमलशब्दो भ्रमरपर्यायः संस्कृतवदेव ॥ ७७ ॥

---

72. B कइवहं for कइवाहं. 73. Before अर्थपरे BT read य इत्यनुवर्तते. After भवति B adds तुम्हे च्चिअ यूयमेव for तुम्हच्चिअं. K om. तुम्हकेरो. After तुम्हकेरो T adds तुम्हेच्चिअं. 74. After किम् B adds आमओ. G अवजसो for अपजसो. 75. MT ह्यौ for भ्यौ in the Sūtra. T बहे for बहोः in the Sūtra. K M T हकारयकारौ for भकारयकारौ. K T om. तु. M T_1 हअप्पई; T_3 अहप्पई for भयप्पई. T_{1-3} बिहप्पई for बहप्पई. 76. G T पडायाणं; T_3 पड्डाणं for पडाआणं. 77. T र इत्यनुवर्तते. B T om. वा. T_2 हसळशब्दो for भमलशब्दो. B संस्कृत इव; S संस्कृत एव.

हरिद्रादौ ॥ ७८ ॥

हरिद्रादिषु रस्य लत्वं भवति। पृथग्योगान्नित्यम्। हलद्दी हरिद्रा। इङ्गालो अङ्गारः। चलणो चरणः। जहुट्ठिलो युधिष्ठिरः। सउमालो सुकुमारः। सिढिलो शिथिरः। सक्कालो सत्कारः। मुहलो मुखरः। वलुणो वरुणः। चिलाओ किरातः। लुग्गो रुग्णः। अवद्दालं अपद्वारम्। कलुणो करुणः। दलिद्दो दरिद्रः। फलिहो परिघः। फलिहा परिखा। दलिद्दाइ दरिद्राति। मच्छलो मत्सरः। संवच्छलो संवत्सरः। फालिहद्दं पारिभद्रम्। दालिद्दं दारिद्र्यम्। काहलो कातरः। इत्यादि॥ बहुलाधिकारादङ्गारस्य कृतेत्वस्यैव। अन्यत्र अङ्गारो॥ चरणस्य पादार्थवृत्तेरेव। अन्यत्र चरणकरणं॥ किराते चकारसंनियोग एव। अन्यत्र नमिमो हरकिराअं॥ ७८॥

किरिवेरे डः ॥ ७९ ॥

अनयो रेफस्य डो भवति। किडी किरिः, वराहो गर्तो मूषिको गन्धर्वो वा। वेडो वेरः, भीरुः शरभः करभो मण्डूको दुन्दुभिर्वा॥ ७९॥

खोः करवीरे णः ॥ ८० ॥

करवीरे खोरादे रेफस्य णत्वं भवति। कणवीरो॥ ८०॥

लो ललाटे च ॥ ८१ ॥

ण इत्यनुवर्तते। ललाटे आदेर्लकारस्य णो भवति। चकारः खोरित्यनुवृत्त्यर्थः। णिडालं णडालं॥ ८१॥

---

78. T हळिद्दी for हलद्दी. BT जुहुट्ठिलो for जहुट्ठिलो. G सुउमालो for सउमालो. After सउमालो S T add सोमालो. After रुग्णः B adds संपद्दालं संपद्द्वारम्; G adds रोग्गो भुग्गो वा. T संपद्दालं संपद्दारं for अवद्दालं अपद्वारम्. B फालिहद्दो; T पाळिहद्दो for फालिहद्दं. T om. अन्यत्र. B श्लोकपादार्थ°; GMT पदार्थ° for पादार्थ°. B चरणप्पहरणं; T चरणं दारुणं for चरणकरणं. B किरातस्य for किराते. T चकारसंयोगे for चकारसंनियोगे. 79. G किरिभेरे; M S किरिहेरे; T₁.₂ किरीबोरे for किरिवेरे in the Sūtra. T ढः for डः in the Sūtra. T om. किरिः. S om. वराहो...गन्धर्वो वा. B गर्वो for गर्तो. G भेडो भेरः; T बोढो भीरुभेदः for वेडो वेरः. G om. शरभः. G करभस्सरो for करभो. 80. G रकारस्य; S रस्य for रेफस्य. 81. B इति वर्तते; M इत्यनुवृत्तिः for इत्यनुवर्तते. T om. णडालं.

लोहललाङ्गललाङ्गूले वा ॥ ८२ ॥

एष्वादेर्लकारस्य णो वा भवति। णोहलो लोहलो। लोहलः शबरविशेषः। णंगलं लङ्गलं। णंगूलं लंगूलं ॥ ८२ ॥

स्थूले रल्तश्चौत् ॥ ८३ ॥

स्थूले लस्य रत्वं लिद्भवति, तत्संनियोगे ऊत ओत्वं च भवति। थोरो ॥ थूलहद्दो इति तु स्थूरस्य हरिद्रादिलत्वे भविष्यति ॥ ८३ ॥

बो मः शबरे ॥ ८४ ॥

शबरे बस्य मो भवति। समरो ॥ ८४ ॥

नीवीस्वप्ने वा ॥ ८५ ॥

अनयोर्वस्य मो वा भवति। नीमी नीवी। सिमिणो सिविणो ॥ ८५ ॥

हस्य घो बिन्दोः ॥ ८६ ॥

बिन्दोः परस्य हस्य घत्वं वा भवति। संघारो संहारो संहारः। सिंघो सिंहो सिंहः ॥ क्वचिदबिन्दोरपि। दाघो दाहः ॥ ८६ ॥

शोः सल् ॥ ८७ ॥

अस्तोरखोरचः [१·३·७] इति निवृत्तम्। शोः शषसानां सकारो भवति। लित्वान्नित्यम्। शं–शब्दः सद्दो। कुशः कुसो। नृशंसः णिसंसो। वंशः वंसो। अश्वः आसो। श्मश्रूः मंसू। श्यामा सामा। दश दस। शोभते सोहइ ॥ ष–षण्डः सण्डो। निकषः णिहसो। कषायः कसाओ। विष्वक् वीसुं। वर्षः वासो। तुष्यति तूसइ। शेषः सेसो ॥ ८७ ॥

---

82. BMST लाहल° for लोहल° in the Sūtra. M om. लाङ्गल° in the Sūtra. BT शफरविशेषः; Bp G शब्दविशेषः for शबरविशेषः 83. G रो for रत्वं. B तत्संनियोगेन for °संनियोगे. G T om. च. B थूलहलद्दो for थूलहद्दो. B स्थूलशब्दस्य; T स्थूलस्य for स्थूरस्य. 86. T हकारस्य for हस्य. 87. M om. from लित्त्वात् to तूसइ. T साल् for सल्. BT श्वश्रूः for श्मश्रुः. B ससू; $T_{1\cdot2}$ सुस्; T_3 सस्सू for मंसू. B दशा दसा for दश दस. T णीसहो for णिहसो. BT_1 वर्षा वासा; T_2 वर्षा वरिसा

प्रत्यूषदिवसदशपाषाणे तु हः ॥ ८८ ॥

शोरित्यनुवर्तते। प्रत्यूषादिषु शषसानां हत्वं भवति तु। पच्चूहो पच्चूसो। दिअहो दिअसो। दह दस। दहमुहो दसमुहो। दहबलो दसबलो। दहरहो दसरहो। एआरह एआरस। बारह बारस। तेरह तेरस। पाहाणो पासाणो॥ ८८॥

स्नुषायां ण्ह फोः ॥ ८९ ॥

स्नुषाशब्दे फोर्द्वितीयस्य शोः ण्ह इत्यादेशस्तु भवति। सुण्हा सुसा स्नुषा॥ ८९॥

छल् षट्शमीसुधाशावसप्तपर्णे ॥ ९० ॥

एषु शषसानां छत्वं लिद्भवति। छट्ठी षष्ठी। छप्पओ षट्पदः। छम्मुहो षण्मुखः। छमी शमी। छुहा सुधा। छावो शावः। छत्तिवण्णो सप्तपर्णः॥९०॥

सिरायां वा ॥ ९१ ॥

सिराशब्दे शोः छो वा भवति। छिरा सिरा॥ ९१॥

लुक्पादपीठपादपतनदुर्गादेव्युदुम्बरेऽचान्तर्दः ॥ ९२ ॥

पादपीठादिषु अन्तर्वर्तमानस्य दकारस्य अचा सहितस्य लुग्वा भवति। पावीढं पाअवीढं पादपीठम्। पावडणं पाअवडणं पादपतनम्। दुग्गावी दुग्गाएवी दुर्गादेवी। उम्बरो उउम्बरो उदुम्बरः॥ अन्तरिति किम्। दुर्गादेव्या आदौ मा भूत्॥ ९२॥

---

88. G हकारो for हत्वं. M T पञ्चूसो for पच्चूसो. BT₁ om. एआरस बारस तेरस. 89. G om. शोः. 90. Bp T॰शाप॰; G ॰शाब॰ in the Sūtra. K छल् षष्ठषट्पदषण्मुखशमी॰, M छल् षट्षट्पद॰ for छल्षट्॰ in the Sūtra. After भवति K adds छट्ठो षष्ठः. M छाओ; T छावो शापः for छावो शावः. 91. S शिरायां for सिरायां in the Sūtra and Com. 92. T पावीढं for पावीढं. T om. दुग्गावी. B दुग्गाई दुग्गादेई for दुग्गावी दुग्गादेवी. K उदुंबरो for उउम्बरो. G T ॰देव्यां for ॰देव्या.

व्याकरणप्राकारागते कगोः ॥ ९३ ॥

लुगित्यनुवर्तते। वेति वर्तते अचेति च। व्याकरणादिषु ककारगकारयोरचा सह लुग्वा भवति। वारणं वाअरणं।। पारो पाआरो। आओ आअओ॥ ९३ ॥

एवमेवदेवकुलप्रावारकयावज्जीवितावटावर्तमानतावति वः ॥ ९४ ॥

एवमेवादिष्वन्तर्वर्तमानस्य वकारस्य अचा सहितस्य लुग्वा भवति। एमेअ एअमेअ। देउलं देवउलं। पारओ पावारओ। जा जाव। जीअं जीविअं। अडो अवडो। अत्तमाणं आवत्तमाणं। ता ताव॥ अन्तरित्येव। एवमेवेत्यन्त्यस्य न स्यात्॥ ९४ ॥

ज्योर्दनुजवधराजकुलभाजनकालायसकिसलयहृदयेषु ॥ ९५ ॥

दनुजवधादिषु ज्योर्जकारयकारयोरचा सहितयोर्लुग्वा भवति। दणुवहो दणुअवहो दनुजवधः। राउलं राअउलं राजकुलम्। भाणं भाअणं भाजनम्। कालासं कालाअसं कालायसम्। किसलं किसलअं किसलयम्। हिअं हिअअं हृदयम्॥ महण्णवसमा सहिआ जाला ते सहिअएहिं घेप्पन्ति, महार्णवसमाः सहृदया यदा ते सहृदयैर्गृह्यन्ते॥ ९५ ॥

---

93. T om. लुगित्यनुवर्तते. K वेति अचेति च; T_3 लुगित्यचेति च for वेति वर्तते अचेति च. T सहितयोः for सह. 94. T_1 °तावती वा, T_2 °तावतिर्वा, T_3 °तावतीव for °तावति वः in the Sūtra. BT एव्वं एव्व; S एक्कमेव for एअमेअ. G आत्तमाणं for अत्तमाणं. T आअत्तमाणं for आवत्तमाणं. B T मा भूत् for न स्यात्. 95. G K T_3 om. °वध° in the Sūtra. B G °भोजन° for °भाजन° in the Sūtra. T_1 °काळायसी° for °कालायस° in the Sūtra. G K M T दनुजादिषु for दनुजवधादिषु. T_1 सहितस्य यो for सहितयोः. K राकुलं राजकुलं for राउलं राअउलं. G भोणं भोअणं. BT_3 महासुसमा; T_1 ममासुसमा for महण्णवसमा. T_1 जाद दे; T_2 जदा दे for जाला ते. B om. जाला ते सहिअएहिं घेप्पन्ति. B ममासुसमाः for महार्णवसमाः. B om. यदा ते सहृदयैर्गृह्यन्ते.

अपतौ घरो गृहस्य ॥ ९६ ॥

गृहस्य घर इत्यादेशो वा भवति पतिशब्दः परो न भवति चेत्। घरो गृहम्। घरसामी गृहस्वामी। राअघरं राजगृहम्॥ अपताविति किम्। गहवई गृहपतिः ॥ ९६ ॥

स्त्रीभगिनीदुहितृवनितानामित्थीबहिणीधूआविलआः ॥ ९७ ॥

स्त्रीप्रभृतीनामित्थीप्रभृतय आदेशा यथासंख्यं वा भवन्ति। इत्थी थी स्त्री। बहिणी भइणी भगिनी। धूआ दुहिआ दुहिता। विलआ वणिआ वनिता॥ विलयाशब्दः संस्कृतेऽपीति केचित् ॥९७॥

उभयाधसोरवहहेट्ठौ ॥ ९८ ॥

उभय अधस् इत्येतयोर्यथासंख्यं अवह हेट्ठ इत्यादेशौ वा भवतः। अवहं॥उहअं इत्यपि केचित्। हेट्ठं अह। हेट्ठमग्गो अहमग्गो अधोमार्गः॥९८॥

मलिनधृतिपूर्ववैडूर्याणां मइलदिहिपुरिमवेरुलिआः ॥ ९९ ॥

मलिनादीनां मइलादय आदेशा यथासंख्यं वा भवन्ति। मइलं मलिणं मलिनम्। दिही धिई धृतिः। पुरिमं पुव्वं पूर्वम्। वेरुलिअं वेडुज्जं वैडूर्यम्॥ ९९ ॥

स्मरकट्वोरीसरकारौ ॥ १०० ॥

स्मरकटुशब्दयोरीसरकारौ यथासंख्यं वा भवतः। ईसरो मरो स्मरः। कारं कडु कटुः ॥ १०० ॥

बाहिंबाहिरौ बहिसः ॥ १०१ ॥

बहिः शब्दस्य बाहिं बाहिर इत्यादेशौ वा भवतः। बाहिं बाहिरं। बाहिरब्भन्तरकिरिआरोहो, बाह्याभ्यन्तरक्रियारोधः ॥ १०१ ॥

---

96. G गृहशब्दस्य for गृहस्य. B T om. वा. B om. भवति. 97. M om. the Sūtra. and Com. B °दूआ° for °धूआ in the Sūtra & Com. T om. वा. 98. G °हिट्ठौ for हेट्ठौ in the Sūtra. G हिट्ठ for हेट्ठ. K उभयं for उहअं. K अधस् हेट्ठं। अहमग्गो अधोमार्गः for हेट्ठं अह...अधोमार्गः. 99. G वैदूर्याणां in the Sūtra. B T °पूरिम° in the Sūtra and Com. G वैदूर्यम् for वैडूर्यम्. 101. B बहिषः for बहिसः in the Sūtra.

कूरो गौणेषदः ॥ १०२ ॥

ईषच्छब्दस्य गौणस्य कूर इत्यादेशौ वा भवति। चिश्च व्व कूरपिका, चिश्चेवेषत्पका ॥ पक्षे ईसि ॥ १०२ ॥

एण्हि एत्ताहे इदानीमः ॥ १०३ ॥

इदानीमित्यस्य एण्हि एत्ताहे इत्यादेशौ वा भवतः। एण्हि एत्ताहे इआणिं। पक्षे दाणिं ॥ १०३ ॥

तिर्यक्पदातिशुक्तेस्तिरिच्छि पाइक्क सिप्पी ॥ १०४ ॥

तिर्यगादेस्तिरिच्छादिरादेशो भवति। तिरिच्छि पेच्छइ, तिर्यक् पश्यति। पाइक्को पआई पदातिः। सिप्पी सुत्ती शुक्तिः ॥ १०४ ॥

गोणाद्याः ॥ १०५ ॥

गोणादयःशब्दा अनुक्तप्रकृतिप्रत्ययलोपागमवर्णविकारा बहुलं निपात्यन्ते। (१) गोणो गौः। स्वार्थे णः ॥ (२) गोला गोदा। गोदेति गोदावरी। दस्य लः। गोला संस्कृतेऽपीति केचित् ॥ (३) ओसायणं आपोशनम्। आपो इत्यस्य ओसा इत्यादेशः, ततः सकारात्परो यकारागमः। ओसाशब्दो नीहारवाची देश्यः, तत्कणो वा ओसायणं ॥ (४) वणाई वनराजिः। रेफस्य लुक् ॥ (५) तल्लडं तल्लं तल्पम्। लद्वित्वपलोपौ स्वार्थे डो वा। द्वित्वाभावे तलं ॥ (६) थोवो (७) थेवो थोक्को स्तोकः। कस्य वत्वम्, ओत एत्वं च वा, सेवादिपाठाद् द्वित्वम् ॥ (८) विरुअं विरुद्धम्। संयुक्तस्य लुक् ॥ (९) आओ आपः। शरदादिपाठादन्त्यस्य हलोऽत्वं दीर्घश्च ॥

---

102. T गौणेषतः for गौणेषदः in the Sūtra. S om. वा. B कूरपका for °पिका. 103. K om. वा. G T om. पक्षे दाणिं. B तिरच्छि°; S तिरिच्छ° in the Sūtra. B तिरच्छि for तिरिच्छि. 105. (1) HD. 2. 104. Gp T गोणा for गोणो. (2) HD. 2. 104. (3) HD. 1, 64. (ओसा). G ओसाअणमहीशाने; S ओसाआणं for ओसायणं आपोशनम्. (4) HD. 7. 38, (वणई). S om. वणाई वनराजिः, रेफस्य लुक्; G K M वणई वनराजिः, रकारस्य लुक्. (5) HD. 5. 19 (तलं). 5.54 (6) From Sk स्तोकः. (7) HD. 5.29. (8) HD. 7.63. (9) HD. 1.73.

(१०) गोसो गोसर्गः प्रत्यूषः। र्गस्य लुक्।। (११) वोसिरणं व्युत्सर्जनम्। व्युदो वो, सृजतीति जस्य रः, सस्य ऋत इत्वं च।। (१२) धिरत्थु धिगस्तु। गस्य रः।। (१३) पत्थेवाअं पाथेयम्। थो द्वित्वं वकारागमश्च।। (१४) वेलंबो (१५) वडंबो विडम्बना। इत एत्, डो लः, नकारस्य लुक् च।। (१६) बुलुबुलो बुद्बुदः। दकारयोर्लः, संयुक्तयोर्मध्ये उत्वम्।। (१७) करिल्लं करीरम्। रस्य ल्लः।। (१८) ऊआ यूका। यो लुक्।। (१९) दोग्गं युग्मम्। योर्दौ।। (२०) धणिआ धन्या प्रियतमा। यकारात्पूर्वमित्वम्।। (२१) णिव्वहणं उद्वहनं विवाहः। उकारस्य णिः।। (२२) मुव्वहइ उद्वहति। उकारस्य मुः।। (२३) छिच्छि धिक्धिक्। धस्य छः।। (२४) वाडी वृतिः। ऋत आत्वं तकारस्य डत्वम्।। (२५) गहिल्लो ग्रहिलः। लो द्वित्वम्।। (२६) गोणिक्को गोनीकः गवामनीकः समूहः। को द्वित्वम्।। (२७) अइरजुवई अचिरयुवतिः। अपूर्वेत्यर्थः।। (२८) अणरहू नववधूः। नकारवकारयोरत्वणत्वे वस्य च रः।। (२९) अमआ असुराः। सुकाररेफयोर्मयौ।। (३०) पण्णवण्णा (३१) पञ्चावण्णा पञ्चपञ्चाशत्। स्तोरादेर्णः, पस्य वः, चाशतोर्णा। द्वितीयस्यात आ, चाशतोर्णा।। (३२) गामहणं ग्रामस्थानम्। स्थाकारस्य हः।। (३३) तेवण्णा त्रिपञ्चाशत्। इत एत्वं, चाशतोर्णः।। (३४) घुसिमं घुसृणम्। णो मः, ऋकारस्य इत्वम्।।

---

(10) HD. 2,96. After गोसो B adds गोस्पर्शः. (11) From Sk व्युत्सर्जनम्. K ओसिरणं for वोसिरणं. After व्युत्सर्जनम् S adds भाअं भालं लस्य यः. (12) From Sk धिगस्तु. (13) Sk पाथेयम. (14) HD. 7.95. (15) HD. 7.95. (16) HD. 6.95. (बुलुंबुला). (17) Sk करीर. BT किरल्लं for करिल्लं. (18) HD. 1.139. (19) HD. 5.49. (20) HD. 5.58. K यात्पूर्वमित्वं for यकारात्पूर्वमित्वम्. (21) HD. 4.39. (22) Sk उद्वहति. (23) Sk धिक्धिक्. (24) HD. 7.43. (25) Sk ग्रहिलः. (26) HD. 2.97. (गोणिक्को). (27) HD. 1.48. (28) HD. 1.48. (अणुवहुआ). (29) HD. 1.15. (30) HD. 6.27. (31) Sk पञ्चपञ्चाशत्. (32) HD. 2.90. (33) Sk त्रिपञ्चाशत्. (34) Sk घुसृण.

(३५) छड्डा छटा। टकारस्य ड्डः ॥ (३६) बइल्लो बलीवर्दः। दोर्लः, ल्लीवयोरित्वम् ॥ (३७) पाउरणं (३८) पंगुरणं प्रावरणम्। द्वितीयस्यात उः, वस्य गुरादेशः ॥ (३९) लक्कुडो लगुडः। गकारस्य क्कः ॥ (४०) आसंघो आस्था। स्थाकारस्य संघः ॥ (४१) छेणो स्तेनः। स्तोश्छः ॥ (४२) दोसिणी ज्योत्स्ना ज्योर्दो, नात्पूर्वमित्वम् ॥ (४३) हिज्जो ह्यः। यकारस्य इज्जः ॥ (४४) कक्खडो कर्कशः। कशोः खडौ ॥ (४५) तेआलीसा त्रिचत्वारिंशत्। इत ए, चत्वयोरा, रो लः, विंशत्यादिपाठाद्बिन्दोर्लुक् ॥ (४६) कत्तं कलत्रम्। लस्य साचो लुक् ॥ (४७) कलवू अलाबूः। अकारस्य कः आकारस्य अः ॥ (४८) नलिअं (४९) निहेलणं निलयः। इदतोर्व्यत्ययः, यो णः, लात्पूर्वं हे ॥ (५०) णिक्कडो निश्चयः। श्चयोः कडौ ॥ (५१) णिक्कडो निश्चलः। चलोः कडौ ॥ (५२) णिरासो नृशंसः। शंकारस्य रा ॥ (५३) णिप्फंसो निस्त्रिंशः। स्त्रिकारस्य फः ॥ (५४) विहुंडुओ विधुंतुदः। तो डः ॥ (५५) वहिओ मथितः। मो वः ॥ (५६) खड्डं खेलम्। लो ड्डः ॥ (५७) कोलीरं कुरुविन्दम्। पद्मरागविशेषः। उकारयोरोदितौ, रो लः, बिन्दोश्च रः ॥ (५८) विसग्गो व्युत्सर्गः। व्युदोः विः ॥ (५९) संघयणं संहननम्। हस्य घः, आदेर्नो यः ॥ (६०) घायणो गायनः। गो घः ॥ (६१) ढेक्कुणो मत्कुणः। मतोः ढे ॥ (६२) ककुडं ककुदम्। दो डः ॥ (६३) सेवालं जम्बालम्। जमोः से ॥

(35) Sk छटा. (36) HD 6.91. (37) HD. 6.43. (पाउरणी). BT₁ पागुरणं; MT₃ पग्गुरणं for पंगुरणं. (38) HD. 6.43. (39) HD. 7.19. (40) Sk आस्था. (41) Sk स्तेनः G चेणो, K थोणी for छेणो. (42) HD. 5.50. S om. दोसिणी; K जोसिणी. (43)? S om. हिज्जा इज्जा. (44) HD. 2.11. (45) Sk त्रिचत्वारिंशत्. (46) Sk कलत्रम्. (47)? Sk अलाबू. (48) HD. 4.20. (49) HD. 4.51. (50) HD. 4.29. (51) Sk निश्चलः. (52) HD. (णिराहो) 4.37. (53) Sk निस्त्रिंशः or निःस्पर्शः (54) HD. (विहुंडुओ) 7.65. (55) Sk मथितः. (56) Sk क्रीडा. (57) HD. (कोलीरं) 2.46. B कुरुविन्दः for करुविन्दम्. (58) Sk व्युत्सर्गः. (59) HD. 8.14. (60) HD. 2.108. (61) HD. (ढेंकुणो) 4.14. G ढेंकुणो. (62) Sk ककुदम्. (63) HD. 8.43.

(६४) खुड्डओ क्षुल्लकः। लो डः॥ (६५) वड्डुअरो बृहत्तरः। बृहदित्यस्य वड्डु॥ (६६) अत्थक्कं अकाण्डम्। काण्डयोः त्थक्कौ॥ (६७) आणुअं आननम्। आदेरत उः, द्वितीयस्य नो लुक्॥ (६८) संगोलं संघातः। घातयोर्गोलः॥ (६९) सामरी (७०) सामली शाल्मलिः। लो लुक् द्वित्वाभावश्च॥ (७१) हिमोरं हिमोदरम्। दो लुक्॥ (७२) अब्बा अम्बा। बिन्दोर्लुक् बो द्वित्वं च॥ (७३) सिप्पी सूची। ऊत इः, चस्य द्विरुक्तः पः॥ (७४) बम्ही वाणी। णो म्हः॥ (७५) जच्छन्दो स्वच्छन्दः। स्वस्य जः॥ (७६) तलारो तलवरः पुराध्यक्षः। वस्य लुक्॥ (७७) कुड्डं कुतुकम्। तोर्लुक्, कस्य डो द्विरुक्तः॥ (७८) सीसक्कं शिरःपत्रम्। पत्रस्य क्कः॥ (७९) जम्बालं शैवालम्। शै इत्यस्य जम्॥ (८०) अणुदिवं दिनमुखम्। अनु पश्चात्, दिवा दिनम्। नो वः॥ (८१) सत्थरो संस्तरः। बिन्दोर्लुक्। (८२) विड्डुरं विस्तारः। स्तकारस्य ड्डुः॥ (८३) वीली वीची (८४) वीवी च। चो लः, चो वः॥ (८५) डंभिओ दाम्भिकः। दो डः॥ (८६) कडप्पो कलापः समूहः। लो डः पो द्वित्वं च॥ (८७) दूसलो दुर्भगः। भगोः सलौ॥ (८८) गड्डं गण्डम्। डो ड्डः॥ (८९) पडिसिद्धी प्रतिस्पर्धा। स्पस्य सि आत ई॥ (९०) वढो वठः। ठो ढः॥

---

(64) HD. (खुड्ड) 2.74. B कुड्डओ. (65) Sk बृहत्तरः. (66) HG. 2.174. (67) HD. 1.62. (68) HD. 8.4. G संगोल्ली.(69) HD. (सामरा) 8.23. (70) HD. 8.23. (71) Sk हिमोदरम्. (72) Sk अम्बा. (73) Sk सूची; S सिप्पा. (74) Sk ब्राह्मी. G वह्नि. (75) HD. 3.43. (76) HD. (तलारो). 5.3. (77) HD. 2.33. B T कुट्टं for कुड्डं. (78) HD. 8.34.S om. सीसक्कं...क्कः. (79) HD 3.12.(80) HD. 1.19. S om. from अणुदिवं down to चेर्थः under 94. (81) HD. 8.4. (82) Sk विस्तरः. (83). (84) Sk वीची. (85) HD. 4.8. (86) HD. 2.13. (87) HD. 5.43. (88) Sk गण्डः. (89) HD. 6.77 (90) Sk मूढः ?

(९१) डोअणो (९२) डोअलो (९३) डोलो लोचनम्। लो डः, लनोर्डलौ, अत्रैव चस्य साचो लुक्॥ (९४) कत्थइ कचित्। चेर्थः ॥(९५) डेड्डुरो दर्दुरः। अत ए, दकारयोर्डः॥ (९६) छिल्लं छिद्रम्। द्रो ल्लः॥ (९७) मंजरो (९८) वंजरो मार्जारः। मो वो वा, वक्रादिपाठादनुस्वारः, आतो ह्रस्वः॥ (९९) गद्दरो गृध्रः। रात्पूर्वमत्॥ (१००) उरओ (१०१) अज्जमो ऋजुः। जो रः, ऋकारोकारयोरत्, स्वार्थे मश्च॥ (१०२) साइआ सारिआ शारिका। रेर्लुक्, अन्त्यस्य आत इआ॥ (१०३) अरणी सरणिः। सो लुक्॥ (१०४) तणेसी तृणराशिः। राकारस्य पूर्वेणाचा सह एत्वम्॥ (१०५) दुग्गं दुःखम्। स्तोर्गः॥ (१०६) चउक्कं चतुष्पथम्। पथस्य क्कः॥ (१०७) कलेरं रलयोर्व्यत्ययः, आत एत्वं च॥ (१०८) कक्कालं कङ्कालश्च॥ इत्यादि॥ १०५॥

इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ
प्रथमाध्यायस्य तृतीयः पादः॥

---

(91) HD. 4.9. (92) HD. 4.9. (93) HD. 4.11. (94) Sk क्वचित्. (95) HD. 4.9. (96) HD. 3.35. S छल्लं for छिल्लं. (97) (98) Sk मार्जारः. (99) HD. 2.84. T_3 ends here. (100) (101) Sk ऋजुः. (102) Sk सारिका. (103) Sk सरणिः. (104) HD. 5.3. (105) HD. 5.53. (106) HD. 3.2. (107) HD. 2.53. (108) Sk कङ्कालः. BT कक्काल. Colophon: B om. from. मदर्ह° down to श्री°; S श्रीत्रिविक्रमदेवविरचिते प्राकृतव्याकरणे वृत्ती. M T इति प्रथमाध्यायस्य तृतीयः पादः.

चतुर्थः पादः ॥

स्तोः ॥ १ ॥

अधिकारोऽयम् 'ईल् ज्यायाम्' [१·४·११०] इति यावत्। यदित ऊर्ध्वमनुक्रमिष्यते तत् स्तोः संयुक्तस्य भवतीति वेदितव्यम् ॥ १ ॥

वा रक्ते गः ॥ २ ॥

रक्ते स्तोः संयुक्तस्य ग इत्यादेशो वा भवति। रग्गो रत्तो ॥ २ ॥

शुल्के ङ्गः ॥ ३ ॥

शुल्के संयुक्तस्य ङ्ग इत्यादेशो वा भवति। सुङ्गं सुक्कं ॥ ३ ॥

कः शक्तमुक्तदष्टमृदुत्वरुग्णेषु ॥ ४ ॥

एषु स्तोः ककारो वा भवति। सक्को सत्तो। मुक्को मुत्तो। डक्को दट्ठो। माउक्कं मउक्कं माउत्तणं। लुक्को लुग्गो ॥ ४ ॥

क्ष्वेडकगे खल् ॥ ५ ॥

क्ष्वेडकादिषु संयुक्तस्य खकारो भवति। लित्त्वान्न विकल्पः। क्ष्वेडकः खेडओ ॥ क्ष्वेडको विषपर्यायः ॥ स्फोटकः खोडओ। स्फोटिका खोडिआ॥ ॥ ५ ॥

---

1. M अनुक्रमिष्यामः for ˚क्रमिष्यते. 2. M om. स्तोः.GK गकारो वा भवति; M गकारो वा स्यात् for ग इत्यादेशो वा भवति. 3. M शुल्के गः for the Sūtra. Bp T_2 शुष्के for शुल्के in the Sūtra. Before शुल्के GK read वेत्युनुवर्तते;M reads वेत्युनुवृत्तिः. After सुङ्गं G adds पक्षे. M सुग्गं for सुङ्गं. 4. M स्यात् for भवति. BKM om. मउक्कं. G मउत्तणं; K माउत्तं for माउत्तणं. M माइक्कं; T माउक्को for माउक्कं. Gp रुक्को रुग्गो; K om. लुग्गो. 5. GM क्ष्वेटकगे in the Sūtra. GM क्ष्वेटकादिषु for क्ष्वेडकादिषु. BT लित्त्वान्नित्यम् for लित्त्वान्न विकल्पः. GM क्ष्वेटकः; T क्ष्वेळकः for क्ष्वेडकः. After पर्यायः G adds स्फोटकः खोडिओ। क्ष्वोटकः खोडओ। स्फेटकः खेडओ.M खोडिओ; T खोडिओ for खेडओ. GMT om. स्फोटिका खोडिआ.

ष्कस्कोर्नाम्नि ॥ ६ ॥

ख इत्यनुवर्तते। ष्क स्क इत्येतयोर्नाम्नि संज्ञायां खो भवति। पुष्करम् पोक्खरं। पुष्करिणी पोक्खरिणी। निष्कम् णिक्खं। स्कन्धः खन्धो। स्कन्धावारः खन्धावारो। अवस्कन्दः अवक्खन्दो ॥ नाम्नीति किम्। दुक्करं दुष्करम्। णिक्कम्पं निष्कम्पम्। णमोक्कारो नमस्कारः। सक्कअं संस्कृतम्। सक्कारो संस्कारः ॥६॥

वृक्षे रुर्वृक्षे ॥ ७ ॥

वृक्षशब्दे संयुक्तस्य खो भवति, तत्संनियोगेन वृकारस्य च रुकारः। रुक्खो ॥ स्पृहादित्वाच्छत्वे वच्छो ॥ ७ ॥

क्षः ॥ ८ ॥

क्षकारस्य खो भवति। लक्षणम् लक्खणं। क्षयः खओ। विचक्षणः विअक्खणो ॥ बहुलाधिकारात्क्वचिच्छझावपि। खीणं छीणं झीणं क्षीणम्। छिज्जइ झिज्जइ क्षीयते ॥ ८ ॥

स्थाणावहरे ॥ ९ ॥

स्थाणुशब्दे स्तोः खो भवति अहरे हरश्चेद्वाच्यो न भवति। खाणू ॥ अहर इति किम्। थाणू ॥ ९ ॥

स्कन्दतीक्ष्णशुष्के तु स्तोः ॥१०॥

एषु स्तोरादेः संयुक्तस्य खो भवति तु। खन्दो कन्दो। तिक्खं तिण्हं। सुक्खं सुक्कं ॥ १० ॥

---

6. Before ख M reads वेत्यनुवृत्तिः. M ष्कस्कयोः for ष्क स्क इत्येतयोः. M स्यात् for भवति. B णिक्कं for णिक्खं. B कंधो for खन्धो. K अवखंदो for अवक्खन्दो. T णिक्कंपो निष्कम्पः for णिक्कम्पं निष्कम्पम्. M संकरो for सक्कारो. 7. M स्तोः for संयुक्तस्य. KS °योगाद्; MT °योगे for °योगेन. M om. स्पृहादित्वाच्छत्वे वच्छो. 8. BT क्षस्य for क्षकारस्य. M स्यात् for भवति. G छडावपि; K क्वचिच्छकारोऽपि; M सछावपि for छझावपि. K छणं खणं for क्षयः खओ. G डीणं for झीणं. G डिज्जइ for झिज्जइ. M शणं ह्रीणं झण्णं खीणं। क्षीयते झिज्जइ for खीणं ... क्षीयते. 9. M स्यात् for भवति. 10. S om. from Sūtra 10 down to Sūtra. 22. KM एष्वादेः for एषु स्तोरादेः. M स्यात् for भवति.

स्तम्भे ॥ ११ ॥

खोरित्यनुवर्तते त्विति च । स्तम्भे खोः संयुक्तस्य खकारो भवति तु । खम्भो थम्भो । काष्ठादिमयः ॥ योगविभाग उत्तरार्थः ॥११॥

थलस्पन्दे ॥ १२ ॥

स्पन्दाभाववृत्तौ स्तम्भे आदेः संयुक्तस्य थो लिद् भवति । थम्भो । थम्भिज्जइ ॥१२॥

स्त्यानचतुर्थे च तु ठः ॥ १३ ॥

स्त्यानचतुर्थयोश्चकारादस्पन्दवृत्तौ स्तम्भे च ठत्वं भवति तु । ठीणं थीणं । चउट्ठो चउत्थो । ठम्भो । ठम्भिज्जइ ॥१३॥

ष्टः ॥ १४ ॥

ठ इत्यनुवर्तते । ष्टस्य ठो भवति । योगविभागान्नित्यम् । दृष्टिः दिट्ठी । मुष्टिः मुट्ठी । यष्टिः लट्ठी । सौराष्ट्रम् सोरट्ठं ॥१४॥

विसंस्थुलास्थ्यधनार्थे ॥ १५ ॥

विसंस्थुलास्थिशब्दयोरधनवाचिन्यर्थशब्दे च संयुक्तस्य ठो भवति । विसंठुलं विसंस्थुलम् । अट्ठी अस्थि । अट्ठो अर्थः प्रयोजनम् ॥ अधनार्थ इति किम् । अत्थो ॥१५॥

चः कृत्तिचत्वरे ॥ १६ ॥

कृत्तिचत्वरयोः संयुक्तस्य चो भवति । किच्ची कृत्तिः । चच्चरं चत्वरम् । ॥१६॥

---

11. M इत्यनुवृत्तिः for इत्यनुवर्तते. After स्तम्भे in Com. K M add आदेः. M om. खोः. K खो for खकारो. M खस्तु स्यात् for खकारो भवति तु. 12. GMT त्थोस्पन्दे for the Sūtra. M om. स्पन्दाभाववृत्तौ स्तम्भे. T_2 स्पन्दवृत्तौ for स्पन्दाभाववृत्तौ. GMT थकारो for थो. K om. लित्. 13. K अनयोः for स्त्यानचतुर्थयोः. M तु स्यात् for भवति तु. K ठाणं थाणं for ठीणं थीणं. 14. M अनुवृत्तिः for अनुवर्तते. M स्यात् for भवति. K जट्ठी for लट्ठी. 15. T_2 अधन्य° for अधन°. M स्यात् for भवति. M om. अधन इति किम्. GT_2 अधनार्थे for अधने. 16. T om. कृत्तिचत्वरयोः. G कृत्तिचत्वरशब्दयोः; M अनयोः for कृत्तिचत्वरयोः.

त्योऽचैत्ये ॥ १७ ॥

चैत्यवर्जितस्य त्यस्य चो भवति। सत्यम् सच्चं। प्रत्ययः पच्चओ। अमात्यः अमच्चो ॥ अचैत्य इति किम्। चइत्तं ॥१७॥

श्चोर्वृश्चिके ञ्चुर्वा ॥१८॥

वृश्चिके श्चि इत्यस्य ञ्चु इत्ययमादेशो भवति। विञ्चुओ विच्छुओ॥१८॥

उत्सवऋक्षोत्सुकसामर्थ्ये छो वा ॥१९॥

एषु स्तोः छो वा भवति॥ पुनर्वाग्रहणादुत्तरत्र न विकल्पः॥ उच्छओ ऊसओ। रिच्छो रिक्खो। उच्छुओ ऊसुओ। सामच्छं सामत्थं ॥१९॥

क्षमायां कौ ॥ २० ॥

छ इत्यनुवर्तते। कौ पृथिव्यां वर्तमाने क्षमाशब्दे स्तोः छत्वं भवति। छमा॥ लाक्षणिकस्यापि। छमा। काविति किम्। खमा क्षमा क्षान्तिः ॥२०॥

क्षण उत्सवे ॥ २१ ॥

उत्सववाचिनि क्षणशब्दे संयुक्तस्य छो भवति। छणो॥ उत्सव इति किम्। खणो ॥२१॥

स्पृहादौ ॥ २२ ॥

स्पृहादिषु स्तोः छो भवति। छिहा स्पृहा। क्षुरः छुरो। क्षीरम् छीरं। वृक्षः वच्छो। क्षेत्रम् छेत्तं। वक्षः वच्छो। कुक्षिः कुच्छी। क्षुतम् छुअं। क्षतम् छअं। क्षुण्णम् छुण्णं। कक्ष्या कच्छा। कक्षः कच्छो। माक्षिका माच्छिआ। क्षारम् छारं। इक्षुः उच्छू। सदक्षः सारच्छो। आक्षि अच्छी। स्थगितः छइओ। दक्षः दच्छो। कौक्षेयकम् कुच्छेअअं। उक्षा उच्छा। सादृश्यम सारिच्छं। क्षुधा छुहा। लक्ष्मीः लच्छी। लक्ष्म लच्छं। इत्यादि ॥२२॥

---

17. KMT चैत्यवर्जिते for °वर्जितस्य. M स्यान्नित्यम् for भवति. K om. अमात्यः अमच्चो. 18. M om. the Sūtra and Com. G विंछिओ; T₂विच्छिओ for विञ्चुओ. K विंछिओ विच्छुओ for विञ्चुओ. 19. M om. the Sūtra and Com. GKT छत्वं for छो. 20. M अनुवृत्तिः for अनुवर्तते. M भूम्यां for पृथिव्यां. K छो for छत्वं. M स्यात् for भवति. BGK om. क्षमा. K क्षान्तिरित्यर्थः for क्षान्तिः. 21. GM क्षणे for क्षणशब्दे. 22. T क्षुरं छुरं for क्षुरः छुरो. BT om. वक्षः वच्छो. G छीअं for छुअं. G क्षुण्णो छुण्णो for क्षुण्णं छुण्णं. B कक्षा for कक्ष्या. BKT om. क्षतं छअं. K om. कक्षः कच्छो. BT इच्छू for उच्छू. GKM om. लक्ष्म लच्छं.

थ्यश्चत्सप्सामनिश्चले ॥ २३ ॥

अनिश्चले निश्चलवर्जिते थ्य श्च त्स प्स इत्येतेषां छो भवति । थ्य—पथ्यः पच्छो । मिथ्या मिच्छा॥ श्च—पश्चिमं पच्छिमम्। आश्चर्यम् अच्छेरं । पश्चात् पच्छा॥ त्स—उत्साहः उच्छाहो । मत्सरः मच्छरो । संवत्सरः संवच्छलो । चिकित्सति चिइच्छइ ॥ प्स—अप्सरसः अच्छरा । लिप्सते लिच्छइ । जुगुप्सति जुउच्छइ ॥ अनिश्चल इति किम् । णिच्चलो ॥२३॥

द्यय्यर्या जः ॥ २४ ॥

एषां जकारो भवति । द्य—मद्यम् मज्जं । अवद्यम् अवज्जं । आतोद्यम् आओज्जं । द्युतिः जुई । द्योतः जोओ॥ य्य—शय्या सेज्जा । जय्यः जज्जो । क्षय्यः खज्जो ॥ र्य—कार्यम् कज्जं । पर्यायः पज्जाओ । पर्याप्तम् पज्जत्तं ॥२४॥

त्वाभिमन्यौ जर्जौ ॥ २५ ॥

अभिमन्यौ न्तोः जर् ज इत्येतौ तु भवतः । रित्वाद् द्वित्वम् । अहिमज्जू अहिमजू । पक्षे अहिवण्णू अहिमण्णू ॥२५॥

ध्यह्योर्झल् ॥ २६ ॥

ध्य ह्य इत्येतयोर्झत्वं भवति । लित्वान्नित्यम्। ध्य—ध्यानं झाणं । अध्ययनम् अज्झयणं । संध्या संझा । विन्ध्यः विञ्झो । उपाध्यायः उवज्झाओ ॥ ह्य—सह्यः सज्झो । गुह्यम् गुज्झं । ग्राह्यम् गेज्झं । नह्यते णज्झइ ॥२६॥

साध्वसे ॥ २७ ॥

साध्वसे स्तोर्झो भवति । सज्झसं ॥२७॥

---

23. B om. अनिश्चले in the Com. M om. पथ्यः पच्छा. GT पथ्यं पच्छं for पथ्यः पच्छो. After पच्छो GKM add पथ्या पच्छा. KT मच्छलो for मच्छरो. G om. संवत्सरः संवच्छलो. After संवच्छलो G adds चिकित्सा चिइच्छा. KT जुगुप्सते for °प्सति. 24. K द्य य्य र्य इत्येतेषां for एषां. M जः for जकारः. GT om. आतोद्यम् आओज्जं. GKMT om. क्षय्यः खज्जो. B कज्जं for कज्जं. 25. K जज्जौ; MT जंजौ for जर्जौ in the Sūtra. K जज्जौ; MT अंजौ for जर् ज इत्येतौ. BKMT om. रित्वाद् द्वित्वम्. G MT om. अहिवण्णू, 26. M स्यात् for भवति. M om. लित्वान्नित्यम्. GK लित्वान्न विकल्पः. GK om. अध्ययनम् अज्झयणं. 27. Before साध्वसे in the Com. M reads ह्य इति वर्तते. G साध्वसशब्दे for साध्वसे. M स्यात् for भवति. GMT सज्झसो for सज्झसं.

ध्वजे वा ॥ २८ ॥

ध्वजे स्तोर्झो वा भवति । झओ धओ ध्वजः ॥२८॥

इन्धौ ॥ २९ ॥

इन्धी दीप्तावित्यस्मिन्धातौ स्तोर्झ इत्यादेशो भवति । समिध्यति समिज्झइ ॥ २९ ॥

र्तस्याधूर्तादौ टः ॥ ३० ॥

र्तस्य टो भवति अधूर्तादौ धूर्तादीन्वर्जयित्वा । कैवर्तः केवट्टो। वर्तिः वट्टी। वर्तुलम् वट्टुलं । संवर्तितः संवट्टिओ । प्रवर्तते पअट्टइ । नर्तयति णट्टइ ।।अधूर्तादाविति किम् । धूर्तः धुत्तो । वार्ता वत्ता । आर्तिः अत्ती । संवर्तनम् संवत्तणं। विवर्तनम् विवत्तणं । प्रवर्तनम् पवत्तणं । आवर्तनम् आवत्तणं । मुहूर्तः मुहुत्तो मूर्तः मुत्तो । आवर्तकः आवत्तओ । संवर्तकः संवत्तओ । वार्तिकः वत्तिओ । वर्तिका वत्तिआ । प्रवर्तकः पवत्तओ । मूर्तिः मुत्ती । उत्कीर्तितः उक्कित्तिओ । निवर्तकः णिवत्तओ । निर्वर्तकः णिव्वत्तिओ । कीर्तिः कित्ती । कार्तिकः कत्तिओ ।। बहुलाधिकारात्—वार्ता वट्टा ।। ३० ।।

प्रवृत्तसंदष्टमृत्तिवृत्तेष्टापत्तनकदर्थितोष्ट्रे ॥ ३१ ॥

एषु स्तोः टत्वं भवति । प्रवृत्तः पवट्टो । संदष्टः संदट्टो । मृत्तिः मट्टी । वृत्तं वट्टं । इष्टा इट्टा । पत्तनं पट्टणं । कदर्थितः कवट्टिओ । उष्ट्रः उट्टो ।। संदष्टोष्ट्रे तु ठत्वापवादः ।। ३१ ।।

---

28. M स्यात्तु for वा भवति. M om. ध्वजः 29. M om. अस्मिन्; G एतस्मिन् for अस्मिन्. After आदेशो G adds वा. M स्यात् for भवति. GMT समिज्झाइ for समिज्झइ. G समिध्यते. After समिध्यति BK add विज्झइ विध्यते; MT add विज्झाइ. 30. S तस्या° for र्तस्या° in the Sūtra. M om. टः in the Sūtra. M ट्टः स्यात् for टो भवति. M धूर्तादिवर्जं for अधूर्तादौ, धूर्तादीन् वर्जयित्वा. GK पवट्टइ for पअट्टइ. KMS om. आर्तिः अत्ती. KMS om. प्रवर्तनम् पवत्तणं. GKM मूर्तम् मुत्तं for मूर्तः मुत्तो. KMS om. वत्तिओ वार्तिकः. After कार्तिकः GKM add इत्यादि. 31. M स्यात् for भवति. KMT कअट्टिओ for कवट्टिओ.

वा न्तन्धौ मन्युचिह्नयोः ॥ ३२ ॥

अनयोः संयुक्तयोर्यथासंख्यं न्त न्ध इत्येतावादेशौ वा भवतः। मन्तू मण्णू। इन्धं चिण्हं॥ ३२॥

डल्फोर्मर्दितविच्छर्दछर्दिकपर्दवितर्दिगर्तसंमर्दे ॥ ३३ ॥

एषु फोर्द्वितीयस्य स्तोः संयुक्तस्य डत्वं लिङ्गवति। मर्दितः मड्डिओ। विच्छर्दः विच्छड्डो छर्दिः छड्डी। कपर्दः कवड्डो। वितर्दिः विअड्डी। गर्तः गड्डो। संमर्दः संमड्डो॥ ३३॥

ढोऽर्धर्द्धिश्रद्धामूर्ध्नि तु ॥ ३४ ॥

फोरित्यनुवर्तते। एषु स्तोर्द्वितीयस्य ढो भवति तु। अर्धम् अड्ढं अद्धं। ऋद्धिः इड्ढी इद्धी। श्रद्धा सड्ढा सद्धा। मूर्धा मुड्ढा मुद्धा॥ ३४॥

दग्धविदग्धवृद्धिदंष्ट्रावृद्धे ॥ ३५ ॥

एषु संयुक्तस्य ढो भवति। पृथग्योगान्नित्यम्। दग्धः दड्ढो। विदग्धः विअड्ढो। वृद्धिः वुड्ढी। दंष्ट्रा दाढा। वृद्धः वुड्ढो॥ क्वचिन्न। विद्धकइणिरूविअं, वृद्धकविनिरूपितम्॥ ३५॥

पञ्चदशदत्तपञ्चाशति णः ॥ ३६ ॥

एषु स्तोर्णत्वं भवति। पञ्चदश पण्णरह। दत्तं दिण्णं। पञ्चाशत् पण्णासा॥ ३६॥

32. M इत्येतौ स्याताम् for इत्येतावादेशौ वा भवतः. After मण्णू G adds चिन्धं. After इन्धं K adds इण्हं. 33. S दल्पो° for डल्फो° in the Sūtra. S विदर्ध° for °विच्छर्द° in the Sūtra. M om. °छर्दि° in the Sūtra. S °कपर्दि° for °कपर्द° in the Sūtra. S पोः for फोः. M om. लित. S विदर्धः विदड्डो for विच्छर्दः विच्छड्डो. S कपड्डो for कवड्डो. 34. G वर्तते; M अनुवृत्तिः for अनुवर्तते. S ठो for ढो. M स्यात् for भवति तु. S अट्ठो for अड्ढं. G रिद्धी for इड्ढी. 35. M स्यान्नित्यं for भवति. M om. पृथग्योगान्नित्यम्; GK °योगाच्च विकल्पः. K om. Sk equivalents under this Sūtra. S क्वचित् for क्वचिन्न. T om. क्वचिन्न विद्ध...निरूपितम्. 36. GS णकारो; M णः for णत्वं. M स्यात् for भवति. M पण्णाओ for पण्णासा.

ज्ञम्नोः ॥ ३७ ॥

ज्ञ म्न इत्येतयोर्णत्वं भवति । ज्ञानम् णाणं । संज्ञा संणा । विज्ञानम् विण्णाणं ॥ निम्नम् णिण्णं । प्रद्युम्नः पज्जुण्णो ॥ ३७ ॥

स्तवे थो वा ॥ ३८ ॥

स्तवे संयुक्तस्य थो वा भवति । थवो तवो ॥ ३८ ॥

रो हश्चोत्साहे ॥ ३९ ॥

थ इति वर्तते वेति च । उत्साहे संयुक्तस्य थो वा भवति तत्संनियोगेन हस्य च रेफः । उत्थारो उच्छाहो ॥ ३९ ॥

स्तः ॥ ४० ॥

स्तस्य थकारो भवति । हस्तः हत्थो । स्तुतिः थुई । स्तोकम् थोअं । प्रस्तरः पत्थरो । स्वस्ति सत्थि ॥ ४० ॥

पर्यस्ते टश्च ॥ ४१ ॥

पर्यस्ते स्तस्य टो भवति । चकारात् थश्च । पल्लट्टो पल्लत्थो ॥ ४१ ॥

वात्मभस्मनि पः ॥ ४२ ॥

आत्मभस्मनोः स्तोः पो वा भवति । अप्पा अप्पाणो । अत्ता अत्ताणो ॥ भप्पो भस्सो ॥ ४२ ॥

ड्मक्मोः ॥ ४३ ॥

ड्म क्म इत्येतयोः पो भवति । कुड्मलं कुप्पलं । रुक्मिणी रुप्पिणी ॥ क्वचिद् मोऽपि । रुक्मी रुम्मी रुप्पी ॥ ४३ ॥

---

37. M स्यात् for भवति. M om. विज्ञानम् विण्णाणं. M om. प्रद्युम्नः पज्जुण्णो. 38. S थओ for थवो. Gp S om. तवो. 39. GKS अनुवर्तते; M अनुवृत्तिः for वर्तते. M स्याद्वा for वा भवति. M तत्संनियोगे. GM रः for रेफः. T उड्डारो for उत्थारो. 40. S स्तकारस्य for स्तस्य. M थः स्यात् for थकारो भवति. KS पत्थारो प्रस्तारः for प्रस्तरः पत्थरो. 41. S तश्च for टश्च in the Sūtra. M स्यात् for भवति. M om. पल्लत्थो. 42. S om. वा in the Sūtra and Com. G आत्म भस्म इत्येतयोः for आत्मभस्मनोः. G अप्पाणो. M om. अत्ताणो. G अत्तणो; M om. अत्ताणो. 43. G ट्मक्मोः; T ग्मक्मोः for the Sūtra. M अनयोः for ड्म क्म इत्येतयोः. G कुट्मलं कुंपलं for कुड्मलम् कुप्पलं. T गोपि for मोऽपि. G रुम्मं रुप्पं रुक्मम्; M रुग्मं रुप्पं रुप्पी; T रुग्गं रुप्पं for रुम्मी रुप्पी रुक्मी.

ष्पस्पोः फः ॥ ४४ ॥

ष्प स्प इत्येतयोः फो भवति । ष्प—पुष्पं पुप्फं । शष्पं सप्फं । निष्पावः णिप्फावो । निष्पेषः णिप्फेसो ॥ स्प—स्पन्दनम् फन्दणं । प्रतिस्पर्धी पडिप्फद्धी ॥ ४४ ॥

भीष्मे ॥ ४५ ॥

फ इत्यनुवर्तते । भीष्मे ष्मोः फत्वं भवति । भिप्फो ॥४५॥

श्लेष्मबृहस्पतौ तु फोः ॥४६॥

अनयोः फोर्द्वितीयस्य संयुक्तस्य फो भवति तु । सेप्फो सेम्हो । बिहप्फई बहप्पई ॥ ४६ ॥

ग्मो मः ॥ ४७ ॥

ग्मस्य मो भवति तु । युग्मम् जुम्मं जुग्गं । तिग्मम् तिग्गं तिग्मं ॥४७॥

न्मः ॥ ४८ ॥

न्मस्य मो भवति । पृथग्योगान्नित्यम् । जन्म जम्मो । मन्मथः वम्महो । मन्मनः मम्मणो ॥ ४८ ॥

ताम्राम्रयोर्म्बः ॥४९॥

अनयोः संयुक्तस्य मकाराक्रान्तो बकारो भवति । ताम्रम् तम्बं । आम्रम् अम्बं ॥ तम्बिरं अम्बिरं इत्येतौ देश्यौ ॥४९॥

---

44. M फकारो for फो. G णिप्फाओ for णिप्फावो. M णिप्फासो for णिप्फेसो. GT पाडिप्फर्द्धा; M पाडिप्पत्थी for पडिप्फद्धी. 45. GT om. फ इत्यनुवर्तते; M फानुवृत्तिः.M फः स्यात् for फत्वं भवति. M भिप्पो for भिप्फो. 46. S श्रेष्ठ° for श्लेष्म° in the Sūtra. M om. संयुक्तस्य. MS om. तु. B सेम्महो; G सिलेम्हो; MT सिलिम्हो for सेम्हो. GT बुहप्फई बुहस्सई; M बुहप्फई बुहप्पई for बिहप्फई बहप्पई. 47. M मः स्यात् for मो भवति तु. 48. K न्म इत्यस्य संयुक्तस्य म इत्यादेशः स्यान्नित्यम् for न्मस्य...नित्यम्. BK मम्महो for वम्महो. S om. मन्मनः मम्मणो. GM add मम्मणं. 49. M स्तोः for संयुक्तस्य. S मकारादेशो बो for मकाराक्रान्तो बकारो. GM बो for बकारो. B तंबीरं अंबीरं for तम्बिरं अम्बिरं.

ऊर्ध्वे भो वा ॥ ५० ॥

उर्ध्वे स्तोर्भो वा भवति । उब्भं उद्धं ॥ ५० ॥

ह्वः ॥ ५१ ॥

भो वेत्यनुवर्तते । ह्वस्य भो वा भवति । जिह्वा जिब्भा जीहा ॥५१॥

वश्च विह्वले ॥ ५२ ॥

विह्वले संयुक्तस्य वकारस्य भो वा भवति । विब्भलो विहलो ॥ ५२ ॥

काश्मीरे म्भः ॥ ५३ ॥

काश्मीरे संयुक्तस्य म्भ इत्यादेशो भवति । कम्भारं कम्हारं ॥ ५३ ॥

लो वार्द्रे ॥ ५४ ॥

आर्द्रे स्तोर्लत्वं वा भवति । पुनर्वाग्रहणादुत्तरत्र न विकल्पः॥ अल्लं उल्लं ओल्लं । अद्दं उद्दं ओद्दं ॥ ५४ ॥

र्यः सौकुमार्यपर्यस्तपर्याणे ॥ ५५ ॥

एषु र्यस्य लो भवति । सौकुमार्यम् सोअमल्लं । पर्यस्तम् पल्लट्टं । पर्याणम् पल्लाणं ॥ पल्लङ्को इति तु पल्यङ्कस्य ॥ ५५ ॥

अररीअरिज्जमाश्चर्ये ॥ ५६ ॥

र्ये इत्यनुवर्तते । आश्चर्ये र्यस्य अर रीअ रिज्ज इति त्रय आदेशा भवन्ति। अच्छअरं अच्छरीअं अच्छरिज्जं ॥ ५६ ॥

---

50. M ऊर्ध्वशब्दे संयुक्तस्य भकारो वा स्यात् for ऊर्ध्वे...भवति. 51. G भ इत्यनुवर्तते; M भानुवृत्तिः 52. BT भश्च for वश्च in the Sūtra. M स्तोः for संयुक्तस्य. MT om. वकारस्य; M वस्य. After वकारस्य GM add च. M स्यात् for भवति. M भिब्भलो for विब्भलो. B विह्वलो for विहलो. 53. MS म्हः for म्भः in the Sūtra. M स्तोः for संयुक्तस्य. M म्ह; S म for म्भ. After आदेशो GM add वा. M स्यात् for भवति. KS कम्हारो कम्भारो; M कम्हारा कम्भारा for कम्भारं कम्भारं. 54. G आर्द्रशब्दे for आर्द्रे. M स्यात् for भवति. T om. उद्दं. 55. After सौकुमार्य KS add पर्यंक in the Sūtra. M स्यात् for भवति. KS सोउमल्लं for सोअमल्लं. K पल्लत्थं corrected to पल्लट्टं. After पल्लट्टं KS add पल्लंकं. After पल्लट्टं MT add पल्लत्थं. 56. S अरिअरिज्जमाश्चर्ये for the Sūtra. BM रिअ; Bp रीय for रीअ in the Sūtra and Com. B om. र्ये इत्यनुवर्तते. BT अच्चअरं अच्चरिअ अच्चरिज्जं for अच्छअरं...अच्छरिज्जं.

डेरो ब्रह्मचर्यसौन्दर्ये च ॥५७॥

ब्रह्मचर्यसौन्दर्ययोः चकारादाश्चर्ये च र्यस्य डित् एर इत्यादेशो भवति। बह्मचेरं। सुन्देरं। अच्छेरं॥ डित्त्वाट्टिलोपः॥ चौर्यसमत्वात् [१·४·१००] बह्मचरिअं। सुन्दरिअं। अच्छरिअं॥ ५७॥

वा पर्यन्ते ॥५८॥

पर्यन्ते र्यस्य डेरो वा भवति। पेरन्तो पज्जन्तो॥ ५८॥

धैर्ये रः ॥ ५९ ॥

वेत्यनुवर्तते। धैर्ये र्यस्य रो वा भवति। धीरं धिज्जं॥ ५९॥

तूर्यदशार्हशौण्डीर्ये ॥ ६० ॥

एषु स्तोः रो भवति। पृथग्योगान्नित्यम्॥ तूरं। दसारो। सोण्डीरं॥ ॥ ६० ॥

बाष्पे होऽश्रुणि ॥ ६१ ॥

अश्रुवाचिनि बाष्पशब्दे स्तोर्हो भवति। बाहो नेत्रजलम्॥ अश्रुणीति किम्। बप्फो ऊष्मा॥ ६१॥

कार्षापणे ॥ ६२ ॥

कार्षापणे संयुक्तस्य हो भवति। काहावणो। कहावणो इत्यत्र 'संयोगे' [१.२·४०] इति पूर्वमेव ह्रस्वः, पश्चादादेशः। अथवा कर्षापणशब्दात्सिद्धिः ॥ ६२ ॥

---

57. S ढेरो for डेरो. M om. चकारात्. S बंहचेरं for बह्मचेरं BT अच्चेरं for अच्छेरं. S om. डित्त्वाट्टिलोपः. BT अच्चरिअं for अच्छरिअं. 59. KM om. वेत्यनुवर्तते. 60. K तूर्यादिषु for एषु. S लो for रो. M om. पृथग्योगात्. After दसारो GM add देशः; T adds दाशार्हः. 61. K बाष्पे for अश्रुवाचिनि बाष्पशब्दे. T om. नेत्रजलम्. 62. B स्तोः for संयुक्तस्य. KMS कहापणो for काहावणो. After काहावणो B adds बहुलाधिकारात्कासावणो. S om. अथवा. M om. अथवा...सिद्धिः. After °शब्दात् KST add वा. GT सिद्धः for सिद्धिः.

न वा तीर्थदुःखदक्षिणदीर्घे ॥ ६३ ॥

एषु संयुक्तस्य ह्त्वं न वा भवति। तूहं तित्थं। दुहं दुक्खं। दुहिओ दुक्खिओ। दाहिणो दक्खिणो। दीहो दीहरो दिग्घो ॥६३॥

कूष्माण्ड्यां ण्डश्च तु लः ॥ ६४ ॥

कूष्माण्डीशब्दे प्रथमस्य संयुक्तस्य हकारो भवति। ण्ड इत्यस्य लत्वं तु भवति। कोहली कोहण्डी। कोहली इत्यत्र 'संयोगे' [१·२·४०] इति प्रागेव ह्रस्वः पश्चाल्लत्वम् ॥ ६४ ॥

त्वथ्वद्वध्वां क्वचिच्चछजझाः ॥ ६५ ॥

त्व थ्व द्व ध्व इत्येतेषां यथासंख्यं च छ ज झ इत्येते क्वचित्प्रयोगानुसारेण भवन्ति। त्वस्य चः—भुक्त्वा भोच्चा। ज्ञात्वा णच्चा। श्रुत्वा सोच्चा॥ थ्वस्य छः—पृथ्वी पिच्छी॥ द्वस्य जः— विद्वान् विज्जं॥ ध्वस्य झः—ध्वनिः झुणी। बुद्ध्वा बुज्झा॥ सअलपिच्छीविज्जं, सकलपृथ्वीविद्वान् ॥ ६५ ॥

ह्लो ल्हः ॥ ६६ ॥

ह्लकारस्य लकाराक्रान्तो हकारो भवति। कह्लारम् कल्हारं। प्रह्लादः पल्हादो ॥ ६६ ॥

श्मष्मस्मह्मामस्मररश्मौ म्हः ॥ ६७ ॥

श्म ष्म स्म ह्म इत्येतेषां म्ह इत्यादेशो भवति स्मररश्मिशब्दौ वर्जयित्वा। काश्मीरः कम्हारो। ग्रीष्मः गिम्हो। ऊष्मा उम्हा। विस्मयः विम्हओ॥ अस्मादृशः अम्हारिसो। ब्रह्मा बम्हा। ब्रह्माणः बम्हाणो। ब्रह्मचर्यम् बम्हचेरं॥ अस्मररश्माविति किम्। स्मरः सरो। रश्मिः रस्सी॥ ६७ ॥

---

63. S om. न. KS तीहं; T_1 तुहं; T_2 तिहं for तूहं. T om. दिग्घं. 64. M लः for लत्वं. K S वा for तु. M om. कोहली इत्यत्र संयोगे इति. 65. S om. थ्व in the Sūtra. K S त्वादीनां; B एतेषां यथासंख्यं; M एतेषां चत्वार आदेशाः for त्व थ्व द्व ध्व इत्येतेषां; S om. श्रुत्वा सोच्चा. KS पुच्छी for पिच्छी. KS विज्जो for विज्जं. K बोज्झा for बुज्झा. 66. S कह्लारं for कल्हारं. GKM पल्हाओ; S पह्लाओ for पल्हादो. 67. M स्मररश्मिशब्दवर्ज for °शब्दौ वर्जयित्वा. KMS काश्मीराः कम्हारा for काश्मीरः कम्हारो. K बह्माणो for बह्मणो. S बंह्चेरं for बम्हचेरं. S रंसि for रस्सी.

पक्ष्मणि ॥ ६८ ॥

म्ह इत्यनुवर्तते । पक्ष्मशब्दे स्तोः म्ह इत्यादेशो भवति । पक्ष्माणि पम्हाइं ॥ पम्हलल्लोअणो पक्ष्मलल्लोचनः ॥ ६८ ॥

श्नष्णस्नह्नह्णक्ष्णां ण्हः ॥ ६९ ॥

एषां ण्ह इत्यादेशो भवति । श्न– प्रश्नः पण्हो । शिश्नः सिण्हो ॥ ष्ण–विष्णुः विण्हू । जिष्णुः जिण्हू । कृष्णः किण्हो । उष्णीषम् उण्हीसं ॥ स्न– स्नातः ण्हाओ । प्रस्नवः पण्हओ । ज्योत्स्ना जोण्हा ॥ ह्न–जह्नुः जण्हू ॥ ह्ण–पूर्वाह्णः पुव्वण्हो । अपराह्णः अवरण्हो ॥ क्ष्ण–श्लक्ष्णम् सण्हं । तीक्ष्णम् तिण्हं ॥ ६९ ॥

सूक्ष्मे ॥ ७० ॥

सूक्ष्मे संयुक्तस्य ण्हो भवति । सुण्हं । सण्हं ॥७०॥

आश्लिष्टे लधौ ॥ ७१ ॥

आश्लिष्टे संयुक्तयोर्यथासंख्यं लधौ भवतः । आलिद्धो ॥ ७१ ॥

ठढौ स्तब्धे ॥ ७२ ॥

स्तब्धे संयुक्तयोर्यथासंख्यं ठढौ भवतः । ठड्ढो ॥ ७२ ॥

तो ढो रश्चारब्धे तु ॥ ७३ ॥

आरब्धे स्तोः तकारो भवति तु, तत्संनियोगेन रस्य च ढः । आढत्तो आरद्धो ॥ ७३ ॥

सो बृहस्पतिवनस्पत्योः ॥ ७४ ॥

अनयोः संयुक्तस्य सकारो भवति तु । बहस्सई बहप्फई । बिहस्सई बिहप्फई । वणस्सई वणप्फई ॥ ७४ ॥

---

68. S om. म्ह इत्यनुवर्तते. S संयुक्तस्य for स्तोः. S म्हकारो for म्ह इत्यादेशो. 69. KS श्न इत्येतेषां for एषां. G वेण्हू for विण्हू. M om. from कृष्णः down to अवरण्हो. GK कण्हो; S किण्हू for किण्हो. T जण्णू for जण्हू. S om. तीक्ष्णम् तिण्हं. 70. S om. the Sūtra and Com. BK om. सण्हं. 71. M लडौ in the Sūtra and Com. S आलंधो for आलिद्धो. 72. M om. यथासंख्यं. 73. KS संयुक्तस्य for स्तोः. GMT तत्संनियोगे for °योगेन. 74. S om. the Sūtra and Com. M om. तु. T बुहस्सई for बहस्सई. MST अहस्सई अहप्पई for बिहस्सई बिहप्फई,

शोर्लुक्खोः स्तम्बसमस्तनिस्पृहपरस्परश्मशानश्मश्रौ ॥ ७५ ॥

स्तम्बादिषु शोः शषसानां खोरादौ वर्तमानानां संयुक्तसंबन्धिनां लुग्भवति । तम्बो । समत्तो । निप्पिहो । परोप्परं । मसाणं । मंसू ॥७५॥

श्चस्य हरिश्चन्द्रे ॥७६॥

हरिश्चन्द्रे श्चस्य लुग्भवति । हरिअन्दो ॥७६॥

कगटडतदपᳵकᳶपशोरुपर्यद्रे ॥७७॥

क ग ट ड त द पानां जिह्वामूलीयोपध्मानीययोः शोः शषसानां च संयुक्तसंबन्धिनामुपरिस्थितानां लुग्भवति अद्रे द्रकारं वर्जयित्वा । क—भुक्तम् भुत्तं। सिक्थम् सित्थं ॥ ग—दुग्धम् दुद्धं । मुग्धम् मुद्धं ॥ ट—षट्पदः छप्पओ । कट्फलम् कप्फलं ॥ ड—खड्ग खग्गो । षड्जः सज्जो ॥ त—उत्पलम् उप्पलं । उत्पातः उप्पाओ । द—मद्गुः मग्गू । मुद्गरः मोग्गरो । उद्विग्नः उव्विग्गो ॥ प—सुप्तः सुत्तो । गुप्तः गुत्तो ॥ ᳵक—दुःखम् दुक्खं ॥ ᳶप—अन्तःपातः अन्तप्पाओ ॥ श—निश्चलः निच्चलो । श्लक्ष्णं लण्हं । श्चयोतति चुअइ ॥ ष—गोष्ठी गोट्ठी । षष्ठः छट्ठो ॥ स—स्खलितः खलिओ । स्नेहः णेहो ॥ अद्र इति किम् । समुद्रो । चन्द्रो । भद्रं ॥ अद्र इति निषेधोऽयं ‘ धात्रीद्रे रस्तु ’ [१·४·८०] इति विकल्पिते रेफलोपे प्राप्तो दकारलोपो मा भूदिति ॥७७॥

---

75. K परप्परो; S परप्पलो for परोप्परं. B मंसु; S मस्सू for मंसू. 76. GK श्चकारस्य for श्चस्य. 77. B om. अद्रे S om. द्रकारं वर्जयित्वा; K द्रकारमात्रवर्जिते सति; M द्र इत्यक्षरवर्जं; T द्रे न भवति. T om. सिक्थं सित्थं; M सिक्थः सित्थो. GMT मुग्धा मुद्धा for मुग्धम् मुद्धं. T उद्घातः for उत्पादः. M मद्दलः मद्दलो for मद्गुः मग्गू. T मुद्गरं मोग्गरं for मुद्गरः मोग्गरो. KMS om. उद्विग्नः उव्विग्गो. KMS om. गुप्तः गुत्तो. S सांतःपातः संतप्पाओ for अन्तःपातः अन्तप्पाओ. BK समुद्दो चंदा भद्दं for समुद्रो चन्द्रो भद्रं. B रेफलोपेऽप्राप्ते; G रेफलोपे प्राप्तो; M रलोपे प्राप्तो; KT रलोपे प्राप्ते.

लवरामधश्च ॥ ७८ ॥

लवरां संयुक्तस्याधो वर्तमानानां चकारादुपरि स्थितानां च लुग्भवति । अधः । ल—श्लक्ष्णम् सण्हं । विक्लवः विक्कओ ॥ व—पक्वः पक्को । विध्वस्तः विद्धत्थो ॥ र—चक्रम् चक्कं । ग्रहः गहो । रात्रिः रत्ती ॥ उपरि । ल—उल्का उक्का । वल्कलम् वक्कलं ॥ व—शब्दः सद्दो । अब्दः अद्दो । लुब्धकः लुद्धओ ॥ र—अर्कः अक्को । तर्कः तक्को ॥७८॥

मनयाम् ॥ ७९ ॥

संयुक्तस्याधो वर्तमानानां मनयां लुग्भवति । म—युग्मम् जुग्गं । रश्मिः रस्सी । स्मरः सरो ॥ न—नग्नः नग्गो । लग्नः लग्गो ॥ य—श्यामा सामा । कुड्यम् कुड्डं ॥ अत्र द्वितीयकल्मषमाल्यादिष्वेतत्सूत्रत्रयविधिप्राप्तौ यथादर्शनं लोपः । द्वितीयः बिइओ । द्विगुणः बिउणो । द्वादश बारह । द्वाविंशतिः बावीसा । द्वात्रिंशत् बत्तीसा । कल्मषम् कम्मसं । शुल्बम् सुव्वं ॥ क्वचित्तु अधः। द्विपः दिवो । द्वीपः दीवो । द्विजातिः दुआई । काव्यम् कव्वं । दिव्यम् दिव्वं । माल्यम् मल्लं । कुल्या कुल्ला ॥ क्वचित्पर्यायेण । उद्विग्नः उद्विग्गो उव्विण्णो ॥ रेफस्य तु सर्वत्रैव ॥ सव्वं । वक्कं । चक्कं ॥ ' सर्वत्र लवरामचन्द्रे ' [हे. २·७९] इति कश्चित् । तदयुक्तम् । चन्दो चन्द्रो इति स्वयमेवोदाहृतत्वात्तथाविधप्रयोगदर्शनाच्च उत्तरसूत्रोक्तविकल्प एवाभ्युपगन्तव्यः ॥७९॥

---

78. KS संयुक्तसंबंधिनां for संयुक्तस्य. M स्यात् for भवति. GKMS पक्कं पिक्कं for पक्वः पिक्को. 79. M स्थितानां for वर्तमानानां. After लग्गो B adds मग्नः मग्गो. B कोड्डं for कुड्डं. G °त्रयस्यापि प्राप्तौ; M °त्रयप्राप्तौ; T °त्रयप्राप्तो for °त्रयविधिप्राप्तौ. S om. द्विपः दिवो. B दिआई; M द्विजाई for दुआई. MK उव्विग्गो for उद्विग्गो. M उद्विण्णो for उव्विण्णो. BGp MT केचित् for कश्चित्. BT उत्तरत्र for उत्तर°.

धात्रीद्रे रस्तु ॥ ८० ॥

धात्रीशब्दे द्रशब्दे च रेफस्य लुग्भवति तु । धात्री धत्ती धारी ॥ ह्रस्वात्प्रागेव रलोपे धाई ॥ द्र—चन्दो चन्द्रो । मन्दो मन्द्रो । रुदो रुद्रो । भद्दं भद्रं । समुद्दो समुद्रो ॥ 'ह्रदे दहयोः' [१·४·११५] इति ह्रदशब्दस्य दहयोः स्थितिपरिवृत्तौ द्रह इति रूपम् । तत्र च दहो इति ॥ केचिन्नेच्छन्ति द्रे रलोपम् । द्रहशब्दः संस्कृतेऽपीति केचित् । वोद्रहास्तरुणपुरुषादिवाचका नित्यं रेफसंयुक्ता देश्या एव । सिक्खन्तु वोद्रहीओ । वोद्रहद्रहम्मि पडिआ । शिक्षन्तु तरुण्यः । तरुणह्रदे पतिता ॥८०॥

ह्रस्य मध्याह्ने ॥ ८१ ॥

मध्याह्ने ह्रस्य लुग्वा भवति । मज्झण्णो मज्झण्हो ॥ ८१ ॥

ज्ञो ञोऽविज्ञाने ॥ ८२ ॥

ज्ञकारसंबन्धिनो ञकारस्य लुग्भवति तु, अविज्ञाने विज्ञानशब्दे न भवति । ज्ञानम् जाणं णाणं । सर्वज्ञः सव्वज्जो सव्वण्णो । आत्मज्ञः अप्पज्जो अप्पण्णो । दैवज्ञः दइवज्जो दइवण्णो । इङ्गितज्ञः इङ्गिअज्जो इङ्गिअण्णो । अभिज्ञः अहिज्जो अहिण्णो । मनोज्ञः मणोज्जो मणोण्णो । प्रज्ञा पज्जा पण्णा। आज्ञा अज्जा अण्णा । संज्ञा सज्जा सण्णा ॥ अविज्ञान् इति किम् । विणाणं ॥८२॥

द्वोर्द्वारे ॥ ८३ ॥

द्वारे दकारवकारयोः पर्यायेण लुग्भवति तु । दारं वारं ॥ पक्षे । दुवारं ॥ ८३ ॥

रात्रौ ॥ ८४ ॥

रात्रिशब्दे संयुक्तस्य लुग्भवति तु । राई रत्ती ॥ ८४ ॥

---

80. M स्यात् for भवति. S om. मंदो मंद्रो रुद्दो रुद्रो; T om. मंदो मंद्रो. G M om. ह्रदे दह्योरिति. GT om. द्रे. T वोद्रहशब्दः for द्रहशब्दः. S कश्चित्. BT द्रहादयः for वोद्रहादयः; Gp बोद्रहादयः. 81. K हकारस्य for ह्रस्य. M स्यात् for भवति. 82. G ज्ञस्य for ञकारस्य. M विना शब्दर्थशब्दो...for अविज्ञाने...भवति. GST सव्वण्णू. GST °ण्णू for °ण्णो under this Sūtra. K अभिज्जो for अहिज्जो. K आणा for अण्णा. After अण्णा G adds आणा. 83. After दुवारं B adds देरं वेरं.

रितो द्वित्वल् ॥ ८५ ॥

रेफानुबन्धस्यादेशव्यञ्जनस्य द्वित्वं लिद्भवति । अङ्कोल्लो अङ्कोलः। रुण्णं रुदितम् । करणिज्जं करणीयम् ॥ ८५ ॥

शेषादेशस्याह्रोऽचोऽखोः ॥ ८६ ॥

द्वित्वमिति वर्तते । संयुक्तयोरेकतरस्य लोपे योऽवशिष्यते स शेषः । तस्य संयुक्तादेशस्य च अह्रः हकाररेफवर्जितस्य अचः स्वरात्परस्य अखोः अनादौ वर्तमानस्य द्वित्वं लिद्भवति ॥ शेषः—समस्तः समत्तो । निस्पृहः णिप्पिहो । भुक्तम् भुत्तं । दुग्धम् दुद्धं । षट्पदः छप्पओ । खड्गः खग्गो । उत्पलम् उप्पलं । मुद्गरः मुग्गरो । प्राप्तः पत्तो । दुर्गम् दुग्गं । दुःखम् दुक्खं । अन्तःपातः अन्तप्पाओ । निश्चलः णिच्चलो । दुष्करम् दुक्करं । विप्लवः विप्पओ । पक्वम् पक्कं । धूर्तः धुत्तो । रात्रिः रत्ती । युक्तम् जुत्तं । युग्मम् जुग्गं । रश्मिः रस्सी । नग्नः नग्गो । काव्यम् कव्वं ॥ आदेशः—रक्तः रग्गो । सक्तः सग्गो । अमात्यः अमच्चो । आत्मा अप्पा । आर्या अज्जा । उपाध्यायः उवज्झाओ । सह्यः सज्झो । साध्वसम् सज्झसं । बृहस्पतिः बहप्फई ॥ अह्र इति किम् । विह्वलः विहलो । दुःखम् दुहं । बाष्पः बाहो । धात्री धारी । तूर्यम् तूरं । धैर्यम् धीरं ॥ अच इति किम् । कांस्यम् कंसं । वयस्यः वअंसो । संध्या संझा । भिन्दिपालः भिण्डिवालो ॥ अखोरिति किम् । स्खलितः खलिओ । स्थूलः थूरो । स्तम्भः खम्भो ॥ ८६ ॥

---

85. S om. the Sūtra. BKM अंकोल्लं for अंकोल्लो. K om. करणीयम्.
86. M अनुवर्तते for वर्तते. M अवशिष्टः for अवशिष्यते. M om. अह्रः, M om. अचः. GMS om. लित्. GKS मोग्गरो for मुग्गरो. GKM S om. दुर्गम् दुग्गं. GKM om. युक्तम् जुत्तं. GK शक्तः for सक्तः S अज्जू for अज्जा. S बुहप्पई for बहप्फई. S अस्तोरिति for अखोरिति.

दीर्घाच्च ॥ ८७ ॥

शेषादेशस्येति वर्तते । लाक्षणिकादलाक्षणिकाच्च दीर्घात्परयोः शेषादेशयोः द्वित्वं न भवति । लाक्षणिकात्—निःश्वासः णीसासो । स्पर्शः फासो । दंष्ट्रा दाढा । अस्पर्शः अप्फासो ॥ लाक्षाणिकात्—पार्श्वम् पासं । शीर्षम् सीसं । ईश्वरः ईसरो । द्वेष्यः वेसो । लास्यम् लासं । आस्यम् आसं । प्रेष्यः पेसो । निर्माल्यम् ओमालं । आज्ञा आणा । आज्ञप्तिः आणत्ती । आज्ञापनम् आणात्रणं॥ अमच्चो इत्यादिषु 'संयोगे'[१·२·४०] इति आदावेव ह्रस्वः, पश्चाल्लोपे द्वित्वम् । अलाक्षणिकात्प्रायो द्वित्वाभावः प्रयोगतोऽनुसर्तव्यः ॥ ८७ ॥

कर्णिकारे णो वा ॥ ८८ ॥

कर्णिकारे शेषस्य णस्य द्वित्वं वा न भवति । कण्णिआरो कणिआरो ॥ णग्रहणमुत्तरार्थम् ॥ ८८ ॥

धृष्टद्युम्ने ॥ ८९ ॥

धृष्टद्युम्ने आदेशस्य णस्य द्वित्वं न भवति । पृथग्योगान्न विकल्पः । धट्ठज्जुणो ॥ ८९ ॥

वा से ॥ ९० ॥

से समासे शेषादेशयोर्द्वित्वं वा भवति । णइग्गामो णइगामो । कुसुमप्पअरो कुसुमपअरो । देवत्थुई देवथुई । हरक्खन्दा हरखन्दा हरस्कन्दौ । आणालक्खम्भो आणालखम्भो ॥ ९० ॥

---

87. KMST om. लाक्षणिकात्. K देसो for वेसो. GKMT अवमाल्यं for निर्माल्यम्. K ओमालो for °मालं. K आणवणं for आणावणं. After आणावणं S adds इत्यादि. GKST om. लोपे. 89. BMT om. धृष्टद्युम्ने in Com. M स्यान्नित्यं for भवति । पृथग्योगान्न विकल्पः. B धट्ठज्जुणो. 90. M om. से in Com. BT हरक्कन्दा हरकंदा for °खन्धा हरखंधा. K आलाणक्खम्भो for आणाल°. T om. आणालखंभो.

प्रमुक्तगे ॥ ९१ ॥

से इति वर्तते वेति च । प्रमुक्तादिषु समासे यथादर्शनं व्यञ्जनस्य द्वित्वं वा भवति । प्रमुक्तः पम्मुक्को पमुक्को । सपिपासः सप्पिवासो सपिवासो । बद्धफलः बद्धप्फलो बद्धफलो । मलयशिखरखण्डः मलयसिहरक्खण्डो मलयसिहरखण्डो । त्रैलोक्यम् तेल्लोक्कं तेलोक्कं । सपरितापः सप्परितावो सपरितावो । परवशः परव्वसो परवसो । प्रतिकूलम् पडिक्कूलं पडिकूलं । अदर्शनम् अद्दंसणं अदंसणं । इत्यादि ॥ आकृतिगणत्वात् प्रफुल्लम् पप्फुल्लं पफुल्लं । सपरिहासम् सप्परिहासं सपरिहासं । इत्यादि सिद्धम् ॥ ९१ ॥

दैवगेषु ॥ ९२ ॥

दैवादिषु यथादर्शनं व्यञ्जनस्य द्वित्वं वा भवति । दैवम् दइव्वं दइवं । व्याकुलः वाउल्लो वाउलो । नखः णक्खो णहो । नीडं णेड्डं णीडं । निहितः णिहित्तो णिहिओ । मृदुत्वं माउक्कं माउअं । कुतूहलम् कोउहल्लं कोऊहलं । स्थूलः थुल्लो थोरो । एकः एक्को एओ । व्याहृतम् वाहित्तं वाहिअं । तूष्णीकः तुण्हिक्को तुण्हिओ । मूकः मुक्को मूओ । सेवा सेव्वा सेवा । अस्मदीयम् अम्हक्केरं अम्हकेरं । हूतम् हुत्तं हूअं । स्त्यानम् ठिण्णं ठाणं । स्थाणुः खण्णू खाणू । स इव सो च्चिअ सो चिअ । स एव सो च्चेअ । इत्यादि ॥ ९२ ॥

तैलादौ ॥ ९३ ॥

तैलादिषु यथादर्शनमन्त्यस्यानन्त्यस्य च व्यञ्जनस्य द्वित्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् ॥ तैलम् तेल्लं । व्रीडा विड्डा । प्रेम पेम्मं । स्रोतः सोत्तं । प्रभूतम् पहुत्तं । मण्डूकः मण्डुक्को । उदूखलम् ओक्खलं । यौवनम् जोव्वणं । ऋजुः उज्जू । विचकिलम् वेइल्लं । इत्यादि ॥ ९३ ॥

---

91. KS om. वेति च. After पफुल्लं BK add अप्परिहासो अपरिहासो. 92. G दैवगेऽर्थौ for the Sūtra. After दैवादिषु GKM add अनादौ. M om. यथादर्शनं. B अम्मक्केरं अम्मकेरं for अम्हक्केरं अम्हकेरं. After अम्हकेरं B adds भूअं भुत्तं भूतम् G थिण्णं थीणं for ठिण्णं ठाणं. After सो च्चेअ B adds चिअस्सा चिअसा (?) 93. T अन्त्यानन्त्यस्य for अन्त्यस्यानन्त्यस्य च. M द्वित्वं स्यान्नित्यम् for द्वित्वं भवति. M om. पृथग्योगान्नित्यम्; GK °योगाच्च विकल्पः. KMS om. उलूखलं ओक्खलं.

पूर्वमुपरि वर्गस्य युजः ॥ ९४ ॥

वर्गसंबन्धिनो युग्वर्णस्य शेषस्यादेशस्य वा द्वित्वप्रसङ्गे उपरि पूर्वमक्षरं भवति । वर्गाणां द्वितीयस्योपरि प्रथमं चतुर्थस्योपरि तृतीयमित्यर्थः । व्याख्यानम् वक्खाणं । वृक्षः रुक्खो । व्याघ्रः वग्घो । अर्घति अग्घइ । मूर्छा मुच्छा । अक्षीणि अच्छीणि । निर्झरः णिज्झरो । मध्यम् मज्झं । निष्ठुरः णिट्ठुरो । मुष्टिः मुट्ठी । तीर्थम् तित्थं । हस्ती हत्थी । हस्तः हत्थो । निर्धनः णिद्धणो । आश्लिष्टः आलिद्धो । गुल्फम् गुप्फं । पुष्पम् पुप्फं । निर्भरः णिब्भरो । विभ्रमः विब्भमो । पिप्पलः पिप्फलो ॥ प्रमुक्तादौ [१·४·९१] द्वित्वे मलयसिहरक्खण्डो ॥ दैवादौ [१·४·९२] णक्खो ॥ तैलादौ [१·४·९३] ओक्खलं ॥ समासे [१·४·९०] कइद्धओ कपिध्वजः ॥ द्वित्व इत्येव । ख्यातः खाओ ॥ ९४ ॥

प्राक्श्लाघाप्लक्षशार्ङ्गे ङ्लोऽत् ॥ ९५ ॥

श्लाघादिषु ङ्लः ङकारलकारयोः प्राक् अत् अकारो भवति । श्लाघा सलाहा । प्लक्षः पलक्खो । शार्ङ्गम् सारङ्गं ॥ ९५ ॥

क्ष्मारत्नेऽन्त्यहलः ॥९६॥

प्रागित्यनुवर्तते, अदिति च । क्ष्माशब्दे रत्नशब्दे च संयुक्तस्यान्त्यहलः अन्त्यव्यञ्जनस्य प्रागत्वं भवति । क्ष्मा छमा खमा । रत्नम् रअणं ॥९६॥

स्नेहाग्न्योर्वा ॥ ९७ ॥

अन्त्यहल इत्यनुवर्तते । स्नेहाग्न्योः संयुक्तस्यान्त्यहलः प्रागत्वं वा भवति । सणेहो णेहो । अगणी अग्गी ॥ ९७ ॥

---

94. T om. प्रथमचतुर्थस्योपरि. S om. तीर्थम् तित्थं । हस्ती हत्थी । हस्तः हत्थो. M om. विभ्रमः विब्भमो. B विप्पलः विंचूलो; T पिप्पलो विचूलो (?); GK om. पिप्पलः. GK विप्फलो विब्भलो for पिप्फलो. 95. T पलग्घो for पलक्खो. 96. KS क्ष्मारत्नशब्दयोः for क्ष्माशब्दे रत्नशब्दे च. K om. छमा. GT om. खमा. 97. S स्नेहाग्नी वा for the Sūtra. S om. अन्त्यहल इत्यनुवर्तते; B इति वर्तते; M इत्यनुवृत्तिः. M सिणेहो for णेहो.

र्शर्षतप्तवज्रेष्वित् ॥ ९८ ॥

र्श र्ष इत्येतयोस्तप्ते वज्रे च संयुक्तस्यान्त्यहलः प्रागित्वं वा भवति । र्श–आदर्शः आअरिसो आअंसो । सुदर्शनः सुअरिसणो सुदंसणो । दर्शनम् दरिसणं दंसणं ॥ र्ष–वर्षम् वरिसं वासं । वर्षाः वरिसा वासा । वर्षशतम् वरिससअं वाससअं । तप्तः तविओ तत्तो । वज्रं वइरं वज्जं ॥ ९८ ॥

हर्षामर्षश्रीह्रीक्रियापरामर्शकृत्स्नदिष्ट्यार्हे ॥ ९९ ॥

हर्षादिषु र्ह इत्यत्र च संयुक्तस्यान्त्यहलः प्रागित्वं भवति ॥ पृथग्योगान्नित्यम् ॥ हर्षः हरिसो । अमर्षः अमरिसो । श्रीः सिरी । ह्रीः हिरी । अह्रीकः अहिरिओ । क्रिया किरिआ । परामर्शः परामरिसो । कृत्स्नम् कसिणं । दिष्ट्या दिट्ठिआ ॥ र्ह–अर्हः अरिहो । गर्हा गरिहा । बर्हः बरिहो ॥ ९९ ॥

स्याद्भव्यचैत्यचौर्यसमे यात् ॥ १०० ॥

स्याद् भव्य चैत्य इत्येतेषु चौर्यसमेषु च यकारात्प्रागित्वं भवति। स्यात् सिआ । स्याद्वादः सिआवाओ । भव्यः भविओ । चैत्यम् चेइअं । चौर्यसम–चौर्यम् चोरिअं । गाम्भीर्यम् गम्भीरिअं । धैर्यम् धीरिअं । भार्या भारिआ । सौन्दर्यम् सुन्दरिअं । ब्रह्मचर्यम् बम्हचरिअं । सूर्यः सूरिओ । शौर्यम् सोरिअं। आचार्यः आइरिओ । वर्यः वरिओ । वीर्यम् वीरिअं। चर्या चरिआ। स्थैर्यम् थेरिअं । इत्यादि ॥ आकृतिगणत्वात्पर्यङ्कादयः । पर्यङ्कः पलिअङ्को ॥ १०० ॥

---

98. T शार्ष° for र्शर्ष° in the Sūtra; Bp °वज्रतप्तेषु in the Sūtra. M om. आअंसो; BT आअस्सो; G आयंसो; K आदंसो. M om. वइरं. 99. KS पृथग्योगाच्च विकल्पः; M पृथक्त्वान्नित्यम्. M om. गरिहा गर्हा । बर्हः बरिहो. 100. K स्यादित्यादिषु for स्या...इत्येतेषु T चौर्यसमेषु for °समे. M चोरिओ for चोरिअं. After चोरिअं S adds चोरिआ. M om. from गाम्भीर्यम् down to the end of the Sūtra S om. पर्यङ्कादयः.GK परिअंको for पलिअंको.

लादक्लीबेषु ॥ १०१ ॥

संयुक्तस्य लकारात्प्रागित्वं भवति। अक्लीबेषु क्लीबप्रकारेषु न भवति। क्लिन्नम् किलिन्नं। क्लिष्टम् किलिट्ठं। श्लक्ष्णम् किलित्तं। प्लुष्टम् पिलुट्ठं। क्लान्तम् किलितं। प्लोषः पिलोसो। श्लेष्मा सिलिम्हो। श्लेषः सिलेसो। शुक्लम् सुकिलं। क्लेदः किलेओ। क्लेशः किलेसो। प्लवः पिलेवो। अम्लम् अमिलं। ग्लायति गिलाअइ। म्लायति मिलाअइ। म्लानम् मिलाणं। क्लाम्यति किलम्मइ॥ अक्लीबेष्विति किम्। क्लीबः कीवो। विक्लवः विक्कओ। क्लमः कमो। प्लवः पवो। विप्लवः विप्पओ। शुक्लपक्षः सुक्कपक्खो। उत्प्लावयति उप्पावेइ ॥ १०१ ॥

नात्स्वप्ने ॥ १०२ ॥

स्वप्ने संयुक्तस्य नकारात्प्रागित्वं भवति। सिविणो सिमिणो ॥१०२॥

स्निग्धे त्वदितौ ॥ १०३ ॥

नादिति वर्तते। स्निग्धे संयुक्तस्य नकारात्प्रागत्वमित्वं च तु भवतः। सिणिद्धं सणिद्धं। पक्षे णिद्धं ॥ १०३ ॥

कृष्णे वर्णे ॥ १०४ ॥

अदिताविति वर्तते। वर्णवाचिनि कृष्णशब्दे संयुक्तस्यान्त्यहलः प्रागदितौ भवतः। कसणो कसिणो॥ वर्ण इति किम्। कण्हो कृष्णः (विष्णुः) ॥ १०४ ॥

---

101. GT लादक्लबेषु; M लोऽक्लबेषु for the Sūtra. GMT अक्लबेषु क्लबप्रकारेषु. K पिलुट्ठं for पिलिट्ठं. K किलेतं for किलिन्नं. K प्रोषः for प्लोषः. K सुकिलं for सुकिलं. T पिळवो for पिलेवो. B किलामइ for किलम्मइ. GKMT अक्लबेषु for अक्लीबेषु. GKMT क्लबः कओ for क्लीबः कीओ. G om. उत्प्लावयति उप्पावेइ. S उत्सादयति for उत्प्लावयति. 102. M न इत् स्वप्ने for the Sūtra. 103. BpT स्निग्धे तु for the Sūtra. MS स्निग्धे अदितौ for the Sūtra. S om. नादिति वर्तते. S om. तु. G S om. पक्षे. S om. णिद्धं. 104. K कृष्णपर्णे for the Sūtra. After कृष्णशब्दे S adds संयुक्तस्य. After अदितौ K adds तु. M om. कृष्णः.

अर्हत्युच ॥ १०५ ॥

अर्हच्छब्देऽन्त्यहल: प्रागुत्वमदितौ च भवन्ति । अरुहो अरहो अरिहो । अरुहन्तो अरहन्तो अरिहन्तो ॥ १०५ ॥

तन्व्यामे ॥ १०६ ॥

उदित्यनुवर्तते । उकारान्ता ईकारप्रत्ययान्तास्तन्व्याभा:, तेषु संयुक्तस्यान्त्यहल: प्रागुत्वं भवति । तन्वी तणुवी । लघ्वी लहुवी । गुर्वी गुरुवी । पृथ्वी पुहुई । मृद्वी मउई । बह्वी बहुई । पट्वी पटुई । इत्यादि ॥ १०६ ॥

स्रुघ्ने रात् ॥ १०७ ॥

स्रुघ्ने संयुक्तस्य रात्पूर्वमुत्वं भवति । सुरुग्घं नगरम् ॥ १०७ ॥

एकाचि श्व:स्वे ॥ १०८ ॥

एकस्वरयो: श्व: स्व इत्येनयो: संयुक्तस्यान्त्यहल: प्रागुत्वं भवति । श्व:कृतं सुवो कअं । स्वे जना: सुवे जणा ॥ एकाचीति किम् । स्वजन: सअणो ॥ १०८ ॥

वा छद्मपद्ममूर्खद्वारे ॥ १०९ ॥

एषु स्तोरन्त्यहल: प्रागुत्वं वा भवति । छउमं छम्मं । पउमं पोम्मं । मुरुक्खो मुक्खो । दुवारं । पक्षे । दारं वारं देरं बेरं ॥ १०९ ॥

ईल् ज्यायाम् ॥ ११० ॥

ज्याशब्दे अन्त्यहल: प्रागीत्वं लिद्भवति । जीआ ॥ ११० ॥

---

105. B अरुहितो आरिहितो अरहतो for अरुहन्तो etc. 106. S om. this Sūtra and Com. G M T ङीप्रत्ययान्ता: for ईकारप्रत्ययान्ता:. K लघुवी for लहुई. K पिहुई for पुहुई. GKMT om. पट्वी पटुई. 107. S om. the Sūtra and Com. M om. संयुक्तस्य. M प्रागुत्वं स्यात् for पूर्वमुत्वं भवति. 108. S om. the Sūtra and Com. M प्रागुत्वं स्यात् for प्रागुत्वं भवति. B सजणो for सअणो. 109. M स्यात् for भवति. B पम्मं; T पद्मं for पोम्मं. G om. वारं बेरं; M om. देरं बेरं; T om. वारं देरं बेरं. 111. S विपरीतवृत्ति: for स्थितिपरिवृत्ति:. M om. भवति.

ह्रश्च महाराष्ट्रे होर्व्यत्ययः ॥ १११॥

स्तोरिति निवृत्तम् । महाराष्ट्रशब्दे होः हकाररेफयोर्व्यत्ययः स्थितिपरिवृत्तिर्भवति । एकस्य स्थाने एको भवतीत्यर्थः । ह्रश्च ह्रस्वश्च दीर्घस्य भवति । मरहट्ठो ॥१११॥

लनोरालाने ॥ ११२ ॥

व्यत्यय इत्यनुवर्तते । आलाने लकारनकारयोर्व्यत्ययो भवति । आणालो ॥ ॥११२॥

वाराणसीकरेण्वां रणोः ॥ ११३ ॥

अनयो रेफणकारयोर्व्यत्ययो भवति । वाणारसी । कणेरू ॥ करेण्वामिति किम् । स्त्रीलिङ्गनिर्देशादन्यत्र न भवति । एसो करेणू ॥११३॥

ललाटे डलोः ॥ ११४ ॥

ललाटे टस्य डत्वे डलयोर्व्यत्ययो भवति । णिडालं णडालं । 'लो ललाटे च' [१·३·८१] इति आद्यस्य णत्वमेव ॥११४॥

ह्रदे दहयोः ॥ ११५ ॥

ह्रदे दहयोर्व्यत्ययो भवति । द्रहो दहो ॥११५॥

चलयोरचलपुरे ॥ ११६ ॥

अचलपुरे चलयोर्व्यत्ययो भवति । अलअउरं ॥११६॥

ह्ये ह्योर्वा ॥ ११७ ॥

ह्य शब्दे हकारयकारयोर्व्यत्ययो वा भवति । गुह्यम् गुय्हं गुज्झं । सह्यं सय्हं सज्झं ॥११७॥

---

112. GKS add आणालक्खंभो. After °क्खंभो G adds आलानस्तम्भः । स्तम्भ [१·४·११] इति खत्वम्; K adds आलानं गजबन्धनस्तम्भ इत्यर्थः. 114. K णो ललाटे for the Sūtra. After डत्वे G adds सति. G om. णिडालं. 115. M दहोः for दहयोः in the Sūtra. 116. G अलअपुरं; KS अलचपुरं for अलअउरं. 117. M om. the Sūtra and Com. After गुज्झं BT read गुह्अहं. After सज्झं BT read सहिअहं.

लघुके लहोः ॥ ११८ ॥

लघुकशब्दे घस्य हत्वे हलोर्व्यत्ययो वा भवति । हलुओ लहुओ ॥ घस्य व्यत्यये कृते पदादित्वाद् हत्वं न भवतीति हत्वकरणम् ॥११८॥

रलोर्हरिताले ॥ ११९ ॥

हरिताले रलोर्व्यत्ययो भवति । हरिआलो हलिआरो ॥११९॥

दर्वीकरनिवहौ दव्वीरयणिहवौ ॥ १२० ॥

एतयोर्यथासंख्यं दव्वीरअ णिहव इति कृतव्यत्ययविधानौ निपात्येते । दव्वीरओ सर्पः । पक्षे दव्वीअरो । णिहवो ॥१२०॥

गहिआद्याः ॥ १२१ ॥

गहिआ इत्यादयः शब्दा निर्वचनगोचरा निपात्यन्ते । (१) गहिआ काम्यमाना ग्राह्या काम्यमानत्वात् । ह्रस्वः, चौर्यसमत्वात्प्रागित्वं च ॥ (२) किमिघरवसणं कौशेये । कृमिगृहवसनं कृमिविहितावरणादेव तत्तन्तोरुत्पत्तेः ॥ (३) णन्दिणी धेनुः । नन्दिनीव नन्दिनी ॥ (४) पडिसाओ घर्घरकण्ठः । प्रतिशब्दवत्त्वात् ध्वनेः प्रतिपादनत्वाद्वा ॥ (५) वइरोडो जारः । पतिं रोटयति वञ्चयतीति । पो वः । टो डः ॥ (६) अविणअवई अविनयपतिः ॥ (७) अणडो अनृतम् । प्रत्यादिपाठात् [१·३·३२] तस्य डः ॥ (८) अजडो अजडः शीघ्रकारित्वात् ॥

---

118. GS लहोः; M लघोः for हलोः in the Sūtra. G S लहोः for हलोः. S om. वा. T हकरणं for हत्वकरणम्. 119. M om. हरिताले रलोर्व्यत्ययो भवति. 120. M दर्वीकरनिवहे तु for the Sūtra. B °दव्विअर° in the Sūtra. After °णिहवौ in the Sūtra G adds तु. S यथासंभवं for यथासंख्यं. M °विधानेन for °विधानौ. B दव्विरओ for दव्वीरओ. M om. पक्षे दव्वीअरो सर्पः. After णिहवो G adds णिवहो; T adds णीवाहो; S adds णिहओ. 121. (1) HD. 2.85. (2) HD. 2.33. GT किमिहरवसणं for किमिघर°. GT कौशेयम् for कौशेये. T_2 देवतरोरुत्पत्तेः for तत्तन्तोरुत्पत्तेः. (3) HD. 4.18. (4) HD. 4.17. B वडिणाओ; K वडिसाओ for पडिसाओ. (5) HD. 7.42. T आरुकट स्तेये । पतिं कुटति वञ्चयति for रुट...°यतीति. (6) HD. 1.18. T अविनयवती for °पतिः. (7) HD. 1.18. (अणाडो).

(९) छिण्णो छिन्नः स्मरशरच्छिन्नत्वात्। (१०) छिण्णालो सदाचारच्छिन्नां लात्यादत्ते इति ॥ (११) छिक्कओ अक्षिक्षतः नयनप्रीत्यनर्हत्वात्। अक्ष्णोऽकारस्य लुक्॥ (१२) मदोली कामपरंपराकारणत्वात्। आदेरातोऽत्॥ (१३) संचारी दूती। प्रीतिं संचारयतीति ॥ (१४) सहउत्थिआ सहोत्थिता दूती। कार्यानुकूलत्वात्॥ (१५) मराली दूती। मृदुस्वभावत्वान्मधुरवचनत्वाद्वा॥ (१६) पेसणआरी दूती प्रेषणं करोतीति ॥ (१७) अत्तिहरी दूती। आर्तिहरी संतर्पणशीलत्वात्॥ (१८) पडिसोत्तो प्रतिकूले। प्रतिमुखं स्रोतः प्रवाहो यस्यासौ॥ (१९) पडिक्खरो प्रतिकूले। प्रतिमुखं क्षरतीति॥ (२०) जोओ (२१) दोसणिजन्तो (२२) दोसारअणो (२३) समुद्दणवणीअं चन्द्रः। द्योतन इति द्योतः। ज्योत्स्नायन्त्रम्। आत इः, जस्य दः, नात्प्रागत्वम्। दोषारत्नम्। समुद्रनवनीतं मथनोत्थितत्वात्॥ (२४) चिरिचिरिआ (२५) चिलिचिडिआ धारा। चिरिचिरीति चिलिचिलीति ध्वनिर्यस्याः सा तथोक्ता॥ (२६) समुद्दहरं अम्बुगृहं जलधारोपचारात्॥ (२७) तम्बकुसुमं कुरबकं कुरण्टकं च। ताम्रकुसुमं तथाविधकुसुमत्वात्॥ (२८) मुहरोमराई भ्रूः श्मश्रूर्वा मुखरोमराजिः तथाविधस्वरूपत्वात्॥(२९) थेवो बिन्दुः स्तोकत्वात्॥

---

(9) HD. 3.27. (11) HD. 1.174. G नयनप्रीत्याहितत्वात्; Gp हृतत्वात् ; T °प्रत्याहतत्वात् for नयनप्रीत्यनर्हत्वात्. (12) HD. 6.142. K om. मदोली upto संचारयतीति. Before मदोली G read सहउत्थिआ सहोत्थिता दूती. G मराली for मदोली. T अमराळी व ममराळी. (13) GKT om. संचारी दूती। प्रीतिं संचारयतीति. (14) HD.8.9. (15) 6.142. (16) HD. 6.59. T प्रेक्षणं for प्रेषणं. (17) HD 1.35. अंतिहारी for अत्तिहरी. (18) HD. 6.18. G प्रतिकूलः for प्रतिकूले. (19) HD. 6.18. पडिमूरो for पडिज्झरो. (20) HD. 3.40. (21) HD.5.51. (22) SK. (23) HD. 8.50. K मन्दरान्मथितत्वात् for मथनोत्थितत्वात्. (24) HD. 3.13. (25) HD. 3.13. (26) HD. 8.21. K समुद्रगृहं for अम्बुगृहं. After अम्बुगृहं G adds समुद्रगृहम्. (27) HD. 5.9. (28) HD. 6.136. Som. श्मश्रूर्वा.(29) HD. 5.29. S थोओ for थेवो.

(३०) धूमद्धअमहिसीओ कृत्तिकाः धूमध्वजमहिष्यः अग्निना संयुक्तत्वात् ॥ (३१) विसारो सैन्यं विसरणशीलत्वात् ॥ (३२) अवहोओ विरहः । अपभोगः भोगासहत्वात् ॥ (३३) पाओ (३४) पअलाओ फणी । प्राणिघातुकत्वात्पापः । पदानि लायति निगूहतीति पदलापः ॥ (३५) अहिअलो क्रोधः । अहिरिव वलति नाशयतीति अहिवलः ॥ (३६) सिहिणं स्तनः । शिखित्वं चूचुकवत्त्वात् । अस्त्यर्थे णः ॥ (३७) थिरण्णेसो यो न क्वचिदपि स्थितिं बध्नाति, स्थिरं यथा स्यात्तथा न तिष्ठतीति थिरण्णेसो चपलहृदयः ॥ (३८) सूरङ्गो दीपः । सूरवदङ्गं यस्यासौ ॥ (३९) जोइक्खो ज्योतिष्कः ॥ (४०) पासावओ गवाक्षः । पासो इति प्राकृते चक्षुः, तदापयत इति पासावओ ॥ (४१) पासो पश्यतीति पासो अक्षि ॥ (४२) कोप्पो अपराधः । आत्मनः कोप एवापराधः ॥ (४३) उम्मुहो उन्मुखः ॥ (४४) उद्दणो उद्वदनः । दस्य वस्य च लुक् ॥ (४५) पहट्ठो प्रधृष्टः । गर्वीत्यर्थः ॥ (४६) लम्बा केशाः । लम्बन्त इति लम्बाः ॥ (४७) वल्लीवत् वेल्ली वल्लरीवत् ॥ (४८) वेल्लरिआ आदेरत एः, स्वार्थे कश्च ॥ (४९) जण्णहरो यज्ञहरो राक्षसः । तत्स्वभावत्वात् ॥ (५०) जणउत्तो ग्रामप्रधाननरः जनपुत्रः । तद्वदाचरतीति ॥ (५१) बम्हहरं (५२) आरनालं

---

(30) HD. 5.62. S संयुक्तत्वात् for संभुक्तत्वात्. (31) HD. 7.72. (32) HD. 1.35. अवहाओ for अवहोओ. (33) HD. 6.38. G पावो for पाओ. (34) HD. 6.72. (35) HD 1.36. GK अहिअलो for अहिवलः. (36) HD. 7.31. B om. शिखित्वं. (37) HD. 5.27. G थिरणासो; Gp थिरणामो. ST थिरण्णोसो. (38) HD. 8.41. (39) HD. 3.49. (40) HD. 6.43. (41) HD. 6.75. (42) HD. 2.45. (43) HD. 1.99. (44) HD. 1.99. (45) HD 6.9. (46) HD. 7.26. G लम्बो for लम्बा. After लम्बाः G adds वल्लो. (47) HD. 7.32. (48) HD 7.32. G विल्लरिआ for वेल्लरिआ. (49) HD. 3.43. जण्णोहणो; S जण्णहलो दक्षः for यज्ञहरो राक्षसः. (50) HD. 3.52. GT ग्रामप्रधान; for °प्रधाननरः (51) HD. 6.91. (52) HD. 1.66. G आरणालं. K अम्बुजं for अम्बुजे.

(५३) थेरोसणं अम्बुजे। ब्रह्मगृहम्। आराद् दूरे समीपे च नाळमस्तीति आरनालं। द्वितीयस्यातोऽत्। स्थविरासनं स्थविरो ब्रह्मा। आत ओत्॥ (५४) कलिमं कन्दोट्टं उत्पले। के लीयते इति कलिमं। डिमः। कन्दादुट्टीकते उद्गच्छतीति कन्दोट्टं। 'स्तौ' [१·२·६५] इत्योत्वम्॥ (५५) चन्दोज्जं (५६) रअणिद्धअं कुमुदम्। चन्द्रेणोद्द्योतत इति चन्दोज्जं। रजनिध्वजम्॥ (५७) घरअन्दं मुकुरम्। गृहे चन्द्रवदुद्द्योतत इति॥ (५८) आआसतलं हर्म्यपृष्ठम्। आकाशतलमिति॥ (५९) आणन्दवडो नववध्वा रक्तारुणं वस्त्रम्, प्रथमरजस्वलाया रक्ताक्तः पटः, आनन्दविषयत्वात्॥ (६०) सूरद्धओ दिवसः। सूर्यो ध्वजो यस्य सः॥ (६१) पल्लविअं लाक्षारक्तम्। सपल्लवमिव पल्लवितम्॥ (६२) अच्छिवडणं निमीलनम्। अक्षिपक्ष्मणां पतनम्॥ (६३) णीसङ्को वृषः। निःशङ्कः॥ (६४) एलविलो धनवांश्च। चकाराद् वृषश्च॥ (६५) सुहरओ दारिकागृहं चटकश्च। सुखं रतमस्यास्तीति॥ (६६) हट्टमहट्टो स्वस्थः। हृष्टश्चासौ महार्थश्च॥ (६७) णिम्मीसुओ युवा निःश्मश्रुकः। आदेरत ई॥ (६८) जहणारोहो ऊरुः। जघनेनारुह्यत इति॥ (६९) पल्हट्टजीहो (७०) अउज्झहरो रहस्यभेदी। पर्यस्तजिह्वः। गुह्यहरः। आदावडागमः॥ (७१) णिहुअं निधुवनं सुरतं निभृतम्॥

---

(53) HD.5.29. (54) HD. 2.9. (55) HD.3.4. (56) HD.7.4. KS मुकुरं for कुमुदम्. K adds सितोत्पलं. (57)HD. 2.107.G घरअंदअं. (58) HD. 1.72. B आआसतअं for °तलं. G आकाशतलवदाभासत इति for °तलं. (59) HD. 1.72. KM रक्तासक्त वस्त्र for रक्ताक्तः पटः. (60) HD. 8.42. (61) HD. 6.19. G पल्लवितमिव for सपल्लवं. (62) HD. 1. 39.G अक्षिपद्मानां for °पक्ष्मणां. (63) Sk. (64) HD. 1.148. GM add ऐलबिलवत्. (65) HD. 8.56. सुहराओ for सुहरओ. T सुमरओ for °सुहरओ. (66) HD. 8.65..(67) HD. 6.32. (68) HD. 3.44. GMT जहणरोहो; K जहणलाहो for °णारोहो. (69) HD. 6.35. (70) HD. 1.42.G अगुज्झहरो; M अउंझहरओ for अउज्झहरो. (71) HD. 4.50.

(७२) अब्बुद्दसिरी मनोरथाधिकफलप्राप्तिः। अबुद्धश्रीः। प्रमुक्तादिपाठात् [१·४·९१] द्वित्वम्॥ (७३) बहुजाणो चोरो धूर्तश्च। बहुज्ञानः॥ (७४) परेओ परेतः पिशाचः॥ (७५) उज्जल्लो बहुबलवान्। उज्ज्वलः। दैवादिपाठात् [१·४·९२] द्वित्वम्॥ (७६) जोई विद्युत् ज्योतिर्वा॥ (७७) भिङ्गं कृष्णं भृङ्गवन्नीलत्वात्। भिङ्गं संस्कृत इत्येके॥ (७८) णिअंधणं परिधानम्। निबध्यत इति निबन्धनम्॥ (७९) जहणूसुअं चल्लणकम्। जघनांशुकम्। आतो बिन्दुना सह ऊत्वम्॥ (८०) पाउरणं कवचः। प्रावरणकत्वात्। आदेरत उः (८१) ओअल्लो अपसारः कम्पश्च। अपचारे ओअल्लो। तैलादित्वात् [१·४·९३] द्वित्वम्॥ (८२) चवेडी करसंपुटाघातः॥ (८३) रइलक्खं रतिलक्ष्यं जघनम्॥ (८४) वावडो कुटुम्बी व्यापृतः॥ (८५) पुरिल्लदेवा दैत्याः पुराभवाः॥ (८६) गोसण्णो मूर्खः। गोसंज्ञः पशुप्रायत्वात्॥ (८७) परभत्तो भीरुः निष्पीडश्च। परः शत्रुस्तद्भक्तश्च॥ (८८) चच्चिक्को स्थासकः। चर्चिका। को द्वित्वं पुंस्त्वं च॥ (८९) कालं तमिस्रं नीलत्वात्॥ (९०) भट्टिओ विष्णुः। भर्तृकः जगत्पोषकत्वात्। ऋत इत्॥ (९१) इन्दग्गिधूमं तुहिनम्। इन्द्राग्निधूमः॥ (९२) पत्थरं पादताडनम्। प्रस्तरवत्पत्थरं दुःसहत्वात्॥

---

(72) HD1.42.(73) HD.(बहुणो).6.97 (74) HD. 6.12. (75) HD. 1.154. ओज्जल्लो;M उज्जलो for उज्जल्लो.(76) HD.3.49.K adds द्योतत इव; M द्योती वा. (77) HD. 4.104. MS om. भिंगं संस्कृत इत्येके. (78) HD. 4.3. (79) HD. 3.45. B जहणूसअं for °णूसुअं. (80) HD. 6.43. (81) HD. 1.165. KS कशादित्वात् for तैलादित्वात्. (82) HD. 3.3.GK करसंपुटघातः for °टाघातः. (83) HD. 7.13. (84) HD 7.54. (85)HD. 6.55. (86) HD. 2.97.S णोसण्णो for गोसण्णो. (87) HD. (परिब्भंतो).6.72. M परहत्तो for परभत्तो. KMS निषिद्धश्च for निष्पीडश्च. (88)HG 2.174. M om.·चर्चिका. (89)HD. 2.26. (90) HD. 6.10. (91) HD. 1.80. (92) HD. (पत्थरा); 6.8. Gp पद्दरा; M पत्थमं for पत्थरं.

(९३) ओ वा अ ओ अस्तकालः । अपातपः ।। (९४) पि उच्छा (९५) मा उ आ सखी । पितृष्वसेव मातृकेव हितकारित्वात् ।। (९६) पो र त्थो मत्सरी । पौलस्त्यवत् ।। (९७) दो सो कोपः आत्मदोषत्वात् ।। (९८) च च्चा चर्चा तलाहतिः ।। (९९) प म्ह लो केसरः । पक्ष्मलवत् ।। (१००) ख न्ध ल ट्ठी (१०१) ख न्ध म सो भुजस्कन्धस्य यष्टिः । स्कन्धं प्रमृशतीति ।। (१०२) अ ग्गि आ ओ (१०३) त म्ब कि मी इन्द्रगोपः । अग्निवत्कायोऽस्येति अग्निकायः । ताम्रकृमिः ।। (१०४) वि हा ड णो अनर्थः । विघाटनम् ।। (१०५) जो इ ओ ज्योतिरिङ्गणः खद्योतः ।। (१०६) सि ञ्जि रो ध्वनिः । शिञ्जनमेव ।। (१०७) जो इ सो (१०८) जो अ णा (१०९) जो डो (११०) ख ज्जो ओ खद्योते । तारका । ज्योतिषं जोइसं । द्योतना जोअणा । द्योतः जोडो । तस्य डः । खे द्योतत इति खद्योतः खज्जोओ ।। (१११) द र व ल्ल हो कान्तः । दरो भयः तत्र वल्लभः । (११२) का अ रो कातरः वियोग-भीरुत्वात् ।। (११३) प ण्ड र ङ्गो महेश्वरः । धवलाङ्गत्वात् ।। (११४) भो इ ओ ग्रामेशः । भोगं चरतीति भोगिकः ।।

---

(93)KD. 1.162. G ओआअवो for ओवाअओ. G adds ओवाअळो अस्त-कालः अवपातः अतोपकारः (?) ओवायवो ओवायवा अस्तकालः अपातपः अपौकारः (?).(94) HD. 6.49.B पिउच्चा for पिउच्छा. (95) HD. 6.148. (96). HD. 6.62. पोरच्छो for पोरत्थो. (97) HD. 5.56. (98) HD. 3.19 M चंचा for चच्चा. (99) HD. 6.13. (100) HD. 2.71. G खंधअट्ठी for °लट्ठी. (101) HD. 2.71. G मृशतीति for प्रमृशतीति. (102) HD. 1.53. अग्गिओ for अग्गिआओ. (103) HD. 5.6. (104) HD. 7.71. B विहडणो for विहाडणो. (105) HD. 3.50. (106) G सिंजओ for सिंजिरो. (107) HD. 3.50. B जोइओ; K जोइसं for जोइसो. (108)HD. 3.50. (109) HD. 3.49. B जोअडो for जोडो. (110) HD. 2.69. B खज्जओ for खज्जोओ. (111). HD. 6.37. (112) HD. 2.58. कायलो; कायरो for काअरो. (113). HD. 6.23. (114) HD. 6.108.

(११५) सग्गहो मुक्तः। सुष्ठु अग्रहः स्वग्रहः ॥ (११६) संकरो रथ्या। संकीर्यते अत्रेति संकरः॥ (११७) पअरो प्रवरः अर्थपरः। अर्थे प्रकर्षेण वरः॥ (११८) मइमोहिणी सुरा। मतिमोहिनी॥ (११९) धारावासो दर्दुरः प्रावृषेण्यत्वात्॥ (१२०) कमलं आस्यं कलहश्च। कमलवत्कमलं। कं मस्तकं मलतीति॥ (१२१) वेणुसाओ (१२२) धुअराओ भ्रमरः। वेणुशब्दवच्छब्दो यस्य स वेणुसाओ। संयुक्तस्य लुक्। ध्रुवरागः सदा सुस्वरत्वात्॥ इत्यादि॥ अस्मिन्गणे लिङ्गव्यत्ययः प्रयोगाधीनः॥

इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ

प्रथमोध्यायस्य चतुर्थः पादः॥

प्रथमोऽध्यायः समाप्तः॥

---

(115) HD. 8.4. M अनुग्रहः for अग्रहः. (116) HD. 8.6. (117) M वअरो; S पइरो. B अर्थदरः; M अर्थम्. (118) HD. 6.113. (119) HD. 5.63. S दुर्धर for दर्दुरः. (120) HD. 2.54.(121) HD. 7.78. वेणुणासो for वेणुसाओ. (122) HD. 5.7. S om. सदा. Colophon: B KMS om. from °मदर्हनन्दि...to प्रभाव. KMS इति प्राकृतव्याकरणवृत्तौ प्रथमस्याध्यायस्य.

द्वितीयोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ॥

मन्तमणवन्तमाआलुआलइरइल्लउल्लइन्ता मतुपः ॥ १ ॥

मतुप्प्रत्ययस्य मन्त मण वन्त मा आलु आल इर इल्ल उल्ल इन्त इत्येते दशादेशा यथाप्रयोगं भवन्ति । मन्त–सिरिमन्तो श्रीमान् । पुण्णमन्तो पुण्यवान् ॥ मण–धणमणो धनवान् ॥ वन्त–धणवन्तो धनवान् । भत्तिवन्तो भक्तिमान् ॥ मा–हणुमा हनुमान् । पडमा पटवान् ॥ आलु–णेहालू स्नेहालुः । दआलू दयालुः । ईसालू ईर्ष्यालुः ॥ आल–सद्दालो शब्दवान् । जडालो जटावान् । पडालो पटवान् । रसालो रसवान् । जोण्हालो ज्योत्स्नावान् ॥ इर–गहिरो ग्रहवान् ॥ इल्ल–सोहिल्लो शोभावान् । छाइल्लो छायावान् । धामिल्लो धामवान् ॥ उल्ल–विआरुल्लो विकारवान् । मंसुल्लो मांसवान् । दप्पुल्लो दर्पवान् ॥ इन्त–कहइन्तो कथावान् । माणइन्तो मानवान् ॥ मतुप इति किम् । धणी । अत्थी ॥ १ ॥

वतुपो डित्तिअमेतल्लुक् चैतत्तद्यदः ॥ २ ॥

एतद् यद् तद् इत्येतेभ्यः परस्य परिमाणार्थस्य वतुप्प्रत्ययस्य डित् इत्तिअ इत्यादेशो भवति एतदो लुक् च ॥ एतावत् एत्तिअं । यावत् जित्तिअं । तावत् तित्तिअं ॥ २ ॥

N. B.- G is not available from this chapter to the end.

1. MS °उन्ता for °इन्ता in the Sūtra and Com. KMST आदेशा for दशादेशा. After धणमणो K adds दुग्गमणो. M विहिमणो for धणमणो. After धणवन्तो KS add सुहवन्तो हत्थिवन्तो. M धणुमा for हणुमा. KMS om. पडमा पटवान्. After आलु KT add मआलू M सिणेहालू for णेहालू. M om. पडालो पटवान्. KS ईसालो; T रसालू for रसालो. After गहिरो KM add गव्विरो मोहिरो; S adds मोहिरो. KS छाहिल्लो for छाइल्लो. BT₁ जामिल्लो; KS आमइल्लो; M जाइल्लो; T₂ जेमिल्लो for धामिल्लो M पिआउल्लो महुल्लो for विआरुल्लो मंसुल्लो. M उन्त–पउत्तो माणउत्तो for कहइन्तो माणइन्तो. S om. माणइन्तो. S हत्थी for अत्थी. 2. M मतुपो for वतुपो. Bp डित्तिअमिदमेत° for डित्तिअमेत° in the Sūtra. BMST चैतद्यत्तदः for चैतत्तद्यदः in the Sūtra. M एतेभ्यः for इत्येतेभ्यः. M वा भवति for भवति. S om. from यावत् down to गस्य in Sūtra 4.

किमिदमश्च डेत्तिअडित्तिलएद्दहम् ॥ ३ ॥

किमिदंभ्यां चादेतत्तद्भ्यश्च परस्य वतुप्प्रत्ययस्य डानुबन्धा एत्तिअ इत्तिल एद्दह इत्येते आदेशा भवन्ति । एतावत् एत्तिअं इत्तिलं एद्दहं । यावत् जेत्तिअं जित्तिलं जेद्दहं । तावत् तेत्तिअं तित्तिलं तेद्दहं । कियत् केत्तिअं कित्तिलं केद्दहं । इयत् एत्तिअं इत्तिलं एद्दहं ॥ ३ ॥

इकः पथो णस्य ॥ ४ ॥

'पथो ण नित्यम्' इति यः पथिन्शब्दात् णप्रत्ययो विहितः, तस्य इक इत्यादेशो भवति । पान्थः पहिओ ॥ ४ ॥

खस्य सर्वाङ्गात् ॥ ५ ॥

सर्वाङ्गाद्व्यापिन्यर्थे विहितस्य खप्रत्ययस्य इको भवति । सर्वाङ्गीणः सव्वङ्गिओ ॥ ५ ॥

छस्यात्मनो णअः ॥ ६ ॥

आत्मनः परस्य छप्रत्ययस्य णअ इत्यादेशो भवति । आत्मीयम् अप्पणअं ॥ ६ ॥

हित्थहात्त्रलः ॥ ७ ॥

सप्तम्यन्तात्सर्वनाम्नो विहितस्य त्रल्प्रत्ययस्य हि त्थ ह इति त्रय आदेशा भवन्ति । यत्र जहिं जत्थ जह । तत्र तहिं तत्थ तह । कुत्र कहिं कत्थ कह । अन्यत्र अण्णहिं अण्णत्थ अण्णह ॥ ७ ॥

---

3. K °डेद्दहम् for एद्दहम् in the Sūtra; M °एद्दहाः in the Sūtra. K इत्यादेशाः for इत्येते आदेशाः. After आदेशा T adds डितो. After भवन्ति K adds एतल्लुक् च । अनुबन्धादन्त्यस्वरादेर्लुक्; M adds लुक् च । डानुबन्धादन्त्यस्य स्वरादेर्लुक्. B om. form °कियत् down to एद्दहं. M om. इयत् एत्तिअं एद्दहं. K कियत् केत्तिलं कित्तिअं केद्दहं for कियत्...केद्दहं. 4. K पथो णः पन्थश्चेति यः; MT पथश्चेति यः for पथो ण नित्यम् इति यः. S पथिन्शब्दस्य; MT पथो णप्रत्ययो for पथिन्शब्दात् णप्रत्ययो. 5. M सर्वव्यापिन्यर्थे for सर्वाङ्गाद्व्यापिन्यर्थे. T अप्पणीअं for अप्पणअं. 7. K सप्तम्यन्तान्नाम्नो for सप्तम्यन्तात्सर्वनाम्नो.

केर इदमर्थे ॥ ८ ॥

इदमर्थे विहितस्य छप्रत्ययस्य केर इत्यादेशो भवति। युष्मदीयः तुम्हकेरो। अस्मदीयः अम्हकेरो॥ क्वचिन्न भवति। मदीयपक्षः मइज्जपक्खो। पाणिनीयम् पाणिणीअं ॥ ८ ॥

राजपराड्डिक्कडक्कौ ॥ ९ ॥

राजन् पर इत्येताभ्यां परस्य इदमर्थे विहितस्य प्रत्ययस्य डितौ इक्क अक्क इत्येतौ भवतः। चकारात्केरश्च। राजकीयं राइक्कं राअक्कं राअकेरं। परकीयं परिक्कं परक्कं परकेरं ॥ ९ ॥

डेच्चओ युष्मदस्मदोऽणः ॥ १० ॥

युष्मदस्मद्भ्यां परस्य इदमर्थस्याण्प्रत्ययस्य डित् एच्चअ इत्यादेशो भवति। यौष्माकम् तुम्हेच्चअं। आस्माकम् अम्हेच्चअं ॥ १० ॥

वर्वतेः ॥ ११ ॥

उपमानार्थे विहितस्य वतिप्रत्ययस्य वर् इत्यादेशो भवति। रित्वाद् द्वित्वम्। महुरव्व पाडलिउत्ते पासाआ, मथुरावत्पाटलिपुत्रे प्रासादाः ॥११॥

तैलस्यानङ्कोलाड्डेल्लः ॥ १२ ॥

अङ्कोलवर्जिताच्छब्दात्परस्य तैलस्य डित् एल्ल इत्यादेशो भवति। सुरहिजलेण कडेल्लं, सुरभिजलेन कटुतैलम्॥ अनङ्कोलादिति किम्। अङ्कोलतेल्लं ॥ १२ ॥

त्वस्य तु डिमात्तणौ ॥ १३ ॥

भावार्थे विहितस्य त्वप्रत्ययस्य डित् इमा त्तण इत्यादेशौ तु भवतः। पीनत्वं पीणिमा पीणत्तणं। पुष्पत्वं पुप्फिमा पुप्फत्तणं॥ पक्षे पीणत्तं पुप्फत्तं॥ त्वस्येति किम्। पीणआ पीणदा पीनता ॥ १३ ॥

---

8. S om. क्वचिन्न भवति. M मईअपक्खो for मइज्जपक्खो. 9. MS °क्कं च; T ढिक्कढक्कौ च for °डक्कौ in the Sūtra. KMS इत्यादेशौ क्रमेण भवतः for इत्येतौ भवतः. KMS पारिक्कं पारक्कं पारकेरं for परिक्कं...परकेरं. 10. Bp एच्चओ for डेच्चओ in the Sūtra. 11. BpT वर्तवे; MS वेवते for the Sūtra. B वरा; S वं for वर् in Com. 12. S om. कडेल्लं; T सुरहेल्लं कडुएल्लं for कडेल्लं. 13. M भावार्थस्य for भावार्थे विहितस्य. K पुप्फमा for पुप्फिमा. S om. from पीनत्वं down to सव्वदो under the next Sūtra. M om. पीणदा.

दो त्तो तसः ॥ १४ ॥

त्वित्यनुवर्तते । पञ्चम्यन्तात्सर्वनाम्नः परस्य तसिल्प्रत्ययस्य दो त्तो इत्येतौ तु भवतः । सव्वदो सव्वत्तो । एअदो एअत्तो । अण्णदो अण्णत्तो । कदो कत्तो । तदो तत्तो । जदो जत्तो । इदो इत्तो ॥ पक्षे सव्वओ इत्यादि ॥ १४ ॥

एकाद्दः सिसिआइआ ॥ १५ ॥

एकशब्दात्परस्य दाप्रत्ययस्य सि सिआ इआ इति त्रय आदेशाः भवन्ति तु । एकदा एक्कसि एक्कसिआ एक्कइआ एकआ ॥ १५ ॥

ल्हुत्तः कृत्वसुचः ॥ १६ ॥

'वारे कृत्वसुच्' इति विहितस्य कृत्वसुच्प्रत्ययस्य हुत्त इत्यादेशो भवति । लित्त्वान्नित्यम् । सअहुत्तो । सहासहुत्तो । चुम्बिज्जइ सअहुत्तो । उवगूहिज्जइ सहासहुत्तो । रमिआ वि पुणो रमिज्जइ णवत्तणं णत्थि पुणरुत्तं । पिअहुत्तं इति तु अभिमुखार्थेन हुत्तशब्देन भविष्यति ॥ १६ ॥

भवे डिल्लोल्लडौ ॥ १७ ॥

भवार्थे नाम्नः परौ इल्ल उल्ल इत्येतौ डितौ भवतः । इल्ल—मातुलानी मामी तत्र भवा मामिल्लिआ । पुरो भवं पुरिल्लं । अधो भवं हेट्ठिल्लं । उपरि भवं उवरिल्लं ॥ उल्ल—आत्मभवं अप्पुल्लं । अल्लत्वात्पाच्छन्त्यन्ये ॥ १७ ॥

---

14. K नाम्नः for सर्वनाम्नः. M तस्प्रत्ययस्य; K तसिप्रत्ययस्य for तसिल्प्रत्ययस्य. K M इत्यादेशौ for इत्येतौ. M एगआ for सव्वओ. 15. M om. तु 16. M ल्हुत्वं कृत्वसः; S हुत्वं कृत्वसः; T ल्हुकृत्वसः; for the Sūtra. KMST वारे कृत्वस् for वारे कृत्वसुच्. KMS प्रत्ययस्य कृत्वसः for कृत्वसुच्प्रत्ययस्य. KS लित्त्वान्न विकल्पः for लित्त्वान्नित्यम्. B उपगूहिज्जइ for उव° K S सहस्सहुत्तो for सहास°. T सअभुत्तं सहस्सभुत्तं. B रमज्जइ for रमिज्जइ. M S om. from सहासहुत्तो down to णत्थि. 17. M डिल्लोल्लड्ः; T डिल्लोल्लडः for °ल्लडौ in the Sūtra. M इत्यादेशौ for इत्येतौ.

स्वार्थे तु कश्च ॥ १८ ॥

स्वार्थे नाम्नः परं कप्रत्ययो भवति तु । चकारात् डिल्लोल्लडौ च । चन्द्रः चन्दओ । हृदयं हिअअअं । इह इहअं । आश्लिष्टं आलिद्धअं ॥ द्विरपि भवति । बहुअअं ॥ ककारोच्चारणं पैशाचीभाषार्थम् । वदनं वतनकं । डि ल्ल—णिज्जिआसोअपल्लविल्लेण, निर्जिताशोकपल्लवेन । पुरिल्लो पुरा पुरो वा ॥ उ ल्ल ड्—पिउल्लो प्रियः । मुहुल्लं मुखम् । हत्थुल्लो हस्तः ॥ पक्षे चन्दो इत्यादि ॥ कुत्सादिविशिष्टे तु संस्कृतवदेव कः सिद्धः ॥ १८ ॥

उपरेः संव्याने ल्लः ॥ १९ ॥

स्वार्थ इत्यनुवर्तते । संव्यानार्थे उपरिशब्दात् द्विरुक्तो लो भवति । लित्त्वान्नित्यम् । उवरिल्लो ॥ संव्यान इति किम् । उवरिं ॥ १९ ॥

नवैकाद्वा ॥२०॥

नव एक इत्येताभ्यां परं स्वार्थे द्विरुक्तो लो वा भवति । णवल्लो णवो । एक्कल्लो एक्को ॥ २० ॥

मिश्राल्लिअश् ॥ २१ ॥

मिश्रशब्दात्स्वार्थे लिअ इत्यादेशो वा भवति । शित्त्वात्पूर्वस्य दीर्घः । मीसालिअं मिस्सं ॥ २१ ॥

शनैसो ल्डिअं ॥ २२ ॥

शनैः शब्दात्स्वार्थे लित् डिच्च इअं इत्यादेशो भवति । सणिअं ॥२२॥

मनाको डअं च वा ॥ २३ ॥

मनाक्शब्दात्स्वार्थे डित् अअं इअं च प्रत्ययौ वा भवतः । मणअं मणिअं । पक्षे मणा ॥ २३ ॥

---

18. M चार्थे for स्वार्थे in the Sūtra and Com. K om. परं; MT परः. M om. तु. B द्वित्वेऽपि; T द्विरपि for द्विरपि भवति. MST पैशाचिकभाषार्थम् for पैशाचीभाषार्थम्. KST वदनकं for वतनकं. K चन्द्रो for चन्दो.
19. Before द्विरुक्तो S reads स्वार्थे. S om. लित्त्वान्नित्यम्; M लित्त्वान्न विकल्पः. M अवरिल्लो for उवरिल्लो. M अवरि for उवरिं. 20. M इत्याभ्यां for इत्येताभ्यां. 21. T लिअट् for लिअश् in the Sūtra. M मीसं for मिस्सं.

रो दीर्घात् ॥२४॥

वेत्यनुवर्तते । दीर्घशब्दात्स्वार्थे रो वा भवति । दीहरं दीहं दिग्घं ॥ ॥ २४ ॥

डुमअडमऔल् भ्रुवः ॥२५॥

भ्रूशब्दात्स्वार्थे उमअ अमअ इत्येतौ डितौ लितौ भवतः । लित्वान्नित्यम् । भुमआ भमआ ॥ २५ ॥

लो वा विद्युत्पत्रपीतान्धात् ॥ २६ ॥

एभ्यः परं स्वार्थे लो वा भवति । विज्जुला विज्जू । पत्तलं पत्तं । पीअलं पीअं । अन्धलो अन्धो ॥ २६ ॥

त्वादेः सः ॥ २७ ॥

'तस्य भावस्त्वतलौ' इत्यादिना विहितत्वादेः परं स्वार्थे स एव त्वादिर्वा भवति । मृदुत्वेन मउत्तआइ । मृदुतया मउत्तआए । ज्येष्ठतरः जेट्ठअरो । कनिष्ठतरः कणिट्ठअरो ॥ २७ ॥

इरः शीलाद्यर्थस्य ॥ २८ ॥

शीलधर्मसाध्वर्थेषु विहितस्य प्रत्ययस्य स्थाने इर इत्यादेशो भवति । हसनशीलः हसिरो । रोदनशीलः रोइरो । लज्जाशीलः लज्जिरो । जल्पशीलः जम्पिरो । वेदनशीलः वेइरो । उच्छ्वसनशीलः ऊससिरो ॥ केचिदिरं तृन एवाहुः । तेषां नमिरकमिरादयो न सिध्यन्ति । तृनोत्तरादिना बाधितत्वात् ॥ ॥ २८ ॥

---

24. KMS om. दीहं. 25. KM om. लितौ. KMS लित्वाच्च विकल्पः for लित्वान्नित्यम्. KS भमआ; M भुमअं; T हुमआ for भुमआ. 26. MT om. परं. KT विज्जुल्ला for विज्जुला. 27. MT भावे त्वतलादिना for तस्य भावस्त्वतलौ इत्यादिना. M परः for परं. After मउत्तआए M adds त्वादेरिति किम्. 28. MS °साध्वर्थे; T शीलधर्मस्वार्थे for °साध्वर्थेषु. T भसिरो for हसिरो. KS जंपिरो for जम्पिरो. BT ऊसिरो; S उस्ससिरो for ऊससिरो. M केचिदिह आल एवाहुः for केचिदिरं तृन एवाहुः. M तेषां मते for तेषां.

तुमत्तुआणतूणाः क्त्वः ॥ २९ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य तुं अत् आण तूण इति चत्वार आदेशा भवन्ति। तुं—दट्ठुं। मोत्तुं। भोत्तुं॥ अत्—भमिअ। रमिअ॥ तुआण—घेत्तुआण। साउआण॥ 'क्त्वासुपोस्तु सुणात्' [१·१·४३] इत्यनुस्वारे कृते। घेत्तुआणं। सोउआणं॥ तूण—घेत्तूण। सोऊण। काऊण॥ अनुस्वारे। घेत्तूणं। सोऊणं। काऊणं॥ वन्दित्ता इति तु सिद्धावस्थायां वलोपे॥२९॥

वरइत्तगास्तृनाद्यैः ॥ ३० ॥

वरइत्त इत्यादयः तृनादिप्रत्ययैः सहिताः स्वराद्यादेशविशेषिता बहुलं निपात्यन्ते॥ (१) वरइत्तो वरयितृकः नूतनवरः। ऋतोऽत्, तो द्वित्वं च॥ (२) कणइल्लो (३) वाअडो शुकः। कणइल्लो। कणई लतावाची देश्यः, ततो भवार्थेऽस्त्यर्थे वा डिल्लः। वाअडो। वाचाटे द्वितीयस्यातोऽत्॥ (४) मइलपुत्ती पुष्पवती। मलिनशब्दस्य मइलादेशः, तस्मात् पुत्ती॥ (५) दुग्घोट्टो दोग्घोट्टो (६) दूणो द्विपः। पिबतेर्घोट्टः। द्वाभ्यां पिबतीति। द्विपाने पकारेण सह इत ऊत्। दूणो॥ (७) विरिचरो धाराविरेचनशीलः॥ (८) सूरल्ली मध्याह्नः। सूरादस्त्यर्थे ल्लिः॥ (९) वेल्लहलो कोमलो विलासी च। वल्लभात् लः, आदेरत एच॥ (१०) सद्दालं नूपुरम्। शब्दादालोऽस्त्यर्थे॥ (११) अल्लिल्लो (१२) फुल्लंधओ

---

29. M om. तूण—घेत्तूण। सोऊण। काऊण॥ अनुस्वारे. T णिहित्ता नन्दित्ता इति for वन्दित्ता इति. 30. T om. बहुलं. S om. from इत्यादयः down to डिल्लः. (1) HD. 7.44. K नूत्नवरः नवो वरः for नूतनवरः. (2) HD. 2.21. ( ) Sk वाचाटः. (4) From मलिन and पोत्त=वस्त्र K मलिनादेशात् मइलात् पुत्ती. (5) HD. 5.44. M ST om. दोग्घोट्टो. (6) HD 5.44 (7) HD. (विरिविरो) 7.93. MT विरिविरो for °चरो. (8) HD. 8.57. T_2 सुरल्ली for सूरल्ली. (9) HD. 7.96. (10) HD. 8.10. (11) HD.(अल्लल्लो) 1.13. (12) HD (फुल्लंधुओ) 6.85. S पुल्लंदओ; T पुल्लद्दओ for फुल्लंधओ.

(१३) रसाओ भ्रमरः। एषां क्रमात् अलेः स्वार्थे डिल्लः,लो द्वित्वं च। पुष्पंधयः पस्य लः। रसमत्तीति रसाओ॥ (१४) लअणी लअणा (१५) कणई लतायाम्। लतायाः स्वार्थे डणी डणा च। कनतेर्धातोः स्त्रियां डई। शोभावहत्वात्॥(१६) वहुज्जा कनीयसी श्वश्रूः। वध्वा उक्तेऽर्थे ज्जा। (१७) भाउज्जा भ्रातृवधूः। भ्रातुर्जायार्थे ज्जा॥ (१८) मेहुणिआ मातुलात्मजा स्याली च। मैथुनिका। मिथुनादुक्तेऽर्थे इकण् डाच॥ (१९) रिमिणो रोदनशीलः। रुदेः शीले डिमिणः॥ (२०) पुण्णाली (२१) छिच्छई (२२) अडअणा असती। पुंश्चल्यां श्चस्य णा। धिक् धिक् छिच्छि। धिग्धिगिति गर्हणा यस्याः सा। अस्त्यर्थे डई। अटेः शीले अणा। अड-अणा अटनशीला। (२३) चप्पलओ मिथ्यावहुभाषी। चपलात्कः, पस्य च द्विरुक्तः पः॥ (२४) पिव्वं जलम्। पिवतेर्द्विर्वः॥ (२५) मघोणो मघवा। स्वार्थे णः, अवा इत्यस्य ओकारः॥ (२६) सइलासिओ मयूरः। सदालासिकः नृत्यशीलत्वात्। 'इत् सदादौ' [१-२-३४] इत्यनेन सइ॥ (२७) वाउल्लो प्रलपिता। वाचो डुल्लः॥ (२८) पलहिअओ मूर्खः। उपलहृदयः। उकारस्य लोपः॥ (२९) चण्डिक्को कोपः। चण्डात् कोपे डिक्कः॥ (३०) चण्डिज्जो पिशुनः कोपश्च। चण्डादुक्तेऽर्थे डिज्जः॥ (३१) कुम्मणो म्लानः। म्लायतेः कुम्मादेशो णः॥ (३२) अच्छिहरुल्लो द्वेष्यः। अक्ष्णोर्हरः, अदर्शनीयत्वात्। अक्षिहरात्स्वार्थे डुल्लः॥

---

(13) HD. (रसाऊ) 7.2. (14) HD. 7.27. K लअणं for लअणी. (15) HD. 2.5. (16) HD. (वहुव्वा?) 7.40. KMST वहुव्वा for °ज्जा. (17) HD. 6.103. M बाहुज्जा for भाउज्जा. (18) HD. 6.148. (19) HD. 7.7. (20) HD. 6.53. (21) Sk धिक् धिक्. (22) HD. 1.18. K om. अटनशीला. (23) HD. 3.20. M चच्चइओ; T छप्फलओ for चप्पलओ. M चंचलात्कः for चपलात्कः. (24) HD. 6.46. (25) Sk मघवन्. (26) HD. 8.20. (27) HD.7.56. (28) Sk उपलहृदयः. M पलाहिओ अपहृतहृदयः. (29) HD. 3.2. (30) HD. 3.20 K चंडिज्जो पिशुनश्च। चकारात्कोपश्च. (31) HD. 2.40. T कुम्हणो for कुम्मणो. (32) HD. 1.41.

(३३) छाइल्लो रूपवान्। छायाया डिल्लोऽस्त्यर्थे। कान्तिमानित्यर्थः॥ (३४) कुडुंगो कुंगो कुडुक्को लतागृहम्। कुडादुक्तेऽर्थे डुङ्गः डङ्गः डुकश्च ॥ (३५) जरण्डो वृद्धः। जरतेरण्डः॥ (३६) अच्छिविअच्छी परस्पराकृष्टिः। आकर्षति व्याकर्षतीत्यत्र कृषेः स्थाने विअच्छी॥ (३७) धूमरी तुहिनम्। धूमवत् धूमरी। उपमानार्थे री॥ (३८) सोत्ती तरङ्गिणी। स्रोतसोऽस्त्यर्थे डी। तस्य द्वित्वम्॥ (३९) अहिसिओ ग्रहशङ्कया रुदितः। अभिसीदतेः उक्तेऽर्थे डिकः॥ (४०) गावी गौः। गोः स्त्रियां डावी॥ (४१) उत्थल्लपत्थल्ला पार्श्वयुगापवृत्तिः। उत्स्थलप्रस्थलात्पार्श्वद्वयापवृत्त्यर्थे डा, लो द्वित्वं च॥ (४२) गज्जिलिओ स्पृष्टेऽङ्गे हासः पुलकश्च। अङ्गे स्पृष्टे यो हासो जायते तस्मिन् पुलकार्थे च गर्जतेरिलिअः॥ (४३) चित्तलं रम्यम्। चित्तं लातीति॥ (४४) पाडहुओ प्रतिभूः। प्रतिभुवः स्वार्थे डुकण्, इतोऽत्वं च॥ (४५) पासणिओ पासाणिओ साक्षी। साक्षात्पार्श्वे नीयतेऽनेनेति पार्श्वान्नीयतेर्डिकः॥ (४६) अवरिज्जं अद्वितीयम्। अवरात् भावार्थे डिज्जः॥ (४७) लाहिल्लो लम्पटः। लाभादुक्तेऽर्थे डिल्लः॥ (४८) कडिल्लं गहनं, दौवारिकः, कटिवस्त्रम्, निर्विवरम्, विपक्षः, आशीश्च। कटिशब्दाद् गहनादिष्वर्थेषु डिल्लः॥

---

(33) HD. 3.35. (34) HD. 2.31. M S om. कुडुंगो down to डुकश्च. (35) HD. 3.40. (36) HD. 1.41. K कृषेः स्थाने अच्छिविअच्छी. (37) HD. 5.61. K उपमार्थे for उपमानार्थे. (38) HD. 8.44. (39) HD. 1.30. (40) Sk गो. (41) HD. 1.122. M पार्श्वान्नीयते आनीयते चेत्यर्थे for पार्श्वद्वयापवृत्त्यर्थे. (42) HD. (गंजोल्लिअ) 2.100. S गंजिलिओ; T गज्जलीओ for गज्जिलिओ. (43) HD. 3.4. (44) HD. (पाडुहुओ). 6.42. KS पाडंहुओ; T पालभुओ for पाडहुओ. T प्रतिभूमिः for प्रतिभूः. (45) HD. 6.41. T पाडणीओ for पासणिओ. S साक्षात्कश्चिन्नीयते for साक्षात्पार्श्वे नीयते. (46) HD. 1.36. T₁ अवरंजं; T₂ अवरउजं. T अवरादभावार्थे सिज्जं for अवरात् भावार्थे डिज्जः. (47) Sk लाभ. (48) HD. 2.52. T₁ कडिल्ली; T₂ कडिल्लः. S वाहनं for गहनं.

(४९) रूव सि णी रूपवती । रूपादस्त्यर्थे स्त्रियां सिणी ॥(५०) कु डु ग्वि अं सुरतम् । कुटुम्बादुक्तेऽर्थे डिकः ॥ (५१) अन्त रि ज्जं रशना कटिसूत्रम् । अन्तरादुक्तेऽर्थे डिज्जः ॥ (५२) अ व डु क्कि अं निपतितं कूपाद्यवटेषु । अवटादुक्तेऽर्थे डुक्किअः ॥ (५३) बु ड्डि रो महिषः । मज्जतेरादेशात् बुड्डात् इरः शीलार्थे ॥ (५४) पि प्पि डि अं यत्किंचित्पठितम् । पिडिपिडीत्यनुकरणात्कः, आदेर्डिकारस्य लुक्, पो द्वित्वं च ॥ (५५) स रि सा हु लो सदृशः । सदृशात्स्वार्थे डुल्श् ॥ (५६) गु मि लो मूढः । मुहेरादेशाद्गुमेरिलः॥ (५७) क च्चं कार्यम्। कृञो डच्चः ॥ (५८) घ डि अ घ डा घ डी गोष्ठी । घटिता घटा घटना यस्याः सा ॥ (५९) क म णी निश्रेणी ॥ (६०) कि रि कि रि आ कर्णोपकर्णिका कुतुकं च । कर्णोपकर्णं कर्णपरंपराप्राप्तं कटुजल्पनं तस्मिन्नर्थे कौतुके च किरिकिरीत्यनुकरणात्का ॥ (६१) अ ण्ण इ ओ सर्वत्रार्थे तृप्तः । अर्णवादुपमानार्थे डिकः ॥ (६२) सा हु ली शाखा । स्वार्थे डुलिः ॥ (६३) जं पे क्खि र म ग्गि र ओ यद् दृष्टं याचते । यद् दृष्टमित्यर्थे जंपेक्खिरमिति निपातितात्परो याचनशीले मग्गिरओ कप्रत्ययान्तः ॥ (६४) ग अ सा उ ल्लो विरक्तः । गतस्वादनुरक्तेऽर्थे डुल्लः ॥

---

(49) HD. 7.9. (50) HD. (कुडुच्चिअं) 2.41. (51) HD. 1.35. B दशनाः for रशना. (52) HD. (अवडक्किओ) 1.47. T अवडुक्किअं for अवडु°. (53) T पुंसिरो for बुड्डिरो. From बुड्=मज्ज. KST शीले for शीलार्थे. (54) HD. 6.50. KT पिटिपिटी°; M पिडिपिटी° S पटिपटी° for पिडिपिडी°. (55) HD. 8.9. T सारिसाभुलो for सरिसाहुलो. (56) HD. 2.102. T गुम्मिळो for गुमिलो. T मुहादेशात् for मुहेरादेशात्. (57) HD. 2.2. (58) HD. 2.105. T घसिआ घसा for घडिअघडा. (59) HD. 2.8. (60) HD. (किरिइरिआ) 2.61. KM S om. कर्णोपकर्णं. MT कर्णपरंपरया प्रयुक्तं प्रकटजल्पनं for कर्ण...कटुजल्पनम्. (61) HD. 1.19. Sk अक्षचितः. (62) HD. 8.52. (63) HD. 3.44. M यद्यदृष्टं तत्तद्याचते for यद्दृष्टं याचते; T यावद् द्रष्टव्यं प्रेक्षितमित्यर्थे for यद्दृष्टमित्यर्थे. (64) HD. (गयसाउल्लो) 2.87. M S om. from विरक्तः down to सिहंडहिल्लो. K गतेः स्वादाडुक्तेर्थे; T हतस्वादुक्तेर्थे for गतस्वादनुरक्तेऽर्थे.

(६५) सिहण्डहिल्लो बालः। शिखण्डादुक्तेऽर्थे हिल्लः। शिखावानित्यर्थः ॥ (६६) अलवलत्रसहो धूर्तो दुष्टः पृष्ठवाही बलीवर्दः। अलमत्यर्थं बलमस्य वृषभस्येति। बिन्दोर्लुक् ॥ (६७) खुरहखुडी प्रणयकोपः। क्षुरवद्भाति तोदयतीति तुदेरादेशात् खुडात् डी ॥ (६८) सीउङ्घी सीउग्गं हिमकाले दुर्दिनम्। शीतात् डुङ्घिडुग्गौ, तस्य लोपः ॥ (६९) वरण्डो वरणः प्राकारः। वृञो रण्डः ॥ (७०) तत्ती तत्परता। तात्परस्य तात्पर्ये डत्ती ॥ (७१) हीरणा त्रपा। त्रपार्थे णा ह्रीरादेशश्च ॥ (७२) गामरेडो योऽन्तर्भुक्त्वा ग्रामं भुङ्क्ते। ग्रामादुक्तेऽर्थे रेडः ॥ (७३) लडहा (७४) वेल्लरी विलासवती। लसतेर्डहा सलोपश्च। वेष्टयन्ते विटा अनयेति वेष्टेः परो री, ष्टो ल्लश्च ॥ (७५) दुम्मइणी कलहपरा। दुर्मतेः स्वार्थे स्त्रियां णी ॥ (७६) लज्जालुइणी लज्जावती। लज्जालोः स्वार्थे णी ॥ (७७) तण्णाअं आर्द्रम्। तिम्यतेर्डण्णाअं ॥ (७८) चिक्खअणो असहनः। नञ्पूर्वात्सहतेर्यणः, चिक्खादेशश्च ॥ (७९) वेणिअं वचनीयम्। वचेरुक्तेऽर्थे डेणिअः ॥ (८०) सुण्हसिओ निद्रालुः। स्वप्नात् शीले सियः, प्रस्य च ण्हः, आदेरत उः। यद्वा साक्षा संस्कृते निद्रा। 'स्तावकसास्ले' [१·२·१८] इत्युत्वे सति ततः शीलार्थे डसिअः ॥

---

(65) HD. (सिहंडइल्लो). 8.54. T सिहसहिल्लो. (66) HD. (अलमल) 1.25. M दुर्दान्तः for धूर्तः; T om. धूर्तः. B पृष्ठवाची for °वाही. T बन्धं for बलं. (67) HD. (खुरहुक्खुडी) 2.76. T_1 खररखुसी; T_2 खरखुडी for खुरहखुडी. (68) Sk शीत. T_1 सीअहं; T_2 सीदइं for सीउग्गं. (69) HD. 7.86. T_1 वरीडो; T_2 वरीसो for वराडो. (70) HD. 5.20. T_2 तत्तं. (71) HD. 8.67. T सीरणा for हीरणा. M ह्रियः स्वार्थे णा for त्रपार्थे णा. (72) HD. (गामरोडो) 2.90. BT ग्रामे for ग्रामं. (73) HD.7.17. T_1 रिसमा; T_2 रउमा for लडहा. (74) HD. 7.76. (75) HD, 5.47. M दुम्मलणी for दुम्मइणी. (76) Sk. B लज्जालुणी for लज्जालुइणी. (77) HD. (तण्णायं). 5.2. (78) ? (79) HD. 7.75. (80) HD. 8.39. T_2 सुम्हसिओ. M om. from यद्वा साक्षा down to डसिअः.

(८१) वप्पिओ केदारः। उप्यन्तेऽत्रेति वपेः पिअः॥ (८२) बन्धोल्लो मेलकः। बन्धेर्डोल्लः॥ (८३) वारिज्जो विवाहः। वृञ इज्जण्।'अचो ञ्णिति' इति वृद्धिः॥ (८४) साउल्लो (८५) हडहडं अनुरागः। स्वादेरुक्तेऽर्थे ल्लः। हडत् हडदिति हृदयं स्फुरति यत्रेति। तस्य लुक्॥ (८६) माणंसी मायावी मनस्वी च॥ (८७) कोडिल्लो कोडिओ पिशुनः। कुडेर्धातोरिल्लइकौ, उत ओच॥ (८८) अइण्णो आर्तज्ञः। आर्तं जानातीति॥ (८९) गज्जोलो। गञ्जतेः परिभवार्थे देश्याद्धातोर्डोलः॥ (९०) वन्दिणो बन्दी। स्वार्थे णः॥ (९१) तत्तिल्लो तच्छीलः। तत्ती तत्परता, ततोऽस्त्यर्थे लः, लो द्वित्वम्॥ (९२) ऊसुम्भिअं रुद्धगलरोदनम्। उत्पूर्वस्य सुम्भतेरुक्तेऽर्थे डिकः॥ (९३) णिउक्को तूष्णीकः मूकः। निर्मुक्तः। मस्य लुक्, दैवादिपाठाद् द्वित्वं च॥ (९४) बंहलो अपस्मारः। ब्रह्मण उक्तेऽर्थे लः॥ (९५) ठाणिज्जं गौरवम्। स्थानादुक्तेऽर्थे डिज्जः॥ (९६) उवउज्जो उपकारी। उपकृञो डुज्जः॥ (९७) एक्कलो प्रबलः। एकादुक्तेऽर्थे लः॥ (९८) माउसिआ माउच्छा मातृष्वसा। मातुः परस्य स्वसुः सिआच्छौ॥ (९९) महल्लो मुखरः। महतो डल्लः॥ (१००) कुच्छिमई गर्भवती। कुक्षेरस्त्यर्थे मई॥ (१०१) रिञ्छोली ऋक्षालिः नक्षत्रमाला, तद्वत् रिञ्छोली। ऋतो बिन्दुः॥

---

(81) HD. (वप्पिणो) 7.85. (82) HD. 6.89. (83) HD. 7.55. BS इज्जाणा for इज्जण्. (84) HD. 7.55. (85) HD. 8.74. M भगत्; T भटत् for हडत्. T₁ स्फुटति for स्फुरति (86) HD. 6.147. T माणंसिणी माणंसी. (87) HD. 2.40. T कटेर्धातोः for कुडेर्धातोः. (88) Sk आर्तज्ञ. T आवण्णो आपन्नः. (89) HD. (गजिल्लो) 2.83. T गंजालो गुंजालो for गज्जोलो. (90) Sk. T विदिण्णो विदी. (91) HD. 5.3. (92) HD. 1.142. (93) HD. 4.51. (94) ? S बह्मलो; T वह्मलो for बंहलो. (95) HD. 4.5 M ठाणेज्जं; T ठाणेज्जा for ठाणिज्जं. (96) HD. 1.108 KS उपपूर्वात्कृञो for उपकृञो. (97) Sk. (98) HD. (माअलिआ) 6.131. T माउच्चा for °च्छा. T सिआच्चौ for सिआच्छौ. (99) HD. 6.143. M महुल्लो for महल्लो. (100) HD. 2.41. (101) HD. 7.7. T रिच्चोळी for रिञ्छोली.

(१०२) धोरणी पंक्तिः। धारावत् धोरणी। आत ओ, उपमार्थे रणी च ॥ (१०३) पडमा दूष्यपटम्। पटादस्त्यर्थे मा ॥ (१०४) जुअणो युवा। स्वार्थे णः ॥ (१०५) करमरी हठहृता स्त्री बन्दी। करेण मृद्यमानादाकृष्यत इत्यर्थे करोपपदाद् मृद्गातेर्डरी ॥ (१०६) दड्डाळी दववर्त्म दवाग्निमार्गः। दग्धात् डाळी ॥ (१०७) कुडङ्गो कुडओ लतागृहम्। कुटीशब्दादुक्तेऽर्थे डङ्गडकौ ॥ (१०८) कारिमं कृत्रिमम्। कृञो डारिमः ॥ (१०९) जंघालुओ (११०) जंघामओ दूतः। जङ्घायाः शीघ्रेऽर्थे लुअमऔ ॥ (१११) बलामोडी बलात्कारः। बलान्मुच्यते यत्रेति ॥ (११२) चक्कलं परिवर्तुलम्। चक्राल्लः ॥ (११३) बाउल्ली पुत्रिका कुमारीक्रीडोचिता सालभञ्जिका। कुमारीर्व्यापारयतीति व्याप्रेर्डुल्लिः॥ (११४) मत्तवालो मत्तः। स्वार्थे वालः ॥ (११५) वहुणिआ ज्येष्ठभ्रातृवधूः। वध्वा उक्तेऽर्थे णिआ ॥ (११६) जंभणंभणो स्वैरभाषणः। यद्वा तद्वा भणत्यधिकमिति। आदितृतीयाभ्यामनुस्वारः, तलोपश्च ॥ (११७) भाइरो भेज्जलो भेज्जो (११८) ओज्जरो भीरुः। भियः शील इत्यर्थे डाइरडेज्जलडेज्जाः, त्रसेरादेशात् ओज्जाच्च रः ॥ (११९) आहडं सीत्कारः। आहरति आदत्ते प्रियहृदयमिति। आहृञो डः ॥ (१२०) काअपिउला कोकिला। काकः पितृवत्पोषको यस्या इत्यर्थे काकपितृशब्दात् ला ॥ (१२१) मुहलं मुखम्। स्वार्थे लः ॥ (१२२) गत्तडी गायिका। गात्रीशब्दात्स्वार्थे डडी ॥

---

(102) Sk. (103) HD. (पडवा) 6.6. M दूष्यपटकुटी; T दूष्या पटकुटी for दूष्यपटम्. (104) Sk युवन् (105) HD. 2.15. T किरिमरी for करमरी. M मृद्यमाना कृष्यते; T मर्द्यमाना कृष्यते for मृद्यमानादाकृष्यते (106) Sk दग्धाली. (107) HD. 2.31. T कुडुक्को for कुडंगो. (108) HD. 2.27. (109) HD. 3.42. (110) HD. 3.42. (111) HD. 6.92. (112) HD. 3.20. T_1 चग्गळं; T_2 चब्मळं for चक्कलं. (113) HD. 6.92. T बाउळ्ळं. (114) HD. 6.122. (115) HD. (वहुण्णी). 7.41. T वहुणीआ for वहुणिआ. (116) HD. (जंभणवो) 3.44. (117) HD. 6.107. T भाउरो for भाइरो Tom. भेज्जो. (118) HD. (ओज्जल्लो) 1.154. S वंजोलो; T वोजरो for ओज्जरो. (119) HD. (आहुडं). 1.74. KMS शीत्कृतं for सीत्कारः. (120) HD. 2.30. T पुत्रवत् for पितृवत्. (121) HD. 6.134. (122) HD. 2.82.

(१२३) दुद्दोलणा दुग्धापि या दुह्यते गौरित्यत्रार्थे दुग्धात् दोल्णा ॥(१२४) माभाइ अभयम् । भियो भादेशान्मापूर्वात् इः॥ (१२५) तोमरिओ शाक-प्रमार्जकः।तोमरादुक्तेऽर्थे डिकः॥ (१२६) वहुहाडिणी वध्वा उपरि परिणीयते इति वध्वा उक्तेऽर्थे हाडिणी॥ (१२७) रुअरुइआ उत्कलिका । रुहरुहिका-शब्दे हकारयोर्लुक् ॥ (१२८) पिउसिआ पिउच्छा पितृष्वसा। पितुः परस्य स्वसुः सिआच्छौ ॥(१२९) पुप्फी पितुः परस्य स्वसुः फी च॥ (१३०) अणुसूआ आसन्नप्रसवा। अनुसूतेरासन्नप्रसवार्थे डा ॥ (१३१) भच्चो भगिनीसुतः । भगिन्याः सुतेऽर्थे चः, भादेशश्च ॥ (१३२) ओहल्ली अप-सृतिः । सृतेर्हल्ली॥ (१३३) मम्मक्को गर्वः। मर्मणः उक्तेऽर्थे क्कः॥ (१३४) मडप्फरो मधुपरः । उतोऽत्, धो डश्च ॥ इत्यादि ॥ कृष्टानुपसर्गघृष्टवाक्य-विद्वस्वाचस्पतिविष्टरश्रवःप्रचेतःप्रोक्तादीनां क्विबादिप्रत्ययान्तानां च अग्निचि-त्सोमसुदित्यादीनां सुग्लौ सुम्लौ इत्यादीनां च पूर्वविद्वद्भिरप्रयुक्तानां प्रतीतिवैषम्य-करः प्रयोगो न कर्तव्यः । शब्दान्तरैरेव तदर्थोऽभिधेयः । यथा—कृष्टः कुशलः । वाचस्पतिः गुरुः । विष्टरश्रवाः हरिः । इत्यादि ॥ घृष्टशब्दस्य सोपसर्गस्य प्रयोग इष्यत एव । मन्दरअडपरिघट्ठं, मन्दरतटपरिघृष्टम् । तं दिअसणिघट्ठाणं इत्यादि ॥ ३० ॥

अव्ययम् ॥ ३१ ॥

अधिकारोऽयमा पादपरिसमाप्तेः। इतः परं ये वक्ष्यन्ते ते अव्ययसंज्ञका ज्ञातव्याः ॥ ३१ ॥

---

(123) HD. (दुद्दोलणी). 5.46. (124) HD. 6.129. T माहाई for माभाइ. (125) HD. 5.18. B शक्री प्रमार्जकः; T शाकप्रमार्जकः. (126) HD. 7.50. T बहुभासिणी for बहुहाडिणी. (127) HD. 7.8. (128) Sk. पितृष्वसा. (129) HD. (पुप्फा). 6.52. (130) HD. 1.23. T_1 अणे-पिआ; T_2 अणेडिआ for अणुसूआ. (131) Sk ? (132) Sk अपसृतिः. (133) HD. 6.143. (134) HD. (मडप्फरो) 6.120. S मडुपलो for मडप्फरो. MT मदस्फुरः for मधुपरः. KM आर्यैः कविभिः, T पूर्वविद्भिः for पूर्ववि-द्वद्भिः. KMT °वैषम्यपरः for °वैषम्यकरः. KS तंदिअस° for दिअस°. M °णिहट्ठाणं for °णिघट्ठाणं. Before Sūtra. 31 Bp K read अथाव्ययानि. MS अतः परं for इतः परं.

आम अभ्युपगमे ॥ ३२ ॥

आम इत्यव्ययमभ्युपगमे प्रयोज्यम् । आम बहुला वणाली ॥ आम संस्कृतेऽपीति केचित् ॥ ३२ ॥

तं वाक्योपन्यासे ॥ ३३ ॥

तं इत्यव्ययं वाक्योपन्यासे प्रयोज्यम् । तं तिअसबन्दिमोक्खं ॥ ३३ ॥

णइ चेअ चिअ च्च एवार्थे ॥ ३४ ॥

णइ चेअ चिअ च्च इत्येते अवधारणार्थे प्रयोज्याः । गइओ णइ । गदित एव ॥ जं चेअ मुउलणं लोअणाणं अणुबन्धं तं चिअ कामिणीणं । यदेव मुकुलनं लोचनानामनुबन्धं तदेव कामिनीनाम् ॥ दैवादिपाठाद् द्वित्वम् । ते च्चिअ धण्णा ते च्चिअ सुउरिसा । त एव धन्यास्त एव सुपुरुषाः ॥ सो च्च वअरूवेण । स एव वयोरूपेण ॥ सो च्च सीले । स एव शीले ॥ ३४ ॥

हद्धि निर्वेदे ॥ ३५ ॥

हद्धि इति निर्वेदे प्रयोज्यम् । हाधिक्शब्दवत् हद्धि । हद्धि हो धावह । हा धिक् हो धावत ॥ ३५ ॥

दर अर्धेऽल्पे वा ॥ ३६ ॥

दर इत्यव्ययमर्धार्थे ईषदर्थे वा प्रयोज्यम् । दरविअसिअं अर्धमीषद्वा विकसितम् ॥ ३६ ॥

किणो प्रश्ने ॥ ३७ ॥

किणो इत्यव्ययं प्रश्ने वा प्रयोज्यम् । किणो धुवसि, किं धुवसि, किं धूनोषि ॥ ३७ ॥

---

32. KMS अभ्युपगमे आम for the Sūtra. K अभ्युपगमेऽपि for °पगमे. KMS प्रयोक्तव्यम् for प्रयोज्यम् here and elsewhere. 33. B दिअसबन्दिमोक्खं for तिअस°. 35. KM निर्वेदे हद्धि इति for हद्धि इति निर्वेदे. B णो धामह for हो धावह. 37. Before किणो in Com. MS read वेत्यनुवर्तते. MS om. अव्ययं.

मिव पिव विव विअ व व्व इवार्थे ॥ ३८ ॥

मिव पिव विव विअ व व्व इति षडेते इवार्थे वा प्रयोज्याः । कमलं मिव । चन्दणं पिव । हंसो विव । जीवो विअ । उअअस्स व ताविअसीअलस्स, उदकस्येव तापितशीतलस्य । साअरो व्व गहिरो, सागर इव गभीरः । साअरो व्व खारओ, सागर इव क्षारः ॥ पक्षे णीलुप्पलमाला इव, नीलोत्पलमालेव ॥ ३८ ॥

किर इर हिर किलार्थे ॥ ३९ ॥

किर इर हिर इति त्रयः किलार्थे वा प्रयोज्याः । कल्लं किर खलहिअओ । तस्स इर पिअवअस्सो । वाहित्ता हिर देवी ॥ पक्षे । एव्वं किल तेण सिविणए भणिअं ॥ ३९ ॥

अम्हो आश्चर्ये ॥ ४० ॥

आश्चर्ये अम्हो इति प्रयोज्यम् । अम्हो देवस्स गई । अम्हो कह परिणिज्जइ ॥ ४० ॥

अव्भो पश्चात्तापसूचनादुःखसंभाषणापराधानन्दादरखेदविस्मयविषादभये ॥ ४१ ॥

अव्भो इति पश्चात्तापादिषु प्रयोज्यम् । पश्चात्तापे—अव्भो तह तेण कआ अहअं जह कस्स साहेमि ॥ सूचनायाम्—अव्भो दुक्करआरअ । अव्भो अगद्धो ॥ दुःखे—अव्भो दलइ हिअअं ॥ संभाषणे—अव्भो किमिणं ॥ अपराधे—अव्भो हरन्ति हिअअं तह वि व वेसा भवन्ति जुवईणं ॥ आनन्दे—अव्भो सुप्पहाअमिणं ॥ आदरे—अव्भो मह सफलं जीविअं ॥ खेदे—अव्भो ण जाणामि चित्तं ॥ विस्मये—अव्भो किं पि रहस्सं मुणन्ति धुत्ता जणव्भहिआ, किमपि रहस्यं जानन्ति धूर्ता जनाभ्यधिकाः ॥ विषादे—अव्भो णासेन्ति धिइं पुलअं वड्ढेन्ति देन्ति रणरणअं, नाशयन्ति धृतिं पुलकं वर्धयन्ति ददति रणरणकम् ॥ भये—अव्भो गइअम्हि तुमे णवरज्जइ सा ण जूरिहइ, अव्वो गदितास्मि त्वया नैव रज्येत सा न खेद्यते ॥ ४१ ॥

---

38. KMST om. साअरो व्व गहिरो. 40. KMS अम्मो for अम्हो in the Sūtra and Com. 41. KMS अब्बो; T अंबो for अव्भो in the Sūtra and Com.

हुं पृच्छादाननिवारणे ॥ ४२ ॥

हुं इति पृच्छादिषु प्रयोज्यम्। पृच्छायाम्—हुं साहसु सब्भावं ॥ दाने—हुं गेण्ह अप्पणो विअ ॥ निवारणे—हुं णिल्लज्ज समोसर ॥ ४२ ॥

वणे निश्चयानुकम्प्यविकल्पे ॥ ४३ ॥

वणे इति निश्चयादौ प्रयोज्यम्। निश्चये—वणे देमि, निश्चयं ददामि॥ विकल्पे—वणे होइ ण होइ, भवति वा न भवति॥ अनुकम्प्ये—होइ दासो वणे ण मुच्चइ, भवति दासोऽनुकम्प्यो न मुच्यते ॥ ४३ ॥

संभावने अइ च ॥ ४४ ॥

अइ इति, चकारात् वणे इति च, संभावने प्रयोज्यम्। अइ दिअर किं ण पेच्छसि। णत्थि वणे जं ण देइ विहिपरिणामो ॥ ४४ ॥

आनन्तर्ये णवरिअ ॥ ४५ ॥

णवरिअ इत्यानन्तर्ये प्रयोज्यम्। णवरिअ से रहुवइणो, अनन्तरमस्य रघुपतेः ॥ ४५ ॥

केवले णवर ॥ ४६ ॥

केवलेऽर्थे णवर इति प्रयोज्यम्। णवर पिआइं चिअ णिव्वडन्ति, केवलं प्रियाण्येव निष्पतन्ति पृथग्भवन्ति ॥ केचित्तु 'केवलानन्तर्ययोर्णवर-णवरिअ' इत्येकमेव सूत्रमाहुः। तन्मते उभावप्युभयार्थौ ॥ ४६ ॥

भन्द ग्रहणार्थे ॥ ४७ ॥

भन्द इति ग्रहणार्थे प्रयोज्यम्। भन्द ओलोएसु मं। गृहाणेत्यर्थः॥४७॥

भन्दि विकल्पविषादसत्यनिश्चयपश्चात्तापेषु च ॥ ४८ ॥

भन्दि इति विकल्पादिषु ग्रहणार्थे च प्रयोज्यम्। विकल्पे—भन्दि भोज्ज एत्ताहे, भवेदिदानीम् ॥ विषादे—भन्दि चरणे तओ संमाणिओ, चरणौ ततः संमानितौ ॥ सत्ये—भन्दि तुह भणिमो ॥ निश्चये—सासिज्जइ भन्दि तुह कज्जे ॥ पश्चात्तापे—भन्दि सहेहि धरणि ॥ ग्रहणार्थे—भन्दि आलोएसु मं ॥ ४८ ॥

---

42. T भुं for हुं. 47. M हंद for भन्द in the Sūtra and Com. 48. K भंदि तुज्झ for भोज्ज.

संभाषणरतिकलहे रे अरे ॥ ४९ ॥

संभाषणरतिकलहयोर्यथासंख्यं रे अरे इत्येतौ प्रयोज्यौ। संभाषणे—रे रे हिअअ मडअसरिसा॥ रतिकलहे—अरे बहुवल्लह मए समं मा करेसु उवहासं॥ ४९॥

हरे क्षेपे च ॥ ५० ॥

क्षेपे चकारात्संभाषणरतिकलहयोर्यथासंख्यं हरे इति प्रयोज्यम्। क्षेपे—हरे णिल्लज्ज॥ संभाषणे—हरे पुरिसा॥ रतिकलहे—हरे बहुवल्लह॥ ५०॥

धू कुत्सायाम् ॥ ५१ ॥

कुत्सायां धू इति प्रयोज्यम्। धू णिल्लज्जो लोओ॥ ५१॥

ऊ गर्हाविस्मयसूचनाक्षेपे ॥ ५२ ॥

गर्हादिषु ऊ इति प्रयोज्यम्। गर्हायाम्—ऊ णिल्लज्ज। विस्मये—ऊ कहं मुणिआ अहं॥ सूचने—ऊ केण ण विण्णाअं॥ प्रक्रान्तवाक्यस्य विपर्यासशङ्कया विनिवर्तनलक्षण आक्षेपः। तत्र—ऊ किं मए भणिअं॥५२॥

पुणरुत्तं कृतकरणे ॥ ५३ ॥

पुणरुत्तं इति कृतकरणे प्रयोज्यम्। अइ सुव्वइ पंसुलि णीसहेहिं अङ्गेहिं पुणरुत्तं, अयि स्वपिषि पांसुले निःसहैरङ्गैः कृतकरणम्॥ ५३॥

हु खु निश्चयविस्मयवितर्के ॥ ५४ ॥

हु खु इत्येतौ निश्चयादिषु प्रयोज्यौ। निश्चये—तं पि हु अच्छिण्णसिरं, तं खु सिरीऍ रहस्सं॥ विस्मये—को खु एसो सहाससिरो॥ वितर्क ऊहः संशयो वा। ऊहे—न हु नवरसंगहिआ एअं खु हसइ॥ संशये—जलधरो खु धूमो खु॥ संभावने चेष्यते—तरिउं ण हु णवर इमं। एअं खु तुमं हसइ॥ बहुलाधिकारादनुस्वारात्परो हु न प्रयोक्तव्यः॥ ५४॥

---

49. BT मवमासि for उवहासं. 51. KS धु for धू in the Sūtra and Com. 53. K सुव्रते पांसुले for स्वपिषि पांसुले.

णवि वैपरीत्ये ॥ ५५ ॥

णवि इति वैपरीत्ये प्रयोज्यम् । णवि लोअणो ॥ ५५ ॥

वेव्वे विषादभयवारणे ॥ ५६ ॥

वेव्वे इति विषादादौ प्रयोज्यम् । वि षा दे—उल्लाविरीइ वेव्वेत्ति तीएँ भणिअं ण विम्हरिमो । किमुल्लापयन्त्या उत खिद्यमानया त्वया वेव्वे इति भणितं न विस्मरामः ॥ भ ये—वेव्वे पलाइदं तेण ॥ वा र णे—उल्लाविरीइ वि तुमं वेव्वे त्ति मयच्छि किं णेअं ॥ उल्लाविरीइ इति स्वमायातम् ॥ ५६ ॥

आमन्त्रणे वेव्वे च ॥ ५७ ॥

वेव्वे इति चामन्त्रणे प्रयोज्यम् । वेव्वे गोले । वेव्वे मुरन्दले वहसि पाणिअं ॥ ५७ ॥

वा सख्या मामि हला हले ॥ ५८ ॥

आमन्त्रण इति वर्तते । सख्या आमन्त्रणेऽर्थे मामि हला हले इति प्रयोज्याः । मामि सरिसक्खराण वि । पणवह माणस्स हला । हला सउन्दले । हले हआसे ॥ पक्षे । सहि एरिस च्चिअ गई ॥ ५८ ॥

दे संमुखीकरणे च ॥ ५९ ॥

संमुखीकरणे सख्या आमन्त्रणे च दे इति प्रयोज्यम् । दे पसिअ णिअत्तसु सुन्दरि, यावत्प्रसीद निवर्तस्व सुन्दरि । दे सहि ॥ ५९ ॥

ओ पश्चात्तापसूचने ॥ ६० ॥

पश्चात्तापे सूचनायां च ओ इति प्रयोज्यम् । पश्चात्तापे—ओ पच्चाअन्तिआए ॥ सूचनायाम्—ओ अविणयतत्तिल्लो ॥ परिकल्पार्थे उतादेशेन ओकारेणैव सिद्धम् । ओ विरएमि णहअले ॥ ६० ॥

---

55. M भाअणो for लोअणो. 56. B बेव्वे; M बेंबे for वेव्वे in the Sūtra and Com. M om. उल्लाविरीइ इति स्वप्नायातम्. 57. T आमंत्रणेषु in the Sūtra. B बेव्वे; T बव्वे for वेव्वे. BT बेव्वे मुकुरं रेहसि पाणी झीणा (?) 58. BT सरिसक्खराणि; M सहि सक्खिराण वि for सरिसक्खराण वि. BT माणं सहला for माणस्स हला. 59. M आमन्त्रणकरणे for °मन्त्रणे. BT णिवत्तइ. T om. दे सहि. 60. M विकल्पार्थे for परिकल्पार्थे.

अण णाइं नञर्थे ॥ ६१ ॥

नञर्थे अण णाइं इत्येतौ प्रयोज्यौ । अणचिन्तिअं मुणन्ति, अचिन्तितं जानन्ति । णाइं करेमि रोसं, न करोमि रोषम् ॥ ६१ ॥

निश्चयनिर्धारणे वले ॥ ६२ ॥

निश्चये निर्धारणे च वले इति प्रयोज्यम् । निश्चये—वले सीहो, सिंह एवायम् ॥ निर्धारणे—वले पुरिसो धणंजओ खत्तिआणं, पुरुषो धनंजय एव क्षत्रियाणाम् ॥ ६२ ॥

मणे विमर्शे ॥ ६३ ॥

विमर्शे मणे इति प्रयोक्तव्यम् । मणे सूरो, किंस्वित्सूर्यः अन्ये मन्ये इत्यर्थमपीच्छन्ति ॥ ६३ ॥

माइं मार्थे ॥ ६४ ॥

माइं इति मार्थे प्रयोक्तव्यम् । माइं काहीअ रोसं, मा कार्षीद् रोषम् ॥ ६४ ॥

अलाहि निवारणे ॥ ६५ ॥

अलाहीति निवारणे प्रयोज्यम् । अलाहि विसाएण, अलं विषादेन ॥ ६५ ॥

लक्षणे जेण तेण ॥ ६६ ॥

लक्षणे जेण तेण इत्येतौ प्रयोज्यौ । भमररुअं जेण कमलवणं । भमररुअं तेण कमलवणं ॥ ६६ ॥

त्वोदवापोताः ॥ ६७ ॥

अव अप इत्येतावुपसर्गौ उत इति विकल्पार्थो निपातश्च ओ इति तु प्रयोक्तव्याः । ओआरो अवतारः अपकारो वा । ओ विरएमि णहत्थले, उत विरचयामि नभःस्थले । पक्षे अवआरो इत्यादि ॥ ६७ ॥

---

63. BT इत्थमपीच्छन्त्यन्ये for अन्ये मन्ये इत्यर्थमपीच्छन्ति. 64. B माइ; T माउ for माइं in the Sūtra and Com. 65. KM अलाहि किं वाइएण लोहेण, अलं किं वाचिकेन लोभेन for अलाहि विसाएण,अलं विषादेन. 67. T अवकारः for अवतारः. KMT णहअले for णहत्थले.

उ ओ उपेः ॥ ६८ ॥

उप इत्युपसर्गः उ ओ इति द्विधा प्रयोक्तव्यः । उआरो ओआरो उपकारः ॥ ६८ ॥

प्रत्येकमः पडिएक्कं पाडिक्कं ॥ ६९ ॥

प्रत्येकमित्यस्यार्थे पाडिएक्कं पाडिक्कं इति तु प्रयोक्तव्यम् । पाडिएक्कं । पाडिक्कं ॥ पक्षे पच्चेअं ॥ ६९ ॥

स्वयमोऽर्थे अप्पणा ॥ ७० ॥

स्वयमित्यस्यार्थे अप्पणा इति तु प्रयोक्तव्यम् । विसअं विअसन्ति अप्पणा कमलसरा ॥ पक्षे । सअं च्चिअ मुणसि करणिज्जं, स्वयमेव जानासि करणीयम् ॥ ७० ॥

एक्कसरिअं झटिति संप्रति ॥ ७१ ॥

झटित्यर्थे संप्रत्यर्थे च एक्कसरिअं इति तु प्रयोज्यम् । एक्कसरिअं झटिति संप्रति वा ॥ पक्षे । झत्ति । संपइ ॥ ७१ ॥

इहरा इतरथा ॥ ७२ ॥

इहरा इति इतरथार्थे प्रयोज्यम् । इहरा नीसामन्नेहिं । पक्षे । इअरहा ॥ ॥ ७२ ॥

मुधा मोरउल्ला ॥ ७३ ॥

मुधार्थे मोरउल्ला इति तु प्रयोज्यम् । मोरउल्ला ॥ पक्षे मुहा ॥ ७३ ॥

अयि ऐ ॥ ७४ ॥

अयि इत्यर्थे ऐ इति तु प्रयोज्यम् । ऐ बीहेइ । ऐ उम्मत्तिए ॥ अत एव वचनादैकारस्यापि प्राकृते प्रयोगः ॥ ७४ ॥

---

69. पडिएक्कं for पाडिक्कं in the Sūtra and Com. 70. M स्वयं अप्पणो; T स्वयमप्पणा for the Sūtra. 72. BT णिसामतेहिं for नीसामन्नेहिं. 74. K बीहेमि for बीहेइ.

उअ पश्य ॥ ७५ ॥

पश्य इत्यर्थे उअ इति प्रयोज्यम् । उअ णिच्चलणिप्फन्दा । पक्षे ओअच्छादयः पश्यंत इत्यर्थ ॥ उवह इति च दृश्यते । उवह गोट्ठनउझम्मि ॥७५॥

इजेराः पादपूरणे ॥ ७६ ॥

इ जे र इत्येते पादपूरणे प्रयोज्याः । णअणा इ । अच्छी इ । अण्णेक्क इ । रूवं तु जे गब्भइ । कलमगोवी र ॥ अहो हंहो हा नाम हे इत्यादयः संस्कृतसमत्वेन सिद्धाः ॥ ७६ ॥

प्याद्याः ॥ ७७ ॥

प्यादयो नियतार्थवृत्तयः प्राकृते प्रयोज्याः । पि अपीत्यर्थे ॥ ७७ ॥

इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-

श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ

द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

---

77. MT व्याद्याः for प्याद्याः in the Sûtra. M वि अपीत्यर्थे; T वि अप्यर्थे for पि अपीत्यर्थे. Colophon; BKM om. from °मदर्ह down to श्रीमत्. MT द्वितीयस्याध्यायस्य for द्वितीयाध्यायस्य.

द्वितीयः पादः ॥

वीप्सार्थाच्चदचि सुपो मस्तु ॥ १ ॥

वीप्सार्थात्पदात्परस्य सुपः स्थाने तदचि तस्य वीप्सार्थस्य संबन्धिन्यचि परे मो वा भवति । एकैकम् एक्कमेक्कं । एकैकेन एक्कमेक्केण । अङ्गे अङ्गे अङ्ग-मङ्गम्मि ॥ पक्षे । एक्केक्कं इत्यादि ॥ १ ॥

अमः ॥ २ ॥

सुप इत्यनुवर्तते । नाम्नः परस्य सुपः संबन्धिनोऽमः द्वितीयैकवचनस्य स्थाने मकारो भवति । वच्छं । मालं । गिरिं । गोरिं । गामणिं । तरुं । वहुं ॥ २ ॥

श्लुग्जश्शसोः ॥ ३ ॥

नाम्नः परयोर्जस् शस् इत्येनयोर्लुग्भवति । शित्त्वात्पूर्वस्याचो दीर्घः । वच्छा । माला । गिरी । गोरी । गामणी । तरू । वहू चिट्ठन्ति पेच्छ वा ॥ ॥ ३ ॥

णशामः ॥ ४ ॥

नाम्नः परस्य षष्ठीबहुवचनस्य आमः णश् इत्यादेशो भवति । शित्त्वा-त्पूर्वस्य दीर्घः । वच्छाण । वणाण । मालाण । गङ्गाण । गिरीण । दहीण । बुद्धीण । गामणीण । सुधीण । गोरीण । तरूण । महूण । वहूण ॥ ' क्त्वासु-पोस्तु सुणात् ' [१·१·४३] इति वानुस्वारे वच्छाणं गिरीणं इत्यादि ॥४॥

---

1. M om. वा. KS भवति तु for वा भवति. KM om. एकैकेन. B अग्गे अग्गे अग्गमग्गम्मि for अङ्गे अङ्गे अङ्गमङ्गम्मि. S पक्षे एकमेक इत्यादि for पक्षे एक्केक्कं इत्यादि. 2. K गामिणिं for गामणिं. After वहुं K adds पेच्छ वा; S adds पेच्छ. 3. T om. श्लुक्. in the Sūtra. 4. MS ण for णश् in the Sūtra and Com. S om. आमः. M om. वहूण. KMS om. मालाण गङ्गाण; T om. मालाण. KM om. सुधीण; S बुद्धीण for सुधीण. After वच्छाणं KS add वणाणं गङ्गाणं.

हिं हिँ हि भिसः ॥ ५ ॥

नाम्नः परस्य भिसः सबिन्दुः सानुनासिकः केवलश्च हिर्भवति । वच्छेहिं वच्छेहिँ वच्छेहि । धणेहिं धणेहिँ धणेहि । मालाहिं मालाहिँ मालाहि । गिरीहिं गिरीहिँ गिरीहि । बुद्धीहिं बुद्धीहिँ बुद्धीहि । दहीहिं दहीहिँ दहीहि । गामणीहिं गामणीहिँ गामणीहि । गोरीहिं गोरीहिँ गोरीहि । तरूहिं तरूहिँ तरूहि । घेणूहिं घेणूहिँ घेणूहि । वहूहिं वहूहिँ वहूहि । महूहिं महूहिँ महूहि । इत्यादि ॥ ५ ॥

हिंतोत्तोदोदु ङसिम् ॥ ६ ॥

नाम्नः परो ङसिम् पञ्चमीविभक्तिः हिंतो, द्विरुक्तस्तो, दो, दु इति चतुर आदेशानापद्यते । वच्छाहिंतो 'भिस्भ्यस्सुपि' [२·२·२१] इत्येत्वे वच्छेहिंतो । वच्छत्तो । वच्छादो । वच्छादु । वृक्षात् वृक्षेभ्यो वा ॥ दहीहिंतो दहित्तो । दहीदो । दहीदु ॥ गोरीहिंतो । गोरित्तो । गोरीदो । गोरीदु ॥ तरूहिंतो । तरुत्तो । तरूदो । तरूदु ॥ महूहिंतो । महुत्तो । महूदो । महूदु ॥ घेणूहिंतो । घेणुत्तो । घेणूदो । घेणूदु ॥ दो दु इत्यत्र दकारो भाषान्तरार्थः । तेन शौरसेनीमागध्योः—मलअकेदुदो मलअकेदुदु मलयकेतोः । पैशाच्यां 'तल्तदोः' (३·२·४६) इति तकारार्थम् । गिरीतो ॥ एवं धनमालागिरि-बुद्धिग्रामणीतरुवधूप्रभृतयः ॥ ६ ॥

सुंतो भ्यसः ॥ ७ ॥

पञ्चमीबहुवचनस्य सुंतो इत्यादेशो भवति । वच्छासुंतो वच्छेसुंतो । धणासुंतो धणेसुंतो । मालासुंतो । गिरीसुंतो । दहीसुंतो । बुद्धीसुंतो । गाम-णीसुंतो । इत्यादि ॥ ७ ॥

---

5. KS सानुस्वारः; M अनुस्वारः for सबिन्दुः. KM use the sign for anunāsika here only, M om. घेणूहिं down to इत्यादि. 6. KMST भ्यस्येत्वे for भिस्भ्यस्सुपि इत्येत्वे. KMT वच्छाओ वच्छाउ and similraly for other words. for वच्छादो वच्छादु. T भाषान्तरार्थं for °रार्थः. T om. from पैशाच्यां down to प्रभृतयः. 7. KMT om. मालासुंतो. After गामणीसुंतो KM add गोरीसुंतो तरूसुंतो महूसुंतो वहूसुंतो K वच्छादु for वच्छाउ. K धणादु for धणाउ. K om. गोरीओ गोरित्तो गोरीउ गोरीहिंतो गोरीहि.

दिर्दोत्तोदु ङसौ ॥ ८ ॥

पञ्चम्यादेशेषु दो त्तो दु इत्येषु ङसि पञ्चम्येकवचने च परे पूर्वस्याचो दीर्घो भवति । वच्छाओ वच्छत्तो ॥ 'संयोगे' (१·२·४०) इति दीर्घेऽपि ह्रस्वः, तथापि तद्ग्रहणं भ्यसि एत्वबाधनार्थम् ॥ ङसिनैव सिद्धे दोदुग्रहणमप्येत्वापवादार्थमेव ॥ वच्छाउ वच्छाहिंतो वच्छाहि ॥ धणाओ धणत्तो धणाउ धणाहिंतो धणाहि ॥ गिरीओ गिरित्तो गिरीउ गिरीहिंतो गिरीहि ॥ गोरीओ गोरित्तो गोरीउ गोरीहि ॥ दहीओ दहित्तो दहीउ दहीहिंतो दहीहि ॥ बुद्धीओ बुद्धित्तो बुद्धीउ बुद्धीहिंतो बुद्धीहि ॥ गामणीओ गामणित्तो गामणीउ गामणीहिंतो गामणीहि ॥ तरूओ तरुत्तो तरूउ तरूहिंतो तरूहि ॥ महूओ महुत्तो महूउ महूहिंतो महूहि ॥ धेणूओ धेणुत्तो धेणूउ धेणूहिंतो धेणूहि ॥ वहूओ वहुत्तो वहूउ वहूहिंतो वहूहि ॥ ८ ॥

सोर्लुक् ॥ ९ ॥

नाम्नः परस्य सोः प्रथमैकवचनस्य लुग्भवति । हे देव । हे गङ्गे । हे गोरि । हे लच्छि । हे गामणि । हे वहु ॥ ९ ॥

ङसोऽस्त्रियां सर् ॥ १० ॥

ङसः षष्ठ्येकवचनस्य स इत्यादेशो भवति, अस्त्रियां स्त्रीलिङ्गे न भवति । रित्वाद् द्वित्वम् । वच्छस्स । धणस्स । गिरिस्स । दहिस्स । गामणिस्स । तरुस्स । महुस्स ॥ अस्त्रियामिति किम् । गङ्गाए । गोरीए । धेणूए । वहूए ॥ १० ॥

ङेर्मिर् ॥ ११ ॥

नाम्नः परस्य सप्तम्येकवचनस्यास्त्रियां मिर् इत्यादेशो भवति । रित्वाद् द्वित्वम् । वच्छम्मि । धणम्मि । गिरिम्मि । दहिम्मि । तरुम्मि । महुम्मि ॥ अस्त्रियामित्येव । मालाए । बुद्धीए । धेणूए । वहूए ॥ ११ ॥

---

9. KS हे गङ्गा for हे गङ्गे. S अहो लच्छि for हे लच्छि. 10. M रस्; S सल् for सर् in the Sūtra. Before ङसः in Com. KM read नाम्नः परस्य. M om. धणस्स गिरिस्स. MS om. गोरीए and वहूए. T om. from Sūtra. 11 down to the and fo Com. on Sūtra 22. 11. S ङेर्मिल् for the Sūtra. MS वणम्मि for धणम्मि. MS om. वहूए.

अतो डो विसर्गः ॥ १२ ॥

अकारान्तात्परो विसर्गः डिदोकारो भवति । सर्वतः सव्वओ । पुरतः पुरओ । अग्रतः अग्गओ ॥ एवं सिद्धावस्थापेक्षया । भवतः भवओ । भवन्तः भवन्तो । सन्तः सन्तो । कुतः कुओ ॥ १२ ॥

सोः ॥ १३ ॥

अत इत्यनुवर्तते । अतः परस्य सोः स्थाने डो भवति । वच्छो । देवो ॥ १३ ॥

वैतत्तदः ॥ १४ ॥

अदन्ताभ्यामेतत्तद्भ्यां परस्य सोः डो वा भवति । एसो एस । सो स ॥ १४ ॥

ङसेः श्लुक् ॥ १५ ॥

वेत्यनुवर्तते । अतः परस्य ङसेः श्लुग्वा भवति । शित्वात्पूर्वस्य दीर्घः । वच्छा । धणा ॥ पक्षे । वच्छाहिंतो वच्छत्तो वच्छाओ वच्छाउ वच्छाहि ॥ १५॥

ङेर्डे ॥ १६ ॥

अतः परस्य सप्तम्येकवचनस्य डिदेत्वं वा भवति । वच्छे । धणे ॥ पक्षे । वच्छम्मि । धणम्मि ॥ १६ ॥

ङसिसो हि ॥ १७ ॥

अतः परस्य ङसिसः पञ्चम्या हि इति वा भवति । वच्छाहि । धणाहि ॥ भ्यासि एत्वे । वच्छेहि । धणेहि ॥ पक्षे हिंतोत्तोदोदु इत्येते च ॥ १७ ॥

टो डेणल् ॥ १८ ॥

अतः परस्य टावचनस्य डित एण इत्यादेशो भवति । लित्त्वान्नित्यम् ॥ वच्छेण । धणेण ॥ अनुस्वारे । वच्छेणं । धणेणं ॥ १८ ॥

---

12. M अकारात्परो for अकारान्तात्परो. After अग्गओ M adds मार्गतः मग्गओ. 15. M om. वच्छाहि. 16. KMS ङिवचनस्य for सप्तम्येकवचनस्य. M डित्वं for डिदेत्वं. 18. KS लित्त्वान्न विकल्पः for लित्त्वान्नित्यम्.

दिर्वा भ्यसि ॥ १९ ॥

अत इति पञ्चम्यन्तस्य षष्ठयन्तविभक्तिविपरिणामः । अतो भ्यसादेशे सति दिः दीर्घो वा भवति । वच्छाहिंतो वच्छेहिंतो । वच्छासुंतो वच्छेसुंतो । वच्छाहि वच्छेहि ॥ त्तोदोदुषु दीर्घ एव ॥ १९ ॥

शस्येत् ॥ २० ॥

अतः शसि परे एद्वा भवति । वच्छे वच्छा पेच्छ ॥ २० ॥

भिस्भ्यस्सुपि ॥ २१ ॥

भिस् भ्यस् सुप् इत्येतेषु परेष्वत एत्वं भवति । पृथग्योगान्नित्यम् ॥ भिसि । वच्छेहिं ॥ भ्यसि । वच्छेहिंतो वच्छेसुंतो । वच्छेहि ॥ त्तोदोदुषु दीर्घ एव ॥ सुपि । वच्छेसु ॥ २१ ॥

इदुतोर्दिः ॥ २२ ॥

भिस्भ्यस्सुपि परे इदुतोः दिः दीर्घो भवति । भिसि । गिरीहिं गिरीहि ॥ एवं बुद्धीहिं । तरूहिं । धेणूहिं । महूहिं ॥ भ्यसि । गिरीहिंतो । गिरीसुंतो । गिरीओ । गिरीउ ॥ एवं बुद्धीओ । गामणीओ । तरूओ । महूओ आअअं ॥ सुपि । गिरीसु । दहीसु । गामणीसु । तरूसु ठिअं ॥ क्वचिन्न भवति । दिअभूमिसु दाणजलद्दिआइं, द्विजभूमिषु दानजलार्द्रितानि ॥ इदुतोरिति किम् । वच्छेहि । वच्छेसुंतो । वच्छेसु ॥ २२ ॥

चतुरो वा ॥ २३ ॥

चतुःशब्दस्य उदन्तस्य भिस्भ्यस्सुपि परे दीर्घो वा भवति । चउहि चऊहि । चउहिंतो चऊहिंतो । चउसु चऊसु ॥ २३ ॥

---

19. KS भ्यस्यादेशे परे for भ्यसादेशे सति. 20. MS om. पेच्छ. 21. योगविभागान्नित्यं for पृथग्योगान्नित्यम्. K पक्षे दीर्घोपि; M पक्षे दीर्घः for त्तोदोदुषु दीर्घ एव. 22. KS °सुपि च परे for °सुपि परे. M इत्येतेषु परेषु for परे. After बुद्धीओ KS add दहीओ. After गिरीसु KS add बुद्धीसु. K दाणजलोल्लिआइं; S दोण° for दाणजलद्दिआइं.

पुंसो जसो डउडओ ॥ २४ ॥

इदुत इत्यस्य पञ्चम्यन्तपरिणामः । पुंलिङ्गादिदुतः परस्य जसः अउ अओ इत्येतौ डितौ वा भवतः । अग्गउ अग्गओ । वाअउ वाअओ ॥ पक्षे । अग्गी अग्गिणो । वाऊ वाउणो ॥ पुंसीति किम् । बुद्धीइ । दहीइ ॥ इदुत इत्येव । वच्छा ॥ २४ ॥

डवो उतः ॥ २५ ॥

पुंस इति वर्तते, जस इति च । पुंलिङ्गादुतः परस्य जसः डित् अवो इति वा भवति । वाअवो ॥ पक्षे । वाअओ वाऊ वाउणो ॥ उत इति किम् । वच्छा ॥ पुंस इति किम् । धेणूउ । वहूउ ॥ २५ ॥

णो शसश्च ॥ २६ ॥

योगविभागादिदुतौ गृह्येते । इदुतः परस्य जसः शसश्च णो इत्यादेशो भवति । गिरिणो तरुणो चिट्ठन्ति पेच्छ वा ॥ पक्षे । गिरी । तरू ॥ पुंस इत्येव । बुद्धी । धेणू । दहीइं । महूइं ॥ २६ ॥

नृनपि ङसिङसोः ॥ २७ ॥

पुंलिङ्गे नपुंसकलिङ्गे च वर्तमानादिदुतः परयोर्ङसिङसोर्णो इत्यादेशो वा भवति । गिरिणो तरुणो आगओ विआरो वा ॥ पक्षे ङसि–गिरीओ । तरूओ । दहीओ । महूओ ॥ ङस्–गिरिस्स । तरुस्स । दहिस्स । महुस्स ॥ नृनपीति किम् । बुद्धीए । धेणूए ॥ ङसिङसोरिति किम् । गिद्धा । समिद्धी । दिट्ठं ॥ इदुत इत्येव । कमले । कमलस्स ॥ २७ ॥

टो णा ॥ २८ ॥

पुंनपुंसके वर्तमानादिदुतः परस्य टावचनस्य णा भवति । गिरिणा । दहिणा । गामणिणा । तरुणा । महुणा । खलपुणा ॥ नृनपीत्येव । बुद्धीए । धेणूए ॥ इदुत इत्येव । कमलेण ॥ २८ ॥

---

24. K इत उतः for इदुतः K om. वाअउ वाअओ. KS बुद्धीओ धेणूओ for बुद्धीइ धेणूइ. M om. इदुत इत्येव । वच्छा. 25 M om. the Sūtra and Com. T पुंस इति किं । धेणू । महूइं for धेणूउ वहूउ. 26. T इतौ for इदुतौ. KMS परिगृह्येते for गृह्येते. 27. KMS बुद्धीअ धेणूअ for बुद्धीए धेणूए. 28. M om the Sūtra and Com. T om. the Sūtra. T पुंलिङ्गे नपुंसकलिङ्गे वा for पुंनपुंसके. T उतः for इदुतः.

श्नुगनपि सोः ॥ २९ ॥

इदुतः परस्य सोः शानुबन्धो लुग्भवति । अनपि नपुंसकलिङ्गे न भवति । गिरी । बुद्धी । तरू । धेणू ॥ अनपीति किम् । दहिं । महुं ॥२९॥

मङ्लुगसंबुद्धेर्नपः ॥ ३० ॥

इदुत इति निवृत्तम् । नपो नपुंसकलिङ्गात्परस्य सोर्मकारो ङानुबन्धो लुक् च भवति, असंबुद्धेः आमन्त्रणार्थस्य न भवति । वणं । दहिं । महुं ॥ दहि महु इति तु सिद्धावस्थापेक्षया ॥ बहुलाधिकारादकारान्तान्न लुक् ॥३०॥

श्निंशिशिङ् जश्शसोः ॥ ३१ ॥

नप इत्यनुवर्तते । नपुंसकात्परौ जस् शस् इत्येतौ श्नि शिं शिङ् इति त्रीनादेशानापद्येते शानुबन्धान् । शकारो दीर्घार्थः । ङकारः सानुनासिकोच्चारणार्थः । वणाणि वणाइं वणाइँ । गुणाणि गुणाइं गुणाइँ चिट्ठन्ति पेच्छ वा ॥ एवं दहिमहुबिन्द्वादि ॥ नप इत्येव । वच्छा ॥ ३१ ॥

शोशु स्त्रियां तु ॥ ३२ ॥

जश्शसाविति वर्तते । स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नः परौ जश्शसौ ओत्वमुत्वं च शितावापद्येते तु । माळाओ माळाउ । बुद्धीओ बुद्धीउ ॥ एवं महीधेणुवहूप्रभृतयः ॥ पक्षे । माळा । बुद्धी । मही । धेणू । वहू ॥ स्त्रियामिति किम् । वच्छा ॥ जश्शसाविति किम् । माळाए कअं ॥ ३२ ॥

आदीतः सोश्च ॥ ३३ ॥

स्त्रियामित्यनुवर्तते । स्त्रियामीकारान्तान्नाम्नः परस्य सोश्चकाराज्जश्शसोश्च आत्वं तु भवति । एसा हसन्तीआ ॥ जस् शस् । गोरीआ रोहन्ति पेच्छ वा ॥ पक्षे । हसन्तीओ । गोरीओ ॥ ३३ ॥

---

29. K नपुंसके for नपुंसकलिङ्गे. 30. After वणं K adds दहिं दहि मुहुं मुहु. S सणं for वणं. 31. KMS त्रीनादेशान्शानुबंधानापद्यते for त्रीनादेशानापद्यते शानुबन्धान्. 32. MS जस् शस् इति वर्तते for जश्शसाविति वर्तते. M om. तु in Com. MS जश्शसाविति किं for जश्शसाविति किम् 33. KM गोरिआ रेहंति (चिट्ठंति) for गोरीआ रोहन्ति. T रोभंति for रोहन्ति.

ङसेः अआइशे ॥ ३४ ॥

स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नः परस्य ङसेः अ आ इ ए इति चत्वार आदेशाः शितो भवन्ति तु । मालाअ मालाइ मालाए । गोरीअ गोरीआ गोरीइ गोरीए । एवं घेणू । वहू ॥ पक्षे । मालाहिंतो । मालत्तो । मालाओ । मालाउ ॥ एवं बुद्धीहिंतो इत्यादि ॥ ३४ ॥

टाङिङसाम् ॥ ३५ ॥

शशाशिशे इत्यनुवर्तते । स्त्रियां नाम्नः परेषां टा ङि ङस् इत्येतेषां स्थाने अ आ इ ए इत्येते आदेशाः शितो भवन्ति । योगविभागान्नित्यम् । जाआअ जाआइ जाआए कअं ठिअं मुहं वा ॥ कप्रत्यये । जाइआअ जाइआइ जाइआए । बुद्धिआअ बुद्धिआआ बुद्धिआइ बुद्धिआए ॥ कप्रत्ययाभावे । बुद्धीअ बुद्धीआ बुद्धीइ बुद्धीए कअं ठिअं वअणं वा ॥ स्त्रियामिति किम् । वच्छेण । वच्छम्मि । वच्छस्स ॥ ३५ ॥

नातः शा ॥ ३६ ॥

स्त्रियां वर्तमानानां नाम्नः परेषां टा ङि ङस् इत्येतेषां प्राप्तः शा इति शित् आकारः आकारान्तान्न भवति । मालाअ मालाइ मालाए कअं ठिअं मुहं वा ॥ ३६ ॥

पुंसोऽजातेर्ङीब्वा ॥ ३७ ॥

अजातिवाचिनः पुंलिङ्गात् स्त्रियां वर्तमानात् ङीप्रत्ययो वा भवति । नीली नीला । काली काला । हसमाणी हसमाणा । सुप्पणही सुप्पणहा । इमीए इमाए । इमीणं इमाणं । एईए एआए । एईणं एआणं ॥ अजातेरिति किम् । अआअ अआइ अआए ॥ अप्राप्ते विभाषाविधिरयम् । तेन गौरी कुमारी इत्यादौ संस्कृतवदेव नित्यम् ॥ ३७ ॥

---

34. T सालाअ etc. for मालाअ. All Mss. add मालाआ (T साळाआ) after मालाअ against the Sūtra नातः शा below. 35. After जाआअ all Mss. add जाआआ; After जाइआअ all Mss. add जाइआआ against 2.2.36 below. K वअणं व for वअणं वा. After वअणं वा M adds एवं बहूअ इत्यादि. M स्त्रियामित्येव for स्त्रियामिति किम्. 36. KMS मुहं वा for मुहं वा. 37. B सहमाणी सहमाणा; T भसमाणा भसमाणा for हसमाणी हसमाणा. BKM अआआ for अआअ. T अआ अजा । एलआ एलका for अआअ ...अआए. K अप्राप्ते विधिरयं for अप्राप्ते विभाषाविधिरयम्.

ङीप्प्रत्यये ॥ ३८ ॥

वेत्यनुवर्तते । 'टिड्ढाणञ्' [पा० ४·१·१५] इत्यादिसूत्रेण प्रत्ययनिमित्तो यो ङीप्प्रत्ययो विहितः स स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नो वा भवति । साहणी साधनी । कुरुअरी ॥ पक्षे विकल्पसामर्थ्यादेव टाप् । साहणा । कुरुअरा ॥ ३८ ॥

हरिद्राच्छाये ॥ ३९ ॥

अनयोः ङीप् वा भवति । हलद्दी हलद्दा । छाही छाहा ॥ ३९ ॥

किंयत्तदोऽस्वमामि सुपि ॥ ४० ॥

सु-अम्-आम् वर्जिते सुपि परे किंयत्तद्भ्यः स्त्रियां ङीप् वा भवति । कीओ काओ । कीए काए । कीसु कासु ॥ जीओ जाओ । जीए जाए । जीसु जासु ॥ तीओ ताओ । तीए ताए । तीसु तासु ॥ अस्वमामीति किम् । का । जा । सा ॥ कं । जं । तं ॥ काणं । जाणं । ताणं ॥४०॥

स्वसृगात् डाल् ॥ ४१ ॥

स्वस्रादेः स्त्रियां वर्तमानात् आप्रत्ययो डिद्भवति । लित्वान्नित्यम् । ससा । णणन्दा । दुहिआ । दुहिआहि । दुहिआसु ॥ ४१ ॥

डोश्लुकौ तु संबुद्धेः ॥ ४२ ॥

'सोः' [२·२·१३] इति यः प्राप्तो डो, यश्च 'श्लुगनपि सोः' [२·२·२९] इति श्लुग् विहितः, तौ संबुद्धेरामन्त्रणार्थस्य सोः तु भवतः । हे देव, हे देवो ॥ हे अज्ज, हे अज्जो ॥ श्लुक् । हे हरि, हे हरी । हे गुरु, हे गुरू । हे बुद्धि, हे बुद्धी । हे वहु, वहू ॥ जाइविसुद्धेण पहू, जातिविशुद्धेन प्रभो ॥ संबुद्धेरिति किम् । दे कासवा । दे गोअरा । रे रे पिलिआ । रे रे णिग्घणिआ ॥ ४२ ॥

---

38. Bp om. ङीप् in the Sūtra; T ङी for ङीप् in the Sūtra. ST अणादिसूत्रेण for टिड्ढाणञ् इत्यादिसूत्रेण. B सहमाणी for साहणी. K कुलरी for कुरुअरी. KMST कुरुचरा for कुरुअरा. 39. KS हरिद्राच्छाया for the Sūtra. KS ङि for ङीप्. 42. KS हे कासवा, हे गोअमा, रे रे पिप्पला; T हे गे अम्मा, रे रे पञ्चळ-आ, रे रे णिग्घणिआ for दे ...ग्घणिआ.

ऋदन्ताड्डः ॥ ४३ ॥

संबुद्धेरित्यनुवर्तते । ऋदन्तान्नाम्नः परस्य संबुद्धेः डित् अत्वं तु भवति ॥ हे पितः हे पिअ । हे दातः हे दाअ ॥ ४३ ॥

नाम्नि डरम् ॥ ४४ ॥

नाम्नि संज्ञायां ऋदन्तात्परस्य संबुद्धेर्डित् अरं इति तु भवति ॥ हे पितः हे पिअरं । पक्षे हे पिअ ॥ नाम्नीति किम् । हे कत्तार ॥ ४४ ॥

टापो डे ॥ ४५ ॥

टाबन्तात्परस्य संबुद्धेर्डित् एत्वं तु भवति । हे माले । हे अज्जे ॥ पक्षे । हे माला । हे अज्जू इत्यादि ॥ टाप इति किम् । हे पिउच्छा । हे माउच्छा ॥ बहुळाधिकारात्कचिदोत्वमपि । अम्मो भणामि भणिए ॥ ४५ ॥

ह्रस्वलीदूतः ॥ ४६ ॥

संबुद्धिनिमित्तयोरीदूतोर्ह्रस्वो लिद्भवति । हे णइ । हे लच्छि । हे वहु ॥ ४६ ॥

क्विपः ॥ ४७ ॥

संबुद्धेरिति निवृत्तम् । क्विबन्तयोरीदूतोर्ह्रस्वो भवति । गामणिणा । खलपुणा । गामणिसुंतो । खलपुहिं ॥ ४७ ॥

---

43. M om. the Sūtra and Com. KS हे पिअ हे पिअरं हे मातः हे माअ हे माअरं for हे पिअ. 44. M om. the Sūtra and Com. K हे पिअरं हे पिअ for हे पिअरं. T पिदरं for पिअरं. 45. M om. the Sūtra and Com. After हे अज्जे K adds हे पुत्तिए. K हे मालि for हे माला. S om. हे अज्जू. T क्वचिदेत्वमपि । अत्ते भणामि भणिए for क्वचिदोत्वमपि अम्मो भणामि भणिए. 46. M om. the Sūtra and Com. 47, K क्विबः for the Sūtra. K खलपुण. KT गामणिमुओ for गामणिसुंतो. K खलपुमुहं; T खळपुअहं for खलपुहिं.

उदृतां त्वस्वमामि ॥ ४८ ॥

ऋदन्तानामुत्वं भवति तु, अस्वमामि सु-अम्-आम्-वर्जिते, अर्थात्सुपि परे ॥ जसि । भत्तू भत्तुणो भत्तओ भत्तउ । पक्षे भत्तारा ॥ शसि । भत्तू भत्तुणो । पक्षे भत्तारा ॥ टा । भत्तुणा भत्तारेण ॥ भिस् । भत्तूहिं । पक्षे भत्तारेहिं ॥ ङसि । भत्तूहिंतो भत्तुत्तो भत्तूओ भत्तूउ भत्तुणो । पक्षे भत्ताराहिंतो भत्तारत्तो भत्ताराउ भत्तारा भत्ताराहि ॥ ङस् । भत्तुणो भत्तुस्स ॥ पक्षे भत्तारस्स ॥ ङौ । भत्तुम्मि । पक्षे भत्तारे ॥ सुप् । भत्तूसु । पक्षे भत्तारेसु ॥ बहुवचनं व्याप्त्यर्थम्, तेन यथादर्शनं नाम्नि उत्वं वा भवति ॥ जश्शस्ङसिङस्सु । पिउणो । जामाउणो ॥ टा । भाउणा ॥ भिस् । पिऊहिं ॥ सुप् । पिऊसु ॥ पक्षे पिआर इत्यादि ॥ अस्वमामीति किम् । सु । पिआ ॥ अम् । पिअरं ॥ आम् । पिअराणं ॥ ४८ ॥

आरः सुपि ॥ ४९ ॥

ऋदन्तस्य सुपि परे आर इत्यादेशो वा भवति । भत्तारो । भत्तारा । भत्तारं । भत्तारे । भत्तारेणं । भत्तारेहिं ॥ एवमन्यत्राप्युदाहार्यम् ॥ लुप्तविभक्त्यपेक्षया भत्तारविहिअं ॥ ४९ ॥

मातुरा अरा ॥ ५० ॥

मातृशब्दस्य आ अरा इत्यादेशौ भवतः । माआ माअरा । माआओ माअराओ । माआइ माअराइ । माअं माअरं ॥ बहुलाधिकाराज्जनन्यर्थस्य आ, देवतार्थस्य अरा । माआए कुच्छिआए । णमो माअराणं ॥ 'इदुन्मातुः' [१·२·८२] इत्युत्वे माउणि । 'उदृतां त्वस्वमामि' [२·२·४८] इत्युत्वे तु माऊण माऊए ॥ समत्तिअं वन्दे ॥ सुपीत्येव । माइदेवो । माइगणो ॥५०॥

---

48. KST om. ङौ भत्तुम्मि। पक्षे भत्तारे. 50. After मातृशब्दस्य KS add ऋतः सुपि परे. K om. माआइ माअराइ. K माईण for माऊण. B समेत्तिअं; T समत्तअं for समत्तिअं.

संज्ञायामरः ॥ ५१ ॥

ऋदन्तस्य संज्ञायां सुपि परे अर इत्यादेशो भवति। पिअरा पिअरो। पिअरं पिअरे। पिअरेण पिअरेहिं॥ जामाअरो जामाअरा। जामाअरं जामाअरे। जामाअरेण जामाअरेहिं ॥ ५१ ॥

आ सौ वा ॥ ५२ ॥

ऋदन्तस्य सौ परे आत्वं वा भवति। पिआ। माआ। जामाआ। भाआ। भत्ता। कत्ता॥ पक्षे। पिअरो। माअरो। जामाअरो। भाअरो। भत्तारो। कत्तारो ॥ ५२ ॥

राज्ञः ॥ ५३ ॥

वेत्यनुवर्तते। राजन्शब्दस्य नलोपे सति अन्त्यस्य सौ परे आत्वं वा भवति। राआ। हे राआ॥ पक्षे आणादेशे। राआणो। हे राआणो॥ हे राअं इति शौरसेन्याम् ॥ ५३ ॥

टो णा ॥ ५४ ॥

राज्ञ इत्यनुवर्तते। राजन्शब्दात्परस्य टावचनस्य णा इत्यादेशो वा भवति। राइणा रण्णा॥ पक्षे राएण कअं॥ ५४ ॥

जश्शस्ङसिङसां णोश् ॥ ५५ ॥

राज्ञः परेषां जस् जस् ङसि ङस् इत्येतेषां णो इत्यादेशः शिद्भवति वा। जस्–राआणो चिट्ठन्ति। पक्षे राआ॥ शस्–राआणो पेच्छ। पक्षे राआ॥ ङसि–राइणो रण्णो आअओ। पक्षे राआहिंतो राअत्तो राआओ राउआ राआ राआहिं॥ ङस्–राइणो रण्णो धणं। पक्षे राअस्स॥ ५५ ॥

---

51. M संज्ञायां रः for the Sūtra. 52. M सौ वा for the Sūtra. KM om. भत्तारो. 53. K om. वेत्यनुवर्तते. S om. इति. KMT om. हे राआणो. 54. °शब्दात्परस्य for °शब्दस्य. K राआणो for राइणा. M om. पक्षे. 55. T राइत्तो for राअत्तो. BM राणो; S राआणो for राइणो

णोणाङिण्विदना जः ॥ ५६ ॥

राजन्शब्दसंबन्धिनो जकारस्य अना सहितस्य णो णा इत्यादेशयोः **द्विवचने च परे इकारो वा भवति। राइणो चिट्ठन्ति पेच्छ आअओ घणं वा। राइणा कअं। राइम्मि ठिअं॥ पक्षे। राआणो। रण्णा। राएण। राअम्मि॥** ॥ ५६ ॥

इणममामा ॥ ५७॥

अना ज इत्यनुवर्तते। राजन्शब्दसंबन्धिनो जकारस्य अना सहितस्य अम् आम् इत्येताभ्यां सह इणं इत्यादेशो वा भवति। राइणं पेच्छ घणं वा। पक्षे। राअं। राआणं ॥ ५७ ॥

भिस्भ्यसाम्सुप्स्वीत् ॥ ५८ ॥

राजन्शब्दस्य अना सहितस्य जस्य भिस् भ्यस् आम् सुप् इत्येतेषु परेषु ईकारो वा भवति। भिस्–राईहिं॥ भ्यस्–राईहिंतो। राईसुंतो। राईहि॥ आम्–राईणं॥ सुप्–राईसु॥ पक्षे। राएहिं इत्यादि ॥ ५८ ॥

ङस्ङसिटां णोणोर्ङण् ॥ ५९ ॥

राजन्शब्दस्य अना सहितस्य जस्य ङस्ङसिटावचनानां यौ णो णा इत्यादेशौ तयोः परयोः डित् अण् इत्यादेशो वा भवति। रण्णो राइणो घणं आअओ वा। रण्णा राइणा कअं॥ ङस्ङसिटामिति किम्। राआणो चिट्ठन्ति पेच्छ वा॥ णोणोरिति किम्। राअस्स। राअओ। राएण॥ ५९ ॥

---

56. T णो णा इत्यादिषु द्विवचनपरे for णो णा इत्यादेशयोः द्विवचने च परे. T om. घणं. 58. M जस्यना सहितस्य for अना सहितस्य जस्य. T राआहिं for राएहिं. 59. T om. जस्य. KMT कअं for घणं.

पुंस्याणो राजवच्चानः ॥ ६० ॥

पुंलिङ्गे वर्तमानस्य अन् इत्यस्य स्थाने आण इत्यादेशो वा भवति। पक्षे यथादर्शनं राजवत्कार्यं च भवति। आणादेशे च 'सोः' [२·२·१३] इत्यादयः प्रवर्तन्ते। पक्षे तु राजवत् 'टो णा' [२·२·५४], 'जश्शस्ङसिङसां णोश्' [२·२·५५], 'इणममामा' [२·२·५७] इति प्रवर्तन्ते। अप्पाणो अप्पाणा। अप्पाणं अप्पाणे। अप्पाणेण अप्पाणेहिं। अप्पाणाओ अप्पाणासुंतो। अप्पाणस्स अप्पाणाणं। अप्पाणम्मि अप्पाणेसु ॥ पक्षे राजवत्। अप्पा अप्पो। दे अप्पा दे अप्पो। अप्पाणो चिट्ठन्ति पेच्छ वा। अप्पणा अप्पेहिं। अप्पाहिंतो अप्पत्तो अप्पाओ अप्पाउ अप्पा अप्पाहि अप्पासुंतो आअओ। अप्पाणो अप्पाणं। अप्पम्मि अप्पेसु ॥ राआणो राआणा। राआणं राआणे। राआणेण राआणाहिं। राआणासुंतो राआणाहिंतो। राआणस्स राआणाणं। राआणम्मि राआणेसु ॥ पक्षे राआ इत्यादि ॥ एवं युवन्-जुवाणो जुवाणा जुवा ॥ ब्रह्मन्–बम्हाणो बम्हा ॥ अध्वन्–अद्धाणो अद्धा ॥ उक्षन्–उच्छाणो उच्छा ॥ ग्रावन्–गावाणो गावा ॥ पूषन्–पूसाणो पूसा ॥ तक्षन्–तक्खाणो तक्खा ॥ मूर्धन्–मुद्धाणो मुद्धा ॥ श्वन्–साणो सा। सुकर्मन्-सुकम्माणो सुकम्मा। पेच्छइ स कहं सुकम्माणो, पश्यति स कथं सुकर्मा ॥ पुंसीति किम्। शर्मन्–सम्मं ॥ ६० ॥

टो वात्मनो णिआ णइआ ॥ ६१ ॥

आत्मनः परस्य टावचनस्य णिआ णइआ इत्यादेशौ वा भवतः। पुनर्वाग्रहणादुत्तरत्र न विकल्पः ॥ अप्पणिआ अप्पणइआ ॥ पक्षे अप्पाणेण अप्पेण ॥ ६१ ॥

---

60. KST om. युवन्. BM बंहाणो बंहा for बम्हाणो बम्हा. T om. बम्हाणो बम्हा. 61. T परस्यैव for परस्य.

सर्वादेर्जसोऽतो डे ॥ ६२ ॥

सर्वादेरदन्तात्परस्य जस एत्वं डिद्भवति । सव्वे । अण्णे । जे । ते । के । इअरे । अवरे । एए ॥ अत इति किम् । सव्वाओ ॥ ६२ ॥

ङेस्त्थस्सिम्मि ॥ ६३ ॥

सर्वादेरित्यनुवर्तते, अत इति च । सर्वादेरदन्तात्परस्य ङेः स्थाने त्थ स्सि म्मि इति त्रय आदेशा भवन्ति । सव्वत्थ सव्वस्सि सव्वम्मि । अण्णत्थ अण्णस्सि अण्णम्मि ॥ एवं सर्वत्र ॥ अत इत्येव । अमुम्मि ॥ ६३ ॥

अनिदमेतदस्तु कियत्तदः स्त्रियां च हिं ॥ ६४ ॥

इदमेतद्वर्जितात्सर्वादेः परस्य ङेः हिं इत्यादेशो भवति तु । किंयत्तद्भ्यः स्त्रियामपि । सव्वहिं । अण्णहिं । जहिं । तहिं । कहिं ॥ पक्षे सव्वत्थ सव्वस्सि सव्वम्मि इत्यादि ॥ स्त्रियां किम् । किंयत्तदः—काहिं । जाहिं । ताहिं ॥ बाहुल्कादेव 'किंयत्तदोऽस्वमामि सुपि' [२·२·४०] इति ङीप् वा भवति । काए कीए इत्यादि ॥ अनिदमेतद इति किम् । इमस्सि । अस्सि ॥ ६४ ॥

आमां डेसिं ॥ ६५ ॥

त्वित्यनुवर्तते । सर्वादेः परस्यामः डित् एसिं इत्यादेशो भवति तु । सव्वेसिं । अण्णेसिं । एसिं । इमेसिं । एएसिं । जेसिं । तेसिं । केसिं ॥ पक्षे । सव्वाणं । अण्णाणं । इत्यादि ॥ आमामिति बहुवचनात्स्त्रीविषयस्यापि ॥ सर्वासाम् सव्वेसिं ॥ एवं अण्णेसिं । जेसिं । तेसिं ॥ ६५ ॥

कितद्भ्यां सश् ॥ ६६ ॥

कितद्भ्यां परस्यामः शित् सकारो वा भवति । कास । तास ॥ पक्षे । केसिं । तेसिं ॥ ६६ ॥

---

62. T ले for डे. T एत्वं लिद्भवति for एत्वं डिद्भवति. 63. T वर्तते for अनुवर्तते. 64 After कीए M adds काए जीए ताए तीए. 65. KM सर्वादेरतः परस्य; T सर्वादेः परेषां for सर्वादेः परस्य. 66. MS शस् for सश्.

किंयत्तद्भ्यो ङस् ॥ ६७ ॥

सश् इत्यनुवर्तते । किंयत्तद्भ्यः परो यो ङस् तस्य सश् इत्यादेशो वा भवति । कास । जास । तास ॥ पक्षे । कस्स । जस्स । तस्स ॥ बहुलाधिकारात् किंयत्तद्भ्यः स्त्रियामपि । कस्याः कास । यस्याः जास । तस्याः तास ॥ पक्षे । काए । जाए । ताए ॥६७॥

ईतः सेसार् ॥ ६८ ॥

ङस् इति वर्तते । ईकारान्तेभ्यः किंयत्तद्भ्यः परस्य ङसः से सार् इति वा भवतः । सार् इत्यस्य रित्त्वाद् द्वित्वम् । कीसे । किस्सा ॥ पक्षे । कीअ । कीआ । कीइ । कीए ॥ जीसे । जिस्सा । जीअ । जीआ । जीइ । जीए ॥ तीसे । तिस्सा । तीअ । तीआ । तीइ । तीए ॥ ६८ ॥

ङिरिआ डाहे डाला काले ॥ ६९ ॥

कालेऽभिधेये किंयतद्भ्यः परो ङिः इआ इत्यादेशं आहे आला इत्येतौ च डितावापद्यते वा । कइआ काहे काला ॥ जइआ जाहे जाला ॥ तइआ ताहे ताला ॥ ताला जाअन्ति गुणा जाला ते सहिअएहि घेप्पन्ति (विषमबाणलीला), तदा जायन्ते गुणाः यदा ते सहृदयैर्गृह्यन्ते ॥ पक्षे । कहिं कत्थ कस्सिं कम्मि इत्यादि ॥ ६९ ॥

म्हा ङसेः ॥ ७० ॥

किंयत्तद्भ्यः परस्य ङसेः म्हा इत्यादेशो भवति तु । कम्हा । जम्हा । तम्हा ॥ पक्षे । काओ । जाओ । ताओ ॥ ७० ॥

किमो डीस डिणो ॥ ७१ ॥

किमः परस्य ङसेः ईस इणो इत्यादेशौ डितौ भवतः । कीस किणो ॥ पक्षे । कम्हा । काओ ॥ ७१ ॥

डो तदस्तु ॥ ७२ ॥

तदः परस्य ङसेः डिदोत्वं तु भवति । तो । तम्हा ॥ ७२ ॥

---

67. After तास KM add वर्ण. 68. M ईकः सेसार्; S ईशः से सात्; T ईतः से सा for the Sūtra. KM परो for परस्य. 72. MT डो तदः for the Sūtra.

इदमेतत्किंयत्तद्भ्यष्टो डिणा ॥ ७३ ॥

एभ्यः सर्वादिभ्योऽदन्तेभ्यः परस्य टावचनस्य इणा इति डित् भवति तु। इमिणा इमेण। एदिणा एदेण। किणा केण। जिणा जेण। तिणा तेण ॥ ७३ ॥

क्वचित्सुपि तदो णः ॥ ७४ ॥

सुपि परे तच्छब्दे णो भवति तु, क्वचिल्लक्ष्यानुसारेण। णं पेच्छ, तं पश्य ॥ स्त्रियामपि। हत्थुण्णामिअमुही भणइ णं तिअडा, हस्तोन्नामितमुखी भणति तां त्रिजटा ॥ णेण भणिअं, तेन भणितम् ॥ णीए तया ॥ णेहिं कअं, तैः कृतम्। णाहि कअं, ताभिः कृतम् ॥ ७४ ॥

त्रतसि च किमो ल्कः ॥ ७५ ॥

सुपीत्यनुवर्तते। किंशब्दस्य त्रतसोः सुपि च परे लित् को भवति। को के। कं के। केण केहिं ॥ त्र—कत्थ कस्सिं ॥ तस्—कत्तो कदो ॥ ७५ ॥

इदम इमः ॥ ७६ ॥

इदमः सुपि परे इम इत्यादेशो भवति। इमो इमे। इमं इमे। इमेण इमेहिं ॥ स्त्रियामपि। इमा ॥ ७६ ॥

पुंसि सुना त्वयं स्त्रियामिमिआ ॥ ७७ ॥

इदमः सुना सहितस्य पुंलिङ्गे अयमिति स्त्रियां इमिआ इति तु भवति। अयं कअकज्जो। इमिआ सण्णिअमाआ ॥ पक्षे। इमो। इमा ॥ ७७ ॥

अत्सुस्सिंहिस्से ॥ ७८ ॥

इदमः सुप् ङि भिस् ङस् इत्येतेषु सु स्सिं हि स्स इत्यादेशेष्वापन्नेषु अत्वं तु भवति। एसु। अस्सिं। एहि। अस्स ॥ पक्षे। इमेसु। इमस्सिं। इमेहिं। इमाहिं। इमस्स ॥ ७८ ॥

---

74. B हत्था णमिअमुही for हत्थुण्णामिअमुही. After तेन भणितम् T adds भणिअं च णाए. 77. KM स्त्रीलिङ्गे for स्त्रियां.

टाससि णः ॥ ७९ ॥

टास् इति तृतीयाविभक्तिः, अस् इति द्वितीयाविभक्तिः, तयोः परयोरिदमः स्थाने ण इत्यादेशो भवति तु । णेण णेहि कअं । णं णे पेच्छ ॥ पक्षे । इमेण इमेहिं । इमं इमे ॥ ७९ ॥

इहेणं ङ्यमः ॥ ८० ॥

ङि अम् इत्याभ्यां सहितस्य इदमः स्थाने इह इणं इत्येतौ क्रमेण तु भवतः । ङि—इह । अम्—इणं ॥ पक्षे । इमस्सिं । इमम्मि । इमं ॥ ८० ॥

न त्थः ॥ ८१ ॥

इदमः परस्य ङिवचनस्य 'ङेस्त्थस्सिम्मि' [२·२·६३] इति प्राप्तः त्थो न भवति । इह । इमस्सिं । इमम्मि ॥ ८१ ॥

क्लीबे स्वमेदमिणमिणमो ॥ ८२ ॥

नपुंसके वर्तमानस्य इदमः सु अम् इत्याभ्यां सहितस्य इदं इणं इणमो इति त्रय आदेशा भवन्ति । इदं इणं इणमो चिट्ठइ पेच्छ वा ॥ ८२ ॥

किं किं ॥ ८३ ॥

क्लीबे, स्वमेति च वर्तते । क्लीबे वर्तमानः किंशब्दः स्वमा सहितः किं इत्येव भवति । किं कुलं । किं भणसि ॥ ८३ ॥

तदिदमेतदां सेसिं तु ङसामा ॥ ८४ ॥

तद् इदम् एतद् इत्येतेषां स्थाने ङस् आम् इत्याभ्यां सह यथासंख्यं से सिं इत्यादेशौ तु भवतः । तद्—से गुणा, तस्य गुणाः तस्या वा ॥ सिं उच्छाहो, तेषामुत्साहः, तासां वा ॥ इदम्—से सीलं, अस्य शीलम्, अस्या वा ॥ सिं गुणा, एषां गुणाः, आसां वा ॥ एतद्—से हिअअं, एतस्य हृदयम्, एतस्या वा ॥ सिं गुणा, एतेषां गुणाः, एतासां वा ॥ पक्षे । तस्स । तेसिं । ताण ॥ इमस्स । इमस्सिं । इमाण ॥ एअस्स । एअस्सिं । एआण ॥ तदेतदोरमा सह से सिं इति आदेशं केचिदिच्छन्ति ॥ ८४ ॥

---

82. KMS नपुंसकलिङ्ग for नपुंसके. T om. चिट्ठइ पेच्छ वा. 83. KMT किमेव भवति for किं इत्येव भवति. KT किं भणासि for किं भणसि. 84. B इत्येषां for इत्येतेषां. KM कश्चिदिच्छति for केचिदिच्छन्ति.

एत्तो एत्ताहे ङसिनतदः ॥ ८५ ॥

त्वित्यनुवर्तते । एतदो ङसिना सह एत्तो एत्ताहे इत्यादेशौ तु भवतः । एत्तो एत्ताहे आगओ ॥ पक्षे । एआहिंतो एअत्तो एआओ एआहि एआउ एआ ॥ ८५ ॥

र्थे डेल् ॥ ८६ ॥

एतदः स्थाने रानुबन्धे थकारे परे डानुबन्धो लानुबन्धश्च एत् भवति । एत्थ ॥ ८६ ॥

एतदो म्मावदितौ वा ॥ ८७ ॥

सप्तम्येकवचनादेशे म्मौ परे एतद एकारस्य अ इ इत्यादेशौ वा भवतः । अअम्मि इअम्मि ॥ पक्षे । एअम्मि ॥ ८७ ॥

सुनैस इणमो इणं ॥ ८८ ॥

एतदः सुना सह एस इणमो इणं इत्यादेशा वा भवन्ति । एस सहाओ च्चिअ ससहरस्स, एष स्वभाव एव शशधरस्य ॥ एस गई, एषा गतिः । सव्वस्स वि एस गई, सर्वस्याप्येषा गतिः ॥ एस सरं, एतत्सरः ॥ इणमो । इणं ॥ पक्षे । एसा । एओ । एअं ॥ ८८ ॥

तस्सौ सोऽक्लीबे तदश्च ॥ ८९ ॥

तदश्चकारादेतदश्च तकारस्य सौ परे सकारो भवति, अक्लीबे अनपुंसके । सो पुरिसो । सा महिला ॥ एसो पिओ । एसा पिआ । एसा मुद्धा ॥ सौ इत्येव । ते, एए चिट्ठन्ति । ताओ, एआओ महिलाओ ॥ अक्लीब इति किम् । तं, एअं वणं ॥ ८९ ॥

---

88. T सरभस्स for ससहरस्स. KMT om. एस गई एषा गतिः; T om. एस सरं एतत्सरः; KMS एस सिरं एतच्छिरः.

सुप्यदसोऽमुः ॥ ९० ॥

अदसः स्थाने सुपि परे अमु इत्यादेशो भवति । अमू पुरिसो । अमुणो पुरिसा । अमुं वणं । अमूइं वणाइं । अमू महिला । अमूओ महिलाओ ॥ टा—अमुणा । अमूहिं ॥ ङसि—अमूहिंतो अमूओ अमूहि अमूउ अमुत्तो ॥ भ्यस्—अमूहिंतो अमूसुंतो ॥ ङस्—अमुणो अमुस्स ॥ आम्—अमूणं ॥ ङि-अमुम्मि ॥ सुप्-अमूसु ॥ ९० ॥

अहद्वा सुना ॥ ९१ ॥

अदसः सुना सह अहदित्यादेशो भवति तु । तकारस्तावन्मात्रदर्शनार्थः, तेन स्त्रियामात्वं न भवति । अह पुरिसो । अह महिला । अह वणं । अह णे हसइ हिअएण मारुअतणओ, असावस्मान् हसति हृदयेन मारुततनयः॥ पक्षे । अमू पुरिसो । अमू महिला । अमुं वणं ॥ ९१ ॥

इआओ म्मौ ॥ ९२ ॥

अदसो ङिवचनादेशे म्मौ परे इअ अअ इत्यादेशौ तु भवतः । इअम्मि। अअम्मि ॥ ९२ ॥

॥ इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसर्वविद्याप्रभाव-

श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ

द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

---

90. KMT om. अमूओ महिलाओ. Colophon : KMS om. from °मदर्ह° down to श्रीमत् T has इति द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः । श्रीत्यागेशाय नमः.

तृतीयः पादः ॥

युष्मत्सुना तुवं तुं तुमं तुह ॥ १ ॥

युष्मच्छब्दः सुना सहितः तुवं तुं तुमं तुह इत्यादेशांश्चतुरः प्राप्नोति। तुवं तुं तुमं तुह दिट्ठो सि ॥ १ ॥

अमा तुमे तुए च ॥ २ ॥

युष्मदित्यनुवर्तते। युष्मच्छब्दोऽमा सह तुमे तुए इत्येतौ, चकारात् तुमादिचतुष्टयं चापद्यते। तुमे। तुए ॥ पक्षे। तुवं तुं तुमं तुह वन्दामि ॥ तं इति तु त्वामित्यस्य सिद्धावस्थायां वलोपे ह्रस्वे च ॥२॥

जसा भे तुब्भे तुय्हे उय्हे तुब्भ ॥ ३ ॥

युष्मच्छब्दो जसा सह भे तुब्भे तुय्हे उय्हे तुब्भ इति पञ्चादेशानापद्यते। भे तुब्भे तुम्हे उय्हे तुब्भ चिट्ठह। 'वा ब्भो म्हज्झौ' [२·३·१४] इति वचनात् तुम्हे तुज्झे तुम्ह तुज्झ इति नव रूपाणि ॥ ३ ॥

शसा वो च ॥ ४ ॥

युष्मच्छब्दः शसा सह वो इति, चकारात् भे इत्यादींश्चादेशानापद्यते। वो भे तुब्भे तुम्हे उय्हे तुब्भ तुम्हे तुज्झे तुम्ह तुज्झ इति दश रूपाणि ॥४॥

---

1. M om. तुं in the Sūtra and Com. T तुहिं for तुह in the Sūtra and Com. KS इति चतुर आदेशानाप्नोति for इत्यादेशांश्चतुरः प्राप्नोति. After दिट्ठो सि KS add तं इति तु सिद्धावस्थायां त्वमित्यस्य वलोपे; MT तुं इति सिद्धावस्थायां वलोपे. 2. M तुमादिचतुष्टयं for तुवमादिचतुष्टयं. K om. सिद्धावस्थायां. MT तुं इति तु त्वामित्यस्य वलोपे ह्रस्वे च. S ह्रस्वश्च for ह्रस्वे च. 3. KMST हे for भे in the Sūtra and Com. here and elsewhere almost regularly. MT तुम्हे उम्हे for तुब्भे in the Sūtra. T षडादेशान् for पञ्चादेशान्. S ओ ब्हो मज्झौ च for वा ब्भो म्हज्झौ. 4. T तुय्भे तुम्हे almost everywhere. S ओ for वो in the Sūtra and Com. KMST युष्मत् for युष्मच्छब्द. KMS हे for भे almost everywhere. T इत्यादेशान् for इत्यादींश्चादेशान्. After कअं KS add एवं दश रूपाणि. M एवं for इति.

टा मे ते दे दि तुमं तुमइ ॥ ५ ॥

युष्मच्छब्दः टावचनेन सह मे ते दे दि तुमं तुमइ इति षडादेशानापद्यते । मे ते दे दि तुमं तुमइ कअं ॥ ५ ॥

ङिटाभ्यां तुमए तुइ तुए तुमाइ तुमे ॥ ६ ॥

युष्मच्छब्दः ङिटाभ्यां सह तुमए तुइ तुए तुमाइ तुमे इति पञ्च रूपाण्याप्नोति । तुमए तुइ तुए तुमाइ तुमे ठिअं कअं वा ॥ ६ ॥

तुब्भ तुहिंतो तुम्ह ङसिना ॥ ७ ॥

युष्मच्छब्दः ङसिना सह तुब्भ तुहिंतो तुम्ह इति त्रीणि रूपाण्यापद्यते । तुब्भ तुहिंतो तुम्ह वा आगओ । 'वा ब्भो म्हज्झौ' [२·३·१४] इति वचनात् तुम्ह तुज्झ ॥ इति पञ्च रूपाणि ॥ ७ ॥

तु तुइ ङिप्ङसौ ॥ ८ ॥

ङिप् सप्तमीविभक्तिः, ङसिः पञ्चम्येकवचनम्, तयोः परयोर्युष्मच्छब्दो यथासंख्यं तु तुइ इत्येतावादेशावापद्यते । सप्तमीङस्योर्यथाप्राप्तमेव । सप्तम्यां तु तुम्मि तुसु ॥ ङसौ—तुइ तुइत्तो तुईहिंतो तुईओ तुईउ आगओ ॥ ८ ॥

तुव तुम तुह तुब्भ ॥ ९ ॥

ङिप्ङसावित्यनुवर्तते । ङिपि ङसौ च परे युष्मद् तुव तुम तुह तुब्भ इति चत्वारि रूपाण्यापद्यते । ङिप्ङस्योर्यथाप्राप्तमेव । ङिपि—तुवम्मि तुमम्मि तुहम्मि तुब्भम्मि । 'वा ब्भो म्हज्झौ' [२·३·१४] इति वचनात् तुम्हम्मि तुज्झम्मि। सुपि—तुवेसु तुमेसु तुहेसु तुब्भेसु तुम्हेसु तुज्झेसु ठिअं। 'क्त्वासुपोस्तु

---

5. M om. तुमइ in the Sūtra but has it in Com. MT पञ्च रूपाण्यापद्यते for षडादेशानाप°. 6. KMST युष्मत् for युष्मच्छब्दः. KS रूपाणि प्राप्नोति for रूपाण्याप्नोति. 7. T तुम्ह for तुब्भ in the Sūtra and Com. T तुय्भ for तुम्ह in the Sūtra and Com. T युष्मत् for युष्मच्छब्दः. 8. M ङिम्ङसोः for ङिप्ङसौ in the Sūtra. M ङिप्ङसोः for सप्तमीङस्योः. T ङिपि for सप्तम्यां तु. KS om. सप्तम्यां तु. After तुवेसु KS add तुमेसु. K दोदुद्धुकुहि एष्वपि for दोदुहिंतसुतेष्वपि.

सुणात्' [१·१·४३] इत्यनुस्वारे तुवेसुं इत्यादि। ङसौ—तुवाहिंतो तुमाहिंतो तुहाहिंतो तुब्भाहिंतो। 'वा ब्भो म्हज्झौ' [२·३·१४] इति वचनात् तुम्हाहिंतो तुज्झाहिंतो॥ एवं तुवत्तो तुमत्तो तुहत्तो तुब्भत्तो तुम्हत्तो तुज्झत्तो। इति दोदुहिंतसुंतेष्वप्युदाहार्यम्॥ तत्तो इति तु त्वत्त इत्यस्य वलोपे॥९॥

भिसा भेतुब्भेइब्भेउय्हेहितुय्हेहि॥ १०॥

युष्मद् भिसा सह भे तुब्भेहि उब्भेहि उय्हेहि तुय्हेहि इति पञ्च रूपाण्यापद्यते। भे तुब्भेहि उब्भेहि उय्हेहि तुय्हेहि कअं॥ 'वा ब्भो म्हज्झौ' [२·३·१४] इति वचनात् तुम्हेहि तुज्झेहि उम्हेहि उज्झेहि। एवं नव रूपाणि॥ १०॥

उम्होय्हतुय्हतुब्भ भ्यसि॥ ११॥

भ्यसि परे युष्मद् उम्ह उय्ह तुय्ह तुब्भ इति चत्वारि रूपाण्यापद्यते। भ्यसस्तु यथाप्राप्तमेव। उम्हाहिंतो उय्हाहिंतो तुय्हाहिंतो तुब्भाहिंतो आगओ॥ 'वा ब्भो म्हज्झौ' [२·३·१४] इति वचनात् तुम्हाहिंतो तुज्झाहिंतो। उम्हत्तो उय्हत्तो तुय्हत्तो तुब्भत्तो तुम्हत्तो तुज्झत्तो इत्यादि॥ एवं दोदुहिंतसुंतेष्वप्युदा-हार्यम्॥ ११॥

तुब्भोब्भोय्हतइतुहंतुहतुम्हंतुवतुमतुमेतुमाइतुमोदेतेदितुइए ङसा॥१२॥

युष्मद् ङसा सह तुब्भ उब्भ उय्ह तइ तुहं तुह तुम्हं तुव तुम तुमे तुमाइ तुमो दे ते दि ति तु इ ए इत्यष्टादशादेशानापद्यते। 'वा ब्भो म्हज्झौ' [२·३·१४]इति वचनात् तुम्ह तुज्झ उम्ह उज्झ इति द्वाविंशतिरूपाणि॥१२॥

तुम्हाणतुब्भंतुब्भाणतुमाणतुवाणतुहाणतुब्भवोभे त्वामा॥ १३॥

युष्मदामा सह तुम्हाण तुब्भं तुब्भाण तुमाण तुवाण तुहाण तुब्भ वो भे त्वा इति दशादेशानापद्यते। तुम्हाण तुब्भं। 'वा ब्भो म्हज्झौ' [२·३·१४] इति वचनात् तुम्हं तुज्झं तुब्भाण तुम्हाण तुज्झाण तुब्भ तुम्ह तुज्झ वो भे त्वा॥ 'क्त्वासुपोस्तु सुणात्' [१·१·४३] इत्यनुस्वारे तुम्हाणं तुब्भाणं तुज्झाणं तुमाणं तुवाणं तुहाणं॥ एवं त्रयोविंशतिरूपाणि॥ १३॥

---

11. MS तुम्हो for उम्हो in the Sūtra and Com. 12. KS तुब्भ तुम्ह उब्भ उम्ह for तुब्भ उम्ह उय्ह. After ए KS add धर्ण.

वा भ्मो म्हज्झौ ॥ १४ ॥

युष्मदादेशसंबन्धिनो द्विरुक्तस्य भकारस्य म्ह ज्झ इत्यादेशौ वा भवतः। तत्र यथास्थानमुदाहृतमेव ॥ १४ ॥

अस्मत्सुना अम्हिहमहअमहमहम्म्यम्मि ॥ १५ ॥

अस्मच्छब्दः सुना प्रथमैकवचनेन सह अम्हि हं अहअं अहं अहम्मि अम्मि इति षडादेशानाप्नोति । अम्मि करेमि, अहं करोमि । तेण हं दिट्ठो, तेनाहं दृष्टः । अहअं जप्पामि, अहं जल्पामि । अहं गमिस्सं, अहं गमिष्यामि । अज्ज अहम्मि हासिआ, अद्याहं हासिता । न अम्मि कुविआ, नाहं कुपिता ॥ १५ ॥

मो मे वअं जसा ॥ १६ ॥

अस्मदित्यनुवर्तते । जसा महास्मच्छब्दः मो मे वअं इति त्रीनादेशानापद्यते । मो भणामो इत्यादि ॥ १६ ॥

अम्हे अम्हो अम्ह ॥ १७ ॥

अस्मच्छब्दः जसा सह अम्हे अम्हो अम्ह इति त्रीनादेशानापद्यते । योगविभाग उत्तरार्थः ॥ अम्हे इत्यादि ॥ १७ ॥

णे च शसा ॥ १८ ॥

शसा सहास्मच्छब्दः णे इति, चकारात अम्हे इत्यादि त्रीनादेशाश्चापद्यते । णे अम्हे पेच्छ इत्यादि ॥ १८ ॥

मं णे णं मि मिमं ममम्मि अहं मम्हाम्ह अमा ॥ १९ ॥

अस्मच्छब्दः अमा सह मं णे णं मि मिमं ममं अम्मि अहं मम्ह अम्ह इति दशादेशानापद्यते ॥ मं पेच्छ इत्यादि ॥ १९ ॥

---

14. After उदाहृतमेव S adds in margin: अस्मच्छब्दः. 15. KS सहितः for सह. KS °देशानापद्यते for °देशानाप्नोति. KS अज्जम्मि हासिआ for अज्ज अहम्मि हासिआ. 16. M मो हे वअं भणिमो for मो भणामो इत्यादि. 17. KM अस्मज्जसा सह for अस्मच्छब्दः जसा सह. KMS अम्हे अम्हो अम्ह पेच्छामो for अम्हे पेच्छामो इत्यादि. 18. KM इत्यादेशाश्चापद्यते for इत्यादि त्रीनादेशानापद्यते. After णे KM add अम्हो अम्ह. 19. KS णं मे etc पेच्छ for मं पेच्छ इत्यादि.

मि मइ ममाइ मए मे ङिटा ॥ २० ॥

ङिवचनेन टावचनेन सहास्मच्छब्दः मि मइ ममाइ मए मे इति पञ्चा-देशानापद्यते। मि ठिअं कअं वा इत्यादि ॥ २० ॥

ममं णे मआइ ममए टा ॥ २१ ॥

टावचनेन सहास्मच्छब्दः ममं णे मआइ ममए इति चतुर आदेशा-नापद्यते। ममं कअं इत्यादि ॥ २१ ॥

णेऽम्हेहिअम्हाहिअम्हेऽम्ह भिसा ॥ २२ ॥

भिसा सहास्मच्छब्दः णे अम्हेहि अम्हाहि अम्हे अम्ह इति पञ्चा-देशानापद्यते। णे कअं इत्यादि ॥ २२ ॥

मइ मम मह मज्झ ङसौ ॥ २३ ॥

ङसौ पञ्चम्येकवचने परे अस्मच्छब्दः मइ मम मह मज्झ इति चतुर आदेशानापद्यते। ङसेस्तु यथाप्राप्तमेव। मईहिंतो मइत्तो मईओ मईउ। एवं ममाहिंतो ममत्तो ममाउ ममाहि ममा॥ एवं महाहिंतो महत्तो मज्झाहिंतो मज्झत्तो इत्यादि ॥ २३ ॥

अम्ह मम भ्यसि ॥ २४ ॥

भ्यसि पञ्चमीबहुवचने परे अस्मच्छब्दः अम्ह मम इत्यादेशावापद्यते। अम्हाहिंतो अम्हेहिंतो अम्हत्तो अम्हाओ अम्हाउ अम्हासुंतो अम्हेसुंतो अम्हाहिं अम्हेहिं। ममाहिंतो ममेहिंतो ममत्तो ममाओ ममाउ ममासुंतो ममाहिं ॥ २४ ॥

अम्हं मज्झं मज्झ मइ मह महं मे च ङसा ॥ २५ ॥

ङसा सह अस्मच्छब्दः अम्हं मज्झं मज्झ मइ मह महं मे इति सप्ता-देशान्, चकारादम्हममौ चापद्यते ॥ अम्हं इत्यादि ॥ २५ ॥

---

24. KMS om. अम्हेहिंतो.

अम्हे अम्हो अम्हाण ममाण महाण मज्झाण मज्झाम्हाम्हं णे णो आमा ॥ २६ ॥

आमा सह अस्मच्छब्दः अम्हे अम्हो अम्हाण ममाण महाण मज्झाण मज्झ अम्ह अम्हं णे णो इत्येकादशादेशानाप्नोति। अम्हे धणं इत्यादि। 'क्त्वासुपोस्तु सुणात्' [१·१·४३] इत्यनुस्वारे। अम्हाणं ॥ एवं पञ्चदश रूपाणि ॥ २६ ॥

अम्ह मम मज्झ मह ङिपि ॥ २७ ॥

सप्तमीविभक्तौ परतः अस्मच्छब्दः अम्ह मम मज्झ मह इति चतुर आदेशानापद्यते। ङिपो यथाप्राप्तमेव; ङि—अम्हम्मि ममम्मि मज्झम्मि महम्मि ॥ सुप्—अम्हेसु ममेसु मज्झेसु महेसु ॥ एत्वविकल्पमते अम्हसु ममसु मज्झसु महसु ॥ आत्वमपीच्छन्त्यन्ये। अम्हासु ममासु मज्झासु महासु ॥ 'क्त्वासुपोस्तु सुणात्' [१·१·४३] इत्यनुस्वारे। अम्हेसुं ममेसुं मज्झेसुं महेसुं। अम्हसुं ममसुं मज्झसुं महसुं। अम्हासुं ममासुं मज्झासुं महासुं ॥ एवमष्टादश रूपाणि ॥ २७ ॥

चतुरो जश्शस्भ्यां चउरो चत्तारो चत्तारि ॥ २८ ॥

चतुश्शब्दस्य जश्शस्भ्यां सह चउरो चत्तारो चत्तारि इति त्रय आदेशा भवन्ति। चउरो चत्तारो चत्तारि चिट्ठन्ति पेच्छ वा ॥ २८ ॥

तिण्णि त्रेः ॥ २९ ॥

जश्शस्भ्यामिति वर्तते। त्रिशब्दस्य जश्शस्भ्यां सह तिण्णि इत्यादेशो भवति। तिण्णि पुरिसा महिला वणाणि वा चिट्ठन्ति पेच्छ वा ॥ २९ ॥

दोण्णि दुवे बेण्णि द्वे ॥ ३० ॥

द्विशब्दस्य जश्शस्भ्यां सह दोण्णि दुवे बेण्णि इति त्रय आदेशा भवन्ति। दोण्णि दुवे बेण्णि महिला चिट्ठन्ति पेच्छ वा ॥ 'संयोगे' [१·२·४०] इति ह्रस्वे। दुण्णि। बिण्णि ॥ ३० ॥

---

27. KS read ङिपि before सप्तमीविभक्तौ. K आत्वमिच्छन्त्यन्ये; S आत्वमपीच्छत्यन्यः for आत्वमपीच्छन्त्यन्ये. 29. KMS अनुवर्तते for वर्तते. 30. S om. पेच्छ वा.

दो बे टादौ च ॥ ३१ ॥

द्वेरिति वर्तते । द्विशब्दस्य टादौ तृतीयादौ विभक्तौ परतः दो बे इत्यादेशौ भवतः । चकाराज्जश्शस्भ्यां सहितस्य च । दोहिं बेहिं कअं । दोहिंतो बेहिंतो आगओ । दोण्णं बेण्णं धणं । दोसु बेसु ठिअं ॥ जश्शस्भ्याम् । दो बे ठिआ पेच्छ वा ॥ ३१ ॥

ति त्रेः ॥ ३२ ॥

टादावित्यनुवर्तते । त्रिशब्दस्य टादौ परे ति इत्यादेशो भवति । तिहिं कअं, त्रिभिः कृतं तिसृभिर्वा । तिहिंतो आगओ, त्रिभ्यः तिसृभ्यो वा आगतः । तिणं धणं, त्रयाणां तिसृणां वा धनम् । तिसु ठिअं, त्रिषु तिसृषु वा स्थितम् ॥ ३२ ॥

ण्ह ण्हं संख्याया आमोऽविंशतिगे ॥ ३३ ॥

संख्याशब्दात्परस्यामः ण्ह ण्हं इत्यादेशौ भवतः, अविंशतिगे विंशत्यादीन्वर्जयित्वा । दोण्ह तिण्ह । दोण्हं तिण्हं । चउण्ह चउण्हं । पञ्चण्ह पञ्चण्हं । छण्ह छण्हं । सत्तण्ह सत्तण्हं । अट्ठण्ह अट्ठण्हं । नवण्ह नवण्हं । दसण्ह दसण्हं । पण्णारहण्ह पण्णारहण्हं । अट्ठारहण्ह अट्ठारहण्हं । कइण्ह कइण्हं । कतीनाम् ॥ अविंशतिगे इति किम् । वीसाणं । तिसाणं ॥३३॥

द्विवचनस्य बहुवचनम् ॥ ३४ ॥

सर्वासां विभक्तीनां स्यादीनां तिङादीनां च द्विवचनस्य स्थाने बहुवचनं भवति । दोण्णि कुणन्ति, द्वौ कुरुतः । दोहिं । दोसुंतो । दोण्हं दोसु ॥ दो पाआ, द्वौ पादौ । दोण्णि हत्था, द्वौ हस्तौ । दुवे णअणा, द्वे नयने । बेण्णि कण्णा, द्वौ कर्णौ ॥ ३४ ॥

ङेसो ङम् ॥ ३५ ॥

ङेस् चतुर्थी विभक्तिः, ङम् षष्ठीविभक्तिः । ङेसः स्थाने ङम् भवति । मुणिस्स, मुणीणं भोअणं देहि ॥ णमो देवस्स, देवाणं ॥ ३५ ॥

---

31. K दो दे टादौ च; S दो बे दावौ च for the Sūtra. 33. KM अट्ठरसण्हं समसाइसाण कइण्हं for अट्ठारहण्हं कइण्हं.

तादर्थ्ये ङेस्तु ॥ ३६ ॥

तादर्थ्ये विहितस्य ङेः चतुर्थ्येकवचनस्य स्थाने ङस् षष्ठी तु भवति। देवस्स देवाअ, देवार्थमित्यर्थः ॥ ङेरिति किम्। देवाणं ॥ ३६ ॥

वधाड्डाइ च ॥ ३७ ॥

त्वित्यनुवर्तते। वधशब्दात्परस्य ङेःस्थाने डित् आइ इत्यादेशः षष्ठी चतुर्थी च भवति। वहाइ वहस्स वहाअ। वधार्थमित्यर्थः ॥ ३७ ॥

क्वचिदसादेः ॥ ३८ ॥

अस् द्वितीयाविभक्तिः। अमादीनां विभक्तीनां स्थाने षष्ठीविभक्तिः क्वचिद्भवति। सीमंधरस्स वन्दे, सीमंधरं वन्दे। तिस्सा मुहस्स भरिमो, तस्या मुखं स्मरामः। अत्र द्वितीयायाः ॥ धणस्स लद्धं, धनेन लब्धम्। तेसिमेस-मणाइण्णं, तैरेतदनाचीर्णम्। अत्र तृतीयायाः ॥ चोरस्स बीहइ, चोराद्बिभेति। इमाण पाअन्तमहिआण इअराइं लहुअक्खराइं ति, एभ्यः पादान्त-सहितेभ्य इतराणि लघ्वक्षराणि। अत्र पञ्चम्याः ॥ वणसिरिपट्ठीए कबरि व्व, वनश्रीपृष्ठे कबरीव। अत्र सप्तम्याः ॥ ३८ ॥

अस्टासोर्ङिप् ॥ ३९ ॥

अस् द्वितीया, टास् तृतीया, तयोः स्थाने ङिप् सप्तमी क्वचिद्भवति तु। गामे वहामि, णअरे णआमि, ग्रामं वहामि, नगरं नयामि। अत्र द्वितीयायाः ॥ तेसुं अलंकिआ पुहवी, तैरलंकृता पृथिवी। अत्र तृतीयायाः ॥ ३९ ॥

---

37. S डायि for डाइ in the Sūtra. 38. KS तिस्सा मुहस्स सरिमो; M तिस्सा मुहं सरिमो for तिस्सा मुहस्स भरिमो. KS धणस्स लद्धो for धणस्स लद्धं. After लद्धं KMS add चिरस्स मुक्का चिरेण मुक्ता. KMS इअ-राण जाण लहुअक्खराइं पाअन्तिमिल्लसहिआण, इतरेभ्यः एभ्यः पादान्तेन सहितेभ्यः इतराणि लघ्वक्षराणि for इमाण...लघ्वक्षराणि. S लघ्वक्षराणीत्यर्थः. M वणसि-रिवट्ठीअ for °वट्ठीए. 39. S ङिस् for ङिप् in the Sūtra. KS तिह तेसु अलंकिआ पुहुवी for तेसुं अलंकिआ पुहवी.

ङसिसष्टाश्च ॥ ४० ॥

ङसिसः पञ्चम्याः स्थाने टास् तृतीया, चकारात्सप्तमी च क्वचिद्भवति। चोरेण बीहइ, चोराद्बिभेति। अन्तेउरे रमिअ आगओ, अन्तःपुराद्रन्त्वागतः ॥ ४० ॥

ङिपोऽम् ॥ ४१ ॥

ङिपः सप्तम्याः स्थाने अम् द्वितीया क्वचिद्भवति। विज्जुज्जोअं भरइ रइं, विद्युद्द्योते स्मरति रतिम् ॥ ४१ ॥

लुक्क्यङोर्यस्य तु ॥ ४२ ॥

क्यङन्तस्य द्विवचनात् क्यषन्तस्य च संबन्धिनो यस्य लुग् भवति तु। क्यङ्—गुरूअइ गुरूइ, अगुरुर्गुरुर्भवति, गुरुरिवाचरति वा ॥ क्यष्—धमधमाअइ धमधमाइ। लोहिआअइ लोहिआइ ॥ ४२ ॥

॥ इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ
द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

---

41. S ङ्सोप् for the Sūtra. S हरइ for भरइ. 42. KMS गुरूआइ गुरूआअइ for गुरूअइ गुरूइ. Colophon: KSM om. from °मदर्ह down to श्रीमत्. KMST द्वितीयस्याध्यायस्य for द्वितीयाध्यायस्य.

चतुर्थः पादः ॥

लटस्तिप्तावि जेच् ॥ १ ॥

लट् वर्तमानं तत्संबन्धिनः प्रथमपुरुषस्य एकत्वे वर्तमानौ यौ परस्मैपदात्मपदत्वेन विहितौ तिप् तङ् इत्येतौ प्रत्येकं इच् एच् च इत्येतौ भवतः। चकारौ 'ह्रुरचिति'[३·१·५]इति विशेषणार्थौ। हसइ हसए। रमइ रमए॥१॥

सिप्थास्सेसि ॥ २ ॥

लट इत्यनुवर्तते। परस्मैपदात्मनेपदयोर्मध्यमपुरुषस्य एकत्वे वर्तमानौ सिप् थास् इत्येतौ प्रत्येकं से सि इत्येतौ तु भवतः। हससे हससि। रमसे रमसि ॥ २ ॥

मिर्मिबिटौ ॥ ३ ॥

लटः परस्मैपदात्मनेपदोत्तमपुरुषैकवचनत्वे वर्तमानौ मिप् इट् इत्येतौ प्रत्येकं मि इति भवतः। हसामि। रमामि॥ बहुलाधिकारात् मिबिटोरादेशस्य मेरिकारस्य लोपश्च। बहु वण्णिउं न सक्कं, बहु वर्णितुं न शक्नोमि। न मरं, न म्रिये ॥ ३ ॥

झिझौ न्ति न्ते इरे ॥ ४ ॥

लटः प्रथमपुरुषस्य बहुत्वे वर्तमानौ झि झ इत्येतौ प्रत्येकं न्ति न्ते इरे इति त्रीनादेशानापद्येते। हसन्ति हसन्ते। रमन्ति रमन्ते। हसिज्जन्ति हसिज्जन्ते। रमिज्जन्ति रमिज्जन्ते। गज्जन्ते खे मेहा। उप्पज्जन्ते कइहिअअसाअरे कव्वरअणाइं। दोण्णि वि ण पहुप्पिरे बाहू, द्वावपि न प्रभवतो बाहू॥ क्वचिदेकत्वे इरे। सूसइरे ताण तारिसो कण्ठो, शुष्यति तासां तादृशः कण्ठः ॥ ४ ॥

---

1. MST इचेच् for इजेच् in the Sūtra. T वर्तमानात् for वर्तमानं. MST त for तङ्. T इत्यादेशौ for इत्येतौ. S एच्च भवतः for एच्च इत्येतौ भवतः. S विशेषणार्थः for विशेषणार्थौ. 2. KM मध्यमपुरुषैकत्वे for °षस्य एकत्वे. After वर्तमानौ M adds यौ. M इत्यादेशौ for इत्येतौ. M om. तु. 3. ST मि for मिर् in the Sūtra and Com. T om. प्रत्येकं. M इकारलोपश्च for इकारस्य लोपश्च. After सक्कं M adds आइं दीसंति सरअपिडाइं. 4 BT om. दोण्णि वि ण and द्वावपि न. S om. रमन्ति रमन्ते. T om. कइ...णाइं. K om. तारिसो. T कर्णः for कण्ठः.

थध्वमित्थाहचौ ॥ ५ ॥

लटो मध्यमपुरुषबहुत्वे वर्तमानौ थ ध्वम् इत्येतौ प्रत्येकं इत्था हच् इत्यादेशावापद्येते । हसित्था हसह । रमित्था रमह ॥ बहुलाधिकारात् इत्था अन्यत्रापि । जं जं ते रोइत्था, यद्यत्ते रोचते ॥ हच् इति चकारः 'इहहचोः' [३·२·५] इति विशेषणार्थः ॥ ५ ॥

मो म मु मस्महिङ् ॥ ६ ॥

लट उत्तमपुरुषबहुत्वे वर्तमानौ मस् महिङ् इत्येतौ प्रत्येकं मो म मु इति त्रीनादेशानापद्येते । हसामो हसाम हसामु । रमामो रमाम रमामु ॥ ६ ॥

अत एवैच् से ॥ ७ ॥

लटः प्रथमपुरुषस्य एकत्वे य एच्, यश्च मध्यमपुरुषैकत्वे विहितः से, तौ अकारान्तादेव भवतः, नान्यस्मात् । हसए हससे । तुवरए तुवरसे । करए करसे ॥ अत इति किम् । ठाइ ठासि । वसुआइ वसुआसि । होइ होसि ॥ ७ ॥

त्वस्तेर्म्हम्होम्हि ममोमिना ॥ ८ ॥

अस्तेर्धातोः स्थाने म मो मि इत्येतैः सह यथासंख्यं म्ह म्हो म्हि इत्यादेशा भवन्ति तु । गअ म्ह गअ म्हो गअ म्हि, गताः स्मः । एस म्हि, एषोऽस्मि । मुकारस्याग्रहणादप्रयोग एव तस्येत्यवसीयते । पक्षे । अत्थि अम्हे । अत्थि अहं ॥ ८ ॥

सिना स्सि ॥ ९ ॥

अस्तेरित्यनुवर्तते । अस्तेर्धातोः सिना मध्यमपुरुषैकवचनादेशेन सह सि इत्यादेशो लिद्भवति । णिट्ठुरो जं सि, निष्ठुरो यदसि ॥ सिनेति किम् । सेआदेशे सति । अत्थि तुमं ॥ ९ ॥

---

5. S हसेत्था for हसित्था. B जं ते for जं जं ते; B यत्ते for यद्यत्ते. 6. S °पुरुषस्य बहुत्वे for पुरुषबहुत्वे. 7. After एकत्वे S adds विहितो. B वसुआइ वसुआसि; S वसुआइ for वसुआइ वसुआसि. After वसुआसि K adds उद्दाइ उद्दासि; S adds उद्दासि; T adds उद्दाइ उद्दासि. 8. K इत्यादेशः for इत्येतैः M om. तु. 9. M सिनाल् for the Sūtra.

तिङास्थि ॥ १० ॥

अस्तेस्तिङा तिबादिना सह अत्थि इत्यादेशो भवति । अत्थि सो । अत्थि ते । अत्थि तुमं । अत्थि तुम्हे । अत्थि अहं । अत्थि अम्हे ॥ १० ॥

णिजदेदावावे ॥ ११ ॥

धातोः प्रेरणार्थे विहितो यो णिच्प्रत्ययः, सः अत् एत् आव आवे इति चतुर आदेशानाप्नोति । तकारस्तावन्मात्रत्वप्रदर्शनार्थः । अत्–दरिसइ॥ एत्–कारेइ ॥ आव–कारावइ ॥ आवे–कारावेइ ॥ हासावइ हासइ हासावेइ हासेइ ॥ उवसमावइ उवसमेइ ॥ बहुलाधिकारात्क्वचिदेत्नास्ति । जाणइ जाणावइ जाणावेइ ॥ क्वचिदावे नास्ति । धावइ धावेइ धावावइ ॥ ११ ॥

शुष्यादेरविर्वा ॥ १२ ॥

णिजित्यनुवर्तते । शुष्यादिणिचः अविः इति वा भवति । शोषितं सोसाविअं सोसिअं ॥ तोषितं तोसाविअं तोसिअं ॥ १२ ॥

भ्रमेराडः ॥ १३ ॥

भ्रमेर्धातोः परो णिच् आड इति वा भवति । भमाडइ ॥ पक्षे । भामइ भामेइ भमावइ भमावेइ ॥ १३ ॥

लुगाविल् भावकर्मक्ते ॥ १४ ॥

भावकर्मविहिते प्रत्यये क्तप्रत्यये च परे णिच् लुक् आवि इत्यादेशावाप्नोति । लित्त्वान्न विकल्पः॥ भावकर्मणोः । कारिअइ काराविअइ कारिज्जइ काराविज्जइ । हासिअइ हासाविअइ हासिज्जइ हासाविज्जइ ॥ क्ते । कारिअं काराविअं । हासिअं हासाविअं । खामिअं खामाविअं ॥ १४ ॥

---

10. M तिङा अत्थि for the Sūtra. 11. S तावन्मात्रदर्शनार्थः for तावन्मात्रत्वप्रदर्शनार्थः. M करावेइ for कारावइ. After उवसमावइ K adds उवसमावेइ. K आणावेइ for जाणइ जाणावेइ. B यावइ यावेइ यावावइ for धावइ धावेइ. M om. धावावइ. 12. S शुष्यादिः in the Sūtra. M शुष्यादिर्णिच् for शुष्यादिणिचः. 13. MS om. भामइ भामेइ. 14. MS om. क्तप्रत्यये. MST लुकं for लुक्. KMS इत्यादेशं चाप्नोति for इत्यादेशावाप्नोति. M कारीअइ करावीअइ for कारिअइ काराविअइ. MS हसाविअइ for हासा°. S खमाविअं for खामाविअं.

अदेल्लुक्यादेरत आः ॥ १५ ॥

अत् एत् लुक् इत्येतेषु णिचः स्थाने विहितेषु खोरादेरतः अकारस्य आत् आत्वं भवति । अत्—पाडइ । मारइ ॥ एत्—कारेइ । मारेइ । खामेइ ॥ लुक्—कारिअइ कारिज्जइ । खामिअइ खामिज्जइ । अदेल्लुगिति किम् । काराविअं कारिअं । काराविअइ काराविज्जइ ॥ खोरिति किम् । संगामेइ ॥ इह व्यवहितस्य मा भूत् ॥ कारिअं । इह अन्त्यस्य मा भूत् ॥ अत इति किम् । आसेइ ॥ केचित्तु आवे आवि इत्येतयोरपि आदेरत आत्वमिच्छन्ति । कारवेइ । हासाविओ जणो सामलङ्गीए ॥ १५ ॥

तु मौ ॥ १६ ॥

अत इत्यनुवर्तते आदिति च । अदन्ताद्धातोः मौ लडुत्तमपुरुषैकवचनादेशे परे सति आद्भवति तु । हसामि हसमि । जाणामि जाणमि । लिहामि लिहमि ॥ अत इत्येव । होमि ॥ १६ ॥

मोमुमुष्विच्च ॥ १७ ॥

त्वित्यनुवर्तते । आकारान्ताद्धातोः मो म मु इत्येतेषु परेषु अत इत्वं चकारादात्वं च भवति तु । भणिमो भणामो । भणिम भणाम । भणिमु भणामु ॥ पक्षे । भणमो भणम भणमु ॥ 'वा लड्लोट्रुछतृषु' [२·४·२०] इत्येत्वे तु । भणेमो भणेम भणेमु ॥ अत इत्येव । होमो ॥ १७ ॥

क्ते ॥ १८ ॥

इदित्यनुवर्तते । क्तप्रत्यये परे अत इत्वं भवति । हसिअं । पढिअं नमिअं ॥ हासिअं । पाढिअं । नामिअं ॥णअं गअं इत्यादि तु सिद्धावस्थापेक्षया ॥ अत इत्येव । लुअं । हूअं ॥ १८ ॥

---

15. KMS कराविज्जइ कराविअइ for कार॰. M om. लुक्-कारिअइ; S लुक्-कारावइ कारेज्जइ. B संगामइ for संगामेइ. KMS कारावइ; T कारावेइ for कारवेइ. M दूसेइ for आसेइ. 16. M om. तु in the Sūtra. M om. परे सति. M om. तु in Com. M जाणेमि for जाणमि. 17. KS भणिमु for भणेमो भणेम भणेमु. 18. BT पसिअं for पढिअं; B पासिअं; T पसिअं for पाढिअं. B नअअं;M णाअं; T भअं for णअं.

एच्च क्त्वातुंतव्यभविष्यति ॥ १९ ॥

क्त्वातुंतव्येषु भविष्यत्कालविहिते च प्रत्यये परतः अत एत्वं चकारादित्वं च भवति । क्त्वा—हसेऊण हसिऊण ॥ तुम्—हसेउं ॥ तव्य—हसेअव्वं हसिअव्वं ॥ भविष्यत्—हसेहिइ हसिहिइ । अत इत्येव । जाऊण । काऊण ॥ १९ ॥

वा लट्लोट्छतृषु ॥ २० ॥

एदित्यनुवर्तते । लड् वर्तमानं, लोट् पञ्चमी, तयोः शतृप्रत्यये च परतः अत एत्वं वा भवति । लट्—हसेइ हसइ । हसेम हसिम ॥ लोट्—हसेउ हसउ । सुणेउ सुणउ ॥ शतृ—हसेन्तो ॥ क्वचिन्न भवति । जअइ ॥ क्वचिदात्वमपि । सुणाइ ॥ २० ॥

ज्जा ज्जे ॥ २१ ॥

ज्जा ज्ज इत्येतयोः परयोरत एत्वं भवति । हसेज्जा हसेज्ज ॥ अत इत्येव । होज्जा होज्ज ॥ २१ ॥

भूतार्थस्य सी हीअ ही ॥ २२ ॥

भूतार्थे विहितो योऽनद्यतनादिप्रत्ययः स भूतार्थः, लुङ् लङ् लिट्, तस्य स्थाने सी हीअ ही इति त्रय आदेशा भवन्ति । उत्तरत्र 'हल ईअ' (२·२·२३) इति विधानात्स्वरान्तादेवायं विधिः । कासी काहीअ काही, अकार्षीत् अकरोत् चकार वा ॥ एवं ठासी ठाहीअ ठाही ॥ २२ ॥

हल ईअ ॥ २३ ॥

भूतार्थस्येत्यनुवर्तते । हलन्ताद्धातोः परस्य भूतार्थस्य लुङादिप्रत्ययस्य ईअ इत्यादेशो भवति । भुवीअ, अभूत् अभवत् बभूव वा ॥ एवं आसीअ, आसिष्ट आस्त आसांचक्रे वा ॥ गहीअ, अग्रहीत् अगृह्णात् जग्राह वा ॥ २३ ॥

---

19. K om. काऊण. KST om. जाऊण. 20. S वर्तमाना; T वर्तमानो for °मानं. KS जलइ for जअइ. 21. S om अतः. 22. BS सि हिअ हि for सी हीअ ही in the Sūtra. K makes no distinction between short and long इ. KMS लुङादिप्रत्ययः; B अनद्यतनादिः प्रत्ययः for अनद्यतनादिप्रत्ययः. KS make no distinction between short and long इ in the verbal forms under this Sūtra. After चकार B om. वा. 23. M om. भूतार्थस्य. B हुईअ for भुवीअ. M गेण्हीअ for गहीअ.

अहेस्यासी तेनास्तेः ॥ २४ ॥

अस्तेर्धातोः तेन भूतार्थेन प्रत्ययेन सह अहेसि आसि इत्यादेशौ भवतः । अहेसि सो तुमं अहं वा । जे अहेसि, ये आसन् । एवं आसि ॥ ॥ २४ ॥

भविष्यति हिरादिः ॥ २५ ॥

भविष्यदर्थविहितप्रत्यये परतः तस्यैवादिः हि इति प्रयोक्तव्यः । होहिइ, भविष्यति भविता वा । होहिन्ति । होहिसि होहित्था । होहिम । हसिहिइ । काहिइ ॥ २५ ॥

हा सा मिमोमुमे वा ॥ २६ ॥

भविष्यतीत्यनुवर्तते आदिरिति च । भविष्यत्यर्थे उत्तमपुरुषादेशेषु परेषु तेषामेवादिः हा सा इत्येतौ वा प्रयोक्तव्यौ । पक्षे हिरपि । होहामि होस्सामि । होहामो होस्सामो । होहामु होस्सामु । होहाम होस्साम । होहिमो होहिमु होहिमि होहिम ॥ क्वचित्तु हा न भवति । हसिहिमो हसिस्सामो । हसिहिमु हसिस्सामु । हसिहिम हसिस्साम ॥ २६ ॥

हिस्सा हित्था मुमोमस्य ॥ २७ ॥

वेत्यनुवर्तते । भविष्यति काले मु मो म इत्येतेषां स्थाने हिस्सा हित्था इत्येतौ धातोः परतो वा प्रयोक्तव्यौ । होहिस्सा होहित्था ॥ पक्षे । होहिमु होहिमो होहिम ॥ क्वचित्तथा न भवति । होस्सामो इत्यादि ॥ २७ ॥

---

25. KS om. परतः; M परे for परतः. K होहिमि for होहिम. After होहिम K adds होहिमो. 26. KST हास्सा; M हा सा for हा सा in the Sūtra and Com. K भविष्यदर्थे for भविष्यत्यर्थे. K इत्येतावादेशौ for इत्येतौ. MS om. from हसिस्सामो down to हसिस्साम. 27. After होहित्था KM add हसिहिस्सा हसिहित्था. M om. क्वचित् तथा न भवति । होस्सामो इत्यादि. S om. इत्यादि.

इच्छ दृशिगम इजादौ हिलुक्च वा ॥ २८ ॥

दृश् गम् इत्याभ्यां धातुभ्यां भविष्यदादिषु इच् इत्यादिषु परेषु डित् अच्छ इत्ययं वा भवति, हेश्च लुग्वा भवति। डित्वादन्त्याजादेर्लुक् ॥ दच्छिइ दच्छिहिइ। दच्छिन्ति दच्छिहिन्ति। दच्छिसि दच्छिहिसि। दच्छित्था दच्छिहित्था। दच्छिह दच्छिहिह। दच्छिमि दच्छिहिमि। दच्छिहामि दच्छिस्सामि। दच्छिस्सं दच्छिहिस्सं। दच्छिमो दच्छिहिमो। दच्छिहामो दच्छिस्सामो। दच्छिहिस्सा दच्छिहित्था। दच्छिम दच्छिहिम। दच्छिहाम दच्छिस्साम। दच्छिमु दच्छिहिमु। दच्छिहामु दच्छिस्सामु॥ एवं गच्छिइ गच्छिहिइ। गच्छिन्ति गच्छिहिन्ति। गच्छिसि गच्छिहिसि। गच्छित्था गच्छिहित्था। गच्छिह गच्छिहिह। गच्छिमि गच्छिहिमि। गच्छिहामि गच्छिस्सामि। गच्छिस्सं गच्छिहिस्सं। गच्छिमो गच्छिहिमो। गच्छिहामो गच्छिस्सामो। गच्छिहिस्सा गच्छिहित्था। गच्छिम गच्छिहिम। गच्छिहाम गच्छिस्साम। गच्छिमु गच्छिहिमु। गच्छिहामु गच्छिस्सामु ॥ २८ ॥

भिदिविदिच्छिदो इच्छ ॥ २९ ॥

हिलुक् च वेत्यनुवर्तते, इजादाविति च। भिद् विद् छिद् इत्येतेभ्यो धातुभ्यो भविष्यदर्थेषु तिमाद्यादेशेषु परेषु डित् एच्छ इत्ययं वा भवति, हिलुक् च वा। भिदि—भेच्छिहि भेच्छिहिइ। भेच्छिन्ति भेच्छिहिन्ति। भेच्छिसि भेच्छिहिसि। भेच्छित्था भेच्छिहित्था। भेच्छिह भेच्छिहिह। भेच्छिम भेच्छिहिम। भेच्छिमि भेच्छिहिमि। भेच्छिहामि भेच्छिस्सामि। भेच्छिस्सं भेच्छिहिस्सं। भेच्छिमो भेच्छिहिमो। भेच्छिहामो भेच्छिस्सामो। भेच्छिहिस्सा भेच्छिहित्था ॥ एवं मम्बोऽपि ॥ विदि—वेच्छिहि वेच्छिहिइ। वेच्छिन्ति वेच्छि-

---

28. KS इजादिषु परेषु for इच् इत्यादिषु परेषु. S अंत्याचादेः for अन्त्याजादेः. KS दच्छिस्सि दच्छिहिस्सि for दच्छिसि दच्छिहिसि. KMS दच्छं; T दच्छि for दच्छिहिस्सं. S दच्छिहामु for दच्छिहिमु. MST गच्छं for गच्छिहिस्सं. See under Sūtra 31 below. 29. The Mss. use ह and म promiscuously. K om. भेच्छिहिस्सं; MS भेच्छं for भेच्छिहिस्सं. KMST वेच्छं for वेच्छिहिस्सं.

हिन्ति । वेच्छिसि वेच्छिहिसि । वेच्छित्था वेच्छिहित्था । वेच्छिह वेच्छिहिह ।
वेच्छिमि वेच्छिहिमि । वेच्छिहामि वेच्छिस्सामि । वेच्छिस्सं वेच्छिहिस्सं ।
वेच्छिमो वेच्छिहिमो । वेच्छिहिमो । वेच्छिहामो वेच्छिस्सामो । वेच्छिहिस्सा
वेच्छिहित्था ॥ एवं मम्वोरपि ॥ छिदिर्—छेच्छिहि छेच्छिहिइ । छेच्छिन्ति छेच्छि-
हिन्ति । छेच्छिसि छेच्छिहिसि । छेच्छित्था छेच्छिहित्था । छेच्छिह छेच्छिहिह ।
छेच्छिम छेच्छिहिम । छेच्छिमि छेच्छिहिमि । छेच्छिहामि छेच्छिस्सामि ।
छेच्छिस्सं छेच्छिहिस्सं । छेच्छिमो छेच्छिहिमो । छेच्छिहामो छेच्छिस्सामो ।
छेच्छिहिस्सा छेच्छिहित्था ॥ एवं एम्वोरपि ॥ २९ ॥

डोच्छ वचिमुचिरुदिश्रुभुजः ॥ ३० ॥

वचि मुचि रुदि श्रु भुजि इत्येतेभ्यो धातुभ्यो भविष्यदर्थेषु तिबाद्या-
देशेषु इजादिषु परेषु डित् ओच्छ इति वा भवति, हिलुक् च वा । वचि—
वोच्छिइ वोच्छिहिइ । वोच्छिन्ति वोच्छिहिन्ति । वोच्छिसि वोच्छिहिसि ।
वोच्छित्था वोच्छिहित्था । वोच्छिह वोच्छिहिह । वोच्छिमि वोच्छिहिमि ।
वोच्छिहामि वोच्छिस्सामि । वोच्छिस्सं वोच्छिहिस्सं । वोच्छिमो वोच्छिहिमो ।
वोच्छिहामो वोच्छिस्सामो । वोच्छित्था वोच्छिहित्था ॥ एवं मम्वोरपि ॥ मुचि—
मोच्छिहि मोच्छिहिइ । मोच्छिन्ति मोच्छिहिन्ति । मोच्छिसि मोच्छिहिसि ।
मोच्छित्था मोच्छिहित्था । मोच्छिह मोच्छिहिह । मोच्छिमि मोच्छिहिमि ।
मोच्छिहामि मोच्छिस्सामि । मोच्छिस्सं मोच्छिहिस्सं । मोच्छिमो मोच्छिहिमो ।
मोच्छिहामो मोच्छिस्सामो । मोच्छित्था मोच्छिहित्था ॥ एवं मम्वोरपि ॥ रुदि—
रोच्छिहि रोच्छिहिइ । रोच्छिन्ति रोच्छिहिन्ति ॥ एवं स्यादिष्वपि ॥ श्रु—
सोच्छिहि सोच्छिहिइ । सोच्छिन्ति सोच्छिहिन्ति । सोच्छिसि सोच्छिहिसि ॥
एवमिडादिष्वपि ॥ भुजि—भोच्छिहि भोच्छिहिइ । भोच्छिन्ति भोच्छिहिन्ति ।
भोच्छिसि भोच्छिहिसि ॥ एवमिडादिष्वपि ॥ ३० ॥

KMS om. वेच्छिहिमो. KS छेच्छं for छेच्छिहिस्सं. M om. from छेच्छित्था down to the end of this Sûtra. 30. KMT वोच्छं; S ओच्छं for वोच्छिहिस्सं. KMST मोच्छं for मोच्छिहिस्सं. KMST छेच्छं for छेच्छिहिस्सं. 31. S उत्तमपुरुषादेक° for °पुरुषैक°. S om. तु. K वा for तु. M om. गच्छं गमिष्यामि.

ं मेश्छात्ततः ॥ ३१ ॥

भविष्यति दृशादिभ्यो धातुभ्यः परतः पूर्वसूत्रैस्त्रिभिरुक्तानां दच्छवेच्छ-बोच्छानां यश्छकारः ततः परस्य मेः उत्तमपुरुषैकवचनादेशस्य स्थाने ङित् थं इत्यादेशस्तु भवति । दच्छं द्रक्ष्यामि । गच्छं गमिष्यामि । संगच्छं संगंस्ये । मेच्छं मेत्स्यामि । वेच्छं वेदिष्यामि । छेच्छं छेत्स्यामि । वोच्छं वक्ष्यामि । मोच्छं मोक्ष्यामि । रोच्छं रोदिष्यामि । सोच्छं श्रोष्यामि । भोच्छं भोक्ष्ये ॥ पक्षे दच्छिमि दच्छिहिमि दच्छिहामि दच्छिस्सामि दच्छिस्सं ॥ एवं गमादिष्व-प्युदाहार्यम् ॥ छात्तत इति किम् । हि हा स्सा इत्येतेभ्यः परो मा भूत् । गच्छिहिमि गच्छिहामि गच्छिस्सामि ॥ ३१ ॥

कृदो हं ॥ ३२ ॥

मेरित्यनुवर्तते । करोतेर्ददातेश्च परतो भविष्यति विहितस्य मेः स्थाने हं इति वा प्रयोक्तव्यः। काहं । दाहं ॥ पक्षे काहिमि दाहिमि इत्यादि ॥३२॥

सं ॥ ३३ ॥

धातोः परो भविष्यति काले मेः स्थाने सं इति वा भवति ॥ रित्वाद् द्वित्वम् । होस्सं हविस्सं ॥ पक्षे होहिमि होहामि होस्सामि इत्यादि ॥३३॥

त्विज्जालिङः ॥ ३४ ॥

लिङ् सप्तम्यादेशात् जा इत्यस्मात्परः इकारः तु प्रयोक्तव्यः । होज्जा होज्जाइ भवेत् ॥ वाधिकारे पुनस्तुग्रहणादुत्तरत्र न विकल्पः ॥ ३४ ॥

एकस्मिन् प्रथमादेर्विध्यादिषु दु सु मु ॥ ३५ ॥

विध्यादिषु विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु वर्तमानानां प्रथ-मादेः प्रथमादिपुरुषाणामेकत्वे वर्तमानानां प्रत्ययानां स्थाने यथासंख्यं दु सु मु इत्यादेशाः स्युः । हसउ सा । हससु तुमं । हसामु अहं । पेच्छउ पेच्छसु पेच्छामु ॥ दकारोच्चारणं भाषान्तरार्थम् ॥ ३५ ॥

---

32. M भविष्यति काले for भविष्यति. 33. M om. the Sūtra. K सर्; S सस् for the Sūtra. MT सं; K सर्; S स for सं. After हसिस्सं MT add किलइस्सं. 34. KS होज्जइ होज्जे; M होज्जइ होज्ज for होज्जा होज्जाइ.B विकल्पः for न विकल्पः.35.S एकस्तु for एकस्मिन् in the Sūtra. KM भवन्ति for स्युः. M हसउ सो for हसउ सा.

बहौ न्तु ह मो ॥ ३६ ॥

विध्यादिष्वर्थेषु विहितानां प्रथममध्यमोत्तमपुरुषाणां बहुत्वे वर्तमानानां प्रत्ययानां स्थाने यथासंख्यं न्तु ह मो इत्यादेशा भवन्ति । हसन्तु, हसन्तु हसेयुर्वा ॥ हसह, हसत हसेत वा ॥ हसामो, हसाम हसेम वा ॥ एवं तुवरन्तु तुवरह तुवरामो ॥ एवं सर्वधातुष्वप्युदाहार्यम् ॥ ३६ ॥

सोस्तु हि ॥ ३७ ॥

विध्यादिष्वर्थेषु सोर्मध्यमपुरुषैकवचनस्य स्थाने हि इत्यादेशः स्यात् तु । देहि देसु । होहि होसु ॥ ३७ ॥

लुगिज्जहीज्जस्विज्जेऽतः ॥ ३८ ॥

सोरित्यनुवर्तते त्विति च । अतः अकारात्परस्य सोः स्थाने लुक् इज्जहि इज्जसु इज्जे इति त्रयश्चादेशा भवन्ति तु ॥ हस हसिज्जइ हसिज्जसु हसिज्जे ॥ पक्षे हससु । अत इति किम् । होसु । ठाहि ॥ ३८ ॥

लड्लृटोश्च जज्जारौ ॥ ३९ ॥

लड्लृटोर्वर्तमानभविष्यतोश्चकाराद्विध्यादिषु च विहितस्य प्रत्ययस्य स्थाने ज जा इत्येतौ रितौ तु भवतः॥ रित्वाद् द्वित्वम् । लट्—हसेज्ज हसेज्जा । पढेज्ज पढेज्जा । सुणेज्ज सुणेज्जा ॥ पक्षे हसइ । पढइ । सुणइ ॥ लृट्—पढेज्ज पढेज्जा । सुणेज्ज सुणेज्जा ॥ पक्षे पढिहिइ । सुणिहिइ ॥ विध्यादिषु--हसेज्ज हसेज्जा, हसतु हसेद्वा ॥ पक्षे हसउ ॥ एवं सर्वत्र पुरुषेषु वचनेषु च अन्येषामपि लकाराणामिच्छन्ति ॥ होज्ज होज्जा, भवति भवेत् भवतु अभवत् अभूत् बभूव भूयात् भविता भविष्यति अभविष्यद्वेत्यर्थः ॥३९॥

---

36. T om. एवं सर्वधातुष्वप्युदाहार्यम्. KMS ऊह्यम् for उदाहार्यम्. 37. KMS सेस्तु for सोस्तु in the Sūtra. KMS सेः for सोः. S भवति तु for स्यात्तु. 38. K सेरित्यनुवर्तते; MS सेरिति वर्तते for सोरित्यनुवर्तते. KMS सेः for सोः. K त्रय आदेशा भवन्ति तु for त्रयश्चादेशा भवन्ति 39. M जर्जार्; S जल् जाल् for जर्जारौ in the Sūtra. KS सर्वपुरुषेषु for सर्वत्र पुरुषेषु. KM om. होज्ज होज्जा.

मध्ये चाजन्तात् ॥ ४० ॥

जर्जारावित्यनुवर्तते । अजन्ताद्धातोः प्रकृतिप्रत्यययोर्मध्ये चकारात्प्रत्ययानां च स्थाने जर् जार् इत्येतौ भवतः लङ्लृटोर्विध्यादिषु च । **होज्जइ होज्जाइ** । होज्ज होज्जा । होज्जहिमि होज्जाहिमि ॥ विध्यादिषु—**होज्जइ होज्जाइ** । होज्ज होज्जा । भवतु भवेद्वा ॥ पक्षे होइ ॥ अजन्तादिति किम् । **हसेज्ज** हसेज्जा । तुवरिज्ज तुवरिज्जा ॥ ४० ॥

माणन्तौल् च लङः ॥ ४१ ॥

लङः क्रियातिपत्तेः यौ तिप्तौ तत्स्थाने माण न्त इत्येतौ चकारात् जर्जारौ च भवतः ॥ लित्त्वान्न विकल्पः ॥ **होमाणो** होन्तो होज्ज होज्जा । अभविष्यदित्यर्थः ॥ ४१ ॥

शतृशानचोः ॥ ४२ ॥

माणन्तौ इत्यनुवर्तते । शतृ शानच् इत्येतयोः प्रत्यययोः स्थाने **माण** न्त इत्येतौ प्रत्येकं भवतः । शतृ—हसमाणो हसन्तो । शानच्—**सहमाणो** सहन्तो ॥ ४२ ॥

स्त्रियामी च ॥ ४३ ॥

स्त्रियां वर्तमानयोः शतृशानचोः स्थाने ईत्वं चकारान्माणन्तौ च भवतः। हसई हसमाणा हसन्ती ॥ वेवई वेवमाणा वेवन्ती ॥ ४३ ॥

---

40. S जल् जाल् इत्यनुवर्तते for जर्जारावित्यनु°. After **होज्जाहिमि** KMT add होज्ज होज्जा होज्जहामि **होज्जस्सामि होज्जस्सं** होहिमि इत्यादि. KMST तुवरेज्ज तुवरेज्जा for तुवरिज्ज तुवरिज्जा. 41. B क्रियादिवृत्तेः for °तिपत्तेः. K जल्जालौ; M जर् जार् इति; S जल्जाल्; T जजार् for जर्जारौ. M om. यौ तिप्तौ तत्.M लित्त्वान्नित्यम्. S om. from होमाणो down to °त्यर्थः. After होन्तो M adds **हसमाण हसंत हसेज्ज** हसेज्जा अहसिष्यत्. 42. KST शतृशानचः for the Sūtra. KS om. Com. on this Sūtra. 43. KS om. the Sūtra and स्त्रियां in Com.

घेत् तुंतव्यक्त्वासु ग्रहेः ॥ ४४ ॥

तुंतव्यक्त्वाप्रत्ययेषु परतो ग्रहेर्धातोर्घेत् इति भवति। तुम्--घेत्तुं ॥ तव्य--घेत्तव्वं ॥ क्त्वा--घेत्तुआण घेत्तूण ॥ क्वचिन्न भवति। गहिउं। गेण्हिअ ॥ ४४ ॥

अन्त्यस्य वचिमुचिरुदिश्रुभुजां डोत् ॥ ४५ ॥

तुंतव्यक्त्वास्वित्यनुवर्तते। वचि मुचि रुदि श्रु भुजि इत्येतेषां धातूनामन्त्यस्य तुंतव्यक्त्वाप्रत्ययेषु ओत् इत्यादेशो डित् भवति ॥ वचि--वोत्तुं। वोत्तव्वं। वोत्तुआण वोत्तूण ॥ मुचि--मोत्तुं। मोत्तव्वं। मोत्तुआण। मोत्तूण ॥ रुदि--रोत्तुं। रोत्तव्वं। रोत्तुआण रोत्तूण ॥ श्रु--सोत्तुं। सोत्तव्वं। सोत्तुआण सोत्तूण ॥ भुजि--भोत्तुं। भोत्तव्वं। भोत्तुआण भोत्तूण ॥ ४५ ॥

त्त द्वो दृशः ॥ ४६ ॥

अन्त्यस्येत्यनुवर्तते। दृशो धातोरन्त्यस्य तुंतव्यक्त्वासु परतः तेषामेव प्रत्ययानामादिना तकारेण सह द्विरुक्तष्ठकारो भवति दट्ठुं। दट्ठव्वं। दट्ठुआण दट्ठूण ॥ ४६ ॥

आ भूतभविष्यति च कृञः ॥ ४७ ॥

कृञोऽन्त्यस्य आ इत्यादेशो भवति भूतभविष्यत्प्रत्यये, चकारात् तुंतव्यक्त्वासु च परतः। काहीअ, अकार्षीत् अकरोत् चकार वा ॥ काहिइ, करिष्यति कर्ता वा ॥ तुम्--काउं ॥ तव्य--काअव्वं ॥ क्त्वा--काउआण काऊण ॥ ४७ ॥

---

44. T गृह्धिधातुः for ग्रहेर्धातोः. MS वा भवति for भवति. T घेत्थाण for घेत्तूण. M om. गहिउं. S गिण्हिउं for गहिउं. KMS om. गेण्हिअ; T गण्हिअ. 45. MS °क्त्वा इत्यनुवर्तते for °क्त्वास्वित्यनु°. After प्रत्ययेषु M adds परेषु. B om. from श्रु down to सोत्तूण. 46. T ठा for द्वो in the Sūtra. KM दृशेर्धातोः for दृशो धातोः. 47. KS काहि for काहीअ.

नमोद्विजरुदां वः ॥ ४८ ॥

नमतेः उद्विजतेः रुदेश्च अन्त्यस्य वकारो भवति । णवइ । उव्विवइ उव्वेइ । रुवइ रोवइ ॥ ४८ ॥

चर् नृतिमदिव्रजाम् ॥ ४९ ॥

नृत मद व्रज इत्येतेषां धातूनामन्त्यस्य चकारो भवति ॥ रित्वाद् द्वित्वम् ॥ णच्चइ । मच्चइ । वच्चइ ॥ ४९ ॥

छर् गमिष्यमासाम् ॥ ५० ॥

गम इष यम आस इत्येतेषामन्त्यस्य छो भवति ॥ रित्वाद् द्वित्वम् ॥ गच्छइ । इच्छइ । जच्छइ । अच्छइ ॥ ५० ॥

रुधो न्धम्भौ ॥ ५१ ॥

रुधेरन्त्यस्य न्ध म्भ इत्येतौ भवतः । रुन्धइ । रुम्भइ ॥ ५१ ॥

युधबुधगृधक्रुधसिधमुहां च ज्झः ॥ ५२ ॥

युध बुध गृध क्रुध सिध मुह इत्येतेषां चकाराद्रुधेश्चान्त्यस्य द्विरुक्तो झकारो भवति । जुज्झइ । बुज्झइ । गिज्झइ । कुज्झइ । सिज्झइ । मुज्झइ । रुज्झइ ॥ ५२ ॥

जर् स्विदाम् ॥ ५३ ॥

स्विदिप्रकाराणां धातूनामन्त्यस्य जो भवति ॥ रित्वाद् द्वित्वम् ॥ सिज्जइ ॥ सव्वङ्गसिरीए संपज्जइ, सर्वाङ्गश्रिया संपद्यते ॥ खिज्जइ ॥ बहुवचनं प्रयोगानुसरणार्थम् ॥ ५३ ॥

---

48. MT रोदितेः; S रुदितेः for रुदेः. T उप्पिइ उप्पेवो for उव्विवइ उव्वेइ. KS रवइ for रुवइ. 49. MT चर् नृतमदव्रजां for the Sūtra. S चल् for चर् in the Sūtra. M चकारो रिद् भवति for चकारो भवति. M om. रित्वाद् द्वित्वम्. 50. S छल्; T छरि for छर् in the Sūtra. T इत्येषां for इत्येतेषां. After इत्येतेषां K adds धातूनाम्. M छकारो रिद् भवति for छो भवति. M om. रित्वाद् द्वित्वम्. KT यच्छइ for जच्छइ. 51. S रुदो न्तो for the Sūtra. 52. T_1 ग्रध for गृध in the Sūtra. T_2 द्रुहां for °मुहां in the Sūtra and Com. M झर् for ज्झः in the Sūtra. M झो for झकारो. 53. T जरि स्विदां for the Sūtra. S जल् for जर् in the Sūtra. M जो रिद् भवति for जो भवति. M om. रित्वाद् द्वित्वम्. K सव्वंगसिरिए for °सिरीए.

छिदिभिदो न्दः ॥ ५४ ॥

छिदिभिदोरन्त्यस्य न्द इत्यादेशो भवति । छिन्दइ । भिन्दइ ॥५४॥

ढः कथिवर्धाम् ॥ ५५ ॥

कथतेर्वर्धतेश्चान्त्यस्य ढत्वं भवति । कढइ । वड्ढइ ॥ बहुवचनाद् वृधेः कृतगुणस्य वर्धेश्चाविशेषेण ग्रहणम् ॥ ५५ ॥

वेष्टेः ॥ ५६ ॥

ढ इति वर्तते । वेष्ट वेष्टने इत्यस्य धातोः 'कगटड' [१·४·७७] इत्यादिना षलोपे टस्य ढो भवति । वेढइ । वेढिज्जइ ॥ ५६ ॥

समुदो लर् ॥ ५७ ॥

सम् उद् इत्युपसर्गाभ्यां परस्य वेष्टेरन्त्यस्य ल्कारो रित् भवति । संवेल्लइ । उव्वेल्लइ ॥ बहुलाधिकारादुतः परस्यापि वा ढः । उव्वेल्लइ ॥ उव्वेढइ ॥ ५७ ॥

खादधावि लुक् ॥ ५८ ॥

खादतौ धावतौ चान्त्यस्य लुग्भवति । खाइ खाअइ ॥ खाओ खाइओ॥ धाइ धाअइ ॥ धाओ धाइओ ॥ बहुलाधिकाराद्वर्तमानभविष्यद्विध्याद्येकवचन एव भवति । तेनेह न भवति । खादन्ति । धावन्ति ॥ क्वचित् 'धावइ पुरओ' इति च दृश्यते ॥ ५८ ॥

---

54. MT ढः for न्दः in the Sūtra. and Com. 55. M ढर् कृषिवर्ध्योः; T ढः कथवर्धाम् for the Sūtra. S ठः for ढः in the Sūtra and Com. KM कड्ढइ for कढइ. M अविशेषग्रहणं for अविशेषेण ग्रहणम्. 56. S ठ इति for ढ इति. M अन्त्यस्य for टस्य. S वेडइ for वेढइ. 57. M रत्; S ल्ल् for लर् in the Sūtra. MS ल्लिद् for रिद्. S om. वा. S ड: for ढः. 58. M खादधा-व्योर्लुक् for the Sūtra. M खादतेर्धावतेश्च for खादतौ धावतौ च. K om. धाइओ. After खाअइ MT add खाहिइ खाउ. After धाअइ MT add धाहिइ धाउ. MT क्विचु for क्वचित्.

रः सृजि ॥ ५९ ॥

सृजिधातावन्त्यस्य रत्वं भवति । विसरइ । ओसरइ । ओसरामि ॥ ॥ ५९ ॥

डः सीदपति ॥ ६० ॥

सीदतौ पततौ च अन्त्यस्य डत्वं भवति । सडइ पडइ ॥ ६० ॥

मीलेः प्रादेर्द्वे तु ॥ ६१ ॥

प्रादेरुपसर्गात्परस्य मीलेरन्त्यस्य द्वे रूपे तु भवतः । पमिल्लइ। पमीलइ। निमिल्लइ निमीलइ । संमिल्लइ । संमीलइ । उम्मिल्लइ उम्मीलइ ॥ प्रादेरिति किम् । मीलइ ॥ ६१ ॥

चलस्फुटे ॥ ६२ ॥

द्वे इत्यनुवर्तते । चलतौ स्फुटतौ च अन्त्यस्य द्वे रूपे तु भवतः। चल्लइ चलइ । फुट्टइ फुडइ ॥ ६२ ॥

शकगे ॥ ६३ ॥

शकादिषु धातुष्वन्त्यस्य द्वे रूपे भवतः ॥ योगविभागान्नित्यम् ॥ शक—सक्कइ । मृग—मग्गइ । लग—लग्गइ । सिच—सिच्चइ । अट—अट्टइ । लुट—लुट्टइ । त्रुट—तुट्टइ । कुप—कुप्पइ । जिम—जिम्मइ । णश—णस्सइ । इत्यादि ॥ ६३ ॥

---

59. T नोसरइ वोसरइ वोसिरामि for विसरइ ओसरइ ओसिरामि. 60. M डः सदपति for the Sūtra. M सीदतेः पततेश्च for सीदतौ पततौ च. 61. S मिलेः for मीलेः in the Sūtra, Com. and illustrations. T om. तु in the Sūtra. M पमलइ for पमिल्लइ. M om. संमिल्लइ संमीलइ. 62. MST चलस्फुटि for the Sūtra. M द्वेतिवर्तते for द्वे इत्यनुवर्तते. M द्वित्वं भवति for द्वे रूपे भवतः.B स्फुटितौ for स्फुटतौ. BM फुडइ for फुट्टइ. 63. M द्वित्वं भवति द्वे for रूपे भवतः. KS तस तस्सइ for णश-णस्सइ. S वच वंचइ for सिच सिञ्चइ. T कुट-कुट्टइ for त्रुट तुट्टइ. T जम-जम्मइ for जिम जिम्मइ.

उवर्णस्यावः ॥ ६४ ॥

धातोरन्त्यस्य उवर्णस्य अव इत्यादेशो भवति । हुङ्—निन्हवइ । च्यु—चवइ । रु—रवइ । कु—कवइ । सु—सवइ । पसवइ ॥ ६४ ॥

य्वोरेङ् ॥ ६५ ॥

इश्च उश्च युः तस्य । तयोर्धात्वोरिवर्णोवर्णयोः एङ् एदोतौ यथासंख्यं भवतः । इवर्णस्य एकारः, उवर्णस्य ओकारः। जेऊण जित्वा । नेऊण नीत्वा । नेइ नयति । उड्डेइ उड्डयति । सोऊण श्रुत्वा ॥ क्वचिन्न भवति । नीओ । उड्डीणो ॥ ६५ ॥

अर ऋः ॥ ६६ ॥

ऋवर्णस्य धातोरन्त्यस्य अर इत्यादेशो भवति । करइ । धरइ । वरइ । सरइ । भरइ । मरइ । तरइ । जरइ ॥ ६६ ॥

अरि वृषाम् ॥ ६७ ॥

वृषप्रकाराणां धातूनामृवर्णस्य अरि इत्यादेशो भवति । वृष—वरिसइ॥ मृष—मरिसइ ॥ कृष- करिसइ ॥ हृष—हरिसइ ॥ बहुवचनं प्रयोगानुसरणार्थम ॥ ६७ ॥

रुषादेऽचो दिः ॥ ६८ ॥

रुषादिधातुष्वचो दीर्घो भवति । रुष—रूसइ ॥ शुष—सूसइ ॥ दुष—दूसइ ॥ तुष—तूसइ ॥ पुष—पूसइ ॥ शिष—सीसइ ॥ इत्यादि ॥ ६८ ॥

---

64. T उवर्णस्य वा for the Sūtra. 65. M योरेदोत् for the Sūtra. M om. एङ्. M om इवर्णस्य एकारः, उवर्णस्य ओकारः. T ओ for ओकारः. S चेऊण चेत्वा for जेऊण जित्वा. T नेंति उड्डेंति for नयति उड्डयति. 66. T अर इ. for the Sūtra. T रीवर्णस्य for ऋवर्णस्य. 68. MS रुषगे दिः; T रुषगे चोदितः for the Sūtra. K दिर्दीर्घो for दीर्घो.

हलोऽक् ॥ ६९ ॥

हलन्ताद्धातोः परः अगागमो भवति ॥ ककारोऽन्तविध्यर्थः ॥ हसइ । भमइ । रमइ । गच्छइ । भुज्जइ । उवसमइ । पावइ । सिञ्चइ । रुन्धइ । मुसइ । वहइ । सहइ ॥ शसूप्रभृतीनां प्रायः प्रयोगो न भवति ॥ ६९ ॥

त्वनतः ॥ ७० ॥

अगिति वर्तते । अकारान्तवर्जिताद्धातोः परः अगागमो भवति तु । पाअइ पाइ । ठाअइ ठाइ । वाअइ वाइ । धाअइ धाइ । जाअइ जाइ । झाअइ झाइ । भाअइ भाइ, बिभेति भाति वा । जम्भाअइ जम्भाइ, जम्भते । उव्वाअइ उव्वाइ, उद्वाति । मिलाअइ मिलाइ, म्लायते । विकेअइ विकेइ, विक्रीणीते ॥ अनत इति किम् । चिइच्छइ चिकित्सते ॥ ७० ॥

अचोऽचाम् ॥ ७१ ॥

धातुषु अचां स्थाने अचो बहुलं भवन्ति । हवइ हिवइ । चिणइ चुणइ । सद्दहणं सद्दहाणं । धावइ धुवइ । रुवइ रोवइ ॥ क्वचिन्नित्यम् । जेइ । चेइ । देइ । लेइ । विहेइ । नासइ ॥ ७१ ॥

णो ह्रश्च चिजिपूश्रुधूस्तुहुलूभ्यः ॥ ७२ ॥

चि जि पू श्रु धू स्तु हु लू इत्येतेभ्यः परो ण इत्यागमो भवति, तत्संनियोगेन ह्रश्च, दीर्घस्य च ह्रस्वः । चिणइ । जिणइ । पुणइ । सुणइ । धुणइ । थुणइ । हुणइ । लुणइ ॥ बहुलाधिकारात् क्वचिद्विकल्पः ॥ उच्चेणइ उच्चेइ । जिणिऊण जेऊण । जिणइ जेणइ । सुणिऊण सोऊण ॥ ७२ ॥

---

69. S om. भुज्जइ. T भवइ for वहइ. 70. MT अकारान्तवर्जितादजन्ताद्धातोः for °वर्जिताद्धातोः. S om. तु T om. ठाअइ ठाइ. K काअइ काइ for झाअइ झाइ. KS विक्कोअइ विक्कोइ for विक्केअइ विक्केइ. T om. from अनत इति down to स्थाने under the next Sūtra. After चिइच्छइ M adds जुउच्छइ. M om. चिकित्सते. 71. BS धवइ for धावइ. STom. जेइ चेइ. Tom. नासइ. K देहि लेहि for देइ लेइ. 72. MT इत्येभ्यः for इत्येतेभ्यः. ST °संनियोगे for °योगेन. M उच्चिणइ for उच्चेणइ. T om. from पुणइ down to जेणइ. K अअइ for जेणइ. S om. from थुणइ down to the end of the Sūtra.

भावकर्मणि तु वर्यग्लुक् च ॥ ७३ ॥

भावे कर्मणि च वर्तमानेभ्यः चिजिपूश्रुधूस्तुहुलुभ्यः परो वकारागमो भवति तु । तत्संनियोगेन यक्प्रत्ययस्य लुक् ॥ रित्वाद् द्वित्वम् ॥ चिव्वइ चिणिज्जइ । जिव्वइ जिणिज्जइ । पुव्वइ पुणिज्जइ । सुव्वइ सुणिज्जइ । धुव्वइ धुणिज्जइ । एवं भविष्यति चिव्वहिइ चिणिज्जहिइ । इत्यादि ॥७३॥

मर्चेः ॥ ७४ ॥

भावकर्मणीत्यनुवर्तते । चिनोतेः परो भावकर्मणि मागमो रिद् भवति । तत्संनियोगेन यग्लुक् च । चिम्मइ । पक्षे चिव्वइ चिणिज्जइ ॥ भविष्यति—चिम्महिइ, चिव्वहिइ, चिणिज्जहिइ ॥ ७४ ॥

अन्त्यस्य हनखनोः ॥ ७५ ॥

मरिति वर्तते । हन खन इत्येतयोः अन्त्यस्य भावकर्मणि मागमो रिद् भवति तु ।तत्संनियोगेन यग्लुक् च । हम्मइ हणिज्जइ । खम्मइ खणिज्जइ॥ भविष्यति—हम्मिहिइ हणिज्जहिइ । खम्मिहिइ खणिज्जहिइ ॥बहुलाधिकारात् हन्तेः कर्तर्यपि । हम्मइ, हन्तीत्यर्थः॥ क्वचिन्न भवति । हन्तव्वं । हन्तूण । हओ ॥७५॥

दुहलिहवहरुहां भरत उच्च ॥ ७६ ॥

दुह लिह वह रुह इत्येषामन्त्यस्य भकारो रिद् भवति तु । तत्संनियोगेन यग्लुक् च । वहेरतः उकारश्च । दुब्भइ दुहिज्जइ । लिब्भइ लिहिज्जइ । वुब्भइ वहिज्जइ । रुब्भइ रुहिज्जइ ॥ भविष्यति—दुब्भिहिइ दुहिज्जहिइ । इत्यादि ॥ ७६ ॥

---

73. S om. the Sūtra. K वर्मावकर्मणि तु यग्लुक्; M वर्मावकर्मणि यग्लुक् च for the Sūtra. T यत् लुक् for यग्लुक् in the Sūtra and Com. here and elsewhere under the following Sūtras upto Sūtra 90. S om. भावे. K om. च. M om. from तत्संनियोगे down to सुणिज्जइ. T तत्संनिषी for तत्संनियोगेन. 74. T मव्वोः for the Sūtra. MST तत्संनियोगे for °योगेन under this Sūtra and elsewhere up to Sūtra 82. KMS चिम्मिहिइ; T चिव्विहइ for चिम्महिइ. KM om. चिव्वहिइ. 75. K अनुवर्तते for वर्तते. MS om. रिद्. After भवति तु K adds रित्वाद् द्वित्वम्. 76. M हर् for भर् in the Sūtra. KMS वहतेः for वहेः. K ऊकारश्च for उकारश्च.

दहेर्झर् ॥ ७७ ॥

अन्त्यस्येत्यनुवर्तते । दहेरन्त्यस्य भावकर्मणि झकारो रिद् भवति तु । तत्संनियोगेन यग्लुक् च । डज्झइ डहिज्जइ ॥ भविष्यति—डज्झिहिइ डहिज्जहिइ ॥ ७७ ॥

बन्धो न्धः ॥ ७८ ॥

झरित्यनुवर्तते । बन्धेर्धातोः न्ध इत्यस्य भावकर्मणि झर् इत्यादेशो भवति तु । तत्संनियोगेन यग्लुक् च । बज्झइ बन्धिज्जइ ॥ भविष्यति--बन्धिहिइ बन्धिज्जहिइ ॥ ७८ ॥

रुध उपसमनोः ॥ ७९ ॥

उप सम् अनु इत्येतेभ्यः परस्य रुन्धेरन्त्यस्य भावकर्मणि झर् भवति तु । तत्संनियोगेन यग्लुक् च । उवरुज्झइ । संरुज्झइ । अणुरुज्झइ ॥ पक्षे उवरुन्धिज्जइ । संरुन्धिज्जइ । अणुरुन्धिज्जइ ॥ भविष्यति—उवरुज्झहिइ । संरुज्झहिइ । इत्यादि ॥ ७९ ॥

द्वे गमिगे ॥ ८० ॥

गमादौ धातोरन्त्यस्य भावकर्मणि द्वे रूपे भवतः । तत्संनियोगेन यक्प्रत्ययस्य लुक् च । गम—गम्मइ गमिज्जइ ॥ हस—हस्सइ हसिज्जइ ॥ भण—भण्णइ भणिज्जइ ॥ लुभ—लुब्भइ लुभिज्जइ ॥ कथ—कत्थइ कहिज्जइ ॥ कुप—कुप्पइ कुविज्जइ ॥ भुज—भुज्जइ भुजिज्जइ ॥ रुद—रुव्वइ रुविज्जइ ॥ 'नमोद्विजरुदाम्' [२·४·४८] इति कृतवकारादेशो रुदिरत्र पठ्यते ॥ भविष्यति—गम्मिहिइ गम्भिज्जहिइ । इत्यादि ॥ ८० ॥

---

77. S झल् for झर् in the Sūtra. 78. KMS झरिति भवति for झर् इत्यादेशो भवति. K बज्झिहिइ बंधिज्जिहिइ for बन्धिहिइ बन्धिज्जहिइ. 79. KM रुधेः for रुन्धेः. K उवरुज्झिहिइ for उवरुज्झहिइ. KS om. संरुज्झहिइ. 80. KS om. लुब्भइ लुभिज्जइ. M लुभइ for लुब्भइ. BK om. पठ्यते.

ईर हृकृतॄजाम् ॥ ८१ ॥

हृञ् कृञ् तॄ जॄ इत्येतेषामन्त्यस्य भावकर्मणि ईर इत्यादेशो भवति तु। तत्संनियोगेन यग्लुक् च। हीरइ हरिज्जइ। कीरइ करिज्जइ। तीरइ तरिज्जइ। जीरइ जरिज्जइ॥ ८१ ॥

अर्जेविढप्पः ॥ ८२ ॥

अन्त्यस्येति निवृत्तम्। अर्जेविढप्प इत्यादेशो भावकर्मणि भवति तु। तत्संनियोगेन यग्लुक् च। विढप्पइ। पक्षे अज्जिज्जइ विढप्पिज्जइ॥ ८२ ॥

आरभ आढप्पः ॥ ८३ ॥

आरभतेर्भावकर्मणि आढप्प इत्यादेशो भवति तु, यग्लुक् च। आढप्पइ। पक्षे आरभिज्जइ आढप्पिज्जइ॥ ८३ ॥

णप्पणज्जौ ज्ञः ॥ ८४ ॥

जानातेर्भावकर्मणि णप्प णज्ज इत्यादेशौ तु भवत, यग्लुक् च। णप्पइ। णज्जइ॥ पक्षे जाणिज्जइ। मुणिज्जइ॥ 'ज्ञम्नोः' [१·४·२७] इति णत्वे णाउज्जइ॥ नञ्पूर्वस्य अणाइज्जइ॥ ८४ ॥

सिप्पः सिचस्निहोः ॥ ८५ ॥

सिञ्चतेः स्निह्यतेश्च भावकर्मणि सिप्प इत्यादेशो भवति तु, यग्लुक् च। सिप्पइ सिच्यते स्निह्यते वा॥ पक्षे सिञ्चिज्जइ। णेहिज्जइ॥ ८५ ॥

वाहिप्पो व्याहृः ॥ ८६ ॥

व्याहरतेर्भावकर्मणि वाहिप्प इत्यादेशो भवति तु, यग्लुक् च। वाहिप्पइ॥ पक्षे वाहरिज्जइ॥ ८६ ॥

---

81. K हृञ्कृञ् for हृकृ in the Sūtra. S हिरिज्जइ for हरिज्जइ. K जिरिज्जइ for जरिज्जइ. 82. BK विडप्पः for विढप्पः in the Sūtra. T om. विडप्पिज्जइ. K विडविज्जइ for विढप्पिज्जइ. 83. MS आडप्पः for आढप्पः in the Sūtra and Com. KS आरभेः for आरभतेः. T आरंभिज्जइ आढविज्जइ for आरभिज्जइ आढप्पिज्जइ. 84. T om. तु. T जणिज्जइ for मुणिज्जइ. 85. M om. the Sūtra and Com., but gives illustrations. KMST om. पक्षे सिञ्चिज्जइ णेहिज्जइ. B णिहहिज्जइ for णेहिज्जइ 86. KS वाहिप्पिज्जइ for पक्षे वाहरिज्जइ T om. पक्षे.

ग्रहेर्घेप्पः ॥ ८७ ॥

ग्रहेर्भावकर्मणि घेप्प इत्यादेशो भवति तु, यग्लुक् च । घेप्पइ ॥ पक्षे गेण्हिज्जइ ॥ ८७ ॥

छिप्पः स्पृशतेः ॥ ८८ ॥

स्पृशतेर्भावकर्मणि छिप्प इत्यादेशो भवति तु, यग्लुक् च । छिप्पइ ॥ पक्षे छिविज्जइ ॥ ८८ ॥

दीसल् दृशेः ॥ ८९ ॥

दृशेर्भावकर्मणि दीस इत्यादेशो लिद् भवति, यग्लुक् च । दीसइ ॥ ॥ ८९ ॥

वचेरुञ्चः ॥ ९० ॥

वचेर्भावकर्मणि उञ्च इत्यादेशो भवति तु, यग्लुक् च । उञ्चइ ॥ पक्षे वइज्जइ ॥ ९० ॥

ईअइज्जौ यक् ॥ ९१ ॥

अपवादनिमित्तोऽयं विधिः । भावकर्मणि विहितो यो यक्प्रत्ययः स ईअ इज्ज इत्यादेशावापद्यते । हसीअइ हसिज्जइ । हसीअन्तो हसिज्जन्तो । हसीअमाणो हसिज्जमाणो ॥ पढीअइ पढिज्जइ । होईअइ होइज्जइ ॥ बहुलाधिकारात् क्वचिद् यगपि विकल्पेन भवति । तेण लहिज्ज । तेण लहिज्जेज्ज ॥ मए णवेज्ज । मए णविज्जेज्ज ॥ तेण अच्छिज्ज । तेण अच्छिज्जेज्ज । तेण अच्छीअइ ॥ ९१ ॥

---

87. KST om. पक्षे. 88. T चिप्पः for छिप्पः in the Sūtra, Com.and illustrations. KS om. पक्षे. KMS छिप्पिज्जइ for छिविज्जइ. 90. K पचेडुर्वञ्चं; M पचेः पुंचः; S पचेल् ंचः; T वचेर्वुञ्च for the Sūtra. KMS पचतेः for वचेः. K उञ्च; M पुंच; T वुञ्च for उञ्च. K उञ्चइ; M पुंचइ; T वुञ्चइ for उञ्चइ. KMST om. पक्षे वइज्जइ. 91. Bp इअइज्जौ यक्; M ईयज्जौ यक् for the Sūtra. Bp KS अपवादनिर्मुक्तः; M °वाद-विनिर्मुक्तः for अपवादनिमित्तः. B पटीअइ पटिज्जइ; K पढिअइ पढिज्जइ for पढीअइ पढिज्जइ. K om. मए णवेज्ज.

स्पृहद्रुओः सिहद्रूमौ णिचोः ॥ ९२ ॥

णिजन्तयोः स्पृहद्रुओ धात्वोः सिह दूम इत्यादेशौ यथासंख्यं भवतः । सिहइ । दूमइ ॥ ९२ ॥

निवृपतोर्णिहोडो वा ॥ ९३ ॥

णिचोरित्यनुवर्तते । निपूर्वस्य वृञः पतेश्च धात्वोर्णिजन्तयोः स्थाने णिहोड इत्यादेशो वा भवति । णिहोडइ निवारयति पातयति वा । पक्षे णिवारेइ । पाडेइ ॥ ९३ ॥

धवलोद्घटोर्दुमोग्गौ ॥ ९४ ॥

वेत्यनुवर्तते । धवलयतेरुत्पूर्वस्य घटयतेश्च णिजन्तयोर्दुम उग्ग इत्यादेशौ यथासंख्यं भवतो वा । दुमइ । उग्गइ ॥ पक्षे धवलेइ । उग्घाडेइ ॥ 'अचोऽचाम्' [२·४·७१] इति दुमोऽत्वे दमिअं धवलिअं ॥ ९४ ॥

भ्रमवेष्टयोस्तालिअण्टपरिआलौ ॥ ९५ ॥

भ्रमयतिवेष्टयन्योर्णिजन्तयोः तालिअण्ट परिआल इत्येतौ यथासंख्यं वा भवतः । तालिअण्टइ ॥ पक्षे भमाडइ । भमाडेइ । भामइ । भामावइ । भामावेइ ॥ वेष्टेः—परिआलइ ॥ पक्षे । वेढइ ॥ ९५ ॥

रावो रञ्जयतेः ॥ ९६ ॥

रञ्जयतेर्णिजन्तस्य राव इत्यादेशो वा भवति । रावेइ । पक्षे रञ्जेइ ॥ ९६ ॥

---

92. Bp स्पृहधूञोः; M स्पृहदशोः in the Sūtra, Com. and illustrations; T स्पृहदशोः in the Sūtra and Com. for स्पृहद्रुओः in the Sūtra. S धूमेइ for दूमइ. 93. M निवृञ्योर्निवो धो वा for the Sūtra. 94. MS वा भवतः यथासंख्यं for यथासंख्यं वा भवतः. S om. from दुमइ down to the end of the Sūtra. M दुम्मइ; T दुग्गइ for दुमइ. T दुमेरित्वे for दुमोऽत्वे. T उद्भिअं for दमिअं. 95. S om. the Sūtra. KM इत्यादेशौ for इत्येतौ. T भमडेइ for भमाडेइ. KT भमावइ भमविइ for भामावइ भामावेइ. K वरिआलइ वरिआलइ वेडेइ for परिआलइ॥ पक्षे वेढइ. 96. T om. वा. MST om. पक्षे.

तुलिडोल्योरोहामरवखोलौ ॥ ९७ ॥

णिजन्तयोः तुल्यतिदोलयत्योश्च नामधात्वोर्यथासंख्यम् ओहाम रवखोल इत्येतौ वा भवतः । ओहामइ । रवखोलइ । पक्षे तुलइ ॥ डोलइ ॥ ९७ ॥

आसंघः संभावेः ॥ ९८ ॥

संभावयतेर्णिजन्तस्य आसंघ इति वा भवति । आसंघइ ॥ पक्षे संभावेइ, संभावयति ॥ ९८ ॥

अर्पेरल्लिवपणामचच्चुप्पाः ॥ ९९ ॥

णिजन्तस्यार्पयतेः अल्लिव पणाम चच्चुप्प इति त्रय आदेशा वा भवन्ति । अल्लिवइ । पणामइ । चच्चुप्पइ ॥ पक्षे अप्पेइ ओप्पेइ ॥ ९९ ॥

गुलुगुञ्छोत्थङ्घोव्वेल्लोल्लाला उन्नमेः ॥ १०० ॥

णिजन्तस्य नमेरुत्पूर्वस्य गुलुगुञ्छ उत्थङ्घ उव्वेल्ल उल्लाल इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । गुलुगुञ्छइ । उत्थङ्घइ उव्वेल्लइ उल्लालइ ॥ पक्षे उण्णवेइ ॥ १०० ॥

प्रकाशेर्णुव्वः ॥ १०१ ॥

णिजन्तस्य प्रकाशेर्णुव्व इति वा भवति । णुव्वइ ॥ पक्षे पआसेइ ॥ ॥ १०१ ॥

णिहुवः कमेः ॥ १०२ ॥

कमेः स्वार्थे णिजन्तस्य णिहुव इत्यादेशो वा भवति । णिहुवइ ॥ पक्षे कामेइ ॥ १०२ ॥

---

97. M तुलिदोलो°; S तुरिदोलो°; T_1 तुलिरोलो°; T_2 तुलिलोरो° for तुलिडोल्यो° in the Sūtra. M तुलयतेदोलयतेश्च for तुलयतिदोलयत्योश्च. S om. पक्षे तुलइ. T तोलइ for डोलइ. 98. K इत्यादेशो वा; M इत्यादेशो for इति वा. K om. संभावेइ; MS om. पक्षे संभावेइ. 99. MT_2 °चुञ्चुप्पाः for चच्चुप्पाः in the Sūtra and Com. S °चंचप्पाः; T_1 °चंचुप्पाः in the Sūtra. M om. वा. 100. S गुलुगुंद°; T_1 गुलुगुंच° for गुलुगुञ्छ° in the Sūtra. K नमयतेः for नमेः. M om. तु. KS उन्नावइ; T उन्नामइ for उण्णवेइ. 101. T णुप्पः for णुव्वः in the Sūtra and Com. ST om. पक्षे. 102. M भुवः कमेः; T_1 णिभुवः कामे for the Sūtra. T_2 कामेः for कमेः in the Sūtra. MS om. पक्षे. T कमेइ for कामेइ.

नशेर्विप्पगालनासवपलावहारवविउडाः ॥ १०३ ॥

नाशयतेर्णिजन्तस्य विप्पगाल नासव पलाव हारव विउड इति पञ्चादेशा वा भवन्ति । विप्पगालइ । नासवइ । पलावइ । हारवइ । विउडइ ॥ पक्षे णासेइ ॥ १०३ ॥

वल आरोपे ॥ १०४ ॥

णिजन्तस्यारोपेर्वल इत्यादेशो वा भवति । वलइ ॥ पक्षे आरोवेइ ॥ ॥ १०४ ॥

विरेचेरोल्लुङ्डोल्लुङ्डपल्लत्थाः ॥ १०५ ॥

विरेचयतेर्णिजन्तस्य ओल्लुङ्ड उल्लुङ्ड पल्लत्थ इति त्रय आदेशा वा भवन्ति । ओल्लुङ्डइ । उल्लुङ्डइ । पल्लत्थइ ॥ पक्षे विरेअइ ॥ १०५ ॥

कम्पेर्विच्छोलः ॥ १०६ ॥

कम्पयतेर्णिजन्तस्य विच्छोल इति वा भवति । विच्छोलइ ॥ पक्षे कम्पेइ ॥ १०६ ॥

रोमन्थेरोग्गालवग्गालौ ॥ १०७ ॥

रोमन्थेर्नामधातोर्णिजन्तस्य ओग्गाल वग्गाल इत्यादेशौ वा भवतः । ओग्गालइ । वग्गालइ ॥ पक्षे रोमन्थइ ॥ १०७ ॥

प्लावेरोव्वालपव्वालौ ॥ १०८ ॥

प्लावयतेर्णिजन्तस्य ओव्वाल पव्वाल इत्यादेशौ वा भवतः । ओव्वालइ । पव्वालइ ॥ पक्षे पावेइ ॥ १०८ ॥

---

103. T om. पक्षे. 104. S आलोपे; T आलोपो for आरोपेः in the Sūtra. S आलोपेः for आरोपेः. KMT om. पक्षे. M om. आरोवेइ. 105. M om. the Sūtra and Com. upto णिजन्तस्य. T ओल्लुंडोल्लुंड° in the Sūtra and Com. T om. पक्षे. 107. MS om. पक्षे. T om. पक्षे. T om. पक्षे रोमन्थेइ. 108. S प्लावेः; T प्लवयतेः for प्लावयतेः. ST om. पक्षे.

मिश्रेर्मीसालमेलवौ ॥ १०९ ॥

मिश्रयतेर्णिजन्तस्य मीसाल मेलव इत्यादेशौ वा भवतः । मीसालइ । मेलवइ ॥ पक्षे मीसेइ ॥ १०९ ॥

छादेर्नूमनुमोव्वालडक्कपव्वालसंतुमाः ॥ ११० ॥

छादयतेर्णिजन्तस्य नूम नुम उव्वाल डक्क पव्वाल संतुम इति षडादेशा वा भवन्ति । नूमइ नुमइ ॥ णत्वे णूमइ णुमइ ॥ उव्वालेइ । डक्केइ । पव्वालेइ । संतुमइ ॥ पक्षे छाएइ ॥ ११० ॥

अच्चुक्कवोक्कौ विज्ञापेः ॥ १११ ॥

विज्ञापेर्णिजन्तस्य अच्चुक्क वोक्क इत्यादेशौ वा भवतः । अच्चुक्कइ वोक्कइ ॥ पक्षे विण्णावेइ ॥ १११ ॥

परिवाडो घटेः ॥ ११२ ॥

घटयतेर्णिजन्तस्य परिवाड इत्यादेशो वा भवति । परिवाडेइ ॥ पक्षे घडेइ ॥ ११२ ॥

दृशेर्दावदक्खवदंसाः ॥ ११३ ॥

दर्शयतेर्णिजन्तस्य दाव दक्खव दंस इति त्रय आदेशा वा भवन्ति । दावइ । दक्खवइ । दंसइ ॥ पक्षे दरिसइ ॥ ११३ ॥

प्रस्थापेः पेट्ठवपेड्डवौ ॥ ११४ ॥

प्रस्थापयतेर्णिजन्तस्य पेट्ठव पेड्डव इत्यादेशौ वा भवतः । पेट्ठवइ । पेड्डवइ ॥ पक्षे पट्ठावेइ ॥ ११४ ॥

---

109. Bp KS विलास°; M वालास° for मीसाल in the Sūtra and Com. KS विलासइ for मीसालइ. T om. पक्षे. KST मिस्सेइ for मीसेइ. 110. T_2 °ढक्क° for डक्क in the Sūtra. KS T om. पक्षे. BT छअइ for छाएइ. 111. KMS विज्ञतेः for विज्ञापेः in the Sūtra and Com. T अपुक्कपोक्कौ for अच्चुक्कवोक्कौ in the Sūtra, Com. and illustrations. KMST om. पक्षे. B विण्णवेइ; T विण्णवइ for विण्णावेइ. 112. T परिवाढो for परिवाडो in the Sūtra, Com. and illustrations. T om. पक्षे. T घटेइ for घडेइ. 113. T °दस्साः in the Sūtra and Com. T om. पक्षे. 114. M पेड्ढव°; T पेण्डव° for पेड्डव° in the Sūtra, Com. and illustrations. KS पट्ठावइ for पट्ठावेइ.

यापेर्जवः ॥ ११५ ॥

यापयतेर्णिजन्तस्य जव इत्यादेशो वा भवति । जवइ ॥ पक्षे जावेइ ॥ ॥ ११५ ॥

विकोशेः पक्खोडः ॥ ११६ ॥

विकोशयतेर्नामधातोर्णिजन्तस्य पक्खोड इत्यादेशो वा भवति । पक्खोडइ ।। पक्षे विओसेइ ॥ ११६ ॥

गुण्ठ उध्दूलेः ॥ ११७ ॥

उध्दूल्यतेर्णिजन्तस्य गुण्ठ इत्यादेशो वा भवति । गुण्ठइ ॥ पक्षे उध्दूलेइ ॥ ११७ ॥

तडेराहोडविहोडौ ॥ ११८ ॥

ताडयतेर्णिजन्तस्य आहोड विहोड इत्यादेशौ वा भवतः । आहोडइ । विहोडइ ॥ पक्षे ताडेइ ॥ ११८ ॥

ह्लादेरवअच्छलणिचश्च ॥ ११९ ॥

ह्लादयतेर्णिजन्तस्याणिजन्तस्य च अवअच्छ इत्यादेशो लिद् भवति । अवअच्छइ, ह्लादते ह्लादयति वा ।। ११९ ॥

निर्मेर्निम्मवनिम्माणौ ॥ १२० ॥

निर्पूर्वस्य मिमीतेर्धातोः निम्मव निम्माण इत्यादेशौ वा भवतः । निम्मवइ । निम्माणइ ॥ 'आदेस्तु' [१·३·५३] इति णत्वे णिम्मवइ । णिम्माणइ ॥ पक्षे णिम्मइ ॥ १२० ॥

---

115. KMST om. पक्षे. T जावइ for जावेइ. 116. T विक्कोशेः for विकोशेः in the Sūtra. T विक्कोशयतेः for विकोशयतेः. KMST om. पक्षे here and also elsewhere promiscuously. The variants are no longer recorded. 117. K गुट्ठइ for गुण्ठइ. K उद्दूलइ; T उद्धूलइ for उद्धूलेइ. 118. T om. पक्षे ताडेइ. 120. S निर्मोः; T निम्मोः for निर्मेः in the Sūtra. T om. णिम्माणइ. KST om. पक्षे णिम्मइ.

आल्लीङोल्लिः ॥ १२१ ॥

आङ्पूर्वस्य लीयतेः अल्लि इत्यादेशो भवति । अल्लिइ । अल्लिअइ ॥ अल्लीणो ॥ १२१ ॥

क्रियः कीणः ॥ १२२ ॥

क्रीणातेः कीण इत्यादेशो भवति । कीणइ ॥ १२२ ॥

केर् च वेः ॥ १२३ ॥

वीत्युपसर्गात्परस्य क्रीणातेः केर् इति भवति । चकारात् कीणश्च ॥ रित्वाद् द्वित्वम् ॥ विक्केइ । विक्कीणइ ॥ १२३ ॥

स्त्यः समः खा ॥ १२४ ॥

स्त्यै ष्ट्यै शब्दसंघातयोः इत्यस्य स्त्यायतेः संपूर्वस्य खा इत्यादेशो भवति । संखाइ । संखाअइ । संखाअं ॥ १२४ ॥

ध्मो धुमोदः ॥ १२५ ॥

ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः इत्यस्य धातोः उदः परस्य धुमा इत्यादेशो भवति । उद्धुमाइ ॥ १२५ ॥

स्थष्ठकुकुरौ ॥ १२६ ॥

उदः परस्य ष्ठा गतिनिवृत्तौ इत्यस्य धातोः ठ कुकुर इत्यादेशौ भवतः । उट्ठइ । उक्कुरइ ॥ १२६ ॥

---

121. T आल्लीङोऽल्ली for the Sūtra. M अल्ली for अल्लिः in the Sūtra and Com. T अल्ला for अल्लि. MT अल्लीइ अल्लीअइ for अल्लिइ अल्लिअइ. B आल्लिणो for अल्लीणो. 122. T क्रीयः for क्रियः in the Sūtra. MS किणः in the Sūtra, Com. and illustrations. 123. T om. the Sūtra and Com.

निरप्पथक्कठाचिट्ठाः ॥ १२७ ॥

स्थ इत्यनुवर्तते। तिष्ठतेः निरप्प थक्क ठा चिट्ठा इति चत्वार आदेशा भवन्ति। निरप्पइ॥ णत्वे णिरप्पइ॥ थक्कइ। ठाइ। चिट्ठाइ। ठाणं। पट्ठाओ। उट्ठाओ। पट्ठाविओ। उट्ठाविओ। चिट्ठिऊण॥ बहुलाधिकारात् थिअं। थाणं। पत्थिओ। उत्थिओ। थाऊण ॥ १२७ ॥

विस्मरः पम्हसवीसरौ ॥ १२८ ॥

विस्मरतेः पम्हस वीसर इत्यादेशौ भवतः। पम्हसइ। वीसरइ॥ पक्षे विम्हइ॥ 'इमष्म' [१-४-६७] इति स्मस्य म्हत्वे 'अर उः' [२-४-६६] इति ऋवर्णस्य रादेशे च सेत्स्यति ॥ १२८ ॥

कृपो णिजवहः ॥ १२९ ॥

कृप कृपायामित्यस्य धातोः अवह इत्यादेशो णिजन्तो भवति। अवहावेइ, कृपां करोतीत्यर्थः ॥ १२९ ॥

जाणमुणौ ज्ञः ॥ १३० ॥

ज्ञा अवबोधने इत्यस्य धातोः जाण मुण इत्यादेशौ भवतः। जाणइ। मुणइ॥ बहुलाधिकारात्क्वचिद्विकल्पः। जाणिअं मुणिअं णाअं ज्ञातम्॥ जाणिऊण णाऊण ज्ञात्वा। जाणणं णाणं ज्ञानम्॥ मणइ इति तु मन्यतेरेव। ॥ १३० ॥

धो दह श्रदः ॥ १३१ ॥

श्रदित्यव्ययात्परस्य डुधाञ् धारणपोषणयोः इत्यस्य धातोः दह इत्यादेशो भवति। सद्दहइ। सद्दहमाणो जीवो। सद्दहणं होइ सम्मत्तं ॥१३१॥

---

127. K °ढक्क°; S °डक्क° for °थक्क in the Sūtra and Com. K तिष्ठतेर्धातोः for तिष्ठतेः. K ढक्कइ; S डंकइ for थक्कइ. KM पट्ठिओ for पट्ठाओ. M उट्ठिओ for उट्ठाओ. 128. S विस्मरः पम्हिरवीसरौ; T विस्मुः पम्हुसवीसरौ for the Sūtra. 129. T अवहवेइ for अवहावेइ. 130. KMST om. मुणिअं.

स्पृशिश्छिवालुक्खफरिसफासफंसालिहच्छिहान् ॥ १३२ ॥

स्पृश स्पर्शने इत्ययं स्पृशतिः छिव आलुक्ख फरिस फास फंस आलिह छिह इति सप्तादेशानापद्यते । छिवइ । आलुक्खइ । फरिसइ । फासइ । फंसइ । आलिहइ । छिहइ ॥ १३२ ॥

फक्कस्थक्कः ॥ १३३ ॥

फक्कतेः थक्क इत्यादेशो भवति । थक्कइ ॥ १३३ ॥

श्लाघः सलाहः ॥ १३४ ॥

श्लाघृ कत्थने इत्यस्य धातोः सलाह इत्यादेशो भवति । सलाहइ ॥ १३४ ॥

थिप्पस्तृपः ॥ १३५ ॥

तृप प्रीणने इत्यस्य धातोः थिप्प इत्यादेशो भवति । थिप्पइ ॥ १३५ ॥

भियो भाबिहौ ॥ १३६ ॥

ञिभी भये इत्यस्य धातोः भा बिह इत्यादेशौ भवतः । भाइ भाअइ । भाइअं ॥ बिहइ । बिहिअं ॥ भीअं इति तु सिद्धावस्थायाम् ॥ १३६ ॥

भुजिरण्णभुञ्जकम्मसमाणचमढचड्डजेमजिमान् ॥ १३७ ॥

भुज पालनाभ्यवहारयोः इत्ययं धातुः अण्ण भुञ्ज कम्म समाण चमढ चड्ड जेम जिम इत्यष्टादेशानापद्यते । अण्णइ । भुञ्जइ । कम्मइ । समाणइ । चमढइ । चड्डइ । जेमइ । जिमइ ॥ १३७ ॥

---

132. T आलुंख° for आलुक्ख° in the Sūtra. S °फस्स° for °फंस° in the Sūtra, Com. and illustrations. B om. छिहइ. 133. MS फक्कः for फक्कः in the Sūtra. 134. S सलाघः for सलाहः in the Sūtra. 135. Bp KS छिप्पस्तृपः for the Sūtra. BM इत्यस्माद्धातोः for इत्यस्य धातोः. K छिप्प; S छप्प for थिप्प. K छिप्पइ for थिप्पइ. 137. MST अण्ह° for अण्ण° in the Sūtra, Com. and illustrations.

जृम्भेऽवेर्जम्भा ॥ १३८ ॥

जृभी गात्रविनामे इत्यस्य धातोः जम्भा इत्यादेशो भवति । अवेः वि इत्युपसर्गात्परस्य न भवति । जम्भाइ । जम्भाअइ ॥ अवेरिति किम् । केलिपसरो विअम्भइ ॥ १३८ ॥

जुञ्जजुज्जजुप्पा युजेः ॥ १३९ ॥

युजिर्योगे इत्यस्य धातोः जुञ्ज जुज्ज जुप्प इति त्रय आदेशा भवन्ति । जुञ्जइ । जुज्जइ । जुप्पइ ॥ १३९ ॥

जनो जाजम्मौ ॥ १४० ॥

जनी प्रादुर्भावे इत्यस्य जा जम्म इत्यादेशौ भवतः । जाइ । जाअइ । जम्मइ ॥ १४० ॥

उत्थल उच्चलेः ॥ १४१ ॥

उत्पूर्वस्य चल गतावित्यस्य धातोः उत्थल इत्यादेशो भवति । उत्थल्इ ॥ १४१ ॥

घूर्णेर्घुम्मपहल्लघोलघुलाः ॥ १४२ ॥

घूर्ण भ्रमणे इत्यस्य धातोः घुम्म पहल्ल घोल घुल इति चत्वार आदेशा भवन्ति । घुम्मइ । पहल्लइ । घोलइ । घुलइ ॥ १४२ ॥

लिम्पो लिपः ॥ १४३ ॥

लिपेर्धातोः लिम्प इत्यादेशो भवति । लिम्पइ ॥ १४३ ॥

शदेर्झडपक्खोडौ ॥ १४४ ॥

शद्लृ शातने इत्यस्य झड पक्खोड इत्यादेशौ भवतः । झडइ । पक्खोडइ ॥ १४४ ॥

---

138. KMS जृम्भोऽवेर्जंभा; T जृंभोवेर्जंभा for the Sūtra. KS विर्जंभइ for विअम्भइ. 140. After इत्यस्य S adds धातोः. 141. S उच्छल उच्छलेः for the Sūtra. BKM उत्थलेः for उच्चलेः in the Sūtra. S शल गतौ for चल गतौ. S उच्छलइ for उत्थलइ. 143. S लिम्पो लिपः for the Sūtra. S लिप्पइ for लिम्पइ. 144. S षदेः for शदेः in the Sūtra.

नेः सदेर्मज्जः ॥ १४५ ॥

निपूर्वस्य षदॢ विशरणगत्यवसादने इत्यस्य मज्ज इत्यादेशो भवति। अत्ता एत्थ णुमज्जइ, श्वश्रूरत्र निषीदति ॥ १४५ ॥

पुच्छः पृच्छेः ॥ १४६ ॥

पृच्छतेः पुच्छ इत्यादेशो भवति । पुच्छइ ॥ १४६ ॥

गण्ठो ग्रन्थेः ॥ १४७ ॥

ग्रन्थेर्गण्ठ इत्यादेशो भवति । गण्ठइ ॥ १४७ ॥

तुवरजअडौ त्वरेः ॥ १४८ ॥

त्वरेः तुवर जअड इत्यादेशौ भवतः । तुवरइ । जअडइ । तुवरन्तो । जअडन्तो ॥ १४८ ॥

अतिङि तुरः ॥ १४९ ॥

त्वरेरित्यनुवर्तते । तिङ्वर्जिते प्रत्यये परतः त्वरेः तुर इत्यादेशो भवति । तुरिओ । तुरन्तो ॥ अतिङीति किम् । तुवरइ ॥ १४९ ॥

तूरः शतृतिङि ॥ १५० ॥

शतृप्रत्यये तिङि च परे त्वरतेः तूर इत्यादेशो भवति । तूरन्तो । तूरइ ॥ १५० ॥

पर्यसः पल्लट्टपल्लोट्टपल्हत्थाः ॥ १५१ ॥

परिपूर्वः असु क्षेपणे इत्ययं धातुः पल्लट्ट पल्लोट्ट पल्हत्थ इति त्रीनादेशानापद्यते । पल्लट्टइ । पल्लोट्टइ । पल्हत्थइ ॥ १५१ ॥

---

145. S शदेः for सदेः in the Sūtra. B om. the Com. on the Sūtra. M अत्था for अत्ता. 147. After गण्ठइ KMS adds गंठी. 148. MT °जअडौ for °जअडौ in the Sūtra, Com. and illustrations. 150. S शतृतिङोः for शतृतिङि in the Sūtra. 151. B पर्यसेः for पर्यसः in the Sūtra. B पल्लोट्ट for पल्लोट्ट° in the Sūtra. K पर्यसः for परिपूर्वः असु क्षेपणे इत्ययं धातुः. KM om. त्रीन्.

मृद्नातेर्मलपरिहट्टखुड्डपन्नाडचड्डमड्डमडाः ॥ १५२ ॥

मृद्नातेः मल परिहट्ट खुड्ड पन्नाड चड्ड मड्ड मड इति सप्तादेशा भवन्ति। मलइ । परिहट्टइ । खुड्डइ । पन्नाडइ । चड्डइ । मड्डइ । मडइ ॥ १५२ ॥

दृशिरोअक्खणिअच्छावअच्छचज्जावअज्झपुलअपुलोअदेक्खावअक्ख-पेच्छावआसपासणिअसच्चवावक्खान् ॥ १५३ ॥

दृशिर् प्रेक्षणे इत्ययं धातुः ओअक्ख णिअच्छ अवअच्छ चज्ज अवअज्झ पुलअ पुलोअ देक्ख अवअक्ख पेच्छ अवआस पास णिअ सच्चव अवक्ख इति पञ्चदशादेशानापद्यते। ओअक्खइ। णिअच्छइ। अवअच्छइ। चज्जइ। अवअज्झइ। पुलअइ। पुलोअइ। देक्खइ। अवअक्खइ। पेच्छइ। अवआसइ। पासइ। णिअइ। सच्चवइ। अवअक्खइ। णिज्झअइ इति तु निपूर्वस्य ध्यायतेर्दर्शनार्थस्य ॥१५३॥

झरपज्झरपच्चड्डखिरणिड्डुअणिब्बलाः क्षरेः ॥ १५४ ॥

क्षरतेः झर पज्झर पच्चड्ड खिर णिड्डुअ णिब्बल इति षडादेशा भवन्ति। झरइ। पज्झरइ। पच्चड्डइ। खिरइ। णिड्डुअइ। णिब्बलइ ॥१५४॥

कासेरवाद्वासः ॥ १५५ ॥

अवात्परस्य कासेः वास इत्यादेशो भवति। ओवासइ ॥ १५५ ॥

न्यसेर्णिमणुमौ ॥ १५६ ॥

अस्यतेर्निपूर्वस्य णिम णुम इत्यादेशौ भवतः। णिमइ। णुमइ ॥१५६॥

---

152. S om. the Sūtra. KT °खुट्ट° for °खुड्ड° in the Sūtra. T खुट्ट खुट्टइ for खुड्ड खुड्डइ. M मडइ for मडइ. 153. T दृश प्रेक्षणे for दृशिर प्रेक्षणे. K अवअज्झइ for अवअच्छइ 154. T °पच्छड्ड° for °पच्चड्ड° in the Sūtra, Com. and illustrations. K °णिद्दुअ° for °णिड्डुअ° in the Sūtra and Com. M °णीदुअ° for °णिड्डुअ° in the Sūtra. M णिद्दुअइ for णिड्डुअइ. 155. T काशेः for कासेः in the Sūtra, and Com. 156. MST न्यसो for न्यसेः in the Sūtra.

ग्रहेर्णिरुवारगेण्हबलहरपग्गाहिपच्चुआः ॥ १५७ ॥

ग्रह उपादाने इत्यस्य धातोः णिरुवार गेण्ह बल हर पग्ग अहिपच्चुअ इति षडादेशा भवन्ति। णिरुवारइ। गेण्हइ। बलइ। हरइ। पग्गइ। अहिपच्चुअइ ॥१५७॥

॥ इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसर्वविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ

द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

---

157. T °पह° for °पग्ग° in the Sūtra, Com. and illustrations. M अहिवच्चअइ for अहिपच्चुअइ. Colophon : KST om. from °मदर्ह down to श्रीमत्. S °व्याकरणे वृत्तौ. T द्वितीयस्याध्यायस्य.

तृतीयोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ॥

होहुवहवा भुवेस्तु ॥ १ ॥

भुवेर्धातोः हो हुव हव इति त्रय आदेशा भवन्ति तु । होइ । होन्ति । हुवइ हुवन्ति । हवइ हवन्ति ॥ पक्षे भवइ ॥ परिहीणविहवो भविउं पभवइ ॥ परिभवइ । संभवइ ॥ क्वचिदन्यदपि । उभअहुत्तं ॥ १ ॥

पृथक्स्पष्टे णिव्वडः ॥ २ ॥

भुवेरित्यनुवर्तते । पृथग्भूते स्पष्टे च कर्तरि भुवेः णिव्वड इत्यादेशो भवति । णिव्वडइ, पृथक् स्पष्टो वा भवतीत्यर्थः ॥ २ ॥

प्रभौ हुप्पः ॥ ३ ॥

त्वित्यनुवर्तते । प्रभुकर्तृकस्य भुवो हुप्प इत्यादेशो भवति तु ॥ अङ्गे वि न पहुप्पइ ॥ पक्षे । पहवइ प्रभवति ॥ ३ ॥

हु क्ते ॥ ४ ॥

भुवः क्तप्रत्यये परे हु इत्यादेशो भवति । हुअं ॥ ४ ॥

हुरचिति ॥ ५ ॥

चिद्वर्जिते प्रत्यये परे हु इत्यादेशो रिद् भवति तु । हुन्ति । होन्ति । हुओ ॥ अचिनीति किम् । होइ ॥ ५ ॥

---

1. S होहुवहावा for होहुवहवा in the Sūtra. K भवेरतु. M भवेः for भुवेस्तु in the Sūtra. KM भवेः for भुवेः. BT हरिहाणविभवो for परिहीणविहवो. B परभइ; S पहवइ; MT वहइ for पभवइ. B उभइ M उब्भवअइ; T उब्भुअइ for उभअ. S हुतं; T हतं for हुत्तं. 2. T णिर्बन्धः for णिव्वडः in the Sūtra, Com. and illustrations. K णिव्वडइ for णिव्वडइ. 3. BT अगे वि अ न for अङ्गे वि न. 4. M हूक्ते; T हूर्तेः for the Sūtra. M हूअं; S हुति for हुअं. 5. S om. the Sūtra and Com. upto हुओ. T om रिद्. T om. हुओ.

आघ्राक्षिस्नामाइग्घणिज्झराब्बुत्ताः ॥ ६ ॥

आजिघ्रतिक्षयतिस्नातीनां धातूनाम् आइग्घ णिज्झर अब्बुत्त इत्यादेशा यथासंख्यं भवन्ति तु । आइग्घइ आजिघ्रति । णिज्झरइ क्षयति । अब्बुत्तइ स्नाति ॥ पक्षे । अग्घाइ । खअइ । ण्हाइ ॥ ६ ॥

रा वेर्लियः ॥ ७ ॥

लीङ् श्लेषणे इत्यस्य धातोः वि इत्युपसर्गात्परस्य रा इत्यादेशो भवति तु । विराइ । विराअइ । विलिज्जइ ॥ ७ ॥

निना ल्हिक्कणिलुक्कणिलिअलिक्कलुक्कणिरुग्घाः ॥ ८ ॥

लिय इत्यनुवर्तते । नि इत्युपसर्गेण सह लीयतेः ल्हिक्क णिलुक्क णिलिअ लिक्क लुक्क णिरग्घ इति षडादेशा भवन्ति तु । ल्हिक्कइ । णिलुक्कइ । णिलिअइ । लिक्कइ । लुक्कइ । णिरुग्घइ ॥ पक्षे । णिलिज्जइ ॥ ८ ॥

सारः प्रहृः ॥ ९ ॥

प्रहरतेः सार इत्यादेशो भवति तु । सारइ ॥ पक्षे । पहरइ ॥ ९ ॥

प्रसुरुवेल्लवअल्लौ ॥ १० ॥

प्रसरतेः उवेल्ल वअल्ल इत्यादेशौ भवतः । उवेल्लइ । वअल्लइ । पसरइ ॥ १० ॥

महमहो गन्धे ॥ ११ ॥

प्रसरतेर्गन्धविषये महमह इत्यादेशो भवति तु । महमहइ मालईगन्धो ॥ गन्ध इति किम् । पसरइ ॥ ११ ॥

---

6. M °जि° for °क्षि° in the Sūtra. MT °अब्भुत्ताः in the Sūtra and Com. S °अब्भंताः in the Sūtra and Com. M °जयति°; T °क्षियति° for °क्षयति°. M झिज्जइ जयति; T क्षियति for क्षयति. M om. पक्षे here and elsewhere and hence the omission is not recorded hereafter. S अब्भंतइ for अब्बुत्तइ. 7. M लीयः for लियः in the Sūtra. 8. M °णिलीअ°; T °णिलीय° in the Sūtra and Com. MT °णिरग्घाः for णिरुग्घाः in the Sūtra, Com. and illustrations. 9. M वर्तते for अनुवर्तते. 10. S अवेल्ल° for उवेल्ल° in the Sūtra. T उव्वेल्लपअल्लौ in the Sūtra, Com. and illustrations. 11. T पाडईगंधो for मालईगन्धो. After °गन्धो M add S पक्षे पसरइ गंधो.

झरझूरसुमरविम्हरहरहललुढपअरपम्हुहाः स्मरतेः ॥ १२ ॥

स्मरतेः झर झूर सुमर विम्हर हर हल लुढ पअर पम्हुह इति नवादेशाः भवन्ति तु । झरइ । झूरइ । सुमरइ । विम्हरइ । हरइ । हलइ । लुढइ । पअरइ । पम्हुहइ ॥ पक्षे । सरइ ॥ १२ ॥

व्याप्रेराअड्डः ॥ १३ ॥

व्याप्रियतेः आअड्ड इत्यादेशो भवति तु ॥ आअड्डइ । वावरइ ॥१३॥

निस्सुर्निहरनिलदाढवरहाढाः ॥ १४ ॥

निःसरतेः निहर निल दाढ वरहाढ इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । निहरइ । निलइ । दाढइ । वरहाढइ । नीसरइ ॥ १४ ॥

जाग्रेर्जग्गः ॥ १५ ॥

जागृ निद्राक्षये इत्यस्य धातोः जग्ग इत्यादेशो भवति तु । जग्गइ । जागरइ ॥ १५ ॥

पट्टघोट्टडल्लपिज्जाः पिबेः ॥ १६ ॥

पिब इति विहितादेशस्य पा पाने इत्यस्य धातोः पट्ट घोट्ट डल्ल पिज्ज इत्यादेशाश्चत्वारो भवन्ति तु । पट्टइ । घोट्टइ । डल्लइ । पिज्जइ ॥ पक्षे । पिबइ ॥ १६ ॥

---

12. Bp S °जूर° for °झूर° in the Sūtra, Com. and illustrations. KM °लढ° for °लुढ° in the Sūtra, Com. and illustrations. S °पम्हहाः for °पम्हुहाः in the Sūtra. M विस्मरतेः for स्मरतेः in the Sūtra. 13. MT आअड्ढ ; S आअंडः in the Sūtra, Com. and illustrations. KS वावारइ; M वारइ for वावरइ. 14. M नीहरनील° in the Sūtra, and Com. T °थाढ° for °दाढ° in the Sūtra, Com. and illustrations. S वरहाडाः in the Sūtra. K नीहरइ for णिहरइ. 15. K जागृतेर्जग्गः for the Sūtra. Mss. om. तु in Com. promiscuously and hence not noted henceforward. 16. KM इति चत्वार आदेशा भवन्ति. T पीवइ for पिबइ.

धुवो धूञः ॥ १७ ॥

धूञ कम्पने इत्यस्य धातोः धुव इत्यादेशो भवति तु। धुवइ। धुणइ ॥ १७ ॥

हुणः शृणोतेः ॥ १८ ॥

श्रु श्रवणे इत्यादेशो भवति तु। हुणइ। सुणइ ॥ १८ ॥

म्लैर्वापव्वाओ ॥ १९ ॥

म्लै गात्रविनामे इत्ययं धातुः वा पव्वाअ इत्यादेशावापद्यते तु। वाइ। पव्वाअइ। मिलाइ ॥ १९ ॥

कृञः कुणः ॥ २० ॥

डुकृञ् करणे इत्यस्य धातोः कुण इत्यादेशो भवति तु। कुणइ। करइ ॥ २० ॥

काणेक्षिते णिआरः ॥ २१ ॥

कृञ इत्यनुवर्तते। कृञः काणेक्षितविषये णिआर इत्यादेशो भवति तु। णिआरइ, काणेक्षितं करोतीत्यर्थः ॥ २१ ॥

निष्टम्भे णिट्ठुहः ॥ २२ ॥

निष्टम्भविषयस्य कृञः णिट्ठुह इत्यादेशो भवति तु। णिट्ठुइ, निष्टम्भं करोतीत्यर्थः ॥ २२ ॥

श्रमे वापम्फः ॥ २३ ॥

श्रमविषयस्य कृञः वापम्फ इत्यादेशो भवति तु। वापम्फइ, श्रमं करोति ॥ २३ ॥

---

17. S धुवो धूङःfor the Sūtra. धूङ् कम्पने for धूञ् कम्पने. 18. T हुणः for हुणः in the Sūtra, Com. and illustrations. 19. T मम्लैर्वापम्वायौ for the Sūtra. K °पव्वाओ in the Sūtra. T उप्पाअइ for पव्वाअइ. 20. S कृङः कुणः for the Sūtra. 21. T काणेक्षिके for °क्षिते in the Sūtra and Com. Bp णिअरः; S णाआरः for णिआरः in the Sūtra. S कृङ् for कृञ्. KM °विषयस्य for °विषये. 23. T वावंफः for वापम्फः in the Sūtra, Com. and illustrations.

संदाणोऽवष्टम्भे ॥ २४ ॥

अवष्टम्भविषयस्य कृञः संदाण इत्यादेशो भवति तु। संदाणइ, अवष्टम्भं करोति ॥ २४ ॥

णिव्वोलो मन्युनौष्ठमालिन्ये ॥ २५ ॥

मन्युना करणेन यदोष्ठमालिन्यं तद्विषये कृञो णिव्वोल इत्यादेशो भवति। णिव्वोलइ, मन्युना ओष्ठं मलिनं करोति ॥ २५ ॥

गुललश्चाटौ ॥ २६ ॥

चाटुविषयस्य कृञो गुलल इत्यादेशो भवति। गुललइ, चाटु करोतीत्यर्थः ॥ २६ ॥

पअल्लो लम्बनशैथिल्ययोः ॥ २७ ॥

लम्बनशैथिल्यविषयस्य कृञः पअल्ल इत्यादेशो भवति। पअल्लइ, लम्बयति शैथिल्यं करोति वा ॥ २७ ॥

क्षुरे कम्मः ॥ २८ ॥

क्षुरविषयस्य कृञः कम्म इत्यादेशो भवति तु। कम्मइ, क्षुरं करोति ॥ २८ ॥

णिलुञ्छो निष्पाताच्छोटे ॥ २९ ॥

निष्पतनविषयस्य आच्छोटनविषयस्य च कृञः णिलुञ्छ इत्यादेशो भवति तु ॥ णिलुञ्छइ, निष्पतति आच्छोटयति वा ॥ २९ ॥

---

24. B सद्दाणो for संदाणो in the Sūtra, Com. and illustrations. 25. KM णिव्बोलो for णिव्वोलो in the Sūtra, Com. and illustrations. After °मालिन्यं B adds करोति. 26. T गुग्लः for गुललः in the Sūtra. T गुल्लइ for गुललइ. 27. M लंब° for लम्बन° in the Sūtra. M om. from पअल्लइ down to the end of Com. 28. M om. the Sūtra and Com. upto तु. M करोतीत्यर्थः for करोति. 29. B णिलुञ्छो in the Sūtra, Com. and illustrations. K निष्पातविषयस्य for निष्पतनविषयस्य. K आच्छोटविषयस्य for आच्छोटन°. K om. च.

साहट्टसाहरौ संवुः ॥ ३० ॥

संपूर्वस्य वृणोतेः साहट्ट साहर इत्यादेशौ तु भवतः । साहट्टइ । साहरइ । संवरइ ॥ ३० ॥

ओहिरोग्घौ निद्रः ॥ ३१ ॥

निपूर्वस्य द्रै स्वप्ने इत्यस्य धातोः ओहिर उग्घ इत्यादेशौ तु भवतः । ओहिरइ । उग्घइ । णिद्दाइ ॥ ३१ ॥

उद्वः ओरुम्मावसुऔ ॥ ३२ ॥

उत्पूर्वस्य वा गतिगन्धनयोः इत्यस्य धातोः ओरुम्मा वसुआ इत्यादेशौ तु भवतः । ओरुम्माइ । वसुआइ । उव्वाइ ॥ ३२ ॥

रुवो रुञ्जरुण्टौ ॥ ३३ ॥

रु शब्दे इत्येतस्य रौतेर्धातोः रुञ्ज रुण्ट इत्यादेशौ तु भवतः । रुञ्जइ । रुण्टइ । रुवइ ॥ ३३ ॥

कोक्कवोक्कौ व्याहुः ॥ ३४ ॥

व्याहरतेः कोक्क वोक्क इत्यादेशौ तु भवतः । कोक्कइ । वोक्कइ । वाहरइ ॥ ३४ ॥

संनाम आदृङः ॥ ३५ ॥

आद्रियतेः संनाम इत्यादेशो भवति तु । संनामइ आदरइ ॥ ३५ ॥

ओहरौसरावतरेस्तु ॥ ३६ ॥

अवपूर्वस्य तॄ प्लवनतरणयोः इत्यस्य धातोः ओहर ओसर इत्यादेशौ तु भवतः । ओहरइ । ओसरइ ॥ त्वधिकारे पुनस्तुग्रहणमधिकारस्यानुस्मरणार्थम् ॥ ३६ ॥

---

31. T ओहीरोग्घौ for ओहिरोग्घौ in the Sūtra. T ओहीर for ओहिर. T ओहीरइ for ओहिरइ. 32. B °वसऔ; KMS °वसूआ for °वसुऔ in the Sūtra. 34. °पोक्कौ for °वोक्कौ in the Sūtra, Com. and illustrations. 36. M ओह° for ओहर° in the Sūtra, Com. and illustrations. M त्विकरणे for त्वधिकारे. Bp °कर्षणार्थं for °नुस्मरणार्थम्.

शकेस्तरतीरपारचआः ॥ ३७ ॥

शक्लृ शक्तौ इत्यस्य धातोः तर तीर पार चअ इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । तरइ । तीरइ । पारइ । चअइ ॥ पक्षे सक्कइ ॥ तरतेरपि तरइ ॥ तीर पार कर्मसमासौ इत्यनयोरपि । तीरइ । पारइ ॥ त्यजेरपि । चअइ ॥३७॥

सोल्लपउल्लौ पचेः ॥ ३८ ॥

डुपचष् पाके इत्यस्य धातोः सोल्ल पउल्ल इत्यादेशौ तु भवतः । सोल्लइ । पउल्लइ । पअइ ॥ ३८ ॥

वेअडः खचेः ॥ ३९ ॥

खचतेर्वेअड इत्यादेशो भवति तु । वेअडइ । खअइ ॥ ३९ ॥

णिव्वलो मुचेर्दुःखे ॥ ४० ॥

दुःखविषयस्य मुच्लृ मोक्षणे इत्यस्य धातोः णिव्वल इत्यादेशो भवति तु । णिव्वलइ, दुःखं मुञ्चतीत्यर्थः ॥ ४० ॥

अवहेडमेल्लणिल्लुञ्छोसिकदिसडरेअवछण्डाः ॥ ४१ ॥

मुचेरित्यनुवर्तते । मुञ्चतेः अवहेड मेल्ल णिल्लुञ्छ उसिक्क दिसड रेअव छण्ड इति सप्तादेशा भवन्ति वा । अवहेडइ । मेल्लइ । णिल्लुञ्छइ । उसिक्कइ । दिसडइ । रेअवइ । छण्डइ ॥ पक्षे । मुअइ ॥ ४१ ॥

सिञ्चसिप्पौ सिचेः ॥ ४२ ॥

सिञ्चतेः सिञ्च सिप्प इत्यादेशौ तु भवतः । सिञ्चइ । सिप्पइ । सेअइ ॥ ४२ ॥

---

37. ST °तिर° for °तीर° in the Sūtra, Com. and illustrations. T om. त्यजेरपि. After चअइ B adds: त्यो ऽचैत्ये इति त्यस्य चः जलोपश्च. 38. ST °पउलौ for °पउल्लौ in the Sūtra, Com. and illustrations. 39. KST खचइ for खअइ. 41. BKS °मोल्ल° for °मेल्ल° in the Sūtra, Com. and illustrations. Bp °णिलुञ्छ° for °णिल्लुञ्छ° in the Sūtra. MS °धसाड°; T °धसाड° in the Sūtra, Com. and illustrations. T चड्डाः for °छण्डाः in the Sūtra, Com. and illustrations. KST वर्तते for अनुवर्तते. 42. MS °सिपौ for °सिप्पौ in the Sūtra, Com. and illustrations.

रचेर्विडविड्डावहोग्गहाः ॥ ४३ ॥

रचि प्रतियत्ने इत्यस्य धातोः विडविड्ड अवह उग्गह इति त्रय आदेशा भवन्ति तु । विडविड्डइ । अवहइ । उग्गहइ । रअइ ॥ ४३ ॥

केवलाअसारवसमारोवहत्थाः समारचेः ॥ ४४ ॥

समारचेः केवलाअ सारव समार उवहत्थ इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । केवलाअइ । सारवइ । समारइ । उवहत्थइ । समारअइ ॥ ४४ ॥

मस्जेराउड्डणिउड्डबुड्डखुप्पाः ॥ ४५ ॥

टुमस्जी शुद्धौ इत्यस्य धातोः आउड्ड णिउड्ड बुड्ड खुप्प इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । आउड्डइ । णिउड्डइ । बुड्डइ । खुप्पइ । मज्जइ ॥ ४५ ॥

अनुव्रजतेः पडिअग्गः ॥ ४६ ॥

व्रज गतौ इत्यस्य धातोः अनुपूर्वस्य पडिअग्ग इत्यादेशो भवति तु । पडिअग्गइ । अणुवअइ ॥ ४६ ॥

वञ्चेर्वेहववेलवजूरवोम्मच्छाः ॥ ४७ ॥

वञ्चतेः वेहव वेलव जूरव उम्मच्छ इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । वेहवइ । वेलवइ । जूरवइ । उम्मच्छइ । वञ्चइ ॥ ४७ ॥

---

43. Bp KM °होट्टहाः; S °होंटहाः in the Sūtra. ST पयत्ने for प्रतियत्ने. KM उद्दह उद्दहइ. 44. M केलाअ° for केवलाअ° in the Sūtra, Com. and illustrations. T om. समारअइ. 45. S मंजेः for मस्जेः in the Sūtra and Com. K °कुप्पाः; S °कुंपाः for खुप्पाः in the Sūtra. 46. T पडिअट्टः for पडिअग्गः in the Sūtra, Com. and illustrations. M अणुवज्जइ; T अणुवच्चइ for °वअइ. 47. M वंचतेः in the Sūtra. S °जारव°; T °झारव in the Sūtra, Com. and illustrations. M °उमच्छाः in the Sūtra and Com.

रोसाणोबुसलुहलुञ्छपुञ्छफुसफुस्सघसहुला मार्ष्टेः ॥ ४८ ॥

मृजू शुद्धौ इत्यस्य धातोः रोसाण उबुस लुह लुञ्छ पुञ्छ फुस फुस्स घस हुल इति नवादेशा भवन्ति तु । रोसाणइ । उबुसइ । लुहइ । लुञ्छइ । पुञ्छइ । फुसइ । फुस्सइ । घसइ । हुलइ ॥ पक्षे । मज्जइ ॥ ४८ ॥

भञ्जेर्वेमअमुसुमूरमूरपविरज्जसूरसूडकरञ्जनिरञ्जविराः ॥ ४९ ॥

भञ्जी आमर्दने इत्यस्य धातोः वेमअ मुसुमूर मूर पविरज्ज सूर सूड करञ्ज निरञ्ज विर इति नवादेशा भवन्ति तु । वेमअइ । मुसुमूरइ । मूरइ । पविरज्जइ । सूरइ । सूडइ । करञ्जइ । निरञ्जइ । विरइ ॥ पक्षे । भञ्जइ ॥४९॥

गर्जेर्बुक्कः ॥ ५० ॥

गर्जतेः बुक्क इत्यादेशो भवति तु । बुक्कइ ॥ गज्जइ ॥ ५० ॥

डिक्को वृषे ॥ ५१ ॥

वृषकर्तृकस्य गर्जतेः डिक्क इत्यादेशो वा भवति । डिक्कइ, वृषो गर्जतीत्यर्थः ॥ ५१ ॥

तिजेरोसुक्कः ॥ ५२ ॥

तिज निशातने इत्यस्य धातोः ओसुक्क इत्यादेशो भवति तु । ओसुक्कइ । तेअइ । तेअणं ॥ ५२ ॥

आरोलवमालौ पुञ्जेः ॥ ५३ ॥

पुञ्जेः आरोल वमाल इत्यादेशौ वा भवतः । आरोलइ । वमालइ । पुञ्जइ ॥ ५३ ॥

---

48. T उग्घुस° for उबुस in the Sūtra, Com. and illustrations. MT °लुंछपुंछ° for °लुञ्छपुञ्छ° in the Sūtra, Com. and illustrations. M °पुस°;T पुस्स for फुस in the Sūtra. Com. and illustrations. T om. °घस° in the Sūtra, Com. and illustrations. 49. T वेअमअ° for वेमअ° in the Sūtra. S °परिरंज° for °पविरज्ज° in the Sūtra, Com. and illustrations. T °नीरंज° for °निरज्ज° in the Sūtra, Com. and illustrations. 50. S गर्जतेर्भुक्कः; T गर्जतेर्बुक्कः for the Sūtra. S भुंकइ for बुक्कइ. 52.B निशाने for निशातने. 53. Bp वमूलौ for °वमालौ in the Sūtra. MST पुंजिरारोल वमाल इत्यादेशावापद्यते.

कम्मवसुपभुजि ॥ ५४ ॥

उपपूर्वको भुजिः कम्मव इत्यादेशमापद्यते तु । कम्मवइ । उवभुञ्जइ॥५४॥

विडवमर्जिः ॥ ५५ ॥

अर्जिः विडव इत्यादेशमापद्यते तु । विडवइ । अज्जइ ॥ ५५ ॥

लज्जेर्जीहः ॥ ५६ ॥

ओलस्जी व्रीडायाम् इत्यस्य धातोः जीह इत्यादेशो भवति तु । जीहइ । लज्जइ ॥ ५६ ॥

राजेः सहरेहच्छज्जरिरग्घाः ॥ ५७ ॥

राजृ दीप्तौ इत्यस्य धातोः सह रेह छज्ज रिर अग्घ इति पञ्चादेशा भवन्ति तु । सहइ । रेहइ । छज्जइ । रिरइ । अग्घइ । राअइ ॥ ५७ ॥

घटेर्गडः ॥ ५८ ॥

घटतेर्गड इत्यादेशो भवति तु । गडइ । घडइ ॥ ५८ ॥

समो गलः ॥ ५९ ॥

समः परस्य घटतेर्गल इत्यादेशो भवति तु । मंगलइ । मंघडइ॥५९॥

हासेन स्फुटतेर्मुरः ॥ ६० ॥

हासेन कारणेन प्रयुज्यमानो यः स्फुट विकसने इति धातुः तस्य मुर इत्यादेशो भवति तु । मुरइ, हासेन स्फुटतीत्यर्थः ॥ ६० ॥

मण्डेष्टिविडिक्करिडचिञ्चचिञ्चिल्लचिञ्चआः ॥ ६१ ॥

मडि भूषायाम । इत्यस्य धातोः टिविडिक्क रिड चिञ्च चिञ्चिल्ल चिञ्चअ इति पञ्चादेशा वा भवन्ति । टिविडिक्कइ । रिडइ । चिञ्चइ । चिञ्चिल्लइ । चिञ्चअइ ॥ पक्षे । मण्डइ ॥ ६१ ॥

55. B पिडवं in the Sūtra, Com. and illustrations. S पिढवइ for विडवइ. 56. M लस्जेः for लज्जेः. in the Sūtra. T लज्ज for ओलस्जी. 57. MT °रार° for रिर° in the Sūtra, Com. and illustrations. 58. T गढः for गडः in the Sūtra and Com. 59. S संघल्इ for संघडइ. 60. T विकासने for विकसने. M इत्ययं for इति. BS इत्यस्य धातोः तस्य for इति धातुः तस्य. 61. M टिविडिक° for टिविडिक्क° in the Sūtra, Com. and illustrations. T °रांड° for °रिड° in the Sūtra, Com. and illustrations. T °चिञ्छिल्ल° in the Sūtra, and Com.

तुडिरुल्लुकणिल्लुकोल्लूरोक्खुडलुकतोडखुट्टखुडान् ॥ ६२ ॥

तुड तोडने इत्ययं धातुः उल्लुक णिल्लुक उल्लूर उक्खुड लुक्क तोड खुट्ट खुड इत्यष्टादेशानापद्यते। उल्लुकइ। णिल्लुकइ। उल्लूरइ। उक्खुडइ। लुक्कइ। तोडइ। खुट्टइ। खुडइ॥ पक्षे। तुडइ॥ तुट्टइ इति तु त्रुटेः शकादिद्वित्वे [२·४·६३] भविष्यति ॥ ६२ ॥

घुसलविरोलौ मन्थेः ॥ ६३ ॥

मन्थ विलोडने इत्यस्य धातोः घुसल विरोल इत्यादेशौ तु भवतः। घुसलइ। विरोलइ। मन्थइ ॥ ६३ ॥

ढंसोत्थङ्घौ विवृतिरुध्योः ॥ ६४ ॥

विपूर्वस्य वृतु वर्तने इत्यस्य, रुधि आवरणे इत्यस्य च धातोः क्रमेण ढंस उत्थङ्घ इत्यादेशौ तु भवतः। ढंसइ॥ पक्षे। विवट्टइ॥ उत्थङ्घइ। पक्षे। रुन्धइ ॥ ६४ ॥

णिहर आक्रन्देः ॥ ६५ ॥

आङ्पूर्वस्य क्रन्देः णिहर इत्यादेशो भवति तु। णिहरइ। अक्कन्दइ॥ ६५॥

ओअन्दोद्दालौ छिदेराङा ॥ ६६ ॥

छिदिर् द्वैधीकरणे इत्यस्य धातोः आङा सहितस्य ओअन्द उद्दाल इत्यादेशौ तु भवतः। ओअन्दइ। उद्दालइ॥ अच्छिन्दइ॥ ६६ ॥

णिल्लूरलूरणिव्वरणिच्छल्लदुहावणिज्झोडाः ॥ ६७ ॥

छिदेरिति वर्तते। छिदेः णिल्लूर लूर णिव्वर णिच्छल्ल दुहाव णिज्झोड इति षडादेशा वा भवन्ति। णिल्लूरइ। लूरइ। णिव्वरइ। णिच्छल्लइ। दुहावइ। णिज्झोडइ॥ पक्षे। छिन्दइ ॥ ६७ ॥

62. M °णिल्लुक° for °णिल्लुक° the Sūtra, Com. and illustrations. T °तोड° for तोड° in the Sūtra. K °खुट्टकुडान्; S °खुटकुडान् in the Sūtra. KMS कुट्ट for खुड. KMS कुट्टइ. for कुडइ. 63. K °विलोलौ for विरोलौ, in the Sūtra. 64. S डंस°; T दस्स° for ढंस° in the Sūtra, Com. and illustrations. T °उत्थग्घौ in the Sūtra, Com. and illustrations. 65. MT णीहर for णिहर in the Sūtra, Com. and illustrations. KM क्रंदतेः for क्रन्देः. 67. K °णिव्वर°; M °णिव्वल°; T °णिप्पल° in the Sūtra, Com and illustrations.

अड्डः कथेः ॥ ६८ ॥

कथ निष्पाके इत्यस्य धातोः अड्ड इत्यादेशो भवति तु । अड्डइ । कढइ ॥ ६८ ॥

कथेर्वज्जरपज्जरसग्घसाससाहचवजप्पपिसुणबोल्लोव्वालाः ॥ ६९ ॥

कथयतेः वज्जर पज्जर सग्घ सास साह चव जप्प पिसुण बोल्ल उव्वाल इति दशादेशा वा भवन्ति । वज्जरइ । पज्जरइ । सग्घइ । सासइ । साहइ । चवइ । जप्पइ । पिसुणइ । बोल्लइ । उव्वालइ ॥ पक्षे । कहइ ॥ ६९ ॥

दुःखे णिव्वरः ॥ ७० ॥

दुःखविषयस्य कथयतेः णिव्वर इत्यादेशो भवति तु । णिव्वरइ, दुःखं कथयतीत्यर्थः ॥ ७० ॥

निषेधेर्हक्कः ॥ ७१ ॥

निपूर्वस्य षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च इत्यस्य धातोः हक्क इत्यादेशो भवति तु । हक्कइ । णिसेहइ ॥ ७१ ॥

जूरः क्रुधेः ॥ ७२ ॥

कुप क्रुध रुष इति त्रयः क्रुध्यतिः, तस्य जूर इत्यादेशो भवति । जूरइ । कुज्झइ ॥ ७२ ॥

विसूरश्च खिदेः ॥ ७३ ॥

खिद दैन्ये इत्यस्य धातोः विसूर इत्यादेशः, चकारात् जूरश्च वा भवति । विसूरइ । जूरइ । खिज्जइ ॥ ७३ ॥

तड्डवविरल्लतडतड्डास्तनेः ॥ ७४ ॥

तनु विस्तारे इत्यस्य धातोः तड्डव विरल्ल तड तड्ड इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । तड्डवइ । विरल्लइ । तडइ । तड्डइ । तणइ ॥ ७४ ॥

68.B कहइ; KS कड्डइ; M कत्थइ for कढइ. 69. MT °सीस°; S °सिर° for °सास°. MT °जंप° for °जप्प°. MT °विसुण° for °पिसुण°. T °उप्पाला: for °उव्वालाः in the Sūtra, Com. and illustrations. 70. T णिब्बरः for णिव्वरः in the Sūtra, Com. and illustrations. 72. M जूरः कुपः for the Sūtra. M खुज्झइ for कुज्झइ. 74. M om. °तड° in the Sūtra.

निरः पद्यतेर्वलः ॥ ७५ ॥

निर्पूर्वस्य पद गतौ इत्यस्य धातोः वल इत्यादेशो भवति वा । णिव्व-लइ । णिवज्जइ ॥ ७५ ॥

संतपां झङ्खः ॥ ७६ ॥

संपूर्वस्य तप्यतेः झङ्ख इत्यादेशो भवति तु । बहुवचनात् निःश्व-सितिविलपत्युपालभतीनां च । झङ्खइ, संतप्यते, निःश्वसिति, विलपति उपालभते वा ॥ पक्षे संतवइ । णीससइ । विलवइ । उवालहइ ॥ ७६ ॥

ओअग्गसमाणौ व्यापिसमाप्योः ॥ ७७ ॥

व्याप्नोति समाप्नोति इत्यनयोः यथासंख्यम् ओअग्ग समाण इत्यादेशौ तु भवतः । ओअग्गइ । समाणइ ॥ पक्षे । वावेइ व्याप्नोति । समावेइ समाप्नोति ॥ ७७ ॥

णिरवो बुभुक्ष्याक्षिप्योः ॥ ७८ ॥

बुभुक्षेराचारे क्विबन्तस्य आङ्पूर्वस्य च क्षिपतेः णिरव इत्यादेशो भवति तु । णिरवइ, बुभुक्षते आक्षिपति वा ॥ बुभुक्खइ । अक्खिवइ ॥ ७८ ॥

क्षिपिरड्डक्खपरिहुलघत्तछुहफेल्लणोल्लसोल्लगल्लत्थान् ॥ ७९ ॥

क्षिप प्रेरणे इत्ययं धातुः अड्डक्ख परि हुल घत्त छुह फेल्ल णोल्ल सोल्ल गल्लत्थ इति नवादेशानापद्यते तु । अड्डक्खइ । परिइ । हुलइ । घत्तइ । छुहइ । फेल्लइ । णोल्लइ । सोल्लइ । गल्लत्थइ ॥ पक्षे । खिवइ ॥ ७९ ॥

उत्क्षिपिरुत्थग्घोसिक्कहक्खुवाल्लत्थगुलुगुञ्छाब्भुत्तान् ॥ ८० ॥

उत्क्षिपतिः उत्थग्घ उसिक्क हक्खुव अल्लत्थ गुलुगुञ्छ अब्भुत्त इति षडादेशानापद्यते तु । उत्थग्घइ । उसिक्कइ । हक्खुवइ । अल्लत्थइ । गुलु-गुञ्छइ । अब्भुत्तइ ॥ पक्षे । उक्खिवइ ॥ ८० ॥

---

76. S झक्कः; T झक्खः for झंखः in the Sūtra. S झंक in Com. S झक्कइ for झंखइ. 78. KS णिवरो; S णिलवो; T णीरवो for णिरवो in the Sūtra, Com. and illustrations. M om. आचारे क्विबन्तस्य. 79. T °गल्लत्थान् in the Sūtra, Com. and illustrations.

वेपेराअब्बाअज्झौ ॥ ८१ ॥

टुवेपृ कम्पने इत्यस्य धातोः आअब्ब आअज्झ इत्यादेशौ तु भवतः । आअब्बइ । आअज्झइ । वेवइ ॥ ८१ ॥

विरणडौ गुपेः ॥ ८२ ॥

गुप व्याकुलत्वे इत्यस्य धातोः विर णड इत्यादेशौ तु भवतः । विरइ । णडइ । गुप्पइ ॥ ८२ ॥

चच्चारवेलवावुपालभेः ॥ ८३ ॥

उपाङ्पूर्वस्य डुलभष् प्राप्तौ इत्यस्य धातोः चच्चार वेलव इत्यादेशौ तु भवतः । चच्चारइ । वेलवइ । उवालम्भइ ॥ ८३ ॥

खउरपड्डुहौ क्षुभेः ॥ ८४ ॥

क्षुभ्यतेः खउर पड्डुह इत्यादेशौ तु भवतः । खउरइ । पड्डुहइ । खुब्भइ ॥ ८४ ॥

प्रदीपेः संधुकाब्बुत्ततेअवसंधुमाः ॥ ८५ ॥

प्रपूर्वस्य दीप्यतेः संधुक्क अब्बुत्त तेअव संधुम इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । संधुक्कइ । अब्बुत्तइ । तेअवइ । संधुमइ ॥ पक्षे । पलीवइ॥८५॥

अल्लिअ उपसर्पेः ॥ ८६ ॥

उपपूर्वस्य सृप गतौ इत्यस्य धातोः अल्लिअ इत्यादेशो भवति तु । अल्लिअइ । उवसप्पइ ॥ ८६ ॥

कमवसलिसलोट्टाः स्वपेः ॥ ८७ ॥

ञिष्वप् शये इत्यस्य धातोः कमवस लिस लोट्ट इति त्रय आदेशा भवन्ति तु । कमवसइ । लिसइ । लोट्टइ ॥ पक्षे । सुवइ । सोवइ ॥ ८७ ॥

---

81. MT आअम्ब° in the Sūtra, Com. and illustrations. 83. M चच्चारपेलवमुपालभेः for the Sūtra. S चंचार°; T पच्चार° in the Sūtra, Com. and illustrations. 84. M °पत्थुहौ for °पड्डुहौ in the Sūtra. 85. MS °अब्भुत्त°; T °अब्भुक्क° for °अब्बुत्त° in the Sūtra. MST °संदुमाः for संधुमाः in the Sūtra, Com. and illustrations. 86. S अल्लिक in the Sūtra, Com. and illustrations. MT सृप्लृ for सृप.

बड्बडो विलपेः ॥ ८८ ॥

लप व्यक्तायां वाचि इत्यस्य धातोर्विपूर्वस्य बडबड इत्यादेशो भवति तु । बडबडइ । विलवइ ॥ ' संतपां झङ्खः ' [३.१.७६] इति विनिः-श्वसित्यादीनां बहुवचनग्रहणात् झङ्खइ ॥ ८८ ॥

रमिराडो रम्भडवौ ॥ ८९ ॥

आङः परो रभ राभस्ये इत्ययं धातुः रम्भ डव इत्यादेशावापद्यते तु । आरम्भइ । आडवइ । आरहइ ॥ ८९ ॥

भाराक्रान्ते नमेर्निसुडः ॥ ९० ॥

णमु प्रह्वत्वे शब्दे इत्यस्य धातोर्भाराक्रान्ते कर्तरि निसुड इत्यादेशो भवति तु । निसुडइ, भाराक्रान्तो नमतीत्यर्थः ॥ ९० ॥

उब्भाववेल्लणिसरकोड्डुमसक्खुड्डखेड्डुमोट्टाअकिलिकिश्चा रमतेः॥९१॥

रमु क्रीडायाम् इत्यस्य धातोः उब्भाव वेल्ल णिसर कोड्डुम सक्खुड्ड खेड्ड मोट्टाअ किलिकिञ्च इत्यष्टादेशा भवन्ति तु । उब्भावइ । वेल्लइ । णिसरइ । कोड्डुमइ । सक्खुड्डइ । खेड्डइ । मोट्टाअइ । किलिकिञ्चइ ॥ पक्षे । रमइ ॥ ९१ ॥

पडिसापरिसामौ शमेः ॥ ९२ ॥

शमु उपशमे इत्यस्य धातोः पडिसा परिसाम इत्यादेशौ वा भवतः । पडिसाइ । परिसामइ । समइ ॥ ९२ ॥

लुभेः संभावः ॥ ९३ ॥

लुभ गार्ध्ये इत्यस्य धातोः संभाव इत्यादेशो भवति तु । संभावइ । लुब्भइ ॥ ९३ ॥

---

88. KMS चडचडो; T वडवड्डो for बडबडो in the Sūtra. KMS चडचडइ for बडबडइ. T झंपइ for झंखइ. 89. T रंभडवौ for रम्भडवौ in the Sūtra, Com. and illustrations. K om. आरहइ. 90. MT निसुडः in the Sūtra, Com. and illustrations. 91. M णीसर°; for °णिसर; M °संखुड° for सक्खुड्ड° in the Sūtra, Com. and illustrations. 93. K लुब्भावइ for लुब्भइ.

आक्रामिरोहावोत्थारच्छुन्दान् ॥ ९४ ॥

आङ्पूर्वस्य क्रमु पादविक्षेपे इत्ययं धातुः ओहाव उत्थार छुन्द इत्यादेशांस्त्रीनापद्यते । ओहावइ । उत्थारइ । छुन्दइ । अक्कमइ ॥ ९४ ॥

विश्रमेर्णिप्पा ॥ ९५ ॥

श्रमु तपसि खेदे च इत्यस्य धातोर्विपूर्वस्य णिप्पा इत्यादेशो भवति तु । णिप्पाइ । वीसमइ ॥ ९५ ॥

डुण्डुल्लडुमडण्डल्लभमाडभम्मभमुडतलअण्टझण्टगुमटिरिटिल्लि-परिपरघमचक्कमभमडघसझम्पडुसा भ्रमेः ॥ ९६ ॥

भ्रमु अनवस्थाने इत्यस्य डुण्डुल्ल डुम डण्डल्ल भमाड भम्म भमुड तलअण्ट झण्ट गुम टिरिटिल्ल परि पर घम चक्कम भमड घस झम्प डुस इत्यष्टादशादेशा वा भवन्ति । डुण्डुल्लइ । डुमइ । डण्डल्लइ । भमाडइ । भम्मइ । भमुडइ । तलअण्टइ । झण्टइ । गुमइ । टिरिटिल्लइ । परिइ । परइ । घमइ । चक्कमइ । भमडइ । घसइ । झम्पइ । डुसइ ॥ पक्षे । भमइ ॥ ९६ ॥

गमिरणुवज्जावज्जसाक्कुसोक्कुसाइच्छाईअवहरावसेहवडअवरिअल-वरिअल्लवोल्लणिरिणामवच्छड्डणिणणिम्महपच्छन्दणिलुक्करम्भणि-णिवहान् ॥ ९७ ॥

गम्लृ गतौ इत्ययं धातुः अणुवज्ज अवज्जस अक्कुस उक्कुस अइच्छ अई अवहर अवसेह वडअ वरिअल वरिअल्ल वोल्ल णिरिणास वच्छड्ड णिण णिम्मह पच्छन्द णिलुक्क रम्भ णि णिवह इत्येकविंशतिमादेशानापद्यते वा । अणुवज्जइ । अवज्जसइ । अक्कुसइ । उक्कुसइ । अइच्छइ । अईइ । अवहरइ । अवसेहइ । वडअइ । वरिअलइ । वरिअल्लइ । वोल्लइ । णिरिणासइ । वच्छड्डइ । णिणइ । णिम्महइ । पच्छन्दइ । णिलुक्कइ । रंभइ । णिइ । णिवहइ ॥ पक्षे । गच्छइ ॥ हम्मइ, णिहम्मइ, आहम्मइ इत्यादि तु हम्म गतौ इत्यस्य भविष्यति ॥ ९७ ॥

---

94. M °छंदान् for °च्छुन्दान् in the Sūtra, Com. and illustrations. T पदविक्षेपे for पाद°. 96. M डुंडुल्ल°; S डुंडुल्ल°. M °भुम° for °भम्म°. B °चक्कमु° for °चक्कम° in the Sūtra, Com. and illustrations. After इत्यस्य K adds धातोः. 97. M °वडव°; T °पडअ° for °वडअ°. KM °वच्चड्ड°; S °वंचंड° for °वच्छड्ड°. K °णिलुक्क° for °णिलुक्क°. M °रंह° for °रम्भ°. M °णी° for °णि° in the Sūtra, Com. and illustrations.

प्रत्यागमागमाभ्यागमां पह्लोट्टाहिपच्चुओम्मच्छाः ॥ ९८ ॥

प्रत्यागमेः आगमेः अभ्यागमेश्च यथासंख्यं पह्लोट्ट अहिपच्चुअ उम्मच्छ इत्यादेशा भवन्ति तु । पह्लोट्टइ, पच्चागमइ, प्रत्यागच्छति । अहिपच्चुअइ, आअच्छइ, आगच्छति । उम्मच्छइ, अब्भागच्छइ, अभ्यागच्छति ॥ ९८ ॥

रिहरिग्गौ प्रविशेः ॥ ९९ ॥

प्रविशतेः रिह रिग्ग इत्यादेशौ तु भवतः । रिहइ । रिग्गइ । पविसइ ॥ ९९ ॥

संगमोऽब्भिडः ॥ १०० ॥

संगच्छतेः अब्भिड इत्यादेशो भवति तु । अब्भिडइ । संगच्छइ ॥ १०० ॥

डिप्पणिड्डुहौ विगलेः ॥ १०१ ॥

विपूर्वस्य गलतेः डिप्प णिड्डुह इत्यादेशौ तु भवतः । डिप्पइ । णिड्डुहइ । विगलइ ॥ १०१ ॥

णिवहणिरिणासणिरिणिज्जरोञ्चचड्डाः पिषेः ॥ १०२ ॥

पिष्लृ संचूर्णने इत्यस्य धातोः णिवह णिरिणास णिरिणिज्ज रोञ्च चड्ड इति पञ्चादेशा भवन्ति तु । णिवहइ । णिरिणासइ । णिरिणिज्जइ । रोञ्चइ । चड्डइ ॥ पक्षे । पिसइ ॥ १०२ ॥

वलेर्वम्फः ॥ १०३ ॥

वल्तेर्वम्फ इत्यादेशो भवति तु । वम्फइ । वलइ ॥ १०३ ॥

---

98. M °अहिपच्छअ°; T °अहिवच्चुअ° for °अहिपच्चुअ°. S °ओअच्छाः; T °ओमच्छाः for उम्मच्छाः in the Sūtra, Com. and illustrations. KT आगच्छइ for आअच्छइ. 99. M रिहरिग्गौ; T रिअरिजौ for रिहरिग्गौ in the Sutra, Com. and illustrations. 100. MT संगमेरब्भिडः for the Sūtra. B अब्बिडः for अब्भिडः in the Sūtra, Com. and illustrations. 101. M णिप्पणिड्डुहौ T थिप्पणिट्टुहौ; for डिप्पणिड्डुहौ in the Sutra, Com. and illustrations. 102. M णीवह° for णिवह° in the Sūtra. KS °लोंच° for °रोञ्च° in the Sūtra.

भ्रंशेः पिड्डपिट्टछुक्कछुल्लपुट्टपुडाः ॥ १०४ ॥

भ्रंशेरित्यस्य धातोः पिड्ड पिट्ट छुक्क छुल्ल पुट्ट पुड इत्येते षडादेशा भवन्ति तु। पिड्डइ। पिट्टइ। छुक्कइ। छुल्लइ। पुट्टइ। पुडइ॥ पक्षे भंसइ ॥ १०४ ॥

भषेर्बुक्कः ॥ १०५ ॥

भषतेः बुक्क इत्यदेशो भवति तु। बुक्कइ। भसइ ॥ १०५ ॥

पुरग्घवाग्घोडाहिरेमाग्गुमाद्धुमाः ॥ १०६ ॥

पृ पालनपूरणयोः इत्यस्य धातोः अग्घव अग्घोड अहिरेम अग्गुम अद्धुम इति पञ्चादेशा भवन्ति तु। अग्घवइ। अग्घोडइ। अहिरेमइ। अग्गुमइ। अद्धुमइ॥ पक्षे। पूरइ॥ १०६ ॥

आहाहिलंघवच्चाहिलक्खमहसिहचिल्लुम्पचम्पाः कांक्षेः ॥ १०७ ॥

कांक्षतेः आह अहिलंघ वच्च अहिलक्ख मह सिह चिल्लुम्प चम्प इत्यष्टादेशा वा भवन्ति। आहइ। अहिलंघइ। वच्चइ। अहिलक्खइ। महइ। सिहइ। चिल्लुम्पइ। चम्पइ॥ पक्षे। कंखइ॥ १०७ ॥

नशिरवहरावसेहणिवहपडिसासेहणिरिणासान् ॥ १०८ ॥

नश्यतिः अवहर अवसेह णिवह पडिसा सेह णिरिणास इति षडादेशानापद्यते वा। अवहरइ। अवसेहइ। णिवहइ। पडिसाइ। सेहइ। णिरिणासइ॥ पक्षे। णासइ॥ १०८ ॥

साअड्डाणच्छकड्डाच्छाअच्छाणच्छाः कृषः ॥ १०९ ॥

कृष विलेखने इत्यस्य धातोः साअड्ड अणच्छ कड्ड अच्छ आअच्छ आणच्छ इति षडादेशा वा भवन्ति। साअड्डइ। अणच्छइ। कड्डइ। अच्छइ। आअच्छइ। आणच्छइ॥ पक्षे करिसइ॥ १०९॥

---

104. K भ्रमेः for भ्रंशेः. Bp KM °चुक्कचुल्ल° for °छुक्कछुल्ल°. Bp K °घट्टघाडाः; M फुट्टफुडाः; T °पट्टपुडाः for °पुट्टपुडाः in the Sūtra, Com. and illustrations. K भ्रंशु पतने इत्यस्य for भ्रंशेः. 105. S भुक्कः for बुक्कः in the Sūtra, T हर्षतेः for भषतेः. 107. T °विट्टप° for °चिल्लुम्प°. MS °चंफाः for °चम्पाः in the Sūtra, Com. and illustrations. 108. KST पक्षे नस्सइ for नासइ. 109. K °याअट्ठ° for °आअच्छ° in the Sūtra. and Com. K आअट्टइ for आअच्छइ.

असावक्खोडः ॥ ११० ॥

असिविषयस्य कर्षतेः अक्खोड इत्यादेशो वा भवति। अक्खोडइ, असिं कोशात्कर्षति ॥ ११० ॥

उल्लसेरूसलोसुम्भारोअणिल्लसगुञ्जोल्लपुलआआः ॥ १११ ॥

उत्पूर्वस्य लष कान्तौ इत्यस्य धातोः ऊसल ऊसुम्भ आरोअ णिल्लस गुञ्जोल्ल पुलआअ इति षडादेशा वा भवन्ति। ऊसलइ। ऊसुम्भइ। आरोअइ। णिल्लसइ। गुञ्जोल्लइ ॥ ह्रस्वे। गुञ्जुल्लइ। पुलआअइ ॥ पक्षे उल्लसइ ॥ १११ ॥

संदिशोऽप्पाहः ॥ ११२ ॥

संपूर्वस्य दिश अतिसर्जने इत्यस्य धातोः अप्पाह इत्यादेशो वा भवति। अप्पाहइ। संदिसइ ॥ ११२ ॥

ग्रसेर्घिसः ॥ ११३ ॥

ग्रस अदने इत्यस्य धातोः घिस इत्यादेशो भवति। घिसइ। गसइ ॥ ११३ ॥

भासेर्भिसः ॥ ११४ ॥

भासृ दीप्तौ इत्यस्य धातोः भिस इत्यादेशो भवति। भिसइ। भासइ ॥ ११४ ॥

प्रतीक्षेर्विहिरविरमालसामआः ॥ ११५ ॥

प्रतिपूर्वस्य ईक्ष दर्शने इत्यस्य धातोः विहिर विरमाल सामअ इति त्रय आदेशा भवन्ति तु। विहिरइ। विरमालइ। सामअइ ॥ पक्षे। पडिक्खइ ॥ ११५ ॥

स्रंसेर्ल्हसडिम्भौ ॥ ११६ ॥

स्रंसु अवस्रंसने इत्यस्य धातोः ल्हस डिम्भ इत्यादेशौ तु भवतः। ल्हसइ। परिल्हसइ। परिल्हसणं। डिम्भइ। संसइ ॥ ११६ ॥

---

111. T °आरोष° for आरोअ°. S °पलआआः for °पुलअआः in the Sūtra, Com. and illustrations. BT गुंजल्लइ for गुञ्जुल्लइ. 113. MS ग्रसु for ग्रस 114. Bp भासुर्भिसः for the Sūtra. 115. S बिहर°; T विहीर° for विहिर° in the Sūtra.

मृक्षेश्चोप्पडः ॥ ११७ ॥

मृक्षतेः चोप्पड इत्यादेशस्तु भवति । चोप्पडइ । मक्खइ ॥ ११७ ॥

विसट्टो दलेः ॥ ११८ ॥

दलतेः विसट्ट इत्यादेशस्तु भवति । विसट्टइ । दलइ ॥ ११८ ॥

त्रसेर्वज्जडरौ ॥ ११९ ॥

त्रसतेः वज्ज डर इत्यादेशौ तु भवतः । वज्जइ । डरइ । तसइ ॥ ११९ ॥

वोज्जो वीजेश्च ॥ १२० ॥

वीज व्यजने इत्यस्य धातोः चकारात् त्रसेश्च वोज्ज इत्यादेशो भवति तु । वोज्जइ ॥ पक्षे । वीजइ । तसइ ॥ १२० ॥

गवेषेर्घत्तगमेसडुण्डुल्लडण्डोलाः ॥ १२१ ॥

गवेषेः घत्त गमेस डुण्डुल्ल डण्डोल इति चत्वार आदेशा भवन्ति तु । घत्तइ । गमेसइ । डुण्डुल्लइ । डण्डोलइ ॥ पक्षे । गवेसइ ॥ १२१ ॥

तक्षेश्चञ्छरम्परम्फाः ॥ १२२ ॥

तक्षू तनूकरणे इत्यस्य धातोः चञ्छ रम्प रम्फ इति त्रय आदेशा भवन्ति तु । चञ्छइ । रम्पइ । रम्फइ ॥ स्पृहादिपाठात् छत्वे च तच्छइ ॥ तक्खइ ॥ १२२ ॥

हसेर्गुञ्जः ॥ १२३ ॥

हसतेः गुञ्ज इत्यादेशो भवति तु । गुञ्जइ । हसइ ॥ १२३ ॥

दहेरहिऊलालुक्खौ ॥ १२४ ॥

दह भस्मीकरणे इत्ययम् अहिऊल आलुक्ख इत्यादेशावाप्नोति । अहिऊलइ । आलुक्खइ । दहइ ॥ १२४ ॥

---

117. B मृक्षेश्चोव्वडः; K मुद्देश्चोव्वडः; S मुच्चेश्चोव्वडः; for the Sūtra. K मुह्यतेः for मृक्षतेः. BKS चोव्वडइ for चोप्पडइ. K मुज्झइ for मक्खइ. 118. T विदलेः for दलतेः. KS इत्यादेशो भवति तु for इत्यादेशस्तु भवति. 120 S वज्जो विजश्च; T वोज्जो व्यजेश्च for the Sūtra. 121. M °डंढोल्लाः; T °ढिंडोलाः in the Sūtra, Com. and illustrations. 122. M °रंछाः for °रम्फाः in the Sūtra. BK चञ्छइ. for तच्छइ. 124. S °आलुंखौ in the Sūtra, अलुक्ख in Com., but आलुक्खइ as illustrations. K डहइ for दहइ.

विकसेः कोआसवोसग्गौ ॥ १२५ ॥

विकसतेः कोआस वोसग्ग इत्यादेशौ तु भवतः। कोआसइ । वोसग्गइ । विअसइ ॥ १२५ ॥

श्लिषोऽवआससामग्गपरिअन्ताः ॥ १२६ ॥

श्लिष आलिङ्गने इत्यस्य धातोः अवआस सामग्ग परिअन्त इति त्रय आदेशा भवन्ति तु । अवआसइ । सामग्गइ । परिअन्तइ । सिलिसइ ॥ १२६॥

जुगुप्सतेर्दुगुञ्छझूणदुगुच्छाः ॥ १२७ ॥

जुगुप्सतेः दुगुञ्छ झूण दुगुच्छ इति त्रय् आदेशा भवन्ति तु । दुगुञ्छइ । झूणइ । दुगुच्छइ । जुउच्छइ ॥ १२७ ॥

वलग्गचडमारुहेः ॥ १२८ ॥

रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च इत्यस्य धातोः आङ्पूर्वस्य वलग्ग चड इत्यादेशौ तु भवतः । वलग्गइ । चडइ । आरुहइ ॥ १२८ ॥

हुल्लो लक्ष्यात् स्खलेः ॥ १२९ ॥

लक्ष्यविषयस्य स्खलतेः हुल्ल इत्यादेशो वा भवति । हुल्लइ । लक्ष्यात स्खलतीत्यर्थः ॥ १२९ ॥

गाहोऽवाद्गाहः ॥ १३० ॥

अवात् परस्य गाहू विलोडने इत्यस्य धातोः वाह इत्यादेशो भवति तु । ओवाहइ । ओगाहइ ॥ १३० ॥

गुम्मगुम्मडौ मुहेः ॥ १३१ ॥

मुह वैचित्ये इत्यस्य धातोः गुम्म गुम्मड इत्यादेशौ तु भवतः। गुम्मइ। गुम्मडइ । मुज्झइ ॥ १३१ ॥

---

125. T °वोसट्टौ for °वोसग्गौ in the Sūtra. T वोसट्टइ for वोसग्गइ. 127. MT दुगुञ्छझुणदुगुंछा जुगुप्सेः for the Sūtra. S °झाण° for °झूण° in the Sūtra, Com. and illustrations. 128, S °जड° for °चड° in the Sūtra, Com. and illustrations. KMS om. प्रादुर्भावे च. 129. KM स्खलतेः for स्खलेः in the Sūtra and Com. 130. MT om. ओगाहइ.

अपुण्णगाः क्तेन ॥ १३२ ॥

अपुण्णादयः शब्दाः क्तप्रत्ययेन सह निपात्यन्ते । (१) अ पु ण्णं आक्रान्तम् । (२) उ म्म च्छं असंबद्धं कोपेन भङ्ग्या च यद्भणितम् । (३) उ ल्लु क्को (४) ओ स ण्णो (५) मु रु ओ त्रुटितः । (६) प ह ट्टं अविरत-दृष्टम् । (७) गु ज्ज णि अं (८) पे ज्ज लि अं संघटितम् । (९) स उ लि ओ (१०) ग ल त्थ लि ओ (११) उ रु सो ल्लो प्रेरितः । (१२) उ क्खि ण्णं अवकीर्णम् । (१३) वो स ट्टो (१४) वि हि मि हि ओ विकसितः । (१५) उ द्द रि अं अर्दितः । (१६) क मि ओ उपसर्पितः । (१७) क डं त रि अं छिन्नं छिद्रितं च । (१८) सु ढि ओ श्रान्तः । (१९) प रि हा इ अं परिक्षीणम् । (२०) णि क्क ज्जो (२१) अ णि क ज्जो (२२) उ क्क ग्गो (२३) त ड ह डि ओ अनवस्थितः ।

132. (1) HD. (अप्फुण्णं-पूर्णम्) 1.20, HG. 4. 258. T अप्पणं. (2) HD.1.125. BC अम्मच्छं. (3) HD.1.92. B उल्लुक्को; C उल्लुक्के. (4) HD. 1.156. B आसण्णो. (5) HD (मुरिअं) 6.135. Bp KS गुरुओ; C मरिओ; M मुरओ. (6) HD. (पहट्टो-दृप्तः) 6.9. M पहत्तं; T पट्टं. (7) HD. (गुंजेल्लिअं) 2.92. BC गुंजलिअं. (8) HD. (पेज्जलं प्रमाणं) 6.57. KS पड्डलिअं; M पंडलिअं; T पंघलिअं (9) HD. (सउलिअं) 8.12. B सउलिओ; C पस-ल्लिओ. (10) HD. 2.87. B गलडिलिओ; C गलद्धओ; K गलंडलिओ; S गलद्दालिओ; T गलइत्थिलिओ. After this K adds उब्भिमलो; C ऊब्भमल्लो (11) HD.(°ल्लं) 1.108. (12) HD. 1.130. B उक्खिणं; C उक्खणो. (13) HD. (°ट्टं) 7.81. BC ओसट्टो; K om; M वंसट्टो, T बोसटो. (14) HD. (विहसिव्विअं) 7.61. K om. (15) HD. (उद्दरिअं) 1.100. K उद्दवओ; MS उत्थविओ; T_1 उद्धवीअं; T_2 उद्धविअं. After this KMS add अधित्तं. (16) HD. 2 3. K कविओ; S किमिओ. (17) HD. 2.20. BK कडत्तरिअं; C कडद्दरिअं; T कसत्तरिअं. (18) HD. 8.36. B सुदिओ; KM S सुडिओ; T सुधिओ. (19) HD. (परिहाओ) 6.25. BT परहाइअं. After this KMS add परिहणं (cf HD. 6.21). (20) HD. 4.33. S णिकंजो; T णिकज्जो. (21) HD. 4.33: S अणेकंजो; T अणेअज्जो. (22) HD. ? B मुकज्जो; K अच्चग्गो; M अच्चेगो; S अच्चंगो; T उच्चग्गो. (23) HD. (तडफडिअं) 5.9. KS चडहडिओ; T तहसिओ. Bp अनुत्थितः; S अनुस्थितः for अनवस्थितः.

(२४) उद्धओ श्रान्तः। (२५) उब्भग्गो मुण्डितः। (२६) उच्चुल्लो उद्विग्नः। (२७) उच्छूरणं उच्छिष्टम्। (२८) उव्विलं चकितं क्लान्तं वा। (२९) पहोइअं (३०) अकासिअं पर्याप्तम्। (३१) णालं (३२) गोरिहिअं। (३३) हित्थो (३४) डड्ढो त्रस्तः। (३५) उप्पित्थो क्रुद्धश्च। (३६) णिविड्डो सुप्तोत्थितः। (३७) ओमिसं अप्रवृत्तम्। (३८) उग्घक्कं प्रलपितम्। (३९) उप्पिअं ह्रतं रोषितं विमुक्तं च। (४०) ओहरणं (४१) जिग्घिअं (४२) ओअग्घिअं आघ्रातम्। (४३) ऊसविअं उद्भ्रान्तम्। (४४) आहित्थो रुद्धो गलितश्च। (४५) णिसुद्धो निपातितः। (४६) णिव्वूठो। (४७) उम्मण्डो उद्धतः। (४८) उलुण्डिअं

---

(24) HD. (उद्धाओ-श्रान्तः) 1.124. S अंधओ. BT शान्तः for श्रान्तः. (25) HD. (उब्भग्गो गुण्ठितः) 1.95. BK उब्वंगो; C पुब्वंगो; S उब्भंगो. T मण्डितः for मुण्डितः. (26) HD. (उच्चुल्ल) 1.127. Bp K उच्छुग्गो; C उच्चल्लो; M उच्छल्लो; S उड्डग्गो. (27) HD. (उद्धरणं) 1.106. BT उच्चुरणं; M उच्छुरणं. (28) HD. (उप्पित्थं ?) 1.129. C उव्विडं; M उव्विल्लं, T उप्पिणं. (29) HD. 6.26. B पओहिअं; C वहइअं; M पहोइअं (30) HD. (अकासि) 1.8. B अकारिअं; C आकासिअं; KS अरासिअं; M परासिअं. (31) C णार्लं; T णिलं. (32) BG गोरडितं; M गोरहितं; S गोरिहितं; T गोहितं. (33) HD. 8.67. BT हिड्डो; C हिद्धो. (34) BG डट्ठो; M डड्ढो; S डंडो; T डट्ठो. (35) HD. 1.129. BK उव्विड्डो; C उव्विव्वो; M उव्वियो; S उव्वित्थो. (36) HD. (णिविद्धो) 4.48. B णिविट्ठो; Bp णिव्विडो. (37) C ओमंसो; S अमिसं; T ओमिसः; (38) C उव्विक्को; S उरघंक; T उप्पुत्तं. (39) HD. (उप्पित्थं ?) 1.129. KS उग्घिअं. (40) HD. 1.174. MT ओहरसं. S om. (41) HD. 3.46. BKS णिघअं; C णिमिअं; T दीघिअं. (42) HD. (ओअग्गिअं) 1.172. BC ओअघिअं; M om; S ओअंघिअं; T ओअविअं. (43) HD. 1.143. (44) HD. 1.76. BK आहिद्धो. (45) HD. 4.36. HG. 4.258. (निसुट्टो); M निसुघो; S निसुत्थो; T रिसुडो. (46) HD. 4.33. BT णिच्छूडो; C णिच्चुड्डो; S णिउंडो. (47) HD. 1.124. BK उम्मडो. C उम्मड्डो; M उम्मढो. (48) B उड्डिअं; K उलुविड्डिअं; M उलंडिअं.

(४९) जूसिअं क्षितम् । (५०) णिज्जो । (५१) लवओ (५२) लिहओ (५३) लुक्को सुप्तः । (५४) उज्जणिअं वञ्चितं निम्नीकृतं च । (५५) ऊढं त्यक्तम् । (५६) उज्जरिअं शुष्कं निम्नीकृतं च । (५७) फुड्डं स्पृष्टम् । (५८) डिढओ जलान्तःपातितः। (५९) ओसरिओ आकीर्णः अक्षिनिकोचात्संकुचितश्च । (६०) गुलिअं मथितम । (६१) उम्मरिअं (६२) गुत्थिअ उन्मूलितम् । (६३) उड्डाहिअं (६४) परिच्चूडं (६५) उग्गाहिअं उत्क्षिप्तम् । (६६) हासिअं दत्तम् । (६७) हेसिअं (६८) दुंदुमिअं रसितम् । (६९) चित्तविओ परितोषितः। (७०) पल्लोट्टं (७१) झसिअं (७२) पल्हत्थं पर्यस्तम् । (७३) पम्हुट्ठो प्रमुषितः प्रमृष्टश्च । (७४) ओलेहडो प्रवृद्धः अन्यसक्तश्च । (७५) ओड्डअं (७६) ओआमिअं अभिभूतम् । (७७) रुमिल्लं अभिलषितम् ।

(49) B जूसअं; K सेसिअं; MS रोसिअं, T झसिअं. (50) HD. 4.25. S णिज्वो. (51) C लवबो; M लओ. (52) HD. (लिहिओ) 7.28. B णिहुओ; C णिहवो; KM लिगओ; S om. (53) HD. (लुंको) 7.23. M लक्को. After this ST add लुअं. (54) HD. 1.111. BK उज्झाणिअं. After this T adds उणिअं. (55) C जडं; M लुअं. (56) HD. 1.133 B उज्झरिअं; C उज्झिरअं. (57) B पुड्डं; C घडं. S घड्डं. T पुस्सं. (58) HD. (ढिढयं) 4.15. C डिडवो; M दिढं. (59) HD. 1.171. C ओमडिओ. (60) M गुडअं; T मीलितं for मथितम्. (61) HD, 1.100. T, उम्मरीअं. (62) M गुठिअं; S गुंडिअं; T गुडअं. (63) B उडाहिअं; M उड्डाहिअं; S उंडाहिअं. (64) C परिच्चिअं;K वच्च्छडं; M वच्च्छंधं; S वच्च्छडं; T परच्छडं. (65) HD. 1.137. C उगाहिअं; उडाहिअं; उदाहिअं KS उम्माहिअं. (66) B आसिअं; T हसिअं. (67) Sk हेषितम्. KMS om. (68) HD. 5.45. (69) C चित्तविअओ; K रित्तविओ; S रिंतविओ; T वित्तविओ, (70) HD. 6.35. C परोट्टं. (71) HD. 3.62. B झुसिअं; C झपिअं. (72) B पहत्थं; C पल्हित्तं. (73) C अम्हत्तो M वन्हुड्डो; S पमुंडो. After प्रमृष्टश्च KMST add गअं आघूर्णितम्. (74) HD. 1.172. B आवेहडो; C ओवेवओ. (75) B ओहलं; Bp ओजलं; C ओअम्मओ; S ओंढअं; T ओजअं. (76) HD. (ओहाइओ) 1.156. C ओहामिओ; S ओआहअं. (77) C रमिल्लं; S रोमिल्लं; T जहिल्लं.

(७८) पच्चुडरिअं प्रत्युद्गतम्। (७९) अक्कन्तो प्रवृद्धः। (८०) ओअल्लो छन्नः। (८१) करमो क्षीणः। (८२) कडो उपरतः क्षीणश्च। (८३) पेक्किअं वृषरटितम्। (८४) अङ्किअं आलिङ्गितम्। (८५) अविअं उक्तम्। (८६) उद्दुसिअं (८७) उल्लुसिअं (८८) चिमिणं (८९) उलुकुसिअं (९०) ऊसलिअं रोमाञ्चितम्। (९१) असङ्गिओ सक्तः। (९२) आरेइअं मुकुलितं मुक्तं भ्रान्तं पुलकितं च। (९३) उच्छ-ण्डिअं शरादिव्यथितम् अपहृतं च। (९४) चण्टिअं छन्नम्। (९५) ऊससिअं (९६) ऊसअं उपधानीकृतम्। (९७) आविअं प्रोतम्। (९८) अवहट्टो दर्पितः। (९९) आरद्धो वृद्धिं गतः गृहायातश्च। (१००) घुत्तिअअं (१०१) घुसिणिअं अन्विष्टम्। (१०२) घुग्घुस्सिअं अशङ्क भणितम्।

---

(78) HD. उच्चुलउलिअं? 1.121. HD. notes उप्पिलवेलिअं (as from Tr); B उच्चुडरिअं; C वच्छुद्दलिओ; K पच्चुद्दरिअं; M पप्पुद्धरिअं; T पच्चुडरीअं. (79) HD. (अक्कन्तं) 1.9. S अंकतो; T अकतो. (80) HD. (=पर्यस्तः) 1.165. C जअल्लो; M ओअळो; S ओअंल्लो. (81) HD. 2.6. (82) HD. 2.5. BC कयो; T कन्धो. (83) KS पक्खिअं; M फोकिअं; T फेक्किअं. (84) HD. 1.11. (85) HD. 1.10. MS अपिअं. (86) B उदुसिअं; C उलुओसिअं; उद्दुसिअं; T उडुहिअं. (87) HD. (उल्लसिअं) 1.115. B उलुसिअं; T उल्लसिअं. (88) HD. (चिमिणो) 3.11. KS विमिणं; M om. (89) HD. (°कमिअं) 1.115. KS दुलुकुसिअं; T उल्लुकुसिअं; M om. (90) HD. 1.141. K ऊसरिअं; MS ऊसलिले. (91) HD. 1.55. B अहसंगिओ; T अंसंगिओ. (92) HD. 1.77. C आरोइअं. (93) HD. 1.112. B ओच्छ-ण्डिअं; C ओच्छन्दिअं; K उच्छड्डिअं; S उच्छडिअं. B शरीरादि° for शरादि°. T अवभूतं for अपहृतं. (94) B छण्डिअं; M चंढिअं, T चकभिअं. (95) B ऊसंसिअं; C ऊसुम्भिअं; T ऊसासअं. (96) HD. 1.140. B ऊसिअं. (97) HD. 1.76. B आलिअं; M आपिअं; T आसीअं. (98) HD. 1.23. B अवहिट्टो; S अवहच्छो; T_1 अवहोट्टो; T_2 अवहेट्टो. (99) HD. 1.75. C आरोद्धो; S आरंधो. KS गुहायातश्च; T महा° for गृहायातश्च. (100) HD. (घुत्तिअं) 2.109. B उड्डिअं. (101) HD. 2.109. B घसणिअं; KS घुसि-णअं; M घुसणिअं. (102) HD. 2.109. C घुग्घुस्सुअं; MS घुग्घुंसुअं.

(१०३) उल्लूढो (१०४) उच्चप्पो आरूढः । (१०५) खवलिओ कुपितः । (१०६) चक्कडिअं प्रीणितम् । (१०७) उत्तत्तो गलितो विरक्तश्च । (१०८) गुडिओ संनद्धः । (१०९) गुम्मइओ आपूरितः स्खलितः आमूलात्संवलितः मूढः विघटितश्च । (११०) पडिरिग्गअं भग्नम् । (१११) परिअट्टिअं प्रकटितम् । (११२) परिअट्टलिअं परिच्छिन्नम् । (११३) ओप्पं मृष्टम् । (११४) कोज्जरिअं पूरितम् । (११५) उम्मलं घनीभूतम् । (११६) वेल्लाइअं (११७) खडइअं संकुचितम् । (११८) झण्टिअं प्रहृतम् । (११९) अणुअज्झिओ प्रयातः प्रतिजागरितश्च । (१२०) णज्झरं दलितम् । (१२१) उलुहुलिओ अवितृप्तः । (१२२) वप्पिअं (खप्पिअं ?) (१२३) आरोग्गिअं भुक्तम् (१२४) उब्भालणं (१२५) उच्छुण्णं (१२६) अहिरेइअं (१२७) उद्धुमाअं (१२८) अप्पुण्णं परिपूर्णम् ।

(103) HD. 1.100. B उल्लूडो. (104) HD. 1.100. B उच्छूडो; C उच्छूढो; KM उच्चओ; S ऊंचओ. (105) HD. 2.72. B आविलिओ; K खविलिओ; T अवलिओ. (106). HD. (चक्खडिअं) 3.6. B कडिअं; T_1 चकसअं; T_2 चकडिअं. (107) HD. 1.129. B उप्पत्तो; KM उत्तत्तो; S उत्तंतो; T उपंतो. (108) T गुडओ. (109) HD. 2.103. T गम्मइओ. (110) HD. (पडिरंजिअं) 6.32. K पडिरिग्गिअं; M पडिरिंभिअं; S पडिरग्गिअं; T विभिरिंटिअं. (111) M परिअत्तिअं; S परिअत्थिअं. (112) HD. 6.36. C परिअट्टविअं. B परिच्छन्नं for परिच्छिन्नम्. (113) HD. (ओप्पा) 1.148. (114) HD. (कोज्जरिअं) 2.50. (115) HD. 1.91. C ओम्मलं. (116) HD.7.79. B वेल्लइअं. (117) HD. 2.72.B घडइअं. (118)HD. 3.55.C झंटिअं, MS झंटिअं. (119)HD. (अणुवज्जिअं) 1.41.C अणुझिअओ; T अणुअज्झओ. (120) HD. (णज्झरो) 4.19. C णज्जतरं; T णज्झरि.(121) HD.(उलुहलिओ) 1.117. CKMS उलुहुलअं, T उलुभुलिओ. (122).खप्पिअं ? HD. (खरिअं) 2.67. M खप्पिअं, T_1 पप्पिअं, T_2 पंपिअं. (123) HD. 1.69. B आरोग्गिरिअं, C आरोग्गरिअं. (124) HD. 1.103. B उग्गालणं; C उल्लअं. (125) B उघणं; उसुण्णं; T उप्पणि. (126) B अहिरोइअं; T अहिरेहिइअं. (127) C अडुमाअं, S उद्दुमाअं, T उडुमाअं. (128) HD. (अप्फुण्णं) 1.20. M अप्फुण्णं. S आघण्णं.

(१२९) पच्चावेणिओ संमुखमागतः । (१३०) दुग्गुच्छं अमितम् । (१३१) वड्डाविअं समापितम् । (१३२) पारद्धं अभिपीडितम् । (१३३) उद्दालिअं रणद्रुतम् । (१३४) उज्झमाणं पलायितम् । (१३५) विडत्तं अर्जितम् (१३६) छिक्कं स्पृष्टम् । (१३७) थेणिल्लअं हृतम् । (१३८) विउलो आविग्नः । (१३९) साणिअं (१४०) तिक्खालिअं शातम् । (१४१) सोहिल्लं (१४२) पक्कं (१४३) समराइअं (१४४) आइप्पणं पिष्टम् । (१४५) ओत्थअं (१४६) ओसविअं अवसन्नम् । (१४७) पडिसारिअं स्मृतम् । (१४८) पेण्डइअं पिण्डितम् । (१४९) उग्गहिओ निपुणगृहीतः विरचितश्च । (१५०) गमिअं अवधूतम् । (१५१) उद्दच्छिओ निषिद्धः । (१५२) णिग्गिण्णो निर्गतः । (१५३) किवाडो स्खलितः । (१५४) लोट्टो अन्यासक्तः स्मृतश्च ।

---

(129) HD. (पच्चोवणी) 6.24. C S पच्छाणिओ; T₁ उच्चावेणिओ. (130) B दुगुच्छं; C अग्गुच्छं, S दुगुंछं. (131) C पड्डाविअं; M पट्टविअं, S वंटाविअं, T बरसाविअं. (132) HD. 6.77. C बारद्धं; S पारंधं.T पराद्धि. (133) HD. (उद्दलिअं) 1.100. C उद्दारिअं. KS रणहूतं; MT रणभूतं for रणद्रुतम्. (134) HD. (उज्झमणं) 1.103. (135) B विट्टिअं; C विट्टितं; M पिडत्तं. (136) HD. 3.36. (137) HD. (थेणिल्लिअं) 5.32. B वेणिल्लअं. C पणिल्लअं. T भृतं for हृतम्. (138) HD. (विओलो) 7.63. C पिउओ; K विउरो. (139) HD. (साणइअं) 8.13. T साणिअअं. (140) HD. 5.13. B णिक्खालिअं; C णिक्खाविओ; K भिक्खालिअं; M हिक्खालिअं; S भिक्कालिअं, BKMS श्रांतं; T (अ)वशातं for शातम्. (141) C सोहिअं, K साहिल्लं; T सोरिल्लि. (142) HD. (पक्को)6.64. MS पकं. (143) T मराइअं for समराइअं. (144) HD. 1.78. K आइप्पपणं; M आइव्वरणं, S आइंपपणं; (145) HD. (ओत्थओ) 1.151. (146) HD. (ओसव्विअं) 1.168. BT ओसप्पिअं. (147) HD. 6.33. T पाडिसारिअं. (148) HD. (पेंडं) 6.81. B वेंटइअं, C वंडइअं; MS पेडुइअं. (149) HD. (उग्गहिअं) 1.104. C अग्गहिओ; M उग्गविओ. (150) C गविअ for गमिअं.(151) B उद्दुच्छिओ; C विडुच्छओ;K ओद्दच्छिओ;MT₁ उद्धच्छिओ; T₂ उड्डच्छिओ. (152) HD. 4.36. B णिगिण्णो; C णग्गट्टो; KMS णिग्गिणो; T णिट्टिण्णो. (153) HD. (किबोडो) 2.31. C किपाडो, KS कवाडो. (154) HD. (लोट्टो) 7.29. C लोट्टो, KS om.; T लोट्टा.

(१५५) पविरंजिओ स्निग्धः।(१५६) हुरुहुण्डिअं (१५७) उद्दूलिअं (१५८) ओससं अवनतम् (१५९) ओज्झरिअं प्रक्षिप्तं विक्षिप्तं च। (१६०) विस्सुओ (१६१) ववहिओ उन्मत्तः। (१६२) परिक्खाइअअं परिक्षीणम्। (१६३) छिक्कं (१६४) हेलुअं क्षुतम्। (१६५) थमिअं विस्मृतम्। (१६६) अज्झसिअं (१६७) अवडाहिअं (१६८) उक्कासं उत्कृष्टम्। (१६९) हल्लप्फलिअं त्वरितम् (१७०) उद्दारिअं उत्खातम्। (१७१) अड्डो यातः। (१७२) उल्लिक्कं दुश्चेष्टितम्। (१७३) उच्छड्डिअं मुषितम् (१७४) वोग्गिण्णं (१७५) परिअम्मिअं अलंकृतम्। (१७६) उक्किअं प्रसृतम्। (१७७) झत्थो (१७८) ल्हिक्को (१७९) मोओ (१८०) मत्थो गतः।

---

(155) HD. 6.74. B पविरंजवो; KS om., M परिरंजिओ; T परिमंजिओ. (156) B उवडिअं; KS om.; T गुरुहुव्विअं. (157) B उद्दूलिअं; C उद्दूविअं; KS om. (158) Sk अवसक्कम्. B ओणअं; KS om. (159) HD. (उज्झरिअं) 1.133. KS om. (160) KS om; M अप्पुओ; T_1 बिप्पुओ; T_2 पिप्पुओ. (161) Sk व्यवहितः. B अविहिओ; KS om.; T पवहिओ. (162) Sk परिक्षायितम्. KS om.; M परिभाउअं; T परिगाहिअं. (163) HD. 3.36. C चिक्कं; KS om.; (164) HD. 8.72. B पिलुअं; KS om.; M छेलुअं; T_1 हेलुहअं; T_2 हेलहअं. (165) HD.5.25. B पविग्घं; KMS om. (166) HD. 1.30. C उज्झासिअं; KS om.; M अज्झंसिअं; T अज्झस्सिअं. (167) HD. 1.47. KS om; T अवाविअं. After अवडाहिअं S adds लोहिरो (cf.HD.7.25)अत्यासक्तः. (168) HD. (उक्कासिअं) 1.114. BM उक्कोसं उत्कृष्टम्; KS om. (169) HD. 8.59. B हलपविअं; C हल्लपविअं; K पहुल्लकरिअं or पहुल्लपरिअं; M om.; S पहुल्लपल्लिअं; T हल्लफलिअं. (170) HD. (उद्दरिअं) 1.110. M om; S उद्दालिअं; (171) HD. 1.10. C आरिट्टो; K अहूगो; M om.; S अड्डो. (172) M om; T अल्लिक्कं. (173) HD. (उच्छडिअं) 1.112. C उच्छादिअं; M om; S उच्छेदिअं; T उड्डिअं. (174) B उग्गिअं, K दोग्गणं, S दोगिणं. (175) Sk. परिकर्मितम्. B पट्टिअम्मिअं; M परिअमिअं. (176) CT उक्कअं for उक्किअं. (177) HD. (झत्थं) 3.61. B गत्तो; KS झत्तो; T कत्थो. (178) T ल्हिक्को for ल्हिक्को. (179) HD. 6.148. B om. (180) HD. 1.8. B सत्तो; C गावो; K मच्छो; S अत्थो.

(१८१) खसिअं (१८२) उच्छुरिअं (१८३) पडिहत्थो आपूर्णम्। (१८४) णिज्झरं जीर्णं खिन्नं च। (१८५) उज्जल्लो (१८६) उच्छुल्लो (१८७) उव्वालो (१८८) अवाहिओ। (१८९) उत्तप्पो अध्यासितम्। (१९०) ओइल्लअं (१९०अ) उक्कुण्डं विप्रलब्धः। (१९१) उद्धच्छो लिप्तम्। (१९२) छूहिअं पार्श्वपरावृत्तम्। (१९३) अणग्गपल्लइं पुनरुक्तम्। (१९४) अण्णसअं आस्तृतम्। (१९५) उप्पडिअं नष्टम्। (१९६) अणहप्पणअं भर्त्सितम्। (१९७) उज्झरिओ (१९८) उग्घओ। (१९९) विमइओ। (२००) मइओ (२०१) पइओ विस्तीर्णः। (२०२) कुद्दो (२०३) वामो (२०४) अवगदो (२०५) पइण्णो (२०६) घुत्तो आक्रान्तम्।

---

(181) M om. खसिअं. (182) HD. (उच्छुरं) 1.90. B विच्छुरिअं; K उच्छूरितं; M om. S उच्छूरितः. (183) HD. 6.19. B पडिहत्थं अपूर्वम. (184) HD. (णिज्झरं) 4.26. S णिउरं; S om. जीर्णं. (1.85.) HG. 2 174. HD. 1.97. B उब्बल्लो; T अल्लो. (186) HD. 1.131. BT उप्पल्लो; K उच्छण्णो; M उच्छुण्णो; S उच्छूणो; T_2 उच्चुण्णो. (187) HD. (ओव्वालो) 1.102. B उव्वालो; C उय्यल्लो; S ओव्वोलो; T उबोलो. (188) B अंजडिओ; T अवानिओ. (189) HD. 1.131. B उत्तत्तो; T om. (190) HD. (ओइल्लं) 1.158. CM ओअल्लअं. (190 A) HD. (उक्कुंडो) 1.91. B उक्कुड्डं; C उक्कंदं; M उक्कुड्ढं; T कूटं. (191) HD. (उद्धत्थो) 1.96. B उद्दच्छो; C उडंबो; M उड्डच्छो; T उद्धचो. (192) HD. 3.30. B छूहिअं; M छुहितं. (193) अपिट्ठल्लई; T अणग्गपल्लग्गं. (194) B अण्णासअं. T अस्मृतं for आस्तृतम्. (195) C अपडिअं, S उप्पडिअं; T इच्छड्ढिअं. (196) HD. 1.48. BC अणहवणअं; T अणहप्पाविअं. (197) HD. (उज्झरिअं) 1.133. C उक्करिओ; KMT उज्जारिओ. (198) HD. (उग्घाओ) 1.126. C ओघिओ; T उग्घओसिओ. (199) HD. (विमइअं) 7.71. C मरिओ; T धिमइओ. (200) HD. (मइअं भर्त्सितम्) 6.114. B मइच्चो; M om.; S तुइओ; T मगुओ. (201) HD. (पइअं भर्त्सितम्) 6.64. T चइओ. (202) HD. (कुद्दं) 2.34. C रुद्दो; S कुद्दो. (203) HD. 7.47. KS पपामो; M पवामो; T पामो. (204) HD. (अवगदं, 1.30. C अवगळो. (205) HD. 6.7. C वेण्गो. (206) HD. 5.58.

(२०७) ओक्खलिअं (२०८) ओरम्पिअं (२०९) उक्खण्डिअं त्रुटितम् खण्डितमित्यर्थः। (२१०) अण्णं (२११) कप्परिअं आरोपितम्।(२१२) आहविओ चूर्णितम्। (२१३) उल्लुण्टिअं (२१४) दुहअं (२१५) उत्थिअं (२१६) उक्कासिअं (२१७) ओत्थरिअं रणलब्धम्। (२१८) ओमहिअं पुरस्कृतम्। (२१९) वक्खलिअं उत्सङ्गितम्। (२२०) उअक्किअं पुञ्जीकृतम्। (२२१) पिण्डइअं प्रशान्तम्। (२२२) उलुहुण्डिअं हेषितम्। (२२४) हेक्किअं (२२५) हीसमणं उन्नतम्, उत्तमं चुम्बितं च। (२२६) मुम्मिअं (२२७) मुल्लिअं शीलितम्। (२२८) महुरालिअं (२२९) णिस्सीमिओ निर्वासितः। (२३०) विक्खिण्णो अवकीर्णः। (२३१) णिरित्तो नतः। (२३२) गुम्मिओ मूलोत्सन्नम्।

(207) HD. (ओक्खण्डिअं) 1.112. C उक्करिअं; S ओखलिअं; T ओक्खपिअं. (208) HD. 1.171. B ओरंपिअं; C उरविअं; M आरंपिअं. (209) HD. 1.112. C उक्कंडिअं; K उक्खुटिअं; MS उक्खुट्टिअं; T इक्कुडिअं. (210) KMST om; HD. does not give this word. (211) HD. 2.20. B कव्वरिअं; KS कंपरिअं आरोपित.. (212) B अहविओ; C आटविओ; S अहदिओ. K घूर्णितः; M चूर्णित; S पूर्णितं for चूर्णितम्. (213) HD. 1.109. BT उल्लुट्टिअं; उल्लुअं; M उल्लडहिअं; S टल्लटिअं. (214) HD. (दुहओ) 5.45. C धुहअं; T लुहअं; (215) C ओटल्लिअं; KMS उत्थितं. (216) HD. 1.114. C उक्कोसिअं; M उक्कासिअं. (217) HD. (ओत्थरिओ) 1.169. B ओदरिअं; C उत्थरिअं; K ओच्छरिअं; M ओच्चरिअं; ST ओत्थरिओ. (218) T ओघहिअं for ओमहिअं. (219) HD. (वक्खलयं) 7.46. C वणनत्तडिअं; K वंखलतं, M पक्कलिअं; S वज्झलअं; T वक्कलअं. (220) HD. 1.107. C वलक्किअं उग्यक्किअं; S उअंकिअं, T बअंगिअं. (221) HD. 6.54. C पिड्डइअं; M वेंठइअं; S पेड्डइअं T पेंडइअं. (222) HD. (उलुउण्डिअं) 1.119. M उलुउंडिअं; S उलुहुंडिलं; T उलुहुल्लिअं. (224) CM हक्किअं; T हेगिअं. (225) HD. 8.68. B हिसमणं; C हेसमणं; T हिसमणि. (226) T गुट्टिअं for मुम्मिअं. (227) M मुल्लं; T गुल्लि. S सिलितं for शीलितम्. (228) HD. 6.125. M मुहरालिअं. (229) Sk निःसीमितः. B णिस्सिमिओ. (230) HD. (विक्खिण्णं) 7.88. KS विक्खिणो. HD. अवतीर्णः for अवकीर्णः. (231) HD. णिरिक्को) 4.30. T णिरिक्को. B नृत्तः for नतः. (232) B गुम्मुओ मूलोत्पन्नः for गुम्मिओ मूलोत्सन्नः.

(२३३) णिरुत्तं निश्चितम्। (२३४) पक्खुडिअं प्रस्फुरितम्। (२३५) खण्डिओ मद्यासक्तः। (२३६) वेड्डिओ वेष्टितः।(२३७) वोलीणो अतिक्रान्तः। (२३८) णिम्मिओ स्थापितः। (२३९) लक्खिओ (२४०) मिओ विघटितः। (२४१) णिच्चणिओ जलधौतः। (२४२) चक्खिअं आस्वादितम्। (२४३) तुच्छअं रञ्जितम्। (२४४) रेक्किअं आक्षिप्तम्। (२४५) परद्दो भीतः पतितः पीडितश्च। (२४६) पडिअग्गिअं वर्धापितं परिभुक्तं च। (२४७) उच्छुल्लो विधारितः। (२४८) णडिओ वञ्चितः। (२४९) ओसक्किओ (२५०) सग्गओ (२५१) फंसुलो मुक्तः। (२५२) गुमिलो मूढः स्खलितः आपूर्णश्च। (२५३) संसोसिओ चूर्णितः भीतः आरूढः उद्विग्नश्च। (२५४) उच्चल्लो (२५५) अज्झंसिअं दृष्टम्। इत्यादि ॥ १३२ ॥

---

(233) HD. 4.30. T णीरुत्तो. (234) HD. (पक्खड्डिअं) 6.20. M पक्कडिअं; S पंकडिअं; T पक्कसोअं; (235) HD. 2.78. B ओण्डिओ. Bp T अन्यासक्तः for मद्यासक्तः. (236) M वेंडिओ for वेड्डिओ. (237) B वोरिणो for वोलीणो. (238) B जणिम्मिओ, M णिमिओ; T णिरांओ. (239) M लक्खओ; S लखओ. (240) S मिवो for मिओ. (241) ? (242) From चक्ख. (243) HD. 5.15. B तुत्थअं; M उत्थअं. (244) HD. (रेंकिअं) B किक्किअं; MT रेंकिअं. S लेक्किअं. (245) M वरंदो; S परंटो; T परग्गो. (246) HD. 6.74. M पडिअंटिअं; S पडिअंगिअं, T पडिघट्टिअं. (274) HD. 1.131. M उच्छल्लो, S उद्दुल्लो, T उच्छुलो. T विदारितः for विधारितः (248) HD. 4.10. B णिाडिओ. (249) HD. (ओसक्की) 1.149. B इसक्किओ, C ऊरिसंकिओ; M ओसिक्किओ; S ह्रसिंकिओ; T ऊसक्किओ. (250) HD. (सग्गहो or संगहो) 8.4. C नंगओ, M संगओ. (251) HD. (फमुलो) 6.82. B पुंसुलो; C पंसुलो; S घुंसुलो. (252) HD. (गुमिलं) 2.102. B मुमिलो; C गमिदो; T उमिलो. (253) BC संसाओ, KST संशोषितं चूर्णम् for चूर्णितः. (254) B om.; C उसुबों; S उंचल्लो. (255) HD. 1.30. B उज्झंसिअ. B om. दृष्टम्.

धातवोऽर्थान्तरेष्वपि ॥ १३३ ॥

उक्तेभ्योऽर्थेभ्योऽर्थान्तरेष्वपि धातवो वर्तन्ते । वलिः प्राणने पठितः, खादनेऽपि वर्तते । वलइ खादति प्राणनं करोति वा ॥ एवं कलिः संख्याने संज्ञाने च । कलइ जानाति संख्यानं करोति वा ॥ गिरिर्गतौ प्रवेशे च । गिरइ प्रविशति गच्छति वा ॥ कांक्षतेः पम्फ आदेशः प्राकृते । पम्फइ इच्छति खादति वा ॥ पङ्कतेः (?) थक्क आदेशः । थक्कइ नीचां गतिं करोति विलम्बयति वा ॥ विलप्युपालम्भिसंतपिनिश्वसां झंखादेशः । झंखइ विलपति उपालभते संतपति निःश्वसिति वा ॥ केचित्कैश्चिदुपसर्गैर्नित्यम् । पहरइ युध्यते । संहरइ संवृणोति । अणुहरइ सदृशो भवति । णीहरइ पुरीषोत्सर्गं करोति । विहरइ क्रीडति । आहरइ खादति । पडिहरइ पुनः पूरयति । परिहरइ त्यजति । उपहरइ पूजयति । वाहरइ आह्वयति । पवसइ देशान्तरं गच्छति । उच्छुवइ चोरयति । उल्लुहइ निःसरति ॥ १३३ ॥

इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ
तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

---

133. S ओलइ for वलइ. B संस्थानं; K सज्ञानं for संज्ञानं. K प्रवेशेपि for प्रवेशे च. M फंफ for पम्फ. M फंफइ for पम्फइ. K कांक्षति for इच्छति. S om. इच्छति. T_1 विङ्कतेः; T_2 निकतेः for पङ्कतेः. Bp निजां for नीचां. After निःश्वसिति KMS add भाषते. B णिहरइ for णीहरइ. KM उच्छुवइ; S उच्छल्वइ for उच्छुवइ. K चटति; S चडति; T चर्डति for चोरयति. B उल्लुहरइ; T उल्लरइ for उल्लुहइ. Colophon: M om. from °मदर्ह down to श्रीमत्. MS तृतीयस्याध्यायस्य for तृतीयाध्यायस्य.

द्वितीयः पादः ॥

✓दस्तस्य शौरसेन्यामखावचोऽस्तोः ॥ १ ॥

शौरसेन्यां भाषायां तकारस्य अखौ अनादौ वर्तमानस्य अचः परस्य अस्तोः असंयुक्तस्य दकारो भवति। तदो पूरिदपदिण्णेण मारुदिणा मन्तिदो। एतस्मात् एदाहि। सततं सददं॥ अखाविति किम्। तथा तहा। तधा करेध। तरइ॥ अच इति किम्। चिन्ता। मन्तिदं॥ अस्तोरिति किम्। मन्तो। अय्यउत्तो। असंभाविदसक्कारं। हला सउन्तले॥ १॥

अधः क्वचित् ॥ २ ॥

तस्येत्यनुवर्तते। शौरसेन्यां संयोगे अधो वर्तमानस्य तस्य दकारो भवति, क्वचिल्लक्ष्यानुसारेण। महन्दो। अन्देउरं॥ २॥

तावति खोर्वा ॥ ३ ॥

शौरसेन्यां तावच्छब्दे खोः आदेस्तकारस्य दो वा भवति। दाव। ताव॥ ३॥

थो धः ॥ ४ ॥

वेत्यनुवर्तते। शौरसेन्यां थस्य धो वा भवति। कधेदि कहेदि, कथयति। कधं कहं, कथम्। पिधं पिहं, पृथक्। कधा कहा, कथा। अखावित्येव। थामं। थेवं॥ अच इत्येव। कन्था॥ अस्तोरित्येव। तित्थं नीर्थम॥ ४॥

---

1. B read तकारस्य after असयुक्तस्य. B पूरिदपडिण्णेण for °पदिण्णेण. After एदाहि KS add पदाओ पताकः. BT करधा for करेध. K om. तरइ M करइ for तरइ. KS om. अय्यउत्तो. M असंभाविदसंकारं; T °संकरं for °सक्कारं. B सउन्दले; T सउद्दले for सउन्तले. 2. B संयोगेऽधः क्वचित् for the Sūtra. KT अथ for अधः in the Sūtra. After लक्ष्यानुसारेण BT read महन्दा. T महद्दो for महन्दो. After महन्दो M adds नमन्दो. T अंदेप्परि for अन्देउरं. 4. S थो दः for the Sūtra. BT थाम for थामं. T किया for कन्था. T सत्थं for तित्थं.

इहहचोर्हस्य ॥ ५ ॥

शौरसेन्यामिहशब्दस्य 'ध्यघमित्थाहचौ [२·४·५] इति विहितस्य हच्प्रत्ययस्य च हकारस्य धकारो वा भवति । इध इह । होध होह । परित्ताअध परित्ताअह ॥ ५ ॥

भुवो भः ॥ ६ ॥

हस्येत्यनुवर्तते । शौरसेन्यां भुवादेशस्य हकारस्य भकारो वा भवति । भोदि होदि भुवदि हुवदि हवदि ॥ ६ ॥

अन्त्याद्दिदेति मो णः ॥ ७ ॥

शौरसेन्यामन्त्यान्मकारात्परो णकारागमो वा भवति इदेति इकारे एकारे च परे । जुत्तं णिमं जुत्तमिणं, युक्तमिदम् । सरिसं णिमं सरिसमिणं, सदृशमिदम् । किं णेदं किमेदं, किमेतत् । एवं णेदं एवमेदं, एवमेतत् ॥७॥

र्यो य्यः ॥ ८ ॥

शौरसेन्यां र्यस्य स्थाने य्य इत्ययं वा भवति । अय्यउत्तो । पय्याउलीकिद म्हि । सुय्यो । कय्यपरवसो ॥ पक्षे । अज्जउत्तो । पज्जाउलीकिद म्हि । सुज्जो । कज्जपरवसो ॥ ८ ॥

पूर्वस्य पुरवः ॥ ९ ॥

शौरसेन्यां पूर्वशब्दस्य पुरव इत्यादेशो वा भवति । अपुरवमेदं । पक्षे । अपुव्वमेदं ॥ ९ ॥

इअदूणौ क्त्वः ॥ १० ॥

शौरसेन्यां क्त्वाप्रत्ययस्य इअ दूण इत्यादेशौ वा भवतः । भविअ होदूण । पढिअ पढिदूण । रमिअ रमिदूण ॥ होत्ता भोत्ता पढित्ता रन्ता इति सिद्धावस्थायां क्त्वोपे ॥ १० ॥

---

6. T भुवो हा for the Sūtra. BT भवति for हवदि. 7. K युत्त णिमं for जुत्तं णिमं. K om. जुत्तमिणं. K om. सरिसमिणं. 8. K om. स्थाने. K इति वा for इत्ययं वा. After सुय्यो K adds सूर्यः । पक्षे सुज्जो. ST om. कय्यपरवसो. K पज्जाउलीकद म्हि for °किद म्हि. K om. सुज्जो. 9. B पुरवमेदं; M अपुरवं णाडअं for अपुरवमेदं; B पुव्वमेदं for अपुव्वमेदं. 10. KMS इअऊणौ क्त्वः for the Sūtra. KM इअ ऊण for इअ दूण. K भोऊण for भोदूण. KT सोत्ता भोत्ता इति तु for होत्ता भोत्ता पढित्ता रन्ता इति. MT कत्ता for रन्ता. T मारिअ मारिदूण for रमिअ रमिदूण.

कृगमोऽडुअः ॥ ११ ॥

कृञ् गम् इत्याभ्यां परस्य क्त्वाप्रत्ययस्य डित् अडुअ इत्यादेशो वा भवति। कडुअ। गडुअ। करिअ। गमिअ। करिदूण। गमिदूण ॥ ११ ॥

इदानीमो ल्दाणिं ॥ १२ ॥

शौरसेन्यामिदानीमः स्थाने दाणिं इत्यादेशो लिद्भवति। लित्वान्न विकल्पः। अणन्दरकरणिज्जं दाणिं आणवेदु अय्यो। 'तद्व्यत्ययश्च' [३·४·६९] इति सूत्रात् प्राकृतेऽपि। अण्णं दाणिं होइ ॥ १२ ॥

तस्मात्ता ॥ १३ ॥

शौरसेन्यां तस्माच्छब्दः ता इत्यादेशमापद्यते। ता जाव पविसामि। ता अलं एदिणा माणेण ॥ १३ ॥

णं नन्वर्थे ॥ १४ ॥

शौरसेन्यां नन्वर्थे णं इति निपातः प्रयोक्तव्यः। णं अफलोदअं। णं अय्यमिस्सेहिं पुढमं एव्व आणत्तं। णं भवं मे अग्गदो चलदि ॥ १४ ॥

अम्महे हर्षे ॥ १५ ॥

शौरसेन्यां अम्महे इति निपातो हर्षे प्रयोज्यः। अम्महे एदाए उम्मिलाए सुपरिघडिदो भवं ॥ १५ ॥

हीहीं वैदूषके ॥ १६ ॥

शौरसेन्यां विदूषकसंबन्धिनि हर्षे हीही इति निपातः प्रयोक्तव्यः। हीही संपण्णा मणोरहा पिअवअस्सस्स ॥ १६ ॥

---

11. KM इत्येताभ्यां for इत्याभ्यां. KMS करिऊण गमिऊण for करिदूण गमिदूण. After गमिदूण KMS add गच्छिऊण. 12. KST om. लिद्. K अणंतरं for अणन्दर°. BT अणंतरं for अण्णं. T om. दाणि. 13. T तस्मात्ताः for the Sūtra. 14. BT पढमं for पुढमं. 15. T अम्हहे for अम्महे in the Sūtra, Com. and illustrations. KMS एक्काए for एदाए. 16. B विदूषके for वैदूषके. T मणोरधा for मणोरहा.

हीमाणहे निर्वेदविस्मये ॥ १७ ॥

शौरसेन्यां हीमाणहे इति निपातः निर्वेदे विस्मये च प्रयोक्तव्यः । निर्वेदे—हीमाणहे परिस्सन्ता अम्हे एदेण णिअविहिणो दुव्विलसिदेण, परिश्रान्ता वयमेतेन निजविधेर्दुर्विलसितेन ॥ विस्मये—हीमाणहे जीवन्तवच्छा मे जणणी ॥ १७ ॥

एवार्थे एव्व ॥ १८ ॥

शौरसेन्यामेवार्थे एव्व इति निपातः प्रयोज्यः । मह एव्व भणन्तस्स । सो एव्व देसो ॥ १८ ॥

हञ्जे चेट्याह्वाने ॥ १९ ॥

शौरसेन्यां हञ्जे इति निपातः चेट्याह्वाने प्रयोज्यः । हञ्जे चदुरिए ॥ ॥ १९ ॥

अतो ङसेर्दुदोशू ॥ २० ॥

शौरसेन्यामकारात्परस्य ङसेः दु दो इत्येतौ शितौ भवतः । दूरादु । दूरादो एव्व ॥ २० ॥

आत्सावामन्त्र्य इनो नः ॥ २१ ॥

शौरसेन्यामिनो नकारस्य आमन्त्र्ये सौ परे आत्वं वा भवति । हो कञ्चुइआ । हो तवस्सिआ । हो मणस्सिआ ॥ २१ ॥

मः ॥ २२ ॥

शौरसेन्यामामन्त्र्ये सौ परे नकारस्य मकारो वा भवति । हो राअं । हो पिअवम्मं । हो सुकम्मं । भअवं कुसुमाउह ॥ पक्षे । सअललोअन्तआरि भअवं हुदवह ॥ २२ ॥

---

17. KS om. शौरसेन्यां. K om. निर्वेदे. KMS परिस्संतो हगे for परिस्सन्ता अम्हे. T जीविदवच्छा जीवंतवच्छा. 18. KS य्येव्व इति; MT येव्व इति for एव्व इति. MST सो य्येव एसो for सो एव्व देसो. 19. KMS चउरिए for चदुरिए. 20. T दूरादो येव्व for दूरादो एव्व. 21. B हे for हो. KMST हो तवास्सि हो मण स्सि for हो तवस्सिआ हो मणस्सिआ. S मणंसि for मणस्सिआ. 22. B हे for हो throughout. B om. हे सुकम्मं. B सअललोअ-अहिभअं हुदवह.

भवताम् ॥ २३ ॥

आमन्त्र्य इति निवृत्तम्। शौरसेन्यां भवत्प्रकाराणां सौ परे नकारस्य मो भवति। किं भवं हिअएण चिन्तेदि, किं भवान् हृदयेन चिन्तयति। एदु भवं, पज्जलिदो भअवं हुदासणो, एतु भवान्, प्रज्वलितो भगवान्हुताशनः। मघवं पाकसासणो, मघवान् पाकशासनः। कअवं करेमि काहं च, कृतवान् करोमि करिष्यामि च ॥ २३ ॥

भविष्यति स्सिः ॥ २४ ॥

शौरसेन्यां भविष्यदर्थे विहिते प्रत्यये परे स्सि इति भवति। हिस्सादीनामपवादः। भविस्सिदि। करिस्सिदि। गच्छिस्सिदि ॥ २४ ॥

इचेचोर्दट् ॥ २५ ॥

'लटस्तिसाविजेच्' [२·४·१] इति वर्तमाने प्रथमपुरुषैकवचनस्थाने विहितयोरिचेचोर्दकारागमो भवति। टित्त्वादादिः। रमदि रमदे। हसदि हसदे। गच्छदि गच्छदे। होदि। देदि। णेदि ॥ २५ ॥

शेषं प्राकृतवत् ॥ २६ ॥

शौरसेन्यामिह प्रकरणे यत्कार्यमुक्तं ततोऽन्यत्प्राकृतवदेव भवति। 'दिहौ मिथः मे' [१·१·१८] इत्यारभ्य 'दस्तस्य शौरसेन्यामखावचोऽस्तोः' [३·२·१] इति सूत्रात् प्राग् यानि सूत्राणि, तेषु यान्युदाहरणानि तानि तदवस्थान्येव शौरसेन्यां भवन्तीति विभागः प्रतिसूत्रमभ्यूह्य दर्शनीयः। यथा—अन्तावेई। जुवईजणो। मणसिला इत्यादि ॥ २६ ॥

---

23. KS मकारो for मो. ST किं एदं भवं for किं भवं. S पज्जालिदो for पज्जलिदो. B महवं for मघवं. B पाअसासणो for पाक°. 24. KMS हिस्साह्मादीनामपवादः for हिस्सादीनामपवादः. T om. करिस्सिदि गच्छिस्सिदि. 25. BS इजेचोर्दट् for the Sūtra. KMT °विचेच् for °विजेच्. BS °रिजेचोः for °रिचेचोः. B टित्त्वादनुक्रमन्यन्यायेनादेः for टित्त्वादादिः. After हसदे KMS add अच्छदे अच्छदि. After होदि KMS add होदे. 26. M अन्दावेदि। जुवदिजणो। मर्णसिला for अन्तावेई. ...मणसिला. S मर्णसिला for मणसिला.

मागध्यां शौरसेनीवत् ॥ २७ ॥

शेषमिति वर्तते । मागध्यां यद्वक्ष्यते ततोऽन्यच्छौरसेनीवद् द्रष्टव्यम् । तत्र 'दस्तस्य शौरसेन्यामखावचोऽस्तोः' [३·२·१] विशदु आउत्ते शामिपशादाअ ॥ 'अधः क्वचित्' [३·२·२] अले किं एशे महन्दे कलकले, किमेष महान्कलकलः ॥ 'तावति खोर्वा' [३·२·३] मालेध वा मुञ्चेध वा, अयं दाव से आगमे ॥ 'थो धः' [३·२·४] अले कुम्भीलआ कधेहि ॥ 'इहहचोर्हस्य' [३·२·५] ओशलध अय्या ओशलध ॥ 'भुवो भः' [३·२·६] भोदि ॥ 'अन्त्यादिदेति मो णः' [३·२·७] जुत्तं णिमं । शलिशं णिमं ॥ 'र्यो य्यः' [३·२·८] अय्य, एशे खु कुमाले मलअकेदू ॥ 'पूर्वस्य पुरवः' [३·२·९] एशे अपुलवे ॥ 'इअदूणौ क्त्वः' [३·२·१०] किं खु शोहणे बम्हणे त्ति कलिअ लज्जा पदिग्गहे दिण्णे ॥ 'कृगमोर्डदुअः' [३·२·११] कदुअ । गदुअ ॥ 'इदानीमो ल्दाणिं' [३·२·१२] शुणध दाणिं, हगे शक्कावदालतित्थवाशी धीवले ॥ 'तस्मात्ता' [३·२·१३] ता जाव उववि‍शामि ॥ 'णं नन्वर्थे' [३·२·१४] णं अवशलोवशप्पणीआ लाआणो शुणीअन्ते ॥ 'अम्महे हर्षे' [३·२·१५] अम्महे एदाए उम्मिलाए शुपलिघडिदे भवं ॥ 'हीही वैदूषके' [३·२·१६] हीही कोशम्बाणअरी एशा ॥ 'हीमाणहे निर्वेदविस्मये' [३·२·१७] निर्वेदे यथा विक्रान्तभीमे राक्षसः—हीमाणहे पलिश्शन्ता हगे एदेण णिअविहिणो दुव्विलशिदेण ॥ विस्मये यथा उदात्तराघवे राक्षसः—हीमाणहे जीवन्तवच्छा मे जणणी ॥ 'एवार्थे एव्व' [३·२·१८]

---

27. B मागध्या for मागध्यां in the Sūtra. K om. शेषामिति वर्तते. B पर्शादद मावमिश्शे for पविशदु...दाअ. K माउत्ते; S माउंते for आउत्ते. B संयोगेऽधः क्वचित् for अधः क्वचित्. K om. किमेष महान्कलकलः. KM जं दाव; T अअं दाव for अयं दाव. K अम्मा for अय्या. B पुरवे for अपुलवे. KS इअऊणो for इअदूणौ. BMS बम्हणे शे त्ति for बम्हणे त्ति. K लण्णा for लज्जा. B शक्कावदालब्भन्तलवाशी for शक्कावदालतित्थवाशी. M om. °तित्थ.° K पविशामि for उववि‍शामि. T om. शुणीअन्ते. B विदूषके for वैदूषके. T om. from हीं हीं

मए एव्व ॥ 'हञ्जे चेट्याह्वाने' [३·२·१९] हञ्जे चदुलिए ॥ 'अतो ङसेर्दु-दोश्' [३·२·२०] अहं पि भागुलाअणादो मुद्दं पावेमि ॥ 'आत्सावामन्त्र्य इनो नः' [३·२·२१] हे कञ्चुइआ ॥ 'मः' [३·२·२२] हे लाअं ॥ 'भवताम्' [३·२·२३] एदु भवं शमणे भअवं महावीले ॥ 'भविष्यति स्सिः' [३·२·२४] कहिं णु एदे लुहिलप्पिए भविश्शिदि ॥ 'इचेचोर्दट्' [३·२·२५] अमच्चलक्कशे पेक्खिदुं इदो एव्व आअच्छदि ॥ अले किं एशे महन्दे कलकले शुणीअदि ॥ 'शेषं प्राकृतवत्' [३·२·२६] मागध्यामपि 'दिहौ मिथः से' [१·१·१८] इत्यारभ्य 'दन्तस्य शौरसेन्यामखावचोऽस्तोः' [३·२·१] इत्यस्य प्राग् यानि सूत्राणि, तेषु यान्युदाहरणानि सन्ति, तेषु मध्ये अमूनि तदवस्थान्येवेति विभागः स्वयमभ्यूह्य दर्शनीयः ॥ २७ ॥

त्वाङ्गाहो ङसः ॥ २८ ॥

मागध्यामित्यनुवर्तते । मागध्यां आत् अवर्णात्परस्य ङसः डित् आह इत्यादेशो भवति तु । हगे न एलिशाह कम्माह काली, अहं न ईदृशस्य कर्मणः कारी । भअदत्तशोणिदाह कुम्भे, भगदत्तशोणितस्य कुम्भः ॥ पक्षे । भीमशेणश्श पश्चादो आहिण्डीअदि । हिडिम्बाए घडुक्कअशोए ण उव-शमदि ॥ २८ ॥

आमो डाहङ् ॥ २९ ॥

मागध्यामवर्णात्परस्य आमो डाहादेशो ङिद्वा भवति । ङित्त्वात्सानु-नासिक उच्चारः । शअणाहँ मुहं, स्वजनानां मुखम् ॥ पक्षे णलिन्दाणं । शअणाणं ॥ व्यत्ययात्प्राकृतेऽपि डाहङ् । तुम्हाहं । अम्हाहं । मरिसाहं । कम्माहं ॥ २९ ॥

वैदूषके down to एशा. B शंवाहणअरी for कोशम्बा णअरी. B यथा राक्षसी for यथा विक्रान्तभीमे राक्षसः. K चउलिये; M चउलिके; T चदुलिके for चदुलिए. BK हगे वि for अहं पि. B भवं महावले for भअवं महावीले. B इजेचोः for इचेचोः. T पेऽ किदु for पेक्खिदुं. 28. M वर्तते for अनुवर्तते. M om. तु. K आहिदाअदि for आहिण्डीअदि. BT कुटुंबअशोए for घडुक्कअशोए. 29. KMT आमो ङित् for the Sūtra. B मुहं for मुहं. B न डाहङ् for णलिन्दाणं. KMS om. शअणाणं.

सौ पुंस्येलतः ॥ ३० ॥

मागध्यां पुंलिङ्गे अकारस्य एकारो भवति सौ परे । लित्वान्न विकल्पः । एषः मेषः, एशे मेशे । एषः पुरुषः, एशे पुलिशे ॥ अत इति किम् । निधिः णिही ॥ पुंसीति किम् । जं । जलं ॥ ३० ॥

हगेऽहंवयमोः ॥ ३१ ॥

मागध्यामहंवयमोः स्थाने हगे इत्यादेशो भवति । हगे शक्कावआलतित्थवाशी धीवले । हगे शंपत्ता, वयं संप्राप्ताः ॥ ३१ ॥

छोऽनादौ श्चः ॥ ३२ ॥

मागध्यामनादौ वर्तमानस्य छकारस्य शकाराक्रान्तश्चकारो भवति । गच्छ गच्छ, गश्च गश्च । उच्छलति उश्चलदि । पिच्छिलः पिश्चिले ॥ लाक्षणिकस्यापि । आपन्नवत्सलः आवण्णवच्छलो आवण्णवश्चले । तिर्यक् प्रेक्षते, तिरिच्छि पेच्छइ, तिलिश्चि पेश्चदि ॥ अनादाविति किम् । छाले ॥ ३२ ॥

क्षः ≍कः ॥ ३३ ॥

मागध्यामनादौ वर्तमानस्य क्षकारस्य जिह्वामूलीयाक्रान्तककारो भवति । यक्षः य≍के । राक्षसः ल≍कशे ॥ अनादावित्येव । खए ॥ ३३ ॥

स्कः प्रेक्षाचक्षेः ॥ ३४ ॥

मागध्यां प्रेक्षतेराचक्षतेश्च क्षस्य सकाराक्रान्तः ककारो भवति । क्षः ≍कः [३·२·३३] इत्यस्यापवादः । पेस्कदि । आअस्कदि ॥ ३४ ॥

---

30. K एसे मेसे for एशे मेशे. KS णिहि(ही). After णिही KS add झलि। पुंसीति किं। जलं; MT add कलं. KS om. जं. T om. जलं. 31. शक्कावदालभ्भन्तलवाशी. KS °वासि for °वाशी. 32. T om. the Sūtra. and Com. BT पिश्चिलो for पिश्चिले. KS तिरिच्छ पेच्छइ तिरिश्च पेश्चदि for तिरिच्छि... पेश्चदि. 33. KMS क्षष्कः for the Sūtra, i. e. these Mss. do not use the sign of जिह्वामूलीय her e and also in the Com. K यष्के लष्कशे for य≍के ल≍कशे. M om. खले; K खए क्षयः; S खअजले; T खयकाले for खए. 34. B om. क्षस्य.

सः षयोः संयोगेऽग्रीष्मे ॥ ३५ ॥

मागध्यां सकारषकारयोः संयोगे वर्तमानयोः सकारो भवति, अग्रीष्मे ग्रीष्मशब्दे न भवति। ऊर्ध्वलोपाद्यपवादः। सः—पस्खलदि। हस्ती। बहस्पदी। मस्कली। विस्मये॥ षः—शुष्कदारु शुस्कदाल। कष्टं कस्तं। शष्पकवलः शस्पकवले। धनुष्काण्डं धणुस्कण्डं॥ अग्रीष्म इति किम्। गिम्हवाशले॥ ३५॥

स्रोः श्लौ ॥ ३६ ॥

मागध्यां स्रोः सकाररेफयोः शकारलकारौ यथासंख्यं भवतः। सः—समः शमे। हंसः हंशे। सुतिः शुदी। शोभनम् शोहणं॥ रः—नरः नले। करः कले॥ उभये—सारसः शालशे। पुरुषः पुलिशे॥ ३६॥

न्यण्यज्ञञ्जां ञ्ञः ॥ ३७ ॥

मागध्यां न्य ण्य ज्ञ ञ्ज इत्येषां ञ्ञः ञकारो भवति। रित्वाद् द्वित्वम्। न्य—अभिमन्युकुमारः अहिमञ्ञुकुमाले। कन्यका कञ्ञआ। सामान्यं शामञ्ञं॥ ण्य—पुण्यवान् पुञ्ञवन्ते। अब्रह्मण्यम् अब्बम्हञ्ञं॥ ज्ञ—प्रज्ञा पञ्ञा॥ ञ्ज—अञ्जलिः अञ्ञली। धनञ्जयः धणञ्ञए। पानञ्जलः पाअञ्ञले॥ ३७॥

जो व्रजेः॥ ३८ ॥

मागध्यां व्रजतेर्जकारस्य ञ्ञः भवति। यस्यापवादः। वञ्ञदि। वञ्ञदे॥ ३८॥

जयद्यां यः ॥ ३९ ॥

मागध्यां जकारयकारद्यकाराणां यकारो भवति। ज—जानाति याणादि। जनपदः यणवदे। दुर्जनः दुय्यणे। गर्जति गय्यदि॥ य—यानपात्रं याणवत्तं॥ द्य—मद्यं मय्यं। अद्य किल विद्याधरः आगतः, अय्य किल विय्याहले आअदे॥ यस्य यत्वविधानं 'आदेर्जः' [१·३·७४] इत्यस्य बाधनार्थम्॥ ३९॥

35. T हस्ते for हस्ती. KT सुस्कदालु for शुस्कदालु. B धनुष्कुण्डं धणुस्कुण्डं, T धनुष्खडी धनुस्खंडी. 36. ST श्रुतिः शुदी for सुतिः शुदी. K om. करः कले. MT प्राञ्जलिः पञ्जली, S पाङ्गलः पंङ्गले for पानंजलः पाअञ्ञले. 38. T जः व्रजेः for the Sūtra. MS छस्यापवादः; T छापवादः for यस्यापवादः. M om. अय्य किल विय्याहले आअदे. B विय्याहरे for विय्याहले. T बाधार्थं for बाधनार्थम्.

ष्टष्टौ स्टम् ॥ ४० ॥

मागध्यां षकाराक्रान्तः ठकारः, द्विरुक्तः टकारश्च सकाराक्रान्तं टकारमापद्यते। ष्ठ—सुष्ठु कृतं शुस्टु कदं। कोष्ठागारं कोस्टागालं॥ ट्ट—पट्टं पस्टं। भट्टारिका भस्टालिआ। भट्टः भस्टे। भट्टिनी भस्टिणी ॥ ४० ॥

स्थर्थौ स्तम् ॥ ४१ ॥

मागध्यां स्थ र्थ इत्येतौ सकाराक्रान्तं तकारमापद्येते। स्थ—उपस्थितः उवस्तिदे। सुस्थितः शुस्तिदे॥ र्थ—अर्थपतिः अस्तवदी। सार्थवाहः शस्तवाहे ॥ ४१ ॥

चिष्ठस्तिष्ठस्य ॥ ४२ ॥

मागध्यां स्थाधातोर्यः तिष्ठ इत्यादेशः तस्य चिष्ट इत्यादेशो भवति। चिष्टदि। चिष्ठदे ॥ ४२ ॥

नो णणोः पैशाच्याम् ॥ ४३ ॥

पैशाच्यां भाषायां नकारणकारयोर्नकारो भवति। पनमत पनयप्पकुवितं, प्रणमत प्रणयप्रकुपितम्। गुनगनजुत्तो गुणगणयुक्तः। गुनेन। गुणेन ॥ नकारस्य नकारकरणं णत्वबाधनार्थम ॥ ४३ ॥

न्यण्यज्ञां ञर् ॥ ४४ ॥

पैशाच्यां न्य ण्य ज्ञ इत्येतेषां ञकारो भवति। रित्वाद् द्वित्वम्। न्य—कन्यका कञ्ञका। अभिमन्युः अभिमञ्ञू॥ ण्य—पुण्यकर्मा पुञ्ञकम्मो। पुण्याहम् पुञ्ञाहं ॥ ज्ञ—प्रज्ञा पञ्ञा। सर्वज्ञः सव्वञ्ञो। विज्ञः विञ्ञो। संज्ञानम् सञ्ञाणं ॥ ४४ ॥

---

40. B ष्टष्टौ स्थम्; MST ष्टष्टौ स्तम् for the Sūtra. BM थकारमापद्यते; T तकारमापद्यते for टकारमापद्यते. B शुस्थु for शुस्टु. B कोस्थागारं; KS गोस्टागालं. B पस्थं; T पस्तं for पस्टं. B भस्तालिआ; T भस्तारिका for भस्टालिआ. B भस्थे for भस्टे. B भस्थिनी for भस्टिणी. 41. तकाराक्रान्तं सकारं for सकाराक्रान्तं तकारं. K सुस्तिदे for शुस्तिदे. 42. B चिट्ठः for चिष्टः in the Sūtra, Com. and illustrations. T om. चिष्टदि. 43. पनयप्पकुविअं for °प्पकुपितं. 44. After पञ्ञा KMS add सञ्ञा ञानी विञ्ञानं and om. from सर्वज्ञः down to सञ्ञाणं. After सव्वञ्ञो T adds ञानी विञ्ञानी.

राज्ञो ञ्ञो वा चिञ् ॥ ४५ ॥

पैशाच्यां राजन्शब्दसंबन्धिनो ज्ञकारस्य चिञ् इत्यादेशो वा भवति। राचिञा लपितं। रञ्ञा लपितं। राचिञो धनं। रञ्ञो धनं॥ ज्ञ इति किम्। राजा ॥ ४५ ॥

तल्तदोः ॥ ४६ ॥

पैशाच्यां तकारदकारयोस्तकारो भवति। लित्त्वान्न विकल्पः। त—भगवती भअवती। सतनम् सततं ॥ द—मतनपरवसो। तामोतरो। वतनकं। मालातो। मालातु। सिरीतो सिरीतु। तरीतो तरीतु। तरूतो तरूतु। वधूतो वधूतु। होतु। रमतु॥ तकारस्य तकारविधानमादेशान्तरबाधनार्थम्। तेन पताका वेतिसो इत्यादि सिद्धं भवति ॥ ४६ ॥

शषोः सः ॥ ४७ ॥

पैशाच्यां शकारषकारयोः सो भवति। श—सोभनं। ससी। संखो। सङ्का। सको॥ ष—विसमो। किसनो कृष्णः। विसेसो॥ 'न प्रायो लुक्कादिच्छल्ष्पट्लुम्यन्तसूत्रोक्तम्' [३·२·६३] इत्यस्य बाधकस्य बाधनार्थोऽयं योगः ॥ ४७ ॥

लो ळः ॥ ४८ ॥

पैशाच्यां लकारस्य ळकारो भवति। सीळं। कुळं। जळं। फळं कमळं ॥ ४८ ॥

---

45. K लविअं for लपितं. 46. After पैशाच्यां KMS add भाषायां. After भगवती KS add पव्वती सतत. KMS गिरीतो गिरीतु for सिरीतो सिरीतु. KST नरीतो नरीतु. M नतीतो नतीतु for तरीतो तरीतु. K इति for इत्यादि. 47. K सोहनं for सोभनं. K om. सङ्का. M किसिनो T कसनो; for किसनो. B बाधनार्थेऽयं for बाधनार्थोऽयं. 48. KS om. कमळं.

दुस्तिर्यादृशगे ॥ ४९ ॥

पैशाच्यां यादृश इत्यादिषु दृ इत्यस्य स्थाने ति इत्यादेशो भवति। यादृशः यातिसो। भवादृशः भवातिसो। तादृशः तातिसो। अस्मादृशः अम्हातिसो। अन्यादृशः अञ्ञातिसो। ईदृशः ईतिसो। कीदृशः केतिसो। एतादृशः एतातिसो। इत्यादि ॥ ४९ ॥

र्यस्नष्टां रिअसिनसिटाः क्वचित् ॥ ५० ॥

पैशाच्यां र्य स्न ष्ट इत्येतेषां यथासंख्यं रिअ सिन सिट इत्यादेशाः क्वचिद्भवन्ति। भार्या भारिआ। स्नानं सिनानं। कष्टं कसिटं ॥ क्वचिदिति किम्। अय्यो। सुसा। भट्ठो ॥ ५० ॥

टोस्तु तु ॥ ५१ ॥

पैशाच्यां टु इत्यस्य तु इति भवति तु। कुटुम्बकं कुतुम्बकं ॥ ५१ ॥

यः पो हृदये ॥ ५२ ॥

पैशाच्यां हृदयशब्दे यस्य पो भवति। हितपकं। किं पि किं पि हितपके अत्थं चिन्तयमानी ॥ ५२ ॥

टा नेन तदिदमोः ॥ ५३ ॥

पैशाच्यां तदिदमोः स्थाने टावचनेन सह नेन इत्यादेशो भवति। नेन, नेन अनेन वा ॥ ५३ ॥

नाए स्त्रियाम् ॥ ५४ ॥

पैशाच्यां तदिदमोः टावचनेन सह नाए इत्यादेशः स्त्रियां भवति। पूचितो च नाए पातवकुसुमपतानेन। नाए, तया अनया वा ॥ ५४ ॥

---

49. B एतिसो for ईतिसो. MT om. from. कीदृशः down to एतातिसो. 50. B र्यस्नष्टां for र्यस्नष्टां in the Sūtra. S हते for भट्ठो. 52. B किपि किपि for किं पि. 54. B om. पूचितो च नाए वातवकुसुमपतानेन (पूजितश्च तया पादपकुसुमप्रदानेन).

ङसेस्तोतुशतः॥ ॥ ५५ ॥

पैशाच्याम् अकारात्परस्य ङसेः तो तु इत्येतौ भवतः। शिस्वात्पूर्वस्य दीर्घः। ताव तीए तूरातो एव्व तिट्ठो। तुवातो तुवातु। ममातो ममातु ॥ ५५ ॥

तडिजेचः ॥ ५६ ॥

पैशाच्यां लटः प्रथमपुरुषैकवचनादेशयोः इच् एच् इत्येतयोः तकारागमः टिद्भवति। टकार आदिविध्यर्थः। रमति रमते। हसति हसते। गच्छति गच्छते। होति। नेति ॥ ५६ ॥

एय्य एव भविष्यति ॥ ५७ ॥

पैशाच्यामिजेचोः स्थाने भविष्यति एय्य इत्ययमेव भवति न तु स्सिः। तं तट्ठून चिन्तितं रञ्जा का एसा हुवेय्य, तां दृष्ट्वा चिन्तितं राज्ञा कैषा भविष्यति ॥ ५७ ॥

इय्यो यक: ॥ ५८ ॥

पैशाच्यां यक्प्रत्ययस्य इय्य इत्यादेशो भवति। निय्यते। गिय्यते। रमिय्यते। पठिय्यते ॥ ५८ ॥

कृञो डीरः ॥ ५९ ॥

पैशाच्यां कृञः परस्य यकः डित् ईर इत्यादेशो भवति। पुथुमतंसने सब्बस्स य्येव संमानं कीरते, प्रथमदर्शने सर्वस्यैव संमानः क्रियते ॥ ५९ ॥

---

55. MS तूरातो तूरातु for तुवातो तुवातु. BMS om. ताव तीए तूरातो एव्व तिट्ठो (तावत् तया दूरादेव दृष्टः). T येव्व for एव्व. 56. ST तडिचेचः for the Sūtra. B om. नेति. After नेति T adds तेति. 57. T om. न तु स्सिः. B तत्थून for तट्ठून. T om. from तं तट्ठून down to भविष्यति. 58. T om. the Sūtra and Com. B नीइय्यते गीइय्यते for निय्यते गिय्यते. 59. T om. the Sūtra and Com. up to भवति. B पठमदंसने; M पुढुमतंसने; T पुढमतंसने for पुथुमतंसने.

क्त्वा तूनं ॥ ६० ॥

पैशाच्यां क्त्वाप्रत्ययः तूनं इत्यादेशमापद्यते। गन्तूनं। रन्तूनं। मन्तूनं। हसितूनं। पठितूनं। कथितूनं ॥ ६० ॥

ष्ट्वः ट्टूनत्थूनौ ॥ ६१ ॥

पैशाच्यां षत्वे कृते ष्टा इति सिद्धस्य क्त्वाप्रत्ययस्य स्थाने ट्टून त्थून इत्यादेशौ भवतः। तट्टून तत्थून। नट्टून नत्थून ॥ ६१ ॥

शेषं शौरसेनीवत्॥ ६२ ॥

पैशाच्यां यदुक्तं ततोऽन्यच्छौरसेनीवद्भवति। अथ ससरीरो भगवं मकरद्धजो एत्थ परिभमन्तो हुवेय्य। एवंविधाए भगवतीए कथं तापस-वेसगहनं कतं। ईतिसं अतिट्ठपुरवं महाधनं तट्टून भअवं अक्किमं वरं अच्छसे राअस्स। चंदावलोकानो रचनीए तरानो एव्व निट्ठो सो आगच्छमानो राजा ॥ ६२ ॥

न प्रायो लुकादिच्छलषट्शम्यन्तसूत्रोक्तम् ॥ ६३ ॥

पैशाच्यां 'प्रायो लुक्कगजदतदपयवाम्' [१·३·८] इत्यारभ्य 'छलषट्शमीसुधाशावसप्तपर्णे' [१·३·९०] इति यावद्यानि सूत्राणि तैर्यदुक्तं कार्यं तन्न भवति। मकरकेतू। मगधपुत्तवचनं। विजयसेनेन लपितं। मतं। पापं। आयुधं। देवरो॥ एवमन्यसूत्राणामप्युदाहरणानि द्रष्टव्यानि॥ ६३ ॥

रो लस्तु चूलिकापैशाच्याम् ॥ ६४ ॥

चूलिकापैशाच्यां भाषायां रेफस्य लकारो भवति तु ॥

पनमत पनयप्पकुपितकोलीचलनक्कलक्कपतिपिंपं।
तससु नखतप्पनेसुं एकातसतनुथलं लुत्तं ॥

---

60. KS om. गन्तूनं. 61. KS ट्टून थून; T धून थून for ट्टून त्थून. T नध्दून for नत्थून. 62. After पैशाच्यां KM add भाषायां. B एव्व for हुवेय्य. B एतातिसं for ईतिसं. B om. from भअवं down to राजा. S अंकिमं for अक्किमं. 63. After पैशाच्यां KM add भाषायां. MS सगरपुत्तवचनं; T संकरपुत्त° for मगधपुत्त°. 64. S लो लस्तु for रो लस्तु in the Sūtra. B °चलनग्गलग्गपतिबिम्बं for °चलनक्कल-क्कपतिपिम्पं. MS °चलनंकलंक° for चलनक्कलक्क°. T लुद्दं for लुत्तं.

नलो नरो । सलो सरो ॥ ६४ ॥

गजडदबघझढधभां कचटतपखछठथफाः ॥ ६५ ॥

चूलिकापैशाचिके ग ज ड द ब घ झ ढ ध भ इत्येतेषां यथासंख्यं क च ट त प ख छ ठ थ फ इत्येते ल्तितो भवन्ति । नगरम् नकलं । मार्गणः मक्कनो । मेघः मेखो । घनः खनो । व्याघ्रः वक्खो । राजा राचा । जीमूतः चीमूतो । जर्जरम् चच्चलं । निर्झरः निच्छलो । झर्झरः छच्छलो । तडागम् तटाकं । डमरुकः टमलुको । मण्डलम् मण्टलं । गाढम् काठं । ढक्का ठक्का । षण्डः सण्टो । मदनः मतनो । दामोदरः तामोतलो । मन्दरः मन्तलो । मधुरम् मथुलं । धारा थाला । बान्धवः पन्थवो । बालकः पालको । रभसः रफसो । रम्भा लम्फा । भगवती फकवती । नियोजितम् नियोचितं ॥ क्वचि-ल्लाक्षणिकस्यापि । प्रतिमा पडिमा पटिमा । दंष्ट्रा दाढा ताठा ॥ ६५ ॥

अन्येषामादियुजि न ॥ ६६ ॥

अन्येषामाचार्याणां मते ग ज ड द ब घ झ ढ भ इत्येषामादौ स्थितानां युजिधातौ च क च ट त प ख छ ठ थ फा न भवन्ति । गती । घम्मो । जनो । झल्लरी । डमरुको । ढक्का । दानं । धूळी । बालो । फालं ॥ युज–नियोजितं ॥ अन्येषामिति किम् । कती । नियोचितं ॥ ६६ ॥

शेषं प्राग्वत् ॥ ६७ ॥

चूलिकापैशाचिके 'रो लस्तु' [३·२·६४] इत्यादि यदुक्तं, ततोऽन्यत् प्राग्वत् प्राक्तनपैशाचिकवद्भवति । 'नो णनोः' [३·२·४३] नयनं । फनी ॥ एवमन्यदपि ॥ ६७ ॥

॥ इति श्रीमदर्हन्नन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ
तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

---

65. KS नकरं for नकलं. KS जर्जरः चच्छलो. KMS om. दामोदरः तामोतलो. KS om. मधुरम् मथुलं. KMS रभसं लफसं. B रम्फा for लम्फा. KMS om. नियोजितम् नियोचितं. T om. क्वचिल्लाक्ष°...ताठा. 66. T om. the Sūtra and Com. K भालं for फालं. 67. B प्राक्तनपैशाचीवद् for °पैशाचिकवद्. Colophon KMST इति प्राकृतव्याकरणवृत्तौ तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः.

तृतीयः पादः ॥

अयोऽपभ्रंशेऽचोऽच् ॥ १ ॥

अपभ्रंशे अचः स्थाने प्रायः अच् अन्यो भवति । कउ काउ । वेणा वेणी । बाह बाहा बाहुः । पट्ठं पुट्ठं पृष्ठम् । तणु तिणु तुणं तृणम् । सुकिदु सुकृदु सिकिउ सुकृतम् । लिह लिहा लेह लेखा । गउरं गोरं ॥ प्रायोग्रहणाद्यश्चापभ्रंशे विशेषो वक्ष्यते, तस्यापि क्वचित्प्राकृतवच्छौरसेनीवच्च कार्यं भवति ॥ १ ॥

अचोऽस्तवोऽखौ कखतथपफा गघदधबभान् ॥ २ ॥

अपभ्रंश इत्यनुवर्तते । अपभ्रंशे अचः परे अस्तवः असंयुक्ताः अखौ अनादौ वर्तमानाः क ख त थ प फ इत्येते वर्णा ग घ द ध ब भ इत्येतान् प्रायो यथासंख्यमापद्यन्ते ॥ २ ॥

कस्य गः ।

जं दिट्ठउँ सोमग्गहणु असइहिँ हसिउँ णिसंकु ।
पियमाणुसविच्छोहगरु गिलि गिलि राहु मियंकु ॥ १ ॥
[= हे. ३९६·१]

[यद् दृष्टं सोमग्रहणमसतीभिर्हसितं निःशङ्कम् ।
प्रियमनुष्यविक्षोभकरं गिल गिल राहो मृगाङ्कम् ॥]

---

1. S om. प्रायः in Com. MT कवु कावु for कउ काउ. Bp. पिट्ठी for पुट्ठं. KS पिट्ठि पिट्ठी; M पट्ठी पिट्ठी for पट्ठं पुट्ठं. M तुणा; T तृणु for तुणु. KS सुकिउ for सुकिदु. KS सुकुउ; M om.; T सुकि for सुकृदु. S सकिउ for सिकिउ. MT लीहा for लिह. KMS गउरि गोरि for गउरं गोरं. T अपभ्रंशेऽपि for °भ्रंशे. M वक्तव्यं for कार्यं. 2. M अचोनादावाखौ for अचोस्तवोखौ in the Sūtra. T °पफा for °पफा in the Sūtra. KS om. कस्य गः. St. 1. T दिट्ठइ for दिट्ठउँ M सहिहिं; T सईहि. KS नीसंकु for णिसंकु. T °माणस° for °माणुस°. KS °विच्छहगरु for विच्छोहगरु. KMS गिलु गिलु for गिलि गिलि. S मिअंका for मिअंकु. BT °मानस° for °मनुष्य°. KS °मानुषविक्षोभगात्रं (Corr. to कर्तुः) for °मनुष्यविक्षोभकरं. KMS गिलु गिलु for गिलि गिलि.

स्वस्य घः ।

अम्मिएँ सत्थावत्थेहिँ सुधिँ चिन्तिज्जइ माणु ।
पिएँ दिट्ठे हल्लोहलेंण को चेअइ अप्पाणु ॥ २ ॥

[= हे.३९६·२].

[अम्ब स्वस्थावस्थैः सुखेन चिन्त्यते मानः ।
प्रिये दृष्टे सुखपारवश्येन कश्चेतयत्यात्मानम् ॥]

तथपफानां दधबभाः ।

सबधु करेप्पिणु कधिदुँ मइँ तसु पर सभलउँ जम्मु ।
जासु न चाउ न चारभडी न य पम्हुट्ठउ धम्मु ॥ ३ ॥

[= हे.३९६·३]

[शपथं कृत्वा कथितं मया तस्य परं सफलं जन्म ।
यस्य न त्यागो न चारभटी न च प्रमुष्टो धर्मः ॥]

अच इति किम् । गिलि गिलि राहु मियंकु [१] ॥ असंयुक्त इति किम् । एक्कहिँ अक्खिहिँ सावणु [हे = ३५७·२] ॥ अनादाविति किम् । सबधु करेप्पिणु [३] ॥ प्रायोऽधिकारात्क्वचिन्न भवति ।

जइ केवँइ पावीसु पिउ अकिआ कोड्डु करीसुँ ।
पाणिउँ नवइ सरावि जिवँ सव्वंगे पइसीसुँ ॥ ४ ॥

[= हे.३९६·४]

[यदि कथंचित्प्राप्स्यामि प्रियमकृतानि कौतुकानि करिष्यामि ।
पानीयं नवे शरावे यथा सर्वाङ्गे प्रवेक्ष्यामि ॥]

St. 2. B अम्मीए; MS अम्मिये for अम्मिए. M सुधं; S सुधे; T सुखे for सुधिँ. M हेल्लोहलेण for हल्लोहलेण. M वेअइ for चेअइ. B हल्लोहलेन for सुखपारवश्येन. M चिन्त्यता for चेतयति. St. 3. KS कधिउ for कधिदुँ. KS मए for मइँ. KS पद for पर. MS पम्भट्ठउ; T वम्हुट्ठउ for पम्हुट्ठउ. ST शौर्यं for आरभटी. KMS प्रमृष्टो for प्रमुष्टो. KMS गिलु गिलु for गिलि गिलि. KS क्वचिद् भवति for क्वचिन्न भवति. St. 4. M जलकेवइवापीसु for जइ केवँइ पावीसु. KS कुड्डलि करिसु for कोड्डु करीसु. S जव for जिवँ. KS पविसु for पइसीसुं. B अकृतं कौतुकं for अकृतानि कौतुकानि. B सर्वाङ्गेण प्रविक्षामि for सर्वाङ्गे प्रवेक्ष्यामि.

उअ कणिआरु पफुल्लिअउ कंचणकंतिपयासु ।
गोरीवयणविणिज्जिअउ णं सेवइ वणवासु ॥ ५ ॥
[= हे.३९६.५]

[पश्य कर्णिकारः प्रफुल्लितः काञ्चनकान्तिप्रकाशः ।
गौरीवदनविनिर्जितो ननु सेवते वनवासम् ॥]

तु मो ड्वम् ॥ ३ ॥

अपभ्रंशे अचः परः असंयुक्तः अनादौ वर्तमानो मकारो वत्वमापद्यते तु । ङित्वात्सानुनासिकः । कवँलु कमलु । भवँरु भमरु ॥ लाक्षणिकस्यापि । जिवँ । आवँ ॥ तिवँ ॥ अच इत्येव ; संमाणेइ लोउ ॥ असंयुक्त इत्येव । तसु पर सभलउँ जम्मु [३] ॥ अखावित्येव । मअणु ॥ ३ ॥

ह्मो म्हम् ॥ ४ ॥

अपभ्रंशे ह्म इत्ययं मकाराक्रान्तहकारमापद्यते तु । म्ह इति 'श्मष्म-ह्मामस्मरस्मह्मां म्हः' [१·४·६७] इति प्राकृतलक्षणविहितोऽत्र गृह्यते, संस्कृते तस्यासंभवात् । गिम्हो गिह्मो । बम्हणो बह्मणो ॥ ४ ॥

बम्ह ते विरला के वि नर जे सव्वंगछइल्ल ।
जे वंका ते वंचयर जे उज्जुअ ते बइल्ल ॥ ६ ॥
[= हे. ४१२·१]

[ब्रह्मंस्ते विरलाः केऽपि नरा ये सर्वाङ्गच्छेकाः ।
ये वक्रास्ते वञ्चकनरा ये ऋजुकास्ते बलीवर्दाः ॥]

रो लुकमधः ॥ ५ ॥

अपभ्रंशे संयोगस्याधो वर्तमानो रेफो लुकं लोपमाप्नोति तु । पिउ प्रिउ प्रियः ॥ जइ केवँइ पावीसु पिउ [४] ॥ ५ ॥ पक्षे—

St. 5. KMS om. उअ and पश्य. 3. KMS तु मो ड्वः for the Sūtra. S सानुनासिक उच्चारः for सानुनासिकः. MT जांव तांव for आवँ तिवँ. KMS अम्माणेइ । सलाइ for संमाणेइ लोउ. T मअवणु for मअणु. 4. KMS हकाराकान्तं मकारं for मकाराक्रान्तं हकारं. KMS तदसंभवात् for तस्यासंभवात्. KMST om. St. 5. 5. MS om. तु K om. पिउ प्रिउ प्रियः.

जइ भग्गा पारक्कडा तो सहि मज्झु प्रिएण ।
अह भग्गा अम्हहंतणा तो तें मारिअडेण ॥ ७ ॥
[= हे. ३७९.२]

[यदि भग्नाः परकीयास्ततः सखि मम प्रियेण ।
अथ भग्ना अस्मदीयास्ततस्तेन मारितेन ॥]

क्वचिदभूतोऽपि ॥ ६ ॥

अपभ्रंशे क्वचिदविद्यमानोऽपि रेफो भवति । व्रासु व्यासः ॥ ६ ॥

व्रासु महारिसि एँउँ भणइ जइ सुइसत्थु पमाणु ।
मायहँ चलण नवंताहं दिवे दिवे गंगण्हाणु ॥ ८ ॥
[= हे.३९९.१]

[व्यासो महर्षिरेतद्भणति यदि श्रुतिशास्त्रं प्रमाणम् ।
मातृणां चरणौ नमतां दिवा दिवा गङ्गास्नानम् ॥]

क्वचिदिति किम् । वासेण वि भारहखंभि बद्धु, व्यासेनापि भारत-स्तम्भे बद्धम् । [= हे. ३९९]

विपदापत्संपदि द इ ॥ ७ ॥

अपभ्रंशे विपद् आपद् संपद् इत्येतेषां दकारस्य इकारो भवति । विवइ । आवइ । संपइ ॥ प्रायोऽधिकारात् । गुणहिँ न संपय कित्ति पर [४५] ॥७॥

St.7.K भद्दा; S भंटा for भग्गा. MS पारकेडा; T परकेरडा for पारक्कडा MS ते for तो. K पिएण for प्रिएण. KS जम्हहंतणा for अम्हहंतणा. KMS यदि भर्ता परकीयस्ते सखि मम प्रियेण । अथ भर्तास्मत्संबन्धी तदा तेन मारितेन (S छूरितेन) for the छाया. 6. St. 8. M व्रासमहारिसि for व्रासु महा°. KS सुइसद्दु for सुइसत्थु. KS माएहिं चलगे णवहं दिणे दिणे; M मायहे...दिणे दिणे for मायहँ...दिवे दिवे. K व्यासमहर्षिः for व्यासो महर्षिः. T मातुश्चरणौ for मातृणां चरणौ. KS दिन दिन; M दिने दिने for दिवा दिवा. KS हारह खंबि; M हारह खंहि; T हारहखच्छ for भारहखंभि. K भद्दा; M बद्दा; S भंधा for बद्धु. KT बद्धाः for बद्धम्. 7. M इत्येतेषु for इत्येतेषां. T दस्य for दकारस्य. After संपइ K adds विपत्, आपत्, संपत्. KS read here the full stanza: गुणहिं न संपअ कित्ति पर फल लिहिआ भुंजंति । केसरि ण लहइ बोड्डिअ वि गअ लक्खेहिं घेप्पंति ॥ छाया-गुणैर्न संपत् कीर्तिः केवलं फलानि लिखितानि भुञ्जते । केसरी न लभते विंशतिकपर्दानपि गजा लक्षैर्गृह्यंते.

कथं यथा तथा डिहडिधडिमडेमारथादेः ॥ ८ ॥

अपभ्रंशे कथं यथा तथा इत्येतेषु थादेरवयवस्य इह इध इम एम इत्येते चत्वार आदेशा डितो भवन्ति । किह किध किम केम, कथम् । जिह जिध जिम जेम, यथा । तिह तिध तिम तेम, तथा ॥ ८ ॥

बिंबाहरि तणु रअणवणु किह ठिउ सिरिआणंद ।
निरुवमरसु पिएं पिअवि जणु सेसहों दिण्णी मुद्द ॥ ९ ॥
[= हे.४०१·३]

[बिम्बाधरे तनू रदनव्रणः कथं स्थितः श्रियानन्द ।
निरुपमरसं प्रियेण पीत्वेव शेषस्य दत्ता मुद्रा ॥]

केम समप्पउ दुट्ठु दिणु किध रअणी छुडु होइ ।
णववहुदंसणलालसउ वहइ मणोरह सो इ ॥ १० ॥
[= हे.४०१·१]

[कथं समाप्यतां दुष्टं दिनं कथं रजनी क्षिप्रं भवति ।
नववधूदर्शनलालसो वहति मनोरथान्सोऽपि ॥]

ओ गोरीमुहणिज्जिअउ वद्दलि लुक्कु मिअंकु ।
अन्नु वि जो परिहविअतणु सो किम भमइ निसंकु ॥ ११ ॥
[= हे.४०१·२]

[अहो गौरीमुखनिर्जितो मेघेषु निलीनो मृगाङ्कः ।
अन्योऽपि यः परिभूततनुः स कथं भ्रमति निःशङ्कम् ॥]

---

8. KS om. from किह down to तथा. St. 9. B सिरिअ ंदु; KS सिरिआणादा; M सिरिआणादु for सिरिआणंद. K पीएविव for पिअवि. B मुद्दु; KMS मुद्दा for मुद्द. KMS श्रिया ज्ञातं; T श्रियानंदः for श्रियानन्द. St.10. B रअणी चुडु होइ; KS रजणी जद होइ; M रजणी जुडु होइ; T रअणी चुडु मोउ for रअणी छुडु होइ. KMS मणोरहसोदु for मणोरह सोइ. B रजनी यदि भवतु; KS जडे भवतु; M जडीभवतु. KMST मनोरथस्रोतः for मनोरथान्सोऽपि. St. 11. M दुद्दिणि; S दचणि for वद्दलि. M लोणु for लुक्कु. T वहइ for भमइ. After निसंकु MT add ओ सूचनायाम्.

भण सहि निहुअउँ तेम मइँ जइ पिउ दिट्ठु सदोसु ।
जेम ण जाणइ मज्झु मणु पक्खावडिअं तासु ॥ १२ ॥
[= हे. ४०१·४]

[भण सखि निभृतं तथा मां यदि प्रियो दृष्टः सदोषः ।
यथा न जानाति मम मनः पक्षपाति तस्य ॥]

जिम जिम वंकिम लोअणहं णिरु सावँलि सिक्खेइ ।
तिम तिम वम्महु णिअअ सर खरपत्थरि तिक्खेइ ॥ १३ ॥
[= हे. ३४४·१]

[यथा यथा वक्रिमाणं लोचनयोर्नितरां श्यामला शिक्षते।
तथा तथा मन्मथो निजाञ्शरान्खरप्रस्तरे तीक्ष्णयति ॥]

मइँ जाणिउँ पिअविरहिअहं क वि धर होइ विआलि ।
णवर मिअंकु वि तिह तवइ जिह दिणयरु खयगालि ॥ १४ ॥
[= हे. ४०१·५]

[मया ज्ञातं प्रियविरहितानां कापि धरा भवति विकाले ।
केवलं मृगाङ्कोऽपि तथा तपति यथा दिनकरः क्षयकाले ॥]

एवं जिवतिधौ उदाहार्यौ ॥

दादेर्डेहो यादृक्तादृकीदृगीदृशाम् ॥ ९ ॥

अपभ्रंशे यादृगादीनां दादेरवयवस्य डित् एह इत्यादेशो भवति । सर्वत्र डित्वाट्टिलोपः ॥ ९ ॥

St. 12. K मणु सह णिभुजे for भण सहि णिहुअउँ. S जामइ for जाणइ. KS पक्खावडिअदुः M पक्खावडिअउ; T पक्खापडिअउ for पक्खावडिअं. KS तासा; M तसु for तासु. K तथा मया यदि for तथा मां यदि. KM पक्षपातितं; T पक्षपातितं. St. 13. KS वंकिमु for वंकिम. KS णिअर for णिरु. KS संखेइ for सिक्खेइ. B मरा for सर. KS श्यामलापि संक्षयति for श्यामला शिक्षते. St. 14. BKMS read line 1 as line 2 and line 2 as line 1 in the text and also in the छाया. KS मए for मइँ. KM खअकालि; S खअकारि for खअगालि. K प्रियविरहिणीनां for °विरहितानां. BKS अपराह्ने. KS after correction विकाले. 9. M °दृशाः for °दृशाम् in the Sūtra, KMS om. सर्वत्र डित्वाट्टिलोपः.

मइँ भणिअउ बलिराउ तुहुँ केहउ मग्गणु एहु ।
जेहु तेहु नवि होइ वढ सइँ नारायणु एहु ॥ १५ ॥
[= हे. ४०२·१]

[मया भणितो बलिराज त्वं, कीदृङ् मार्गण ईदृक् ।
यादृक्तादृङ् न भवति मूढ स्वयं नारायण एषः ॥]

डइसोऽताम् ॥ १० ॥

अपभ्रंशे यादृशादीनामकारान्तानां यादृश तादृश कीदृश ईदृश इति रूपाणां दादेरवयवस्य डित् अइस इत्यादेशो भवति । जइसु । तइसु । कइसु । अइसु ॥ १० ॥

यावत्तावत्युंमहिंमा वादेः ॥ ११ ॥

अपभ्रंशे यावत् तावत् इत्यव्यययोर्वकारादेरवयवस्य उं महिं म इति त्रय आदेशा भवन्ति ॥ ११ ॥

तिलहँ तिलत्तणु ताउँ पर जाउँ न नेह गलन्ति ।
नेहि पणट्ठइ ते ज्जि तिल तिल फिट्टवि खल होन्ति ॥ १६ ॥
[= हे. ४०६·२]

[तिलानां तिलत्वं तावत्परं यावन्न स्नेहा गलन्ति ।
स्नेहे प्रनष्टे त एव तिलास्तिला भ्रष्ट्वा खला भवन्ति ॥]

जामहिँ विसमी कज्जगइ जीवहँ मज्झे एइ ।
तामहिँ अच्छउ इयरु जणु सुयणु वि अंतरु देइ ॥ १७ ॥
[= हे. ४०६·३]

St.15.K बलिराज for बलिराउ. K केहुउ;S केहुओ for केहउ. KS भण्यते for भणितो. 10. KS याद्दगादीनां for यादृशादीनां. KMST जइसो तइसो कइसो अइसो for जइसु etc. St. 16. KS तिलाहं for तिलहं. S गअंति for गलंति. KMS तिल पिट्ठवि; T तिल विट्टा for तिल फिट्टवि. KS तिलास्तिलपिष्टवद् भ्रष्टा भवंति. T तिलभ्रष्टाः for तिला भ्रष्ट्वा. 11. M has been damaged from this Sūtra onwards and hence variants are noted wherever possible. St.17. T कम्मगइ for कज्जगइ. KS जीवहं मज्झं for मज्झे. KS इअरजणु for इअरु जणु. KS सुजणु जि for सुअणु वि. KST इतरजनः, सुजन एवांतरं ददाति for इतरो जनः, सुजनोऽपि अन्तरं ददाति.

[यावद्विषमा कार्यगतिर्जीवानां मध्ये एति ।
तावदास्तामितरो जनः, सुजनोऽप्यन्तरं ददाति ॥]

जाम न निवडइ कुंभअडि सीहचवेडचडक्क ।
ताम समत्तहँ मयगलहं पइ पइ वज्जइ ढक्क ॥ १८ ॥
[=हे. ४०६·१]

[यावन्न निपतति कुम्भतटे सिंहचपेटादृढाघातः ।
तावत्समस्तानां मदकलानां पदे पदे वाद्यते ढक्का ॥]

डेत्तुलडेवडावियत्कियति च व्यादेर्वतुपः ॥ १२ ॥

इयत्कियदित्येतयोश्चकाराद्यावत्तावतोश्च परिमाणार्थे विहितो यो वतुप्प्रत्ययः तस्य व्यादेर्वकारादेर्यकारादेश्चावयवस्य एत्तुल एवड इत्यादेशौ डितौ भवतः । एत्तुलो । केत्तुलो । एवडो । केवडो ॥ १२ ॥

जेवडु अंतरु पट्टणगामहं तेवडु अंतरु रावणरामहं ॥ १९ ॥
[= हे. ४०७·१]

[यावदन्तरं पत्तनग्रामयोः, तावदन्तरं रावणरामयोः ॥]

डेत्तहे त्रलः ॥ १३ ॥

अपभ्रंशे सर्वादेः सप्तम्यर्थे त्रल्प्रत्ययस्य डित् एत्तहे इत्यादेशो भवति । जेत्तहे । तेत्तहे ॥ १३ ॥

जेत्तहें तेत्तहें वारि घरि लच्छि विसंठुल धाइ ।
पिअपब्भट्ठ व गोरडी णिच्चल कहिँ वि ण ठाइ ॥ १९ ॥
[= हे. ४३६·१]

[यत्र तत्र द्वारे गृहे लक्ष्मीर्विसंष्ठुला धावति ।
प्रियप्रभ्रष्टेव गौरी निश्चला कुत्रापि न तिष्ठति ॥]

St. 18. KS °चवेडा ढक्का for °चवेडचडक्क. KM समत्थाणं मदकलाणं for समत्तहं मयगलहं. KST °चपेटा दृढपातः for °चपेटा दृढाघातः. 12. After केवडो KS add जेवडो तेवडो. St. 19. All Mss. read जेवडु अंतरु रावणराहवहं तेवडु अंतरु पट्टणगावहं. KS रावणराघवयोः for रावणरामयोः. 13. St. 19. KS धाइ for धाइ. KS पब्भट्टेव for पब्भट्ठ व. KS कांता for गौरी.

यत्तदोर्डेत्तु ॥ १४ ॥

त्रल् इत्यनुवर्तते । यत् तत् आभ्यां परस्य त्रल्प्रत्ययस्य डित् एत्तु इत्ययमादेशो भवति । जेत्तु ठिदो, यत्र स्थितः। तेत्तु ठिदो, तत्र स्थितः ॥१४॥

कुत्रात्रे च डेत्थु ॥ १५ ॥

अपभ्रंशे कुत्र अत्र इत्येतयोः स्थितस्य चकारात् यत्तदोः परस्य त्रल्प्रत्ययस्य डित् एत्थु इत्यादेशो भवति । केत्थु । एत्थु । जेत्थु । तेत्थु ॥१५॥

जइ सो घडिदि प्रयावदी केत्थु वि लेप्पिणु सिक्खु ।
जेत्थु वि तेत्थु वि एत्थु जगि भण तो तहि सरिक्खु ॥ २० ॥
[= हे. ४०४·१]

[यदि स घटयति प्रजापतिः कुत्रापि लात्वा शिक्षाम् ।
यत्रापि तत्राप्यत्र जगति भण तर्हि तस्याः सदृक्षः ॥]

त्वतलौ प्पणम् ॥ १६ ॥

अपभ्रंशे भावेऽर्थे विहितौ त्वतल्प्रत्ययौ प्पण इत्यादेशमापद्येते । पडुप्पणं पटुत्वं पटुता वा । सुक्कप्पणं, शुक्लत्वं शुक्लता वा ॥ १६ ॥

साहु वि लोउ तडप्फडइ वड्डप्पणहों तणेण ।
वड्डप्पणु परि पाविअइ हत्थि मोक्कलडेण ॥ २१ ॥
[= हे. ३६६·१]

[सर्वोऽपि लोकः उत्ताम्यति बृहत्त्वस्यार्थे ।
बृहत्त्वं परं प्राप्यते हस्तेन मुक्तेन ॥]

तडप्फडइ इति तु औत्सुक्ये शब्दानुकरणं देशी धातुः ॥

14. KS अपभ्रंशे यत्तभ्यां परस्य for यत् तत् आभ्यां परस्य. K तेत्त for तेत्तु. 15. After तेत्थु K adds Sk. equivalents कुत्र अत्र. St. 20. K घडइ for घडिदि. K पआवई for प्रयावदी. K जइ for जगि. KS सहि for तहि. KMST सादृश्यं for सदृक्षः. 16. K om. अपभ्रंशे. St. 21. B वड्डत्तणहो for वड्डप्पणहो. S om. वड्डपणहों तणेण. S पर for परि. KS हत्थेण मुक्कलडेण for हत्थें मोक्कलडेण. KS सर्वोपि लोकस्तडफडायते महत्त्वस्य तादर्थ्येन (S तावदर्थेन). KS महत्ता परं प्राप्यते. KM तडफड इत्यौत्सुक्ये for तडप्फड इति तु औत्सुक्ये. B शब्दानुशासने for शब्दानुकरणे. B देशीयात्; K देश्ये धातुः; S देश्यो धातुः for देशी धातुः.

तव्यस्य एव्वइएव्वउएव्वाः ॥ १७ ॥

अपभ्रंशे तव्यप्रत्ययस्य एव्वइ एव्वउ एव्व इति त्रय आदेशा भवन्ति। जेव्वइ जेव्वउ जेव्व, जेतव्यः ॥ १७ ॥

एउँ गृण्हेप्पिणु ध्रुं मइं जइ प्रिउ उव्वारिज्जइ।
महु करिएव्वउँ किं पि न वि मरिएव्वउँ पर देज्जइ ॥ २२ ॥
[= हे. ४३८·१]

[एतद् गृहीत्वा यन्मया यदि प्रिय उद्वार्यते।
मम कर्तव्यं किमपि नापि मर्तव्यं परं दीयते ॥]

देसुच्चाडणु सिहिकढणु घणकुट्टणु जं लोइ।
मंजिट्ठएँ अइरत्तिए सव्वु सहेव्वउँ होइ ॥ २३ ॥
[= हे. ४३८·२]

[देशोच्चाटनं शिखिक्वथनं घनकुट्टनं यल्लोके।
मञ्जिष्ठयातिरक्तया सर्वं सोढव्यं भवति ॥]

सोएव्वा पर वारिआ पुप्फवईहिँ समाणु।
जग्गेव्वा पुणु को धरइ जइ सो वेउ पमाणु ॥ २४ ॥
[= हे. ४३८·३]

[स्वपितव्यं परं वारितं पुष्पवतीभिः समम्।
जागर्तव्यं पुनः को धरति यदि स वेदः प्रमाणम् ॥]

---

17. St. 22. KS एम गृहेप्पिणु जं मइ पिअ उव्वारिज्जइ। सबध करेव्विणु किं पि णइ वरि (S मरि) एव्वइ पर दिज्जइ. After उद्वार्यते KS add निषिध्यते. KS शपथं कृत्वा किमपि नास्ति for मम कर्तव्यं किमपि नास्ति. St. 23. K मंजिट्ठाए; S मंजट्ठाए for मंजिट्ठएँ. K अइरित्तिण; S अइरितिण for अइरत्तिए. KS घनकूटनं for घनकुट्टनं. KS अतिरिक्तया for अतिरक्तया. St. 24. B सोएव्व; K सोएव्वं for सोएव्वा. KST परि for पर. B जग्गेव्व for जग्गेव्वा. S दरइ for धरइ. KS वेदु for वेउ. K सुप्तव्यं; S स्वप्तव्यं for स्वपितव्यं. K जागरितव्यं for जागर्तव्यं.

क्त्व इ इउ इवि अवि ॥ १८ ॥

अपभ्रंशे क्त्वाप्रत्ययस्य इ इउ इवि अवि इति चत्वार आदेशा भवन्ति । करइ, करिउ, करिवि, करवि, कृत्वा ॥ १८ ॥

इ—

हिअडा जइ वेरिअ घणा तो किं अब्भि चडाहुं ।
अम्हहं बे हत्थडा जइ पुणु मारि मराहुं ॥ २५ ॥
[= हे. ४३९·१]

[हृदय यदि वैरिणो घनास्तत्किमभ्रे आरोहामः ।
अस्माकं द्वौ हस्तौ यदि पुनर्मारयित्वा म्रियामहे ॥]

इउ—

अम्मि पओहर वज्जमा निच्चु जें संमुह ठन्ति ।
महु थक्कहों समरंगणि गयघड भंजिउ जन्ति ॥ २६ ॥
[= हे. ३९५·५]

[मातः पयोधरौ वज्रमयौ नित्यं यौ संमुखं तिष्ठतः ।
मम स्थितस्य समराङ्गणे गजघटा भङ्क्त्वा यान्ति ॥

इवि—

रक्खइ सा विसहारिणी बे कर चुंबिवि जीउ ।
पडिबिम्बिअमुंजालु जलु जेहिँ अडोहिउँ पीउँ ॥ २७ ॥
[= हे. ४३९·२]

---

18. KS इपि अपि for इवि अवि in the Sūtra, Com. and illustrations. K करइपि करअपि for करिवि करवि. St. 25. S हिअड for हिअडा. K महि चडाहहुं; S तुहि जहाहुं for अब्भि चडाहुं. KS अम्हहं पि for अम्हहं. KS तदा किमत्रेमारोहामा for तत्किमभ्रे आरोहामः. St. 26. K अम्हि पअउहर वज्जवा णिच्चं for अम्मि पओहर वज्जमा निच्चु. K महु कंताखा समरंगणइ for महु थक्कहों समरंगणि. KS भंजिदु for भंजिउ. K साहसिनी for वज्रमयौ. KMST कांतस्य for स्थितस्य. St. 27. S विसहारिण for विसहारिणी. KS ते कर जुप्पि जिउ for बे कर चुंबिवि जीउ. KMS जेहिमाओहिवि पिउ for जेहिँ अडोहिउँ पीउँ. K विषधारिणी तौ करौ for विषहारिणी द्वौ करौ. KMS याभ्यामालोड्य पीतम् for याभ्यामनवगाह्य पीतम्.

[रक्षति सा विषहारिणी द्वौ करौ चुम्बित्वा जीवम् ।
प्रतिबिम्बितमुञ्जालं जलं याभ्यामनवगाह्य पीतम् ॥]

अपि—

बाह विछोडवि जाहि तुहुँ हउँ तेवँइ को दोसु ।
हिअअट्ठिउ जइ नीसरहि जाणउँ मुंज सरोसु ॥ २८ ॥
[= हे. ४३९.३]

[बाहू विच्छोड्य यासि त्वं भवतु तथा को दोषः ।
हृदयस्थितो यदि निःसरसि जानामि मुञ्ज सरोषः ॥]

एप्प्येप्पिण्वेव्येविणु ॥ १९ ॥

अपभ्रंशे क्त्वाप्रत्ययस्य एप्पि एप्पिणु एवि एविणु इति चत्वार आदेशा भवन्ति । करेप्पि करेप्पिणु करेवि करेविणु, कृत्वा ॥ १९ ॥

जेप्पि असेसु कसाअबलु देप्पिणु अभउँ जअस्सु ।
लेवि महव्वअ सिवु लहहिं झाएविणु तत्तस्सु ॥ २९ ॥
[= हे. ४४०.१]

[जित्वाशेषं कषायबलं दत्वाभयं जगतः ।
लात्वा महाव्रतानि शिवं लभन्ते ध्यात्वा तत्त्वम् ॥]

पृथग्योग उत्तरार्थः ॥

St. 28. KS बाह विछोडपि जाहिउ तुहं भमंतू मइ को दोसु. K हिअइ ट्ठिउ for हिअअट्ठिउ. KMS मुंचसु रोसु for मुंज सरोसु. KS बाहू विछोड्य यासि त्वं भ्रमन् तदा मयि को दोषः. KS. हृदये स्थितः for हृदयस्थितः. KS मुंच रोषं for मुञ्ज सरोषः. 19. BKMS एपि एपिणु for एपि एविणु in the Sūtra, Com. and illustrations. BK करएप्पि करएपिणु करएपि करएपिणु for करेप्पि...करेविणु. St. 29. KS अहउ for अभउँ. KMS लेपि for लेवि. KS झोपिणु for झाएविणु. K कमस्य for लात्वा.

तुम एवमणाणहमणहिं च ॥ २० ॥

अपभ्रंशे तुमुन्प्रत्ययस्य एवं अण अणहं अणहिं इत्येते चत्वारः, चकारात् एप्पि एप्पिणु एवि एविणु इत्येते च चत्वारः, एवमष्टादेशा भवन्ति । करेवं करण करणहं करणहिं करेप्पि करेप्पिणु करेवि करेविणु, कर्तुम् ॥ २० ॥

देवं दुक्करु निअअधणु करण न तउ पडिहाइ ।
एमइ सुहुँ भुंजणहँ मणु पर भुंजणहिँ न जाइ ॥ ३० ॥
[= हे. ४४१·१]

[दातुं दुष्करं निजकधनं कर्तुं न तपः प्रतिभाति ।
एवमेव सुखं भोक्तुं मनः परं भोक्तुं न याति ॥]

जेप्पि चएप्पिणु सअल धर लेविणु तउ पालेवि ।
विणु संतें तित्थेसरेंण को सक्कइ भुवणे वि ॥ ३१ ॥
[= हे. ४४१·२]

[जेतुं त्यक्तुं सकलां धरां लातुं तपः पालयितुम् ।
विना शान्तिना तीर्थेश्वरेण कः शक्नोति भुवनेऽपि ॥]

गमेस्त्वेप्येपिण्वोरेलुक् ॥ २१ ॥

अपभ्रंशे गमेर्धातोः परयोः एप्पि एप्पिणु इत्यादेशयोरेकारस्य लुग्भवति तु । गंपि गंपिणु गमेप्पि गमेप्पिणु, गत्वा ॥ २१ ॥

---

20. KMST तुमः प्रत्ययस्य for तुमुन्प्रत्ययस्य. KS एपि एपिणु for एवि एविणु. K करएवं करअण करअणहं करअणहिं करएपि करएप्पि करएप्पिणु करएपिणु for करेवं...करेविणु. St.30. K णिअधणु for णिअअधणु. K पडिभाइ for पडिहाइ. K एवं for एमइ. K निजधनं for निजकधनं. KMST भोक्तुमनाः for भोक्तुं. St. 31. KS धरं for धर. KS पालेपि for पालेवि. KS विउसंतित्थेसरें; M विणु संतें तित्थेसरें for विणु संतें तित्थेसरेंण. KS हुवणे for भुवणे. K परिपालयितुं for पालयितुम्. KMST शांतेन for शान्तिना.

गंपिणु वाणारसिहि नर अह उज्जेणिहि गंपि ।
मुअ पप्पुवन्ति परम पउ दिव्वंतरइँ म जंपि ।। ३२ ।।
[= हे. ४४२·१]

[गत्वा वाराणस्यां नरा अथ उज्जयिन्यां गत्वा ।
मृताः प्राप्नुवन्ति परमं पदं दिव्यान्तराणि मा जल्प ।।]

पक्षे

गंग गमेप्पिणु जो मरइ जो सिवतित्थु गमेप्पि ।
कीडदि तिदसावासगउ सअलउ लोउ जएप्पि ।। ३३ ।।
[= हे. ४४२·२]

[गङ्गां गत्वा यो म्रियते यः शिवतीर्थं गत्वा ।
क्रीडति त्रिदशावासगतः सकलं लोकं जित्वा ।।]

तृनो णअल् ।। २२ ।।

अपभ्रंशे तृनः प्रत्ययस्य लित् णअ इत्यादेशो भवति । होणउ भविता । सुणउ श्रोता ।। २२ ।।

[हत्थि मारणउ लोउ बोल्लणउ ।
पडहु वज्जणउ सुणउ भसणउ ।। ३४ ।।
[= हे. ४४३·१]

[हस्ती मारयिता लोकः कथयिता ।
पटहो वादयिता शुनको भषिता ।।]

---

21. St. 32. KS मुअ पावइ परमु पउ for मुअ पप्पुवंति परम पउ. BKS दिव्वंतरइ न जंपि for दिव्वंतर इँम जंपि. KMS दिव्यंतरेण बदपि for दिव्यान्तराणि मा जल्प. St. 33. S मुअइ for मरइ. KS कीलदि for कीडदि. B सो जएप्पि; KS सो जमलोउ जणेप्पि for सअलउ लोउ जएप्पि. B सोऽद्य लोकं जित्वा; KMS स यमलोकं जित्वा for सकलं लोकं जित्वा. 22. KS तृणो णल्; M तृनो णल् for the Sūtra. KMS अण for णअ. St. 34. K पटहु for पडहु. K मारणशीलः भाषणशीलः वादनशीलः भषणशीलः for मारयिता कथयिता वादयिता भषिता.

छस्य युष्मदादेर्डारः ॥ २३ ॥

अपभ्रंशे युष्मदादिभ्यः परस्य छस्य डित् आर इत्यादेशो भवति। तुम्हारु युष्मदीयः। अम्हारु अस्मदीयः ॥ २३ ॥

संदेसें काइँ तुम्हारेण जं संगहों न मिलिज्जइ।
सुविणंतरि पिएँ पाणिएँग पिअ पिआस किं छिज्जइ ॥ ३५ ॥
[= हे. ४३४.१]

[संदेशेन किं त्वदीयेन यत्संगस्य न मिल्यते।
स्वप्नान्तरे पीतेन पानीयेन प्रिय पिपासा किं छिद्यते ॥]

दिक्खि अम्हारा कंतु। बहिणि अम्हारा कंतु [११९] ॥

जणि जणु नं नइ नावइ नाइ इवार्थे ॥ २४ ॥

अपभ्रंशे इवार्थे जणि जणु नं नइ नावइ नाइ इति षडादेशा भवन्ति। चंदु जणि, चंदु जणु, चंदु नं, चंदु नइ, चंदु नावइ, चंदु नाइ, चन्द्र इव ॥ २४ ॥

जणि—

चंपअकुंपलमज्झि सहि भसलु पइट्ठउ।
सोहइ इंदनील जणि कणइ उविट्ठउ ॥ ३६ ॥
[= हे. ४४४.४]

---

23. St.35. KS संदेशइ ताइ; M भणिएं काइं for संदेसें काइं. KS सुवणंतरि for सुविणंतरि. B पिआस; KMS पिआसा for पिवास. KS om. प्रिय in the छाया. KS देक्खि; M दिट्ठ for दिक्खि. After कंतु K adds छाया as दृष्टोऽस्मदीय: कान्त:. 24. M om. नाइ in the Sūtra. St. 36. B चंपअकुंभमज्झि; KM चंपहकुसुमहो मज्झि; S जंपहकुसुमहो मज्झि for चंपअकुंपलमज्झि. K पइट्ठइ for पइट्ठउ. KMS इंदुणीलु for इंदणीलु. K कणइ बइट्ठउ. M कणइ उपइट्ठउ for कणइ उविट्ठउ. KS उपरिष्ठः for उपविष्टः.

[चम्पककुड्मलमध्ये सखि भ्रमरः प्रविष्टः ।
शोभते इन्द्रनील इव कनके उपविष्टः ॥]

जणु—

निरुवमरसु पिएं पिअवि जणु [९] ॥ प्रागेव व्याख्यातम् ॥

नं—

मुहकबरिबंध तहेँ सोह धरहिँ
नं मल्लजुज्झु ससिराहु करहिँ ।
तहेँ सोहहिँ कुरल भमरउलतुलिअ
नं तिमिरडिंभ खेल्लंति मिलिअ ॥३७॥
[= हे. ३८२·१]

[मुखकबरीबन्धौ तस्याः शोभां धरतः
इव मल्लयुद्धं शशिराहू कुरुतः ।
तस्याः शोभन्ते कुरला भ्रमरकुलतुलिता
इव तिमिरडिम्भाः क्रीडन्ति मिलित्वा ॥]

नइ—

रविअत्थमणसमाउलेँण कंटट्ठिअउ ण छिण्णु ।
चक्कें खंडु मुणालिअहि नइ जीवग्गलु दिन्नु ॥ ३८ ॥
[= हे. ४४४·१]

[रव्यस्तमनसमाकुलेन कण्ठस्थितो न छिन्नः ।
चक्रेण खण्डो मृणालिकाया इव जीवार्गलो दत्तः ॥]

K पिएवि for पिअवि. St. 37. KS णहे for तहे. KS धरइ for धरहिँ. KS सहइहि for सोहइ. KS कुरुल for कुरल. KS भवँवहुलअ for भमरउलतुलिअ. KMS खेलंति for खेल्लंति. KS तस्यां राजंति कुंतलानीव for तस्याः शोभन्ते कुरलाः. KM मिलिताः for मिलित्वा. St. 38. KS रविअत्तमअसमाइलेइ for रविअत्थमणसमाउलेण. KS कंडिट्ठिउ for कंठट्ठिअउ. KS णिच्छिण्णु (Corr. to णं छिण्णु) for ण च्छिण्णु. KS चक्रेण for चक्कें. K कंठे स्थितः for कण्ठस्थितः.

नावइ—

पेक्खेविणु मुहुँ जिणवरहं दीहरणअणसलोणु ।
नावइ गरुमच्छरभरिउँ जलणि पवेसइ लोणु ।। ३९ ।।
[दृष्ट्वा मुखं जिनवराणां दीर्घनयनसलावण्यम् ।
इव गुरुमत्सरभरितं ज्वलने प्रविशति लवणम् ।।]

नाइ—

वलआवलिनिवडणभएँण धण उद्धब्भुअ जाइ ।
वल्लभविरहमहादहहु गाह गवेसइ नाइ ।। ४० ।।
[= हे. ४४४·२]
[वलयावलीनिपतनभयेन धन्या ऊर्ध्वभुजा याति ।
वल्लभविरहमहाह्रदस्य गाधत्वमन्विष्यतीव ।।]

तणेण रेसिं रेसि तेहिं केहिं तादर्थ्ये।। २५ ।।

अपभ्रंशे तादर्थ्ये द्योत्ये तणेण रेसिं रेसि तेहि केहिं इति पञ्च निपाताः प्रयोक्तव्याः । रामतणेण रामरेसिं रामरेसि रामतेहिं रामकेहिं णमोक्कारो, रामार्थं नमस्कारः ।। २५ ।।

ढोल्ला एँह परिहासडी अइ भण कवणइ देसि ।
हउँ झिज्जउँ तउकेहिँ पिअ तुहुँ पुणु अन्नहिरेसि ।। ४१ ।।
[= हे. ४२५·१]

St. 39. B पेक्खीविणु; KS पेक्खेप्पिणु; M देविणु for पेक्खेविणु. B अदीरह-चण सलोणु; KS डीहरनअनसलोणु; M दीहरअणसलोणु for दीहरणअणसलोणु. K गुरुमच्छरहरिउ for गरुमच्छरभरिउ. K पविसइ for पवेसइ. B अदीर्घघन-सलावण्यं; K MS दीर्घनयनस्थलावण्यं for दीर्घनयनसलावण्यम. KMS लावण्यं for लवणम्. St. 40. KMS धण्णा for धण. KS उद्दहुअ for उद्धब्भुअ. B वल्लहधूमह अस्स. KS वल्हु for वल्लह°. KMS °महद्दहओ for °महादहहु. B गाहप्पण for गाह. B वल्लभधूमादस्य. KMS गाधं for गाधत्वं. B गवेषयत इव for अन्विष्यतीव. 25. B तेसि तेसि for रेसिं रेसि in the Sūtra, Com. and illustrations. M om. द्योत्ये. n Com. St. 41. KS एस for एह. KMS अननकणहे देहि. KS झिज्जउ हउं for हउं झिज्जउँ. B एतां परिहासिकामयि भण कस्मै न ददासि; KM एतां परिहासिका न न कस्मै ददासि for एष परिहासः अयि भण कस्मिन्देशे. K क्षीये अहं तवार्थे प्रिय.

[विट एष परिहासः अयि भण कस्मिन्देशे ।
अहं क्षीये तवार्थे प्रिय त्वं पुनरन्यस्या अर्थे ॥]

बइप्पणहो तणेण [२१] ॥ एवं रेहिंरेसिमावुदाहार्यौ ॥

स्वार्थे डुः पुनर्विनाध्रुवमः ॥ २६ ॥

अपभ्रंशे पुनः विना ध्रुवम् इत्येतेभ्यः परः स्वार्थे डित् उप्रत्ययो भवति । पुणु होइ, पुनर्भवति । पावु विणु, पापं विना । धुवु जम्मु, ध्रुवं जन्म ॥ २६ ॥

सुमरिज्जइ तं वल्लहउँ जं वीसरइ मणाउँ ।
जहिँ पुणु सुमरणु जाउँ गउँ तहोँ णेहहोँ किं णाउँ ॥ ४२ ॥
[= हे. ४२६.१]

[स्मर्यते तद्वल्लभं यद्विस्मरति मनाक् ।
यस्य पुनः स्मरणं जातं गतं तस्य स्नेहस्य किं नाम ॥]

चंचलु जीविउँ धुवु मरणु पिअ रूसिज्जइ काइं ।
होसहिँ दिअहा रूसणा दिव्वइँ वरिससयाइं ॥ ४३ ॥
[= हे. ४१८.३] .

[चञ्चलं जीवितं ध्रुवं मरणं प्रिय रुष्यते कथम् ।
भविष्यन्ति दिवसा रूषणा दिव्यानि वर्षशतानि ॥]

डेडावबश्यमः ॥ २७ ॥

स्वार्थ इत्यनुवर्तते । अपभ्रंशे अवश्यमः परौ एं अ इत्येतौ डितौ प्रत्ययौ भवतः । अवसें, अवस, अवश्यम् ॥ २७ ॥

---

26. KST om. पुणु होइ down to ध्रुवं जन्म. St. 42. KMS सु वल्लहउ for तं वल्लहउं. K गडु णेहहो कयि नाम for गउं तहों णेहहों किं णाउं. KMS यस्मिन्पुनः स्मरणं यावद्गतं for यस्य पुनः स्मरणं जातं गतं. After किं नाम KMS add विणु.जुज्झेण लोहु. St. 43. KS हुउ for धुवु. KMS रोषयोग्याः for रूषणाः. 27. M डेमडावबश्यमः for the Sūtra. M एम अ; M एं आ for एं अ. KS om. स्वार्थ इत्यनुवर्तते. K आवासें । आवास अवश्यं for अवसें... अवश्यम्. S om. अवसें... श्यम्.

जिब्भिदिउ नायउँ वसि करहुँ जसु अधिन्नइँ अन्नइँ ।
मूलि विणट्ठइ तुंबिणिहे अवसें सुक्कहिँ पण्णइं ॥ ४४ ॥
[= हे. ४२७.१]

[जिह्वेन्द्रियं नायकं वशे कुरुत यस्य अधीनान्यन्यानि ।
मूले विनष्टे तुम्बिन्या अवश्यं शुष्यन्ति पर्णानि ॥]

अवस न सुअहिँ सुहच्छिअइ [१४०] ॥

परमेकशसोर्डडि ॥ २८ ॥

अपभ्रंशे परम् एकशस् इत्याभ्यां परौ स्वार्थे डितौ अ इ इत्येतौ यथासंख्यं भवतः । पर परम् । एक्कसि एकशः ॥ २८ ॥

गुणहिँ न संपइ कित्ति पर फल लिहिआ भुंजंति ।
केसरि लहइ न बोड्डिअ वि गय लक्खेँहिँ घेप्पन्ति ॥ ४५ ॥
[= हे. ३३५.१]

[गुणैर्न संपत्कीर्तिः परं फलानि लिखितानि भुञ्जन्ति ।
केसरी न लभते कपर्दिकामपि गजा लक्षैर्गृह्यन्ते ॥]

एक्कसि सीलकलंकिअहं देज्जहिँ पच्छित्ताइं ।
जो पुणु खंडइ अणुदिअहु तसु पच्छित्तें काइं ॥ ४६ ॥
[= हे. ४२८.१]

St. 44. KS जिम्हिंदिउ for जिब्भिदिउ. T वहु करहु for वसिकरहुँ. S करहि for करहुं. KMS अंगाइं for अन्नाइं. S वणट्ठइ for विणट्ठइ. KS मुक्खहं वण्णाइं; M T मुक्खहि वण्णाइं for सुक्कहिँ पण्णइं. KMS अंगानि for अन्यानि. KS मुअइहिं; M सुइाहिं for सुअहि. KMS मुइच्छिअहि for सुहच्छिअइ. After °च्छिअइ KMS add अवश्यं न स्वपन्ति. 28. KMS इत्येताभ्यां for इत्याभ्यां. KS om. पर एक्कसि. St. 45. KS गुणेहिं for गुणहिँ. K संपिअ; S संपेअ for संपइ. K ओड्डिअ; M बोंडिअ; S औंडिअ; T पोड्डिअ for बोड्डिअ. KS लक्खइ for लक्खेहिँ. KS भुंजते for भुञ्जन्ति. KMS कपर्दिकविंशतिमपि; T विंशतिकपर्दानपि for कपर्दिकामपि. St. 46. KS दिज्जहि पच्छिइ ताव; M दिज्जहि पच्छिताव्इ for देज्जहिँ पच्छिताइं. KS तसु पइतावें काइ for तसु

[एकशः शीलकलङ्कितानां दीयन्ते प्रायश्चित्तानि ।
यः पुनः खण्डयत्यनुदिवसं तस्य प्रायश्चित्तेन किम् ॥]

अडडडुल्लाः स्वार्थिककलुक् च ॥ २९ ॥

अपभ्रंशे नामतः परतः अ इति, अअ उल्ल इत्येतौ च डितौ प्रत्ययौ भवतः, तत्संनियोगेन स्वार्थिकस्य कप्रत्ययस्य लोपश्च । बलउ, बलडु, बलुल्लु, बलम् ॥ २९ ॥

विरहाणलजालकरालिअउ पहिउ पंथि जं दिट्ठउ ।
तं मेलवि सव्वहिँ पंथिअहिँ सो जि किअउ अग्गिट्ठउ ॥ ४७ ॥
[= हे. ४२९.१]

[विरहानलज्वालाकरालितः पथिकः पथि यदा दृष्टः ।
तदा मिलित्वा सर्वैः पथिकैः स एव कृतोऽग्निष्ठः ॥]

महु कंतहु बे दोसडा हेल्लि म जंपहि आलु ।
देंतहों हउँ पर उव्वरिअ जुज्झंतहों करवालु ॥ ४८ ॥
[= हे. ३७९.१]

[मम कान्तस्य द्वौ दोषौ हे सखि मा जल्प मिथ्या ।
ददतोऽहं परमुर्वरिता युध्यमानस्य करवालः ॥]

एक्क कुडुल्ली पंचहिँ रुद्धी [७६] ॥

पच्छित्तें काइं. KMS पश्चात्तापा दीयंते for दीयन्ते प्रायश्चित्तानि. KMST तस्य पश्चात्तापेन किं for तस्य प्रायश्चित्तेन किम्. 29. KMS नाम्नः for नामतः. T भवंति for भवतः. KMS om. बलउ... बलम्. St. 47. K पथि पंथअ जो दिट्ठउ; M पथि पथिअ अदिट्ठइ; S पथि पंथअ जा दिट्ठउ for पहिउ पंथि जं दिट्ठउ. K तनोश्चवि; M तं तमोलवि; S तमोश्चवि; T तममेल्लवि for तं मेल्लवि. KS पंथअहिं for पंथिअहिं. KMS सो वि अ कउ अग्गिट्ठउ. KMST तं मुक्त्वा सर्वैः पान्थैः for तदा मिलित्वा सर्वैः पथिकैः. M निष्ठः; S निग्नः; T अग्निष्ठकः for अग्निष्ठः. St. 48. KS कातहो for कंतहु. KS दोसड for दोसडा BKS हेल्लि म झंखहि आलु for हेल्लि म जंपहि आलु. K परमर्चार जुझंतहो; M परिजुझंतहो for पर उव्वरिअ जुज्झंतहों. KMST मा विलप असत्यं for मा जल्प मिथ्या. K परमवशिष्टामुपरि युध्यतः; M परेषामुपरि युध्यतः for परमुर्वरिता युध्यमानस्य K एक्क कुडुंवी पचहि रुम्भा; M एक्क कुडंबा चंपहि रुम्भा; S एक्क कुडुंबा पंचहि रुद्धा.

तद्योगजाश्च ॥ ३० ॥

अपभ्रंशे अडडडुल्लानां योगभेदेभ्यो ये जायन्ते अड डुलअ डुल्लड इत्यादयः प्रत्ययाः तेऽपि स्वार्थे प्रायो भवन्ति ॥ ३० ॥

अड—

फोडेंति जे हिअडउँ अप्पणउँ ताहँ पराई कवण घिण ।
रक्खेज्जहों तरुणहो अप्पणा बालहेँ जाया विसम थण ॥ ४९ ॥
[= हे. ३५०.२]

[पाटयतो यौ हृदयकमात्मनः तयोः परकीया का घृणा ।
रक्ष्यन्तां तरुणा आत्मा बालाया जातौ विषमौ स्तनौ ॥]

डुलअ—

चूडुल्लउ चुण्णीहोइसइ [१५५] ॥

डुल्लड—

सामिपसाअ सलज्जु पिउ सीमासंधिहि वासु ।
देक्खिअ बाहुबलुल्लडउ धण मुंचइ नीसासु ॥ ५० ॥
[= हे. ४३०.१]

एवं बाहुबलुल्ल इत्यादि ॥

---

30. KS om. अपभ्रंशे. KS डडअ इत्यादयः for अडडुल्ल अडुल्लउ इत्यादयः. KMS प्रयोज्या for प्रायो. St. 49. KS फोडंति for फोडेंति. KS हिअडइ for हिअडउँ. K अप्पणुअ; M अप्पणु; S अप्पउ for अप्पणउ. K परिभी; M परकी; S परिकि for पराई. K कवणु घिण; M कवणु घीणु for कवण घिण. KS रक्खिज्जउ for रक्खेज्जहों. KS अप्प; M अप्पणु for अप्पणा. M जाअहे for बालहेँ. KMS थणा for थण. B स्फोटयन्ति for पाटयतो. KMST चुण्णीहोसइ for चुण्णीहोइसइ. BKMST add चूडा चूर्णीभविष्यति. St.50. B om. सामिपसाअसलज्जु पिउ सीमासंधिहिवासु. KS आमिपसाअ° for सामिपसाअ°. KS पउ for पिउ. KMS सीमासंधिनिवासु; T °णिवासं for सीमासंधिहि वासु. KMS पेक्खिउ बाहुबलुल्लड धण मेल्लइ णीसासु for the second line. KS °संधिनिवासः for °संधौ वासः

ङीतः स्त्रियाम् ॥ ३१ ॥

अपभ्रंशे स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नः इतः प्राक्तनसूत्रद्वयविहितप्रत्ययान्तात्परो ङीप्रत्ययो भवति ॥ ३१ ॥

पहिआ दिट्ठी गोरडी दिट्ठी मग्गु निअंत ।
अंसूसासें कंचुअं तिंतुव्वाण करंत ॥ ५१ ॥

[= हे. ४३१·१]

[पथिक दृष्टा गौरी दृष्टा मार्गं पश्यन्ती ।
अश्रूच्छ्वासैः कञ्चुकं तिमितोद्वातं कुर्वती ॥]

अदन्ताड्डा ॥ ३२ ॥

अपभ्रंशे अडडडुल्लानां मध्ये यः अकारान्तः प्रत्ययः तदन्तनाम्नः स्त्रियां वर्तमानात् डाप्रत्ययो भवति । ङ्यपवादः ॥ ३२ ॥

पिउ आगअउ पत्तहौं झुणि कण्णडइ पइट्ठ ।
तहौं विरहहौं नासंतहौं धूलडिआ वि न दिट्ठ ॥ ५२ ॥

[= हे. ४३२·१]

[प्रियः आगतः प्राप्तस्य ध्वनिः कर्णे प्रविष्टः ।
तस्य विरहस्य नश्यतः धूलिरपि न दृष्टा ॥]

---

31. St. 51. BT वहिआ for पहिआ. T दिट्ठा for दिट्ठी. B दुट्ठा for दिट्ठी. KS निअंतो for निअंत. B अंसुसाएं. K अंसूसासिहि; M अंसूसासेह; S अंसूसासेहि. B कं चूआ; KMST कंचुआ for कंचुअं. B तोतुवाण करंत; K तितुप्पाण करंता; MS किंतुपाण करंता for तितुव्वाण करंत; KST तिमितशुष्कं; M तिमिरशुष्कं for तिमितोद्वातं. After St. 51 KMST add एक कुडुल्ली पंचहि रुद्धी. 32.T डाः for डा in the Sūtra. K अडअलानां मध्ये; T अडुल्लानां मध्ये for अडडडुल्लानां मध्ये. St. 52. K पिदु; T पिहु for पिउ. K आअदु; M आअड for आगअउ. K सुवत्ताडी, M सुपत्तडी; T पत्तडि for पत्तहो. KS झणु for झुणि. KMS कण्णडइ; T कण्णंधइ for कण्णइ. KS धूलइआ वि ण दित्ता; M धूलहि वि ण दिट्ठा; T धूलडिआ वि विनट्ठ. KS सुवार्ताध्वनिः; M सुवार्ता for प्राप्तस्य ध्वनिः.

इदतोऽति ॥ ३३ ॥

अपभ्रंशे स्त्रियां वर्तमानस्य नाम्नो योऽकारस्तस्य अति अकारे प्रत्यये परे इकारो भवति । धूलडिआ वि न दिट्ठ [५२] ॥ स्त्रियामित्येव । झुणि कण्णडइ पइट्ठ [५२] ॥ ३३ ॥

इदानीमेव्वहि ॥ ३४ ॥

अपभ्रंशे इदानीमः स्थाने एव्वहि इति भवति । एव्वहि होइ, इदानीं भवति ॥ ३४ ॥

हरि नच्चाविउ पंगणइ विम्हइ पाडिउ लोउ ।
एव्वहि राहपओहरहं जं भावइ तं होउ ॥ ५३ ॥
[= हे. ४२०.२]

[हरिर्नर्तितः प्राङ्गणे विस्मये पातितो लोकः ।
इदानीं राधापयोधरयोर्यद्भवति तद्भवतु ॥]

एव जि ॥ ३५ ॥

अपभ्रंशे एवशब्दस्थाने जि इति भवति । रामु जि, राम एव ॥ ३५ ॥

जाउ म जंतउ पल्लवह देक्खउँ कइ पय देइ ।
हिअइ तिरिच्छी हउँ जि पर पिउ डंबरइँ करेइ ॥ ५४ ॥
[= हे. ४२०.१]

[यातु, मा यान्तं पल्लवथ, पश्यामि कति पदानि ददाति ।
हृदये तिरश्चीना अहमेव, परं प्रियो डम्बराणि करोति ॥]

---

33. KM ण दिट्ठा for न दिट्ठ. K झणि कण्णडइ पइट्ठ for झुणि कण्णडइ पइट्ठ. 34. MT एवहि for एव्वहि in the Sūtra. St 53. K णच्चादिदु for णच्चाविउ. M वंगणइ for पंगणइ. KS वम्हइ पाडिदु लोदु for विम्हइ पाडिउ लोउ. MT एवहि for एव्वहि. KS तं तोइ for तं होउ. KT यद्भावि तद्भवतु; M यद्भाति तद्भवतु for यद्भवति तद्भवतु. 35. T om. the Sūtra and its Com. down to डंबरइ in stanza 54. K एवशब्दो जि इति for एवशब्दस्थाने जि इति. KM om. रामु जि राम एव. St 54. KS पल्लवउ for पल्लवह. M कउ वअ for कइ पय. KS तिरिच्छा for तिरिच्छी. K करोइ for करेइ. KM मा यातु पल्लवकः for मा यान्तं पल्लवथ. KS तिर्यग्भूता for तिरश्चीना.

एवमेम ॥ ३६ ॥

एवं इत्यव्ययं एम इति भवति । एम रामु कुणइ, एवं रामः करोति ॥ ३६ ॥

पियसंगमि कउ निद्दडी पियहों परोक्खहों केम ।
मइ बिण्णि वि विण्णासिअ निद्द न एम न तेम ॥ ५५ ॥
[= हे. ४१८·१]

[प्रियसंगमे कुतो निद्रा प्रियस्य परोक्षस्य कथम् ।
मम द्वे अपि विनाशिते, निद्रा न एवं न तथा ॥]

नहि नाहि ॥ ३७ ॥

नहि इत्यव्ययं नाहि इति भवति । नाहि धम्मु, न हि धर्मः ॥३७॥

एत्तहेँ मेह पिअन्ति जलु एत्तहेँ वडवाणलु आवट्टइ ।
पेक्खु गहीरिम साअरहों एक्क वि कणिअ नाहि ओहट्टइ ॥ ५६ ॥
[= हे. ४१९·४]

[इतो मेघाः पिबन्ति जलमितो वडवानल आवर्तते ।
पश्य गभीरत्वं सागरस्य एकापि कणिका नहि अपह्रीयते ॥]

प्रत्युत पच्चलिउ ॥ ३८ ॥

प्रत्युत इत्यव्ययं पच्चलिउ इति भवति । पच्चलिउ सुघु, प्रत्युत सुखम् ॥ ३८ ॥

---

36. T एमः for एम in the Sūtra. KM om. from एम रामु down to करोति. St 55. KS णिद्दइ; T निद्दासि for णिद्दडी. KM मइ बे वि विनासिअ निद्दड एम न जिअ तेम (M एमइ आअ) for the second half of stanza 55. KS मया द्वे अपि नाशिते for मम द्वे अपि विनाशिते. KMS नैवं निद्रा न जायते तथा for निद्रा नैवं न तथा. 37. KM om. नाहि धम्मु नहि धर्मः. St 56. KS आवत्तइ; T आवग्गइ for आवट्टइ. M om. the second and 3rd lines of Stanza 56. KMS काणिआ for कणिअ. K नाहि-हिइ; M नाहिहिअ; T ओहग्गइ for ओहट्टइ. KST आवर्तयति for अपह्रीयते. 38. B पच्छलिउ; K पच्चलिउ; for पच्चालिउ in the Sūtra, Com. and illustrations.

सावसलोणी गोरडी नवखी क वि विसगंठि ।
भडु पच्चलिउ सो मरइ जासु न लग्गइ कंठि ॥ ५७ ॥
[= हे. ४२०·३]

[सर्वसलावण्या गौरी नवीना कापि विषग्रन्थिः ।
भटः प्रत्युत स म्रियते यस्य न लगति कण्ठे ॥]

ग्रन्थिरित्यत्र ' लिङ्गमतन्त्रम् ' [३·४·६७] इति सूत्रात्स्त्रीलिङ्गता ॥

एवमेव एमइ ॥ ३९ ॥

एवमेव इत्यव्ययं एमइ इति भवति । एमइ लोगु, एवमेव लोकः॥३९॥

अंगहिँ अंगु न मिलिउँ हलि अहरें अहरु न पत्तु ।
पिअ जोअन्तिहे मुहकवँलु एमइ सुरउ समत्तु ॥ ५८ ॥
[= हे. ३३२·२]

[अङ्गैरङ्गं न मिलितं सखि अधरेण अधरो न प्राप्तः ।
प्रियस्य पश्यन्त्या मुखकमलं एवमेव सुरतं समाप्तम् ॥]

समं समाणु ॥ ४० ॥

समं इत्यव्ययं समाणु इति भवति । रामेण समाणु, रामेण समम् ॥४०॥

कंतु जं सीहहों उवमिअइ तं महु खंडिउ माणु ।
सीहु अरक्खअ गअ हणइ पिउ पयरक्खसमाणु ॥ ५९ ॥
[= हे. ४१८·२]

[कान्तो यत्सिंहस्योपमीयते तन्मम खण्डितो मानः ।
सिंहोऽरक्षकान्गजान्हन्ति प्रियः पदरक्षैः समम् ॥]

St 57. K पडु for भडु. K सर्वसमलावण्या for सर्वसलावण्या. K नवका यापि; M नवका कापि. for नवीना कापि. M विषमग्रंथिः for विषग्रन्थिः. 39. KM om. एमइ लोगु, एवमेव लोकः. St. 58. M अंगहे for अंगहिँ. M अहि for हलि. KMST पिअहो निअंतिहे for पिअ जोअंतिहे. KM एंवइ सुरंतु for एमइ सुरउ. KS हला for सखि. 40. KM om. रामेण समाणु, रामेण समम्. St. 59. KS कंतु ह सीहहो हुवमिअइ for कंतु जं सीहहें उवमिअइ. KMT पररक्खसमाणु for पयरक्खसमाणु. KS यः for यत्. KMT पररक्षासमं for पदरक्षैः समम्.

किल किर ॥ ४१ ॥

अपभ्रंशे किल इत्यव्ययं किर इति भवति ॥ ४१ ॥

न किर खाइ न पिअइ न विद्दवइ धम्मि न वेच्चइ रूअडउ ।
इह किवणु न जाणइ जह जमहों खणेंण पहुच्चइ दूअडउ ॥ ६० ॥
[= हे. ४१९.१]

[न किल खादति न पिबति न विद्रवति धर्मे न व्ययति रूपकम् ।
इह कृपणो न जानाति यथा यमस्य क्षणेन प्रभवति दूतः ॥]

पग्गिम प्राइम प्राउ प्राइव प्रायसः ॥ ४२ ॥

प्रायस् इत्यव्ययं अपभ्रंशे पग्गिम प्राइम प्राउ प्राइव इति चतुर्धा प्रयोज्यम् । पग्गिम चवलु, प्रायश्चपलः इत्यादि ॥ ४२ ॥

एसी पिउ रूसेसुँ हउँ रुट्ठी मइँ अणुणेइ ।
पग्गिम एइँ मणोरहइँ दुक्करु दइवु करेइ ॥ ६१ ॥
[= हे. ४१४.४]

[एष्यति प्रियः रुष्याम्यहं रुष्टां मामनुनयति ।
प्राय एतान्मनोरथान्दुष्करं दैवं कारयति ॥]

प्राइम मुणिहँ वि भंतडी ते मणिअडा गणन्ति ।
अखइ निरामइ परमपइ अज्ज वि पउ न लहन्ति ॥ ६२ ॥
[= हे. ४१४.२]

---

41. St.60. M रूअडु इ for रूअडउ. M जिह for जह. KM डूअडउ; T दूआसउ for दूअडउ. K प्रयच्छति for व्ययति. KM प्रभविष्यति; T पर्याप्नोति for प्रभवति. 42. MT प्रायशः for प्रायसः. in the Sūtra. KM om. पग्गिम चवलु, प्रायश्चपल इत्यादि. St. 61. KS एसेइ; M एसिइ for एसी. KM रूसेउ for रूसेसुँ. KM रुट्ठि मइ for रुट्ठी मइँ. KM एअ मणोरहअ for एइँ मणोरहइँ. KM दुक्खर दइउ करोइ. K प्रायशः for प्रायः. K दुष्करान्करोति दैवं. St. 62. KM प्राईव; T प्राइव for प्राइम. KS तंतडी; M हंतडी for भंतडी. KM अक्खइं for अखइ. KMT लउ for पउ. K प्रायशो for प्रायः. K विभ्रांतिः; T विश्रांतिः for अपि भ्रान्तिः. K मणीन्मानयंति for मणीन्गणयन्ति. K अद्यापि लयं न लक्ष्यंते for अद्यापि पदं न लभन्ते.

[प्रायो मुनीनामपि भ्रान्तिः ते मणीन्गणयन्ति ।
अक्षये निरामये परमपदे अद्यापि पदं न लभन्ते ॥]

अन्ने ते दीहर लोअण अन्नु तं भुअजुअलु ।
अन्नु सु घणथणहारु अन्नु जि मुहकवँलु ।
अन्नु सु केसकलाउ अन्नु जि प्राउ विहि ।
जेण णिअंबिणि घडिअ स गुणलाअण्णणिहि ॥ ६३ ॥
[= हे. ४१४·१]

[अन्ये ते दीर्घे लोचने अन्यत्तद् भुजयुगलम् ।
अन्यः स घनस्तनभारः अन्यदेव मुखकमलम् ।
अन्यः स केशकलापः अन्य एव प्रायो विधिः ।
येन नितम्बिनी घटिता सा गुणलावण्यनिधिः ॥]

अंसुजलें प्राइव गोरिअहे सहि उव्वत्ता नअणसर ।
ते संमुह संपेसिआ देन्ति तिरिच्छी घत्त पर ॥ ६४ ॥
[= हे. ४१४·३]

[अश्रुजलेन प्रायो गौर्याः सखि उद्वान्ते नयनसरसी ।
ते संमुखं संप्रेषिते ददतस्तिर्यग्घातं परम् ॥]

दिवा दिवे ॥ ४३ ॥

दिवा इत्यव्ययं दिवे इति भवति । दिवे दिवें गंगण्हाणु [८]॥४३॥

सह सहुं ॥ ४४ ॥

सह इत्यव्ययं सहुं इति भवति ॥ ४४ ॥

St. 63. KT अन्नु for अन्ने. K हुअजअलु; M हुअजअलं for भुअजुअलु. KMT थणभारु for थणहारु. K केसकलाउ पिहु; T केसकलापु सु for सु केसकलाउ. KS विहु for विहि. K एहु सगुणलाअण्णणिहि; M सा गुणलाअण्णगहि for स गुणलाअण्णणिहि. T घनस्तनहरः for घनस्तनभारः. KM सद्गुणलावण्यनिधिः for सा गुण°. St. 64. K गोरिहिहे; M गोरडिए for गोरिअहे. M उव्वत्ता; T उप्पंता for उव्वंता. K णअणसरे for °सर. K उद्वांता आर्द्रा नयनशराः; M उद्वास्ता; T उभ्रांता नयनशराः for उद्वान्ते नयनसरसी. KT संमुखं प्रेषिता ददति तिर्यक्क्षेपं परं.

जइ पवसंतें सहुँ न गय न मुअ विओएं तस्सु ।
लज्जिज्जइ संदेसडा देंती सुहअजणस्सु ॥ ६५ ॥
[= हे. ४१९.३]

[यदि प्रवसता सह न गता न मृता वियोगेन तस्य ।
लज्जते संदेशान्ददती सुभगजनस्य ॥]

मा मं ॥ ४५ ॥

मा इत्यव्ययं मं इति भवति । मं धणि करहि विसाउ ॥ ४५ ॥
[= हे. ३८५.१]

प्रायोग्रहणात्

माणि पणट्ठइ जइ ण तणु तो देसडा चइज्ज ।
मा दुज्जणकरपल्लवेंहिँ दंसिज्जन्तु भमेज्ज ॥ ६६ ॥
[= हे. ४१८.४]

[माने प्रनष्टे यदि न तनुं ततो देशं त्यजेत् ।
मा दुर्जनकरपल्लवैर्दर्श्यमानो भ्रमेत् ॥]

कुतः कउ कहंतिहु ॥ ४६ ॥

अपभ्रंशे कुत इत्यव्ययं कउ कहंतिहु इति च भवति । कउ गदु, कहंतिहु गदु, कुतो गतः ॥ ४६ ॥

St.65.M जदि for जइ.B पवसंते; KM पवसेंतेण; T पविसिंतेन for पवसंतें. B गयअ; K मुअ; T मअ for गय.B संदेहसडा for संदेसडा.B दिंतेहिं; KMT देंतिहिं for देंती. KMT सह न मृता. KM लक्ष्यते for लज्जते.M सुभगजनकस्य for °जनस्य. 45. KM करउ for करहि. After विसाउ KT add मा धन्ये कुरु विषादं. St. 66. तो तं देसु जइज्ज for तो देसडा चइज्ज. MT हमेज्जा for भमेज्ज. K तदा तं देशं त्यजेत् for ततो देशं त्यजेत्. 46. M कहु for कउ in the Sūtra, Com. and illustrations. B कहुंतिहु in the Sūtra and Com. K om. कउ गदु...कुतो गतः.

महु कन्तहों गुट्ठट्ठिअहों कउ झुंपडा वलन्ति ।
अह रिउरुहिरें उल्लवइ अह अप्पणें न भंति ।। ६७ ।।
[= हे. ४१६.१]

[मम कान्तस्य गोष्ठस्थितस्य कुतः कुटीरकानि ज्वलन्ति ।
अथ रिपुरुधिरेणार्द्रयति अथात्मीयेन न भ्रान्तिः ।।]

धूमु कहंतिहु उट्ठिअउ [७०] ।।

अथवा मनागहवइ मणाउं ।। ४७ ।।

अथवा मनाक् इत्येतौ अहवइ मणाउं इति भवतः । अहवइ ण सुहं ताहु, अथवा न सुखं तस्य । किं पि मणाउं महु पिअहों [६९] ।। किमपि मनाङ् मम प्रियस्य ।।४७।।

जाइज्जइ तहिँ देसडइ लब्भइ पिअहों पमाणु ।
जइ आवइ तो आणिअइ अहवइ तं जि निवाणु ।। ६८ ।।
[= हे. ४१९.२]

[गम्यते तत्र देशे लभ्यते प्रियस्य प्रमाणम् ।
यद्यागच्छति तदानीयते अथवा तदेव निर्वाणम् ।।]

विहवि पणट्ठइ वंकडउ रिद्धिएँ जणसामण्णु ।
किं पि मणाउं महु पिअहों ससि अणुहरइ न अण्णु ।। ६९ ।।
[= हे. ४१८.६]

[विभवे प्रनष्टे वक्रः ऋद्धौ जनसामान्यः ।
किमपि मनाङ् मम प्रियस्य शशी अनुहरति नान्यः ।।]

St. 67. M मम for महु. KM गोट्ठट्ठिअहो for गुट्ठ°. KM कहुं झंपडअ for कउ झुंपडा. KM °रुहिरें दुंजेतइ अह अप्पाणिं ण हुंति for रिपुरुधिरेण...भ्रान्तिः. KMT तृणकुटीरकाः for कुटीरकानि. KMT विध्यापयति for आर्द्रयति. K यथात्मीयेन for अथात्मीयेन. K उट्ठिउ for उट्ठिअउ after which it gives its छाया. 47. M अमवइ for अहवइ in the Sūtra. KM तासु for तस्य. KM om. from किपि मणाउं down to the छाया of St. 68. St. 69. B रिद्धी; KS रिद्धिहि for रिद्धिएँ. K ऋद्धिभिः for ऋद्धौ.

इतसेत्तहे ॥ ४८ ॥

इतस् इत्यव्ययं एत्तहे इति भवति । एत्त हैं मेह पिअन्ति जलु [५६] ॥ ४८ ॥

पश्चात्पच्छइ ॥ ४९ ॥

अपभ्रंशे पश्चादित्यव्ययं पच्छइ इति भवति । पच्छइ होइ विहाणु [१२८] ॥ ४९ ॥

ततस्तदा तो ॥ ५० ॥

ततस् तदा इत्यैतौ तो इति भवतः। तो गदु, ततो गतः, तदा गतो वा । जइ भग्गा पारक्कडा तो सहि मज्झु पिएण [७] ॥ ५० ॥

त्वनुसाहावन्यथासर्वौ ॥ ५१ ॥

अन्यथा सर्व इत्येतौ अनु साह इति यथासंख्यं तु भवतः । अनु कदु, अन्यथा कृतम् ॥ ५१ ॥

विरहाणलजालकरालिअउ पहिउ को वि बुड्डिवि ठिअउ ।
अनु सिसिरकालि सीअलजलहु धूमु कहंतिहु उट्ठिअउ ॥ ७० ॥
[विरहानलज्वालाकरालितः पथिकः कोऽपि निमज्य स्थितः ।
अन्यथा शिशिरकाले शीतलजलाद्धूमः कुत उत्थितः ॥]

पक्षे अन्नहा ॥ साहु वि लोउ तडप्फडइ [२१] ॥

किं काइंकवणौ ॥ ५२ ॥

अपभ्रंशे किंशब्दः काइं कवण इत्यादेशावापद्यते ॥ ५२ ॥

---

48. After जलु B adds इतो मेघाः पिबन्ति जलम्. 49. पच्छ in the Sutra and Com.; T पच्छिइ, in the Sūtra, Com. and illustrations. After विहाणु adds पश्चाद्भवति विभातम्. 50. KM om. तो गदु... गतो वा. KMT give here St. 7 in full with पारकेडा for पारक्कडा and प्रिएण for पिएण. 51. KM om. अनु कदु...कृतम्, St. 70. KM °करालिअउ for °करालिअउ. B ठिअओ for ठिअउ. B सीअलजलु for °जलहु. B उट्ठिअओ for उट्ठिअउ. After तडप्फडइ B adds साधुरपि तडफडायते (ताम्यति).

जइ सु न आवइ दूइ घरु काँइँ अहो मुहु तुज्झु ।
वअणु जु खंडइ तउ सहिए सो पिउ होइ न मज्झु ॥ ७१ ॥
[=हे. ३६७·१]

[यदि स नायाति दूति गृहं किमधो मुखं तव ।
वचनं यः खण्डयति तव सखि स प्रियो भवति न मम ॥]

काइँ न दूरे पेक्खइ [= हे.३४९·१] । ताहँ पराई कवण घिण [४८]॥ ॥ ५२ ॥

उम्भविच्चवुत्ता विषण्णवर्त्मोक्ताः ॥ ५३ ॥

विषण्ण वर्त्म उक्त इत्येते उन्न विच्च वुत्त इति यथासंख्यं भवन्ति । ॥ ५३ ॥

मइँ वुत्तउँ तुहुँ धुरु धरहि कसुरेसि विमुक्कइ ।
पइँ विणु धवल न चडइ भरु एमइ उन्नउ काइं ॥ ७२ ॥
[= हे. ४२१·१]

[मया उक्तम्—त्वं धुरं धर, कस्य कृते विमुच्यते ।
त्वया विना धवल न आरोहति भरः, एवमेव विषण्णः किम् ॥]

जं मणु विच्चि न माइ [११८] ॥

अत्थुः परपरस्य ॥ ५४ ॥

अपभ्रंशे परस्परशब्दस्य खुः आदिः अद्भवति ॥ ५४ ॥

St.71. K आअइ for आवइ. KM तुह वि सहि for तउ सहिए. K यदि न समायाति for यदि स नायाति. K तथापि सखि for तव सखि.KM दूरे देक्खइ for दूरे पेक्खइ. 53. M पुन्नपिच्चपित्ता for उम्भविच्चवुत्ता in the Sūtra and Com.; T अन्न for उन्न in the Sūtra and Com.; T अत्ता for वुत्ता in the Sūtra and Com. M पथ for वर्त्म. St. 72. KM तहु धुरु धर for तुहुँ धुरु धर. B कसरेहिं विगुत्ताइं for कसुरेसि विमुक्कइ. M विमुक्काइ for विमुक्कइ. KM तइ विणु for पइँ विणु. KM एवइ for एमइ. K कस्यार्थे विमुक्ता for कस्य कृते विमुच्यते. KM जे मणु विच्चइ न माइ for जं मणु विच्चि न माइ. 54. T अत्थुः परस्य for the Sūtra. T परस्य for परस्परशब्दस्य.

ते मुग्गडा हराविआ जे परिविट्ठा ताहं ।
अवरोप्परु जोअंताहं सामिउ गंजिउ जाहं ॥ ७३ ॥
[= हे. ४०९.१]

[ते मुद्रा हारिता ये परिविष्टास्तेषाम् ।
परस्परं पश्यतां स्वामी परिभूतो येषाम् ॥]

अन्यादृशस्याण्णाइसावराइसौ ॥ ५५ ॥

अपभ्रंशे अन्यादृशस्य अण्णाइस अवराइस इत्यादेशौ भवतः । अण्णाइसु । अवराइसु ॥ ५५ ॥

वहिल्लगाः शीघ्रादीनाम् ॥ ५६ ॥

अपभ्रंशे शीघ्रादीनां वहिल्लादय आदेशाः प्रायो भवन्ति ॥ ५६ ॥ शीघ्रस्य वहिल्लः—

एक्कु कइह वि न आवहि अन्नु वहिल्लउ जाहि ।
मइँ मित्तडा प्रमाणिअउं पइँ जेहउ खलु नाहि ॥ ७४ ॥
[= हे. ४२२.१]

[एकं कदाचिदपि नायासि, अन्यत् शीघ्रं यासि ।
मया मित्र प्रमाणितं त्वं यथा खलो नहि ॥]

अस्मिन्गणे कस्य किं भवति । तथाहि—

St.73. KT परविट्ठा for परिविट्ठा. KM अवअंताहं for जोअंताहं. KM हंजिउ for गंजिउ. KMT ते मुग्धा ये परं प्रविष्टाः for ते मुद्रा... परिविष्टाः. 55. T °अपराइसौ for °अवराइसौ in the Sūtra and Com. 56. St. 74. KM एक्कु कईवि ण आअहि for एक्कु कइह वि ण आवहि. KMT महि मित्तडअ पवाणिअउ तइ (M तउ) जेहउ for मइँ मित्तडा पमाणिअउ पइँ जेहउ. KM मित्रं प्रमाणितं for मित्र प्रमाणितं. KMT त्वया मादृक् खलो नहि for त्वं यथा खलो नहि. Kom. अस्मिन्गणे कस्य किं भवति.

झकटकस्य घग्घल:—

जिम सुउरिस तिम घग्घलइँ जिम नइ तिम वलणाइं ।
जिम डोंगर तिम कोद्दरइँ हिआ विसूरहि काइं ॥ ७५ ॥
[= हे ४२२·२]

[यत्र सुपुरुषास्तत्र झकटकाः, यत्र नदी तत्र वलनानि ।
यत्र पर्वतास्तत्र कोटराणि हृदय खिद्यसे किम् ॥]

रम्यस्य रवण्ण:—

सरिहिँ न सरेँहिँ सरवरहिँ नवि उज्जाणवणेहिं ।
देस रवण्णा होन्ति वढ निवसन्तेँहिँ सुअणेहिं ॥ ७६ ॥
[= हे. ४२२·१०]

[सरिद्भिर्न सरोभिर्न सरोवरैः नापि उद्यानवनैः ।
देशा रम्या भवन्ति मूढ निवसद्भिः सज्जनैः ॥]

यद्यद् दृष्टं तत्तद् इत्यस्य जाइट्ठिआ—

अह रच्चसि जाइट्ठिअएँ हिअडा मुद्धसहाव ।
लोहें फुट्टणएण जिम घणा सहेसहि ताव ॥ ७७ ॥
[= हे. ४२२·१७]

[अथ रज्यसे यद्यद्दृष्टं तत्र हृदय मुग्धस्वभाव ।
लोहेन स्फुटता यथा घना सहिष्यसे तावत् ॥]

KMS कंटकस्य घंघलः; T झघटकस्य घग्घलः for झकटकस्य घग्घलः. St. 75. KMT घंघलाइं for घग्घलइं. M कोडराइं for कोद्दरइँ. KM यथा सुपुरुषास्तथा कंटकाः for यत्र सुपुरुषास्तत्र झकटकाः (कलहाः). M तथा वनानि for तत्र वलनानि. KM यथा for यत्र. St. 76. KT न सरिहि न सरवरेहिं for सरिहिँ न सरेँहिँ न सरवरहिँ. KM न सरिद्भिर्न सरोवरैः for सरिद्भिर्न सरोभिर्न सरोवरैः. K जाइट्ठिआ; T जाइंठिआ for जाइट्ठिआ here and in illustration below. K अइरच्चसि for अह रच्चसि. K हिअअ मुद्धसहावा for हिअडा मुद्धसहाव. KM फट्टणएण for फुट्टणएण. KSM घण for घणा. K अधिरज्यसे; M अयि रज्यसे for अथ रज्यसे. KM लोभेन स्फुटशीलेन यथा घनान् सहिष्यसे तापान्. T स्फुटनशीलेन for स्फुटता.

पृथक्पृथक् इत्यस्य जुअंजुअः—

एक कुडुल्ली पंचहिँ रुद्धी तहँ पंचहँ वि जुअंजुअ बुद्धी ।
बहिणिएँ तं घरु कहु किवँ नन्दउ जेत्थु कुडुंबउँ अप्पणछंदउ ॥७८॥

[हे. = ४२२.१२]

[एका कुटी पञ्चभी रुद्धा तेषां पञ्चानामपि पृथक्पृथग्बुद्धिः ।
भगिनि तद्गृहं कथं नन्दतां यत्र कुटुम्बकं आत्मच्छन्दकम् ॥]

भयस्य द्रवक्कः—

दिवेँहिँ विढत्तउँ खाहि वढ संचि म एक्कु वि द्रम्मु ।
को वि द्रवक्कउ सो पडइ जेण समप्पइ जम्मु ॥ ७९ ॥

[= हे. ४२२.४]

[दिवसैरर्जितं खाद मूढ संचिनु मा एकमपि द्रम्मम् ।
किमपि भयं तत्पतति येन समाप्यते जन्म ॥]

मा भैषीरित्यस्य स्त्रीलिङ्गे मब्भीसडी—

सत्थावत्थहँ आलवणु साहु वि लोउ करेइ ।
आदन्नहं मब्भीसडी जो सज्जणु सो देइ ॥ ८० ॥

[हे. = ४२२.१६]

[स्वस्थावस्थानामालपनं सर्वोऽपि लोकः करोति ।
आर्तानां मा भैषीरिति यः सज्जनः स ददाति ॥]

St.78. KM रुद्धा for रुद्धी. KM तहुं पंचहुं for तहं पंचहँ. KM कहि किम for कहु किवँ. KM नंदइु for नंदउ. KM अप्पणछंदु KM एतद् गृहं for तद् गृहं. M आत्मच्छंदकः for °च्छन्दकम्. K द्रवक्क for द्रवक्कः here and in illustration. St.79. KS मं संचिणु एकु वि दम्मु for संचि म एक्कु वि द्रम्मु. K द्रवक्कउ; M डंबरु for द्रवक्कउ. KM मा संचिनु एकमपि मुहूर्तं for संचिनु मा एकमपि द्रम्मम्. M प्रतिभयेन समाप्यते for येन समाप्यते. KMT स्त्रीबन्मब्भीसडी for स्त्रीलिङ्गे मब्भीसडी. St.80. K अथावत्थह for सत्थावत्थहँ. M आलपणु for आलवणु. KMT सीदंतहं for आदन्नहं. KMT सीदतां for आर्तानां. KMT °रित्यभयं यः for °रिति यः.

अवस्कन्दस्य दडवड:—

चलेँहिँ चलंतेँहिँ लोअणेँहिँ जे तइँ दिट्ठा बालि ।
तहिँ मअरद्धअदडवडउ पडइ अपूरइ कालि ॥ ८१ ॥
[= हे. ४२२·१४]

[चलैश्चलैर्लोचनैर्ये त्वया दृष्टा बाले ।
तेषु मकरध्वजावस्कन्दः पतत्यपूर्णे काले ॥]

आत्मीयस्य अप्पण:—

फोडेन्ति जे हिअडउँ अप्पणउँ [४९] ॥

गाढस्य निच्चट्ट:—

विहवे कस्सु थिरत्तणउँ जोव्वणि कस्सु मरट्टु ।
सो लेखडउ पठाविअउ जो लग्गइ निच्चट्टु ॥ ८२ ॥
[= हे. ४२२·६]

[विभवे कस्य स्थिरत्वं यौवने कस्य गर्वः ।
स लेखः प्रस्थाप्यतां यो लगति गाढम् ॥]

क्रीडायां खेड्ड:—

खेड्डयं कयमम्हेहिं निच्छयं किं पयंपह ।
अणुरत्ताउ भत्ताउ अम्हे मा चय सामिअ ॥ ८३ ॥
[= हे. ४२२·९]

St. 81. KMS वलेनेहिं for चलंतेँहिँ. KM वडइ for पडइ. M आपूरिअकालि for अपूरइ कालि. KSM वलद्भ्यां for चञ्चलैः. M आपूरिते for अपूरिते. KT आत्मीयस्य अप्पणअः. K फोडेंति for फोडेंति. St. 82. K लेहडउ पडाविवइ for लेखडउ पठाविअउ. M पठाविउ for पठाविअउ. KM प्रस्थाप्यते for प्रस्थाप्यतां. St. 83. KM खेड्डकं for खेड्डयं. KS पवहअ for पयंपह. KM हत्ताउ for भत्ताउ. K प्रवदत; M प्रवदथ for प्रजल्पत. K असडढु; MS असट्टलु for असड्ढलु. K मरघरु for मअरहरु. KMT बरहिणु for बरिहिणु. KM दूरट्ठिअइं for दूरठिआइँ. KM कस्मिन् for कुत्र in छाया.

[क्रीडा कृतास्माभिर्निश्चयं किं प्रजल्पत ।
अनुरक्तान्भक्तानस्मान्मा त्यज स्वामिन् ॥]

असाधारणस्य असड्ढलः—

काहिँ ससहरु काहिँ मअरहरु काहिँ बरिहिणु काहिँ मेहु ।
दूरठिआहँ वि सज्जणहं होइ असड्ढलु नेहु ॥ ८४ ॥
[= हे. ४२२.७]

[कुत्र शशधरः कुत्र मकरगृहं कुत्र बर्हिणः कुत्र मेघः ।
दूरस्थितानामपि सज्जनानां भवत्यसाधारणः स्नेहः ॥]

नवस्य नवखः—

नवखी क वि विसगंठि [५७] ॥

मूढस्य नालिअवढौ—

जो पुणु मणि जि खसिफसिहूअउ चिन्तइ देइ न द्रम्मु न रूअउ ।
रइवसभमिरु करग्गुल्लालिउ घरहिँ जि कोंतु गुणइ सो नालिउ॥८५॥
[= हे. ४२२.१३]

[यः पुनर्मनस्येव व्याकुलीभूत-
श्चिन्तयति ददाति न द्रम्मं न रूपकम् ।
रतिवशभ्रमणशीलः कराग्रोल्लालितं
गृहेष्वेव कुन्तं गुणयति स मूढः ॥]

दिवेँहिँ विढत्तउँ खाहि वढ [७७] ॥

St. 85. KM मणिए महतडउ; T मणि ए हसप्फसिहु for मणि जि खसफसिहूअउ. KSM दम्मु for द्रम्मु. T रइअउ for रूअउ. KM करग्गल्लासिदु for करग्गुल्लालिउ. KS घरेहि for घरहिँ. K भ्रांतीभूतः; M भ्रांतीभूतं for व्याकुलीभूतः. KM कराग्रोल्लासितं for °ग्रोल्लालितं.

अस्पृश्यसंसर्गस्य विट्टालः—

जे छड्डेविणु रअणनिहि अप्पउँ तडि घल्लन्ति ।
तहँ संखहँ विट्टालु पर फुक्किज्जंत भमन्ति ॥ ८६ ॥
[=हे. ४२२.३]

[ये त्यक्त्वा रत्ननिधिमात्मानं तटे क्षिपन्ति ।
तेषां शंखानामस्पृश्यसंसर्गः, परं फूत्क्रियमाणा भ्रमन्ति ॥]

अद्भुतस्य ढक्करिः—

हिअडा पइँ बहु बोल्लिअउँ महु अग्गइ सयवार ।
फुट्टिसु पिएँ पवसंति हउँ भंडय ढक्करिसार ॥ ८७ ॥
[=हे. ४२२.११]

[हृदय त्वया बहु उक्तं ममाग्रे शतवारम् ।
स्फुटिष्यामि प्रिये प्रवसति अहं, भण्डक अद्भुतसार ॥]

कौतुकस्य कोड्डः—

कुंजरु अन्नहँ तरुवरहं कोड्डेण घल्लइ हत्थु ।
मणु पुणु एक्कहिँ सल्लइहिं जइ पुच्छह परमत्थु ॥ ८८ ॥
[=हे. ४२२.८]

[कुञ्जरोऽन्येषु तरुवरेषु कौतुकेन क्षिपति हस्तम् ।
मनः पुनरेकस्यां शल्लक्यां यदि पृच्छत परमार्थम् ॥]

हे सखीत्यस्य हेल्लिः—

हेल्लि म जंपहि आलु [४८] ॥

K विश्शलु for विट्टाल everywhere; T विर्गालः for विट्टालः. St.86. KS जे पुणु मुंचिवि for जे छड्डेविणु. KS हुक्किज्जंत for फुक्किज्जंत. KS ये पुनर्मुक्त्वा for ये त्यक्त्वा. T मृत्क्रियमाणा for फूत्क्रियमाणाः. KS ढक्करि; T ढक्कारी for ढक्करिः. St. 87. KMS हिअडा तुइ (M तुह) बहु बोल्लिअ for first half. KMS अगदु for अग्गउ. KMS फुट्टिउ for फुट्टिसु. KMS हंडय for भंडय. M स्फुटिष्ये for स्फुटिष्यामि. St. 88. KS कुंजर for कुंजरु. KMS कोडें झलइ हत्थु for कोड्डेण घल्लइ हत्थु. T हेल्ली for हेल्लिः. BT झक्खइ for जंपहि.

यदेश्छुडुः—

विहि विणडउ पीडन्तु गह मं धणि करहि विसाउ ।
संपइ कड्ढउँ वेस जिम छुडु अग्घइ ववसाउ ॥ ८९ ॥
[= हे. ३८५·१]

[विधिर्विनटतु पीडयन्तु ग्रहाः मा धन्ये कुरु विषादम् ।
संपदं कर्षामि वेश्येव यदि अर्घति व्यवसायम् ॥]

संबन्धिनः केरतणौ:—

गअउ सु केसरि पिअहु जलु निच्चिंतइ हरिणाइं ।
जसु केरएँ हुंकारडएं मुहहु पडन्ति तिणाइं ॥ ९० ॥
[= हे. ४२२·१५]

[गतः स केसरी पिबत जलं निश्चिन्ता हरिणाः ।
यस्य संबन्धिना हुंकारेण मुखात्पतन्ति तृणानि ॥]

जइ भग्गा अम्हहंतणा [७] ॥

दृष्टेर्द्रेहिः—

एक्कमेक्कउँ जइ वि पेक्खइ हरि सुट्ठु सव्वायेँरेण '
तो वि द्रेहि जहिँ कहिँ वि राही ।
को सक्कइ संवरेवि दड्ढनअणा नेहें पलुट्टा ॥ ९१ ॥
[= हे. ४२२·५]

St. 89. KS करहु for करहि. KMT वैश्यां यथा for वेश्येव. KS व्यवसायः for व्यवसायम्. KMT केरतणौ संबंधिनः for संबन्धिनः केरतणौ. St. 90. KS स for सु. KS पिअहि for पिअहु. T निच्चिंतउ for निच्चिंतइ. KS केरय; M करअ for केरएं. KM हुंकारेण for हुंकारडएं. KMS तुणाइं for तिणाइं. KM अम्हतणा for अम्हहंतणा. KM दृशो देहि for दृष्टेर्द्रेहिः. St. 91. KS जोएइ for पेक्खइ. KS तउ वि; M तहि for तो वि. KMS देहि for द्रेहि. T संकइ for सक्कइ. KMT दड्ढण्ण अणेहिं चलुट्टा (T पलुग्गा) for दड्ढनअणा नेहें पलुट्टा.

[एकमेकं यद्यपि प्रेक्षते हरिः सुष्ठु सर्वादरेण ।
तथापि दृष्टिर्यत्र कुत्रापि राधा ।
कः शक्नोति संवरीतुं दग्धनयने स्नेहेन पर्यस्ते ॥]

हुहुरुघिग्घिगाः शब्दचेष्टानुकृत्योः ॥ ५७ ॥

अपभ्रंशे हुहुर्वादयः शब्दानुकरणे घिग्घिगादयश्चेष्टानुकरणे यथासंख्यं प्रयोक्तव्याः ॥ ५७ ॥

मइँ जाणिउँ बुड्डीसुँ हउँ पेम्मद्रहि हुहुरु त्ति ।
णवरि अचिंतिअ संपडिअ विप्पिअनाव झडत्ति ॥ ९२ ॥
[= हे. ४२३·१]

[मया ज्ञातं मंक्ष्यामि अहं प्रेमह्रदे हुहुरु इति ।
केवलमचिन्तिता संपतिता विप्रियनौर्झटिति ॥]

आदिग्रहणात्:—

खज्जइ न कसरक्केंहिं पिज्जइ नउ घुंटेहिं ।
एमइ होइ सुहच्छडी पिएँ दिट्ठे नअणेहिं ॥ ९३ ॥
[= हे. ४२३·२]

[खाद्यते न कसरत्कैः पीयते न घुण्टैः ।
एवमेव भवति सुखासिका प्रिये दृष्टे नयनाभ्याम् ॥]

इति शब्दानुकरणम् ॥

KMT स्नेहेन प्रतिमुखमागते for स्नेहेन पर्यस्ते. 57. K °घग्घिगा; M घुघिणा; T घुग्घगाः for घिग्घिगाः in the Sūtra. K घुघुप्यादयः; M घुन्यादयः for घिग्घिगादयः. St. 92. KS बुड्डीसउ for बुड्डीसु. KS पम्मद्दहि for °द्रहि. KMS संपडइ for संपडिअ. KS पिअनो for विप्पिअनाव. KS मज्जिष्यामि for मंक्ष्यामि. KS इति अनंतरमपि चिंतितं संपतति प्रियनो झटिति for the second half. St. 93. M om. stanza down to सुखासिका in the छाया. K खज्जइ नउ करसकेहिं पज्जइ नहि घुट्टेहिं for the first half. T घुग्गेहिं for घुंटेहि. K एवहि for एमहि. K सुहच्छडी for सुहच्छडी. K करसत्कृतः for कसरत्कैः.

अज्जु वि नाहु महु ज्जि घरि सिद्धत्था वन्देइ ।
ताउँ जि विरहु गवक्खेँहिं मक्कडघिग्घिउ देइ ॥ ९४ ॥
[= हे. ४२३·३]

[अद्यापि नाथो ममैव गृहे सिद्धार्थान्वन्दते ।
तावदेव विरहो गवाक्षेभ्यो मर्कटविभीषिकां ददाति ॥]

आदिग्रहणात्—

सिरि जर खंडी लोअडी गलि मणिअडा न वीस ।
तो वि गोट्ठडा कराविआ मुद्धएँ उट्ठबईस ॥ ९५ ॥
[= हे. ४२३·४]

[शिरसि जरा, खण्डिता लोमपुटी, गले मणयो न विंशतिः ।
तथापि गोष्ठस्थाः कारिता मुग्धया उत्तिष्ठोपविश ॥]

इति चेष्टानुकरणम् ॥

अनर्थका घइमादयः ॥ ५८ ॥

अपभ्रंशे घइं इत्यादयो निपाता अनर्थकाः प्रयुज्यन्ते ॥५८॥

St. 94. KMT मक्कड बुग्घिउ for मक्कडघिग्घिउ. KM गवाक्षे मर्कटभीषिका(M भाषिता)विकारं ददाति for गवाक्षेभ्यो मर्कटविभीषिकां ददाति. St. 95. KMS लोअअ for लोअडी. KM मणिगण अडवीस, (M विसा, for मणिअडा न वीस KM गोट्ठ for गोट्ठडा. KMS कराविय for कराविआ. KMS मुद्दये दुट्ठबईस for मुद्धएँ उट्ठबईस. KMT खंडा लोचका for खण्डिता लोमपुटी. KM मणिगणा विंशतिः for मणयो न विंशतिः. BKM ततोपि for तथापि. 58. K घइंआदयः for घइमादयः in the Sūtra.

पेम्मडि पच्छायावडा पिउ कलहिअउ विआलि ।
घईं विवरीरी बुद्धडी होइ विणासहों कालि ॥ ९६ ॥
[= हे. ४२४.१]

[प्रेम्णि पश्चात्तापः, प्रियः कलहायितो विकाले ।
खलु विपरीता बुद्धिर्भवति विनाशस्य काले ॥]

आदिग्रहणात् खाइं इत्यादि ॥

॥ इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसर्वविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ
तृतीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

St. 96. K पच्छालाउ पिउ for पच्छायावडा. KS विवरीरा बद्दडी; T विवरीई बुद्दडी for विवरीरी बुद्धडी. KMS कलहितोऽपराह्णे; T काले-पराह्णे for कलहायितो विकाले. M आदिग्रहणात् काइं इत्यादि for आदिग्रहणात्खाइं इत्यादि. Colophon: B इति श्रीत्रिविक्रम...वृत्तौ; KT इति प्राकृत व्याकरणवृत्तौ; M इति व्याकरणवृत्तौ. KT तृतीयस्याध्यायस्य; M तृतीयस्य for तृतीयाध्यायस्य.

चतुर्थः पादः ॥

दिहो सुपि ॥ १ ॥

अपभ्रंश इत्यनुवर्तते । अपभ्रंशे सुपि परे नाम्नोऽन्त्यस्य स्वरस्य दिहो दीर्घह्रस्वौ प्रायो भवतः । रामु रामू, रामः ॥ १ ॥

सौ—

ढोल्ला सावँला धण चंपअवण्णी ।
णाइ सुवण्णरेह कसवट्टइ दिण्णी ॥ ९७ ॥

[= हे. ३३०·१]

[विटः श्यामलो धन्या चम्पकवर्णा ।
इव सुवर्णरेखा कषपट्टे दत्ता ॥]

[Before the beginning of Sūtra 1, Ms. क which was used for the Banaras Edition (our B in Critical Notes), and T_1 and T_2 have the following passage: प्राकृतं, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची, अपभ्रंश इति षड् भाषाः । आसामित्थंकारं शेषातिदेशः—शौरसेनीशेषं प्राकृतवत्; मागधीशेषं शौरसेनीवत्; पैशाचीशेषमपि शौरसेनीवत्; चूलिकापैशाचीशेषं पैशाचीवत्; अपभ्रंशे तु प्रायः शौरसेनीवत् कार्यम्, लिङ्गातन्त्रता च, शेषं प्राकृतवत् । शौरसेन्यामिह प्रकरणे यत्कार्यमुक्तं ततोऽन्यत् प्राकृतवदेव भवति । 'दिहो मिथः से ' इत्यारभ्य 'दस्तस्य शौरसेन्यामखावचोऽस्तोः' इति सूत्रात् प्राग् यानि सूत्राणि, तेषु यान्युदाहरणानि, तान्येव शौरसेन्यां भवन्तीति विभागः प्रतिसूत्रमभ्यूह्य दर्शनीयः. To this passage, T_1 and T_2 add further the following: मागध्यां शौरसेनीवत्, पैशाच्यां शेषं शौरसेनीवत्, चूलिकापैशाच्यां शेषं प्राग्वत्, अपभ्रंशे शौरसेनीवत्, शेषं संस्कृतवत्.]

1. M दीहो सुपि; T दिहो सरफ (?) for the Sūtra. M om. अपभ्रंश इत्यनुवर्तते. M नाम्न्यंतस्य; T नाम्नोन्यस्य for नाम्नोऽन्त्यस्य. M प्रायेण for प्रायो. KM om. रामु रामू रामः. KS om. सौ. St. 97. M सामळा; T सावीळा for सावँला. K चंपावण्णी; S चंदावणी for चंपअवण्णी. KS कसणवट्टइ; M कषपट्ट for कसवट्टइ. M चंपकपर्णी; S पंचकवर्णी for °वर्णा. KS कषगपट्टे for कषपट्टे.

आमन्त्र्ये—

डोल्ला मइँ तुहुँ वारिआ मा करु दीहा माणु ।
निद्दएँ गमिही रत्तडी दडवड होइ विहाणु ॥ ९८ ॥
[= हे. ३३०.२]

[विट मया त्वं वारितो मा कुरु दीर्घं मानम् ।
निद्रया गमिष्यति रात्रिः शीघ्रं भवति प्रभातम् ॥]

स्त्रियाम्—

बिट्टिए मइँ भणिय तुहुँ मा करु वंकी दिट्ठी ।
पुत्ति सकण्णी भल्लि जिम मारइ हिअइ बइट्ठि ॥ ९९ ॥
[= हे. ३३०.३]

[पुत्रि मया भणिता त्वं मा कुरु वक्रां दृष्टिम् ।
पुत्रि सकर्णा भल्लिर्यथा मारयति हृदये प्रविष्टा ॥]

जसि—

एइ ति घोडा एह थलि एइ ति निसिआ खग्ग ।
एत्थु मुणीसिम जाणिअइ जें णवि वालइ वग्ग ॥ १०० ॥
[= हे. ३३०.४]

[एते ते घोटका एषा स्थली एते ते निशिताः खड्गाः ।
अत्र मनुष्यत्वं ज्ञायते ये नापि वल्ग्यन्ति वल्गाः ॥]

एवं विभक्त्यन्तरेष्वप्युदाहार्यम् ॥

St. 98. KS तु; M तुह; T तुम for तुहुँ. KT कुरु for करु. M om. from करु down to वारितः in the छाया. T णिद्देण गमइ for णिद्दएँ गमिही. St. 99. KS सुआ for बिट्टिए. K भणिदु for भणिय. KS कुरु for करु. T सगण्णी for सकण्णी. K हल्लि for भल्लि. KS मारदि हिअइ पइट्ठी for मारइ हिअइ बइट्ठी. KST हे शिशो for पुत्रि. KST सकर्णी for सकर्णा. K प्रतिष्ठा for प्रविष्टा. St. 100. KM एइ ते for एइ ति. KT ते निसिआ खग्गा for ति निसिआ खग्ग. K मणसिम for मुणीसिम. K विचालदु for वि वालइ. M पग्ग for वग्ग. T_2 एके ते for एते ते. KS अत्र मनस्विता पौरुषं; M अत्र पौरुषं for मनुष्यत्वं. KS विचलति for वल्ग्यन्ति.

स्यम्यत उत् ॥ २ ॥

अपभ्रंशे स्यमोः परयोरत उकारो भवति । रामु । घडु । पडु ॥ २ ॥

दहमुहु भुवणभयंकरु तोसिअसंकरु णिग्गउ रहवरि चडिअउ ।
चउमुहु छंमुहु झाइवि एक्कहिँ लाइवि णावइ दइवें घडिअउ ॥ १०१ ॥

[= हे. ३३१·१]

[दशमुखो भुवनभयंकरस्तोषितशंकरो निर्गतो रथोपरि आरूढः ।
चतुर्मुखं षण्मुखं ध्यात्वा एकत्र लगित्वा इव दैवेन घटितः ॥]

ओत्सौ पुंसि तु ॥ ३ ॥

अपभ्रंशे पुंसि वर्तमानस्य नाम्नोऽकारस्य सौ परे ओत्वं वा भवति ॥ रामो । घडो । पडो ॥ ३ ॥

अगलिअनेहनिवट्टाहं जोअणलक्खु वि जाउ ।
वरिससएण वि जो मिलइ सहि सो सोक्खहँ ठाउ ॥ १०२ ॥

[= हे. ३३२·१]

[अगलितस्नेहनिर्वृतानां योजनलक्षमपि यातु ।
वर्षशतेनापि यो मिलति सखि स सौख्यानां स्थानम् ॥]

पुंसीति किम् । अंगहिँ अंगु न मिलिउँ हलि [५८] ॥

---

2. After अपभ्रंशे K adds अकारस्य, but om. अतः. KM om. रामु घडु पडु. St. 101. KS भयंकरु for °भयंकरु. KS णिग्गदु; T णिग्गइ for णिग्गउ. KS रहउवरि; M रहपरि for रहवरि. K देवें घडिउ for दइवें घडिअउ. 3. K ओ सौ पुंसि तु; T ओ सौ पुंसि for the Sūtra. M om. सौ परे in Com. KMS om. रामो घडो पडो, St. 102. KS °णेहणुवत्ताहं; T °णेहनिवग्गाहं for °नेहनिवट्टाहं. KS जोअणलक्खु वि जाअदु; M °लक्ख वि जाइ for °लक्खु वि जाउ. KS ठाणु; M ठाइ for ठाउ. MT अकलित° for अगलित°. K स्नेहोनुवृत्तानां; M स्नेहनिवृत्तानां for °स्नेहनिर्वृतानां. KT °लक्षमपि जायतां for °लक्षमपि यातु. KS मिलिअदु for मिलिउ.

ए भिसि ॥ ४ ॥

अपभ्रंशे अकारस्य भिसि परे एत्वं तु भवति । रामेहिं । घडेहिं ॥ गुणहिँ न संपइ कित्ति पर [४५] ॥ ४ ॥

टि ॥ ५ ॥

अपभ्रंशे अतः टावचने परे एकारो भवति । पृथग्योगान्न विकल्पः ॥ रामेण । घडेण ॥ ५ ॥

जे महु दिण्णा दिअहडा दइएं पवसन्तेण ।
ताण गणन्तिएँ अंगुलिउ जज्जरिआउ नहेण ॥ १०३ ॥
[= हे. ३३३·१]

[ये मम दत्ता दिवसा दयितेन प्रवसता ।
तान्गणयन्त्या अङ्गुल्यो जर्जरिता नखेन ॥]

ङिनेच ॥ ६ ॥

अपभ्रंशे अकारस्य ङिना सह इकार एकारश्च भवति । रामि रामे । घडि घडे ॥ ६ ॥

साअरु उप्परि तणु धरइ तलि घल्लइ रयणाइं ।
सामि सुभिच्चु वि परिहरइ संमाणेइ खलाइं ॥ १०४ ॥
[= हे. ३३४·१]

[सागर उपरि तृणं धरति तले क्षिपति रत्नानि ।
स्वामी सुभृत्यमपि परिहरति संमानयति खलान् ॥]

---

4. M एकारो for एत्वं. KM om. रामेहिं घडेहिं. KMT gives the whole stanza गुणहिँ न संपइ here along with its छाया. (K ओड्डिअ = विंशतिकपर्दान्). 5. M om. अतः. KM om. रामेण घडेण. St. 103. M मइ for महु, but मम in छाया. KS दिअसडा for दिअहडा. KS गणंतिहे for गणंतिए. KT तेषां गणयंत्या for तान्गणयन्त्या. 6 M om. अकारस्य. KM om. रामि रामे घडि घडे. St. 104. KS उवरि तणु धरइ for उप्परि तणु धरइ. K झल्लइ for घल्लइ. KST सहिच्चु for सुभिच्चु. T कीरे क्षिपति रत्नं for तले क्षिपति रत्नानि.

ङसेर्हे हु ॥ ७ ॥

अत इति पञ्चम्यन्तविपरिणामः। अपभ्रंशे अकारात्परस्य ङसेः हे हु इत्यादेशौ भवतः।

वच्छहे गिण्हइ फलइँ जणु कडु पल्लव वज्जेइ।
तो वि महद्दुमु सुअणु जिम ते उच्छंगि करेइ ॥ १०५ ॥
[= हे. ३३६·१]

[वृक्षाद् गृह्णाति फलानि जनः कटून्पल्लवान्वर्जयति।
तथापि महाद्रुमः सुजनो यथा तानुत्सङ्गे करोति ॥]

वच्छहु गेण्हइ, वृक्षाद् गृह्णाति ॥

भ्यसो हुं ॥ ८ ॥

अपभ्रंशे अकारात्परस्य भ्यसः पञ्चमीबहुवचनस्य हुं इत्यादेशो भवति ॥ ८ ॥

दूरुड्डाणें पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ।
जिह गिरिसिंगहुँ पडिअ सिल अन्नु वि चूरु करेइ ॥१०६॥
[= हे. ३३७·१]

[दूरोड्डाणेन पतितः खल आत्मानं जनं (च) मारयति।
यथा गिरिशृङ्गेभ्यः पतिता शिला अन्यदपि चूर्णं करोति ॥]

ङसः सुस्सुहो ॥ ९ ॥

अपभ्रंशे अतः परस्य ङसः सु स्सु हो इति त्रय आदेशा भवन्ति। रामसु। रामस्सु। रामहो ॥ ९ ॥

---

7. KST पंचम्यंत परिणामः for पञ्चम्यन्तविपरिणामः. St. 105. T वच्छउ for वच्छहे. KS गेण्हइ for गिण्हइ B फलाइं for फलइँ. KS दुच्छगि for उच्छंगि. KS ततोपि for तथापि. T सुमनो for सुजनो. 8. St. 106. KS दूरुड्डणहु पडिउ; T दूरुणाएं पडिउ for दूरुड्डाणें पडिउ. M जह for जिह. KS दूरोड्डानात्; MT दूरोड्डयनात् for दूरोड्डानेन. M पतिताः शिलाः अन्यदपि चूर्णं कुर्वंति for पतिता शिला...करोति. 9. KM om. रामसु रामस्सु रामहो.

जो गुण गोवइ अप्पणा पअडा करइ परस्सु ।
तसु हउँ कलिजुगि दुल्लहहाँ बलि किज्जउ सुअणस्सु ॥ १०७ ॥
(= हे. ३३८.१]

[यो गुणान्गोपायत्यात्मनः प्रकटान्करोति परस्य ।
तस्याहं कलियुगे दुर्लभस्य बलिं करोमि सुजनस्य ॥]

आमो हं ॥ १० ॥

अपभ्रंशे अकारात्परस्यामः हं इत्यादेशो भवति ॥ १० ॥

तणहँ तइज्जी भंगि नवि तें अवडयडि वसन्ति ।
अह जणु लग्गिवि उत्तरइ अह सह सइँ मज्जन्ति ॥ १०८ ॥
[= हे. ३३९.१]

[तृणानां तृतीया भङ्गिर्नापि तेनावटतटे वसन्ति ।
अथ जनो लगित्वा उत्तरति अथ सह स्वयं मज्जन्ति ॥]

टो णानुस्वारौ ॥ ११ ॥

अपभ्रंशे अतः परस्य टावचनस्य णत्वमनुस्वारश्च भवतः । दइएं पवसन्तेण [१०३] ॥ ११ ॥

एं चेदुतः ॥ १२ ॥

अपभ्रंशे इकारादुकाराच्च परस्य टावचनस्य एं इति, चकारात् णानुस्वारौ च भवन्ति ॥ १२ ॥

एं—

अग्गिएं उण्हउँ होइ जगु वाएं सीअलु तेवँ ।
जो पुणु अग्गिएं सीअला तसु उण्हत्तणु केवँ ॥ १०९ ॥
[= हे. ३४३.१]

St. 107. KS गुग णवइ अप्पगसु for गुग गोवइ अप्पणा. KS कालिजुइ for कलिजुगि KMT बलिः क्रिये सुजनस्य. 10. St. 108. K हंगि; T हग्गि for भंगि. K न अ for न वि. KS दुत्तरइ; M अईइ for उत्तरइ. M तृणादीनां for तृमानां. K भंगिनः for भङ्गिर्नापि. KMS तानि for तेन. M अपरतटे न सेति for अवटतटे वसन्ति. 12. K एम् चेडिदुतः for the Sūtra KS भवतः for भवन्ति. St. 109 KS उण्हडु होइ जिम for उण्हउँ होइ जगु. KS सीअलु तसु. K उष्णः भवति for उष्णो भवति. K om जगत्. KST यथा वा वायुना सीतलः तथा.

[अग्निना उष्णं भवति जगत् वातेन शीतलं तथा ।
यः पुनरग्निना शीतलस्तस्य उष्णत्वं कथम् ।।]

जानुस्वारौ—

विप्पिअआरउ जइ वि पिउ तोँ वि तं आणहि अज्जु ।
अग्गिण दड्ढा जइ वि घरु तो तें अग्गिं कज्जु ।। ११० ।।
[= हे. ३४३·२]

[विप्रियकारको यद्यपि प्रियः तथापि तं आनयाद्य ।
अग्निना दग्धं यद्यपि गृहं तथापि तेनाग्निना कार्यम् ।।]

एवमुकारान्तादप्युदाहार्यम् ।।

हिं हे ङिङस्योः ।। १३ ।।

अपभ्रंशे इदुद्भ्यां परयोः ङि ङसि इत्येतयोः हिं हे इत्यादेशौ क्रमेण भवतः ।। १३ ।।

ङेर्हि—

अह विरलपहाउ जि कलिहिं धम्मु ।। १११ ।।
[= हे. ३४१·३]

[अथ विरलप्रभाव एव कलौ धर्मः ।]

ङसेर्हे—

गिरिहेँ सिलायलु तरुहेँ फलु घेप्पइ नीसावन्नु ।
घरु मेल्लेप्पिणु माणुसहं तो वि न रुच्चइ रन्नु ।। ११२ ।।
[= हे. ३४१·१]

[गिरेः शिलातलं तरोः फलं गृह्यते निःसामान्यम् ।
गृहं मुक्त्वा मनुष्याणां तथापि न रोचतेऽरण्यम् ।।

St. 110. K पिङ for पिउ. MT तो तं आणइ अज्जु for तोँ वि तं आणहि अज्जु. K तनोपि for तथापि in both places. KMT एवमुकारादपि for एवमुकारान्तादपि उदाहार्यम्. 13. M ङिङसेः for ङिङस्योः in the Sūtra. KS इत्येतावादेशौ यथासंख्यं भवतः for इत्यादेशौ क्रमेण भवतः. St. 111. KS अह विरइं पहाउ करिहि धम्मु; M अह विरइं पहाउ जीविहु धम्मु. KMT do not give the छाया of St. 111. St. 112. K धूसावण्णु for नीसावन्नु. M घुरु for घरु but गृहं in छाया. K मोल्लेप्पिणु for मेल्लेप्पिणु. K मानुषाणां for मनुष्याणां.

जो गुण गोवइ अप्पणा पअडा करइ परस्सु ।
तसु हउँ कलिजुगि दुल्लहहोँ बलि किज्जउ सुअणस्सु ॥ १०७ ॥
(= हे. ३३८·१]

[यो गुणान्गोपायत्यात्मनः प्रकटान्करोति परस्य ।
तस्याहं कलियुगे दुर्लभस्य बलिं करोमि सुजनस्य ॥]

आमो हं ॥ १० ॥

अपभ्रंशे अकारात्परस्याम: हं इत्यादेशो भवति ॥ १० ॥

तणहँ तइज्जी भंगि नवि तें अवडयडि वसन्ति ।
अह जणु लग्गिवि उत्तरइ अह सह सइँ मज्जन्ति ॥ १०८ ॥
[= हे. ३३९·१]

[तृणानां तृतीया भङ्गिर्नापि तेनावटतटे वसन्ति ।
अथ जनो लगित्वा उत्तरति अथ सह स्वयं मज्जन्ति ॥]

टो णानुस्वारौ ॥ ११ ॥

अपभ्रंशे अतः परस्य टावचनस्य णत्वमनुस्वारश्च भवतः । दइएं पवसन्तेण [१०३] ॥ ११ ॥

एं चेदुतः ॥ १२ ॥

अपभ्रंशे इकारादुकाराच्च परस्य टावचनस्य एं इति, चकारात् णानुस्वारौ च भवन्ति ॥ १२ ॥

एं—

अग्गिएं उण्हउँ होइ जग वाएं सीअलु तेवँ ।
जो पुणु अग्गिएं सीअला तसु उण्हत्तणु केवँ ॥ १०९ ॥
[= हे. ३४३·१]

St. 107. KS गुग णवइ अप्पगमु for गुग गोवइ अप्पणा. KS कलिजुइ for कलिजुगि KMT बलिः क्रिये सुजनस्य. 10. St. 108. K हंगि; T हग्गि for भंगि. K न अ for न वि. KS दुत्तरइ; M अईइ for उत्तरइ. M तृणादीनां for तृमानां. K भंगिनः for भङ्गिर्नापि. KMS तानि for तेन. M अपरतटे न सैति for अवटतटे वसन्ति. 12. K एम् चेडिदुत: for the Sūtra KS भवतः for भवन्ति. St. 109 KS उण्हदु होइ जिम for उण्हउँ होइ जगु. KS सीअलु तसु. K उष्णः भवति for उष्णो भवति. K om जगत्. KST यथा वा वायुना शीतलः तथा.

[अग्निना उष्णं भवति जगत् वातेन शीतलं तथा ।
य: पुनरग्निना शीतलस्तस्य उष्णत्वं कथम् ॥]

ण्णानुस्वारौ—

विप्पिअआरउ जइ वि पिउ तौँ वि तं आणहि अज्जु ।
अग्गिण दड्ढा जइ वि घरु तो तें अग्गिं कज्जु ॥ ११० ॥
[= हे. ३४३·२]

[विप्रियकारको यद्यपि प्रियः तथापि तं आनयाद्य ।
अग्निना दग्धं यद्यपि गृहं तथापि तेनाग्निना कार्यम् ॥]

एवमुकारान्तादप्युदाहार्यम् ॥

हि हे ङिङस्योः ॥ १३ ॥

अपभ्रंशे इदुद्भ्यां परयोः ङि ङसि इत्येतयोः हि हे इत्यादेशौ क्रमेण भवतः ॥ १३ ॥

ङेर्हि—

अह विरलपहाउ जि कलिहि धम्मु ॥ १११ ॥
[= हे. ३४१·३]

[अथ विरलप्रभाव एव कलौ धर्मः ।]

ङसेर्हे—

गिरिहेँ सिलायलु तरुहेँ फलु घेप्पइ नीसावन्नु ।
घरु मेल्लेप्पिणु माणुसहं तो वि न रुच्चइ रन्नु ॥ ११२ ॥
[= हे. ३४१·१]

[गिरेः शिलातलं तरोः फलं गृह्यते निःसामान्यम् ।
गृहं मुक्त्वा मनुष्याणां तथापि न रोचतेऽरण्यम् ॥

St. 110. K पिइ for पिउ. MT तो तं आणह अज्जु for तौँ वि तं आणहि अज्जु. K तनोपि for तथापि in both places. KMT एवमुकारादपि for एवमुकारान्तादपि उदाहार्यम्. 13. M ङिङसेः for ङिङस्योः in the Sūtra. KS इत्येतावादेशौ यथासंख्यं भवतः for इत्यादेशौ क्रमेण भवतः. St. 111. KS अह विरइं पहाउ करिहि धम्मु; M अह विरइं पहाउ जीविह धम्मु. KMT do not give the छाया of St. 111. St. 112. K नूसावण्णु for नीसावन्नु. M घुरु for घरु but गृहं in छाया. K मोल्लेप्पिणु for मेल्लेप्पिणु. K माणुषाणां for मनुष्याणां.

हुं भ्यसः ॥ १४ ॥

इदुतः परस्य भ्यसः हुं इत्यादेशो भवति ॥ १४ ॥

तरुहुँ वि वक्कलु फलु मुणि वि परिहणु असणु लहन्ति ।
सामिहुँ एत्तिउँ अग्गलउँ आअरु भिच्च गृहन्ति ॥ ११३ ॥
[= हे. ३४१·२]

[तरुभ्योऽपि वल्कलं फलं मुनयोऽपि परिधानमशनं लभन्ते ।
स्वामिभ्य एतावदधिकं आदरं भृत्या गृह्णन्ति ॥]

आमो हं च ॥ १५ ॥

अपभ्रंशे इदुद्भ्यां परस्य आमो हं इति, चकारात् हुं इति चादेशौ भवतः ॥ १५ ॥

दइवु घडावइ वणि तरुहुँ सउणिहँ पक्कफलाइं ।
सो वरि सुक्खु पइट्ठ णवि कण्णहिँ खलवअणाइं ॥ ११४ ॥
[= हे. ३४०·१]

[दैवं घटयति वने तरूणां शकुनीनां पक्वफलानि ।
तद्वरं सुखं प्रविष्टानि नापि कर्णयोः खलवचनानि ॥]

प्रायोग्रहणात्कचित्सुपोऽपि हुं—

धवलु विसूरइ सामिअहोँ गरुआ भरु पिक्खेवि ।
हउँ किँ न जुत्तउ दुहुँ दिसिहिँ खंडइँ दोण्णि करेवि ॥ ११५ ॥
[= हे. ३४०·२]

[धवलो विषीदति स्वामिनो गुरुं भारं प्रेक्ष्य ।
अहं किं न युक्तो द्वयोर्दिशोः खण्डे द्वे कृत्वा ॥]

---

14. M om. भ्यसः in Com. St. 113. KS आमिहुं एत्तहु for सामिहुँ एत्तउँ. KS दिच्च for भिच्च. 15. M इदुत्परस्य for इदुद्भ्यां परस्य. St. 114. KS सो पर सुक्ख; MT सो परि सुक्खु for सो वरि सुक्खु. T कण्णहि for कण्णहिँ. KS तत्परं सुखं प्रविष्टानामपि for तद्वरं सुखं प्रविष्टानि नापि. St. 115. KS गरुअउ हरु पेक्खेवि; T गरु सागरु पेक्खेवि. M जंतउ for जुत्तउ. KS दुहुं दिसहु for दुहुँ दिसिहिँ. K करेइ for करेवि. KMS खिद्यति for विषीदति. KS गुरुकं भरं दृष्ट्वा for गुरुं भारं प्रेक्ष्य. M द्वयोर्देशयोः.

ङसो लुक् ॥ १६ ॥

अपभ्रंशे ङसः षष्ठीविभक्तेः प्रायो लुग्भवति । राम रामा, रामस्य रामाणां वा ॥ १६ ॥

संगरसएँहिँ वि जो वण्णिअइ देक्खु अम्हारा कंतु ।
अइमत्तहं चत्तंकुसहं गअ कुंभइँ दारन्तु ॥ ११६ ॥
[= हे. ३४५·१]

[संगरशतेष्वपि यो वर्ण्यते पश्यास्माकं कान्तम् ।
अतिमत्तानां त्यक्ताङ्कुशानां गजानां कुम्भान्दारयन्तम् ॥]

सुससोः । १७ ॥

सुस् प्रथमा, अस् द्वितीया, तयोरपभ्रंशे नित्यं लुग्भवति । राम रामा, रामः रामाः रामं रामानिति वा ॥ एइ ति घोडा [१००] ॥ अत्र स्वम्जसां लोपः । जिम जिम वंकिम लोअणहं [१३] ॥ अत्र स्वम्शसां लोपः ॥ १७ ॥

हो जसामन्त्र्ये ॥ १८ ॥

अपभ्रंशे आमन्त्र्येऽर्थे वर्तमानान्नाम्नः परो जस् हो इति भवति । लोपापवादः । हे रामहो, हे रामाहो, हे रामाः ।

---

16. BKMST ङमो लुक् for the Sūtra. BKMST ङमो for ङसो in Com. KMS om. राम रामा, रामस्य रामाणां वा. St 116. M संगामसअहिं; S संगरसमहि for संगरसएँहिँ. KS जा वण्णिअइ दक्खु अम्हिरा कंतु for जो वण्णिअइ... KS कुंभ for कुंभइं. 17. M सुस्योः सुस्; S शुसोः for the Sūtra. BKMS give the stanza एइ ति घोडा here in full with its छाया. K मणंसिम; S मणंसिम. KS चालइ for वालइ. KS वग्गं BKST give the stanza जिम जिम वंकिम here in full with its छाया. KS णिअरा सावलि for णिअ सावंलि 18. T मो for हो in the Sūtra, Com. and illustrations. KST om. हे रामहो, हे रामाहो, हे रामाः.

तरुणहो तरुणिहो मुणिउँ मइँ करहु म अप्पहों घाउ ॥ ११७ ॥
[= हे. ३४६·१]

[हे तरुणाः हे तरुण्यः, ज्ञातं मया मा कुरुतात्मनो घातम् ॥]

हिं भिस्सुपोः ॥ १९ ॥

अपभ्रंशे भिस्सुपोः हिं इत्यादेशो भवति । गुणहिँ न संपइ [४५] ॥ इत्यादि ॥ १९ ॥

सुप्—

भाईरहि जिम भारइ मग्गेँहिँ तिहिँ वि पअट्टइ ॥ ११८ ॥
[= हे. ३४७·१]

[भागीरथी यथा भारते मार्गेषु त्रिष्वपि प्रवर्तते ॥]

स्त्रियां ङेर्हि ॥ २० ॥

अपभ्रंशे स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नः परस्य ङिवचनस्य हि भवति ॥२०॥

वायसु उड्डावंतिअएँ पिउ दिट्ठउ सहस त्ति ।
अद्धा वलया महिहि गअ अद्धा फुट्ट तड त्ति ॥ ११९ ॥
[= हे. ३५२·१]

[वायसमुड्डापयन्त्याः प्रियो दृष्टः सहसेति ।
अर्धानि वलयानि मह्यां गतानि अर्धानि स्फुटितानि तडिति ॥]

ङस्ङस्योर्हे ॥ २१ ॥

स्त्रियामित्यनुवर्तते । अपभ्रंशे स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नः परं ङस् ङसि षष्ठ्येकवचनं पञ्चम्येकवचनं च हे इत्यादेशमापद्येते ॥ २१ ॥

St. 117. K मुणिअउ मइ; S मुणिगउ मइ for मुणिउँ मइँ. M अप्पणो खाउ for अप्पहों घाउ. 19. T हि for हिं in the Sūtra and Com. St. 118. KS पम्मट्टइ for पअट्टइ. KM भारति for भारते. M वर्तते for प्रवर्तते. 20. BS स्त्रियां ङेः; M स्त्रियां ङि for the Sutra. M ङसवचनस्य for ङिवचनस्य. St. 119. KS उड्डावेंतिअ; T उस्सावंतिअए for उड्डावंतिअएँ. S वलअ for वलआ. T अड्डा for अद्धा. K पुडअ तडित्ति; S घडअ तडत्ति; T पुट्ट तडत्ति. KMT उड्डाययन्त्याः for उड्डापयन्त्याः 21. Bp ङस्ङसेर्हे; MT ङस्ङसि हे; S ङस्ङसे हे for the Sūtra. KS नाम्नः परस्य ङसः षष्ठ्येकवचनस्य ङसेः पंचम्येकवचनस्य च हे इत्यादेशो भवति for नाम्नः... मापद्येते.

ङस्—

तुच्छमज्झहें तुच्छरोमावलिहें तुच्छराय तुच्छयरहासहें ।
पिअवयणु अलहन्तिहें तुच्छकाय वम्महनिवासहें ।
अन्नु जु तुच्छउं तहें धणहें तं अक्खणह न जाइ ।
कटरि थणन्तरु मुद्धडहें जं मणु विच्चि न माइ ॥ १२० ॥
[= हे. ३५०.१]

[तुच्छमध्यायाः तुच्छरोमावल्यास्तुच्छरागायास्तुच्छतरहासायाः ।
प्रियवचनमलभमानायास्तुच्छकायायास्तुच्छमन्मथनिवासायाः ।
अन्यद्यत्तुच्छं तस्या धन्यायास्तदाख्यातुं न याति ।
कूटं स्तनान्तरं मुग्धाया यन्मनो वर्त्मनि न माति ॥]

ङसेः । बालहें जाया विसम थण [४८] ॥

हुमाम्भ्यसोः ॥ २२ ॥

अपभ्रंशे स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नः परयोः आम् भ्यस् इत्येतयोः हुं इत्यादेशो भवति । वअंसाहुं जइ भट्टु, वयस्यानां यदि भर्ता, वयस्याभ्यो वा ॥ २२ ॥

St 120. M Corrupt for the stanza. KS तुच्छअररोमावलिहे for तुच्छरोमावलिहें. KS तुच्छअहे; T तुच्छगाअ for तुच्छराय. KS तुच्छकाअहे for तुच्छकाय. T मुहनिवासहे for वम्महनिवासहें. KST तुच्छ for तुच्छउं. KS घण्णहे; T अगहे for धणहें. KS तु for तं T अक्खहं for अक्खणह. KS कडक; T कडहेर for कटरि. BT जे मणु; KS हे मणु for जं मणु. KS विच्च for विच्चि. KS तुच्छतर-रोमावल्याः; T तुच्छाच्छरोमावल्याः. KST तुच्छगतायाः कायायाः. S om. कायायाः. B कूटे; S करत्; T कुटरे for कूटं. KS यत्र मनविस्तारो न मामि; T यत्र मनोऽपि न माति for यन्मनो वर्त्मनि न माति KST ङसि for ङसेः. KST give the stanza फोडेंति जे and its छाया here (with महिलहे for बालहे; जाअहि for जाआ. T घृण for घिण). The छाया runs: स्फोटयंतो ये हृदयमात्मीयं तेभ्यो परकीया का घृणा । रक्षथ हे लोकाः आत्मानं महिलाया जायेते विषमौ स्तनौ इत्यादि. 22. ST हुमांभ्यसः for the Sūtra. KST om. वअंसाहुं जइ... वा.

भल्ला हुआ जु मारिआ बहिणि महारा कंतु ।
लज्जिज्जन्तु वअंसिअहुँ जइ भग्गा घरु एन्तु ॥ १२१ ॥
[= हे. ३५१·१]

[सम्यग्भूतं यन्मारितो भगिनि मदीयः कान्तः ।
अलज्जिष्यं वयस्याभ्यो यदि भग्नो गृहमैष्यत् ॥]

उदोतौ जश्शसः ॥ २३ ॥

अपभ्रंशे स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नः परस्य जसः शसश्च प्रत्येकं उदोतौ भवतः । लोपापवादः । ॥ २३ ॥ जसः—अंगुलिउ जज्जरिआओ नहेण [१०१] ॥ शसः—

सुंदरसव्वंगाउ विलासिणीओं पेच्छन्ताण ॥ १२२ ॥
[= हे. ३४८·१]

[सुन्दरसर्वाङ्गयो विलासिनीः प्रेक्षमाणानाम् ॥]

वचनभेदान्न यथासंख्यम् , उदोताविति द्विवचनात् जश्शस इति षष्ठ्येकवचनाच्च ॥

इं नपि ॥ २४ ॥

जश्शस इति वर्तते । अपभ्रंशे नपि नपुंसके वर्तमानान्नाम्नः परयोर्जश्शसोः इं इत्यादेशो भवति ॥ २४ ॥

St. 121. K हल्लाहु अज्जु स मारिदु; S हलाहु अज्जु for भल्ला हुआ जु मारिआ. KS अम्हारा for महारा. KS वअंसाहुं जइ भग्गो for वअंसिअहुँ जइ भग्गा. KS लहुअंतु; M पुरु एंतु for घरु एंतु. KS मारितं for मारितो. KS अलज्जिष्यते; T अलज्जिष्यत for अलज्जिष्यं. KS वयस्यानां; T वयस्याभ्यः वयस्यानां for वयस्याभ्यः. KS यदि भर्ता गृहमागमिष्यत्. After ऐष्यत् S adds वयस्याभ्यो वा. 23. St. 122. B सुन्देरसव्वंगाउ. KS सुंदरु संताउ विलासिणीओ छलेण सुंदरसक्ता विलासिन्यारछत्रेण for the stanza and its छाया. KS द्विवचननिर्देशात्... निर्देशाच्च for द्विवचनात्...वचनाच्च. MT om. from उदोताविति down to वचनाच्च.

कमलइँ मेल्लवि अलिउलइं करिगंडाइँ महन्ति ।
असुलहमेच्छण जाहँ भलि ते णवि दूर गणन्ति ॥ १२३ ॥
[= हे. ३५३.१]

[कमलानि मुक्त्वा अलिकुलानि करिगण्डानि कांक्षन्ति ।
असुलभं वाञ्छितुं येषामभ्यासः ते नापि दूरं गणयन्ति ॥]

कान्तस्यात उं स्वमोः ॥ २५ ॥

नपीति वर्तते । अपभ्रंशे नपुंसकलिङ्गे वर्तमानस्य नाम्नो यः ककार-स्तदन्त्यस्याकारस्य स्वमोः परयोः उं इत्यादेशो भवति । अन्नु जु तुच्छउँ [१२०] ॥ २५ ॥

भग्गउँ देक्खिवि निअय बलु बलु पसरिअउँ परस्सु ।
उम्मिल्लइ ससिरेह जिम करि करवालु पिअस्सु ॥ १२४ ॥
[= हे. ३५४.१]

[भग्नं दृष्ट्वा निजं बलं बलं प्रसृतं परस्य ।
उन्मीलति शशिरेखा यथा करे करवालः प्रियस्य ॥]

सर्वगात् ङि हिं ॥ २६ ॥

अपभ्रंशे सर्वगात्सर्वादेरकारान्तात्परं ङिवचनं हिं इति भवति ॥२६॥

जहिँ खण्डिज्जइ सरिण सरु छिज्जइ खग्गिण खग्गु ।
तहिँ तहविहि भडघडनिवहि कंतु पयासइ मग्गु ॥ १२५ ॥
[= हे. ३५७.१]

St. 123. KMS असुहलु वंछण जाह तलि (M चलि) for असुलहमेच्छण जाहँ भलि. K गजगंडान् for करिगण्डानि. B असुलभान् for असुलभं. 25. S मांतस्य for कान्तस्य in the Sūtra. S यो मकारः for यः ककारः. K om. अन्नु जु तुच्छउँ तहेँ. St. 124. M corrupt. T अपसरिउ for पसरिउ. K ससिरेहु; S ससिलेहु for ससिरेह. 26. St. 125. KS तहिँ तिहविहिँ; M तहि तेहइ for तहविहि. M भडरणनिवहि for भडघड-निवहि. K बध्यते for विध्यते. K भटाश्वनिवहे; M corrupt; S भटास्वानिवहे;

[यस्मिन्खण्ड्यते शरेण शरो विध्यते खड्गेन खड्गः ।
तस्मिंस्तथाविधे भटघटानिवहे कान्तः प्रकाशयति मार्गम् ॥]

ङसिहं ॥ २७ ॥

सर्वादेरकारान्तात्परस्मिन् ङसिः पञ्चम्येकवचनं हं इति भवति । जहं होंतउ आगओ, तहं होंतउ आगओ, यस्माद् भवानागतः, तस्माद्भवानागतः ॥ २७ ॥

तु किमो डिह ॥ २८ ॥

अपभ्रंशे किंशब्दादकारान्तात्परं ङसिवचनं डित् इह इति भवति तु । किह आगओ । पक्षे, कहं आगओ, कस्मादागतः ॥ २८ ॥

जइ तुह तुट्टउ नेहडा मइँ सहुँ नवि तिलतार ।
तं किह वंकेँहिँ लोअणेँहिँ जोइज्जउँ सअवार ॥ १२६ ॥
[= हे. ३५६.१]

[यदि तव त्रुटितः स्नेहो मया सह नापि तिलमात्रः ।
तत्कस्माद्वक्राभ्यां लोचनाभ्यां विलोक्ये शतवारम् ॥]

ङसः सुश् यत्तत्किम्भ्यः ॥ २९ ॥

अपभ्रंशे यत् तत् किम् इत्येतेभ्यः अकारान्तेभ्यः परस्य ङसः स्थाने सुश् इत्यादेशो भवति तु । शित्त्वात्पूर्वस्य दीर्घः ॥ २९ ॥

T भटाश्रीनिवहे for भटघटानिवहे. 27. M ङसि हों; S ङसि हिं; T ङसि हा for the Sūtra. T हा इति for हं इति. 28. S डिहि; T डिहे for डिह in the Sūtra. T डित् इहे for डित् इह. St. 126. B तुहु for तुह. KS तट्टिु तु णोहडु (?) for तुट्टउ नेहडा. KS तिलआर; K तिल्कार for तिलतार. K किहि; S किहे for किह. K ओहिज्जइ सहवार; S ओहिणिज्जइ सहि वार. KS तिलकार; M लेशः; T कणलेशः as छाया for तिलमात्रम्. KS शतवारान् विलोक्यते for विलोक्ये शतवारम्.

कंतु महारउ हलि सहिए निच्छइँ रूसइ जासु ।
अत्थिहिँ सत्थिहिँ हत्थिहिँ वि ठाउ वि फेडइ तासु ॥ १२७ ॥
[= हे. ३५८·१]

[कान्तोऽस्माकं हे सखि निश्चयेन रुष्यति यस्य ।
अस्त्रैः शस्त्रैर्हस्तैरपि स्थानमपि स्फोटयति तस्य ॥]

जीविउँ कासु न वल्लहउँ धणु पुणु कासु न इट्ठु ।
दोण्णि वि अवसरनिवडिअइं तिणसम गणइ विसिट्ठु ॥ १२८ ॥
[= हे. ३५८·२]

[जीवितं कस्य न वल्लभं धनं पुनः कस्य नेष्टम् ।
द्वे अप्यवसरनिपतिते तृणसमे गणयति विशिष्टः ॥]

पक्षे । तसु हउँ कलिजुगि [१०७] ॥ इत्यादि ॥

स्त्रियां डहे ॥ ३० ॥

अपभ्रंशे स्त्रीलिङ्गे वर्तमानेभ्यो यत्तत्किंभ्यः परस्य ङसो डित् अहे इत्यादेशो भवति तु । जहे केरउं, यस्याः संबन्धि ॥ ३० ॥

यत्तद् ध्रुं त्रुं स्वमोः ॥ ३१ ॥

अपभ्रंशे यत्तदित्येतौ यथासंख्यं ध्रुं त्रुं इत्यादेशावापद्येते स्वमोः परयोः ॥ ३१ ॥

St.127.KS कंतु अम्हारउ हेल्लि for कंतु महारउ हलि सहिए.KS णिच्चएं for निच्छइँ.M रोसइ for रूसइ. KS ठाउ वि थठइ तासु for ठाउ वि फेडइ तासु. KS स्थानमेव स्खलति तस्य for स्थानमपि स्फोटयति तस्य. St.128. KS जीविउ for जीविउं. K तणु for धणु. KS बेण्णि वि अवसरपडिआ for दोण्णि वि अवसरनिवडिअइं KS तिणसमइ for तिणसम. S जीवितु for जीवितं. KS कलिजुइ for कलिजुगि. 30. After जहे केरउं KMS add तहे केरउ कहे केरउ. 31. KS ध्रं त्रं for ध्रुं त्रुं in the Sūtra, Com. and illustrations.

प्रंगाणि चिट्ठदि नाहु ध्रुं त्रुं रणि करदि न भ्रंति ॥ १२९ ॥

[= हे. ३६०·१]

[प्राङ्गणे तिष्ठति नाथो यत्तद्रणे करोति न भ्रान्तिः ॥]

पक्षे । तं बोल्लिअइ जु निव्वहइ [= हे ३६०] ॥

इदम इमु नपुंसके ॥ ३२ ॥

अपभ्रंशे नपुंसके वर्तमानस्य इदंशब्दस्य स्वमोः परयोः इमु इत्यादेशो भवति । इमु कुलु तुह तणउं । इमु कुलु देक्ख । इदं कुलं तव संबन्धि । इदं कुलं पश्य ॥ ३२ ॥

एतदेहएहोएहु स्त्रीनृनपि ॥ ३३ ॥

अपभ्रंशे स्त्रीनृनपि स्त्रीलिङ्गे पुंलिङ्गे नपुंसकलिङ्गे च वर्तमानः एतच्छब्दः स्वमोः परयोः यथासंख्यम एह एहो एहु इति भवति ॥ ३३ ॥

एह कुमारी एहो वरु एहु मणोरहठाणु ।
इअ वढइं चिन्तन्ताइं पच्छइ होइ विहाणु ॥ १३० ॥

[= हे. ३६२·१]

[एषा कुमारी एष वरः एतन्मनोरथस्थानम् ।
इति मूढानां चिन्तयतां पश्चाद्भवति विभातम् ॥]

जश्शसोरेइ ॥ ३४ ॥

अपभ्रंशे एतदो जश्शसोः परयोः एइ इति भवति । एइ ति घोड [१००] ॥ एइ पेच्छ, एतान्पश्य ॥ ३४ ॥

St. 129. KS पंगणि for प्रंगणि. KS भृं तृं for ध्रुं त्रुं. KS तं बोल्लिअ जं पहइ; T तं बोल्लिअ जं वहइ for तं बोल्लिअइ जु निव्वहइ. 32. M om. the Sūtra and Com. up to भवति. KS इ for इमु in the Sūtra and Com. KS तुह भणउं for तुह तणउं. KS देइ for देक्ख. KS do not give the Sk. equivalents. 33. St. 130. KMS एहु कुमारी for एह कुमारी. KS एहु वड्ड चिंततहो; K एहउ वढ चिंतताइं for इअ वढइं चिंतताइं. KS एतन्मूढं चिन्तयतः for इति मूढानां चिन्तयतां. KS विश्रांतिः for विभातं. 34. M om. the Sūtra and Com. Kom. एइ पेच्छ एतान्पश्य.

ओइ अदसः ॥ ३५ ॥

अपभ्रंशे अदस्शब्दस्य जश्शसोः परयोः ओइ इत्यादेशो भवति। **ओइ,** अमी अमून् वा ॥ ३५ ॥

जइ पुच्छह घर वड्डाइं तो वड्डा घर ओइ।
विहलिअजणअब्भुद्धरणु कंतु कुडीरइ जोइ ॥ १३१ ॥
[= हे. ३६४·१]

[यदि पृच्छथ गृहान्बृहतां तद् बृहन्तो गृहा अमी।
विह्वलितजनाभ्युद्धरणं कान्तं कुटीरके पश्य ॥]

इदम आअः ॥ ३६ ॥

अपभ्रंशे इदमः सुपि परे आअ इत्यादेशो भवति। आउ पुरिसु, **अयं पुरुषः** ॥ ३६ ॥

आअइँ लोअहोँ लोअणइँ जाई सरइँ न भन्ति।
अप्पिएँ दिट्ठइ मउलिअहिँ पिएँ दिट्ठइ विअसन्ति ॥ १३२ ॥
[= हे. ३६५·१]

[इमानि लोकस्य लोचनानि जातिं स्मरन्ति न भ्रान्तिः।
अप्रिये दृष्टे मुकुलयन्ति प्रिये दृष्टे विकसन्ति ॥]

सोसउ म सोसउ च्चिअ उअही वडवाणलस्स किं तेण।
जं जलइ जले जलणो आएण वि किं न पज्जत्तं ॥१३३॥
[= हे. ३६५·२]

---

35. M om. the Sūtra K om. ओइ अमी अमून्वा. St 131. M corrupt. KS पुच्छहु घर बड्डइ for पुच्छह घर वड्डाइं. KS विन्हलजणअब्भुधरणु कंतु कुडाइ(S कुडारइ) जोहि for the second half. S पृच्छति for पृच्छथ. KS विह्वलजना° for विह्वलितजना°. 36. KS आयः for आअः in the Sūtra and Com. St. 132. KS जाइंसराइं for जाई सरइँ. KST इमे लोकस्य लोचने जातिस्मरे न भ्रांतिः. KMS मुकुलायेते for मुकुलयन्ति. KMS विकसतः for विकसन्ति. St. 133. KS सूसउ मं सूसउ जि for सोसउ म सोसउ च्चिअ. KS वडवाणलस्सु for °स्स. K जो जलइ for जं जलइ. KS जलणु for जलणो. K अलु णवि; S आणवि for आएण वि. K पज्जत्तु; S पेज्जंतं for पज्जत्तं.

[शुष्यतु मा शुष्यतु एव उदधिर्वडवानलस्य किं तेन ।
यज्ज्वलति जले ज्वलन अनेनापि किं न पर्याप्तम् ।।]

आअहों दड्ढकलेवरहों जं वाहिउ तं सारु ।
जइ उट्ठब्भइ तो कुहइ अह डज्झइ तो छारु ।। १३४ ।।
[= हे. ३६५.३]

[अस्य दग्धकलेवरस्य यद्वाहितं तत्सारम् ।
यद्युत्तभ्यते तत्कुथति अथ दह्यते तत्क्षारः ।।]

सौ युष्मदस्तुहुं ।। ३७ ।।

अपभ्रंशे युष्मदः सौ परे तुहुं इत्यादेशो भवति । तुहुं, त्वम् ।।३७।।

भमर म रुणझुणि रण्णडइ सा दिसि जोइ म रोइ ।
सा मालइ देसंतरिअ जसु तुहुँ मरहि विओइ ।। १३५ ।।
[= हे. ३६८.१]

[भ्रमर मा रुवीहि अरण्ये तां दिशं पश्य मा रोदीः ।
सा मालती देशान्तरिता यस्यास्त्वं म्रियसे वियोगे ।।]

तुम्हे तुम्हइं जश्शसोः ।। ३८ ।।

अपभ्रंशे युष्मदः जश्शसोः परयोः तुम्हे तुम्हइं इत्यादेशौ भवतः । वचनभेदान्न यथासंख्यम् । तुम्हे तुम्हइं जाणह, यूयं युष्मान् जानीथ । तुम्हे तुम्हइं पेच्छह, यूयं युष्मान्पश्यत ।। ३८ ।।

भिसा तुम्हेहिं ।। ३९ ।।

अपभ्रंशे युष्मदो भिसा सह तुम्हेहिं इत्यादेशो भवति ।। ३९ ।।

St. 134. K उत्थभइ; S उत्थंभइ for उट्ठब्भइ. S कुंथइ for कुहइ. KS तो छाऊ for तो छारु. KST तदा क्षारं for तत्क्षारः. 37. M om. the Sūtra. K om. तुहुं त्वम्. St. 135. KS भमरु म रुणुवउ कुणु रण्णइ सा दिस जोइ म रोइ (S मं रोइ) for the first half of the stanza. KS मा रुणु एवं कुरु; M मा रणरणं कुरु for मा रुवीहि. KS वियोगे म्रियसे for म्रियसे वियोगे. 38. KS om. अपभ्रंशे. KS चिट्ठह for जाणह. KS तिष्ठत for जानीत. KS पेच्छउ पश्यामि for पेच्छह पश्यत. 39. K भिसो युष्मदा सह for युष्मदो भिसा सह.

तुम्हेहिँ अम्हेँहिँ जं किअउँ दिट्ठउँ बहुअजणेण।
तं तेवड्डउ समरभरु णिज्जिउ एक्कखणेण ॥ १३६ ॥

[= हे. ३७१.१]

[युष्माभिरस्माभिर्यत्कृतं दृष्टं तद्बहुजनेन।
तत्तावान्समरभरो निर्जित एकक्षणेन ॥]

ङ्यम्टा पइं तइं ॥ ४० ॥

अपभ्रंशे ङि अम् टा इत्येतैः सह युष्मदः पइं तइं इत्यादेशौ भवतः।
पइं तइं, त्वां त्वया त्वयि वा ॥ ४० ॥

ङिना—

मइँ पइँ बेहिँ वि रणगयहिं को जयसिरि तक्केइ।
केसहिँ लेप्पिणु जमघरिणि भण सुहुँ को थक्केइ ॥ १३७ ॥

[= हे. ३७०.३]

[मयि त्वयि द्वयोरपि रणगतयोः को जयश्रियं तर्कयति।
केशेषु लात्वा यमगृहिणीं भण सुखं कस्तिष्ठति ॥]

अमा—

पइँ मेल्लन्तिहेँ महु मरणु मइँ मेल्लन्तहोँ तुज्झु।
सारस जसु जो वेग्गला सो वि किदन्तहोँ सज्झु ॥ १३८ ॥

[= हे. ३७०.४]

St. 136. K दिट्ठदु for दिट्ठउँ. K सोउंवड समरु भरु; S सो ताउं वड समरु भरु. K दृष्टं बहुजनेन for दृष्टं तद् बहुजनेन. KST स तावान्समरभरः for तत्तावान् समरभरः. 40. M corrupt. K om. पइं तइं...वा. St. 137. KS एवेहिं for बेहिँ वि. KST लेविणु for लेप्पिणु. KS भणसु सुहं को ठाइ for भण सुहुँ को थक्केइ. K जयं for जयश्रियं. After तिष्ठति KS add एवं तइ. St. 138. K सारसु जसु जो वेग्गलु; M सारस जसु जो विगला; ST सो रसु जो वेग्गला for सारस जसु जो वेग्गला. KS कुदंदहो for किदंतहोँ. KMS सरस यस्य योधिकः for सारस यस्य यो दूरः. KS om. तवं तइं.

[त्वां मुञ्चन्त्या मम मरणं मां मुञ्चतस्तव ।
सारस यस्य यो दूरं सोऽपि कृतान्तस्य साध्यः ॥]

एवं तइं ॥ टा—

पइँ मुक्काहँ वि वरतरु फिट्टइ पत्तत्तणं न पत्ताणं ।
तुह पुणु छाया जइ होज्ज कह वि तो तेहिँ पत्तेहिं ॥ १३९ ॥
[= हे. ३७०·१]

[त्वया मुक्तानामपि वरतरो भ्रश्यति पत्रत्वं न पत्राणाम् ।
तव पुनश्छाया यदि भवेत्कथमपि तत्तैः पत्रैः ॥]

महु हिअउँ तइं ताए तुह स वि अन्नें विनडिज्जइ ।
पिअ काइँ करउँ हउँ काइँ तुहुँ मच्छें मच्छु गिलिज्जइ ॥ १४० ॥
[= हे. ३७०·२]

[मम हृदयं त्वया तया तव साप्यन्येन विनाट्यते ।
प्रिय किं करोम्यहं किं त्वं मत्स्येन मत्स्यो गिल्यते ॥]

तुज्झ तुध्र तउ ङसिङसा ॥ ४१ ॥

अपभ्रंशे युष्मदो ङसिना ङसा च सह तुज्झ तुध्र तउ इति त्रय आदेशा भवन्ति। तुज्झ होंतउ आगदो। तुध्र होंतउ आअदो। तउ होंतउ आगदो ॥ ङसा—

तउ गुणसंपइ तुज्झ मदि तुध्र अणुत्तर खन्ति ।
जइ उप्पत्तिं अन्न जण महिमंडलि सिक्खन्ति ॥ १४१ ॥
[= हे. ३७२·१]

St. 139. M Corrupt. KS मुक्कहं for मुक्काहं. KS. पत्तत्तणउ for पत्तत्तणं. B ता तेहिं; KS तउ तेहिं for तो तेहिं. KST तावत्तैः पत्रैः for तत्तैः पत्रैः. St. 140. M corrupt. KS पि नडिज्जइ for विनडिज्जइ. S om. second half. K अन्येनापि नाट्यते for अन्येन विनाट्यते. 41. M तुज्झ तुज्झं तउ; S तज्झु तुधु तुइ; T तुज्झु तुस्स तुइ for तुज्झ तुध्र तउ in the Sūtra, Com. and illustrations. St.141. KST तुइ गुण संपदिइ तुज्झू मदि तुधु अ अनुत्तर (T अनंतर) खंति for the first half. KS जइ उप्पज्जत्ति अण्ण गण (S जण) for जइ उप्पत्तिं अण्ण जण. K तत्र for तव. K शिक्षयंति for शिक्षन्ते.

[तव गुणसंपदं तव मतिं तवानुत्तरां क्षान्तिम् ।
यद्युपेत्यान्ये जना महीमण्डले शिक्षन्ते ॥]

सुपा तुम्हासु ॥ ४२ ॥

युष्मदः सुपा सह तुम्हासु इत्यादेशो भवति । तुम्हासु ठिअं, युष्मासु स्थितम् ॥ ४२ ॥

तुम्हहमाम्भ्यस्भ्याम् ॥ ४३ ॥

युष्मदः आमा भ्यसा च सह तुम्हहं इत्यादेशो भवति । तुम्हहं केरउ धणु, युष्माकं संबन्धि धनम् । तुम्हहं होन्तउ आगदो, युष्मभ्यं भवन्नागतः ॥ ४३ ॥

अस्मदोऽम्हहं ॥ ४४ ॥

अपभ्रंशे अस्मदः आम्भ्यस्भ्यां सह अम्हहं इत्यादेशो भवति । अह भग्गा अम्हहंतणा [७] ॥ अम्हहं होन्तउ आगदो, अस्मद् भवन्नागतः ॥ ॥ ४४ ॥

सौ हउं ॥ ४५ ॥

अस्मद इत्यनुवर्तते । अपभ्रंशे अस्मदः सौ परे हउं इत्यादेशो भवति । तसु हउँ कलिजुगि दुल्लहहोँ [१०७] ॥ ४५ ॥

मइं ङ्यम्टा ॥ ४६ ॥

अस्मदः ङि अम् टा इत्येतैः सह मइं इत्यादेशो भवति । मइं मयि मां मया वा ॥ ङिना—मइँ पइँ बेहिँ वि रणगयहिँ [१३७] ॥ अमा—मइँ मेल्लन्तहोँ तुज्झु [१३८] ॥ टा—मइँ जाणिउँ पिअ विरहिअहं [१४] ॥ ॥ ४६ ॥

---

43. KS तुम्हहं करेउ धणु, तुम्हहं ताउ आगदो। युष्माकं (?) करोमि धनं। युष्मत्तावदागतः for तुम्हहं...आगतः. 44. K अस्मदेम्हहं for the Sūtra. K om. अपभ्रंशे. 45. M om. the Com. upto कलिजुगि. 46. K जाणिदु पिअविरहअहं for जाणिउँ...हिअहं.

ङस्ङसिना महु मज्झु ॥ ४७ ॥

अपभ्रंशे अस्मदः ङसः ङसिना च सह महु मज्झु इत्यादेशौ भवतः । वचनभेदान्न यथासंख्यम् । महु कंतहों बे दोसडा [४८] ॥ जइ भग्गा पारक्कडा तो सहि मज्झु पिएण [७] ॥ महु होन्तउ आगदो, मद् भवन्नागतः । मज्झु होन्तउ आगदो, मद् भवन्नागतः ॥ ४७ ॥

अम्हइं अम्हे जश्शसोः ॥ ४८ ॥

अपभ्रंशे अस्मदः जश्शसोः परयोः अम्हइँ अम्हे इत्यादेशौ प्रत्येकं भवतः ॥ ४८ ॥

अंबणु लाइवि जे गया पहिअ पराआ के वि ।
अवस न सुअहिँ सुहच्छिअइ जिम अम्हइँ तिम ते वि ॥ १४२ ॥
[= हे. ३७६.२]

[अम्लत्वं लगयित्वा ये गताः पथिकाः परकीयाः केऽपि ।
अवश्यं न स्वपन्ति सुखासिकायां यथा वयं तथा तेऽपि ॥]

अम्हे थोवा रिउ बहुअ कायर एम भणन्ति ।
मुद्धि निहालहि गअणअलु कइ जण जोण्ह करन्ति ॥ १४३ ॥
[= हे. ३७६.१]

[वयं स्तोका रिपवो बहवः कातरा एवं भणन्ति ।
मुग्धे निभालय गगनतलं कति जना ज्योत्स्ना कुर्वन्ति ॥]

अम्हे देक्खहुं, अम्हइं देक्खहुं, वयं पश्यामः ॥

---

47. KS महु मज्झु ङसिङसा for the Sūtra. K मह for महु in the Sūtra. KS मज्झ for भग्गा. KS सुहि for सहि. B महु कंतउ आगदो, मम कान्त आगतः for महु होंतउ...आगतः. K आगओ for आगदो. KS om. मद् भवन्नागतः. 48. St. 142. M corrupt. K तंबं अम्हासु लाइवि पथिअ परक्का केपि; S तंबं अम्हसु लाइवि जे गया पथिक परंका केपि for the first line. KS अवस सुअहिं न सुहच्छिअहिं जिम अम्हइं तिम तेपि for the second line. T अवसु सुअहिं, i. e. om. न but has it in the छाया. KS आम्रमस्मासु लगइत्वा for अम्लत्वं लगयित्वा. St. 143. S थोवा for थोवा. K विअउ बहु for रिउ बहुअ. S गअणुअलि for गअणअलु. K पश्य for निभालय. K दक्खइ for देक्खइं.

भिसाम्हेहिं ॥ ४९ ॥

अस्मदो भिसा सह अम्हेहिं इत्यादेशो भवति । तुम्हेंहिँ अम्हेंहिँ जं किअउँ [१३६] ॥ ४९ ॥

सुपाम्हासु ॥ ५० ॥

अपभ्रंशे अस्मदः सुपा सह अम्हासु इत्यादेशो भवति । अम्हासु ठिअं, अस्मासु स्थितम् ॥ ५० ॥

लटो हिं वा झइयोः ॥ ५१ ॥

लटो वर्तमानाया विभक्तेः प्रथमपुरुषबहुवचनयोः परस्मैपदात्मनेपदयोः स्थाने अपभ्रंशे हिं इत्यादेशो वा भवति । होहिं हुवहिं हवहिं, भवन्ति ॥ पक्षे । न्ति न्ते इरे च ॥ मुहकबरिबंध तहेँ सोह धरहिँ [३७] ॥ ५१ ॥

हि थास्सिपोः ॥ ५२ ॥

लटो मध्यमपुरुषैकवचनयोः थास्सिपोः अपभ्रंशे हि इत्यादेशो वा भवति । होहि हवहि हुवहि, भवसि ॥ पक्षे से सि च ॥ ५२ ॥

बप्पीहा पिउ पिउ करवि केत्तिउँ रुअहि हआस ।
तुह जलि मह पुणु वल्लहइ बिहुँ वि न पूरिअ आस ॥ १४४ ॥
[= हे. ३८३·१]

[चातक पिउ पिउ कृत्वा कियद्रोदिषि हताश ।
तव जले मम पुनर्वल्लभे द्वयोरपि न पूरिता आशा ॥]

पिउ पिउ इति तु पिबामीत्यस्य वा, प्रिय प्रिय इत्यस्य वा सिद्धमपभ्रंशे ॥

---

50. M om. अपभ्रंशे. 51. K सोहं for सोह. After धरहिँ MT add नं मल्लजुज्झु ससिराहु करहिं. S om. पक्षे न्ति न्ते इरे च. 52. MT हि सिसिपोः for the Sūtra. M damaged from मध्यमपुरुषैक onwards, giving only a few words and sentences here and there. The variants, if available, are noted in the sequel. St. 144. KS अप्पिह पिइ पिउ करवि for बप्पीहा पिउ पिउ करवि. KS हआसु for हआस. KS जल for जलि. KS बेह वि for बिहुं वि. KS इत्यनुकरणं कृत्वा; T इत्यनुकारं कृत्वा for इति तु पिबामीत्यस्य वा.

आत्मनेपदे—

बप्पीहा काइँ बोल्लिएण निग्घिण वारइवार ।
साअरि भरिअइ विमलजलि लहहि न एक्क वि धार ॥ १४५ ॥
[= हे. ३८३·२]

[चातक किमुक्तेन निर्घृण वारंवारम् ।
सागरे भृते विमलजलेन लभसे नैकामपि धाराम् ॥]

सप्तम्याश्च ॥ ५३ ॥

अपभ्रंशे सप्तम्या लिङो मध्यमपुरुषैकवचनयोः यास्सिपोः हि इत्यादेशो भवति ॥ ५३ ॥

आअहिँ जम्महिँ अन्नहिँ वि गोरि सु दिज्जहि कंतु ।
गअ मत्तहँ चत्तंकुसहं जो अब्भिडइ हसन्तु ॥ १४६ ॥
[= हे. ३८३·३]

[अस्मिजन्मन्यन्यस्मिन्नपि गौरि तं दद्याः कान्तम् ।
गजानां मत्तानां त्यक्ताङ्कुशानां यः संमुखं गच्छति हसन् ॥]

पक्षे । हससि इत्यादि ॥ ५३ ॥

हु थध्वमोः ॥ ५४ ॥

लटो मध्यमपुरुषस्य बहुत्वे वर्तमानयोः परस्मैपदात्मनेपदयोः थ ध्वम् इत्येतयोः हु इत्यादेशो भवति । होहु हवहु हुवहु, भवथ ॥ ५४ ॥

St. 145. K बोल्लियं; S ओल्लियं for बोल्लिएण. KS बारउ बारउ for वारइवार. S हरिलइ; T हरिअइ for भरिअइ. KS एग्गु वि धार for एक्क वि धार. K निल्लग्ग for निर्घृण. KS भरिते for भृते 53. B reads सप्तम्यां च for the Sūtra. BT om. the Com on this Sūtra. M om. अपभ्रंशे, though the rest of Com. is illegible. St 146. M om. the stanza. KS आहिं जम्मि महु (S हुहुं) अण्णहि वि गौरि सु वेज्जहि कंतु; T आमि आहिं कमभि महु अन्नेहि पि गारी देज्जहि कंतु for the first line. K गज for गअ. K जोअंति जाइ हसंतु for जो अब्भिडइ हसंतु. K गौरि स ददिथाः कान्तः for गौरि तं दद्याः कान्तम्. K वेज्जउ for हससि. 54. After भवति KS add वा; M adds होउ हवउ.

बलिअब्भत्थणि महुमहणु लहुईहूआ सोइ ।
जइ इच्छहु बड्डत्तणउँ देहु म मग्गहु कोइ ॥ १४७ ॥
[= हे. ३८४·१]

[बल्यभ्यर्थने मधुमथनो लघुकीभूतः सोऽपि ।
यदीच्छथ बृहत्त्वं दत्थ मा याचध्वं कमपि ॥]

पक्षे । इच्छह इत्यादि ॥

उँ मिबिटोः ॥ ५५ ॥

लट उत्तमपुरुषस्यैकत्वे वर्तमानयोः परस्मैपदात्मनेपदयोः मिप् इट् इत्येतयोः उँ इत्यादेशो वा भवति । संपइ कड्डउँ वेस जिम [८७] बलि किज्जउँ सुअणस्सु [१०७] पक्षे । कड्ढमीत्यादि ॥

हुं मस्महिङोः ॥ ५६ ॥

लट उत्तमपुरुषस्य बहुत्वे वर्तमानयोः मस् महिङ् इत्येतयोः हुं इत्यादेशो वा भवति । होहुं हवहुं हुवहुं, भवामः ॥ ५६ ॥

खग्गविसाहिउँ जहिँ लहहुँ पिअ तहिँ देसहिँ जाहुं ।
रणदुब्भिक्खें भग्गाइं विणु जुज्झें न वलाहुं ॥ १४८ ॥
[= हे. ३८६·१]

[खड्गविसाधितं यस्मिंल्लभामहे प्रिय तस्मिन्देशे यामः ।
रणदुर्भिक्षेण भग्ना विना युद्धेन न वलामहे ॥]

पक्षे । लहिमु इत्यादि ॥

St. 147. M om. the Stanza. S बलिबंधणि for बलिअब्भत्थणि. KS इच्छहु बड्डत्तणु; T इच्छइ बड्डत्तणइ for इच्छहु बड्डत्तणउं. KS देह for देहु. KS कं वि for कोइ. KS लघूभूतः for लघुकीभूतः. KS महत्त्वं; T ब्रह्मत्वं for बृहत्त्वं. KS ददत; T ददथ for दत्थ. BT इच्छहे for इच्छह. 55. K उमिबिटोः; T इं मिबिङोः for the Sūtra. M इं for उ in the Sūtra, the remaining part missing. K उ for उँ in Com. T कड्ढइं for कड्ढउं. T सुधणस्सु for सुअणस्सु. After सुअणस्सु KS add the छाया: बलिः क्रिये सुजनस्य. 56. K om. वा. KST om होहुं...भवामः. St. 148. M om. the Sūtra. KS °विमाहिइ for विसाहिउं. KS पिउ for पिअ. KS°दुब्भिक्खइ मग्ग विणु जुज्झु णिवलाहु for °दुब्भिक्खें...वलाहुं. K°विसाधितुं; T °विलासितं for खड्गविसाधितं. KS प्रियं for प्रिये. KST °दुर्भिक्षे भग्नाः विना युद्धं (T युद्धेन) स्थाने न लाभः (नैव लाभः) for the second half.

इदुदेत्स्वहे: ॥ ५७ ॥

पञ्चम्या: स्व हि इति यौ मध्यमपुरुषैकवचनादेशौ तयोरपभ्रंशे इ उ ए इत्येते त्रय आदेशा वा भवन्ति । होइ होउ होए, भव । इत्यादि ॥५७॥

इ—

कुंजर सुमरि म सल्लइउ सरला सास म मेल्लि ।
कवल जँ पाविअ विहिवसिण ते चरि माणु म मेल्लि ॥ १४९ ॥
[= हे. ३८७·१]

[कुञ्जर स्मर मा सल्लकी: सरलान् श्वासान्मा मुञ्च ।
कवला ये प्राप्ता विधिवशेन तांश्चर मानं मा मुञ्च ॥]

उ—

भमरा एत्थु वि लिंबडइ केँ वि दियहडा विलम्बु ।
घणपत्तलु छायाबहलु फुल्लइ जाम कलम्बु ॥ १५० ॥
[= हे. ३८७·२]

[भ्रमर अत्रापि निम्बे कानपि दिवसान्विलम्बस्व ।
घनपत्रवांश्छायाबहल: फुल्लति यावत्कदम्ब: ॥]

ए—

प्रिय एवहिँ करेँ सेल्लु करि छड्डहि तुहुँ करवालु ।
जं कावालिय बप्पुडा लेहिँ अभग्गु कवालु ॥ १५१ ॥
[= हे. ३८७·३]

---

57. KS om. वा. KṢT om. होइ....इत्यादि. St. 149. KS सुमरिवि सल्लइइ for सुमरि म सल्लइउ. K कमल जे for कवल जिं. K माण for माणु. KS स्मृत्वा सल्लकीं for स्मर मा सल्लकी:. St. 150. KS निंबडइ for लिंबडइ KS दिअह for दिअहडा. T जासु for जाम. KS घनपत्रच्छायाबहुला for घन...बहल:. S घल्लति for फुल्लति. St. 151. KS पिअ एवहि खल्लु करे छड्डेहि तुहु करवालु for the first line. K जो for जं. S बग्घड for बप्पुडा. KS लेहि अहग्गु कवालु for लेहिँ अभग्गु कवालु. KS इदानीं खेलां कुरु for इदानीं कुरु कुन्तं करे. KS वराद्रां for वराका. K मेल्लहि for सुमरहि.

[प्रिय इदानीं कुरु कुन्तं करे, मुञ्च त्वं करवालम् ।
यत्कापालिका वराका लान्त्यभग्नं कपालम् ॥]

पक्षे । सुमरहि इत्यादि ॥

स्यस्य सो लृटि ॥ ५८ ॥

लृटि भविष्यति यो विहितः स्यप् तस्य स इत्यादेशो भवति । होसइ, भविष्यति ॥ ५८ ॥

दिअहा जन्ति झडप्पडहिँ पडहिँ मणोरह पच्छि ।
जं अच्छइ तं माणिअइ होसइ करतु म अच्छि ॥ १५२ ॥
[= हे. ३८८·१]

[दिवसा यान्ति झटिति पतन्ति मनोरथाः पश्चात् ।
यदस्ति तन्मान्यते भविष्यति (इति) कुर्वन्मास्स्व ॥]

पक्षे । होहिइ ॥

पर्याप्तौ भुवः पहुच्चः ॥ ५९ ॥

अपभ्रंशे भुवो धातोः पर्याप्तावर्थे वर्तमानस्य पहुच्च इत्यादेशो भवति ॥५९॥

अइतुंगत्तणु जं थणहं सो छेयउ न हु लाहु ।
सहि जइ केवँइ तुडिवसेँण अहरि पहुच्चइ नाहु ॥ १५३ ॥
[= हे. ३९०·१]

[अतितुङ्गत्वं यत्स्तनयोः स च्छेदो न खलु लाभः ।
सखि यदि कथमपि त्रुटिवशेनाधरे प्रभवति नाथः ॥]

---

58. KS सः शरो लृटि; T सस्य पो लृटि for the Sūtra. KT लृटि भविष्यन्ती तस्या परतो यो विहितः स्यप् तस्य स इत्यादेशो भवति वा for लृटि...भवति. St 152. M om. the stanza. K दिअहा गंति झडप्पडिति for दिअहा जंति झडप्पडहिं. K मणूरह for मणोरह. KS जं एच्छइ तं माणि (S वण्णि) पिअ for जं अच्छइ तं माणिअइ KS करतु; T किरतु for करतु. KS झडफाडिते for झटिति. KS यदास्ते तन्माने प्रियो for यदस्ति तन्मान्यते. 59. KS पर्यापो भुवो हुच्चं; T परियाप्तौ हुवे पुच्चं for the Sūtra. K हुच्च; T उप्प for पहुच्च. St 153. KS सो छेअ म णहु लिहु for सो छेयउ न हु लाहु. K केवं वि; S केवलं वि for केवंइ. KST कथमपि स्पर्शा (T स्पर्श) वशेन अधरे पर्याप्नोति नाथःfor कथमपि त्रुटिवशेन अधरे प्रभवति नाथः

व्रजेर्वञ्ञः ॥ ६० ॥

अपभ्रंशे व्रजेर्धातोर्वञ्ञ इत्यादेशो भवति। वञ्ञइ। वञ्ञेप्पि। वञ्ञेप्पिणु ॥ ६० ॥

ब्रूञो बुवः ॥ ६१ ॥

अपभ्रंशे ब्रूञो धातोः बुव इत्यादेशो वा भवति। न सुहासिउ किं पि बुवइ, न सुभाषितं किमपि ब्रवीति ॥ ६१ ॥ पक्षे—

एत्तउँ बोप्पिगु सउणि ठिउ पुणु दूसासणु बोप्पि।
तो हउँ जाणउँ एहौं हरि जइ महु अग्गइ बोप्पि ॥ १५४ ॥
[= हे. ३९१·१]

[एतावदुक्त्वा शकुनिः स्थितः पुनर्दुःशासन उक्त्वा।
ततोऽहं जानामि एप हरिर्यदि ममाग्रे उक्तवान् ॥]

क्रियेः कीसु ॥ ६२ ॥

क्रिये इत्यस्य क्रियापदस्यापभ्रंशे कीसु इत्यादेशो भवति ॥ ६२ ॥

सन्ता भोग जु परिहरइ तसु कन्तहों बलि कीसु।
तसु दइवेण जि मुण्डियउँ जसु खल्लिहडउँ सीसु ॥ १५५ ॥
[= हे. ३८९·१]

---

60. K व्रजेड्वञ्ञः; S व्रजेर्वञ्ञः; T वृजेर्वृञ्ञः for the Sūtra. K इवञ्ञ इत्यादेशो for वञ्ञ इत्यादेशो. K उञेइ उञेप्पि उञेप्पिणु; T वुञइ वुञइ वुञेप्पिणु for वञ्ञइ etc. 61. KS ब्रूञो ब्रुवः (S लूवः) for the Sūtra. K K ड्वच; S लूच for बुव. KS om. वा. KS ऊचह सुहासिदु किंपि; T प्रवह सुहासिउं कपि ब्रूइ for न सुहासिउ किं पि बुवइ. K ब्रूत सुभाषितं किमपि for न सुभा...ब्रवीति. St. 154. K एत्तिउ for एत्तउं. B बोप्पिणु; S जोप्पिणु for बोप्पिणु. KS अउणि for सउणि. K जाणदु for जाणउँ. KS मुहु for महु K उक्त्वा for उक्तवान्. 62. St. 155. KST तसु देवेण वि मुंडिअ (T मुडिअइ) जसु खल्लिडउ (T खल्लिदउ) सीस for the second ha'f. KS कांतस्य बलिः क्रियते for कान्तस्य बलि क्रिये (करोमि). KST दैवेनापि for दैवेनैव. T विमथितं for मुण्डितं. KS सुमणस्सु for सुभणस्सु. After सुअणस्सु B adds the छाया: बलि करोमि सुजनस्स.

[सतो भोगान्यः परिहरति तस्य कान्तस्य बलिं क्रिये (करोमि) ।
तस्य दैवेनैव मुण्डितं यस्य खल्वाटं शीर्षम् ॥]

पक्षे साध्यमानावस्थातः अयं प्रयोगः क्रिये इति संस्कृतपदादेव । बलि किज्जइ सुअणस्सु [१०५] ॥ ६२ ॥

पस्सगण्हौ दृशिग्रहोः ॥ ६३ ॥

अपभ्रंशे दृशिर् ग्रह इत्येतयोर्धात्वोः पस्स गण्ह इत्यादेशौ यथासंख्यं भवतः । पस्सदि पश्यति । पढ गण्हेप्पिणु व्रतु, पठ गृहीत्वा व्रतम् ॥६३॥

तक्षाद्याश्छोल्लादीन् ॥ ६४ ॥

अपभ्रंशे तक्षिप्रभृतयो धातवः छोल्ल इत्यादीनादेशानापद्यन्ते ॥६४॥

जिम तिम तिक्खा लेवि कर जइ ससि छोल्लिज्जन्तु ।
तो जइ गोरिहेँ मुहकमलि सरिसिम का वि लहन्तु ॥ १५६ ॥
[= हे. ३९५·१]

[यथा तथा तीक्ष्णान् लात्वा करान् यदि शशी अतक्षिष्यत ।
ततो जगति गौर्या मुखकमलेन सदृशतां कामप्यलप्स्यत ॥]

आदिग्रहणाद्देशीषु ये क्रियाशब्दा उपलभ्यन्ते ते उदाहार्याः ।

चुडुल्लउ चुण्णीहोइसइ मुद्धि कवोलि निहित्तउ ।
सासाणलजालझलक्किअउ बाहसलिलसंसित्तउ ॥ १५७ ॥
[= हे. ३९५·२]

---

63. S पसगृण्हौ दृशिगृहोः for the Sūtra. KS दृशि गृह for दृशिर् ग्रह. S गृण्ह for गण्ह. KST पस्सदि पत्थु वुड्ढ गृण्हेप्पिणु (T गृण्हविण्णु) द्रूपं (T द्रव्वं) for प स्सदि ... व्रतम्. 64. St. 156. जिम जिम for जिम तिम. KS तिक्खावि for तिक्खालेवि. KS छोल्लिज्जंत for छोल्लिज्जन्तु. KS गोलिहे मुहकंवल सारिसिम का वि लहंत for the second line. KST तदा यदि गौर्याः मुखकमलसदृशतां कामपि अलप्स्यति for the second half of the छाया. St. 157. M om. the stanza. KS चुण्णा होइस for चुण्णीहोइसइ. KS मुद्दी for मुद्धि. KS सास्यानलझालझलुक्किअउ; T विसानलजालझुलुक्किअ for सासाणलजालझलुक्कि-अउ; KTS चूडकं हस्ताभरणकं चूर्णीभवति स्वयं कपोले निहितं for the first line of the छाया. KS °दग्धं for °दग्धो. KS °संसिक्तं for °संसिक्तः.

[चूडकश्चूर्णीभविष्यति मुग्धे कपोले निहितः ।
श्वासानलज्वालादग्धो बाष्पसलिलसंसिक्तः ॥]
हिअइ खुडुक्कइ गोरडी गयणि धुडुक्कइ मेहु ।
वासारत्तपवासुअहं विसमा संकडु एहु ॥ १५८ ॥
[= हे. ३९५.४]

[हृदये खुट्शब्दं करोति गौरी गगने घडघडायते मेघः ।
वर्षारात्रिप्रवासिनां विषमं संकटमेतत् ॥]

अम्मि पओहर वज्जमा [२६] ॥
पुत्तें जाएं कवणु गुणु अवगुणु कवणु मुएण ।
जा बप्पीकी भुंहडी चम्पिज्जइ अवरेण ॥ १५९ ॥
[= हे. ३९५.३]

[पुत्रेण जातेन को गुणोऽवगुणः को मृतेन ।
यत्पैतृकी भूमिराक्रम्यतेऽपरेण ॥]
तं तेत्तिउँ जलु सायरहों सो तेवडु वित्थारु ।
तिसहें निवारणु पलु वि न वि पर धुट्ठुअइ असारु ॥ १६० ॥
[= हे. ३९५.७]

[तत्तावज्जलं सागरस्य स तावान्विस्तारः ।
तृषाया निवारणं पलमपि नैव परं शब्दायतेऽसारः ॥]

St. 158. M om. the stanza. KS हिअउ for हिअइ. KT कुडुक्कइ; S कुडुंतइ for खुडुक्कइ. KT खुडुक्कइ; S खुडुंकइ for घुडुक्कइ. KS हृदयं खुड्डत्करोति प्रिया गमने खुडुखुडायते मेघः for the first line of the छाया. KST give the stanza अम्मि पओहर and its छाया here, KS reading : पउहरा वज्जवज्ज निच्च जे संमुह ठंत्ति । मह कंतहो समरंगणि गअघड भंजिदु जंति. St. 159. M om. the stanza. KS मएण for मुएण. KST आवहि पिहु भुमिहडी (S भुविहडि; T भूहडी) for जा बप्पीकी भुंहडी. KS यावत्पितृभूराक्रम्यते परेण for यत्पैतृकी भूमिराक्रम्यते परेण. St. 160. M om. the stanza. KS तं ताउ; T तं तेउ for तं तेत्तिउ. KS निवारुणु for निवारणु. KS धुंधुवइ; T धुंधुडुवइ for धुट्ठुअइ. KS स तावद्विस्तारः for स तावान् विस्तारः. B धूमायते; KS धुंधुमायते असारं शब्दायते for शब्दायते असारः.

ह्रोः स्तोरुच्चारलाघवम् ॥ ६५ ॥

ह्रोः हकाररेफयोः स्तोः संयुक्तस्य उच्चारलाघवमपभ्रंशे प्रायो भवति । बहिणि अम्हारा कन्तु [११९] ॥ सिरु ल्हसिउं खंधस्सु [१६२] जह सो घडिदि प्रयावदी [२०] ॥ अन्नु जि प्राउँ [६३] ॥ चंचल्लु जीविदु ध्रुवु मरणु [४२] ॥ ६५ ॥

बिन्दोरन्ते ॥ ६६ ॥

अपभ्रंशे पदान्ते वर्तमानस्य बिन्दोरुच्चारलाघवं प्रायो भवति । अन्नु जु तुच्छउँ तहेँ धणहेँ [१२०] ॥ बलि किज्जउँ सुअणस्सु [१०७] ॥ दइवु घडावइ वणि तरुहुँ [११४] ॥ तरुहुँ वि वक्कलु [११३] ॥ खग्गविसाहिउँ जहिँ लहहुँ [१४८] ॥ तणहँ तइज्जी भंगि न वि [१०८] ॥ ६६ ॥

हलूस्यैङः ॥ ६७ ॥

अपभ्रंशे व्यञ्जनेषु स्थितस्यैङः एदोतोः उच्चारलाघवं प्रायो भवति । सुधेँ चिन्तिज्जइ माणु [२] ॥ तसु हउँ कलिजुगि दुल्लहहोँ [१०५] ॥

लिङ्गमतन्त्रम् ॥ ६८ ॥

अपभ्रंशे लिङ्गमतन्त्रं व्यभिचारि प्रायो भवति । गयकुम्भइँ दारन्तु [११६] ॥ अत्र पुंलिङ्गस्य नपुंसकत्वम् ॥

अब्भा लग्गा डुंगरिहिँ पहिउ रडन्तउ जाइ ।
जो एहा गिरिगिलणमणु सो किं धणहेँ घणाइ ॥ १६१ ॥
[= हे. ४४५.१]

---

65. S पआवइ for पयावदी. B om. अन्नु जि down to मरणु. 66. After धणहेँ KS add तु अक्खणइं. K देउ; ST देवु for दइवु. 67. S चिंतिज्जइ for चिन्तिज्जइ. 68. St. 161. KS अंता लग्गा डोंगरइ for अब्भा लग्गा डुंगरिहिँ. T वहिउ for पहिउ. KS रुदंतउ for रडन्तउ. KS जो (S जा) एम विहुगिलणमणु for जो एहा गिरिगिलणमणु. BKT घणाइ for घणाइ. KS य एवंविधं गि (S ग) लितुमनाः. KS धनायते गणयति; T धनायते रणायति.

[अभ्राणि लग्नानि पर्वतेषु पथिको रुदन्याति ।
य एवं गिरिगिलनमनाः स किं धन्याया घृणायते ॥]

अत्र अब्भा इति नपुंसकस्य पुंस्त्वम् ॥

पाइ विलग्गी अंत्रडी सिरु ल्हसिउं खन्धस्सु ।
तो वि कडारइ हत्थडउ बलि किज्जउँ कंतस्सु ॥ १६२ ॥
[= हे. ४४५.२]

[पादे विलग्नमन्त्रं शिरः स्रस्तं स्कन्धात् ।
तथापि कटारे हस्तः बलिं करोमि कान्तस्य ॥]

अत्र अंत्रडी इति नपुंसकस्य स्त्रीत्वम् ॥

सिरि चडिआ खन्ति फलइँ पुणु डालइँ मोडन्ति ।
तो वि महद्दुम सउणाहं अवराहिउ न करन्ति ॥ १६३ ॥
[= हे. ४४५.३]

[शिरसि आरूढा खादन्ति फलानि पुनः शाखा भञ्जन्ति ।
तथापि महाद्रुमाः शकुनीनामपराधितां न कुर्वन्ति ॥]

अत्र डालइं इत्यत्र स्त्रीलिङ्गस्य नपुंसकत्वम् ॥

शौरसेनीवत् ॥ ६९ ॥

अपभ्रंशे प्रायः शौरसेनीवत्कार्यं भवति ॥ ६९ ॥

St. 162. KS अंतडी for अंत्रडी. KS ल्हसिदु for ल्हसिउं. KS तोपि काडारइ हंदडउ for तो वि कडारइ हत्थडउ. KS विलग्नगात्रं for विलग्नमन्त्रं. KS ततोपि कडारः हस्ते for तथापि कटारे हस्तः. KS बलिः क्रिये कांतस्य for बलिं करोमि कान्तस्य. K अंत्रस्य for अंत्रडी इति. St. 163. KS सिद for सिरि. KST फलाइं for फलइं. K डाल; S डालउ for डालइँ. KST तो वि महद्दुमु सउणि (T सउण) अवराहिं न करंति for the second line of the stanza. KS शिरश्चटित्वा for शिरसि आरूढा. KS मोटयंति for भञ्जन्ति. KST ततोपि महद्रुमाः शकुनिनः अपराधिनो न कुर्वंति for the second line of the छाया.

सीसि सेहरु खणु विणिम्मविदु
खणु कंठि पालंबु किदु रदिएँ।
विहिदु खणु मुंडमालिअ जं पणएँण
तं नमहु कुसुमदामकोदंडु कामहोँ॥ १६४॥
[=हे. ४४६·१]

[शीर्षे शेखरः क्षणं विनिर्मापितः
क्षणं कण्ठे प्रालम्बः कृतो रत्या।
विहितं क्षणं मुण्डमालिका यत्प्रणयेन
तन्नमत कुसुमदामकोदण्डं कामस्य॥]

तद्व्यत्ययश्च ॥ ७० ॥

तदिति प्राकृतानां द्योतकम्। तेषां प्राकृतादिभाषालक्षणानां **प्रायो** व्यत्ययश्च भवति। यथा मागध्यां तिष्ठश्चिष्ठ इत्युक्तं, तथा प्राकृतपैशाचीशौरसेनीष्वपि भवति। चिष्ठदि॥ अपभ्रंशे रेफस्याधो लोपो वोक्तः, मागध्यामपि भवति। शदमाणुशमंशभालके कुंभशहश्रवशाहेँ शंचिदे, शतमानुषमांसभारकं कुम्भसहस्रं वसायाः संचितम्॥ इत्याद्यन्यदपि द्रष्टव्यम्। न केवलं भाषालक्षणानां तिङाद्यादेशानामपि व्यत्ययो भवति। ये वर्तमानकाले प्रसिद्धास्ते भूतेऽपि भवन्ति। अह पेच्छइ रहुतणओ, अथ प्रेक्षांचक्रे रघुतनयः॥ आभासइ रयणीअरे, आबभाषे रजनीचरान्। भूते प्रसिद्धा वर्तमानेऽपि भवन्ति। सोहीअ एस चण्डो, शृणोत्येष चण्डः॥ ७०॥

69. St. 164. B मसि for सीसि. K खाण विणिम्मदु; S खाणु विर्णमिदु for खणु विणिम्मविदु. S रथिए for रदिएँ. B मुंडमालिए for मुंडमालिअ. T नमह for नमहु. K विनिर्मितं for विनिर्मापितः. K मूर्धमालिका for मुण्डमालिका. 70. KS चिस्टदि for चिष्ठदि. KS °माशभा(S शा)-अणे for °मंशभालके. KS °सहस्सवशाइ शंचिदे. K om. the छाया of this passage. After रघुतनयः KS add इत्यर्थः. KS आहसइ रआणिअरे for आहासइ रअणीअरे. S adds इत्यर्थः. KS चंडा for चण्डो.

शेषं संस्कृतवत् ॥ ७१ ॥

शेषं यदत्र प्राकृतादिभाषालक्षणं द्वादशपदीनिबद्धं ततोऽन्यत् संस्कृतवदेव भवति। रामाअ पोप्फाणि, रामाय पुष्पाणि।

हेट्ठट्ठियसूरनिवारणाय छत्तं अहो इव वहन्ती।
जअइ ससेसा वराहसासदूरुक्खया पुहवी ॥

[= हे. ४४८·१]

[अधःस्थितसूर्यनिवारणाय छत्रमध इव वहन्ती।
जयति सशेषा वराहश्वासदूरोत्क्षिप्ता पृथिवी ॥]

अत्र चतुर्थ्या आदेशो नोक्तः, स च संस्कृतवदेव। उरसि सरसि सिरसि इत्यादयः सिद्धावस्थायाम् ॥ ७१ ॥

झाडगास्तु देश्याः सिद्धाः ७२ ॥

झाडादयः शब्दा देश्या देशविशेषव्यवहारादुपलभ्यमानाः सिद्धा निष्पन्नाः प्रसिद्धा वा वेदितव्याः। (१) झाडं लतादिगहनम् ॥ (२) गोप्पी (३) सप्पत्तिआ बाला ॥ (४) गोंडी (५) गांडी (६) गोंजी मञ्जरी। (७) एक्कंगं (८) ओहंसं (९) भद्दसिरी चन्दनम् ॥ (१०) आडोरो

---

71. T द्वादशपदनिबद्धं for द्वादशपदीनिबद्धं. K हेडट्ठिअ°; S हेदंढिअ° for हेट्टट्ठिअ°. ST om. from छत्तं अधो down to पृथिवी in the छाया. After संस्कृतवदेव K adds भवति. BKS तबसरसि सिरसि for उरसि सरसि सिरसि. 72. S जाडगास्तु for झाडगास्तु in The Sūtra. (1) HD. 3. 57. S रूडं; T झाडा for झाडं. S लतादिगमनं for °गहनम्. (2) Sk गोपी (?) MT गोंपी; S गोंपि for गोप्पी. (3) HD. (संपत्तिआ) 8.18. MS संपंतिआ. (4) HD. (गोंठी) 2.95. K गोंढि; S गोट्टि. (5) ? K गंडि; S गोंडि. (6) HD. 2.95. KS गोंजि. (7) HD. 1.144. BKT एकग्गं; M एकंगं. (8) HD. (ओहरिसं चन्दनघर्षणशिला) 1.169. BT ओहस्सं. (9) HD. 6.102. K भद्दसरि; MS भंदसिरी. (10) HD. (आणूवो ?) 1.64. S आदोरो.

(११) मोरत्तओ (१२) मोरो (१३) पाणाअओ श्वपचः ॥ (१४) डुल्लरअं भूषा कपर्दानाम्, कपर्दैः कृतमाभरणमित्यर्थः ॥ (१५) सोमार्ल (१६) सोल्लं मांसम् ॥ (१७) छट्टो मर्म ॥ (१८) भोइणो भृतकः ॥ (१९) गोड्डं स्तनयोरुपरि रचितो वासोग्रन्थिः ॥ (२०) भावई गृहिणी ॥ (२१) दुक्खित्तो कम्पः ॥ (२२) परिहालो जलनिर्गमः ॥ (२३) पढं ग्रामसीमास्थानम् ॥ (२४) गोजा कलशी ॥ (२५) पडिपल्लिलो विहित-पूजः ॥ (२६) गन्धपिसाओ गान्धिकः ॥ (२७) ओहिअं अधोमुखम् ॥ (२८) असारा कदली ॥ (२९) करइल्लो शुष्कमहीजः ॥ (३०) वपझओ भारः ॥ (३१) दुप्परिअल्लं अशक्यम् ॥ (३२) वेड्डूणी (३३) पिच्छल्लं (३४) विदूदूणा (३५) सारोवहि (३६) सिणी

(11) HD. 6.140. MS मोरंतओ; T मोरीतओ. (12) HD. 6.140. BK मारो. (13) HD. 6.38. BKM पणाअओ; T पाणअओ. (14) HD. (उल्लरयं) 1.110. BKM डुल्लरअं. BT कपर्दे for कपर्दैः. (15) HD. 8.44. (16) HD. 8.44. (17) HD. (वट्टा) 7.31. ? K छट्टा चर्म; M छंटो मर्म; S छंडो वर्म; T पट्टो वर्त्म. (18) HD. (भुत्तूणो, भोत्तूणो) 6.106. B छोइणो; M भोटुण; S भट्टुणो; T भोग्गरणो. KM भृतकं; T मृतकः.(19) HD. (गेंडुअं) 2.93. M मोंडं; S गोंदं; T गेंडं. Bp KMS वासोग्रंथिस्त्परि कुचयोः for स्तनयो...ग्रन्थिः. (20) HD. (भावइआ धार्मिकगृहिणी) 6.104. M भारई; T_1 गएई; T_2 गवाई. (21) ? K दुक्खिते; MS दुःखिते; T उक्खित्ते कंपा (22) HD. 6.29. T परिहारो. (23) ? T पठमं. (24) HD.(गोआ) 2.89. T गोणा. (25) HD. (पडिएल्लिओ ?) 6.32. T पडिपड्रिरो. (26) HD. 2.87. T गंधविसाओ. BM ग्रान्थिकः; K गन्धिकः for गान्धिकः. (27) HD. (ओहुरं ?) 1.157. KS ओखिअं; T ओसिअं. (28) HD. 1.12. (29) HD. 2.17. S करइल्लि. (30) ? B केज्झओ. Bp वपझओ; M व...पज्झओ. (31) HD. 5.55. BKMS उप्पारिअल्लं. (32) HD. (वेलूणा-वेलणयं इति केचित्) 7.65. B वेड्रणा; T वेडुणि. (33) HD. (पिच्छिल्ली) 6.74. B om. the word and wrongly gives पिच्छिलः as the meaning of वेड्डूणी; M पिच्छलं; T विच्छिलं. (34) HD. 7.65. B om. and wrongly reads पन्थाः; K वंधा; M पंथा; T विधा. (35) ? B रासारोवहो; T सिरोवहा. (36) ? KMS सिणि.

(३७) वेलूरा (३८) मंतक्खरं लज्जा ॥ (३९) कोण्णाअं म्लानम् ॥ (४०) खन्दजी स्थूलेन्धनवह्निः ॥ (४१) ऊसाअत्तो खेदेन शिथिलः ॥ (४२) उत्ताणफलं एरण्डः॥ (४३) चदुरूढो (४४) हालो शातवाहनः॥ (४५) पउलिअं शूलप्रोतं मांसम् ॥ (४६) माडा समकालम् ॥ (४७) खडरिअं कलुषम् ॥ (४८) बहुराणो असिधारा ॥ (४९) बव्वाडो दक्षिणो हस्तः ॥ (५०) खव्वणो दक्षः ॥ (५१) खड्डं (५२) वेडो (५३) बोड्डरं श्मश्रु ॥ (५४) उइत्तणं निवसनम् ॥ (५५) सअगहं झटिति ॥ (५६) खल्लिरी (५७) खल्लिरिआ संकेतः॥ (५८) रद्धी (५९) वड्डअं प्रधानम् ॥ (६०) गअणरई मेघः ॥ (६१) तिंगच्छी (६२) तिंगआ पुष्परजः ॥ (६३) तंडं शिरोर्हानम् ॥ (६४) पादुग्गो सभ्यः ॥ (६५) तिविडी सूची ॥ (६६) पत्तलं तीक्ष्णम् ॥ (६७) कूरं भक्तम् ॥

---

(37) HD.(वेलूणा as under 32 above) 7.65. T वेड्डरा. (38) HD. (मंतक्खं) 6.141. B मंतसखरं; KM मंततखरं; S मतंतखरं. (39) ? M कोंणाअं; T कोण्णायं. B मानः;KM मानं for म्लानम. (40) HD. (खंदग्गी) 2.70. S खंदजि; T खमयगिग. (41) HD. (ऊसाअंतो) 1.141. BK दुक्खा-अंतो; MS दुक्खाअंत. (42) HD. (उत्ताणपत्तयं) 1 120. T उत्ताणवत्ती. (43) HD. (चउरंचिंधो) 3.7. B चउरइडो;M चउरइढो. (44) HD. 8.66. (45) from पउलइ पचति; HD 6.29. T चउलिअ. (46) ? M पाडा; S माढा; T अमिअं. (47) HD. (खरडिअं रूक्षम) 2.79. T खउरअं. (48) HD. (बहुराणा) 6.91. (49) HD. 6.89 B बप्पोट्टेण; KS पप्पोण; T बप्पोट्टेट. (50) HD. (खवो, खव्वो वामकर) 2.77. S खद्दण्णो. (51) HD. 2.66 S ग्वडं; T कड्डो. (52) HD. (बेड्डा) 6.95. (53) HD. 6.95. B बोद्दरं; M वोंदरं; T बोरं. (54) HD. (उइंतणं) 1.103. M उइत्तणं; T ओअत्तणं. (55) HD. (सयराहं) 8.11. M सहराहं. (56) HD. 2.70. T खल्लरी. (57) HD. 2.70. B खिल्लिरिआ; M खिलिरीआ; T खल्लरीआ.(58) HD. 7.2. BK रज्जी; M रंजी; S रंजि, T रड्डी. (59) HD. 7.29. B वद्धअं; M अंधअं; T वडअं. (60) HD. 2.88. (61) HD. (तिगिच्छी) 5.12. M निमंकी; T तिगिच्छि. (62) HD. (तिगिआ) 5.12. T तीडिआ. (63) HD. 5.19. T तडं. (64) HD. (पाउग्गिओ) 6.42 M पादुंगो; T पाइग्गो. (65) HD. (पुटिका तिविडा सूचीति केचित्) 5.12. M तिविई. (66) HD. 6.14. (67) HD. 2 43.

(६८) गोइं (६९) चिक्खिल्लं (७०) कच्छरं (७१) महिइं (७२) बहलं (७३) रेणं (७४) पणओ (७५) डंडरिआ (७६) डंडा (७७) दोहणी पङ्कः, कर्दम इत्यर्थः ।। (७८) छिविओ (७९) छोहो (८०) पगेज्झो (८१) विज्झुडो चयः, समूह इत्यर्थः ।। (८२) निअत्थं परिहितं वस्त्रम् ।। (८३) निइरिआ भाद्रपदसितदशम्यां कश्चिदुत्सवविशेषः ।। (८४) खोड्डी (८५) तालफली दासी ।। (८६) छिच्छिणरमणं (८७) ओलुकी (८८) हद्धिणं चक्षुःस्थगगनक्रीडा ।। (८९) पुंसुलं विसंवादः ।। (९०) अवअण्हं उलूखलम् ।। (९१) सराहओ (९२) किक्किडी सर्पः ।। (९३) सइलंतं (९४) सइदिट्ठं मनोरथेनैव संघटना ।। (९५) ओसा

---

(68) HD. (गेइं) 2.104. M गोंडं; T गेड्डी. (69) HD. (चिक्खल्लो) 3.11. MS चिक्खिलं; T चिक्खिल्ली (70) HD. (कच्छरो) 2.2. BK कच्चरो; M कच्वरं; T कच्छरी. (71) HD. (महेड्डो) 6.119. B महिइं; T महेप्पी. (72) HD. 6.89 B बलाइं; KM बलइं; T बहुली. (73) HD. (रेणी) 7.9. T रेओ. (74) HD. 6.7. (75) HD. (डंडरिओ) 4.15. B उड्डरिआ; T ढड्डरीआ T. (76) HD. (डंढो) 4.16. B डड्डाः M दंडा; T डड्डा. (77) HD. 5.48. KM कर्दमपर्यायः for कर्दम इत्यर्थः.(78) HD (छिवओ) 3.36. BK विच्छिओ;M विछिओ.(79) HD. 3.39. T छोओ. (80) HD. (पगेज्जो) 6.15. M पगेज्झो. (81) HD. (विच्छड्डो) 7.32. B विज्झडा; M विझंडो; T विच्चुसो वधः (?) समूह इत्यर्थः. (82) HD. 4.31. B णिअड्डी स्नानम्; HD. 4.26. णिअडी (Sk निकृतिः) दम्भः; KS निअत्थि; M निअई. (83) HD. 4.45. BK नड्डरिआ; MS नंडुरिआ; T नेस्सुरीआ. (84) HD. (खोड्डी) 2.77. BK सोड्डी; M सोंडी;T खोड्ड. (85) HD. (तालप्फली) 5 11. BK ताणफली; T, तालपाली. (86) HD. छिछ्छटरमणं 3.30. B चिच्छिणरमणं; M चिछिणरमणं; T शिच्छरणमणी. (87) HD. (ओलुका छक्षरमणं, नष्ट्वा यत्र शिशवः क्रीडन्ति) 1.153. B ओलुको; T उलुकी. (88) HD. (गंदीणी) 2.83. B हविणं; T गंधीणी. (89) ? M पुंसलं; T ममुलं. (90) HD. (अवअण्णो) 1.26. S अवहंणं. (91) HD. 8.12. S सराहवो. (92) HD. (किक्किडो) 2.32. K किक्कडी; S किंकडी; T किकडी. (93) HD. (सइलंभ) 8.18. B सइलत्तं; T सिउलीही. (94) HD. 8.91. BT सइदइं; KM सइदंडं; S सइरंडं. (95) HD. 1.164. T ओघा.

(९६) ओ ग्गि वो (९७) सि ण्हा नीहारः ।। (९८) णि अं स णं परिधानम् ।। (९९) झु त्ति स्रोतः ।। (१००) सि ट्टा (१०१) सि ह डो सुप्तनासिकानादः।। (१०२) णे व च्छ णं (१०३) णि व च्छ णं अवतारणम् ।। (१०४) अ ल्ल ओ कृतपरिचयः ।। (१०५) अ डा (१०६) स डा प्रलम्बाः केशाः ।। (१०७) घ ग्घ त्थ णं खेदः ।। (१०८) चं द व डा आ अर्धप्रावृतदेहा ।। (१०९) त ल प्फ लं शालिः ।। (११०) त रि डी अनुष्णो वायुः ।। (१११) वे प्पो (११२) सं पु ओ पिशाचाक्रान्तः ।। (११३) की ला (११४) कु कु ला (११५) अ द्ध घ र णी (११६) ब हु धा रि णी नववधूः ।। (११७) व त्ती (११८) व ई (११९) वे ला मर्यादा ।। (१२०) णि ग्घ ट्टो कौशलोपेतः ।। (१२१) व ज्जा (१२२) प ज्जा अधिकारः ।। (१२३) झ डी

(96) HD. (ओग्गीओ) 1.149. S ओग्गिओ; T ओजीहा. (97) HD. 8.53. K सिणा; (98) HD. 4.38. (99) HD. 3.38. M झंति. HD. छेदः for स्रोतः. (100) HD. (सिढा) 8.29. M सिटा; T सिण्णा. (101) HD. (सिबाडी ?) 8.29 B सिहिडो, T संवाडो. (102) HD. 4.40. KS दिणवंछणं; M दिवंछणं; (103) HD. 4 40. KS णिबनंछणं; M णिवंछणं. (104) HD. 1.12. B लंबओ. (105) ? T सअडा. (106) HD. (सढा) 8.46. B प्रलम्बकेशा; S प्रलंबकेशः. (107) HD. (घुग्घुच्छगयं) 2.110. B घाघवगं; M घंघंथगं; T घत्थगं. M खेदरवः for खेदः. (108) HD. 3.7. B वडुवड्डाआ; KM वडुवडाआ; S वंडवडाआ; T छड्वटाआ. Cf. वटबटीत in Marathi. (109) HD. (तलप्फलो) 5.7. KMS तलफलं; T तरच्छलं. (110) HD. (तिरिड्डी) 5.12. T तारिडी. HD. उष्णवातः for अनुष्णो वायुः. (111) HD. 7.74. M वेंपो; T वेप्फा. (112) HD. (संपुअ) 8.30.(113) HD. 2.33. BK MS किला. (114) HD. 2.33. BKMS कुलकुला (कुक्कुला ?) (115) ? B अद्धरणा; M अंधरणा; T हत्थत्थरणी. (116) HD. 7.50. T बहुधारणी. (117) HD. 7.31. M वंत्ती; T वत्तं. (118) Sk वृतिः. T वइ. (119) Sk. T वेढा. (120) HD. (णिग्घट्टो) 4.34 S णिग्घंटो; T णिग्घट्टो. (121) HD. 7. 32. KS पज्जा; M पंजा; T वजा. (122) HD.6.1. KS वंजा; M वंजा; T वज्जा. (123) HD. (निरन्तरवृष्टि; or झाडी ?) 3.53 KS जडी; T जालि.

(१२४) झल्लरी गुल्मः ॥ (१२५) मुकुंडी (१२६) मुचमुंडो जूटः ॥ (१२७) णिक्कसरिओ गलितसारः ॥ (१२८) झंटिलिआ चंक्रमणम् ॥ (१२९) संखोडी व्यतिकरः ॥ (१३०) सिलिंपो (१३१) चिल्लो (१३२) चुल्लो (१३३) चेडो (१३४) लिक्को (१३५) डहरो बालः ॥ (१३६) हणं दूरम् ॥ (१३७) विड्डिरिआ (१३८) तुंगी रात्रिः ॥ (१३९) कुहिणं कूर्परम् ॥ (१४०) विआलो (१४१) वेद्ध (१४२) दुट्ठहणो (१४३) लम्मिक्को (१४४) कमलो (१४५) कुविलो (१४६) णिरिक्को (१४७) ओच्छल्लो (१४८) कुसुमालो दस्युः, चोर इत्यर्थः ॥ (१४९) अहेल्लो ईश्वरः ॥ (१५०) धणी पर्याप्तिः गुप्तिर्वा ॥ (१५१) कंकअसुकओ अल्पसुकृतलभ्यः ॥ (१५२) पझामुरो प्रवयाः, वृद्ध इत्यर्थः ॥

---

(124) ? (125) HD. (मुक्कुंडी) 6.117. T मुकुंडी. (126) HD. मुक्कुचडो or मुग्घुचडो राशिः?) 6.136. B मुचुमुत्तो; KS मुचुमुंहो; M मुचुमुल्लो; T मुकिमुंडो. BK कूटः for जूटः (127) HD. (णिक्खसरिओ) 4.41. T णिक्कसिरंओ. (128) HD. (झंटलिआ) 3.55. BK झटिलिआ; S झंडलिआ. (129) HD. (संघोडी) 8.8. BK सुखोडी. (130) HD. (सिलिंबो) 8.30. BK सिलिप्पो; T सलिमचो. (131) HD. 3.10. (132) HD. 3.22. T om. चुल्लो. (133) HD. 3.10. BM जेडो. (134) HD. 7.22. BST लिक्को. (135) HD. 4.8. B जालः; KS चाला; MS जाला. (136) HD. 8.59. BKMS णहं for हणं. (137) HD. (विड्डिरिल्ली) 7.67. B विट्टिरिआ; M विंटिरिआ; T विप्पिरिआ. (138) HD. 5.14. T तुग्गी. (139) HD. (कुहिणी) 2.62. S कहिणं; T कुहीणं. (140) HD. 7. 90. (141) HD. 7.94. (142) Sk? B दुइहणो; M दुंठह...; T उच्चुहणो. (143) HD. (लंपिक्खो) 7.19. BKMS अम्मिक्को. (144) HD. (कल्मो) 2.20. (145) HD. (कुंभिलो) 2.66. BM कुबिलो; T कुविल्लो. (146) HD. (णिरक्को) 4.49. MS णिरिंक्को; T णिरंको. (147) HD. (उच्छट्टो or ओच्छट्टो) 1.101. B वच्छल्लो; M वंछलो; T ओच्चड्डो. (148) HD. 2.10. Bp. वैरी; K वैर for चोरः. (149) HD. (अहिल्लो) 1.10. B (अहल्लो); M अहिंली. (150) HD 5.62. T यणी. (151) HD. (जंकअसुकओ) 3.45. (152) ? MS पझामरो; T झामुरो.

(१५३) पुंडरिआ उत्कलिका ॥ (१५४) हत्थं शीघ्रम् ॥ (१५५) पिडिल्लिको क्रूरः ॥ (१५६) संचुल्लो पिशुनः ॥ (१५७) जोव्वणजोअं (१५८) जोव्वणिरं (१५९) जोव्वणणी जरा ॥ (१६०) पडिणिअंसणं निशि प्रावरणम् ॥ (१६१) पडिवेसो विक्षेपः ॥ (१६२) पडिक्किआ प्रतिकृतिः ॥ (१६३) पडुज्जइणी तरुणी ॥ (१६४) कुणिआ (१६५) कुच्छिणी (१६६) कंडदिणारो वृतिविवरम् ॥ (१६७) देवरिअं सुतजन्मनि तूर्यम्, पुत्रोत्सवे वाद्यमानं तूर्यमित्यर्थः ॥ (१६८) अक्खवाआ दिक् ॥ (१६९) मेक्खं पार्श्वक्षेत्राद्यम् ॥ (१७० पाहिआवडा ललना ॥ (१७१) पीडरई चौर्येण वधू:, चौर्येण स्वीकृता भार्येत्यर्थः ॥ (१७२) ओरल्ली गभीरदीर्घस्वः ॥ (१७३) पोअग्गो निर्भयः ॥ (१७४) उक्कटी (१७५) णेलच्छिआ

(153) HD. (पुरुपुरिआ) 6.55. ST पुंडरीआ. (154) HD. 8.39. B हर्द; T हर्थः. (155) ? K पिडिल्लिका; M पिडिल्लिका; S पडिल्लिका; T पडिल्लिरो. (156) HD. (संभुल्लो) 8.7. B सचुल्लो; T सिचिल्लो. (157) HD. (जोव्वणवेअं) 3.51. (158) HD. (जोव्वणणारं) 3.51. BT बोव्वणिणां. (159) HD. (जोव्वणोवयं ?) 3.51. B जोणिरं. B जारः for जरा. (160) HD. 6.36. B चिडिणिअंसणं; K पिडिणिअंसण. (161) HD. 6.21. KMS पडिवेसा. Bp विकोपः for विक्षेपः. (162) HD. (पडिक्कओ) प्रतिक्रिया) 6.19. KS पडिकिआ (163) HD (पडुजुवई) 6.31. S पडुज्जअणि;T वमुज्जयणी. (164)HD. .24. After कुणिआ BT add कुविआ; HD. does not record it. (165)HD. (कुच्छिल्ली) 2.24. K कुच्छिण्णि; S कुधिणि. (166)HD. (कंठदीणारो)2.24. B कडडिणारो; K कटदिणारो or कलदिणारो; S कडुछिणालो. B प्रतिविवरं; K प्रतिविपरं for वृतिविवरम्. (167) HD. (थेवरिअं) 5.29 K सुजन्मनि for सुतजन्मनि. (168) HD. (अक्खवाया) 1.35. M अंखवाआ; T अक्खपाआ. (169) ? B मिक्खं; M मेखं. (170) ? MS पाहिवाअडा लवना. (171) HD. 6.51. BKMS पिढरइ. (172) HD. 1.154. B आरल्ली; M आरंली. (173) HD. (पोअंडो) 6.61. M पोअंगो; T बोअंगो. (174) HD. (उक्कंदा) 1.87. M उंकटि. (175)HD. (णेलिच्छी) 4.44.BT णलच्छिआ;K णिलच्छिआ;M णिलंकिआ.

(१७६) डोक्को कूपतुला, निपानादेर्जलोन्नयनयन्त्रम् ॥ (१७७) काअंजी (१७८) काणड्डी (१७९) वक्करो परिहासः ॥ (१८०) खोडो धार्मिकः ॥ (१८१) उच्छलओ (१८२) पउद्दं (१८३) मेठिअं (१८४) उप्पद्दं (१८५) थेट्टो गृहम् ॥ (१८६) उलुहंतो (१८७) ढंको (१८८) वसतुंडो (१८९) बुक्कणो काकः ॥ (१९०) मामा (१९१) मामी मातुलभार्या ॥ (१९२) चंचुप्परं मिथ्या ॥ (१९३) चुक्को मुष्टिः ॥ (१९४) पुल्ली (१९५) अल्ली (१९६) चित्तओ व्याघ्रः ॥ (१९७) चडआणा (१९८) लुच्छी कुन्तलाः ॥ (१९९) गणसमो रतो गोष्ठ्याम् ॥ (२००) तित्ती सारः ॥ (२०१) डाली शाखा ॥ (२०२) ठाणो अहंकारः ॥ (२०३) णामुक्कसिअं कार्यम् ॥ (२०४) पेआलं

---

(176) HD. (डोओ) 4.11. or HD. (डुंघो दारुहस्तः) 4.11. from Telugu डोर्का. BM डोको; T डोक्का. KM वनादेर्जलानयनयंत्रं for निपानादे...यन्त्रम. (177) HD.(कायंदो) 2.28. B काअंबी (178) HD. (काणद्धो) 2.28. M काणंडी; T काणट्टो. (179) HD. (वक्करं) 6.89. MS वंकरो; T वक्कारो. (180) HD. 2.80. B खाडो; T खेसो. (181) HD. (उत्थल्लिअं) 1.107. M उच्छलवो; T ओत्थलओ. (182) HD. (पउद्दं) 6.4. KMS श्रदुदं (?) (183) ? T मेलिअं. (184) ? B अप्पदं; S उप्पित्थं; T पउत्थं. (185) ? KMS थजो (?); T थेट्टो. (186) HD. 1.109. B उलुहत्तो. (187) HD. (ढंको) 4.13. B डक्को; T ढंको. (188) HD. (वसभुद्धो) 7.49. B वसतुद्दो; T वसतुट्टो. (189) HD. 6.94. M बुंकणो; T पुक्कणो. (190) HD. 6.112. (191) HD. 6.112. (192) HD. (चंचप्परं) 3.4. M चचुंपरं; T_1 चपुप्परी; T_2 चपुप्परी.(193) HD. 3.14. B reads मुष्टिः after तित्ती (200). (194) HD. 6.79. BKMS पुत्ती. (195) HD. (अलिअल्ली) 1.56. or (अरिअल्ली) 1.24. (196) ? B चित्ती; M चिती. Cf. चित्ता in Marathi. ((197) HD. (चडो) 3.1. B चणअणा; T चंडआणा. (198) ? KS लुंचां; T लुप्पी. (199) HD. 2.86. B गणसमा; KS गणसबे. (200) HD. 5.11. KST तिति; M तंती. (201) HD. 4.9. T वाली. (202) HD. 4.5. B ठाणा. (203) HD. (णामोक्क°) 4.25. MS णामुक्क°. (204) HD. 6.57. S पेअलं.

(२०५) पिंजलं प्रमाणम् ।। (२०६) गहणी (२०७) गहेरो (२०८) मुहुलो बन्दी ।। (२०९) लाइल्लो बलीवर्दः ।। (२१०) मुंकुरुडो (२११) मुंगुरुडो (२१२) घुग्घुरुडो राशिः ।। (२१३) आवसणं (२१४) आअलणं रतिगृहम् ।। (२१५) उवसट्टो सारथिः ।। (२१६) उवसेरो रथार्हः ।। (२१७) उणिआ कृसरा ।। (२१८) अवरिज्जं (२१९) अहोरणं उत्तरीयम् ।। (२२०) अविरिक्कं (२२१) अजणिक्कं (२२२) दोडि (२२३) दोवेलि सायंभोजनम् ।। (२२४) अइरिप्पो कथाबन्धः ।। (२२५) पिंडरवो तैलादीनां विक्रेता वणिक् ।। (२२६) सुदुम्मणिआ रूपवती ।। (२२७) उम्मल्ला तृष्णा ।। (२२८) वेंडं सुरापिष्टम् ।। (२२९) चडिआसो आटोपः ।। (२३०) माला ज्योत्स्ना ।। (२३१) दरंदरो उल्लासः ।। (२३२) उव्वेलं कौशलम् ।।

---

(205) ? BT om. this word. M पेंजिलं. (206) HD. 2.84. T गमणी. (207) HD. (गहरी गृध्रः) 2.84. KS गेहरो (लो); M गेहेरो. (208) ? T मुहुओ. (209) HD. 7.19. B बइल्लो (HD. 6.91); T वाउल्लो. (210) HD. (मुक्कुरुडो) 6.136. S मुक्कुरुडो; T मुरुकुरुडो. (211) ? A variant of (210) above. (212) HD. (घुंघुरुडो) 2.109. M घंघरुडो राशिः पक्षी. (213) HD. (आलयणं) 1.66. T आवसणी. (214)HD.(आलयणं) 1.66. (215) ? M हुवसट्टो; T उपसग्गो. (216) HD. (उवसेरं रतियोग्यं ?) 1.104. M उरसेरा. (217) HD. (उण्हिआ) 1.88. (218) HD. (अवरिज्जो अद्वितीयः) 1.36. BM om. the word. (219) HD. 1.25. B om. the word. BT इत्तिरिअं; K उत्तारिअं for उत्तरीयम्. (220) HD.(अवरिक्को क्षणरहितः निरवसरः) 2.20. B अणिरिक्कं; S अवणिक्कं. (221) ? B अक्षणिकं. (222) ? B om. the word. (223) HD 5.50. B देवेली. (224) HD. (अइरिप्पो) 1.26. BT अइरिवो; K अइरिप्पा. (225) HD. (पेडइओ कणादिविक्रेता). 6.59. BT बडउओ. (226) HD. 8.40. B असदुम्मणिआ (सदुम्मणिएति शीलाङ्कः) (227) HD. 1.94. KMS उम्मल्लो पिंडं (2) सुरापिष्टं. (228) HD. (वेंडसुरा कलुषा सुरा) 7.78. BKMS पिंडं. (229) HD. (चडिआरो) 3 5. T विडिआसो. (230) HD. 6.128. M मालु. (231) HD. 5.37. S दरंकरो; T दरीकरो. (232) ? B उव्वलं; M रंवेलं; T उप्पोल्लं.

(२३३) ओसाओ पीडा, प्रहारेण जाता पीडेत्यर्थः ॥ (२३४) णिच्छुड्डो (२३५) णिग्घोरो निर्दयः ॥ (२३६) आरंतिओ मालाकारः ॥ (२३७) लासअविम्हओ (२३८) सिण्ठो (२३९) आलत्थओ केकी ॥ (२४०) उड्डो कूपादिखनकः ॥ (२४१) ऊसारो गर्तः (२४२) उवलंडंतो चूडावल्यम् ॥ (२४३) हिल्ला सिकताः ॥ (२४४) हिक्का (२४५) उप्पकिआ रजकी ॥ (२४६) हिंडोली रक्षणयन्त्रं केदारस्य ॥ (२४७) आलसो (२४८) अलिणो वृश्चिकः ॥ (२४९) आरिल्लो बन्धः ॥ (२५०) जमणं बालशिखा ॥ (२५१) मरट्टो गर्वः ॥ (२५२) किलिणी (२५३) कुहणी (२५४) साही (२५५) पाणद्दी (२५६) पत्तण्णी प्रतोली, रथ्येत्यर्थः ॥ (२५७) मलओ गिर्येकदेशः ॥ (२५८) उग्गालो (२५९) छिछोली तनुस्रोतः, सुस्वल्पजलस्रवणमित्यर्थः ॥ (२६०) कडं

---

(233) HD. (ओसाओ) 1.152. M आमालो. (234) HD. (णिच्छुडो) 4.37. B णिच्चड्डो; M णिच्चिडो; T णिच्चेडो. (235) HD. 4.37. T णिघोरो. (236) HD. (आरमिओ) 1.71. M आरानिओ; T आरयंतिओ. (237) HD. (लासयविहओ) 7.21. B सअविम्हओ; KS सहविहओ; M सहविम्हओ. (238) HD. (सिढो) 8.20. KM सिटो; T सिहो. (239) HD. (आलत्थो) 1.65. M आलंघओ. (240) HD. 1.85. M कूपादिकारकः for °खनकः. (241) HD. 1.140. BK इसारो. (242) HD. (उवलभत्ता or उवलमग्गा ?) 1.120. B उवलहुतो; M उवलड्डुत्तो; T उवलहंतो. (243) HD. (हिला or हिल्ला) 8.65. M हिला; T भिल्ला. (244) HD. 8.66. KS किक्का; M किंका (Cf. किकिअं धवलं in HD 2.31.). (245) HD. (उप्फुकिआ) 1.114. K उपाकिआ; M उंपाकिआ; T उप्पिकिआ. (246) HD. (हिंडोलं हिंडोलयं) 8.69. B हिड्डोली; T हिंडोला. HD. क्षेत्रे मृगनिषेधरवः, क्षेत्ररक्षणयन्त्रमिति कीचत्. (247) HD. (आलासो) 1.61. B आसलो. (248) HD. 1 11. B अलिणओ; K अल्लीणो or अल्लिणो; T आलीणो. (249) HD. 1.63. BK अरिल्लो. (250) HD. (जवणं) 3.41. (251) HD. 6.120. T मरंटो. (252) HD. (किलणा) 2 31. B किरिणी. (253) HD. (कुहिणी) 2.62. T कुहणं. (254) HD. 8.6. S साहि. (255) HD. (पाणद्धी) 6.39. B पाणल्ली; T वाणट्टा. (256) Sk. T वत्तणी. (257) HD. 6.144. S वलयो. (258) HD. (ओग्गालो) 1.151. Cf. ओघळ in Marathi. (259) HD. 3.27. B छिव्वोली. (260) ?

(२६१) पडोहर पश्चिमाङ्गणम् ॥ (२६२) सरिवओ (२६३) सरेवाओ हंसः ॥ (२६४) कुट्टमिओ महिषः (२६५) पहणी संमुखागतिनिरोधः ॥ (२६६) केआ केली ॥ (२६७) तित्ती (२६८) कील स्तोकम् ॥ (२६९) उक्कासारो भीरुः ॥ (२७०) भाउलं आषाढे कात्यायन्या उत्सवविशेषः ॥ (२७१) भग्गलअं अप्रियम् ॥ (२७२) कोत्थुअवत्थं (२७३) कोसलो (२७४) कणआ नीवी ॥ (२७५) छिहंडहिल्लो (२७६) आअं दधि ॥(२७७) हड्डवं कलहः ॥ (२७८) छवडी चर्म ॥ (२७९) कहोडो तरुणः ॥ (२८०) फेणवडो वरुणः ॥ (२८१) उअहारी दोहनकारी ॥ (२८२) खड्डंगो छाया ॥ (२८३) जोइओ व्याधः॥ (२८४) कोलंबं पिठरम् ॥ (२८५) वेखासो (२८६) वेखामओ विरूपः ॥ (२८७) सरली (२८८) अरलं चीरी ॥ (२८९) संगा

(261) HD. 6 22. HD. गृहपश्चिमाङ्गणम्. (262) HD. (सरेवओ) 8.48. B णरिवाओ. (263) HD. (सरेवओ) 8.48. (264) HD (कट्टमिओ) 2.15. S कुंटमिओ; T कुट्टिमिओ. Bp मूषकः for महिष. (265) HD. 6.5. T बहणी. HD. संमुखागतनिरोधः for °गतिनिरोधः, (266) HD. (केआ रज्जुः) 2.44. (267) HD. (तित्ती मारम्) 5.11. B तिती. (268) HD. 2.21. S किलं. (269) ? S उंक्कासारो; T पुक्कासरो. (270) HD. (भाउअं) 6.103. (271) HD. (भंमलं) 6.110. KS भंगलअं, T भहआलं. (272) HD. (कुत्थुहवत्थं) 2.38. S कोंथुहवत्थं. (273) HD. (कोसलं) 2.38. (274) ? (275) HD (सिहंडहिल्लो) 8.54. B छिहट्टहिल्लो; S छिहह्नहिल्लो; T छिनंडहिल्लो. (276) HD. (आअं दार्घम्) 1.73. BpT पूआ. (277) HD. (भंडणं) 6.101. S हुंडवं; T हुडवं. (278) HD. 3.25. (279) HD. (कहेडो) 2.13. (280) HD. (फेणवंधो) 6.85. BK पिणवडो; M पिणवढो; S पेणवडो. (281) HD. 1.108. (282) HD. (खड्डंग) 2.68. (283) HD. (जोडिओ) 3.49. B बोटओ; M बोइओ; T जोइर्वा. Bp व्याधिः for व्याधः. (284) HD. (कोलंबो) 2.47. (285) HD. (विक्खासो) 7.63. M वेक्खाओ; S वेभामो; T पेक्खासो. (286) Avariant of (285). BK तेम्खासओ; S नेखासवो. (287) HD. 8.2. (288) HD. 1.52, KMS अरला. (289) HD. 8.2. B सग्गा; K सग्गी, S संगि.

(२९०) संडी वल्का, प्रग्रह इत्यर्थः ।। (२९१) कराइणी (२९२) णिउत्तउ, शाल्मलिरित्यर्थः ।। (२९३) मोडी भगिनी ।। (२९४) कुंतो शुकः ।। (२९५) णिडो (२९६) विच्छुओ पिशाचः ।। (२९७) कउहं नित्यम् ।। (२९८) पसंडी कनकम् ।। (२९९) अलमंजुलो (३००) चुंचुमालिओ (३०१) मड्डो अलसः ।। (३०२) सिअणअं (३०३) कडसी पितृवनम्, श्मशानमित्यर्थः ।। (३०४) अवडओ (३०५) अडो आरामः ।। (३०६) वाडुंबी भूपाश्वस्य ।। (३०७) महुंकी (३०८) खिंखिणी (३०९) मुहंडी (३१०) मसआ (३११) बहुरा (३१२) सअली कोष्ट्री ।। (३१३) जाई (३१४) मच्छकवरं (३१५) मई (३१६) सबिसं (३१७) पच्चुच्छाहणं मदिरा, सुरेत्यर्थः ।। (३१८) पडिच्छिरो

---

(290) HD. 8.2. B सडी; S सिडि. B उल्का for वल्क. (291) HD. 2.18. BKS राइणी. (292) णिप्पत्तओ ? (293) ? (294) HD. 2.21. KS शकः for शुकः. (295) HD. 4.25. (296) ? KS विचुओ; M विल्लुआ. T विप्पुओ. (297) HD 2.5. B काहं; S कडहं. (298) HD. 6.10. B वसड्डी; M वसंडी; T वसंधि. (299) HD. 1.46. B अलुमज्जालो; M अलुमंजालो. (300) HD. (चुंचुमाली) 3.18. T चुच्चुमालिओ. (301) HD. (मट्टो) 6.112. BK मडो. (302) HD. (सीअणअं) 8.55. M सिअसअं; S सिअणिअं; T चिअणअं. (303) HD.2.6. T कांइ. (304) HD. 1.20, 53. B अपडओ; T अवडि. (305) Sk अवटः? T अडो. (306) HD. (वाडुच्ची) 6.39.BK वाडुब्बी; T वाडुहही. (307) HD. 6.101. BK हलकी; MS हलुंकी; T हलुंजं. Cf. भालू in Marathi. (308) HD. 2.74. B कुविक्खिणी; M कुविंखिणी; T खिखणं. (309) HD. (मुहंडिआ) 6.101. B चुहड्डी; M चुहंडी; T हुहंसं. (310) HD. (मसुआ) 6.101. T हसआ. (311) HD. (बहुराबा) 6.91. T_1 पुहुना; T_2 पुहुरा. (312) सिआली ? Sk शृगाली. B सलरी; S सललि; T सलली. (313) HD. 3.45. B अई; KS आइं. (314) ? T मत्तक्खरी. (315) HD 6.113. S दुई; T मइ. (316) HD. (सविसं) 8.4. S सखिसं; T सळिसं. (317) HD. (पच्चुच्छुहणी) 6.35. B पच्चुहाहणं; K पच्चुत्थाहणं; M पंचुठाहणं; S पच्चुच्छाहणं; T पच्चुच्चुहणं. (318) HD. (पडित्थिरो) 6.20. B पडिच्छको; M पडिछिको.

(३१९) सच्छिओ सदृशः ॥ (३२०) तारत्तरो मुहूर्तः ॥ (३२१) पडुाली (३२२) डेडुरी क्रीडा ॥ (३२३) पंडारो गोपः ॥ (३२४) पेंडलो रसः ॥ (३२५) पसवडकं अवलोकः ॥ (३२६) बोल्लो (३२७) हलबोलो (३२८) रोलो (३२९) वअलो (३३०) मलहलो (३३१) मअलं कलकलः ॥ दैवादिपाठात् द्वित्वे (३३२) हल्लबोलो ॥ (३३३) एक्कघरिल्लो देवरः ॥ (३३४) ओसिक्खओ गतिविघातः ॥ (३३५) खंडीधारा अत्युष्णोदकधारा ॥ (३३६) पडंसुगा (३३७) पत्थरं (३३८) वलिअं (३३९) विहलो ज्या, मौर्वीत्यर्थः ॥ (३४०) पाणाओ पाणिद्वयाघातः ॥ (३४१) णिहसो वल्मीकम् ॥ (३४२) पड्डलो अधनः ॥ (३४३) वलविओ (३४४) वडलसरो जपवान् ॥ (३४५) पिंजुरुओ मेरुण्डः ॥ (३४६) णिहलं कूलम् ॥ (३४७) अलिअल्लिका कस्तूरी ॥ (३४८) अणरामअं अरतिः ॥ (३४९) छिविअं

---

(319) HD. (सच्छहो) 8.9. MS संछिओ. (320) HD. 5.10. MS तारंतरो. (321) ? KMS पडंहालां; T पोड्डाली. (322) ? KS डेडुवी; T गांडुई. (323) HD. (पंडारो) 6.58. B पडारा; T पेड्डारो. (324) HD. 6.58. B पेड्डलो; K पिडलो. (325) HD 6.30. K पसवदंकं; M पसवडंकं; T पसवंकं. (326) HD. (बोलो) 8.90. B जोल्लो; M जोलो. (327) HD. 8.64. BT हलिबोलो. (328) HD. 7.15. (329) HD. (वयलो) 7.84. B सोअलो; T पअलो, (330) HD. (मलहरो) 6.120. T महलहरो. (331) HD. (महलो) 6.142. T मयं. (332) HD 8.64. B हल्लिबोलो. (333) HD. 1.146. B एक्कपलिल्लो; K एक्कुरिल्लो; M एक्कघलिल्लो; T एक्कवरिल्लो. (334) HD. (ओसिक्खिअं) 1.173. (335) HD. (खंधीधारो) 2.72. B खड्डीधारा; T खंधीधारा. (336) HD. (पडंसुआ) 6.14. B पड्डुगा; S पडंसुरा; T_1 चुडंसुआ; T_2 पुडंसुआ. (337) HD. (पत्थरं ऋजु) 6.10. M पंथरं; S पद्धरं; T पडवं. (338) HD. (वलिआ) 7.34 (339) ? (340) HD. (पाणालो) 6.40. B पाणालो. M प्राणिद्वया° for पाणिद्वया° (341) HD. 4.25. (342) HD. (पच्चलो असहनः?) 6.69. B पत्थत्थो; S पंढल्लो; T मिल्लो, (343) ? T वलिविओ, (344) ? B वलडसरो; T वलसरो. (345) HD. (पिंजरुडो) 6.50. B विज्जुरओ; M विंजुरओ; T विरुहो, BS तेरुंडः; K तरुंदः; T हेरुंडा. (346) HD. (णिहणं कुलं) 4.27 (347) HD. 1.56. B अलअल्लिका; T अलअल्ली. (348) HD. (अणरामओ) 1.45 (349) HD. 3.27. B छिवअं; M मिरिअं; S छिविलं.

(३५०) अंगुलिजं इक्षुशकलम्॥ (३५१) अणोलो दिनमुखम् ॥(३५२) अवअणिओ अन्यः॥(३५३) सढअं (३५४) गद्दहो (३५५) संफं कुमुदम्॥(३५६) गमरोट्टं (३५७) छुप्पलअं शेखरकम् ॥ (३५८) पिहुणं पुच्छम् ॥ (३५९) अंजणिआ (३६०) अंजणइसिआ तापिच्छम्॥ (३६१) करल्लं अवशुष्कम् ॥ (३६२) डंडसिओ ग्रामतरुः ॥ (३६३) पव्वंचलक्को अशक्तः॥ (३६४) उच्चंतो गाढः ॥ (३६५) गोरप्पडिआ (३६६) रंभडिआ (३६७) बम्हाणी गोधा ॥ (३६८) छाहो गगनम् ॥ (३६९) अणत्तं निर्माल्यम् ॥ (३७०) पत्थणं (३७१) करअडी स्थूलवस्त्रम् ॥ (३७२) अडउज्झिअं विपरीतरतम् ॥ (३७३) णज्झरं विमलम् ॥(३७४) अलिसारं(३७५)विउलं क्षीरम् ॥(३७६)चुञ्चुलिअं

---

(350) HD. (अंगलिअं) 1.28. B अंगालिअं; M अंजलिनं; T अगलिअं (351) HD. (अणोल्यं) 1.19. B अणोलो. (352) HD. 1.44. B अवणिओ; T अबअणिणओ. (353) HD. (सढयं) 8.3 KT सडअं. (354) HD. (गद्दहं) 2.43. KT गड्डहो; S गंढहो. (355) HD. 8.1. KST सफं. (356) ? MS गमरोटं; T अमरोट्टं. (357) HD. (चुप्पलो, चुंमलो शेखरः) 3.16. K छुचुंपुलअं; M छुंपुलअं; S चुंफुलअं. cf चुंमळ in Marathi (358) HD. (पेहुणं) 6.56. KS पिहुणा; T मिहुणे पिंछं. (359) HD. 1.37. KMS अंअणिआ. (360) HD. 1.37. S अंजअणसिआ तबंधं (?); T जणंसिआ. M कपियं for तापिञ्छम्. (361) HD. (करिल्लं ?) 2.10 or करइल्ली) 2.17. T रल्ली (HD. रल्ला प्रियंगुः 7.1). (362) HD.(ढंढसिओ)4.15. (363) HD. (पञ्चबलोक्को आसक्तः) 6.34. K पञ्वच्चलक्को; MS पंवंचलंको; T पव्वक्को. (364) HD. (उच्चत्थो दृढः) 1.97. M उंचंतो; T उच्चत्तो. (365) HD. (गोरंफिडी) 2.98. S गोरंपडिआ; T गोरप्पसिआ. (366) HD. (रप्फडिआ) 7.4. T_1 दुहसिआ; T_2 रंहसिआ; (367) HD. (बम्हणी) 6.90 B बम्हणी; S बम्हाहि. (368) HD. (छाही) 3.26. M गमनं; T गहने for गगनम्. (369) HD. (अणत्तं) 1.10. T_1 अणात्थं; T_2 अनात्तं. (370) ? M पथणं; T पत्थणी. (371) HD. (करयरी) 2.16. M करसडी; T करडी; (372) HD. 1.42. B अडडाग्घिअं; M अडउंधिअं; T अडअहजूझिअं. (373) HD. (णज्झरो) 4.19. T णज्झरी. (374) HD.(अलिआरं) 1.23. (375) ? B पिउलिं; T पिउणि. (376) HD. (चुंचुलि) 2.23. B चुचिलिअं; M चुचिलिअं; T चुलिट (?).

(३७७) चुंचुलिआरो चुलुकम्॥(३७८) मोरइं (३७९) मोरअं (३८०) अवंगो अपामार्गः॥ (३८१) पम्हुरं अपमृत्युः ॥ (३८२) कामकिसोरो गर्दभः ॥ (३८३) छाइल्लो (३८४) जुण्णो वैदग्ध्यवान् (३८५) छेओ इति तु विदग्धार्थकस्य छेकशब्दस्य भविष्यति॥ (३८६) मुलोसो कौसुम्भ-निवसनम् ॥ (३८७) अहिरिओ विच्छायः ॥ (३८८) फलसं कार्पासः ॥ (३८९) चुल्लोडओ ज्येष्ठः ॥ (३९०) थाओ (३९१) सुज्झुओ रजकः ॥ (३९२) आअरं (३९३) कडंतं (३९४) अवहडं मुसलम् ॥ (३९५) णिहुणं व्यापारः ॥ (३९६) भित्तं (३९७) भित्तरं गृहद्वारम् ॥ (३९८) चक्कगहो मकरः ॥ (३९९) भंहलओ (४००) जंभलो (४०१) परिअडी मूर्खः ॥ (४०२) अक्को दूतः ॥ (४०३) कल्लो हीः ॥

---

(377) HD. (चुंचुलिपूरो) 2.18. M चुंचिलिआरो; T चुचुलिपूरो. (378) HD. (मउंदो) 6.118. K मोरंद; S मोरंडं T मेरमदं. (379) ? (380) HD. (आवंगो) 1.62, B अवंगो; K अवगगो; M अवगो; T आपंगो. (381) HD. 6.3. M पम्हुं; T वप्पुरी. (382) HD. 2.30. (383) HD. 3.35. T चिइल्लो. (384) HD. 3.47. B जुड्ढो. (385) Sk. छेकः. (386) HD. (मुलसं) 8.37. BK मुलोसो; T सुलेसो. (387) HD. (अहिरीओ) 1.27. (388) HD. (फलहीं) 6.82. (389) HD. 3.17. KS चुलोडओ; T चुल्लोलओ. (390) HD. 5.32. B ताओ; T थेओ. (391) HD. (सुज्झओ) 8.56. BKS मुघओ; S सुखओ; T सुज्झुओ.(392) HD. (आअरं उदूखलम्) 1,74. T आअरी. (393)HD. 2.56. BT कडत्तं (394) HD. 1.32. (395) HD.4 26. (396) HD. 6.110. BK हित्तं; M हिंवं; S हितं; T भित्ति. (397) HD. 1.105. B पित्तरं; KS हित्तरं; M हिनरं; T भित्तरी. (398) HD. (चक्कगहो) 6.23. T वज्झहाओ. (399) HD. (भंभलो) 6.110, B हंहलअं; KMT हंहलओ; S हहहल्वो. (400) HD. 3.41. BKM जंहलो; S जहहलो; T जिहलो. (401) HD. 6.73. S परिहडो. (402) HD. 1.6. S. अंको. (403) ?

(४०४) कण्णारामं अवतंसः ॥ (४०५) सरिवाओ आसारः ॥ (४०६) मादलिआ (४०७) सुव्विजा माता ॥ (४०८) सोअं स्वापः ॥ (४०९) सोआलो उपयाचितकममीष्टसिद्धये दत्तम्, ममास्मिन्मनोरथार्थे सति पूजादिकमिदं विधास्यामीत्युद्दिष्टार्थप्राप्तिपर्यन्तं यत्किंचिद् द्रविणादिकमन्यस्य हस्ते दत्तं तदित्यर्थः ॥ (४१०) अहिम्म अतिरिक्तम् ॥ (४११) वउवलओ विषरहितो भुजगः ॥ (४१२) सिंहलओ यन्त्रं वस्त्रादेर्धूपस्य ॥ (४१३) सोअणो मल्लः ॥ (४१४) सिंदूरिआ राज्यम् ॥ (४१५) सोवणं अन्तःपुरम् ॥ (४१६) असंगअं प्रावरणम् ॥ (४१७) उच्चंडं शौर्येण क्रियते यच्चरितम् ॥ (४१८) दंडवणं आज्यम् ॥ (४१९) उप्पिगरिआ हस्तोत्क्षेपः ॥ (४२०) भंगोठणं व्राणितम् ॥ (४२१) उप्पा मण्यादेर्मार्जनम् ॥ (४२२) उप्पुलपोलिअं त्वरा कौतुकेन ॥

---

(404) Sk कर्णारामम्. HD. (कण्णवालं) 2.23. KS कण्णा। रामं (२) अवतंसः; M हिकं राराम ?; T कण्णामामी अपतीसः (?). (405) HD. 8.12. K सिरिवाओ. T₁ कुसारः for आसारः.(406) HD. 6.131. T मातलिआ (407) HD. (सुव्विअा) 8.38. B सुविज्जा; T सुखिआ. (408) HD. 8.44. (409) HD. (सेआलुओ) 8.44. (410) ? S om. this word. (411) HD.(वइवलओ) 7.51, S om. this word.(412) HD.(सीहलयं) 8.34. KMS सिहइआ;T सिहहलओ. (413) HD. (सोवणो) 8.58.(414) HD. (सिंदुरयं) 8.54. B तिंदूरिआ; KMS सिदूरिआ; T मुंदरीआ. (415) HD. 8.58. BKS सोवण्ग. (416) HD. (असंगयं) 1.34. B असग्गअं; T असिग्गअं. (417) HD. (उच्चडं) 1.106. B उच्चडं; M उंवंडं; T₁ उच्चुडं; T₂ उच्चडुं. (418) ? B उवर्ण; K उत्थवणं; M डंडवणं; T उत्थवणी. (419) HD. (उप्पिगालिआ करोत्संगः) 1.118. M उपिंगरिआ; T उप्पग्गलिआ. (420) ? B भंगोउणं; T सिगोत्थणं. KMS प्रणीतं for व्राणितम्. (421) HD. (ओप्पा) 1.148. M उंपा. T मह्यादेर्मार्जनं for मण्यादे°. (422) HD. (उच्चुलउलिअं) 1.121. M उंपुलपोलिअं; T उप्पिलवेलिअं.

(४२३) अ हि ह र अं देवगृहम् ।। (४२४) सं वि ड्डा णा आभिजात्यम् ।। (४२५) अ गि ला (४२६) हे ला (४२७) उ व्व त्ता लं अविच्छिन्नस्वर-रोदनम् ।। (४२८) अ व स रि ओ विरहः ।। (४२९) उ प्पा ल ओ रणरण-कम् ।। (४३०) मा ला डाकिनी ।। (४३१) वि ड प्पो राहुः ।। (४३२) अ ब्भ पि सा ओ (४३३) ग ह क ल्लो लो इत्येतावभ्रपिशाचग्रहकल्लोलयोर्भवतः।। (४३४) उ त्ति रि वि डि अं उपर्युपरिस्थानम् ।। (४३५) स ण्णि अं (४३६) वि र ण्णि अं आर्द्रम् ।। (४३७) व ण प क्क सा व ओ शरभः ।। (४३८) वि च्छे ओ विलासः ।। (४३९) उ स्सा गावः ।। (४४०) ल सु अं तैलम् ।। (४४१) वा उ त्तो विटः ।। (४४२) उ प्पि णि रं शून्यम् ।। (४४३) दु ब्भो (४४४) द म दं डो भ्रमरः ।। (४४५) मु हि अं यन्मृषा क्रियते ।। (४४६) आ मे लो (४४७) आ अ ल्लो (४४८) आ लो लं केशबन्धनम् (४४९) वा ल प्पं पुच्छम् ।। (४५०) क इ ल व इ ल्लो स्वेच्छोत्थायी बलीवर्दः ।।(४५१) ढं ढ रं ईर्ष्याकलहः ।।(४५२) को च प्पं अलीकहितकरणम् ।। (४५३) पे ढं

---

(423) HD.(°हर) 1.57.(424)HD. (सत्तिअणा) 8.16. KMSसंविड्डाणा; T सत्तिपुण्णा. (425) HD. (=अवज्ञा) 1.17. K अग्गिला. (426) HD. (=वेगः) 8.71. (427) HD. (उव्वेत्तालं) 1.101. B उच्चत्तालं; S उच्चंतालं. (428) Sk अपसरः. T अवसिरिओ. (429) ? KS उप्पा हलओ (probably two words); T उप्पाहुलओ. (430) HD. (=ज्योत्स्ना) 6.128. (431) HD. 7.65.M पिउंपो;पिंडंपो. (432) Sk अभ्रपिशाचः. (433) Sk ग्रहकल्लोलः. (434) HD. (उत्तिरिविडी) 1.122. BK उक्करिविडिअं; S उक्कदिविडिअं; T उत्तिरीविडिअं. (435) HD. 8.5. (436) HD. (विरल्लिअं) 7.71. (437) HD. 7.52. BT पणपक्कसावओ; M चणपंकसावअं. (438) HD. 7.90. B पिच्छेओ; K विच्छाओ; S विच्छोओ. (439) Sk उस्रा. (440) HD. 7.18. KS अंसुअं. (441) HD. 7.88. K पिउत्तो; S विउंतो. (442) ? KS दुव्विण्णरं; T उप्पिणिरं. (443) HD. (धंगो ?) 5.57. BT उण्हो; S दुक्खो. (444) ? BT दयगेडो. (445) HD. 6.134. S महिअं. (446) HD. 1.62. (447) HD. (आमोडो ?) 1.62. BKST आअल्लो. (448) ?. (449) HD. 7.57. BK वालच्चं; S जालच्चं; T वलप्पं. (450) HD. 2.25. (451) HD. (ढंढरो) 4.16. S ढड्डरं; T ढंढरं. (452) HD. 2.48. B कोचप्पी; M कोच्चच्छं; T कोच्चाप्पि. B अलकहितकरणं for अलीक°. (453) HD. (A variant of पोट्ट) 6.60. M पेंढं.

(४५४) म ज्झि म गं डं उदरम् ।। (४५५) झ रं को तृणमनुष्यः ।। (४५६) खो ह त्तं आहतं पाणिभ्यां जलम् ।। (४५७) अ ट्ट लो अनपराधः ।। (४५८) उ र णि पशुः ।। (४५९) ख रु ण्णा विषमा भूः ।। (४६०) ख प्प रो (४६१) ख र डि ओ रूक्षः ।। (४६२) कुं भी (४६२ अ) पो ट्ट लि कं सुवर्णादिकमन्तर्निधाय बहिर्बद्धं कर्पटकखण्डमित्यर्थः ।। (४६३) ग ज्ज ण स द्दो मृगनिषेधरवः ।। (४६४) चु प्पो मेदुरः ।। (४६५) उ ज्झं अरण्यम् ।। (४६६) पा र म रो रक्षः ।। (४६७) उ त्ता लो (४६८) वा लि ओ (४६९) णा ओ (४७०) म ड्डु ल्लो (४७१) वि त्त ई (४७२) पू णो गर्वितः ।। (४७३) चु डु ली उल्का ।। (४७४) म ह ई पितृमन्दिरम् ।। (४७५) झं डु ली (४७६) झं ड ली (४७७) हि त्तं (४७८) मु र ई असती ।। (४७९) कु ई (४८०) डें डी बलाका ।। (४८१) णी सा रो (४८२) थ ल ओ मण्डपः ।। (४८३) प लं (४८४) म लो (४८५) णि वा ओ प्रस्वेदः ।।

(454) HD. 6.125. B मज्झिमडंडं, T मज्झडिमगंडि. (455) HD. 3.55. B झरक्को; T झारको. (456) Sk क्षोम ? S खोअंतं; T कोंधिगी (?). (457) ? Cf. अट्टल, extremely clever in Marathi. (458) HD. (उररी) 1.88. (459) Sk खर (?) (460) HD. 2.69. S खंपरो. (461) HD. (खरडिअं) 2.79. KT करडिओ. (462) HD. (कुंटी वस्त्रनिबद्धं द्रव्यम्.) 2.34. (462 A) पोट्टलं ? K कुंभेपोट्टलिकं; S कुंभिपोट्टलिकं; T कुंभिपोट्टलिकी. (463) HD. 2.88. S जंगणशंदो; T गणसद्दो. (464) HD. (= सस्नेहः?) 3.15. BK चुच्चो; M चुंचो; S चच्चो. (465) HD. (ओज्झं) 1.148. B उज्झु अरण्यं; M उंझं. (466) HD. (पारंपरो) 6.44. (467) HD. (उत्तप्पो ?) 1.131. B उत्तातो; T उत्तारो. (468) ? T किलिओ. (469) HD. 4.23. S णावो. (470) Sk मद ? B मड्डुल्लो. (471) HD. 7.91. B पित्तेई; T चित्तई. (472) ? from पूर्णः ? BKS यूणो; T सुणो. (473) HD. 3.15. B चुडूली; T चुडिलं. Cf चूड in Marathi. (474) HD. (महर्ण ?) 6.114. (475) HD. 3.61. (476) HD. 3.54. (477) ? KS हृतं; T भिगि ? (478) HD. 6.135. M डुरई; T मुररं. KM आसन्नं for असती. (479) ? (480) HD. (ढेंकी) 4.15. BK डोंडी; T ढेढ. (481) HD. 4.41. B णसारा; KS णिसारो. (482) HD. 5.25. B थलओ. (483) HD. 6.1. B पली; K फलं. (484) HD. 6.111. B मोलो; T मलोलो. (485) HD. 4.34. S णिवावो.

(४८६) मरो केशसंचयः ॥ (४८७) चारवाओ ग्रीष्मवातः ॥ (४८८) गिंडिली ऐक्षवं दलम् ॥ (४८९) इंदग्गिधूमं तुहिनम् ॥ (४९०) पाडुंकी (४९१) रोहिआ त्रणिशिबिका ॥ (४९२) रोरली कृष्णश्रावण-चतुर्दशी ॥ (४९३) भाअलो जात्यतुरगः ॥ (४९४) वेडिओ (४९५) वइओ मणिकारः ॥ (४९६) रोप्पलो (४९७) पारावरो वातायनम् ॥ (४९८) तलपत्तं योनिः वराङ्गम् ॥ (४९९) छिच्छअणो असोढा ॥ (५००) अणिअं मुखम् ॥ (५०१) दिरिआ (५०२) जीविअमई कामुकाकर्षिणी मृगी ॥ (५०३) धम्मअं 'धम्मअं पुरुषं दुर्गापुरो हत्वा-सृजो बली', दुर्गापुरतः पुरुषं हत्वा विधीयमानो रक्तबलिरित्यर्थः ॥ (५०४) मुग्गुओ (५०५) मुग्गुसो (५०६) वग्गोवओ नकुलः ॥

(486) HD. 4.1. B ठरआरो; S उमरो; T + आरो. (487) HD. 3.9. B चरवाओ. (488) HD. (गंडीरी) 2.82. B गिड्डिली; KS गिड्डिरी; T गेंडरी. Cf गंडेरी in Marathi. 489) HD. 1.80. B इदंगिलीधूमो; T इदंगिरीधूमी. (490) HD. (पाडुंकी) 6.3?. BKS पशडुंकी ; T पासुंकी. (491) HD. (रोडी त्रणिशिबिका) 7.15. B रोहिआउ. BKMST प्राणिशिबिका for त्रणि°. (492) ? B रोररी. (493) HD. 6.104. BKS हाअलो; T मायालो. (494) HD. 7.77. B वेढिओ; KS वेडओ; M वेडओ. (495) वेअडिओ ? HD. 7.77. (496) ? KS रोप्पालो (रो); M रोंपारो; T वोप्पचओ. (497) HD. 6.43. B वारावरो; T पारावारओ. (498) HD. (तलवत्तो) 5.21. T कलवत्तो. (499) HD. (छिक्कोअणो) 3.29. B छच्छअणो; M छिछअणो; T पिच्छअणो. KS आसोढा; M आणसोढा for असोढा. (500) HD. (अणिइं) 1.51. T अणंइं. T मुखलं for मुखम्. (501) ? B दिरिलेआ; M दिरिलआ; ST इरिआ. (502) HD. (जीवयमई) 3.46. M breaks off at जीविअ and hence variants from this manuscript are not noted. KS यामुगावर्षिणी (?) मृगी; HD. मृगाकर्षणहेतुर्व्याधमृगी for कामुकाकर्षिणी मृगी. (503) HD. 5.63. BT समर्य. HD. has: चोरा दुर्गापुरतो हत्वा पुरुषं तदङ्गरुधिरेण । गहने कुर्वन्ति बलिं धर्मार्थं धम्मअं तं तु. (504) HD. (मुंगुसो, मुग्गसो) 6.118. BT लुगुओ; KS गुग्गुओ. (505) HD. 6.118. B लग्गुसो; K गुग्गुसो; T लुग्गुसो. (506) HD. (वग्गोओ) 7.40. KS वग्गोपओ K बकुलः for नकुलः.

(५०७) दूसलं उद्वेगः ॥ (५०८) चप्फलं मिथ्यावचः ॥ (५०९) उज्जोगलं भटः ॥ (५१०) घग्घरं जघने वस्त्रविशेषः ॥ (५११) घणंवाहिओ इन्द्रः॥ (५१२) सेआलिआ दूर्वा ॥ (५१३) राडी (५१४) वग्घसिअं रणम् ॥ (५१५) मुंडी नीरंगी ॥ (५१६) अवकुम्माणिका (५१७) धमो विलासः ॥ (५१८) सिंधुवणओ हताशः ॥ (५१९) तोमरी लता ॥ (५२०) वक्कडं (५२१) वद्दलं मेघतिमिरम् ॥ (५२२) हरणं (५२३) महारअणं वस्त्रम् ॥ (५२४) आणक्को तिर्यक् ॥ (५२५) भंडो सुतासुतो दौहित्रः ॥ (५२६) णिआणिका (५२७) णिंदणिआ कुतृणलुञ्चनम्, क्षेत्रात् कुतृणापनयनमित्यर्थः॥ (५२८) छेलिआ अल्पपुष्पा स्रक् ॥ (५२९) अक्कोडो (५३०) बंकडो अजः छागः ॥ (५३१) कुल्हो शृगालः ॥ (५३२) सणिओ साक्षी ॥ (५३३) पडअसाइमा (५३४) पसाइमा पत्रपुटी शबरमूर्धनि ॥ (५३५) अंबडो निष्ठुरः ॥ (५३६) जवो (५३७) कालणो (५३८) तोलणो पुमान्॥

(507) HD. (दूसलो दुर्भगः) 5.43. B उसली. (508) HD. 3.20. B वप्फली; KS चवलं. (509) ? KS हठः for भटः. (510) HD. 2.107. B घाघरी; T घर्घरी. (511) HD. (घणवाही) 2.107. BT₁ घुणिवाओ; T₂ घणिवाहवो. (512) HD. (सेआली) 8.27. S सेअ-लिआ. (513) HD. 7.4. (514)? B वम्मडिअं; S वंगसिअं; T वग्वडीअं (!). (515) HD. 6.133. BT मुडी. After नीरंगी KS add अवगुंठनशीलः. (516) ? (517)? BT विशालः for विलासः. (518) HD. (सिंदुवणो अग्निः) 8.32. (519) HD. 5.17. BT तोमारी. (520) HD. 7.35. KS वक्कलं. (521) HD. 7. 35. BT वद्लं; S वंटलं. (522) ? B हेरणं. (523) ? KS महारणअं. (524) HD. (आणिक्कं तिर्यक्सुरतम्) 1.61. (525) HD. 1. 109. BKS हंडो. (526) HD. 4.35. B णिआणि. (527) HD. (णिंदिर्णी) 4.35. HD. कुतृणोद्धरणं for कुतृणलुञ्चनम्. (528) HD. (छेली) 3.31. (529) HD. 1.12. (530) ? BT om. Cf. बकरा and बकरी in Marathi. (531) HD. 2.34. BT कुल्लो. Cf कोल्हा in Marathi. (532) HD. 8.47. (533) पडसाडिआ ? BT पडअसाइआ; S पओअसाइमा. (534) HD. (पसाइआ) 6.2. (535) HD. 1.16. BT अंबरो. (536) Sk युवा ? B जपो. (537) HD. (कालओ धूर्तः) 2.28. B कालो. (538) HD. 5. 17. KS लोलणो.

(५३९) पलसु सेवा ।। (५४०) राअल्लो (५४१) रल्ला (५४२) राला प्रियंगवः ।। (५४३) वीलणी पिच्छिलम् ।। (५४४) खेआलुअं हासो हासे सति हसितमित्यर्थः ।। (५४५) धारा रणमुखम् ।। (५४६) गेड्डा यवः ।। (५४७) थक्को प्रसञ्जनम् ।। (५४८) अइराणी (५४९) धुंधुमारा (५५०) एराणी शक्रवल्लभा, इन्द्राणीत्यर्थः ।। (५५१) अवआरो लोकयात्रा ।। (५५२) गोविओ अल्पजल्पनः ।। (५५३) तामरो सुन्दरः ।। (५५४) गोत्तण्हाणं पित्रोर्जलाञ्जलिः ।। (५५५) खड्डिको (५५६) पोलिओ (५५७) सोरि सौनिकः ।। (५५८) पऊढं दीर्घमन्दिरम् ।। (५५९) सेआलो (५६०) कुंडिओ (५६१) सेट्ठी ग्रामेशः ।। (५६२) चिरिआ कुटी ।। (५६३) पुअई (५६४) पुइओ (५६५) पाणो (५६६) त्राणो चाण्डालः ।। (५६७) इक्कुसी नीलाब्जम्, नीलोत्पलमित्यर्थः ।। (५६८) थसलो

---

(539) HD. 6.3. B पलस्सेवा; S पुसु सेवा. (540) HD. (राअला) 7.1. K राअणो; S राअणा. (541) HD. 7.1. BT रल्लरा. (542) HD. 7.1. B राडा. (543) HD. (वीलणं) 7.73. B वीलणि; KS पालणं. T विच्छिलं for पिच्छिलम्. (544) HD. (खेआलू) नि:सहः, असहन इत्यन्ये) 2.77. BT. खेआणुअं. (545) HD. 5.59. BT सारो. (546) HD. (गेड्ड) 2.104. KS गोंडो दवा (?). (547) HD. (= अवसरः) 5.24. (548) HD. 1.58. (549) HD. 5.6. BT धुमारा; K ढुंधुमारी; S धुंधुमारी. (550) HD. 1.147. B एकेराणी. (551) HD. (अवयारो माघ्यामुत्सवविशेषः) 1.32. (552) HD. 2.97. KS अल्पो जन्मना for अल्पजल्पनः. (553) HD. (तामरं रम्यम्) 5.10. KS वामरो सुन्दरा. (554) HD. 2.93. B गोत्तण्हाणी. (555) HD. (खड्डिक्को) 2.70. KS खेड्डिको. (556) HD. 6.62. (557) HD. (सउरी शकुनिकः) 8.8. KS सूडी. (558) HD. 6.4. BT वऊढं; KS पदूढं. (559) HD. 8.58. (560) HD. 2.37. BT कुसिओ; KS कुड्डिओ. (561) HD. 8.42. K सेट्टी. (562) HD. (चिरया) 3.11. B चिरीअ; S जिलिआ. (563) ? KS ऊअई. (564) ? KS ऊइओ; T पुळओ. (565) HD. 6.38. (566) A variant of (565). B वाणो. (567) HD. (इक्कुसं) 1.79. K कइसी; S कइसं. (568) HD. (थसलो) 5.58.

(५६९) थासो (५७०) घसलं (५७१) धुरिअं पृथु ॥ (५७२) पच्चूहो (५७३) णेसरो सूर्यः ॥ (५७४) गोहो ग्राम्यजनाग्रणीः ॥ (५७५) अंगुत्थलं अंगुलीयकम् ॥ (५७६) अहद्दो स्नेहरहितः (५७७) वप्पिवअं (५७८) पडुवाअं क्षेत्रम् ॥ (५७९) अज्झोलिआ पुनः पुनर्या दुह्यते ॥ (५८०) खुड्डं (५८१) खुडिआ स्वल्पकं रतम् ॥ (५८२) चिरिक्का चार्मणं वारिभाण्डम् ॥ (५८३) डोबरुओ गुरुहारिकः ॥ (५८४) पच्चुअं दीर्घम् ॥ (५८५) पोइओ ज्योतिरिङ्गणः ॥ (५८६) मत्तली (५८७) मिलाओ (५८८) मड्डा (५८९) पिणाओ (५९०) दरमत्ता (५९१) अक्कसालो बलात्कारः ॥ (५९२) बलअणी वृतिः ॥ (५९३) पाडिग्गहो (५९४) पोरवग्गो विश्रामः ॥ (५९५) णंदणो (५९६) परिअंमओ कर्मकृत् ॥ (५९७) अवज्झसो (५९८) दोहासलं कटिः ॥ (५९९) पाडिअज्झो पतिगृहान्नेता पितृगृहं वधूम् ॥

---

(569) HD. (थसो) 5.25. KS. थाहो or थाहो. (570) HD 5.25. (571) HD. 5.62. BT धुरीअं. (572) HD. 6.5. B पच्चुहो. (573) HD. 4.44. S णिसरो. (574) HD. 2.89. (575) HD. 1.31. KS अंगुल्लि or अंगुत्थि. (576) HD. (अअंखो) 1.13. BT अअहथो. (577) HD. (वप्पिणो) 7.85. or HD. (वप्पाडियं) 7.48. KS बच्छिचयं; T विप्पिवअं. (578) HD. 6.26. BT बहवाअं; KS वंवलाअं. (579) HD. (अज्झोल्ली दुग्धदोह्या धेनुः, या पुनः पुनर्दुह्यते) 1.7. B अझोज्झलिओ; KS अज्झोलिओ पुनः पुनर्यद्दुह्यते. (580) HD. 2.74. (581) HD. (खुड्डिअं) 2.72. KS स्वल्पकं तहं for स्वल्पकं रतम्. (582) HD. 3.21. K रिरिहा; S गिरिहा. (583) ? KS टोब्बरुओ; T डेबवरुओ. (584) HD. (पच्चुहिअं ?) 6.25. B बप्पुअं. (585) HD. (पोइओ कान्दविकः, खद्योत इत्यन्ये) 6.63. B वोइओ. (586) HD. 6.113. (587) HD. (मिणायं) 6.113. (588) HD. 6.140. KS मुड्डू. (589) HD. 6.49. B पिणा (उओ अणु) ओ (?); KS विणाई. (590) HD. 5.37. (591) HD. (अक्कसाला) 1.58. K अंकयालो. (592) HD. 7.43. B बअलणी. (593) HD. (पाडिअग्गो) 6.44. BT पडिग्गहो KS वाडिग्गहो. (594) HD (पाडअग्गो) 6.44. (592) HD. 4.19. KS णंदण्णो. (596) ? BT xxx अओ. (597) HD. (अवज्झसं) 1.56. KS अवज्जुसो. (598) HD. 5.50. (599) HD. 6.43. KS पाडिअंझो.

(६००) छुत्ती रजस्वला ।। (६०१) तग्गं सूत्रम् ।। (६०२) कुंडं हव्यधमः ।। (६०३) हुलुविआ प्रसवपरा ।। (६०४) चिरओ कुल्या, अल्पा कृत्रिमा सरित् ।। (६०५) हेआलं अहिभोगाहस्तेन विनिवारणम् ।। (६०६) गहणं निर्जलस्थानम् ।। (६०७) वलुंकी कर्कटी ।। (६०८) कली शात्रवः ।। (६०९) अमलो ध्वस्ततेजाः ।। (६१०) ववडओ द्विजः, विप्रः ।। (६११) रोलो दरिद्रः ।। (६१२) बेआलं अन्धकारः ।। (६१३) हरं तृणम् ।। (६१४) वलुकं भीषणम् ।। (६१५) रिग्गो प्रवेशः ।। (६१६) वअलो वटः ।। (६१७) लठ्ठं स्पृहान्वितम् ।। (६१८) पइं अंशुकम् ।। (६१९) सेओ विनायकः ।। (६२०) लसअं विटपिक्षीरम् ।। (६२१) पडिहत्थो प्रतिक्रिया ।। (६२२) कारा रेखा ।। (६२३) सुई बुद्धिः ।। (६२४) काहिलो वत्सपालकः ।।

---

(600) HD. 3.58. BT धुत्ती. (601) HD. 5.1. KS वट्टं. (602) HD. 2.33. B गुट्टीहूआश्रमः (?). (603) HD. (हुलुव्वी) 8.71. B भुलवीआ. (604) HD. (चिरिचिरा or चिरिचिरा) 3.13. B विओ (?). (605) HD. 8.72. HD. सर्पशिरःसंज्ञेन हस्तेन निषेधः. (606) HD. 2.82. B गहणी. (607) ? KS वालुंकी कुज्झटी (?); T वलुंकी कर्कटी. Cf वाळूक in Marathi. (608) HD. 2.2. (609) ? K गअलो; S गअरो. (610) ? K om. विप्रः. (611) HD. (रोरो रङ्कः) 7.11. (612) HD. (वेआलो, Sk विकाल) 7.95. BT पेआलं. (613) Sk हरित्. B हरि. (614) ? B हलकं. (615) HD. 7.5. BT गिग्गो; K विग्गो. S प्रदेशः for प्रवेशः. Cf रीघ in Marathi. (616) HD. (वयडो) 7.35. Sk वट ? KS वआलो. (617) HD. 7.26. BT वलं स्पशान्वितम्. (618) Sk. KS चइं शुक्लं; T पइंसुकं. (619) HD. 8.42. K लेओ or लिओ- S लेवो. (620) HD. (लसकं तरुक्षीरं) 7.18. B रसीअं; S सलअं. K वटक्षीरं for विटपिक्षीरम. (621) HD. 6.19,28. (HD. वचनमिति सातवाहनः). (622) HD. 2.26. (623) HD. 8.36. (624) HD. 2.28. Words from 625 to 675 are omitted in B, but are found in KS and on the misplaced folio 138 in T₁ and folio 180 in T₂.

(६२५) मणिणाअहरो वार्धिः ॥ (६२६) पडीरो चोरसंहतिः ॥ (६२७) पेलवं मार्दवम् ॥ (६२८) हूमो लोहकारः ॥ (६२९) मुहत्थडी मुखेन पतनम् ॥ (६३०) कंठो सूकरः ॥ (६३१) माअली मृदुः ॥ (६३२) लिलो यज्ञः ॥ (६३३) कंठमल्लं यानपात्रम् ॥ (६३४) सुदारुणी चण्डाली ॥ (६३५) मरुलो भूतः ॥ (६३६) ओसत्थो परिरम्भणम् ॥ (६३७) पाडलं अब्जम् ॥ (६३८) परिआली भोजनभाण्डम् ॥ (६३९) आदओ आदर्शः ॥ (६४०) वासुली (६४१) संफाली पंक्तिः ॥ (६४२) गोच्चअं प्रतोदः ॥ (६४३) कोसिओ कुविन्दः ॥ (६४४) कंडपडवं तिरस्करिणी ॥ (६४५) अवऊढं व्यलीकम् ॥ (६४६) अंगवलिज्जं तनुचलनम् ॥ (६४७) णेव्वं तीव्रम् ॥ (६४८) पहम्मो देवखातम् ॥ (६४९) कंठिओ द्वाःस्थः ॥ (६५०) किंजुक्खो शिरीषः ॥

---

(625) HD. (मणिणायहरं समुद्रः) 6.128. (626) HD. 6.8. K पडिरो; S पडिलो; T वडीरो. (627) Sk. T वेलवं मातपं (?). (628) HD. 8.71. KS हूमो लेखकारः; T भूसो लोहकारः. (629) HD. 6.136. KS सुहत्थई; T सुहथंसं (?) (630) HD. 2.51. K जटा, S जटो. (631) HD. (माइली) 6.129. (632) HD. (लीलो) 7.23. (633) HD. 2.20. (HD. मृतप्रवहणं येन मृतकमुह्यते । सामान्येन यानपात्रमिति केचित्). KS कट्टमलं; T कणगमलं. (634) HD. (सुदारुणो) 8.39. KST सुदाइणी. (635) HD. 6.114. KS मरलो; T मरूळो. (636) ? T भूसंस्थो. (637) HD. (पाडलो) 6.76. (638) HD (परिअली) 6.12. K परिआलो; S परिआलि; T परीआली. (639) HD. (अद्दाओ) 1.14. T अंदओ. (640) HD. 7.55. KS पाडुली. (641) HD. 8.5. KS शेफाली; T संपाली. (642) HD. (गोच्चओ) 2.97. S गोंचअं; T गोप्पअं. (643) From Sk कोश or कोसो बस्त्रम्. After कुविन्दः T adds तन्तुवायः. (644) HD. (कंडपडवा) 2.25. T कीडवडवं. (645) HD. (अवगूढं) 1.20. KS अवदूढं; T_2 अवऊला. K वालिकं; T_2 व्यळीकं for व्यलीकम्. (646) HD. 1.42. (647) HD. (णिव्वं ककुदं व्याजः) 4.48. T नेप्पं. (648) HD. (पहम्मं) 6.11. K पहग्गो; S पहण्णं; T_1 पहमेमा. (649) HD. 2.15. KS कंडिओ; T कीरिओ. (650) HD. (किंजक्खो) 2.31 S किंजुको; T किंजुक्खा.

(६५१) तहल्ली अपसृतिः ॥ (६५२) हत्थरं साहाय्यम ॥ (६५३) गुप्पी इच्छा ॥ (६५४) गोंजलं ग्रैवेयम् ॥ (६५५) णढरी क्षुरिका ॥

(६५६) संकटम् आरंदरं ॥ (६५७) अग्निविशेषः पप्फाडो ॥ (६५८) बलं थोहं ॥ (६५९) गोमयखण्डं कउलं ॥ (६६०) गण्डः गंजं ॥ (६६१) प्रकामम् अणुअत्थं ॥ (६६२) वामकरः पड्डो (६६३) डब्बो (६६४) डिवओ ॥ (६६५) शशी अमअणिग्गमो ॥ (६६६) गृध्रः सखरो ॥ (६६७) सुवर्णकारः झरओ ॥ (६६८) पथिकः तिमिच्छाहो ॥ (६६९) प्रतिहतगमनं खवडिअं ॥ (६७०) आज्ञा मप्पा ॥ (६७१) निरन्तरं तित्तिरिओ ॥ (६७२) शूर्पादिजीर्णभाण्डं कडंतरं ॥ (६७३) यन्त्रवाहकः भूयो ॥ (६७४) दर्पोद्धुरः सराहो ॥ (६७५) निद्रालुः सोज्झिओ ॥ (६७६) पताका हुडुमा ॥ (६७७) पश्चात् मग्गो (६७८) ओरिल्लं ॥ (६७९) यः समुषितः एक्कसाहिल्लो ॥ (६८०) यत्रैकं पदमुत्क्षिप्य शिशुः क्रीडति हिंबिआ ॥

---

(651) HD (तहल्लिआ गोवाटः) 5.8. KS अपश्रुतिः for अपसृतिः. (652) HD. (हत्थल्ली) (हस्तत्रुसी ?) 8.61. T अर्थरी. (653) HD. (गुम्मी) 2.90. T गुर्पी. (654) From गुंजा ? T गोउजलं. (655) ? In the words that follow, the meaning in Sanskrit is given first and the Desi word comes next. (656) HD. 1.78. KS अंश्रंदरं ?. (657) HD. 6.9. KS पप्पंडो; T पप्फडो. (658) HD. 5.30. S डोहं; T दोहं. (659) HD. 2.7. S कटलं. (660) HD. (गंजो गल्लः) 2.81. T₁ गज्जं. (661) ? S अगुलद्धं; T अगुल्ली. (662) ? S पंडो; डावा in Marathi ? (663) HD. 4.6. T डप्पो. (664) ? KS दिवओ. (665) HD. 1.15. KS अमअणित्थमो. (666) ? S सकरो; T ससरो. (667) HD. 3.54. (668) HD. 5.13. K तिगिच्छाओ; S तिगिच्छादो. (669) HD 2.71. T₁ खवदअं. (670) ? (671) HD. (तित्तिरिअं स्नानार्द्रम्) 5.12. T तित्तिरिडी. (672) HD. 2.16. T कडत्तरं. (673) HD. 6.107. T₁ मूदओ; T₂ मूइओ. (674) HD. 8.5. (675) From स्वप्. B सोसिओ; T सोसीओ. (676) HD. (हुडुमो) 8.70. (677) HD. 6.111. (678) HD. (ओरिल्लो अचिरकालः) 1.155. (679) HD. 1.146. B एक्कसाहिल्लो; KS एक्कसाइओ. (680) HD. (हिंबिअं एकपदगमनक्रीडा) 8.68. KS हंबिडिआ.

(६८१) या वध्वा उपरि परिणीयते वहुहाडिणी ॥ (६८२) कुमारी चुंदिणी ॥ (६८३) घर्मः पिलुरी ॥ (६८४) यौवनोत्कटः अगंडिगोहो ॥ (६८५) सुरतं तनुडिछं ॥ (६८६) पतद्ग्रहः णिलापा (६८७) णिछंको ॥ (६८८) क्षेत्रजागरः छेत्तसोवणी ॥

(६८९) वप्पओ (६९०) वप्पीहो चातके कुमारे च ॥ (६९१) डक्खरो (६९२) सइसिलिप्पो यूनि तरुणे च ॥ (६९३) कहेडो (६९४) महालक्खो (६९५) वोद्दही (६९६) पुअंडो (६९७) पेंडओ (६९८) पुआई तरुणे ॥ (६९९) आमछअं (७००) बब्बरी धम्मिल्लरचनायाम् ॥ (७०१) सिंदीरं नूपुरे ॥ (७०२) उंडलं मञ्चे ॥ (७०३) वडुइओ (७०४) कुट्टारो चर्मकारे ॥ (७०५) चुट्टी (७०६) वासी शिखायाम् ॥ (७०७) कंपरं (७०८) कोत्थरं विज्ञाने ॥ (७०९) णिक्खो चोरे सुवर्णे च ॥

---

(681) HD 7.50. KS सुहुअइणी. (682) ? BT धुंदिणी. (683) HD. 6.79. BT विलरी; S पिल्लिरि. (684) HD. (अगंडिगेहो) 1.40. K अंगंडिमोहो; S अगंडिमोहो. (685) HD. 5.6. KS चौडिल्ली (?). (686) HD. (णिलंको).4.31.K णिलिप्पा. (687) HD. 4.31.(688)HD. (छेत्तसोवणयं) 3.32. B छेत्तशोपणी; KS छत्तसोवणं. In the next group some words have more than one sense. (689) HD. (वप्पीओ) 7.40. BT,सप्पओ; S वप्फओ. (690) HD.(बप्पीहो) 6.90.BT सप्पिओ. (691)? HD. (पडिक्खरो क्रूरः) 6.25. T, पडक्खरो. (692) HD. (सइसिलिबो स्कन्दः = कुमारः ?) 8.20. BT सइसिद्धिओ. (693) HD. 2.13. BT सहडो; KS कहोडे. (694) HD. 6.121. (695) HD. (वोद्रहो) 7.40. (696) HD. 6.53. BT दुहंडो; K फुअंडि; S घअंडि. (697) HD. 6.53. KS पेडओ. (698) HD. 6.80. (699) HD. (आमेलो ?) 1.62. T आमलकं. (700) HD. 6.90. K चंचरि; S चचरा काले. (701) HD. 8.10. BT सिंदीरी; KS सिंदिरं. (702) HD. 1.129. (703) HD. (वड्डइओ) 7.44. BT. वड्डओ; S वंडइओ (704) HD. (कुट्टाओ) 2.37. BT कुठारो; K कुंटारो.(705) HD. (चोट्टी) 3.1. B चुर्लु;KS चुल्ली. (706) HD. (पासी) 6.37. (707) HD. (कंचरो) 2.13. KS कचरं. (708) HD. 2.13. BT कोडुरी; KS कोथुरं. (709) HD. 4.45. B जारे; KS पौरे for चोरे.

(७१०) पडिओ बन्दिनि आचार्ये च।।(७११) कमढो दधिकलशीपिठरयोः।। (७१२) अवडुअं उलूखलविसंस्थुलयोः ।। (७१३) गोला गोनद्योः ।। (७१४) अक्खणवेलं निधुवने प्रदोषे च ।। (७१५) णिज्जाओ उपकारे पुष्पप्रकारे च ।। (७१६) काहल्ली व्ययकरणे भ्राष्ट्रे च ।। (७१७) करंडो शार्दूलवायसयोः ।। (७१८) एक्कमुहो निर्धर्माधनयोः ।। (७१९) अंतल्ली उदरे ऊर्मिमध्ये च ।। (७२०) उअआरो ग्रामे संघे च ।। (७२१) महल्लो मुखरे राशौ विस्तीर्णे च ।। (७२२) कव्वालं कर्मस्थाने वेश्मनि च ।। (७२३) वेल्लवं विलासे लतायां च ।। (७२४) आअड्डिआ परायत्तायां नववध्वां च ।। (७२५) सक्कप्पं आर्द्रे अल्पे चापे प्रचुरे च ।। (७२६) करोडो काके नालिकेरे वृषे च ।। (७२७) रोहं (७२८) रोडी इच्छामत्योः ।। (७२९) कालिबअं शरीराम्बुदयोः ।। (७३०) केंजू रज्ज्वामसत्यां कन्दे च ।। (७३१) णिआरं रिपौ ऋजौ प्रकटे च ।। (७३२) कुरुलो (७३३) कुरुढो द्वावप्यनघे निपुणे च ।।

---

(710) ? (पडिअज्झओ ? HD. 6.31). (711) HD. 2.55. B कमठो; KS कमलो. After this word KS add विरेडो. (712)HD. (अवड्डुओ) 1.26. (713)HD. 2.104. (714) HD. 1.59. Bअक्खणवेली. (715)HD. 4.34.B णिज्जओ;KS णिज्जोओ,(HD. 4.33). (716) HD. 2.59. B काहिल्ली; KS होहल्लि; KS राष्ट्रे for भ्राष्ट्रे. (717) HD. (करडो) 2.55. (718) HD. 1.148. B एक्कसंहो; K एक्कसुहो; S एक्कसहो T एक्कसुहहो, B निर्घर्मासनयोः for निर्धर्माधनयोः. (719) HD. (अंतेल्ली) 1.55. KS पुत्तिल्लि. B कुर्षा ऊअआरो for उदरे. (720) ! (721) HD. 6.143. (722) HD. 2.52. BT अप्पालं. (723) HD. (वेल्लहलो ?) 7.96. BT ललनायां. (724) HD. (आअड्डिअं) 1.68. T आअंटिआ. (725) ? S सक्कंबं. BT पुरे for प्रचुरे. (726) HD. 2.54. K वृष्टे. for वृषे. (727) HD. (= प्रमाणं) 7.16. KS लोहं. (728) HD. 7.15. BT. रोहंडं. KS इच्छामुन्योः; T_2 उच्छामत्योः for इच्छामत्योः. (729) HD. (कालिबो) 7.59.(730) केआ ? HD. 2.44.BT केंघू.(731) HD.(= रिपुगृहं) 4.29. B ऋच्छौ for ऋजौ. (732) HD. 2.63. S om.the word.(733)HD. (कुरुडो) 2.63. S om.the word.B द्वावप्यद्रवे त्रपुणि च; S निर्दय निपुणे च. or द्वावप्यनघे निपुणे च.

(७३४) आ अं अतिदीर्घे विषमे मुसले कालायसे च ।। (७३५) किण्हं सितेऽशुके सूक्ष्मे च ।। (७३६) लाइअं अजिरार्धे भूषणे गृहीते च ।। (७३७) कालिआ ऋणवृद्धौ काये अम्बुदे च ।। (७३८) कडअल्ली कण्ठे कर्णिकायां च ।। (७३९) उद्दाणो कुररे सगर्वे प्रतिशब्दे च ।। (७४०) ओलअणं दयितीभूतायां नववध्वां च ।। (७४१) खव्वो वामहस्ते गर्दभे च ।। (७४२) डोंगी रथ्यास्थासकयोः ।। (७४३) चेंडा (७४४) सीहली शिखानवमालिकयोः ।। (७४५) उद्दो ककुदि जलपुंसि दान्तपृष्ठे च ।। (७४६) कोट्टी स्खलनायां दोहविषमायां च ।। (७४७) तमणी लतायां व्यधिकरणे च ।। (७४८) सत्ती बन्धने वचने इच्छायां शिरःस्रजि च ।। (७४९) उप्पिञ्जलं रते काके रजसि च ।। (७५०) णडुलं विनते दुर्दिने च ।। (७५१) उच्चाडणं उपवने शीते च ।। (७५२) दावो दासगर्दभयोः ।। (७५३) बोंदी रूपवचनयोः ।। (७५४) उम्मल्लो सान्द्रे भूपतौ च ।। (७५५) बोडो धार्मिके यतिनि च ।। (७५६) उच्चंडिगो अधिकमाने निःसीम्नि च ।।

---

(734) HD. 1.73. S आलं. (735) HD. 2.59. BT किण्णो. (736) HD. 7.27. KS लाइं. K अचिरार्धे for अजिरार्धे. (737) HD. 2.58. KS कुलिआ. KS तृणवृद्धौ for ऋणवृद्धौ. (738) HD. 2.15. KS कच्छे कंठिकायां for कण्ठे कर्णिकायां. (739) HD. (उद्दाणा चुल्ली) 1.87. KS उद्धाणो. KS कुचरे for कुररे. (740) HD. (ओलइणी) 1.160. BT ओलधणी; S उलअणं. (741) HD. 2.77. BT खप्पो. (742) HD. 4.13. BT डोंगं; S कोंडि. (743) HD. 3.39. BT चेंडा; S देंडा. (744) HD. (सीहलिआ) 8.55. KS सिहडो. (745) HD. (उद्द) 1.123. B दर्दो; T दद्दो. K उदके; T ककुदे for ककुदि. K दातृपृष्ठे; S धातुपृष्ठे for दान्तपृष्ठे. (746) HD. 2.64. BT कोल्ली; KS कोंडि. KS जीवनायां for स्खलनायां. K दोहदविषमायां for दोहविषमायां. (747) HD. (=भुजः) 5.20. B नमणी; K तनणी; S तगणी. (748) 8.1. (749) HD. 1.135. BT उपिंजलं. K तरे; S तले for रते. (750) HD. 4.47. HD. रते for विनते. (751) HD. (उच्चाडो विपुलः) 1.97 K इच्छाडनं. (752) HD. (दाओ प्रतिभूः). 5.38. BT दघो. (753) HD. 6.99. BT पोंदी; K बोंडि; S बंदि. (754) HD. 1.131. (755) HD. 6.96. BT बोधो. (756) HD. (उच्चडिओ) 1.106. BT उच्चविहो अशिकामाने ?

(७५७) इ ल्ली वर्षत्राणे व्याघ्रे सिंहे च ॥ (७५८) प त्त णं बाणफले शरपुंखे च ॥ (७५९) अ कं ड त लि मो अपरिणीतनिष्प्रेम्णोः ॥ (७६०) द अं उदकशोकयोः ॥ (७६१) घो लि अं शिलातले हठात्कृते च ॥ (७६२) ज व णं हये शशिवदने च ॥ (७६३) खं ज णो खञ्जरीटे कर्दमे च ॥ (७६४) त लि मो गृहोर्ध्वभूमौ वासगृहे कुट्टिमे भ्राष्ट्रे शय्यायां च ॥ (७६५) झ सो गम्भीरे तटस्थे अयशसि दीर्घे च ॥ (७६६) व प्पो भूतगृहीते बलाधिके च ॥ (७६७) व ल्ल रो मरौ महिषे तरुणे क्षेत्रे अरण्ये च ॥ (७६८) म रा लो सुन्दरे अलसे मसृणे च ॥ (७६९) म म्म क्को गर्वे उत्कण्ठायां च ॥ (७७०) वि सि ढो विरते विसंस्थुले च ॥ (७७१) ब ल ब ड्डी व्यायामसहायां सख्यां च ॥ (७७२) सु ज्झ ओ रजकनापितयोः ॥ (७७३) वे इ ड्डो तनौ शिथिले आविद्धे ऊर्ध्वीकृते विसंस्थुले च ॥ (७७४) म ल इ ओ हते तीक्ष्णे च ॥

---

(757) HD. 1.83. BT वल्ली. B वफत्राणे for वर्षत्राणे. Cf इरली in Marathi and Dravidian Puli. (758) HD. 6.64. (759) HD. 1.60. BT अकंडमलिमो (760) HD. (दयं) 5.33. BT उअ. (761) HD. 2.112. BT घोलिअं; KS गालिअं. (762) HD. (= हलशिखा ?) 3.41. KS अयसिवदाने for हये शशिवदने. (763) HD. 2.69. B खज्जनो; KS खड्डरो; T खंचनो. (764) HD. 5.20. BT कलिमो. B गृहे बद्धभूमौ for गृहोर्ध्वभूमौ. B पाशगृहे for वास°. (765) HD. 3.60. BT झझद्धा (?). (766) HD. 7.83. BT वपो; KS वउप्पा. B सभिके for बलाधिके. (767) HD. (वल्लरं) 7.86. (768) HD. 6.112. B मराली; KS मरालं. HD. हंस इति सातवाहनः. (769) HD. (मम्मक्का) 6.143. B चम्मक्को; T चर्मकेका (?). (770) HD. (विसढो ?) 7.62. KS पिसडो; T₂ बिसिडो. (771) HD. 6.91. B बलवड्डी; K बलपुच्छि; S बलपुट्टि. B व्यायामे सभायां; K व्यायामसभायां; HD. व्यायामसहेत्यन्ये. (772) HD. 8.56. BT सिझिओ; KS झिझओ. B रजत° for रजक°. (773) HD. (वेइल्लो) 7.95. B वेइट्टो; T वेइट्टो. KS नतौ for तनौ. (774) ?

(७७५) व ड प्पं लतागृहे सततपवने हिमवर्षे च ।। (७७६) रा हो प्रिये शोभिते मलिने सनाथे विसंस्थुले च ।। (७७७) वं ठो निःस्नेहे अकृतविवाहे भृत्ये च ।। (७७८) मं थ रं कुटिले बहौ कुसुम्भे च ।। (७७९) ल अ णं तनुकोमलयोः ।। (७८०) म म्म णं अव्यक्तवचसि रोषे च ।। (७८१) तु ण्हि क्कं मृदुनिश्चलयोः ।। (७८२) ठे णो स्थासके चरे चोरे च ।। (७८३) तुं बि ल्लि मधुपटले उलूखले च ।। (७८४) प त्थ री शयने संहतौ च ।। (७८५) णि च्चि ट्टं रत्यारभटे समुचिते च ।। (७८६) द अ रो पिशाचे ईर्ष्यायां च ।। (७८७) झ सु रं ताम्बूले अर्थे च ।। (७८८) पिं ज रो (७८९) पा ड लो हंसवृषयोः ।। (७९०) बि ग्बो व ण अं क्षोमे उपधाने विकारे च ।। (७९१) कु ल्लो असमर्थे ग्रीवायां विच्छिन्नपुच्छे वा ।। (७९२) चुं णु णि आ मुष्टिद्यूते यूकायां समर्थे च ।। (७९३) टं को खड्गे छिन्ने जंघापाते तटे खनित्रे च ।। (७९४) को णो गर्विते निर्दये च ।। (७९५) णे ल च्छो षण्ढे पण्डिते च ।। (७९६) खु लु खी मिथ्यायामघटमाने च ।।

(775)HD. 7.84.T सततवपन° for सततपवन°. (776)HD 7.13.(777) HD. 7.83. S चंडो. B भ्रमे for भृत्ये. (778) HD. 6.145. BT मत्थरं. BT कुटुंबे for कुसुम्भे. (779) HD. (लयणं) 7.27. B लअनं; T लयनं. (780) HD. (मम्मणो) 6.141. B सरोषे for रोषे. (781) HD. (तुण्हिक्को) 5.15. B तुण्हिक्कीं; KS तुम्हिक्कं. (782) ? BT छोणो. KS चले for चरे; K जोरे; S चोले. (783) HD. 5.23. BT तुण्विल्लि. (784) HD. (पत्थारी) 6 69. S पंथरी. B स्वमतौ; K संततौ; T स्वतौ (?). (785) HD. 4.34. B णिच्चविडं; KS णिच्चिट्टं. KS उद्भटे for रत्यारभटे. (786) ? KS पदयोरपि (?). (787) HD. 3.61. BT झसुरीं. (788) ? B विप्परो. (789) HD. 6.76. B पाटलो; K पाडिले; S पाडिरो. (790) HD. 6.98. S बिंबोवअणं. (791) HD. 2.61. KS कुकुल्लो. (792) HD. 3.23. B चुच्चुणिआ; K चुंचाणिआ; S चुंचुणेओ. B मुष्टिकेष्टकायां for मुष्टिद्यूते यूकायां समर्थे च. (793) HD. 4.4. BT छिदको;S ढको. (794) HD.2.45. BT छिण्णं;S किणो. (795) HD. 4.44.B दान्ते;KS झाणे for षण्ढे. (796) HD.(खुखुणी ?) 2.76.K वेलकं;S देलकं. KS मिथ्याघटमाने च ?

(७९७) अण्णओ धूर्ते यूनि देवरे च ॥ (७९८) दूणावेढं अशक्ये तडागे च ॥ (७९९) अरलो (८००) अरलाओ चिरिकायां मशके च ॥ (८०१) अच्छं अत्यर्थे शीघ्रे च ॥ (८०२) अलिआ पितृष्वसरि कनिष्ठ-सोदरस्य वध्वां च ॥ (८०३) पक्कणं अतिशोभावति भग्ने श्लक्ष्णे च ॥ (८०४) पब्भारो संघाते गिरिगुहायां च ॥ (८०५) पच्चुज्जो काण्डे नखे शिशुमृगे च ॥ (८०६) पासण्णो वेश्मद्वारे तिरश्चीने च ॥ (८०७) विप्पओ उन्मत्ते चीर्यां च ॥ (८०८) कोप्परो वर्णसंकरे जालके च ॥ केड्डो व्यापने फेने श्याले दुर्बले च ॥ (८१०) ओहट्टं नीव्यामवगुण्ठने च ॥ (८११) ओहित्थं रभसे विषादे च ॥ (८१२) तोलो (८१३) तड्डो पिशाचे शलभे च ॥ (८१४) डसरी उष्णजले स्थाल्यां च ॥ (८१५) णिउक्कणो वायसे मूके च ॥ (८१६) पइरेक्कं एकान्ते पृथगित्यस्मिन्नर्थे शून्ये च ॥ (८१७) तुरी उपकरणे तूलि-कायां शून्ये च ॥ (८१८) वोक्कअं अनिमित्ते तात्पर्यार्थे च ॥ (८१९) पसुलो काकोले जारे च ॥ (८२०) किवडी पार्श्वद्वारे पश्चिमाङ्गणे च ॥

---

(797) HD. 1.55. (798) HD. 5.56. BT वेढं (799) HD. 1.52.(800)HD.(अरलाया) 1.26.BT अरालाओ. BT मरकते for मशके. (801) HD. 1.49. (802) HD. 1.16. BKT अल्लिआ. (803) HD. (पक्कणी) 6.65. BT कक्कणं; S पंचणं. BT अतिरोमाभाववति for अतिशोभा-वति. (804) HD, 6.66. BT वब्भारो. (805) HD. 6.69. B पच्चुज्जो; K चुच्चुउज्जो; S चुंचुज्जो. (806) HD. (पासल्लं) 6.76. BT वाअणो; KS वासण्णो. (807) HD. (विप्पयं ?) 7.49. (808) ? KS अलंकारे च for जालके च. (809) ? KS कुड्डो व्यापन्ने; T केड्डो. (810) HD. (ओहट्टो) 1.153. (811) HD. 1.168. BT ओहक्कू; KS ओहद्द. (812) HD. (टोलो) 4.4. KS शेलो. (813) HD. 5.23. BT तोड्डो. (814) HD. (डहरी ?) 4.7. BT डसरी; KS डसरं. (815) HD. 4.51. BT छणी-उक्कणे (?); KS णिडुक्कइणो. B कार्मुके; KS कामे for वायसे. (816) HD. 6.71. B वर्क्क; T चर्क्क. (817) HD. 5.22. BT तुरं; KS तुरि. B कलि-कायां for तूलिकायां. (818) ? KST थोक्कअं अतिमंत्रे तात्पर्यार्थेशक्ते च.(819) Sk पांशुलः ? KS छंसुलो काकोले काले च. T_2 फंसुलो. (820)HD. (किविडी) 2.60. B किवटी; K किव्वडी.

(८२१) छाआ भ्रमरी ।। (८२२) सिप्पं तिलके शिरसो भूषणविशेषे च ।। (८२३) णलुअं वृतिविवरे कर्दमिते निमित्ते प्रयोजने च ।।(८२४) इच्छाउत्तो योगिनीसुते ईश्वरे च ।। (८२५) पहेणअं उत्सवे भोज्ये च ।। (८२६) चारो इच्छाबन्धनयोः ।। (८२७) जचंदणं अगुरुकुङ्कुमयोः ।। (८२८) डिंखा आतङ्के त्रासे च ।। (८२९) दलिअं अङ्गुलौ दारुणि कूणिताक्षे च ।। (८३०) चिप्पंडी (८३१) चिप्पत्ती व्रते उत्सवविशेषे च ।। (८३२) उंचाडइओ हुंकृतगर्जनयोः (८३३) पचलं असहने समर्थे च ।। (८३४) साहुली वस्त्रशाखाभूसखीसदृशबाहुषु ।। (८३५) लुंबी लतास्तबकयोः ।। (८३६) रंजणं घटकुण्डयोः ।। (८३७) धुडुकी मुखसंभेदे मौने च ।। (८३८) छुहइद्धिआ द्वेष्यायामस्पृश्यायां च ।। (८३९) सरी प्रशस्ताकृतौ दीर्घे च ।। (८४०) गोरो ग्रीवायामक्ष्णि सीतायां च ।। (८४१) भसत्तो वह्निदीप्तयोः ।। (८४२) मेली चेट्यामाज्ञायां च ।।

---

(821) HD. (छाया) 3.34. KS भ्रमरींद्राण्याः for भ्रमरी. (822) HD. 8.28. KS डिप्पं. KS शिरसा विभूषणे च for शिरसो भूषणविशेषे. (823) HD. (णालयं) 4.46. (824) Sk इच्छापुत्रः. KS नियोगिसुते for योगिनीसुते. (825) HD. (पहेणयं) 6.73. KS पहणेअं. (826) HD. 3.21. (827) HD. 3.52. B जयंदणं; K अवंदणं; S अबंधणं. KS अगरु° for अगुरु°. (828) Sk दंश ? KS डिंबा; T डीआ. (829) HD. 5.52. KS दनिअं; T दुलिअं. (830) ? S om the word. (831) ? KS चिप्पत्ति. (832) ? KS उंछाडइओ; T_2 ओंडइओ. (833) HD. (पच्चलो) 6.69. B पचले; KS पवनं; T वच्चलं. K असमाने for असहने. (834) HD. 8.52. T बाहुली. (835) HD. 7.28. B लुबो; T लुव्वी. (836) B घटकुंडलयोः for °कुण्डयोः. (837) ? KS हूकि. (838) HD. (छोब्भाइत्ती) 3.39. KS छूहइद्विआ; T छुमइच्छिआ. (839) HD. 8.2. S सरि. (840) HD. (गोरा) 2.104. B सितायां; T मीतायां for सीतायाम्. (841) ? Sk भस्मात्मन् ? (842) HD. 6.110. BKS गोली. B वेद्यां for चेट्याम्.

(८४३) कण्णोविआ चक्षौ अवतंसे च ।। (८४४) अल्लत्थी अङ्कदे जलाद्रायां च ।। (८४५) अमारो नदीमध्यद्वीपे कमठे च ।। (८४६) उप्फेसो भीतौ सद्भावे च ।। इत्यादि ।।

अथ (१) आडम्बरो पटहः ।। (२) ओन्दुरो मूषिकः ।। (३) वामलूरो वल्मीकम् ।। (४) किरी वराहः ।। (५) लहरी तरङ्गः प्रवाहो वा ।। (६) तलं कासारः ।। (७) महाबिलं गगनम् ।। (८) पाढा शोभा ।। (९) खेडं ग्रामस्थानम् ।। (१०) महानडो रुद्रः ।। (११) पुडइणी नलिनी ।। (१२) जयणं भयसंनहनम् ।। (१३) पाडलं कमलम् ।। (१४) कमडो भिक्षापात्रम् ।। (१५) कल्लं कल्यम् ।। (१६) गन्धुत्तमा सुरा इत्यादयः शब्दास्तत्समतद्भवात्मना प्रयोगपदवीमासादयन्ति ।। सिद्धा इति पदं मङ्गलार्थम् ।।

।। इति श्रीमदर्हनन्दित्रैविद्यदेवश्रुतधरश्रीपादप्रसादासादितसमस्तविद्याप्रभाव-
श्रीमत्त्रिविक्रमदेवविरचितप्राकृतव्याकरणवृत्तौ
तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ।।
समाप्तश्च तृतीयोऽध्यायः ।।

---

(843) HD.(कण्णोल्ली). 2.57. (844) HD. 1.54. B अल्लिद्दी; K अल्लच्छि; S अल्लत्थि. (845) ? K ओमारो; S ओमालो; T उज्जारो. (846) HD. 1.94. BKS उक्खो; T उप्पेसो. HD अपवादार्थोऽप्ययं दृश्यते.

The following words are either तत्सम or तद्भव. (1) T खाडिंबरो. (2) S ओदूदुलो. (3) — (4) K किरो; S किलो; T कीरो. (5) S om. (6) T कल्लिं. (7) T महाबलं. (8) B पाढा; KS पाठा. (9) T खेडी. (10) T महाडो. (11) KS पुडइणी तलिमा. (12) K जअणं; T नयणी. (13) T पडली कमली. (14) KS कमठो. (15) T कल्लिं. (16)-KS तत्समवर्तमानाः for तत्समतद्भवात्मना. Colophon: ST om. from श्रीमदर्ह° down to श्रीमत्. KST तृतीयस्याध्यायस्य.

* * *

सप्रत्ययप्रकृतिसिद्धमदीर्घसूत्र-
सत्कारकं बहुविधक्रियमासदेश्यम् ।
शब्दानुशासनमिदं प्रगुणप्रयोगं
त्रैविक्रमं जपत मन्त्रमिवार्थसिद्धयै ॥ १ ॥

विशन्नन्तःश्रोत्रं पदमधुरिमा मेदुरयति
प्रणेता नूत्नोऽर्थः प्रतिपदमहो साधुवचसम् ।
रसः पात्रीकुर्याद् भुवनमनुभावादिव कृते-
र्यदि श्राव्यं काव्यं मम रसिकनैयायिकजनैः ॥ २ ॥

वक्तारः सन्तु सर्वेऽपि स्वाभिप्रायप्रकाशने ।
स्वपराशयसंवादिकथास्वेकस्त्रिविक्रमः ॥ ३ ॥

T om. all the three stanzas as also one of the **two** Mss used for B. 2. BT साधुवचनं for साधुवचसम्. BT °संवेदीकथासु for संवादिकथासु.

परिशिष्टं प्रथमम्

त्रिविक्रमशब्दानुशासनस्य सूत्रपाठः

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
प्रथमोऽध्यायः	
प्रथमः पादः ।	
१ सिद्धिर्लोकाच्च	३
२ अनुक्रमन्यशब्दानुशासनवत्	३
३ संज्ञा प्रत्याहारमयी वा	३
४ सुप्स्वादिरन्त्यहला	४
५ ह्रो ह्रस्वः	४
६ दिर्दीर्घः	४
७ शषसाः शुः	४
८ सः समासः	४
९ आदिः खुः	५
१० गो गणपरः	५
११ द्वितीयः फुः	५
१२ संयुक्तं स्तु	५
१३ तु विकल्पे	५
१४ प्रायो लिति न विकल्पः	५
१५ शिति दीर्घः	५
१६ सानुनासिकोच्चारं ङित्	६
१७ बहुलम्	६
१८ दिह्रौ मिथः से	६
१९ संधिस्त्वपदे	७
२० न यण्	७
२१ एङः	८
२२ शेषेऽच्यचः	८
२३ तिङः	८
२४ लोपः	८
२५ अन्त्यहलोऽश्रदुदी	९
२६ निर्दुरि वा	९
२७ अन्तरि च नाचि	९
२८ शि श्लुक्ङ नपुनरि तु	९
२९ अविद्युति स्त्रियामाल्	१०
३० रो रा	१०
३१ हः क्षुत्ककुभि	१०
३२ धनुषि वा	१०
३३ सशाशिषि	१०
३४ स आयुरप्सरसोः	१०
३५ दिक्प्रावृषि	११
३६ शरदामत्	११

१७ बहुलम् (१·२). १८ दीर्घह्रस्वौ मिथो वृत्तौ (१·४). १९ पदयोः संधिर्वा (१·५). २० न युवर्णस्यास्वे (१·६). २१ एदोतोः स्वरे (१·७). २२ स्वरस्योद्वृत्ते (१·८). २३ त्यादेः (१·९). २४ लुक् (१·१०). २५ अन्त्यव्यञ्जनस्य (१·११); न श्रदुदोः (१·१२). २६ निर्दुरोर्वा (१·१३). २७ स्वरेऽन्तरश्च (१·१४). २८ नात्पुनर्यादाइ वा (१·६५). २९ स्त्रियामादविद्युतः (१·१५). ३० रो रा (१·१६). ३१ क्षुधो हः (१·१७); ककुभो हः (१·२१). ३२ धनुषो वा (१·२२). ३४ आयुरप्सरसोर्वा (१·२०). ३५ दिक्प्रावृषोः सः (१·१९). ३६ शरदादेरत् (१·१८).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३७ तु सक्खिणभवन्तजम्मणमहन्ताः	११
३८ यत्तत्सम्यग्विष्वक्पृथको मल्	११
३९ मोऽचि वा	११
४० बिन्दुल्	११
४१ हलि ङञणनाम्	१२
४२ स्वरेभ्यो वक्रादौ	१२
४३ क्त्वासुपोस्तु सुणात्	१३
४४ लुङ् मांसादौ	१३
४५ संस्कृतसंस्कारे	१३
४६ ङे तु किंशुके	१३
४७ वर्गेऽन्त्यः	१४
४८ विंशतिषु त्या श्लोपल्	१४
४९ स्नमदामशिरोनभो नरि	१४
५० शरत्प्रावृट्	१५
५१ अक्ष्यर्थकुलाद्या वा	१५
५२ क्लीबे गुणगाः	१६
५३ स्त्रियामिमाञ्जलिगाः	१६

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
द्वितीयः पादः ।	
१ निष्पती ओत्परी माल्यस्थोर्वा	१७
२ आदेः	१७
३ लुगव्ययत्यदाद्यात्तदचः	१७
४ वालाब्वरण्ये	१७
५ अपेः पदात्	१७
६ इतेः	१८
७ तोऽचः	१८
८ शोर्लुप्तयवरशोर्दिः	१८
९ हे दक्षिणस्य	१९
१० तु समृद्ध्यादौ	१९
११ स्वप्नादाविल्	२०
१२ पक्वाङ्गारललाटे तु	२०
१३ सप्तपर्णे फोः	२०
१४ मध्यमकतमे च	२०
१५ हरे त्वी	२०

३९ वा स्वरे मश्च (१·२४). ४० मोऽनुस्वारः (१·२३). ४१ ङञणनो व्यञ्जने (१·२५). ४२ वक्रादावन्तः (१·२६). ४३ क्त्वास्यादेर्णस्वोर्वा (१·२७). ४४ मांसादेर्वा (१·२९). ४६ किंशुके वा (१·८६). ४७ वर्गेऽन्त्यो वा (१·३०). ४८ विंशत्यादेर्लुक् (१·२८). ४९ स्नमदामशिरोनभः (१·३२). ५० प्रावृट्शरत्तरणयः पुंसि (१·३१). ५१ वाक्ष्यर्थवचनाद्याः (१·३३). ५२ गुणाद्याः क्लीबे वा (१·३४). ५३ वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् (१·३५).

१ निष्पती ओत्परी माल्यस्थोर्वा (१·३८). २ आदेः (१·३९). ३ त्यदाद्यव्ययात्तत्स्वरस्य लुक् (१·४०). ४ वाला-ब्वरण्ये लुक् (१·६६). ५ पदादपेर्वा (१·४१). ६ इतेःस्वरात्तश्च द्विः (१·४२). ८ लुप्तयरवशषसां शषसां दीर्घः (१·४३). ९ दक्षिणे हे (१·४५). १० अतः समृद्ध्यादौ वा (१·४४). ११ इः स्वप्नादौ (१·४६). १२ पक्वाङ्गारललाटे वा (१·४७). १३ सप्तपर्णे वा (१·४९). १४ मध्यमकतमे द्वितीयस्य (१·४८). १५ ईर्हरे वा (१·५१).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१६ उल् ध्वनिगवयविष्वचो वः	२०
१७ ज्ञो णोऽभिज्ञादौ	२१
१८ स्तावकसास्ने	२१
१९ चण्डखण्डिते णा वा	२१
२० प्रथमे थ्थोः	२१
२१ आर्यायां र्यः श्वश्र्वामूल्	२१
२२ आसारे तु	२२
२३ तोऽन्तर्येल्	२२
२४ पारावते तु फोः	२२
२५ उत्करवल्लीद्वारमात्रचः	२२
२६ शय्यादौ	२२
२७ त्वार्द्र उदोत्	२२
२८ स्वपि	२३
२९ ओदाल्यां पंक्तौ	२३
३० फोः परस्परनमस्कारे	२३
३१ पद्मे मि	२३
३२ त्वर्पौ	२३
३३ ईल् खल्वाटस्त्यानयोरातः	२३
३४ इत्तु सदादौ	२४
३५ आचार्ये चो ह्रश्च	२४
३६ श्यामाके मः	२४
३७ न वाव्ययोत्खातादौ	२४
३८ घञि वा	२५
३९ स्वरस्य बिन्दुमि	२५
४० संयोगे	२५
४१ त्वेदितः	२६
४२ मिरायां लित्	२६
४३ मूषिकविभीतकहरिद्रा-पथिपृथिवीप्रतिश्रुत्यत्	२६
४४ रस्तित्तिरौ	२६
४५ इतौ तो वाक्यादौ	२६
४६ वेङ्गुदशिथिलयोः	२७
४७ उ युधिष्ठिरे	२७

१६ ध्वनिविष्वचोरुः (१·५२); गवये वः (१·५४). १७ ज्ञो णत्वेऽभिज्ञादौ (१·५६). १८ उः सास्नास्तावके (१·७५). १९ चण्डखण्डिते णा वा (१·५३). २० प्रथमे पथोर्वा (१·५५). २१ आर्यायां र्यः श्वश्र्वाम् (१·७७). २२ ऊद्वासारे(१·७६). २३ तोऽन्तरि (१·६०). २४ पारापते रो वा (१·८०). २५ वल्ल्युत्करपर्यन्ताश्चर्ये वा (१·५८); द्वारे वा (१·७९). २६ एच्छय्यादौ (१·५७). २७ उदोद्वार्द्रे (१·८२). २८ स्वपावुच्च (१·६४). २९ ओदाल्यां पंक्तौ (१·८३). ३० नमस्कारपरस्परे द्वितीयस्य (१·६२). ३१ ओत्पद्मे (१·६१). ३२ वार्पौ (१·६३). ३३ ईः स्त्यानखल्वाटे (१·७४). ३४ इः सदादौ वा (१·७२). ३५ आचार्ये चोच्च (१·७३). ३६ श्यामाके मः (१·७१). ३७ वाव्ययोत्खातादावदातः (१·६७). ३८ घञ्वृद्धेर्वा (१·६८). ३९ ह्रस्वोऽमि (३·३६). ४० ह्रस्वः संयोगे (१·८४). ४१ इत एद्वा (१·८५). ४२ मिरायाम् (१·८७). ४३ पथिपृथिवीप्रतिश्रुन्मूषिकहरिद्राबिभीतकेष्वत् (१·८८). ४४ तित्तिरौ रः (१·९०). ४५ इतौ तो वाक्यादौ (१·९१). ४६ शिथिलेङ्गुदे वा (१·८९). ४७ युधिष्ठिरे वा (१·९६).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
४८ द्विनीक्षुप्रवासिषु	२७
४९ तु निर्झरद्विधाकृञोरोत्वा	२८
५० ईतः काश्मीरहरीतक्यो- लोलौ	२८
५१ गभीरग इत्	२८
५२ वा पानीयगे	२८
५३ उल् जीर्णे	२९
५४ तीर्थे ह्यूल्	२९
५५ विहीनहीने वा	२९
५६ एल् पीठनीडकीदृशापीयूष- बिभीतकेदृशापीडे	२९
५७ त्वदुत उपरिगुरुके	२९
५८ मुकुलादौ	३०
५९ रो भ्रुकुटिपुरुषयोरित्	३०
६० क्षुत ईत्	३०
६१ दोदोऽनुत्साहोत्सन्न ऊच्छसि	३०
६२ दुरो रलुकि तु	३१
६३ सुभगमुसलयोः	३१
६४ ह्रश्चौत्कुतूहले	३१
६५ स्तौ	३१
६६ सूक्ष्मेऽद्वोतः	३१
६७ अल् दुकूले	३१
६८ ईदुद्व्यूढे	३२
६९ उल् कण्डूयहनूमद्वातूले	३२
७० वा मधूके	३२
७१ इदेन्नूपुरे	३२
७२ ओल् स्थूणातूणमूल्यतूणीर- कूर्परगुडूचीकूष्माण्डी- ताम्बूलीषु	३२
७३ ऋतोऽत्	३२
७४ आद्वा मृदुत्वमृदुककृशासु	३२
७५ इल् कृपगे	३३
७६ शृङ्गमृगाङ्कमृत्युघृष्टमसृणेषु वा	३३

४८ द्विन्योरुत् (१·९४); प्रवासीक्षौ (१·९५). ४९ वा निर्झरे ना (१·९८); ओच्च द्विधाकृगः (१·९७). ५० हरीतक्यामीतोत् (१·९९); आत्कश्मीरे (१·१००). ५१ पानीयादिष्वित् (१·१०१). ५३ उज्जीर्णे (१·१०२). ५४ तीर्थे हे (१·१०४). ५५ ऊर्हीनविहीने वा (१·१०३). ५६ एत्पीयूषापीडबिभीतककीदृशेदृशे (१·१०५); नीडपीठे वा (१·१०६). ५७ वोपरौ (१·१०८). गुरौ के वा (१·१०९). ५८ उतो मुकुलादिष्वत् (१·१०७). ५९ इर्भ्रुकुटौ (१·११०); पुरुषे रोः (१·१११). ६० ईः क्षुते (१·११२). ६१ अनुत्साहोत्सन्ने त्सच्छे (१·११४). ६२ लुकि दुरो वा (१·११५). ६३ ऊत्सुभगमुसले वा (१·११३). ६४ कुतूहले वा ह्रस्वश्च (१·११७). ६५ ओत्संयोगे (१·११६). ६६ अदूतः सूक्ष्मे वा (१·११८). ६७ दुकूले वा लश्च द्विः (१·११९). ६८ ईर्वोद्व्यूढे (१·१२०). ६९ उर्भ्रूहनूमत्कण्डूयवातूले (१·१२१). ७० मधूके वा (१·१२२). ७१ इदेतौ नूपुरे वा (१.१२३). ७२ ओत्कूष्माण्डीतूणीरकूर्परस्थूलताम्बूलगुडूचीमूल्ये (१·१२४); स्थूणातूणे वा (१·१२५). ७३ ऋतोऽत् (१·१२६). ७४ आत्कृशामृदुकमृदुत्वे वा (१·१२७). ७५ इत्कृपादौ (१·१२८). ७६ मसृणमृगाङ्कमृत्युशृङ्गधृष्टे वा (१·१३०).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
७७ पृष्ठेऽनुत्तरपदे	३३
७८ उद् वृषभे वुः	३४
७९ वृन्दारकनिवृत्तयोः	३४
८० ऋतुगे	३४
८१ गौणान्त्यस्य	३४
८२ इदुन्मातुः	३५
८३ वृष्टिपृथङ्मृदङ्गनप्तृकवृष्टे	३५
८४ तु बृहस्पतौ	३५
८५ उदूदोल् मृषि	३५
८६ वृन्त इदेङ्	३५
८७ ढिराहते	३५
८८ दृप्तेऽरि मा	३६
८९ केवलस्य रिः	३६
९० दृश्यक्सक्किपि	३६
९१ ऋतुऋजुऋणऋषिऋषभे वा	३६
९२ क्लृप्त इलिः	३६
९३ चपेटाकेसरदेवरसैन्यवेदना- स्वेचस्त्वित्	३७
९४ सन्धवशनैश्चरे	३७
९५ त्वत्सरोरुहमनोहरप्रकोष्ठा- तोद्यान्योन्ये वश्च कोः	३७
९६ कौक्षेयक उत्	३७
९७ शौण्डगेषु	३७
९८ गव्यउदाईत्	३८
९९ ऊ स्तेने वा	३८
१०० सोच्छ्वासे	३८
१०१ ऐच्च एङ्	३८
१०२ अइ तु वैरादौ	३८
१०३ दैत्यादौ	३९
१०४ नाव्यावः	३९
१०५ गौरव आत्	३९
१०६ पौरगे चाउत्	३९
१०७ उच्चैर्नीचैसोरअः	३९
१०८ ई धैर्ये	४०
१०९ वा पुआय्याद्याः	४०

७७ पृष्ठे वानुत्तरपदे(१·१२९). ७८ वृषभे वा वा(१·१३३). ७९ निवृत्तवृन्दारके वा (१·१३२). ८० उदृत्वादौ (१·१३१). ८१ गौणान्त्यस्य (१·१३४). ८२ मातुरिद्वा (१·१३५). ८३ इदुतौ वृष्टवृष्टिपृथङ्मृदङ्गनप्तृके (१·१३७). ८४ वा बृहस्पतौ (१·१३८). ८५ उदूदोन्मृषि (१·१३६). ८६ इदेदोद् वृन्ते(१·१३९). ८७ आदृते ढिः (१·१४३). ८८ अरिर्दृप्ते (१·१४४). ८९ रिः केवलस्य (१·१४०). ९० दृशः क्विप्टक्सकः (१·१४२) ९१ ऋणर्ज्वृषभर्त्वृषौ वा (१·१४१). ९२ लृत इलिः क्लृप्तक्लृन्ने (१·१४५). ९३ एत इद्वा वेदनाचपेटादेवरकेसरे (१·१४६); सैन्ये वा (१·१५०). ९४ इत्सैन्धवशनैश्चरे (१·१४९). ९५ ओतोद्वान्योन्यप्रकोष्ठातोद्यशिरोवेदनामनोहरसरोरुहे क्तोश्च वः(१·१५६). ९६ कौक्षेयके वा(१·१६१). ९७ उत्सौन्दर्यादौ (१·१६०). ९८ गव्यउ आअः (१·१५८). ९९ ऊः स्तेने वा(१·१४७). १०० ऊत्सोच्छ्वासे (१·१५७). १०१ ऐत एत् (१·१४८). १०२ वैरादौ वा (१·१५२). १०३ अइर्दैत्यादौ च (१·१५१). १०४ नाव्यावः (१·१६४). १०५ आच्च गौरवे (१·१६३). १०६ अउः पौरादौ च (१·१६२). १०७ उच्चैर्नीचस्यैअः (१·१५४). १०८ ईद्धैर्ये (१·१५५).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
तृतीयः पादः।	
१ एत् साज्झला त्रयोदशागेऽचः	४२
२ कद्ले तु	४२
३ कर्णिकारे फोः	४२
४ नवमालिकाबदरनवफलिका-पूगफलपूतर ओल्	४२
५ तु मयूरचतुर्थचतुर्वारचतु-र्दशचतुर्गुणमयूखोलूखलसुकुमारोदूखललवण-कुतूहले	४३
६ निषण्ण उमः	४३
७ अस्तोरखोरचः	४३
८ प्रायो लुक्कगचजतदपयवाम्	४४
९ नात्पः	४५
१० यश्रुतिरः	४५
११ कामुकयमुनाचामुण्डाति-मुक्तके मो ङलुक्	४६
१२ खोऽपुष्पकुब्जकर्परकीले कोः	४६
१३ छागशृङ्खलकिराते लकचाः	४७
१४ वैकादौ गः	४७
१५ खोः कन्दुकमरकतमदकले	४७
१६ पुन्नागभागिनीचन्द्रिकासु मः	४७
१७ शीकरे तु भहौ	४७
१८ ऊत्वे दुर्भगसुभगे वः	४८
१९ निकषस्फटिकचिकुरे हः	४८
२० खघथधभाम्	४८
२१ धः पृथकि तु	४९
२२ चोः खचितपिशाचयोः सल्लौ	४९
२३ झो जटिले	४९
२४ टोर्वडिशादौ लः	४९
२५ स्फटिके	४९
२६ लरङ्कोठे	४९

---

१ एत् त्रयोदशादौ स्वरस्य सस्वरव्यञ्जनेन (१·१६५). २ वा कद्ले (१·१६७). ३ वेतः कर्णिकारे (१·१६८). ४ ओत्पूतरबदरनवमालिकानवफलिकापूगफले (१·१७०). ५ न वा मयूखलवणचतुर्गुणचतुर्थचतुर्दशचतुर्वारसुकुमारकुतूहलोदूखलोलूखले (१·१७१). ६ उमो निषण्णे (१·१७४). ७ स्वरादसंयुक्तस्यानादेः (१·१७६). ८ कगचजतदपयवां प्रायो लुक् (१·१७७). ९ नावर्णात्पः (१·१७९). १० अवर्णो यश्रुतिः (१·१८०). ११यमुनाचामुण्डाकामुकातिमुक्तके मोऽनुनासिकश्च (१·१७८). १२ कुब्जकर्परकीले कः खोऽपुष्पे (१·१८१). १३ छागे लः (१·१९१); शृंखले खः कः (१·१८९); किराते चः (१·१८३). १५ मरकतमदकले गः कन्दुके त्वादेः (१·१८२). १६ पुन्नाग-भागिन्योर्गो मः (१·१९०); चन्द्रिकायां मः (१·१८५). १७ शीकरे भहौ वा(१·१८४). १८ ऊत्वे दुर्भगसुभगे वः (१·१९२). १९ निकषस्फटिकचिकुरे हः (१·१८६). २० खघथधभाम् (१·१८७). २१ पृथकि धो वा (१·१८८). २२ खचितपिशाचयोःश्चः सल्लौ वा (१·१९३). २३ जटिले जो झो वा (१·१९४). २४ डो लः (१·२०२); चपेटापाटौ वा (१·१९८). २५ स्फटिके लः (१·१९७). २६ अंकोठे ल्लः (१.२००).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
२७ ढः कैटभशकटसटे	५०
२८ ढः	५०
२९ पिठरे ह्रस्तु रश्च ढः	५०
३० लल् डोऽनुडुगे	५०
३१ टो डः	५०
३२ वेतस इति तोः	५१
३३ प्रतिगेऽप्रतीपगे	५१
३४ दंशदहोः	५१
३५ दम्भदरदर्भगर्दभदष्टदशनदग्धदाहदोहददोलादण्डकदने तु	५२
३६ तुच्छे चच्छौ	५२
३७ टल् त्रसरवृन्ततूबरतगरे	५२
३८ हः कातरककुदवितस्ति-	५२
मातुलिङ्गे	५२
३९ तु वसतिभरते	५२
४० लः पलितनिम्बकदम्बे	५३
४१ दोहदप्रदीपशातवाहनातस्याम्	५३
४२ रल् समत्यादौ	५३
४३ अद्रुमे कदल्याम्	५३
४४ कदर्थिते स्वोर्वः	५३
४५ पीते ले वा	५३
४६ डो दीपि	५४
४७ ढः पृथिव्यौषधनिशीथे	५४
४८ प्रथमशिथिलमेथिशिथिरनिषधेषु	५४
४९ णर्दिना रुदिते	५४
५० णो वातिमुक्तके	५५
५१ गर्भिते	५५
५२ नः	५५
५३ आदेस्तु	५५
५४ नापिते ण्हः	५५
५५ पो वः	५५

२७ सटाशकटकैटभे ढः (१·१९६). २८ ठो ढः (१·१९९). २९ पिठरे हो वा रश्च डः (१·२०१). ३० डो लः (१·२०२). ३१ टो डः (१·१९५). ३२ इत्वे वेतसे (१·२०७). ३३ प्रत्यादौ डः (१·२०६). ३४ दंशदहोः (१·२१८). ३५ दशनदष्टदग्धदोलादण्डदरदाहदम्भदर्भकदनदोहदे दो वा डः (१·२१७); गर्दभे वा (२·३७). ३६ तुच्छे तश्चछौ वा (१·२०४). ३७ तगरत्रसरतूबरे टः (१·२०५); वृन्ते ण्टः (२·३१). ३८ वितस्तिवसतिभरतकातरमातुलुङ्गे हः (१·२१४); ककुदे हः (१·२२५). ४० पलिते वा (१·२१२); कदम्बे वा (१·२२२). ४१ प्रदीपिदोहदे लः (१·२२१); अतसीसातवाहने लः (१·२११). ४२ समतौ रः (१·२१०). ४३ कदल्यामद्रुमे (१·२२०). ४४ कदर्थिते वः (१·२२४). ४५ पीते वो ले वा (१·२१३). ४६ दीपौ धो वा (१·२२३). ४७ निशीथपृथिव्योर्वा (१·२१६); वौषधे (१·२२७). ४८ मेथिशिथिरशिथिलप्रथमे थस्य ढः (१·२१५); निषधे धो ढः (१·२२६). ४९ रुदिते दिना ण्णः (१·२०९). ५०-५१ गर्भितातिमुक्तके णः (१·२०८). ५२ नो णः (१·२२८). ५३ वादौ (१·२२९). ५४ निम्बनापिते लण्हं वा (१·२३०). ५५ पो वः (१·२३१).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
५६ फः पाटिपरिघपरिखापरुष-पनसपारिभद्रेषु	५६
५७ नीपापीडे मो वा	५६
५८ रल् पापर्द्धौ	५६
५९ प्रभूते वः	५६
६० फस्य भहौ वा	५७
६१ बो वः	५७
६२ ङ्वयौ कबन्धे	५७
६३ बिसिन्यां भः	५७
६४ वो भस्य कैटभे	५७
६५ त्वभिमन्यौ मः	५७
६६ मन्मथे	५८
६७ तु ढो विषमे	५८
६८ यो जर्तीयानीयोत्तरीयकृत्येषु	५८
६९ इन्मयटि	५८
७० छायायां होऽकान्तौ	५८
७१ यष्ट्यां लल्	५८
७२ कतिपये वहशौ	५९
७३ अर्थपरे तो युष्मदि	५९
७४ आदेर्जः	५९
७५ भ्यौ बृहस्पतौ तु बहोः	५९
७६ रो डा पर्याणे	५९
७७ लो जठरबठरनिष्ठुरे	५९
७८ हरिद्रादौ	६०
७९ किरिबेरे डः	६०
८० खोः करवीरे णः	६०
८१ लो ललाटे च	६०
८२ लोहललाङ्गललाङ्गूले वा	६१
८३ स्थूले रल्लतश्चौल्	६१
८४ बो मः शबरे	६१
८५ नीवीस्वप्ने वा	६१
८६ हस्य घो बिन्दोः	६१
८७ शोः सल्	६१
८८ प्रत्यूषदिवसदशपाषाणे तु हः	६२

५६ पाटिपरुषपरिघपरिखापनसपारिभद्रे फः (१·२३२). ५७ नीपापीडे मो वा (१·२३४). ५८ पापर्द्धौ रः (१·२३५). ५९ प्रभूते वः (१·२३३). ६० फो भहौ (१·२३६). ६१ बो वः (१·२३७). ६२ कबन्धे मयौ (१·२३९) ६३ बिसिन्यां भः (१·२३८) ६४ कैटभे भो वः (१·२४०). ६५ वाभिमन्यौ (१·२४३). ६६ मन्मथे वः (१·२४२). ६७ विषमे मो ढो वा (१·२४१). ६८ वोत्तरीयानीयतीयकृद्ये ज्जः (१·२४८). ६९ मयट्यइर्वा (१·५०). ७० छायायां होऽकान्तौ वा (१·२४९). ७१ यष्ट्यां लः (१·२४७). ७२ डाहवौ कतिपये (१·२५०). ७३ युष्मद्यर्थपरे तः (१·२४६) ७४ आदेर्यो जः (१·२४५). ७५ बृहस्पतौ बहो भयः (२·१३७). ७६ पर्याणे डा वा (१·२५२). ७८ हरिद्रादौ लः (१·२५४). ७९ किरिभेरे रो डः (१·२५१). ८० करवीरे णः (१·२५३). ८१ ललाटे च (१·२५७). ८२ लाहललाङ्गललाङ्गूले वादेर्णः (१·२५६). ८३ स्थूले लो रः (१·२५५). ८४ शबरे बो मः (१·२५८). ८५ स्वप्न-नीव्योर्वा (१·२५९). ८६ हो घोऽनुस्वारात् (१·२६४). ८७ शषोः सः (१·२६०). ८८ दशपाषाणे हः (१·२६२); दिवसे सः (१·२६३); प्रत्यूषे षश्च हो वा (२·१४).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
८९ स्नुषायां ण्हः फोः	६२
९० छल् षट्शमीसुधाशाव-सप्तपर्णे	६२
९१ सिरायां वा	६२
९२ लुक्पाद पीठपादपतन दुर्गा-देव्युदुम्बरे ऽन्तर्दः	६२
९३ व्याकरणप्राकारागते कगोः	६३
९४ एवमेवदेव कुलप्रावारकयाव-ज्जीविताव टाव र्तमान-तावति वः	६३
९५ उर्योर्दनुजवव राजकुलभाजन-कालायस किसलयहृदयेषु	६३
९६ अपतौ घरो गृहस्य	६४
९७ स्त्रीभगिनी दुहितृवनिताना-मित्थीबहिणीधूआविलयाः	६४
९८ उभयाधसोरवहहेट्ठौ	६४
९९ मलिनधृतिपूर्ववैडूर्याणां मइलदिहिपुरिमवेरुलिआः	६४
१०० स्मरकद्वोरीसरकारौ	६४
१०१ बाहिंबाहिरौ बहिसः	६४
१०२ कूरो गौणेषदः	६५
१०३ एण्हि एत्ताहे इदानीमः	६५
१०४ तिर्यक्पदातिशुक्तेस्ति-रिच्छि पाइक्क सिप्पी	६५
१०५ गोणाद्याः	६५

चतुर्थः पादः ।

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१ स्तोः	७०
२ वा रक्ते गः	७०
३ शुल्के ङ्गः	७०
४ कः शक्तमुक्तदष्टमृदुत्व-रुग्णेषु	७०

८९ स्नुषायां ण्हो न वा (१·२६१). ९० षट्शमीशावसुधासप्तपर्णेष्वादेश्छः (१·२६५). ९१ शिरायां वा (१·२६६). ९२ दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतनपादपीठेऽन्तर्दः (१·२७०). ९३ व्याकरणप्राकारागते कगोः (१·२६८). ९४ यावत्तावज्जीवितावर्तमानावटप्रावारकदेवकुलैवमेवे वः (१·२७१). ९५ लुग्भाजनदनुजराजकुले जः सस्वरस्य न वा (१·२६७); किसलयकालायसहृदये यः (१·२६९). ९६ गृहस्य घरोऽपतौ (२·१४४). ९७ दुहितृभगिन्योर्धूआबहिण्यौ (२·१२६); वनिताया विलया (२·१२८); स्त्रिया इत्थी (२·१३०). ९८ अधसो हेट्ठं (२·१४१); मलिनोभय° (२·१३८). ९९ मलिनोभयशुक्तिछुप्तारब्धपदातेर्मइलावहसिप्पिछिक्काढत्तपाइक्कं (२·१३८); धृतेर्दिहिः (२·१३१); पूर्वस्य पुरिमः (२·१३५); वैडूर्यस्य वेरुलिअं (२·१३३). १०१ बहिसो बाहिंबाहिरौ (२·१४०). १०२ गौणस्येषतः कूरः (२·१२९). १०३ एण्हि एत्ताहे इदानीमः (२·१३४). १०४ तिर्यचस्तिरिच्छिः (२·१४३); मलिनोभय° (२·१३८). १०५ गोणादयः (२·१७४).

१ संयुक्तस्य (२·१). २ रक्ते गो वा (२·१०). ३ शुल्के ङ्गो वा (२·११). ४ शक्तमुक्तदष्टरुग्णमृदुत्वे को वा (२·२).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
५ क्ष्वेडकगे खल्	७०
६ ष्कस्कोर्नाम्नि	७१
७ वुश्च रुर्वृक्षे	७१
८ क्षः	७१
९ स्थाणावहरे	७१
१० स्कन्दतीक्ष्णशुष्के तु खोः	७१
११ स्तम्भे	७२
१२ थलस्पन्दे	७२
१३ स्त्यानचतुर्थे च तु ठः	७२
१४ ष्टः	७२
१५ विसंस्थुलास्थ्यधनार्थे	७२
१६ चः कृत्तिचत्वरे	७२
१७ त्योऽचैत्ये	७३
१८ श्चेर्वृश्चिके ञ्चुर्वा	७३
१९ उत्सवऋक्षोत्सुकसामर्थ्ये छो वा	७३
२० क्षमायां कौ	७३
२१ क्षण उत्सवे	७३
२२ स्पृहादौ	७३
२३ थ्यश्चत्सप्सामनिश्चले	७४
२४ द्यय्यर्यां जः	७४
२५ त्वभिमन्यौ जर्जौ	७४
२६ ध्यह्योर्झल्	७४
२७ साध्वसे	७४
२८ ध्वजे वा	७५
२९ इन्धौ	७५
३० र्तस्याधूर्तादौ टः	७५
३१ प्रवृत्तसंदष्टमृत्तिवृत्तेष्टा-पत्तनकदर्थितोष्ट्रे	७५
३२ वा न्तन्धौ मन्युचिह्नयोः	७६
३३ डल् फोर्मर्दितविच्छर्दच्छर्दि-कपर्दवितर्दिगर्तसंमर्दे	७६

५ क्ष्वेटकादौ (२·६) ६ ष्कस्कयोर्नाम्नि (२·४). ७ वृक्षक्षिप्तयो रुक्खछूढौ (२·१२७). ८ क्षः खः क्वचित्तु छझौ (२·३). ९ स्थाणावहरे (२·७). १० शुष्कस्कन्दे वा (२·५); तीक्ष्णे णः (२·८२). ११ स्तम्भे स्तो वा (२·८). १२ थठावस्पन्दे (२·९). १३ स्त्यानचतुर्थार्थे वा (२·३३). १४ ष्टस्यानुष्ट्रेष्टासंदष्टे (२·३४). १५ ठोऽस्थिविसंस्थुले (२·३२). १६ कृत्तिचत्वरे चः (२·१२). १७ त्योऽचैत्ये (२·१३). १८ वृश्चिके श्चे ञ्चुर्वा; (२·१६). १९ सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा (२·२२); ऋक्षे वा (२·१९). २० क्षमायां कौ (२·१८). २१ क्षण उत्सवे (२·२०). २२ स्पृहायाम् (२·२३). २३ ह्रस्वात् थ्यश्चत्सप्सामनिश्चले (२·२१). २४ द्ययर्यां जः (२·२४). २५ अभिमन्यौ जञ्जौ वा (२·२५). २६-२७ साध्वसध्यह्यां झः (२·२६) २८ ध्वजे वा (२·२७). २९ इन्धौ झा (२·२८). ३० र्तस्याधूर्तादौ (२·३०). ३१ वृत्तप्रवृत्तमृत्तिकापत्तनकदर्थिते टः (२·२९); ष्टस्यानुष्ट्रेष्टासंदष्टे (२·३४) ३२ मन्यौ न्तो वा (२·४४); चिह्ने न्धो वा (२·५०). ३३ गर्ते डः (२·३५); संमर्दवितर्दिविच्छर्दच्छर्दिकपर्दमर्दिते र्दस्य (२·३६).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३४ ढोऽर्धर्द्धिश्रद्धामूर्ध्नि तु	७६
३५ दग्धविदग्धवृद्धिदंष्ट्रावृद्धे	७६
३६ पञ्चदशादत्तपञ्चाशति णः	७६
३७ ज्ञम्नोः	७७
३८ स्तवो थो वा	७७
३९ रो ह्रश्चोत्साहे	७७
४० स्तः	७७
४१ पर्यस्ते टश्च	७७
४२ वात्मभस्मनि पः	७७
४३ ड्मक्मोः	७८
४४ ष्पस्पोः फः	७८
४५ भीष्मे	७८
४६ श्लेष्मबृहस्पतौ तु फोः	७८
४७ ग्मो मः	७८
४८ न्मः	७८
४९ ताम्राम्रयोर्म्बः	७८
५० ऊर्ध्वे भो वा	७९
५१ ह्वः	७९
५२ वश्च विह्वले	७९
५३ काश्मीरे म्भः	७९
५४ लो वार्द्रे	७९
५५ र्यः सौकुमार्यपर्यस्तपर्याणे	७९
५६ अररीअरिज्जमाश्चर्ये	७९
५७ ह्रेरो ब्रह्मचर्यसौन्दर्ये च	८०
५८ वा पर्यन्ते	८०
५९ धैर्ये रः	८०
६० तूर्यदशार्हशौण्डीर्ये	८०
६१ बाष्पे होऽश्रुणि	८०
६२ कार्षापणे	८०
६३ न वा तीर्थदुःखदक्षिणदीर्घे	८१
६४ कूष्माण्ड्यां ण्डश्च तु लः	८१
६५ त्वथ्वद्ध्वां क्वचिच्चछजझाः	८१
६६ ह्लो ल्हः	८१

३४ श्रद्धर्द्धिमूर्धार्धे न्ते वा (२·४१). ३५ दग्धविदग्धवृद्धिवृद्धे ढः (२·४०); दंष्ट्राया दाढा (२·१३९). ३६ पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते (२·४३). ३७ ज्ञम्नोर्णः (२·४२). ३८ स्तवे थो वा (२·४६). ३९ वोत्साहे थो ह्रश्च. रः (२·४८). ४० स्तस्य थोऽसमस्तस्तम्बे (२·४५). ४१ पर्यस्ते थटौ (२·४७). ४२ भस्मात्मनोः पो वा (२·५१). ४३ ड्मक्मोः (२·५२). ४४ ष्पस्पयोः फः (२·५३). ४५ भीष्मे ष्मः (२·५४). ४६ श्लेष्मणि वा (२·५५); बृहस्पतिवनस्पत्योः सो वा (२·६९). ४७ ग्मो वा (२·६२). ४८ न्मो मः (२·६१). ४९ ताम्राम्रे म्बः (२·५६). ५० वोर्ध्वे (२·५९). ५१ ह्रो भो वा (२·५७). ५२ वा विह्वले भो वश्च (२·५८). ५३ कश्मीरे म्भो वा (२·६०). ५४ उदोद्वार्द्रे (१·८२). ५५ पर्यस्तपर्याणसौकुमार्ये ल्लः (२·६८). ५६ अतो रिआररिज्जरीअं (२·६७). ५७ ब्रह्मचर्यतूर्यसौन्दर्यशौण्डीर्ये र्यो रः(२·६३). ५८ एतः पर्यन्ते (२·६५). ५९ धैर्ये वा (२·६४). ६० ब्रह्मचर्यतूर्यसौन्दर्यशौण्डीर्ये र्यो रः (२·६३); दशार्हे (२·८५). ६१ बाष्पे होऽश्रुणि (२·७०). ६२ कार्षापणे (२.७१). ६३ दुःखदक्षिणतीर्थे वा (२·७२). ६४ कूष्माण्ड्यां ष्मो लस्तु ण्डो वा (२·७३). ६५ त्वथ्वद्ध्वां चछजझाः क्वचित् (२·१५). ६६ ह्लो ल्हः (२·७६).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
६७ श्मष्मस्मह्मामस्मररश्मौ म्हः	८१
६८ पक्ष्मणि	८२
६९ श्नष्णस्नह्नह्णक्ष्णां ण्हः	८२
७० सूक्ष्मे	८२
७१ आश्लिष्टे लधौ	८२
७२ ठढौ स्तब्धे	८२
७३ तो ढो रभ्यारब्धे तु	८२
७४ सो बृहस्पतिवनस्पत्योः	८२
७५ शोर्लुक् खोः स्तम्बसमस्त-निस्पृहपरस्परश्मशान-श्मश्रौ	८३
७६ श्चस्य हरिश्चन्द्रे	८३
७७ कगटडतदप×क×पशो-रुपर्यद्रे	८३
७८ लवरामधश्च	८४
७९ मनयाम्	८४
८० धात्रीद्रे रस्तु	८५
८१ हस्य मध्याह्ने	८५
८२ ज्ञो ञोऽविज्ञाने	८५
८३ द्रोर्द्वारे	८५
८४ रात्रौ	८५
८५ रितो द्वित्वल्	८६
८६ शेषादेशस्याह्रोऽचोऽखोः	८६
८७ दीर्घान्न	८७
८८ कर्णिकारे णो वा	८७
८९ धृष्टद्युम्ने	८७
९० वा से	८७
९१ प्रमुक्तगे	८८
९२ दैवगेषु	८८
९३ तैलादौ	८८
९४ पूर्वमुपरि वर्गस्य युजः	८९
९५ प्राक् श्लाघाप्लक्षशार्ङ्ग-ङ्क्लोऽत्	८९
९६ क्ष्मारत्नेऽन्त्यहलः	८९
९७ स्नेहाग्न्योर्वा	८९
९८ शर्षतप्तवज्रेष्वित्	९०

६७-६८ पक्ष्मश्मष्मस्मह्मां म्हः (२·७४). ६९-७० सूक्ष्मश्नष्णस्नह्नह्णक्ष्णां ण्हः (२·७५) ७१ आश्लिष्टे लधौ (२·४९). ७२ स्तब्धे ठढौ (२·३९). ७३ आङो रभे रम्भढवौ (४·१५५). ७४ बृहस्पतिवनस्पत्योः सो वा (२.६९). ७५ स्तस्य थोऽसमस्तस्तम्बे (२·४५); आदेः श्मश्रुश्मशाने (२·८६). ७६ श्चो हरिश्चन्द्रे (२·८७). ७७ कगटडतदपशषस×क×पामूर्ध्वं लुक् (२·७७). ७८ सर्वत्र लवरामवन्द्रे (२·७९). ७९ अधो मनयाम् (२·७८). ८० धात्र्याम् (२·८१); द्रे रो न वा (२·८०). ८१ मध्याह्ने हः (२·८४). ८२ ज्ञो ञः (२·८३). ८४ रात्रौ वा (२·८८). ८६ अनादौ शेषादेशयो-र्द्वित्वम् (२·८९). ८७ न दीर्घानुस्वारात् (२·९२). ८८ कर्णिकारे वा (२·९५). ८९ धृष्टद्युम्ने णः (२·९४). ९०-९१ समासे वा (२·९७). ९२ सेवादौ वा (२·९९); ९३ तैलादौ (२·९८). ९४ द्वितीयतुर्ययोरुपरि पूर्व.(२·९०) ९५ क्ष्माश्लाघारत्नेऽन्त्य-व्यञ्जनात् (२·१०१); शार्ङ्गे ङात्पूर्वोऽत् (२·१००); प्लक्षे लात् (२·१०३). ९६ क्ष्माश्लाघारत्नेऽन्त्यव्यञ्जनात् (२·१०१). ९७ स्नेहाग्न्योर्वा (२·१०२). ९८ शर्षतप्त-वज्रे वा (२·१०५).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
९९ ह्रर्गामर्शश्रीह्रीक्रियाद्यशमर्श-कृत्स्नदिष्ट्याहे	९०
१०० स्याद्भव्यचैत्यचौर्यसमे यात्	९०
१०१ लाद्कलीबेषु	९१
१०२ नात्स्वप्ने	९१
१०३ स्निग्धे त्वदितौ	९१
१०४ कृष्णे वर्णे	९१
१०५ अर्हत्युश्च	९२
१०६ तन्व्यामे	९२
१०७ सुघ्ने यात्	९२
१०८ एकाचि श्वःस्वे	९२
१०९ वा छद्मपद्ममूर्खद्वारे	९३
११० ईल् ज्यायाम्	९३
१११ हश्च महाराष्ट्रे ह्रोर्व्यत्ययः	९३
११२ लनोरालाने	९३
११३ वाराणसीकरेण्वां रणोः	९३
११४ ललाटे डलोः	९३
११५ ह्रदे दहयोः	९३
११६ चलयोरचलपुरे	९३
११७ ह्यो ह्योर्वा	९३
११८ लघुके लहोः	९४
११९ रलोर्हरिताले	९४
१२० दर्वीकरनिवहौ दव्वी-रयणिहवौ	९४
१२१ गहिआद्याः	९४

द्वितीयोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१ मन्तमणवन्तमाआलुआल-इरइल्लउल्लइन्ता मतुपः	१०१
२ वतुपो डित्तिअमेतल्लुक् चैतत्तदः	१०१
३ किमिदमश्च डेत्तिअडित्तिल-एद्दहम्	१०२
४ इकः पथो णस्य	१०२

९९ हंश्रीह्रीकृत्स्नक्रियादिष्ट्यास्वित् (२·१०४). १०० स्याद्भव्यचैत्यचौर्यसमेषु यात् (२·१०७). १०१ लात् (२·१०६). १०२ स्वप्ने नात् (२·१०८). १०३ स्निग्धे वादितौ (२·१०९). १०४ कृष्णे वर्णे वा (२·११०). १०५ उच्चार्हति (२·१११). १०६ तन्वीतुल्येषु (२·११३). १०८ एकस्वरे श्वःस्वे (२·११४). १०९ पद्मछद्ममूर्खद्वारे वा (२·११२). ११० ज्यायामीत् (२·११५). १११ महाराष्ट्रे हरोः (२·११९). ११२ आलाने लनोः (२·११७). ११३ करेणूवाराणस्यो रणोर्व्यत्ययः (२·११६). ११४ ललाटे लडोः (१·१२३). ११५ ह्रदे हदोः (२·१२०) ११६ अचलपुरे चलोः (२·११८). ११७ ह्ये ह्योः (२·१२४). ११८ लघुके लहोः (२·१२२). ११९ हरिताले रलोर्न वा (२·१२१).

१ आल्विल्लोल्लालवन्तमन्तेत्तेरमणा मतोः (२·१५९). २ यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च (२·१५६). ३ इदंकिमश्च डेत्तिअडेत्तिलडेद्दहाः (२·१५७). ४ पथो णस्येकट् (२·१५२).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः	क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
५ ङस्य सर्वाङ्गात्	१०२	२३ मनाको डअं च वा	१०५
६ ङस्यात्मनो णअः	१०२	२४ रो दीर्घात्	१०६
७ ह्रित्थहाल्लः	१०२	२५ डुमअडमऔल् भ्रुवः	१०६
८ केर इदमर्थे	१०३	२६ लो वा विद्युत्पत्रपीतान्धात्	१०६
९ राजपराड्डिक्कडक्कौ	१०३	२७ त्वादेः सः	१०६
१० डेच्चओ युष्मदस्मदोऽणः	१०३	२८ इरः शीलाद्यर्थस्य	१०६
११ वर्वतेः	१०३	२९ तुमत्तुआणतूणाः क्त्वः	१०७
१२ तैलस्यानङ्कोलाड्डेल्लः	१०३	३० वरइत्तगास्तृनाद्यैः	१०७
१३ त्वस्य तु डिमात्तणौ	१०३	३१ अव्ययम्	११४
१४ दो त्तो तसः	१०४	३२ आम अभ्युपगमे	११५
१५ एकाद्दः सिसिआइआ	१०४	३३ तं वाक्योपन्यासे	११५
१६ ल्हुत्तः कृत्वसुचः	१०४	३४ णइ च्चेअ च्चिअ च्च एवार्थे	११५
१७ भवे डिल्लोल्लडौ	१०४	३५ हद्धि निर्वेदे	११५
१८ स्वार्थे तु कश्च	१०५	३६ दर अर्धेऽल्पे वा	११५
१९ उपरेः संव्याने ल्लल्	१०५	३७ किणो प्रश्ने	११५
२० नवैकाद्वा	१०५	३८ मिव पिव विव विअ व व्व इवार्थे	११६
२१ मिश्राल्लिअश्	१०५	३९ किर इर हिर किलार्थे	११६
२२ शनैसो ल्डिअं	१०५		

५ सर्वाङ्गादीनस्येकः (२·१५१). ६ ईयस्यात्मणो णयः (२·१५३). ७ त्रपो हिहत्थाः (२·१६१). ८ इदमर्थस्य केरः (२·१४७) ९ परराजभ्यां क्कडिक्कौ च (२·१४८). १० युष्मदस्मदोऽञ एच्चयः (२·१४९). ११ वतेर्व्वः (२·१५०). १२ अनङ्कोठात्तैलस्य डेल्लः (२·१५५). १३ त्वस्य डिमात्तणौ वा (२·१५४). १४ त्तो दो तसो वा (२·१६०). १५ वैकाद्दः सिसिअइआ (२·१६२). १६ कृत्वसो हुत्तं (२·१५८) १७ डिल्लडुल्लौ भवे (२·१६३). १८ स्वार्थे कश्च वा (२·१६४). १९ उपरेः संव्याने (२·१६६). २० ल्लो नवैकाद्वा (२·१६५). २१ मिश्राड्डालिअः (२·१७०). २२ शनैसो डिअं (२·१६८). २३ मनाको न वा डयं च (२·१६९). २४ रो दीर्घात् (२·१७१). २५ भ्रुवो मया डमया (२·१६७). २६ विद्युत्पत्रपीतान्धाल्लः (२·१७३). २७ त्वादेः सः (२·१७२). २८ शीलाद्यर्थस्येरः (२·१४५). २९ क्त्वस्तुमत्तूणतुआणाः (२·१४६). ३१ अव्ययम् (२·१७५). ३२ आम अभ्युपगमे (२·१७७). ३३ तं वाक्योपन्यासे (२·१७६). ३४ णइ चेअ चिअ च्च अवधारणे (२·१८४). ३५ हद्धी निर्वेदे (२·१९२). ३६ दरार्धाल्पे (२·२१५). ३७ किणो प्रश्ने (२·२१६). ३८ मिव पिव विव व्व विअ इवार्थे वा (२·१८२). ३९ किरेरहिर किलार्थे वा (२·१८६).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
४० अम्हो आश्चर्ये	११६
४१ अव्वो पश्चात्तापसूचनादुःख-संभाषणापराधानन्दादर-खेदविस्मयविषादभये	११६
४२ हुं पृच्छादाननिवारणे	११७
४३ वणे निश्चयानुकम्प्यविकल्पे	११७
४४ संभावने अइ च	११७
४५ आनन्तर्ये णवरिअ	११७
४६ केवले णवर	११७
४७ भन्द ग्रहणार्थे	११७
४८ भन्दि विकल्पविषादसत्य-निश्चयपश्चात्तापेषु च	११७
४९ संभाषणरतिकलहे रे अरे	११८
५० हरे क्षेपे च	११८
५१ धू कुत्सायाम्	११८
५२ ऊ गर्हाविस्मयसूचनाक्षेपे	११८
५३ पुणरुत्तं कृतकरणे	११८
५४ हु खु निश्चयविस्मयवितर्के	११८
५५ णवि वैपरीत्ये	११९
५६ वेव्वे विषादभयवारणे	११९
५७ आमन्त्रणे वेव्वे च	११९
५८ वा सख्या मामि हला हले	११९
५९ दे संमुखीकरणे	११९
६० ओ पश्चात्तापसूचने	११९
६१ अण णाइं नञर्थे	१२०
६२ निश्चयनिर्धारणे वले	१२०
६३ मणे विमर्शे	१२०
६४ माई मार्थे	१२०
६५ अलाहि निवारणे	१२०
६६ लक्षणे जेण तेण	१२०
६७ त्वोद्वापोताः	१२०
६८ उ ओ उपेः	१२१
६९ प्रत्येकमः पडिएक्कं पाडिक्कं	१२१
७० स्वयमोऽर्थे अप्पणा	१२१

४० अम्मो आश्चर्ये (२·२०८). ४१ अव्वो सूचनादुःखसंभाषणापराधविस्मयानन्दादरभयखेदविषादपश्चात्तापे (२·२०४). ४२ हुं दानपृच्छानिवारणे (२·१९७). ४३ वणे निश्चयविकल्पानुकम्प्ये च (२·२०६). ४४ अइ संभावने (२·२०५). ४५ आनन्तर्ये णवरि (२·१८८). ४६ णवर केवले (२·१८७). ४७ हन्द च गृहाणार्थे(२·१८१). ४८ हन्दि विषादविकल्पपश्चात्तापनिश्चयसत्ये (२·१८०). ४९ रे अरे संभाषणरतिकलहे (२·२०१). ५० हरे क्षेपे च (२·२०२). ५१ थू कुत्सायाम् (२·२००). ५२ ऊ गर्हाक्षेपविस्मयसूचने (२·१९९). ५३ पुणरुत्तं कृतकरणे (२·१७९). ५४ हु खु निश्चयवितर्कसंभावनविस्मये (२·१९८). ५५ णवि वैपरीत्ये (२·१७८). ५६ वेव्वे भयवारणविषादे (२·१९३). ५७ वेव्व च आमन्त्रणे (२·१९४). ५८ मामि हला हले सख्या वा (२·१९५). ५९ दे संमुखीकरणे च (२·१९६). ६० ओ सूचनापश्चात्तापे (२·२०३). ६१ अण णाइं नञर्थे (२·१९०). ६२ बले निर्धारणनिश्चययोः (२·१८५) ६३ मणे विमर्शे(२·२०७). ६४ माइं मार्थे(२·१९१).६५ अलाहि निवारणे (२·१८९). ६६ जेण तेण लक्षणे (२·१८३). ६७ अवापोते (१·१७२). ६८ उच्चोपे (१·१७३). ६९ प्रत्येकमः पाडिक्कं पाडिएक्कं (२·२१०). ७० स्वयमोर्थे अप्पणो न वा (२·२०९).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
७१ एक्कसरिअं झटिति संप्रति	१२१
७२ इहरा इतरथा	१२१
७३ मुधा मोरउल्ला	१२१
७४ अयि पे	१२१
७५ उअ पश्य	१२२
७६ इजेराः पादपूरणे	१२२
७७ प्याद्याः	१२२

द्वितीयः पादः ।

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१ वीप्सार्थात्तदच्चि सुपो मस्तु	१२३
२ अमः	१२३
३ श्लुग्जश्शसोः	१२३
४ णशामः	१२३
५ हिं हिँ हि भिसः	१२४
६ हिंतोत्तोदोदु ङसिस्	१२४
७ सुंतो भ्यसः	१२४
८ दिर्दोत्तोदु ङसौ	१२५
९ सोर्लुक्	१२५
१० ङसोऽस्त्रियां स्स्	१२५
११ ङेर्म्मिर्	१२५
१२ अतो डो विसर्गः	१२६
१३ सोः	१२६
१४ वैतत्तदः	१२६
१५ ङसेः श्लुक्	१२६
१६ ङेर्डे	१२६
१७ ङसिसो हि	१२६
१८ टो डेणल्	१२६
१९ दिर्वा भ्यसि	१२७
२० शस्येत्	१२७
२१ भिस्भ्यस्सुपि	१२७
२२ इदुतोर्दिः	१२७
२३ चतुरो वा	१२७
२४ पुंसो जसो डउडओ	१२८
२५ डवो उतः	१२८
२६ णो शसश्च	१२८
२७ नृनपि ङसिङसोः	१२८
२८ टो णा	१२८

७१ एक्कसरिअं झगिति संप्रति (२·२१३). ७२ इहरा इतरथा (२·२१२). ७३ मोरउल्ला मुधा (२·२१४). ७४ अयि वैन् (१·१६९). ७५ उअ पश्य (२·२११). ७६ इजेराः पादपूरणे (२·२१७). ७७ प्यादयः (२·२१८).

१ वीप्स्यात्स्यादेर्वीप्स्ये स्वरे मो वा (३·१). २ अमोऽस्य (३·५). ३ जश्शसोर्लुक् (३·४). ४ टा-आमोर्णः (३·६).५ भिसो हि हिँ हिं (३·७). ६ ङसेस्तोदोदुहिहिन्तोलुकः (३·८). ७ भ्यसस्तोदोदुहिहिन्तोसुन्तो (३·९). ८ जस्शस्ङसि त्तोदोद्वामि दीर्घः (३·१२). १० ङसः स्सः (३·१०). ११ डे म्मि ङेः (३·११). १२ अतःसेर्डोः (३·२). १३ अतः सेर्डोः (३·२). १४ वैतत्तदः (३·३). १५ ङसेस्तोदोदुहिहिन्तोलुकः (३·८). १६ डे म्मि ङेः (३·११). १७ ङसेस्तोदोदुहिहिन्तोलुकः (३·८). १८ टामोर्णः (३·६); टाण शस्येत् (३·१४). १९ भ्यसि वा (३·१३). २० टाण शस्येत् (३·१४). २१ भिसभ्यस्सुपि (३·१५). २२ इदुतोर्दीर्घः (३·१६). २३ चतुरो वा (३·१७). २४ पुंसि जसो डउ डओ वा (३·२०). २५ वोतो डवो (३·२१). २६ जसशसोर्णो वा (३·२२). २७ ङसिङसो पुंक्लीबे वा (३·२३). २८ टो णा (३·२४).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
२९ ग्लुगनपि सोः	१२९
३० मङ्लुगसंबुद्धेर्नपः	१२९
३१ ञ्रिर्शिशिङ्क जश्शसोः	१२९
३२ शो शु स्त्रियां तु	१२९
३३ आदीतः सोश्च	१२९
३४ ङसेः शशाशिशे	१३०
३५ टाङिङसाम्	१३०
३६ नातः शा	१३०
३७ पुंसोऽजातेर्ङीब्वा	१३०
३८ ङीप्रत्यये	१३१
३९ हरिद्राच्छाये	१३१
४० किंयत्तदोऽस्वमामि सुपि	१३१
४१ स्वसृगाङ्गाल्	१३१
४२ डोग्लुकौ तु संबुद्धेः	१३१
४३ ऋदन्ताङ्गः	१३२
४४ नाम्नि ङरम्	१३२
४५ टापो ङे	१३२
४६ ह्रस्वलीदूतः	१३२
४७ क्विपः	१३२
४८ उद्दतां त्वस्वमामि	१३३
४९ आरः सुपि	१३३
५० मातुरा अरा	१३३
५१ संज्ञायामरः	१३४
५२ आ सौ वा	१३४
५३ राज्ञः	१३४
५४ टो णा	१३४
५५ जश्शस्ङसिङसां णोश्	१३४
५६ णोणाङिष्विदना जः	१३५
५७ इणममामा	१३५
५८ भिस्भ्यसाम्सुप्स्वीत्	१३५
५९ ङस्ङसिटां णोणोर्ङण्	१३५
६० पुंस्याणो राजवच्चानः	१३६
६१ टो वात्मनो णिआ णइआ	१३६
६२ सर्वादेर्जसोऽतो ङे	१३७
६३ ङेस्त्थस्सिम्मि	१३७

२९ अक्लीबे सौ (३·१९). ३० क्लीबे स्वरान्म् सेः (३·२५). ३१ जस्शस ईंइंणयः सप्राग्दीर्घाः (३·२६). ३२ स्त्रियामुदोतौ वा (३·२७). ३३ ईतः सेश्चा वा (३·२८). ३४-३५ टाङस्ङेरदादिदेद्वा तु ङसेः (३·२९). ३६ नात आत् (३·३०). ३७ अजाते पुंसः (३·३२). ३८ प्रत्यये ङीर्न वा (३·३१). ३९ छायाहरिद्रयोः (३·३४). ४० किंयत्तदोस्यमामि (३·३३). ४१ स्वस्त्रादेर्डा (३·३५). ४२ डो दीर्घो वा (३·३८). ४३ ऋतोऽद्वा (३·३९). ४४ नाम्न्यरं वा (३·४०). ४५ वाप ए (३·४१). ४६ ईदूतोर्ह्रस्वः (३·४२). ४७ क्विपः (३·४३). ४८ ऋतामुदस्यमौसु वा (३·४४). ४९ आरः स्यादौ (३·४५). ५० आ अरा मातुः (३·४६). ५१ नाम्न्यरः (३·४७). ५२ आ सौ न वा (३·४८). ५३ राज्ञः (३·४९). ५४ टो णा (३·५१). ५५ जस्-शस्ङसिङसां णो (३·५०). ५६ इर्जस्य णो णा ङौ (३·५२). ५७ इणममामा (३·५३). ५८ ईद् भिस्भ्यसाम्सुपि (३·५४). ५९ आ जस्य टाङसिङस्सु सणाणोष्वण् (३·५५) ६० पुंस्यन आणो राजवच्च (३·५६). ६१ आत्मनष्टो णिआ णइआ (३·५७). ६२ अतः सर्वादेर्डेर्जसः (३·५८). ६३ ङेः स्सिम्मित्थाः (३·५९).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
६४ अनिदमेतदस्तु किंयत्तदः स्त्रियां च हिं	१३७
६५ आमो डेसिं	१३७
६६ किंतद्भ्यां सश्	१३७
६७ कियत्तद्भ्यो ङस्	१३८
६८ ईतः सेसार्	१३८
६९ ङिरिआ डाहे डाला काले	१३८
७० म्हा ङसेः	१३८
७१ किमो डीस डिणो	१३८
७२ डो तदस्तु	१३८
७३ इदमेतत्कियत्तद्भ्यष्टो डिणा	१३९
७४ क्वचित्सुपि तदो णः	१३९
७५ त्रतसि च किमो ल्कः	१३९
७६ इदम इमः	१३९
७७ पुंसि सुना त्वयं स्त्रिया-मिमिआ	१३९
७८ अत्सुर्स्सिहिस्से	१३९
७९ टाससि णः	१४०
८० इहेणं ङ्यमः	१४०
८१ न त्थः	१४०
८२ क्लीबे स्वमेदमिणमिणमो	१४०
८३ किं किं	१४०
८४ तदिदमेतदां सेसिं तु ङसामा	१४०
८५ एत्तो एत्ताहे ङसिनैतदः	१४१
८६ थे ङेलुक्	१४१
८७ एतदो म्मावदितौ वा	१४१
८८ सुनैस इणमो इणं	१४१
८९ तस्सौ सोऽक्लीबे तदश्च	१४१
९० सुप्यदसोऽमुः	१४२
९१ अहव्वा सुना	१४२
९२ इआओ म्मौ	१४२

तृतीयः पादः ।

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१ युष्मत्सुना तुवं तुं तुमं तुह	१४३
२ अमा तुमे तुए च	१४३

६४ न वानिदमेतदो हिं (३·६०). ६५ आमो डेसिं (३·६१). ६६ किंतद्भ्यां डासः (३·६२). ६७ कियत्तद्भ्यो ङसः (३·६३). ६८ ईद्भ्यः स्सासे (३·६४). ६९ ङेर्डाहे डाला इआ काले (३·६५)). ७० ङसेर्म्हा (३·६६). ७१ किमो डिणोडीसौ (३·६८). ७२ तदो डोः (३·६७). ७३ इदमेतत्कियत्तद्भ्यष्टो डिणा (३·६९). ७४ तदो णः स्यादौ क्वचित् (३·७०). ७५ किमः कस्त्रतसोश्च (३·७१). ७६ इदम इमः (३·७२).. ७७ पुंस्त्रियोर्नवायमिमिआ सौ (३·७३). ७८ स्सिस्सयोरत् (३·७४). ७९ णोमूशसटाभिसि (३·७७). ८० अमेणम् (३·७८). ८१ न त्थः (३·७६). ८२ क्लीबे स्यमेदमिणमो च (३·७९). ८३ किमः किं (३·८०). ८४ वेदंतदेतदो ङसाम्भ्यां सेसिमौ (३·८१). ८५ वैतदो ङसेस्तो त्ताहे (३·८२). ८६ त्थे च तस्य लुक् (३·८३). ८७ एरदीतौ म्मौ वा (३·८४). ८८ वैसेणमिणमो सिना (३·८५). ८९ तदश्च तः सोऽक्लीबे (३·८६). ९० मुः स्यादौ (३·८८). ९१ वादसो दस्य होनोदाम् (३·८७). ९२ म्मावयेओ वा (३·८९).

१ युष्मदस्तं तुं तुवं तुह तुमं सिना (३·९०). २ तं तु तुमं तुवं तुह तुमे तुए अमा (३·९२).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३ जसा मे तुब्भे तुय्हे उय्हे तुब्भ	१४३
४ शसा वो च	१४३
५ टा मे ते दे दि तुमं तुमइ	१४४
६ ङिटाभ्यां तुमए तुइ तुए तुमाइ तुमे	१४४
७ तुब्भ तुहिंतो तुम्ह ङसिना	१४४
८ तु तुइ ङिपृङसौ	१४४
९ तुव तुम तुह तुब्भ	१४४
१० भिसा मेतुब्भेहिउब्भेहिउय्हे-हितुय्हेहि	१४५
११ उम्होय्हतुय्हतुब्भ भ्यसि	१४५
१२ तुब्भोब्भोय्हतइतुहंतुहतुम्हं-तुवतुमतुमेतुमाइतुमो-देतेदितितुइए ङसा	१४५
१३ तुम्हाणतुब्भतुब्भाणतुमाण-तुवाण तुहाण तुब्भ वो मे त्वामा	१४५
१४ वा ब्भो म्हज्झौ	१४६
१५ अस्मत्सुना अम्हि हमहअम-हमहम्म्यम्मि	१४६
१६ मो मे वअं जसा	१४६
१७ अम्हे अम्हो अम्ह	१४६
१८ णे च शसा	१४६
१९ मं णे णं मि मिमं ममम्मि अहं मम्हाम्ह अमा	१४६
२० मि मइ ममाइ मए मे ङिटा	१४७
२१ ममं णे मआइ ममए टा	१४७
२२ णेऽम्हेह्यम्हाह्यम्हेऽम्ह भिसा	१४७
२३ मइ मम मह मज्झ ङसौ	१४७
२४ अम्ह मम भ्यसि	१४७
२५ अम्हं मज्झं मज्झ मइ मह महं मे च ङसा	१४७

३ मे तुब्भे तुज्झ तुम्ह तुय्हे उय्हे जसा (३·९१). ४ वो तुज्झ तुब्भे तुय्हे उय्हे मे शसा (३·९३). ५ मे दि दे ते तइ तुमं तुमइ तुमए तुमे तुमाइ टा (३·९४). ६ तुमे तुमए तुमाइ तइ तए ङिना (३·१०१). ७ तुय्ह तुब्भ तहिन्तो ङसिना (३·९७). ८-९ तु तुव तुम तुह तुब्भा ङौ (३·१०२); तइ तुव तुम तुह तुब्भा ङसौ (३·९६). १० मे तुब्भेहिं उज्झेहिं उम्हेहि तुय्हेहिं उय्हेहिं भिसा (३·९५). ११ तुब्भतुय्होय्होम्हा भ्यसि (३·९८). १२ तइ तु ते तुम्हं तुह तुहं तुव तुम तुमे तुमो तुमाइ दि दे इ ए तुब्भोब्भोय्हा ङसा (३·९९). १३ तु वो भे तुब्भ तुब्भं तुब्भाण तुवाण तुमाण तुहाण उम्हाण आमा (३·१००). १४ ब्भो म्हज्झौ वा (३·१०४). १५ अस्मदो म्मि अम्मि अम्हि हं अहं अहयं सिना (३·१०५). १६-१७ अम्ह अम्हे अम्हो मो वयं भे जसा (३·१०६). १८ अम्हे अम्हो अम्ह णे शसा (३·१०८). १९ णे णं मि अम्मि अम्ह मम्ह मं ममं मिमं अहं अमा (३·१०७). २०-२१ मि मे मम ममए ममाइ मइ मए मयाइ णे टा (३·१०९). २२ अम्हेहि अम्हाहि अम्ह अम्हे णे भिसा (३·११०). २३ मइ मम मह मज्झा ङसौ (३·१११). २४ ममाम्हौ भ्यसि (३·११२). २५ मे मइ मम मह महं मज्झ मज्झं अम्ह अम्हं ङसा (३·११३).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
२६ अम्हे अम्हो अम्हाण ममाण महाण मज्झाण मज्झा-म्हाम्हं णे णो आमा	१४८
२७ अम्ह मम मज्झ मह ङिपि	१४८
२८ चतुरो जश्शस्भ्यां चउरो चत्तारो चत्तारि	१४८
२९ तिण्णि त्रेः	१४८
३० दोण्णि दुवे वेण्णि द्वे	१४८
३१ दो वे टादौ च	१४९
३२ ति त्रेः	१४९
३३ ण्ह ण्हं संख्याया आमोऽविंशतिगे	१४९
३४ द्विवचनस्य बहुवचनम्	१४९
३५ ङेस्रो ङम्	१४९
३६ तादर्थ्ये ङेस्तु	१५०
३७ वधाड्डाइ च	१५०
३८ क्वचिद्सादेः	१५०
३९ अस्टासोर्ङिप्	१५०
४० ङसिसड्भ्याम	१५१
४१ ङिपोऽस्	१५१
४२ लुक् क्यङोर्यस्तु	१५१

चतुर्थः पादः ।

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१ लटस्तिमाविजेच्	१५२
२ सिप्थास्सेसि	१५२
३ मिर्मिविटौ	१५२
४ झिझौ न्ति न्ते इरे	१५२
५ थध्वमित्थाहचौ	१५३
६ मो म मु मस्महिङ्	१५३
७ अत एवैच् से	१५३
८ त्वस्तेर्म्हम्होम्हि ममोमिना	१५३
९ सिना ल्सि	१५३
१० तिङात्थि	१५४
११ णिजदेदावावे	१५४
१२ शुष्यादेरविर्वा	१५४

२६ णे णो मज्झ अम्ह अम्हं अम्हे अम्हो अम्हाण ममाण महाण मज्झाण आमा (३·११४). २७ अम्ह मम मह मज्झा ङौ (३·११६); मि मइ ममाइ मए मे ङिना (३·११५). २८ चतुरश्चत्तारो चउरो चत्तारि (३·१२२). २९ त्रेस्तिण्णिः (३·१२१) ३० दुवे दोण्णि वेण्णि च जस्शसा (३·१२०). ३१ द्वेर्दो वे (३·११९). ३२ त्रेस्ती तृतीयादौ (३·११८). ३३ संख्याया आमो ण्ह ण्हं (३·१२३). ३४ द्विवचनस्य बहुवचनम् (३·१३०). ३५ चतुर्थ्याः षष्ठी (३·१३१). ३६ तादर्थ्यङेर्वा (३·१३२). ३७ वधाड्डाइश्च वा (३·१३३). ३८ क्वचिद् द्वितीयादेः (३·१३४). ३९ द्वितीया-तृतीययोः सप्तमी (३·१३५). ४० पञ्चम्यास्तृतीया च (३·१३६). ४१ सप्तम्या द्वितीया (३·१३७). ४२ क्यङोर्यलुक् (३·१३८).

१ त्यादीनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ (३·१३९). २ द्वितीयस्य सि से (३·१४०). ३ तृतीयस्य मिः (३·१४१). ४ बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे (३·१४२). ५ मध्यमस्ये-त्थाहचौ (३·१४३). ६ तृतीयस्य मोमुमाः (३·१४४). ७ अत एवैच् से (३·१४५). ८ मिमोमैर्म्हिम्होम्हा वा (३·१४७). ९ सिनास्तेः सिः (३·१४६). १० अत्थिस्त्या-दिना (३·१४८). ११ णेरदेदावावे (३·१४९). १२ गुर्वादेरविर्वा (३·१५०).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः	क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१३ भ्रमेराडः	१५४	२९ भिदिविदिच्छिदो डेच्छ	१५८
१४ लुगाविल् भावकर्मके	१५४	३० डोच्छ वचिमुचिरुदिश्रुभुजः	१५९
१५ अदेल्लुक्यात्खोरतः	१५५	३१ डं मेश्छात्ततः	१६०
१६ तु मौ	१५५	३२ कृदो हं	१६०
१७ मोममुष्विच	१५५	३३ सं	१६०
१८ के	१५५	३४ त्विज्जालिङः	१६०
१९ एच क्त्वातुंतव्यभविष्यति	१५६	३५ एकस्मिन्प्रथमादेर्विध्यादिषु दु सु मु	१६०
२० वा लट्लोट्छतृषु	१५६	३६ बहौ न्तु ह मो	१६१
२१ ज्जा ज्जे	१५६	३७ सोस्तु हि	१६१
२२ भूतार्थस्य सी हीअ ही	१५६	३८ लुगिज्जहीज्जस्विज्जेऽतः	१६१
२३ हल ईअ	१५६	३९ लड्लृटोश्च अर्जारौ	१६१
२४ अहेस्यासी तेनास्तेः	१५६	४० मध्ये चाजन्तात्	१६२
२५ भविष्यति हिरादिः	१५६	४१ माणन्तौल् च लङः	१६२
२६ हा सा मिमोमुमे वा	१५६	४२ शतृशानचोः	१६२
२७ हिस्सा हित्था मुमोमस्य	१५७	४३ स्त्रियामी च	१६२
२८ उच्छ इशिगम इजादौ हिलुक् च वा	१५८		

१३ भ्रमेराडो वा (३·१५१). १४ लुगावी क्तभावकर्मसु (३·१५२). १५ अदेल्लुक्यादेरत आः (३·१५३). १६ मौ वा (३·१५४). १७ इच्च मो मु मे वा (३·१५५). १८ क्ते (३·१५६). १९ एच क्त्वातुंतव्यभविष्यत्सु (३·१५७). २० वर्तमानापञ्चमीशतृषु वा (३.१५८). २१ ज्जाज्जे (३·१५९). २२ सी ही हीअ भूतार्थस्य (३·१६२). २३ व्यञ्जनादीअः (३·१६३). २४ तेनास्तेरास्यहेसी (३·१६४). २५ भविष्यति हिरादिः (३·१६६). २६ मिमोमुमे स्सा हा न वा (३·१६७). २७ मोमुमानां हिस्सा हित्था (३·१६८). २८ श्रुगमिरुदिविदिदृशिमुचिवचिछिदिभिदिभुजां सोच्छं गच्छं रोच्छं वेच्छं दच्छं मोच्छं वोच्छं छेच्छं भेच्छं भोच्छं (३·१७१); सोच्छादय इजादिषु हिलुक् च वा (३·१७२). २९-३१ = (३·१७१-१७२). ३२ कृदो हं (३·१७०). ३३ मेः स्सं (३·१६९). ३४ ज्जात्सप्तम्या इर्वा (३·१६५). ३५ दु सु मु विध्यादिष्वेकस्मिंस्त्रयाणाम् (३·१७३). ३६ बहुषु न्तु ह मो (३·१७६). ३७ सोर्हिर्वा (३·१७४). ३८ अत इज्जस्विज्जहीज्जेलुको वा (३·१७५). ३९ वर्तमानाभविष्यन्त्योश्च ज्ज ज्जा वा (३·१७७). ४० मध्ये च स्वरान्ताद्वा (३·१७८). ४१ न्तमाणौ (३·१८०). ४२ शत्रानशः (३·१८१). ४३ ई च स्त्रियाम् (३·१८२).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
४४ घेत् तुंतव्यक्त्वासु ग्रहेः	१६३
४५ अन्त्यस्य वचिमुचिरुदि-भुजां डोत्	१६३
४६ ता ड्डो दृशः	१६३
४७ आ भूतभविष्यति च कृञः	१६३
४८ नमोद्विजरुदां वः	१६४
४९ चर्न्नृतिमद्व्रिजाम्	१६४
५० छर्गमिष्यमासाम्	१६४
५१ रुधो न्धम्भौ	१६४
५२ युधबुधगृधक्रुधसिधमुहां च ज्झः	१६४
५३ जर् स्विदाम्	१६४
५४ छिदिभिदो न्दः	१६५
५५ ढः कथिवर्धाम्	१६५
५६ वेष्टेः	१६५
५७ समुदो लर्	१६५
५८ खादधावि लुक्	१६५
५९ रः सृजि	१६६
६० डः सीदपति	१६६
६१ मीलेः प्रादेर्द्वे तु	१६६
६२ चलस्फुटे	१६६
६३ शाकगे	१६६
६४ उवर्णस्यावः	१६६
६५ योरेक्	१६७
६६ अर उः	१६७
६७ अरि वृषाम्	१६७
६८ हशगेऽचो दिः	१६७
६९ हलोऽक्	१६८
७० त्वनतः	१६८
७१ अचोऽचाम्	१६८
७२ णो ह्रश्च चिजिपूश्रुधूस्तुहु-लूभ्यः	१६८
७३ भावकर्मणि तु वर्यग्लुक् च	१६९
७४ मर्चेः	१६९
७५ अन्त्यस्य हनखनोः	१६९

४४ क्त्वातुंतव्येषु घेत् (४·२१०). ४५ वचो वोत् (४·२११); रुदभुजमुचां तोऽन्त्यस्य (४·२१२). ४६ दृशस्तेन ट्ठः (४·२१३). ४७ आ कृगो भूतभविष्यतोश्च (४·२१४). ४८ रुदनमोर्वः (४·२२६); उद्विजः (४·२२७). ४९ व्रजनृतमदां च्चः (४·२२५). ५० गमिष्यमासां छः (४·२१५). ५१ रुधो न्धम्भौ च (४·२१८). ५२ युधबुधगृधक्रुधसिधमुहां ज्झः (४·२१७). ५३ स्विदां ज्जः (४·२२४). ५४ छिदिभिदो न्दः (४·२१६). ५५ कथवर्धां ढः (४·२२०). ५६ वेष्टः (४·२२१). ५७ समो ल्लः (४·२२२). ५८ खादधावोर्लुक् (४·२२८). ५९ सृजो रः (४·२२९). ६० सदपतोर्डः (४·२१९). ६१ प्रादेर्मीलेः (४·२३२). ६२ स्फुटि चलेः (४·२३१). ६३ शकादीनां द्वित्वम् (४·२३०). ६४ उवर्णस्यावः (४·२३३). ६५ युवर्णस्य गुणः (४·२३७). ६६ ऋवर्णस्यारः (४·२३४). ६७ वृषादीनामरिः (४·२३५). ६८ हशादीनां दीर्घः (४·२३६). ६९ व्यञ्जनाददन्ते (४·२३९). ७० स्वरादनतो वा (४·२४०). ७१ स्वराणां स्वराः (४·२३८). ७२ चिजिश्रुहुस्तुलूपूधूगां णो ह्रस्वश्च (४·२४१). ७३ न वा कर्मभावे व्वः क्यस्य च लुक् (४·२४२). ७४ ष्मश्चेः (४·२४३). ७५ हन्खनोऽन्त्यस्य (४·२४४).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
७६ दुहलिहवहरुधां भरत उच्च	१६९
७७ दहेर्झर्	१७०
७८ बन्धो न्धः	१७०
७९ रुध उपसमनोः	१७०
८० द्वे गमिगे	१७०
८१ ईर हकृतृञाम्	१७१
८२ अर्जेर्विढप्पः	१७१
८३ आरभ आढप्पः	१७१
८४ णव्वणज्जौ ज्ञः	१७१
८५ सिप्पः सिचस्निहोः	१७१
८६ वाहिप्पो व्याहुः	१७१
८७ ग्रहेर्घेप्पः	१७२
८८ छिप्पः स्पृशतेः	१७२
८९ दीसल् दृशोः	१७२
९० वचेरुच्चः	१७२
९१ ईअइज्जौ यक्	१७२
९२ स्पृहदृशोः सिहदूमौ णिचोः	१७३

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
९३ निवृपतोर्णिहोडो वा	१७३
९४ धवलोद्घटोर्दुमोग्गौ	१७३
९५ भ्रमवेष्टयोस्तालिअण्टपरि-आलौ	१७३
९६ रावो रञ्जयतेः	१७३
९७ तुलिडोल्योरोहामरङ्खोलौ	१७४
९८ आसंघः संभावेः	१७४
९९ अर्पेरल्लिवपणामचच्चुप्पाः	१७४
१०० गुलुगुञ्छोत्थङ्घोव्वेल्लो-ल्लाला उन्नमेः	१७४
१०१ प्रकाशेर्णुव्वः	१७४
१०२ णिहुवः कमेः	१७४
१०३ नशेर्विप्पगालनासवपलाव-हारवविउडाः	१७५
१०४ वल आरोपेः	१७५
१०५ विरिचेरोल्लुण्डोल्लुण्ड-पल्हत्थाः	१७५
१०६ कम्पेर्विच्छोलः	१७५

७६ भो दुहलिहवहरुधामुच्चातः (४·२४५). ७७ दहो ज्झः (४·२४६). ७८ बन्धो न्धः (४·२४७). ७९ समनूपाद्रुधेः (४·२४८). ८० गमादीनां द्वित्वम् (४·२४९). ८१ हकृतृञामीरः (४·२५०). ८२ अर्जेर्विढप्पः (४·२५१). ८३ आरभेराढप्पः (४·२५४). ८४ ज्ञो णव्वणज्जौ (४·२५२). ८५ स्निहसिचोः सिप्पः (४·२५५). ८६ व्याहृगेर्वाहिप्पः (४·२५३). ८७ ग्रहेर्घेप्पः (४·२५६). ८८ स्पृशेश्छिप्पः (४·२५७). ८९-९० दृशिवचेर्डीसडुच्चं (३·१६१). ९१ ईअइज्जौ क्यस्य (३·१६०). ९२ दृशो दूमः (४·२३); स्पृहः सिहः (४·३४). ९३ निवृपत्योर्णिहोडः (४·२२). ९४ धवलेर्दुमः (४·२४); उद्घटेरुग्गः (४·३३). ९५ भ्रमेस्तालिअण्टतमाडौ (४·३०). ९६ रञ्जे रावः (४·४९). ९७ दोले रङ्खोलः (४·४८); तुलेरोहामः (४·२५). ९८ संभावेरासंघः (४·३५). ९९ अर्पेरल्लिवचच्चुप्पपणामाः (४·३९). १०० उन्नमेरुत्थंघोल्लालगुलुगुञ्छोप्पेलाः (४·३६). १०१ प्रकाशेर्णुव्वः (४·४५). १०२ कमेर्णिहुवः (४·४४). १०३ नशेर्विउडनासवहारवविप्पगालपलावाः (४·३१). १०४ आरोपेर्वलः (४·४७). १०५ विरिचेरोलुण्डोल्लुण्डपल्हत्थाः (४·२६). १०६ कम्पेर्विच्छोलः (४·४६).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१०७ रोमन्थेरोग्गालवग्गालौ	१७५
१०८ प्लावेरोव्वालपव्वालौ	१७५
१०९ मिश्रेर्मीसालमेलवौ	१७६
११० छादेर्नूमनुमोव्वालडक्कपव्वालसंतुमाः	१७६
१११ अच्चुक्कवोक्कौ विज्ञापेः	१७६
११२ परिवाडो घटेः	१७६
११३ दशेर्दावदक्खवदंसाः	१७६
११४ प्रस्थापेः पेट्ठवपेण्डवौ	१७६
११५ यापेर्जवः	१७७
११६ विकोशेः पक्खोडः	११७
११७ गुण्ठ उद्धूलेः	१७७
११८ तडेराहोडविहोडौ	१७७
११९ ह्लादेरवअच्छलणिवश्च	१७७
१२० निमेर्निम्मवनिम्माणौ	१७७
१२१ आलीङोऽल्लिः	१७८
१२२ क्रियः कीणः	१७८
१२३ केर् च वेः	१७८
१२४ स्त्यः समः खा	१७८
१२५ ध्मो धुमोदः	१७८
१२६ स्थष्ठकुकुरौ	१७८
१२७ निरप्पथक्कठाचिट्ठाः	१७९
१२८ विस्मरः पम्हसवीसरौ	१७९
१२९ कृपौ णिजवहः	१७९
१३० जाणमुणौ ज्ञः	१७९
१३१ धो दहः श्रदः	१७९
१३२ स्पृशिम्छिवालुक्खफरिसफासफंसालिहच्छिहान्	१८०
१३३ फक्कस्थक्कः	१८०
१३४ श्लाघः सलाहः	१८०
१३५ थिप्पस्तृपः	१८०
१३६ भियो भाविहौ	१८०
१३७ भुजिरण्णभुञ्जकम्मसमाणचमडचड्डजेमजिमान्	१८०

१०७ रोमन्थेरोग्गालवग्गोलौ (४·४३). १०८ प्लावेरोम्वालपव्वालौ (४·४१). १०९ मिश्रेर्वीसालमेलवौ (४·२८). ११० छदेर्णुमनूमसंनुमढक्कोम्वालपव्वालाः (४·२१). १११ विज्ञपेर्वोक्कावुक्कौ (४·३८). ११२ घटेः परिवाडः (४·५०). ११३ दशेर्दावदंसदक्खवाः (४·३२). ११४ प्रस्थापेः पट्टवपेण्डवौ (४·३७). ११५ यापेर्जवः (४·४०). ११६ विकोशेः पक्खोडः (४·४२). ११७ उद्धूलेर्गुण्ठः (४·२९). ११८ तडेराहोडविहोडौ (४·२७). ११९ ह्लादेरवअच्छः (४·१२२). १२० निर्मो निम्माणनिम्मवौ (४·१९). १२१ आलीङोऽल्ली (४·५४). १२२-१२३ क्रियः किणो वेस्तु क्के च (४·५२). १२४ समः स्त्यः खाः (४·१५). १२५ उदो ध्मो धुमा (४·८). १२६ उदष्ठकुक्कुरौ (४·१७) १२७ स्थष्ठाथक्कचिट्ठनिरप्पाः (४·१६). १२८ विस्मुः पम्हुसविम्हरवीसराः (४·७५). १२९ कृपोऽवहो णिः (४·१५१). १३० ज्ञो जाणमुणौ (४·७). १३१ श्रदो धो दहः (४·९). १३२ स्पृशः फासफंसफरिसछिवछिहालुंखालिहाः (४·१८२). १३३ फक्कस्थक्कः (४·८७). १३४ श्लाघः सलहः (४·८८). १३५ तृपस्थिप्पः (४·१३८). १३६ भियो भाबीहौ (४·५३). १३७ भुजो भुञ्जजिमजेमकम्माण्हसमाणचमढचड्डाः (४·११०).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१३८ जृम्भेऽवेर्जम्भा	१८१
१३९ जुञ्जजुज्झजुप्पा युजेः	१८१
१४० जनो जाजम्मौ	१८१
१४१ उत्थल उच्छलेः	१८१
१४२ घूर्णेर्घुम्मपहल्लघोलघुलाः	१८१
१४३ लिम्पो लिपः	१८१
१४४ शदेर्झडपक्खोडौ	१८१
१४५ नेः सदेर्मज्जः	१८२
१४६ पुच्छः पृच्छेः	१८२
१४७ गण्ठो ग्रन्थेः	१८२
१४८ तुवरजअडौ त्वरेः	१८२
१४९ अतिङि तुरः	१८२
१५० तूरः शतृतिङि	१८२
१५१ पर्यसःपलट्टपलोट्टपल्हत्थाः	१८२
१५२ मृद्नातेर्मलपरिहट्टखुड्डपन्नाडचड्डमड्डमडाः	१८३
१५३ दृशिरोअक्खणिअच्छावअच्छवज्झावअज्झपुलअपुलोअदेक्खावअक्खपेच्छावआसपासणिअसव्वावक्खान्	१८३
१५४ क्षरपज्झरपच्चड्डुखिरणिड्डुअणिच्चलाः क्षरेः	१८३
१५५ कासेरवाद्वासः	१८३
१५६ न्यसेर्णिमणुमौ	१८३
१५७ ग्रहेर्णिरुवारगेण्हवलहरपङ्गाहिपच्चुआः	१८४

तृतीयोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१ होहुवहवा भुवेस्तु	१८५
२ पृथक्स्पष्टे णिव्वडः	१८५
३ प्रभौ हुप्पः	१८५

---

१३८ अवेर्जृम्भो जम्भा (४·१५७). १३९ युजो जुञ्जजुज्जजुप्पाः (४·१०९). १४० जनो जाजम्मौ (४·१३६). १४१ उच्छल उत्थल्लः (४·१७४). १४२ घूर्णो घुलघोलघुम्मपहल्लाः (४·११७). १४३ लिपो लिम्पः (४·१४९). १४४ शदो झडपक्खोडौ (४·१३०). १४५ नेः सदो मज्जः (४·१२३). १४६ प्रच्छः पुच्छः (४·९७). १४७ ग्रन्थो गण्ठः (४·१२०). १४८ त्वरस्तुवरजअडौ (४·१७०). १४९ त्यादिशत्रोस्तूरः (४·१७१). १५० तुरोत्यादौ (४·१७२). १५१ पर्यसः पलोट्टपलट्टपल्हत्थाः (४·२००). १५२ मृदो मलमढपरिहट्टखड्डचड्डमड्डपन्नाडाः (४·१२६). १५३ दृशो निअच्छपेच्छावअच्छावयज्झवज्जसव्ववदेक्खओअक्खावक्खावअक्खपुलोअपुलअनिआवआसपासाः (४·१८१). १५४ क्षरः खिरझरपज्झरपच्चडणिच्चलणिट्टुआः (४·१७३). १५५ अवात्काशो वासः (४·१७९). १५६ न्यसो णिमणुमौ (४·१९९). १५७ ग्रहो वलगेण्हहरपङ्गनिरुवाराहिपच्चुआः (४·२०९).

१ भुवेर्होहुवहवाः (४·६०). २ पृथक्स्पष्टे णिव्वडः (४·६२). ३ प्रभौ हुप्पो वा (४·६३).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
४ हु के	१८५
५ हुरचिति	१८५
६ आग्राक्षिस्नामाइग्घणिज्झराब्भुत्ताः	१८६
७ रा वेर्लियः	१८६
८ निना लिहक्कणिलुक्कणिलिअलिकलुक्कणिरुग्घाः	१८६
९ सारः प्रहुः	१८६
१० प्रसुरुवेल्लवअल्लौ	१८६
११ महमहो गन्धे	१८६
१२ झरझूरसुमरविम्हरहरहललुढपअरपम्हुहाः स्मरतेः	१८७
१३ व्याप्रेराअङ्कः	१८७
१४ निस्सुर्निहरनिलदाढवरहाढाः	१८७
१५ जाग्रेर्जग्गः	१८७
१६ पट्टघोट्टडल्लपिज्जाः पिबेः	१८७
१७ घुघो धूञः	१८८
१८ हणः शृणोतेः	१८८
१९ म्लैर्वापव्वाऔ	१८८
२० कृञः कुणः	१८८
२१ काणेक्षिते णिआरः	१८८
२२ निष्टम्भे णिट्ठुहः	१८८
२३ श्रमे वापम्फः	१८८
२४ संदाणोऽवष्टम्भे	१८९
२५ णिव्वोलो मन्युनौष्ठमालिन्ये	१८९
२६ गुललश्चाटौ	१८९
२७ पअल्लो लम्बनशैथिल्ययोः	१८९
२८ क्षुरे कम्मः	१८९
२९ णिलुञ्छो निष्पाताच्छोटे	१८९
३० साहट्टसाहरौ संवृः	१९०
३१ ओहिरोग्घौ निद्रः	१९०
३२ उद्ध ओरुम्मावसुऔ	१९०
३३ रुवो रुञ्जरुण्टौ	१९०
३४ कोक्कवोक्कौ व्याहुः	१९०
३५ संनाम आदृङः	१९०

४ क्ते हूः (४·६४). ५ अचिति हुः (४·६१). ६ आघ्राङ्ग्घः (४·१३); स्नातेरब्भुत्तः (४·१४); क्षेर्णिज्झरो वा (४·२०). ७ विलिङेर्विरा (४·५६). ८ निर्लाङोर्णिलीअणिलुक्कणिरिग्घलुक्कलिक्कल्हिक्काः (४·५५). ९ प्रहृगेः सारः (४·८४). १० प्रसरेः पयल्लोवेल्लौ (४·७७). ११ महमहो गन्धे (४·७८). १२ स्मरेर्झरझूरभरभलल्लढविम्हरसुमरपयरपम्हुहाः (४·७४). १३ व्याप्रेराअड्डः (४·८१). १४ निस्सरेर्णीहरनीलधाडवरहाडाः (४·७९). १५ जाग्रेर्जग्गः (४·८०). १६ पिबेः पिज्जडल्लपट्टघोट्टाः (४·१०). १७ धूगेर्धुवः (४·५९). १८ श्रुटेर्हणः (४·५८). १९ म्लेर्वापव्वाऔ (४·१८). २० कृगेः कुणः (४·६५). २१ काणेक्षिते णिआरः (४·६६). २२ निष्टम्भावष्टम्भे णिट्ठुहसंदाणं (४·६७). २३ श्रमे वावम्फः (४·६८). २४ निष्टम्भावष्टम्भे णिट्ठुहसंदाणं (४·६७). २५ मन्युनौष्ठमालिन्ये णिव्वोलः (४·६९). २६ चाटौ गुललः (४·७३). २७ शैथिल्यलम्बने पयल्लः (४·७०). २८ क्षुरे कम्मः (४·७२). २९ निष्पाताच्छोटे णीलुञ्छः (४·७१). ३० संवृगेः साहरसाहट्टौ (४·८२). ३१ निद्रातेरोहीरोंघौ (४·१२). ३२ उद्घ्रातेरोरुम्मावसुआ (४·११). ३३ रुते रुञ्जरुण्टौ (४·५७). ३४ व्याहृगेः कोक्कपोक्कौ (४·७६). ३५ आदृङेः संनामः (४·८३).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३६ ओहरौसरावयतरेस्तु	१९०
३७ शकेस्तरतीरपारच्चआः	१९१
३८ सोल्लपउल्लौ पचेः	१९१
३९ वेअडः खचेः	१९१
४० णिव्वलो मुचेर्दुःखे	१९१
४१ अवहेडमेल्लणिल्लुञ्छोसिक्क-दिसडरेअवछण्डाः	१९१
४२ सिञ्चसिम्पौ सिचेः	१९१
४३ रचेर्विडविड्डावहोग्गहाः	१९२
४४ केवलाअसारवसमारोव-हत्थाः समारचेः	१९२
४५ मस्जेराउड्डणिउड्डवुड्डखुप्पाः	१९२
४६ अनुव्रजतेः पडिअग्गः	१९२
४७ वञ्चेर्वेहववेलवजूर-वोम्मच्छाः	१९२
४८ रोसाणोघुसलुहलुञ्छपुञ्छ-फुसफुस्सघसछुला मार्ष्टेः	१९३
४९ भञ्जेर्वेमअमुसुमूरमूरपविर-ञ्जसूरसूडकरञ्जनिरञ्ज-विराः	१९३
५० गर्जेर्बुक्कः	१९३
५१ ढिक्को वृषे	१९३
५२ तिजेरोसुक्कः	१९३
५३ आरोलवमालौ पुञ्जेः	१९३
५४ कम्मवमुपभुजि	१९४
५५ विडवमार्जेः	१९४
५६ लज्जेर्जीहः	१९४
५७ राजेः सहरेहछज्जरिराग्घाः	१९४
५८ घटेर्गडः	१९४
५९ समो गलः	१९४
६० हासेन स्फुटतेर्मुरः	१९४
६१ मण्डेश्चिविडिक्करिडचिञ्च-चिञ्चिल्लचिञ्चआः	१९४
६२ तुडिरुल्लुक्कणिल्लुकोल्लूरो-वखुडलुक्कतोडखुट्टखुडान्	१९५

३६ अवतरेरोहरोरसौ (४.८५). ३७ शकेश्चयतरतीरपाराः (४.८६). ३८ पचेः सोल्ल पउलौ (४.९०). ३९ खचेर्वेअडः (४.८९). ४० दुःखे णिव्वलः (४.९२). ४१ मुचेश्छड्डावहेडमेल्लोसिक्करेअवणिल्लुञ्छधंसाडाः (४.९१). ४२ सिचेः सिञ्चसिम्पौ (४.९६). ४३ रचेरुग्गहावहविडविड्डाः (४.९४). ४४ समारचेरवहत्थसारवसमारकेलायाः (४.९५). ४५ मस्जेराउड्डणिउड्डबुड्डखुप्पाः (४.१०१). ४६ अनुव्रजेः पडिअग्गः (४.१०७). ४७ वञ्चेर्वेहववेलवजूरवोमच्छाः (४.९३). ४८ मृजेरुग्घुसलुञ्छपुञ्छपुंसफुसपुसलुहहुलरोसाणाः (४.१०५). ४९ भञ्जेर्वेमयमुसुमूरमूरसूरसूडविरपविरञ्जकरञ्जनीरञ्जाः(४.१०६). ५० गर्जेर्बुक्कः (४.९८). ५१ वृषे ढिक्कः (४.९९). ५२ तिजेरोसुक्कः (४.१०४). ५३ पुञ्जेरारोलवमालौ (४.१०२). ५४ वोपेन कम्मवः (४.१११). ५५ भ्रजेर्विढवः (४.१०८). ५६ लस्जेर्जीहः (४.१०३). ५७ राजेरग्घछज्जसहरीररेहाः (४.१००). ५८ घटेर्गढः (४.११२). ५९ समो गलः (४.११३). ६० हासेन स्फुटेर्मुरः (४.११४). ६१ मण्डेश्चिञ्चचिञ्चअचिञ्चिल्लरीडटिविडिक्काः (४.११५). ६२ तुडेस्तोडतुट्टखुट्टखुडोक्खुडोल्लुक्कणिलुक्कलुक्कोल्लूराः (४.११६).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
६३ घुसलविरोलौ मन्थेः	१९५
६४ ढंसोत्थंघौ विवृतिरुध्योः	१९५
६५ णिहर आक्रन्देः	१९५
६६ ओअन्दोद्दालौ छिदेराङा	१९५
६७ णिल्लूरल्लूरणिव्वरणिच्छल्ल-दुहावणिज्झोडाः	१९५
६८ अट्टः क्वथेः	१९६
६९ कथेर्वज्जरपज्जरसकेरतथवसास-साहचवजप्पपिसुण-बोल्लोव्वालाः	१९६
७० दुःखे णिव्वरः	१९६
७१ निषेधेर्हक्कः	१९६
७२ जूरः क्रुधेः	१९६
७३ विसूरश्च खिदेः	१९६
७४ तड्डवविरल्लतडतड्डास्तनेः	१९६
७५ निरः पद्यतेर्वलः	१९७
७६ संतपां झंखः	१९७
७७ ओअग्गसमाणौ व्यापि-समाप्योः	१९७
७८ णिरवो बुभुक्ष्याक्षिप्योः	१९७
७९ क्षिपेरड्डक्खपरिहुलघत्तछुह-फेल्लणोल्लसोल्लगलत्थान्	१९७
८० उत्क्षिपेरुत्थग्घोसिक्कहक्खु-वालत्थगुलुगुञ्छाब्भुत्तान्	१९७
८१ वेपेराअम्बाअज्झौ	१९८
८२ विरणडौ गुपेः	१९८
८३ चङ्खारवेलवावुपालम्भेः	१९८
८४ खउरपड्डुहौ क्षुभेः	१९८
८५ प्रदीपेः संधुक्काब्भुत्ततेअव-संधुमाः	१९८
८६ अल्लिअ उपसर्पेः	१९८
८७ कमवसलिसलोट्टाः स्वपेः	१९८

६३ मन्थेर्घुसलविरोलौ (४·१२१). ६४ विवृतेर्ढंसः (४·११८); रुधेरुत्थंघः (४·११३). ६५ आक्रन्देर्णीहरः (४·१३१). ६६ आङा ओअन्दोद्दालौ (४·१२५). ६७ छिदेर्दुहावणिच्छल्लणिज्झोडणिव्वरणिल्लूरलूराः (४·१२४). ६८ क्वथेःगः (४·११९). ६९ कथेर्वज्जरपज्जरोप्पालपिसुणसंघबोल्लचवजम्पसीससाहाः (४·२). ७० दुःखे णिव्वरः (४·३). ७१ निषेधेर्हक्कः (४·१३४). ७२ क्रुधेर्जूरः (४·१३५). ७३ खिदेर्जूर-विसूरौ (४·१३२). ७४ तनेस्तडतड्डतड्डवविरल्लाः (४·१३७). ७५ निरः पदेर्वलः (४·१२८). ७६ संतपेर्झंखः (४·१४०). ७७ व्यापेरोअग्गः (४·१४१); समापेः समाणः (४·१४२). ७८ बुभुक्षिवीज्योर्णीरववोज्जौ (४·५); आक्षिपेर्णीरवः (४·१४५). ७९ क्षिपेर्गलत्थाड्डक्खसोल्लपेल्लणोल्लछुहहुलपरीघत्ताः (४·१४३). ८० उत्क्षिपेर्गुलगुञ्छोत्थंघाल्लत्थोब्भुत्तोस्सिक्कहक्खुवाः (४·१४४). ८१ वेपेरायम्बायज्झौ (४·१४७). ८२ गुपेर्विरणडौ (४·१५०). ८३ उपालम्भेर्झंखपच्चारवेलवाः (४·१५६). ८४ क्षुभेः खउरपड्डुहौ (४·१५४). ८५ प्रदीपेस्तेअवसंदुमसंधुक्काब्भुत्ताः (४·१५२). ८६ उपसर्पेरल्लिअः (४·१३९). ८७ स्वपेः कमवसलिसलोट्टाः (४·१४६).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
८८ वडवडो विलपेः	१९९
८९ रमिराङो रम्भडवौ	१९९
९० भाराक्रान्ते नमेर्निसुढः	१९९
९१ उम्भावबेल्लणिसरकोट्टुम-सक्खुड्डखेड्डमोट्टाअकिलिकिञ्चा रमतेः	१९९
९२ पडिसापरिसामौ शमेः	१९९
९३ लुभेः संभावः	१९९
९४ आक्रामिरोहावोत्थार-च्छुन्दान्	२००
९५ विश्रमेर्णिव्वा	२००
९६ ढुण्ढुल्लढुमढण्ढल्लभमाड-भम्मभमुडतलअण्टझण्ट-गुमटिरिटिल्लपरिपरघमचक्क-मभमडघसझम्पडुसा भ्रमेः	२००
९७ गमिरणुवज्जावज्जसाक्कुसो-क्कुसाइच्छाईअवहरावसे-हवडअवरिअलवरिअल्लवो-ल्लणिरिणासवच्छूणिण-णिम्महपच्छन्दणिलुक्क-रम्भणिणिवहान्	२००
९८ प्रत्यागमागमाभ्यागमां पल्लो-ट्टाहिपच्चुओम्मच्छाः	२०१
९९ रिहरिग्गौ प्रविशेः	२०१
१०० संगमोऽब्भिडः	२०१
१०१ डिप्पणिड्डुहौ विगलेः	२०१
१०२ णिवहणिरणासणिरिणिज्ज-रोञ्चचड्डाः पिषेः	२०१
१०३ बलेर्वम्फः	२०१
१०४ भ्रंशेः पिड्डुपिट्टच्छुक्कछुल-पुट्टपुडाः	२०२
१०५ भषेर्बुक्कः	२०२

---

८८ विलपेर्झंखवडवडौ (४·१४८). ८९ आङो रमे रम्भढवौ (४·१५५). ९० भाराक्रान्ते नमेर्णिसुढः (४·१५८). ९१ रमेः संखुड्डखेड्डोब्भावकिलिकिञ्चकोट्टुममोट्टायणीसरवेल्लाः (४·१६८). ९२ शमेः पडिसापरिसामौ (४·१६७). ९३ लुभेः संभावः (४·१५३). ९४ आक्रमेरोहावोत्थारच्छुन्दाः (४·१६०). ९५ विश्रमेर्णिव्वा (४·१५९). ९६ भ्रमेष्टिरिटिल्लढुण्ढुल्लढण्ढल्लचक्कम्मभम्मडभमडभमाडतलअण्टझण्टझम्पभुमगुमफुमफुसढुमढुसपरीपराः (४·१६१). ९७ गमेरईअइच्छाणुवज्जावज्जसोक्कुसाक्कुसपच्चड्डपच्छन्दणिम्महणीणीणलुक्कपदअरम्भपरिअल्लवोलपरिअलणिरिणासणिवहावसेहावहराः (४·१६२). ९८ आङा अहिपच्चुअः (४·१६३). प्रत्याङा पलोट्टः (४·१६६); अभ्याङोऽम्मत्थः (४·१६५). ९९ प्रविशे रिअः (४·१८३). १०० समा अब्भिडः (४·१६४). १०१ विगलेस्थिप्पणिट्टुहा (४·१७५). १०२ पिषेर्णिवहणिरिणासणिरिणज्जरोञ्चचड्डाः (४·१८५). १०३ दलिवल्योर्विसट्टवम्फौ (४·१७६). १०४ भ्रंशेः फिडफिट्टफुडफुट्टचुक्कभुल्लाः (४·१७७). १०५ भषेर्भुक्कः (४·१८६).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१०६ पुरग्घवाग्घोडाहिरेमाग्गुमाङ्गुमाः	२०२
१०७ आहाहिलंघवच्चाहिलक्खमहसिहचिल्लुम्पचम्पाः कांक्षेः	२०२
१०८ नशिरवहरावसेहणिवहपडिसासेहणिरिणासान्	२०२
१०९ साअड्ढाणच्छकड्ढाच्छाअञ्छाणञ्छाः कृषेः	२०२
११० असावक्खोडः	२०३
१११ उल्लसेरूसल्लोसुम्भारोअणिल्लसगुञ्जोल्लपुलआआः	२०३
११२ संदिशोऽप्पाहः	२०३
११३ ग्रसेर्घिसः	२०३
११४ भासेर्भिसः	२०३
११५ प्रतीक्षेर्विहिरविरमालसामआः	२०३
११६ स्रंसेर्ल्हसडिम्भौ	२०३
११७ म्रक्षेश्चोप्पडः	२०४
११८ विसट्टो दलेः	२०४
११९ त्रसेर्वज्जडरौ	२०४
१२० वोज्जो वीजेश्च	२०४
१२१ गवेषेर्घत्तगमेसडुण्डुल्लडण्डोलाः	२०४
१२२ तक्षेश्चञ्छरम्परम्फाः	२०४
१२३ हसेर्गुञ्जः	२०४
१२४ दहिरहिऊलालुक्खौ	२०४
१२५ विकसेः कोआसवोसग्गौ	२०५
१२६ श्लिषोऽवआससामग्गपरिअन्ताः	२०५
१२७ जुगुप्सतेर्दुगुञ्छझूणदुगुच्छाः	२०५
१२८ वलग्गचडमारुहेः	२०५
१२९ झुल्लो लक्ष्यात् स्खलेः	२०५
१३० गाहोऽवाद्गाहः	२०५
१३१ गुम्मगुम्मडौ मुहेः	२०५
१३२ अपुण्णगाः क्तेन	२०६
१३३ धातवोऽर्थान्तरेष्वपि	२१६

१०६ पूरेरग्घाडाग्घवोद्धुमाङ्गुमाहिरेमाः (४·१६९). १०७ कांक्षेराहाहिलंघाहिलंखवच्चवम्फमहसिहविलुम्पाः(४·१९२). १०८ नशेर्णिरणासणिवहावसेहपडिसासेहावहराः (४·१७८). १०९ कृषेः कड्ढसाअड्ढाञ्चाणच्छायञ्छाइञ्छाः (४·१८७). ११० असावक्खोडः (४·१८८). १११ उल्लसेरूसलोसुम्भणिल्लसपुलआअगुञ्जोल्लारोआः (४·२०२). ११२ संदिशेरप्पाहः (४·१८०). ११३ ग्रसेर्घिसः (४·२०४). ११४ भासेर्भिसः (४·२०३). ११५ प्रतीक्षेः सामयविहीरविरमालाः (४·१९३). ११६ स्रंसेर्ल्हसडिम्भौ (४·१९७). ११७ म्रक्षेश्चोप्पडः (४·१९१). ११८ दलिवल्योर्विसट्टवम्फौ (४·१७६). ११९ त्रसेर्डरवोज्जवज्जाः (४·१९८). १२० बुभुक्षिवीज्योर्णीरववोज्जौ (४·५). १२१ गवेषेर्डुण्डुल्लढण्ढोल्लगमेसघत्ताः (४·१८९). १२२ तक्षेस्तच्छचच्छरम्परम्फाः (४·१९४). १२३ हसेर्गुञ्जः (४·१९६). १२४ दहेरहिऊलालुंखौ (४·२०८). १२५ विकसेः कोआसवोसट्टौ (४·१९५). १२६. श्लिषेः सामग्गावयासपरिअन्ताः (४·१९०). १२७ जुगुप्सेर्झुणदुगुच्छदुगुञ्छाः (४·४). १२८ आरुहेश्चडवलग्गौ (४·२०७). १३० अवाद्गाहेर्वाहः (४·२०५). १३१ मुहेर्गुम्मगुम्मडौ (४·२०७). १३२ क्तेनाप्फुण्णादयः (४·२५८). १३३ धातवोऽर्थान्तरेऽपि (४·२५९).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
द्वितीयः पादः ।	
१ वृस्तस्य शौरसेन्यामखाव- चोऽस्तोः	२१७
२ अधः क्वचित्	२१७
३ तावति खोर्वा	२१७
४ थो धः	२१७
५ इहहचोर्हस्य	२१८
६ भुवो भः	२१८
७ अन्त्यादिवेति मो णः	२१८
८ र्यो य्यः	२१८
९ पूर्वस्य पुरवः	२१८
१० इअदूणौ क्त्वः	२१८
११ कृगमोर्डडुअः	२१९
१२ इदानीमो ल्दाणिं	२१९
१३ तस्मात्ता	२१९
१४ णं नन्वर्थे	२१९
१५ अम्महे हर्षे	२१९
१६ हीही वैदूषके	२१९
१७ हीमाणहे निर्वेदविस्मये	२२०
१८ एवार्थे एव्व	२२०
१९ हञ्जे चेट्याह्वाने	२२०
२० अतो ङसेर्डुदोश्	२२०
२१ आत्सावामन्त्र्य इनो नः	२२०
२२ मः	२२०
२३ भवताम्	२२१
२४ भविष्यति स्सिः	२२१
२५ इचेचोर्दद्	२२१
२६ शेषं प्राकृतवत्	२२१
२७ मागध्यां शौरसेनीवत्	२२२
२८ त्वाङ्गाहो ङसः	२२३
२९ आमो डाहङ्	२२३
३० सौ पुंस्येलतः	२२४
३१ हगेऽहंवयमोः	२२४
३२ छोऽनादौ श्चः	२२४
३३ क्षः ᳲकः	२२४
३४ स्कः प्रेक्षाचक्षेः	२२४
३५ सः सषोः संयोगेऽग्रीष्मे	२२५

१ तो दोऽनादौ शौरसेन्यामयुक्तस्य (४·२६०). २ अधः क्वचित् (४·२६१). ३ वादेस्तावति (४·२६२). ४ थो धः (४·२६७). ५ इहहचोर्हस्य (४·२६८). ६ भुवो भः (४·२६९). ७ मोऽन्त्याण्णो वेदेतोः (४·२७९). ८ न वा र्यो य्यः (४·२६६) ९ पूर्वस्य पुरवः (४·२७०). १० क्त्व इयदूणौ (४·२७१). ११ कृगमो डडुअः (४·२७२). १२ इदानीमो दाणिं (४·२७७). १३ तस्मात्ताः (४·२७८). १४ णं नन्वर्थे (४·२८३). १५ अम्हहे हर्षे (४·२८४). १६ हीही विदूषकस्य (४·२८५). १७ हीमाणहे विस्मयनिर्वेदे (४·२८२). १८ एवार्थे य्येव (४·२८०). १९ हञ्जे चेट्याह्वाने (४·२८१). २० अतो ङसेर्डादोडादू (४·२७६). २१ आ आमन्त्र्ये सौ वेनो नः (४·२६३). २२ मो वा (४·२६४). २३ भवद्भगवतोः (४·२६५). २४ भविष्यति स्सिः (४·२७५). २५ दिरिचेचोः (४·२७३). २६ शेषं प्राकृतवत् (४·२८६). २७ शेषं शौरसेनीवत् (४·३०२). २८ अवर्णाद्वा ङसो डाहः (४·२९९). २९ आमो डाहँ वा (४·३००). ३० अत एत्सौ पुंसि मागध्याम् (४·२८७), ३१ अहंवयमोर्हगे (४·३०१). ३२ छस्य श्चोऽनादौ (४·२९५). ३३ क्षस्य ᳲकः (४·२९६). ३४ स्कः प्रेक्षाचक्षोः (४·२९७). ३५ सषोः संयोगे सोऽग्रीष्मे (४·२८९).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३६ स्रोः श्लौ	२२५
३७ न्यण्यज्ञञां ञ्ञ्	२२५
३८ जो व्रजेः	२२५
३९ जयद्यां यः	२२५
४० ष्टट्टौ स्टम्	२२६
४१ स्थर्थौ स्तम्	२२६
४२ चिष्ठस्तिष्ठस्य	२२६
४३ नो नणोः पैशाच्याम्	२२६
४४ न्यण्यज्ञां ञ्ञ्	२२६
४५ राज्ञो ज्ञो वा चिञ्	६२७
४६ तल्तदोः	२२७
४७ शषोः सः	२२७
४८ लो ळः	२२७
४९ दुस्तिर्यादृशगे	२२८
५० र्यस्नष्टां रिअसिनसिटाः क्वचित्	२२८
५१ टोस्तु तु	२२८
५२ यः पो हृदये	२२८
५३ टा नेन तदिदमोः	२२८
५४ नाए स्त्रियाम्	२२८
५५ ङसेस्तोतुशातः	२२९
५६ तङिजेचः	२२९
५७ एय्य एव भविष्यति	२२९
५८ इय्यो यकः	२२९
५९ कृञो डीरः	२२९
६० क्त्वा तूनं	२३०
६१ ष्ट्वः ट्ठूनत्थूनौ	२३०
६२ शेषं शौरसेनीवत्	२३०
६३ न प्रायो लुक्कादिरुच्छल्षट्-शम्यन्तसूत्रोक्तम्	२३०
६४ रो लस्तु चूलिकापैशा-च्याम्	२३०
६५ गजडदबघझढधभां कचटतपखछठथफाः	२३१
६६ अन्येषामादियुजि न	२३१
६७ शेषं प्राग्वत्	२३१

३६ रसोर्लशौ (४·२८८). ३७ न्यण्यज्ञञां ञ्ञः (४·२९३). ३८ व्रजो जः (४·२९४). ३९जध्यया यः (४·२९२). ४० ट्टष्ठयोस्टः (४·२९०). ४१ स्थर्थयोस्तः (४·२९१). ४२ तिष्ठश्चिष्ठः (४·२९८). ४३ णो नः (४·३०६). ४४ ज्ञो ञ्ञः पैशाच्याम् (४·३०३); न्यण्योर्ञ्ञः (४·३०५). ४५ राज्ञो वा चिञ् (४·३०४). ४६ तदोस्तः (४·३०७). ४७ शषोः सः (४·३०९). ४८ लो ळः (४·३०८). ४९ यादृशादेर्दुस्तिः (४·३१७). ५० र्यस्नष्टां रियसिनसटाः क्वचित् (४·३१४). ५१ टोस्तुर्वा (४·३११). ५२ हृदये यस्य पः (४·३१०). ५३-५४ तदिदमोष्टा नेन स्त्रियां तु नाए (४·३२२). ५५ अतो ङसेर्डातोडातू (४·३२१). ५६ इचेचः (४·३१८); आत्तेश्च (४·३१९). ५७ भविष्यत्येय्य एव (४·३२०). ५८ क्यस्येय्यः (४·३१५). ५९ कृगो डीरः (४·३१६). ६० क्त्वस्तूनः (४·३१२). ६१ द्धूनत्थूनौ ष्ट्वः (४·३१३). ६२ शेषं शौरसेनीवत् (४·३२३). ६३ न कगचजादिषट्शम्यन्तसूत्रोक्तम् (४·३२४). ६४ रस्य लो वा (४·३२६). ६५ चूलिकापैशाचिके तृतीयतुर्ययोराद्यद्वितीयौ (४·३२५). ६६ नादियुज्योरन्येषाम् (४·३२७). ६७ शेषं प्राग्वत् (४·३२८).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
तृतीयः पादः ।	
१ प्रायोऽपभ्रंशेऽचोऽच्	२३२
२ अचोऽस्तवोऽखौ कखतथपफा गघदधबभान्	२३२
३ तु मो ङ्वम्	२३४
४ ह्मो म्हम्	२३४
५ रो लुकमधः	२३४
६ क्वचिद्भूलोऽपि	२३५
७ विपदापत्संपदि द इ	२३५
८ कथं यथा तथा डिहडिधडिमडेमास्थादेः	२३६
९ दादेर्डेहो यादृक्तादृक्कीदृगीदृशाम्	२३७
१० डइसोऽताम्	२३८
११ यावत्तावर्युंमहिंमा वादेः	२३८
१२ डेत्तुलडेवडावियत्कियति च व्यादेर्वतुपः	२३९
१३ डेत्तहे त्रलः	२३९
१४ यत्तदोर्डेत्तु	२४०
१५ कुत्रात्रे च डेत्थु	२४०
१६ त्वतलौ प्पणम्	२४०
१७ तव्यस्य एव्वइएव्वउएवाः	२४१
१८ क्त्व इ इउ इवि अवि	२४२
१९ एप्प्येप्पिण्वेव्येविणु	२४३
२० तुम एवमणाणहमणहिं च	२४४
२१ गमेस्त्वेप्येपिण्वोर्लुक्	२४४
२२ तृनो णअल्	२४५
२३ छस्य युष्मदादेर्डारः	२४६
२४ जणि जणु नं नइ नावइ नाइ इवार्थे	२४६
२५ तणेण रेसिं रेसि तेहिं केहिं तादर्थ्ये	२४८

१ स्वराणां स्वराः प्रायोऽपभ्रंशे (४·३२९). २ अनादौ स्वरादसंयुक्तानां कखतथपफां गघदधबभाः (४·३९६). ३ मोऽनुनासिको वो वा(४·३९७).४ म्हो म्भो वा (४·४१२). ५ वाधो रो लुक् (४·३९८). ६ अभूतोऽपि क्वचित् (४·३९९). ७ आपद्विपत्संपदां द इः (४·४००). ८ कथंयथातथां थादेरेमेमेहेधा डितः (४·४०१). ९ यादृक्तादृक्कीदृगीदृशां दादेर्डेहः (४·४०२). १० अतां डइसः (४·४०३). ११ यावत्तावतोर्वादेर्म उं महिं (४·४०६). १२ वा यत्तदोऽतोर्डेवडः (४·४०७). १३ त्रस्य डेत्तहे (४·४३६). १४ यत्रतत्रयोस्त्रस्य डिदेत्थ्वत्तु (४·४०४). १५ एत्थु कुत्रात्रे (४·४०५). १६ त्वतलोः प्पणः (४·४३७). १७ तव्यस्य इएव्वउं एव्वउं एवा (४·४३८). १८ क्त्व इइउइविअवयः (४·४३९). १९ एप्प्येप्पिण्वेव्येविणवः(४·४४०) २० तुम एवमणाणहमणहिं च (४·४४१). २१ गमेरेप्पिण्वेप्प्योर्लुग्वा (४·४४२). २२ तृनोणअः (४·४४३). २३ युष्मदादेरीयस्य डारः (४·४३४). २४ इवार्थे नंनउनाइनावइजणिजणवः (४·४४४). २५ तादर्थ्ये केहितेहिरेसिरेसिंतणेणाः (४·४२५).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
२६ स्वार्थे डुः पुनर्विनाध्रुवमः	२४९
२७ डेंडाववश्यमः	२४९
२८ परमेकशसोर्डेडि	२५०
२९ अडडडुल्लाः स्वार्थिककलुक् च	२५१
३० तद्योगजाश्च	२५२
३१ ङीतः स्त्रियाम्	२५३
३२ अदन्ताड्डा	२५३
३३ इदतोऽति	२५४
३४ इदानीमेम्वहि	२५४
३५ एव जि	२५४
३६ एवमेम	२५५
३७ नहि नाहि	२५५
३८ प्रत्युत पच्चलिउ	२५५
३९ एवमेव एमइ	२५६
४० समं समाणु	२५६
४१ किल किर	२५७
४२ पग्गिम प्राइम प्राउ प्राइव प्रायसः	२५७
४३ दिवा दिवे	२५८
४४ सह सहुं	२५८
४५ मा मं	२५९
४६ कुतः कउ कहंतिहु	२५९
४७ अथवा मनागहवइ मणाउं	२६०
४८ इतसेत्तहे	२६१
४९ पश्चात्पच्छइ	२६१
५० ततस्तदा तो	२६१
५१ त्वनुसाहावन्यथासर्वौ	२६१
५२ किं काइंकवणौ	२६१
५३ उन्नविन्नवुत्ता विषण्ण-वर्त्मोक्ताः	२६२
५४ अत्वुः परस्परस्य	२६२
५५ अन्यादृशस्याण्णाइसावरा-इसौ	२६३
५६ वहिल्लगाः शीघ्रादीनाम्	२६३
५७ हुहुरुघिग्घिगाः शब्दचेष्टा-नुकृत्योः	२७०
५८ अनर्थका घइमादयः	२७१

२६ पुनर्विनः स्वार्थे डुः (४·४२६); एवं परं समं ध्रुवं मा मनाक एम्व पर समाणु ध्रुवु मं मणाउं (४·४१८). **२७** अवश्यमो डेंडौ (४·४२७). **२८** एकशसो डः (४·४२८). **२९** अडडडुल्लाः स्वार्थिककलुक् च (४·४२९). **३०** योगजाश्चैषाम् (४·४३०). **३१** स्त्रियां तदन्ताड्डीः (४·४३१). **३२** आन्तान्ताड्डाः (४·४३२). **३३** अस्येदे (४·४३३). **३४-३६** पश्चादेवमेवैवेदानीं प्रत्युतेतसः पच्छइ एम्वइ जि एम्वहिं पच्चलिउ एत्तहे (४·४२०). **३७** किलाथवादिवासहनहेः किराहवइ दिवे सहुं नाहिं (४·४१९) **३८-३९** = (४·४२०). **४०** = (४·४१८). **४१** = (४·४१९). **४२** प्रायसः प्राउ प्राइव प्राइम्वपग्गिम्वाः (४·४१४). **४३-४४** = (४·४१९). **४५** = (४·४१८). **४६** कुतसः कउ कहंतिहु (४·४१६). **४७** = (४·४१९). **४८-४९** = (४·४२०). **५०** ततस्तदोस्तोः (४·४१७). **५१** वान्यथोऽनुः (४·४१५); सर्वस्य साहो वा (४·३६६). **५२** किमः काइंकवणौ वा (४·३६७). **५३** विषण्णोक्तवर्त्मनो वुन्नवुत्तविच्चं (४·४२१). **५४** परस्परस्यादिरः (४·४०९). **५५** अन्यादृशोऽन्नाइसावराइसौ (४·४१३). **५६** शीघ्रादीनां वहिल्लादयः (४·४२२). **५७** हुहुरुघुग्घादयः शब्दचेष्टानुकरणयोः (४·४२३). **५८** घइमादयोऽनर्थकाः (४·४२४).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
चतुर्थः पादः ।	
१ दिही सुपि	२७३
२ स्वम्यम उत्	२७५
३ ओत्सौ पुंसि तु	२७५
४ ए भिसि	२७६
५ टि	२७६
६ ङिनेश्च	२७६
७ ङसेर्हेहु	२७७
८ भ्यसो हुं	२७७
९ सुस्सुहो ङसः	२७७
१० आमो हं	२७८
११ टो णानुस्वारौ	२७८
१२ एं चेदुतः	२७८
१३ हि हे ङिङस्योः	२७९
१४ हुं भ्यसः	२८०
१५ आमो हं च	२८०
१६ ङसो लुक्	२८१
१७ सुसस्रोः	२८१
१८ हो जसामन्त्र्ये	२८२
१९ हिं भिस्सुपोः	२८२
२० स्त्रियां ङेर्हि	२८२
२१ ङस्ङस्योर्हे	२८२
२२ हुमाम्भ्यसोः	२८३
२३ उदोतौ जश्शसः	२८४
२४ ई नपि	२८४
२५ कान्तस्यात उं स्वमोः	२८५
२६ सर्वगात् ङि हिं	२८५
२७ ङसिर्हं	२८६
२८ तु किमो डिह	२८६
२९ ङसः सुश् यत्तत्किंभ्यः	२८६
३० स्त्रियां डहे	२८७
३१ यत्तद् ध्रुं त्रुं स्वमोः	२८७
३२ इदम इमु नपुंसके	२८८
३३ एतदेह एहो एहु स्त्रीनृनपि	२८८

---

१ स्यादौ दीर्घह्रस्वौ (४·३३०). २ स्यमोरस्योत् (४·३३१). ३ सौ पुंस्योद्वा (४·३३२). ४ भिस्येद्वा (४·३३५). ५ एट्टि (४·३३३). ६ ङिनेच्च (४·३३४). ७ ङसेर्हेहू (४·३३६). ८ भ्यसो हुं (४·३३७). ९ ङसः सुहोस्सवः (४·३३८). १० आमो हं (४·३३९). ११ आट्टो णानुस्वारौ (४·३४२). १२ एं चेदुतः (४·३४३). १३-१४ ङसिभ्यस्ङीनां हेहुंहयः (४·३४१). १५ हुं चेदुद्भ्याम् (४·३४०). १६ षष्ठ्याः (४·३४५). १७ स्यम्जस्शसां लुक् (४·३४४). १८ आमन्त्र्ये जसो होः (४·३४६). १९ भिस्सुपोर्हिं (४·३४७). २० ङेर्हिं (४·३५२). २१ ङस्ङस्योर्हे (४·३५०). २२ भ्यसामोर्हुः (४·३५१). २३ स्त्रियां जस्शसोरुदोत् (४·३४८). २४ क्लीबे जस्शसोरिं (४·३५३). २५ कान्तस्यात उं स्यमोः (४·३५४). २६ ङेर्हिं (४·३५७). २७ सर्वादेर्ङसेर्हां (४·३५५). २८ किमो डिहे वा (४·३५६). २९ यत्त-त्किंभ्यो ङसो डासुर्न वा (४·३५८). ३० स्त्रियां डहे (४·३५९). ३१ यत्तदः स्यमो-र्ध्रुंत्रं (४·३६०). ३२ इदम इमुः क्लीबे (४·३६१). ३३ एतदः स्त्रीपुंक्लीबे एह एहो एहु (४·३६२).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
३४ जश्शसोरेइ	२८८
३५ ओइ अदसः	२८९
३६ इदम आअः	२८९
३७ सौ युष्मदस्तुहुं	२९०
३८ तुम्हे तुम्हइं जश्शसोः	२९०
३९ भिसा तुम्हेहिं	२९०
४० ङ्यम्टा पइं तइं	२९१
४१ तुज्झ तुध्र तउ ङसिङसा	२९२
४२ सुपा तुम्हासु	२९३
४३ तुम्हह्मभ्यसभ्याम्	२९३
४४ अस्मदोऽम्हहं	२९३
४५ सौ हउं	२९३
४६ मइं ङ्यम्टा	२९३
४७ ङस्ङसिना महु मज्झु	२९४
४८ अम्हइं अम्हे जश्शसोः	२९४
४९ भिसाम्हेहिं	२९५
५० सुपाम्हासु	२९५
५१ लटो हिं वा झश्योः	२९५
५२ हि थास्सिपोः	२९५
५३ सतम्याश्च	२९६
५४ हु थध्वमोः	२९६
५५ उँ मिबिटोः	२९७
५६ हुं मस्महिङोः	२९७
५७ इदुदेत्स्वहेः	२९८
५८ स्यस्य सो लटि	२९९
५९ पर्याप्तौ भुवः पहुच्चः	२९९
६० व्रजेर्वञ्जः	३००
६१ ब्रूञो ब्रुवः	३००
६२ क्रियेः कीसु	३००
६३ पस्सगण्हौ दृशिग्रहोः	३०१
६४ तक्षाद्याश्छोल्लादीन्	३०१

३४ एइर्जस्शसोः (४·३६३). ३५ अदस ओइ (४·३६४). ३६ इदम आयः (४·३६५). ३७ युष्मदः सौ तुहुं (४·३६८). ३८ जस्शसोस्तुम्हे तुम्हइं (४·३६९). ३९ भिसा तुम्हेहिं (४·३७१). ४० टाङ्यमा पइं तइं (४·३७०). ४१ ङसिङस्भ्यां तउ तुज्झ तुध्र (४·३७२). ४२ तुम्हासु सुपा (४·३७४). ४३ भ्यसाम्भ्यां तुम्हहं (४·३७३). ४४ अम्हहं भ्यसाम्भ्याम् (४·३८०). ४५ सावस्मदो हउं (४·३७५). ४६ टाङ्यमा मइं (४·३७७). ४७ महु मज्झु ङसिङस्भ्याम् (४·३७९). ४८ जस्शसोरम्हे अम्हइं (४·३७६). ४९ अम्हेहिं भिसा (४·३७८). ५० सुपा अम्हासु (४·३८१). ५१ त्यादेराद्यत्रयस्य संबन्धिनो हिं न वा (४·३८२). ५२ मध्य-त्रयस्याद्यस्य हिः (४·३८३). ५३-५४ बहुत्वे हुः (४·३८४). ५५ अन्त्यत्रयस्याद्यस्य उं (४·३८५). ५६ बहुत्वे हुं (४·३८६). ५७ हिस्वयोरिदुदेत् (४·३८७). ५८ वर्त्स्यति-स्यस्य सः (४·३८८). ५९ भुवः पर्याप्तौ हुच्चः (४·३९०). ६० व्रजेर्वुञः (४·३९२). ६१ ब्रुगो ब्रुवो वा (४·३९१). ६२ क्रियेः कीसु (४·३८९). ६३ दृशेः प्रस्सः (४·३९३); ग्रहेर्गृण्हः (४·३९४). ६४ तक्ष्यादीनां छोल्लादयः (४·३९५).

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः	क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
६५ ह्रोः स्तोकच्चारलाघवम्	३०३	६९ शौरसेनीवत्	३०४
६६ बिन्द्वोरन्ते	३०३	७० तद्व्यत्ययश्च	३०५
६७ हलुस्थैकः	३०३	७१ शेषं संस्कृतवत्	३०६
६८ लिङ्गमतन्त्रम्	३०३	७२ ह्राडगास्तु देश्याः सिद्धाः	३०६

---

६५ कादिस्थैदोतोरुच्चारलाघवम् (४·४१०) ६८ लिङ्गमतन्त्रम् (४·४४५). ६९ शौरसेनीवत् (४·४४६). ७० व्यत्ययश्च (४·४४७). ७१ शेषं संस्कृतवत्सिद्धम् (४·४४८).

परिशिष्टं द्वितीयम्

प्राकृतसूत्राणामकारादिक्रमेणानुक्रमणिका

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
३८	अइ तु वैरादौ	१.२.१०२
१५	अक्ष्यर्थकुलाद्या वा	१.१.५१
१७६	अच्चुक्कवोक्कौ विज्ञापेः	२.४.१११
१६८	अचोऽचाम्	२.४.७१
२३२	अचोऽस्तवोऽखौ कखतथपफा गघदधबभान्	३.३.२
१९६	अट्टः क्वथेः	३.१.६८
२५१	अडडुल्लाः स्वार्थिककलुक् च	३.३.२९
१२०	अण णाइं नञर्थे	२.१.६१
१५३	अत एवैच् से	२.४.७
१८२	अतिङि तुरः	२.४.१४९
२२०	अतो ङसेर्दुदोदा	३.२.२०
१२६	अतो डो विसर्गः	२.२.१२
२६२	अन्नुः परस्परस्य	३.३.५४
१३९	अत्सुर्स्सिहिस्से	२.२.७८
२६०	अथवा मनागहवइ मणाउं	३.३.४७
२५३	अदन्ताड्डा	३.३.३२
१५५	अदेल्लुक्यात्खोरतः	२.४.१५
५३	अद्रुमे कदल्याम्	१.३.४३
२१७	अधः क्वचित्	३.२.२
२७१	अनर्थका घइमादयः	३.३.५८
१३७	अनिदमेतदस्तु किंयत्तदः स्त्रियां च हिं	२.२.६४
३	अनुकमन्यशब्दानुशासनवत्	१.१.२
१९२	अनुव्रजतेः पडिअग्गः	३.१.४६
९	अन्तरि च नाचि	१.१.२७
१६२	अन्त्यस्य वचिमुचिरुदिश्रुभुजां डोत्	२.४.४५
१६९	अन्त्यस्य हनखनोः	२.४.७५
९	अन्त्यहलोऽश्रदुदी	१.१.२५
२१८	अन्यादिदेति मो णः	३.२.७
२६३	अन्यादृशस्याण्णाइसावराइसौ	३.३.५५
२३१	अन्येषामादियुजि न	३.२.६६
६४	अपतौ घरो गृहस्य	१.३.९६
२०६	अपुण्णगाः क्तेन	३.१.१३२
१७	अपेः पदात्	१.२.५
११६	अम्मो पश्चात्तापसूचनादुःखसंभाषणापराधानन्दादरखेदविस्मयविषादभये	२.१.४१
१२३	अमः	२.२.२
१४३	अमा तुमे तुए च	२.३.२
२१९	अम्महे हर्षे	३.२.१५
२९४	अम्हइं अम्हे जश्शसोः	३.४.४८
१४७	अम्हं मज्झं मज्झ मइ मह महं मे च ङसा	२.३.२५
१४७	अम्ह मम भ्यसि	२.३.२४
१४८	अम्ह मम मज्झ मह ङिपि	२.३.२७
१४६	अम्हे अम्हो अम्ह	२.३.१७

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
१४८	अम्हे अम्हो अम्हाण ममाण महाण मज्झाण मज्झा-म्हाम्हं णे णो आमा	२·३·२६
११६	अम्हो आश्चर्ये	२·१·४०
१२१	अयि पे	२·१·७४
१६७	अर उः	२·४·६६
७९	अरीअरिज्जमाश्चर्ये	१·४·५६
१६७	अरि वृषाम्	२·४·६७
१७१	अर्जेर्विढप्पः	२·४·८२
५९	अर्थपरे तो युष्मदि	१·३·७३
१७४	अर्पेरल्लिवपणामचच्चुप्पाः	२·४·९९
९२	अर्हत्युश्च	१·४·१०५
१२०	अलाहि निवारणे	२·१·६५
३१	अल् दुकूले	१·२·६७
१९८	अल्लिअ उपसर्पेः	३·१·८६
१९१	अवहेडमेल्लणिल्लुञ्छोसिक्क-दिसडरेअवछण्डाः	३·१·४१
१०	अविद्युति स्त्रियामाल्	१·१·२९
११४	अव्ययम्	२·१·३१
२०३	असावक्खोडः	३·१·११०
१५०	अस्टासोर्ङिप्	२·३·३९
४३	अस्तोरखोरचः	१·३·७
१४६	अस्मत्सुना अम्हि हमहअम-हमहम्मयम्मि	२·३·१५
२९३	अस्मदोऽम्हहं	३·४·४४
१४२	अहह्मा सुना	२·२·९१
१५७	अहेस्यासी तेनास्तेः	२·४·२४
२००	आक्रामिरोहावोत्थारच्छुन्दान्	३·१·९४
१८६	आघ्राक्षिस्नामाइग्घणिज्झरा-ब्बुत्ताः	३·१·६

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
२४	आचार्ये चो ह्म	१·२·३५
२२०	आत्सावामन्त्र्य इनो नः	३·२·२१
५	आदिः खुः	१·१·९
१२९	आदीतः सोश्च	२·२·३३
१७	आदेः	१·२·२
५९	आदेर्जेः	१·३·७४
५५	आदेस्तु	१·३·५३
३२	आद्वा मृदुत्वमृदुकक्कुरासु	१·२·७४
११७	आनन्तर्ये णवरिअ	२·१·४५
१६३	आ भूतभविष्यति च कृञः	२·४·४७
११५	आम अभ्युपगमे	२·१·३२
११९	आमन्त्रणे वेव्वे च	२·१·५७
१३७	आमां ङेर्सि	२·२·६५
२२३	आमो डाहञ्च	३·२·२९
२७८	आमो हं	३·४·१०
२८०	आमो हं च	३·४·१५
१३३	आरः सुपि	२·२·४९
१७१	आरभ आढप्पः	२·४·८३
१९३	आरोलवमालौ पुञ्जेः	३·१·५३
२१	आर्यायां र्यः श्वश्वामूल्	१·२·२१
१७८	आलीङोऽल्लिः	२·४·१२१
८२	आश्लिष्टे लधौ	१·४·७१
१७४	आसंघः संभावेः	२·४·९८
२२	आसारे तु	१·२·२२
१३४	आ सौ वा	२·२·५२
२०२	आहाहिलंघवच्चाहिलक्खमह-सिहविल्लुम्पचम्पाः कांक्षेः	३·१·१०७
२८४	इं नपि	३·४·२४
२१८	इअदूणौ क्त्वः	३·२·१०

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
१४२	इआओ म्मो	२·२·९२
१०२	इकः पथो नस्य	२·१·४
२२१	इच्चेचोर्दट्ट	३·२·२५
१२२	इज्जेराः पादपूरणे	२·१·७६
१३५	इणममामा	२·२·५७
२६१	इतसेत्तहे	३·३·४८
१८	इतेः	१·२·६
२६	इतौ तो वाक्यादौ	१·२·४५
२४	इत्तु सदादौ	१·२·३४
२५४	इदतोऽति	३·३·३३
२८९	इदम आअः	३·४·३६
१३९	इदम इमः	२·२·७६
२८८	इदम इमु नपुंसके	३·४·३२
१३९	इदमेतत्कियत्तद्भ्यष्टो डिणा	२·२·७३
२५४	इदानीमेव्वहि	३·३·३४
२१९	इदानीमो स्दाणि	३·२·१२
१२७	इदुतोर्दिः	२·२·२२
२९८	इदुदेत्स्वहेः	३·४·५७
३२	इदुद्व्यूढे	१·२·६८
३५	इदुन्मातुः	१·२·८२
३२	इदेन्नूपुरे	१·२·७१
७५	इन्धौ	१·४·२९
५८	इन्मयटि	१·३·६९
२२९	इय्यो यकः	३·२·५८
१०६	इरः शीलाद्यर्थस्य	२·१·२८
३३	इल् कृपणे	१·२·७५
१२१	इहरा इतरथा	२·१·७२
२१८	इहहचोर्हस्य	३·२·५
१४०	इहेणं ङ्यमः	२·२·८०
१७२	ईअइज्जौ यक्	२·४·९१
२८	ईतः काश्मीरहरीतक्योर्लौ	१·२·५०
१३८	ईतः सेसाः	२·२·६८
४०	ई धैर्ये	१·२·१०८
१७१	ईर हकृतृञाम्	२·४·८१
२३	ईल् खल्वाटस्त्यानयोरातः	१·२·३३
९२	ईल् ज्यायाम्	१·४·११०
१२२	उअ पश्य	२·१·७५
१२१	उ ओ उपेः	२·१·६८
३९	उच्चैर्नीचैसोरअः	१·२·१०७
२२	उत्करवलीद्वारमात्रचः	२·४·२५
१९७	उत्क्षिपिरुत्थग्घोसिक्कहक्खुवालुत्थगुलुगुञ्छाभुत्तान्	३·१·८०
१८१	उत्थल उच्छलेः	२·४·१४१
७३	उत्सवक्ष्क्ष्णोत्सुकसामर्थ्ये छो वा	१·४·१९
३५	उदूदोल् मृषि	१·२·८५
१३३	उद्दतां त्वस्वमामि	२·२·४८
२८४	उदोतौ जश्शसः	३·४·२३
१९०	उद्ध ओरुम्मावसुऔ	३·१·३२
३४	उद् वृषभे वुः	१·२·७८
२६२	उन्नविच्चवुत्ता विषण्णवर्त्मोक्ताः	३·३·५३
१०५	उपरेः संव्याने ल्लल्	२·१·१९
१९९	उब्भाववेल्लणिसरकोड्डुमसक्खुड्डखेड्डमोट्टाअकिलकिञ्चा रमतेः	३·१·९१
६४	उभयाधसोरवहहेट्ठौ	१·३·९८

पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः

२९७ उ मिथिरोः ३.४.५५

१४१ उम्होरहतुरहतुम्भ भ्यसि २.३.११

२७ उ युधिष्ठिरे १.२.४७

३२ उल् कण्डूयहनूमद्वातूले १.२.६९

२९ उल् जीर्णे १.२.५३

२० उल् ध्वनिगवयविष्वचो वः १.२.१६

२०३ उल्लसेरूसलोसुंभारोअणि-ल्लसगुञ्जोल्लपुलआआः ३.१.१११

१६७ उवर्णस्यावः २.४.६४

११८ ऊ गर्हाविस्मयसूचनाक्षेपे २.१.५२

४८ ऊत्वे दुर्भगसुभगे वः १.३.१८

७९ ऊर्ध्वे भो वा १.४.५०

३८ ऊ स्तेने वा १.२.९९

३६ ऋतुऋजुऋणऋषिऋषभे वा १.२.९१

३४ ऋतुगे १.२.८०

३२ ऋतोऽत् १.२.७३

१३२ ऋदन्ताडुः २.२.४३

१६० एकस्मिन्प्रथमादेर्विध्यादिषु दु सु मु २.४.३५

९२ एकाच्चि ध्वःस्वे १.४.१०८

१०४ एकाद्दः सिसिआइआ २.१.१५

१२१ एक्कसरिअं झटिति संप्रति २.१.७१

८ एङः १.१.२१

१५६ एच्च क्त्वातुंतव्यभविष्यति २.४.१९

६५ एण्हि एत्ताहे इदानीमः १.३.१०३

२८८ एतदेहयहोएहु स्त्रीनृनपि ३.४.३३

१४१ एतदो म्मावद्तौ वा २.२.८७

१४१ एत्तो एत्ताहे ङसिनैतदः २.२.८५

४२ एत् साज्झला त्रयोदशगेऽचः १.३.१

२४३ एज्येज्जिएवेज्येविणु ३.३.१९

२७६ ए भिसि ३.४.४

२२९ एज्ज एव भविष्यति ३.२.५७

२९ एल् पीठनीडकीद्दशपीयूष-विभीतकेद्दशापीडे १.२.५६

२५४ एव जि ३.३.३५

२५५ एवमेम ३.३.३६

२५६ एवमेव एमइ ३.३.३९

६३ एवमेवदेवकुलप्रावारकयाव-ज्जीवितावटावर्तमान-तावति वः १.३.९४

२२० एवार्थे एव्व ३.२.१८

२७८ एं चेदुतः ३.४.१२

३८ ऐच एङ् १.२.१०१

१९५ ओअन्दोहालौ छिदेराङा ३.१.६६

१९७ ओअग्गसमाणौ व्यापि-समाप्योः ३.१.७७

२८९ ओइ अदसः ३.४.३५

२७५ ओत्सौ पुंसि तु ३.४.३

२३ ओदाल्यां पंक्तौ १.२.२९

११९ ओ पश्चात्तापसूचने २.१.६०

३२ ओल् स्थूणातूणमूल्यतूणीर-कूर्परगुडूचीकूष्माण्डी-ताम्बूलीषु १.२.७२

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
१९०	ओहरौसरावतरेस्तु	३·१·२६
१९०	ओहिरोग्घौ निद्रः	३·१·२१
७०	कः शकमुकदष्टमृवुत्वक्वणेषु	१·४·४
८३	कगटडतदपःकःपशोरुपर्यद्रे	१·४·७७
५९	कतिपये वहशौ	१·३·७२
२३६	कथं यथा तथा डिहडिधडिमडेमास्थादेः	३·३·८
१९६	कथेर्वज्जरपज्जरसग्घसाससाहचवजप्पपिसुणबोल्लोव्वालाः	३·१·६९
५३	कदर्थिते खोर्वः	१·३·४४
४२	कदले तु	१·३·२
१९८	कमवसलिसलोट्टाः स्वपेः	३·१·८७
१७५	कस्पेविंकच्छोलः	२·४·१०६
१९४	कम्मवमुपभुँजिः	३·१·५४
८७	कर्णिकारे णोवा	१·४·८८
४२	कर्णिकारे फोः	१·३·३
१८८	काणेक्षिते णिआरः	३·१·२१
२८५	कान्तस्यात उं स्वमोः	३·४·२५
४६	कामुकयमुनाचामुण्डातिमुकके मो ङ्लुक्	१·३·११
८०	कार्षापणे	१·४·६२
७९	काश्मीरे म्भः	१·४·५३
१८३	कासेरवाह्नासः	२·४·१५५
२६१	किं काइंकवणौ	३·३·५२
१४०	किं किं	२·२·८३
१३७	कितद्भ्यां सश्	२·२·६६
१३१	कियत्तदोऽस्वमामि सुपि	२·२·४०
१३८	कियत्तद्भ्यो ङस्	२·२·६७
११५	किणो प्रश्ने	२·१·३७
१०२	किमिदमभ्य डेत्तिअडित्तिलडेद्दहम्	२·१·३
१३८	किमो डीस डिणो	२·२·७१
११६	किर इर हिर किलार्थे	२·१·३९
६०	किरिवेरे डः	१·३·७९
२५७	किल किर	३·३·४१
२५९	कुतः कउ कहंतिहु	३·३·४६
२४०	कुत्रात्रे च डेत्थु	३·३·१५
६५	कूरो गौणेषद्ः	१·३·१०२
८१	कूष्माण्ड्यां ण्डश्च तु लः	१·४·६४
२१९	कृगमोर्डदुअः	३·२·११
१८८	कृञः कुणः	३·१·२०
२२९	कृञो डीरः	३·२·५९
१६०	कृदो हं	२·४·३२
१७९	कृपौ णिजवहः	२·४·१२९
९१	कृष्णे वर्णे	१·४·१०४
३६	क्लृप्त इलिः	१·२·९२
१०३	केर इदमर्थे	२·१·८
१७८	केर् च वेः	२·४·१२३
३६	केवलस्य रिः	१·२·८९
१९२	केवलाअसारवसमारोवहत्थाः समारचेः	३·१·४४
११७	केवले णवर	२·१·४६
१९०	कोक्कवोक्कौ व्याहृः	३·१·३४
३७	कौक्षेयक उत्	१·२·९६
१५५	क्ते	२·४·१८
२४२	क्त्व इइउइविअवि	३·३·१८

पृष्ठाङ्क		क्रमाङ्कः
२३०	क्त्वा तूनं	३.२.६०
१२	क्त्वासुपोस्तु सुणात्	१.१.४३
१७८	क्रियः कीणः	२.४.१२२
३००	क्रियेः कीसु	३.४.६२
१६	क्लीबे गुणगाः	१.१.५२
१४०	क्लीबे स्वमेद्मिणमिणमो	२.२.८२
२३५	क्वचिद्भूतोऽपि	३.३.६
१५०	क्वचिद्सादेः	३.३.३८
१३९	क्वचित्सुपि तदो णः	२.२.७४
१३२	क्विपः	२.४.४७
७१	क्षः	१.४.८
२२४	क्षः ऽकः	३.२.३३
७३	क्षण उत्सवे	१.४.२१
७३	क्षमायां कौ	१.४.२०
१९७	क्षिपिरड्डक्खपरिहुलयत्तछुह-फेल्लणोल्लसोल्लगल्लत्थान्	३.१.७९
३०	क्षुत ईत्	१.२.६०
१८९	क्षुरे कम्मः	३.१.२८
८९	क्ष्मारत्नेऽन्त्यहलः	१.४.९६
७०	क्ष्वेडकगे खल्	१.४.५
१९८	खउरपड्डुहौ क्षुभेः	३.१.८४
४८	खघथधभाम्	१.३.२०
१०२	खस्य सर्वाङ्गात्	२.१.५
१६५	खाद्धावि लुक्	२.४.५८
४७	खोः कन्दुकमरकतमद्कले	१.३.१५
६०	खोः करवीरे णः	१.३.८०
४६	खोऽपुष्पकुब्जकर्परकीकोः	१.३.१२

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
२३१	गजडदबघझढधभां कचट-तपखछटथफाल्ह	३.२.६५
१८२	गण्ठो ग्रन्थेः	२.४.१४७
२८	गभीरग इत्	१.२.५१
२००	गमिरणुवज्जावज्जसाक्कुसो-क्कुसाइच्छअईअवहरअवसे-हवडअवरिअलवरिअल्लवो-ल्लणिरिणासवच्छुणिण-णिम्महपच्छन्दणिलुक्करम्भ-णिणिवहान्	३.१.९७
२४४	गमेस्त्वेप्येपिण्वोरेलुक्	३.३.३१
१९३	गर्जेर्बुक्कः	३.१.५०
५५	गर्भिते	१.३.५१
२०५	गवेषेर्घत्तगमेसडुंडुल्लडंडोलाः	३.१.१२१
३८	गव्यउदाईत्	१.२.९८
९४	गहिआद्याः	१.४.१२१
२०५	गाहोऽवाद्गाहः	३.१.१३०
१७७	गुण्ठ उद्धूलेः	२.४.११७
२०५	गुम्मगुम्मडौ मुहेः	३.१.१३१
१८९	गुललश्चाटौ	३.१.२६
१७४	गुलुगुञ्छोत्थङ्घोव्वेल्लो-ल्लाला उन्नमेः	२.४.१००
५	गो गणपरः	१.१.१०
६५	गोणाद्याः	१.३.१०५
३४	गौणान्त्यस्य	१.२.८१
३९	गौरव आत्	१.२.१०५
७८	ग्मो मः	१.४.४७
२०३	ग्रसेर्घिसः	३.१.११३
१७२	ग्रहेर्घेप्पः	२.४.८७

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
१८४	ग्रहेर्गिण्हवारगेण्हवलहर-पग्गाहिपच्चुआः	२·४·१५७
२५	घञि वा	१·२·३८
१९४	घटेर्गडः	३·१·५८
१९५	घुसलविरोलौ मन्थेः	३·१·६३
१८१	घूर्णेर्घुम्मपहल्लघोलघुलाः	२·४·१४२
१६३	घेत् तुंतव्यक्त्वासु ग्रहेः	२·४·४४
२८६	ङसः सुश् यत्तत्किम्भ्यः	३·४·२९
२८६	ङसिर्हे	३·४·२७
१५१	ङसिसष्टाश्च	२·३·४०
१२६	ङसिस्तो हि	२·२·१७
१३०	ङसेः शशाशिशे	२·२·३४
१२६	ङसेः श्लुक्	२·२·१५
२७७	ङसेर्हेहु	३·४·७
२२९	ङसेस्तोतुशातः	३·२·५५
२८१	ङसो लुक्	३·४·१६
१२५	ङसोऽस्त्रियां सर्	२·२·१०
१३५	ङस्ङसिटां णोणोर्डण्	२·२·५९
२९४	ङस्ङसिना मज्झुमज्झु	३·४·४७
२८२	ङस्ङस्योर्हं	३·४·२१
१४४	ङिटाभ्यां तुमए तुइ तुए तुमाइ तुमे	२·३·६
२७६	ङिनेच्च	३·४·६
१५१	ङिपोऽस्	२·३·४१
१३८	ङिरिआ डाहे डाला काले	२·२·६९
१३१	ङीप्रत्यये	२·२·३८
१२६	ङेर्डे	२·२·१६
१२५	ङेर्म्मिः	२·१·११
१३७	ङेस्त्थर्स्सिम्मि	२·२·६३
१४९	ङेस्तो ङम्	२·३·३५
२९१	ङ्यस्टा पइं तइं	३·४·४०
५७	ङ्वयौ कबन्धे	१·३·६२
७२	चः कृत्तिचत्वरे	१·४·१६
१९८	चञ्चारबेलवावुपालभेः	३·१·८३
२१	चण्डखण्डिते णा वा	१·२·१९
१४८	चतुरो जश्शस्भ्यां चउरो चत्तारो चत्तारि	२·३·२८
१२७	चतुरो वा	२·२·२३
३७	चपेटाकेसरदेवरसैन्यवेदना-स्वेचस्त्वित्	१·३·९३
१६४	चर्नृतिमदिव्रजाम्	२·४·४९
९३	चलयोरचलपुरे	१·४·११६
१६६	चलस्फुटे	२·४·६२
२२६	चिष्ठस्तिष्ठस्य	३·२·४२
४९	चोः खचितपिशाचयोः सल्लौ	१·३·२२
१६४	छर्गमिष्यमासाम्	२·४·५०
६२	छल् षट्शमीसुधाशाव-सप्तपर्णे	१·३·९०
२४६	छस्य युष्मदादेर्डारः	३·३·२३
१०२	छस्यात्मनो णअः	२·१·६
४७	छागशृङ्खलकिराते लकचाः	१·३·१३
१७६	छादेर्नूमनुमोव्वालडक्क-पत्वालसंतुमाः	२·४·११०
५८	छायायां होऽकान्तौ	१·३·७०
१६५	छिदिभिदो न्दः	२·४·५४

पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः
१७२ छिप्पः स्पृशतेः २.४.८८
२२४ छोऽनादौ श्चः ३.२.३२
२४६ जणि जणु नं नइ नावइ नाइ इवार्थे ३.३.२४
१८१ जनो जाजम्मौ २.४.१४०
२२५ जयद्यां यः ३.२.३९
१६४ जर् स्विदाम् २.४.५३
२८८ जश्शसोरेइ ३.४.३४
१३४ जश्शस्ङसिङसां णोश् २.२.५५
१४३ जसा मे तुब्भे तुय्हे उय्हे तुब्भ २.३.३
१७९ जाणमुणौ ज्ञः २.४.१३०
१८७ जाग्रेर्जग्गः ३.१.१५
१८१ जुञ्जजुज्जजुप्पा युजेः २.४.१३९
२०५ जुगुप्सतेर्दुगुञ्छझूणदुगुच्छाः ३.१.१२७
१९६ जूरः क्रुधेः ३.१.७२
१८१ जृम्भेऽवेर्जम्भा २.४.१३८
२२५ जो व्रजेः ३.२.३८
१५६ ज्ञा ज्ञे २.४.२१
७७ ज्ञम्नोः १.४.३७
८५ ज्ञो ञोऽविज्ञाने १.४.८२
२१ ज्ञो णोऽभिज्ञादौ १.२.१७
६३ ज्योर्द्नुजवधराजकुलभाजनकालायसकिसलयहृदयेषु १.३.९५
१८७ झरझूरसुमरविम्हरहरहलुडपअरपम्हुहाः स्मरतेः ३.१.१२
१८३ झरपज्झरपञ्चडुखिरणिज्झडुअणिच्चलाः क्षरेः २.४.१५४
३०६ झाडगास्तु देश्याः सिद्धाः ३.४.७२
१५२ झिझौ न्ति न्ते इरे २.४.४
४९ झो जटिले १.३.२३
५२ टल् त्रसरभृन्ततुबरतगरे १.३.३७
१३० टाङिङसाम् २.२.३५
२२८ टा नेन तदिदमोः ३.२.५३
१३२ टापो डे २.२.४५
१४४ टा मे ते दे दि तुमं तुमइ २.३.५
१४० टाससि णः २.२.७९
२७६ टि ३.४.५
५० टो डः १.३.३१
१२६ टो डेणल् २.२.१८
१२८ टो णा २.२.२८
१३४ टो णा २.२.५४
२७८ टो णानुस्वारौ ३.४.११
४९ टोर्बडिशादौ लः १.३.२४
१३६ टो वात्मनो णिआ णइआ २.२.६१
२२८ टोस्तु तु ३.२.५१
५० ठः १.३.२८
८२ ठढौ स्तब्धे १.४.७२
१६० डं मेश्छास्ततः २.४.३१
१६६ डः सीदपति २.४.६०
२३८ डइसोऽताम् ३.३.१०
१५८ डच्छ दृशिगम इजादौ हिलुक् च वा २.४.२८
७६ डल् फोर्मर्दितविच्छर्दच्छर्दिकपर्दवितर्दिगर्तसंमर्दे १.४.३३
१२८ डवो उतः २.२.२९

पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः
१९३ डिक्को वृषे ३.१.५१
२०१ डिप्पणिड्डुहौ विगलेः ३.१.१०१
२५३ डीतः स्त्रियाम् ३.३.३१
२०० डुण्डुल्लडुमडण्डल्लभमाड-भम्मभमुडतलअण्टझण्टगुम-टिरिटिल्लपरिपरघम-चक्कमभमडघसझम्पडुसा भ्रमेः ३.१.९६
१०६ डुमअडमऔल् भ्रुवः २.१.२५
१०३ डेम्बओ युष्मदस्मदोऽणः २.१.१०
२४९ डेंडाववश्यमः ३.३.२७
१३ डे तु किंशुके १.१.४६
२३९ डेत्तहे त्रलः ३.३.१३
२३९ डेत्तुलडेवडावियत्कियति च त्यादेर्वतुपः ३.३.१२
८० डेरो ब्रह्मचर्यसौन्दर्ये च १.४.५७
१५९ डोच्छ वचिमुचिरुदिभुजः २.४.३०
१३८ डो तदस्तु २.२.७२
५४ डो दीपि १.३.४६
१३१ डोम्लुकौ तु संबुद्धेः २.२.४२
७७ ड्मक्मोः १.४.४३
१९५ ढंसोत्थंघौ विवृतिरुध्योः ३.१.६४
५० ढः कैटभशकटसटे १.३.२७
१६५ ढः कथिवर्धाम् २.४.५५
५४ ढः पृथिव्यौषधनिशीथे १.४.४७
३५ ढिराहृते १.२.८७
७६ ढोऽर्धर्द्धिश्रद्धामूर्ध्नि तु १.४.३४
२१९ णं नन्वर्थे ३.२.१४
पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः
११५ णइ चेअ चिअ च्च एवार्थे २.१.३४
१७१ णप्पणज्जौ ज्ञः २.४.८४
५४ णर्दिना रुदिते १.३.४९
११९ णवि वैपरीत्ये २.१.५५
१२३ णशामः २.२.४
१५४ णिजदेदावावे २.४.११
१९१ णिव्वलो मुचेर्दुःखे ३.१.४०
१९७ णिरवो बुभुक्ष्याक्षिप्योः ३.१.७८
१८९ णिलुञ्छो निष्पाताच्छोटे ३.१.२९
१९५ णिल्लूरल्लूरणिव्वरणिच्छल्लु-दुहावणिज्झोडाः ३.१.६७
२०१ णिवहणिरिणासणिरिणिज्ज-रोञ्चचड्डाः पिषेः ३.१.१०२
१८९ णिव्वोलो मन्युनौष्ठमालिन्ये ३.१.२५
१९५ णिहर आक्रन्देः ३.१.६५
१७४ णिहुवः कमेः २.४.१०२
१४६ णे च शसा २.३.१८
१४७ णेऽम्हेह्यम्हाह्यम्हेऽम्ह भिसा २.३.२२
१३५ णोणाङ्ङिष्विदुना जः २.२.५६
५५ णो वातिमुक्तके १.३.५०
१२८ णो शसश्च २.२.२६
१६८ णो ह्रश्च चिजिपूश्रुधूस्तुहु-लूभ्यः २.४.७२
१४९ ण्ह ण्हं संख्याया आमोऽ-विंशतिगे २.३.३३
११५ तं वाक्योपन्यासे २.१.३३
३०१ तक्षाद्याश्छोल्लादीन् ३.४.६४

पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः

२०४ तक्षेश्छच्छरम्परम्फाः ३·१·१२२
२२९ तडिजेचः ३·२·५६
१७७ तडेराहोडविहोडौ २·४·११८
१९६ तडुवविरल्लतडतड्डास्तनेः ३·१·७४
२४८ तणेणरे सिरेसितोहिंकोहिं तादर्थ्ये ३·३·२५
२६१ ततस्तदा तो ३·३·५०
१४० तदिदमेतदां सेसिं तु ङसामा २·२·८४
२५२ तद्योगजाश्च ३·३·३०
३०५ तद्व्यत्ययश्च ३·४·७०
९२ तन्व्यामे १·४·१०६
२२७ तल्लदोः ३·२·४६
२४१ तव्यस्य एव्वइएव्वउएव्वाः ३·३·१७
२१९ तस्मात्ता ३·२·१३
१४१ तस्सौ सोऽक्लीबे तदश्च २·२·८९
१६३ ता ड्डो इशः २·४·४६
१५० तादर्थ्ये ङेस्तु २·३·३६
७८ ताम्राम्रयोर्म्बः १·४·४९
२१७ तावति स्वोर्वा ३·२·३
८ तिङः १·१·२३
१५४ तिङान्त्थि २·४·१०
१९३ तिजेरोसुक्कः ३·१·५२
१४८ तिण्णि त्रेः २·३·२९
१४९ ति त्रेः २·३·३२
६५ तिर्यक्पदातिशुक्तेस्तिरिच्छि पाइक्क सिप्पी १·३·१०४
२९ तीर्थे ग्रूह् १·२·५४

पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः

२८६ तु किमो ड्डिह ३·४·२८
५२ तुच्छे चञ्छौ १·३·३६
२९२ तुज्झ तुध्र तउ ङसिङसा ३·४·४१
१९५ तुडिरल्लुक्कणिल्लुकोल्लूरो-क्खुडलुक्कतोडखुट्टखुडाल् ३·१·६२
५८ तु ढो विषमे १·३·६७
१४४ तु तुइ ङिप्ङसौ २·३·८
२८ तु निर्झरद्विघाकृओरोश्ना १·२·४९
३५ तु बृहस्पतौ १·२·८५
१४४ तुब्भ तुहिंतो तुम्ह ङसिना २·३·७
१४५ तुब्भोब्भोय्हतइतुहंतुहतुम्हं-तुवतुमतुमेतुमाइतुमोदेते-दितितुइए ङसा २·३·१२
२४४ तुम एवमणाणहमणहिं च ३·३·२०
१०७ तुमत्तुआणतूणाः क्त्वः२·१·२९
४३ तु मयूरचतुर्थचतुर्वारचतुर्दश-चतुर्गुणमयूखोलूखल-सुकुमारोदूखललवण-कुतूहले १·३·५
२३४ तु मो ड्वम् ३·३·३
१५५ तु मौ २·४·१६
२९३ तुम्हहमाभ्यस्भ्याम् ३·४·४३
१४५ तुम्हाणतुब्भंतुब्भाणतुमाण-तुवाणतुहाणतुब्भवोमे त्वामा २·३·१३
२९० तुम्हे तुम्हइ जश्शसोः ३·४·३८

पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः
१७४ तुलिडोल्योरोहामरक्खोलौ २.४.९७
१४४ तुव तुम तुह तुब्भ २.३.९
१८२ तुवरजअडौ त्वरेः २.४.१४८
५२ तु वसतिभरते १.३.३९
५ तु विकल्पे १.१.१३
११ तु सक्खिणभवन्तजम्मण-महन्ताः १.१.३७
१९ तु समृद्ध्यादौ १.२.१०
१८२ तूरः शतृतिङि २.४.१५०
८० तूर्यदशार्हशौण्डीर्ये १.४.६०
२४५ तृनो णअल् ३.३.२२
१०३ तैलस्यानङ्कोलाड्डेलः २.१.१२
८८ तैलादौ १.४.९३
१८ तोऽचः १.२.७
८२ तो ढो रभ्यारब्धे तु १.४.७३
२२ तोऽन्तर्यल् १.२.२३
७३ त्योऽचैत्ये १.४.१७
१३९ त्रतसि च किमो स्कः २.२.७५
२०४ त्रसेर्वज्जडरौ ३.१.११९
२४० त्वतलौ प्पणम् ३.३.१६
३७ त्वत्सरोरुहमनोहरप्रकोष्ठा-तोद्यान्योन्ये वश्च कोः १.२.९५
८१ त्वथ्वद्ध्वां क्वचिच्चछजझाः १.४.६५
२९ त्वदुत उपरिगुरुके १.२.५७
१६८ त्वनतः २.४.७०
२६१ त्वनुसाह्रावन्यथासवौं ३.३.५१
७४ त्वभिमन्यौ जर्जौ १.४.२५
५७ त्वभिमन्यौ मः १.३.६५
१५३ त्वस्तेर्म्हेम्होम्हि मम्रोमिना २.४.८
१०३ त्वस्य तु डिमात्तणौ २.१.१३
२३ त्वर्पौ १.२.३२
२२३ त्वाङ्डाहो ङसः ३.२.२८
१०६ त्वादेः सः २.१.२७
२२ त्वार्द्रे उद्रोत् १.२.२७
१६० त्विज्ञालिङः २.४.३४
२६ त्वेदितः १.२.४१
१२० त्वोद्वापोताः २.१.६७
७२ थलस्पन्दे १.४.१२
१८० थिप्परस्तृपः २.४.१३५
२१७ थो धः ३.२.४
१५३ थघ्वमित्थाह्वचो २.४.५
७४ थ्यश्चत्सप्सामनिश्चले १.४.२३
५१ दंशदहोः १.३.३४
७६ दग्धविदग्धवृद्धिदंष्ट्रावृद्धे १.४.३५
५२ दम्भदरदर्भगर्दभदष्ट्रदशन-दग्धदाहदोहददोलादण्ड-कदने तु १.३.३५
११५ दर अर्धेऽल्पे वा २.१.३६
९४ दर्वीकरनिवहौ दव्वी-रयणिहवौ १.४.१२०
२१७ दस्तस्य शौरसेन्यामखाव-चोऽस्तोः ३.२.१
२०४ दहिरहिऊलालुक्खौ ३.१.१२४
१७० दहेर्झर् २.४.७७
२३७ दावेर्डेहो याद्दक्ताद्दकीदृगी-दृशाम् ३.३.९

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
११	दिक्प्रावृषि	१.१.३५
४	दिर्दीर्घः	१.१.६
१२५	दिर्दोसोदोदु ङसौ	२.२.८
१२७	दिर्घो भ्यसि	२.२.१९
२५८	दिवा दिवे	३.३.४३
६	दिहौ मिथः से	१.१.१८
२७३	दिहौ सुपि	३.४.१
८७	दीर्घाश्च	१.४.८७
१७२	दीसल् दृशेः	२.४.८९
१९६	दुःखे णिव्वरः	३.१.७०
३१	दुरो रलुकि तु	१.२.६२
२२८	दुस्तिर्यादृशागे	३.२.४९
१६९	दुहलिहवहरुहां भरत उच्च	२.४.७६
३६	दृप्तेऽरि त्ता	१.२.८८
१८३	दृशिरोअक्खणिअच्छाव-अच्छचज्जावअज्झपुलअपु-लोअदेक्खावअक्खपेच्छा-वआसपासणिअसच्चवाव-क्खान्	२.४.१५३
१७६	दृशोर्दावद्क्खवद्दसाः	२.४.११३
३६	दृश्यक्सक्किपि	१.२.९०
११९	दे संमुखीकरणे	२.१.५९
३८	दैत्यादौ	१.२.१०३
८८	दैवगेषु	१.४.९२
१४८	दोण्णि दुवे वेण्णि द्वे	२.३.३०
१०४	दो त्तो तसः	२.१.१४
३०	दोदोऽनुत्साहोत्सन्न ऊच्छसि	१.२.६१
१४९	दो वे टादौ च	२.३.३१
५३	दोहदप्रदीपशातवाहना-तस्याम्	१.३.४१
७४	द्यय्यर्यां जः	१.४.२४
५	द्वितीयः फुः	१.१.११
२७	द्विनीक्षुप्रवासिषु	१.२.४८
१४९	द्विवचनस्य बहुवचनम्	२.३.३४
१७०	द्वे गमिगे	२.४.८०
८५	द्वोर्द्वारे	१.४.८३
४९	घः पृथकि तु	१.३.२१
१०	घनुषि वा	१.१.३२
१७३	घवलोद्घटोर्दुमोग्गौ	२.४.९४
२१६	धातवोऽर्थान्तरेष्वपि	३.१.१३३
८५	धात्रीद्रे रस्तु	१.४.८०
१८८	धुवो धूञः	३.१.१७
११८	धू कुत्सायाम्	२.१.५१
८७	धृष्टद्युम्ने	१.४.८९
८०	धैर्ये रः	१.४.५९
१७९	धो दह्यः श्रदः	२.४.१३१
१७८	ध्मो धुमोदः	२.४.१२५
७४	ध्यह्योर्झल्	१.४.२६
७५	ध्वजे वा	१.४.२८
५५	नः	१.३.५२
१४०	न स्थः	२.२.८१
२३०	न प्रायो लुकादिच्छलृषट्-शम्यन्तसूत्रोक्तम्	३.२.६३
१६४	नमोद्विजरुदां वः	२.४.४८
७	न यण्	१.१.२०
४२	नवमालिकाबदरनवफलिका-पूगफलपूतर ओल्	१.३.५

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
८१	न वा तीर्थदुःखदक्षिणदीर्घे	१.४.६३
२४	न वाव्ययोत्खातादौ	१.२.३७
१०५	नवैकाद्वा	२.१.२०
२०२	नशिरवहरावसेहणिवहपडि-सासेहणिरिणासान्	३.१.१०८
१७५	नशेर्विप्पगालनासवपलाव-हारवविउडाः	२.४.१०३
२५५	नहि नाहि	३.३.३७
२२८	नार् स्त्रियाम्	३.२.५४
१३०	नातः शा	२.२.३६
४५	नात्पः	१.३.९
९१	नात्स्वप्ने	१.४.१०२
५५	नापिते ण्हः	१.३.५४
१३२	नाम्नि ङरम्	२.२.४४
३९	नाव्यावः	१.२.१०४
४८	निकषस्फटिकचिकुरे हः	१.३.१९
१८६	निना लिहक्कणिलुक्कणिलिअ-लिक्कलुक्कणिरुग्घाः	३.१.८
१९७	निरः पद्यतेर्वलः	३.१.७५
१७९	निरप्पथक्कठाच्चिट्ठाः	२.४.१२७
९	निर्दुरि वा	१.१.२६
१७७	निमेर्निम्मवनिम्माणौ	२.४.१२०
१७३	निवृपतोर्णिहोडो वा	२.४.९३
१२०	निश्चयनिर्धारणे वले	२.१.६२
४३	निषण्ण उमः	१.३.६
१९६	निषेधेर्हक्कः	३.१.७१
१८८	निह्रुम्मे निट्टुहः	३.१.२२
१७	निष्प्रतौ ओत्परी माल्य-स्थोर्वा	१.२.१
१८७	निस्सुर्निहरनिलज्झाढवर-हाढाः	३.१.१४
५६	नीपापीडे मो वा	१.३.५७
६१	नीवोस्वप्ने वा	१.३.८५
१२८	नूनपि ङसिङसोः	२.२.२७
१८२	नेः सदेर्मज्जः	२.४.१४५
२२६	नो नणोः पैशाच्याम्	३.२.४३
७८	न्मः	१.४.४८
२२५	न्यण्यज्ञञ्जां ञर्	३.२.३७
२२६	न्यण्यज्ञां ञर्	३.२.४४
१८३	न्यसेर्णिमणुमौ	२.४.१५६
१८९	पअल्लो लम्बनशैथिल्ययोः	३.१.२७
२०	पक्काङ्गारललाटे तु	१.२.१२
८२	पक्ष्मणि	१.४.६८
२५७	पग्गिम प्राइम प्राउ प्राइव प्रायसः	३.३.४२
७६	पञ्चदशदत्तपञ्चाशति णः	१.४.३६
१८७	पट्टघोट्टडल्लपिज्जाः पिबेः	३.१.१६
१९९	पडिसापरिसामौ शमेः	३.१.९२
२३	पद्मे मि	१.२.३१
२५०	परमेकशसोर्डेडि	३.३.२८
१७६	परिवाडो घटेः	२.४.११२
१८२	पर्यसः पल्लट्टपल्लोट्टपल्हत्थाः	२.४.१५१
७७	पर्यस्ते टश्च	१.४.४१
२९९	पर्याप्तौ भुवोप हुच्चः	१.४.५९
२६१	पश्चात्पच्छइ	३.३.४९

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
२०१	पस्सगण्हौ हशिग्रहोः	३.४.६३
२२	पारावते तु फोः	१.२.२४
५०	पिठरे हस्तु रश्च ढः	१.३.२९
५३	पीते ले वा	१.३.४५
१३९	पुंसि सुना त्वयं क्रियामिमिआ	२.२.७७
१२८	पुंसो जसो डउडओ	२.२.२४
१३०	पुंसोऽजातेर्ङीब्वा	२.२.३७
१३६	पुंस्याणो राजवच्चानः	२.२.६०
१८२	पुच्छः पृच्छेः	२.४.१४६
११८	पुणरुत्तं कृतकरणे	२.१.५३
४७	पुन्नागभागिनीचन्द्रिकासु मः	१.३.१६
२०२	पुरग्गवाग्घोडाहिरेमाग्गुमाङुमाः	३.१.१०६
८९	पूर्वमुपरि वर्गस्य युजः	१.४.९४
२१८	पूर्वस्य पुरवः	३.२.९
१८५	पृथक्स्पष्टे णिव्वडः	३.१.२
३३	पृष्ठेऽनुत्तरपदे	१.२.७७
५५	पो वः	१.३.५५
३९	पौरगे चाउत्	१.२.१०६
१२२	प्याद्याः	२.१.७७
१७४	प्रकाशेर्णुव्वः	२.४.१०१
५१	प्रतिगेऽप्रतीपगे	१.३.३३
२०३	प्रतीक्षेर्विहिरविरमालसामआः	३.१.११५
२०१	प्रत्यागमागमाभ्यागमां पल्लट्टाहिपच्चुओम्मच्छाः	३.१.९८
२५५	प्रत्युत पच्चलिउ	३.३.३८
६२	प्रत्यूषदिवसदशापाषाणे तु हः	१.३.८८
१२१	प्रत्येकमः पडिपक्कं पाडिक्कं	२.१.६९
५४	प्रथमशिथिलमेथिशिथिरनिषधेषु	१.३.४८
२१	प्रथमे प्थोः	१.२.२०
१९८	प्रदीपेः संधुक्काब्बुत्ततेअवसंधुमाः	३.१.८५
५६	प्रभूते वः	१.३.५९
१८५	प्रभौ हुप्पः	३.१.३
८८	प्रमुक्तगे	१.४.९१
७५	प्रवृत्तसंदष्टमृत्तिवृत्तेष्टापत्तनकदर्थितोष्ट्रे	१.४.३१
१८६	प्रसुरुवेल्लवअल्लौ	३.१.१०
१७६	प्रस्थापेः पेट्ठवपेङ्कुवौ	२.४.११४
८९	प्राक् श्लाघाप्लक्षशार्ङ्गे ङ्लोऽत्	१.४.९५
२३२	प्रायोऽपभ्रंशेऽचोऽच्	३.३.१
५	प्रायो लिति न विकल्पः	१.१.१४
४४	प्रायो लुक्काचजतदपयवाम्	१.३.८
१७५	प्लावेरोव्वालपव्वालौ	२.४.१०८
५६	फः पाटिपरिघपरिखापरुषपनसपारिभद्रेषु	१.३.५६
१८०	फक्कस्थक्कः	२.४.१३३
५७	फस्य भहौ वा	१.३.६०
२३	फोः परस्परनमस्कारे	१.२.३०
१९९	बडबडो विलपेः	३.१.८८
१७०	बन्धो न्धः	२.४.७८
२०१	बलेर्वम्फः	३.१.१०३
६	बहुलम्	१.१.१७
१६१	बहौ न्तु ह मो	२.४.३६

पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः
८० बाष्पे ह्रोऽश्रुणि १.४.६१
६४ बाहिंबाहिरौ बहिसः १.३.१०१
११ बिन्दुल् १.१.४०
३०३ बिन्दोरन्ते ३.४.६६
५७ बिसिन्यां भः १.३.६३
६१ बो मः शबरे १.३.८४
५७ बो वः १.३.६१
३०० ब्रूञो बुवः ३.४.६१
११७ भन्द् ग्रहणार्थे २.१.४७
११७ भन्दि विकल्पविषादसत्यनिश्चयपश्चात्तापेषु च २.१.४८
१९३ भञ्जेर्वेमअमुसुमूरमूरपविरञ्जसूरसूडकरञ्जनिरञ्जविराः ३.१.४९
२२१ भवताम् ३.२.२३
२२१ भविष्यति स्सिः ३.२.२४
१५७ भविष्यति हिरादिः २.४.२५
१०४ भवे डिल्लोल्लडौ २.१.१७
२०२ भषेर्बुक्कः ३.१.१०५
१९९ भाराक्रान्ते नमेर्निसुडः ३.१.९०
१६९ भावकर्मणि तु वर्यग्लुक् २.४.७३
२०३ भासेर्भिसः ३.१.११४
१५८ भिदिविदिच्छिदो डेच्छ २.४.२९
१८० भियो भाबिहौ २.४.१३६
२९० भिसा तुह्मेहिं ३.४.१३६
१४५ भिसा भेतुब्भेहुब्भेहुय्हेहितुय्हेहिं २.३.१०
२९५ भिसाम्हेहिं ३.४.४९

पृष्ठाङ्कः क्रमाङ्कः
१३५ भिस्भ्यसाम्सुप्स्वीत् २.२.५८
१२७ भिस्भ्यस्सुपि २.२.२१
७८ भीष्मे १.४.४५
१८० भुजिरुणभुञ्जकम्मसमाणचमडचड्डुजेमजिमान् २.४.१३७
२१८ भुवो भः ३.२.६
१५६ भूतार्थस्य सी हीअ हीर २.४.२२
२७७ भ्यसो हुं ३.४.८
५९ भ्यौ बृहस्पतौ तु बहोः १.३.७५
२०२ भ्रंशेः पिड्डपिट्टछुक्कछुल्लपुट्टपुडाः ३.१.१०४
१७३ भ्रमवेष्ट्योस्तालिअण्टपरिआलौ २.४.९५
१५४ भ्रमेराडः २.४.१३
१४६ मं णे णं मि मिमं मममम्मि अहं मम्हाम्ह अमा २.३.१९
२२० मः ३.२.२२
२९३ मइं ङ्यमस्टा ३.४.४६
१४७ मइ मम मह मज्झ ङसौ २.३.२३
१२९ मङ्लुगसंबुद्धेर्नपः २.२.३०
१२० मणे विमर्शे २.१.६३
१९४ मण्डेश्चिविडिङ्करिडचिञ्चचिञ्चिल्लचिञ्चआः ३.१.६१
२० मध्यमकतमे च १.२.१४
१६२ मध्ये चाजन्तात् २.४.४०
८४ मनयाम् १.४.७९
१०५ मनाको डअं च वा २.१.२३
१०१ मन्तमणवन्तमाआलुआलइरइल्लउल्लइन्ता मतुपः २.१.१
५८ मन्मथे १.३.६६

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
१४७	ममं णे मआइ ममए टा	२·३·२१
१६९	मर्चेः	२·४·७४
६४	मलिनधृतिपूर्ववैडूर्याणां मइलदिहिपुरिमवेरुलिआः	१·३·९९
१९२	मस्जेराउड्डणिउड्डबुड्डखुप्पाः	३·१·४५
१८६	महमहो गन्धे	३·१·११
१२०	माइं मार्थे	२·१·६४
२२२	मागध्यां शौरसेनीवत्	३·२·२७
१६२	माणन्तौल् च लृङः	२·४·४१
१३३	मातुरा अरा	२·२·५०
२५९	मा मं	३·३·४५
१४७	मि मइ ममाइ मए मे ङिटा	२·३·२०
२६	मिरायां लित्	१·२·४२
१५२	मिर्मिविटौ	२·४·३
११६	मिव पिव विव विअ व व्व इवार्थे	२·१·३८
१०५	मिश्रालिअश्	२·१·२१
१७६	मिश्रेर्मीसालमेलवौ	२·४·१०९
१६६	मीलेः प्रादेर्वे तु	२·४·६१
३०	मुकुलादौ	१·२·५८
१२१	मुधा मोरउल्ला	२·१·७३
२६	मूषिकविभीतकहरिद्रा-पथिपृथिवीप्रतिश्रुत्यत्	१·२·४३
२०४	मृक्षेश्चोप्पडः	३·१·११७
१८३	मृद्नातेर्मलपरिहट्टखड्डुपन्नाड-चड्डमड्डमडाः	२·४·१५२
११	मोऽचि वा	१·१·३९
१४६	मो मे वअं जसा	२·३·१६
१५३	मो म मु मस्महिङ्	२·४·६
१५५	मोमसुम्भिम्ह	२·४·१७
१८८	म्लैर्वापव्वाऔ	३·१·१९
१३८	म्हा ङसेः	२·२·७०
२२८	यः पो हृदये	३·२·५२
११	यत्तत्सम्यग्विष्वक्पृथको मल्	१·१·३८
२४०	यत्तदोर्डेत्तु	३·३·१४
२८७	यत्तद् ध्रुं त्रं स्वमोः	३·४·३१
४५	यश्रुतिरः	१·३·१०
५८	यष्ट्यां लल्	१·३·७१
१७७	यापेर्जवः	२·४·११५
२३८	यावत्तावत्युंमार्हिमा वादेः	३·३·११
१६४	युधबुधगृधक्रुधसिधमुहां ज्झः	२·४·५२
१४३	युष्मत्सुना तुवं तुं तुमं तुह	२·३·१
५८	यो जर्तीयानीयोत्तरीयकृत्येषु	१·३·६८
१६७	योरेङ्	२·४·६५
१६६	रः सृजि	२·४·५९
१९२	रचेर्विडयिड्डावहोग्गहाः	३·१·४३
१९९	रभिराडो रम्भडवौ	३·१·८९
९४	रलोर्हरिताले	१·४·११९
५६	रल् पापर्द्धौ	१·३·५८
५३	रल् सप्तत्यादौ	१·३·४२
२६	रस्तिस्तिरौ	१·२·४४
१०३	राजपराड्डिक्कडकौ	२·१·९
१९४	राजेः सहरेहछज्जरिराग्घाः	३·१·५७
१३४	राज्ञः	२·२·५३

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
२२७	राज्ञो ज्ञो वा चिञ्	३·२·४५
८५	रात्रौ	१·४·८४
१८६	रा वेर्लियः	३·१·७
१७३	रावो रञ्जयतेः	२·४·९६
८६	रितो द्वित्वल्	१·४·८५
२०१	रिहरिग्गौ प्रविशेः	३·१·९९
१७०	रुध उपसमनोः	२·४·७९
१६४	रुधो न्धम्भौ	२·४·५१
१९०	रुवो रुञ्जरुण्टौ	३·१·३३
१६७	रुषगेऽचो द्विः	२·४·६८
५९	रो डा पर्याणे	१·३·७६
१०६	रो दोर्यात्	२·१·२४
३०	रो भ्रुकुटिपुरुषयोरित्	१·२·५९
१७५	रोमन्थेरोग्गालवग्गालौ	२·४·१०७
१०	रो रा	१·१·३०
२३०	रो लस्तु चूलिकापैशाच्याम्	३·२·६४
२३४	रो लुकमधः	३·३·५
१९३	रोसाणोवुसलुहलुचछपुच्छ-फुसफुस्सघसहुला मार्ष्टेः	३·१·४८
७७	रो हश्चोत्साहे	१·४·३९
७५	र्तस्याधूर्तादौ टः	१·४·३०
१४१	र्थे डेल्	२·२·८६
७९	र्यः सौकुमार्यपर्यस्तपर्याणे	१·४·५५
२२८	र्यस्नष्टां रिअसिनसिटाः क्वचित्	३·२·५०
२१८	र्यो य्यः	३·२·८
९०	र्शर्षतप्तवज्रेष्वित्	१·४·९८
१६०	र्से	२·४·३३
५३	लः पलितनिम्बकदम्बे	१·३·४०
१२०	लक्षणे जेण तेण	२·१·६६
९४	लघुके लहोः	१·४·११८
१९४	लज्जेर्जीहः	३·१·५६
१५२	लटस्तिप्ताविजेच्	२·४·१
२९५	लटो हिं वा झझ्योः	३·४·५१
१६१	लड्लटोश्च जर्जारौ	२·४·३९
९३	लनोपालाने	१·४·११२
४९	लरङ्कोठे	१·३·२६
९३	ललाटे डलोः	१·४·११४
५०	लल डोऽनुडुगे	१·३·३०
८४	लवरामधश्च	१·४·७८
९१	लादक्लीबेषु	१·४·१०१
३०३	लिङ्गमतन्त्रम्	३·४·६८
१८१	लिम्पो लिपः	२·४·१४३
१५१	लुक् क्यङोर्यस्य तु	२·३·४२
६२	लुकपादपीठपादपतनदुर्गादेवयुदुम्बरेचान्तर्दः	१·३·९२
१७	लुगव्ययत्यदाद्यात्तदः	१·२·३
१५४	लुगाविल् भावकर्मक्ते	२·४·१४
१६१	लुगिज्जहीज्जस्विज्जेऽतः	२·४·३८
१३	लुङ् मांसादौ	१·१·४४
१९९	लुभेः संभावः	३·१·९३
५९	लो जठरबठरनिष्ठुरे	१·३·७७
८	लोपः	१·१·२४
६०	लो ललाटे च	१·३·८१
२२७	लो ळः	३·२·४८
७९	लो वार्द्रे	१·४·५४
१०६	लो वा विद्युत्पत्रपीतान्धात्	२·१·२६

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
६१	लोहललाङ्गललाङ्गूले वा	१.३.८२
१०४	ल्लुप्तः कृत्वसुचः	२.१.१६
१७२	वचेरुञ्चः	२.४.९०
१९२	वज्रेर्वेहववेलवजुर-वोम्मच्छाः	३.१.४७
११७	वणे निश्चयानुकम्प्यविकल्पे	२.१.४३
१०१	वतुपो डित्तिअमेतल्लुक् चैतत्तदः	२.१.२
१५०	वधाड्डाइ च	२.३.३७
१०७	वरइत्तगास्तृनाद्यैः	२.१.३०
१४	वर्गेऽन्त्यः	१.१.४७
१०३	वर्वतेः	२.१.११
१७५	वल आरोपेः	२.४.१०४
२०५	वलग्गचडमारुहेः	३.१.१२८
७९	वश्च विह्वले	१.४.५२
२६३	वहिल्लगाः शीघ्रादीनाम्	३.३.५६
९२	वा छद्मपद्ममूर्खद्वारे	१.४.१०९
७७	वात्मभस्मनि पः	१.४.४२
७६	वा न्तन्धौ मन्युचिह्नयोः	१.४.३२
८०	वा पर्यन्ते	१.४.५८
२८	वा पानीयगे	१.२.५२
४०	वा पुआय्याद्याः	१.२.१०९
१४६	वा भ्मो म्हज्झौ	२.३.१४
३२	वा मधूके	१.२.७०
७०	वा रक्ते गः	१.४.२
९३	वाराणसीकरेण्वां रणोः	१.४.११३
१५६	वा लट्लोट्छतृषु	२.४.२०
१७	वालाब्वरण्ये	१.२.४
११९	वा सख्या मामि हला हले	२.१.५८
८७	वा से	१.४.९०
१७१	वाहिप्पो व्याहुः	२.४.८६
१४	विंशतिषु त्या स्त्रोपल्	१.१.४८
२०५	विकसेः कोआसवोसग्गौ	३.१.१२५
१७७	विक्रोशेः पक्खोडः	२.४.११६
१९४	विडवमर्जेः	३.१.५५
२३५	विपदापत्संपदि द इ	३.३.७
१९८	विरणडौ गुपेः	३.१.८२
१७५	विरेचेरोल्लुङ्डोल्लुङ्ड-पल्हत्थाः	२.४.१०५
२००	विश्रमेर्णिव्वा	३.१.९५
७२	विसंस्थुलास्थ्यघनार्थे	१.४.१५
२०४	विसट्टो दलेः	३.१.११८
१९६	विसूरश्च खिदेः	३.१.७३
१७९	विस्मरः पम्हसवीसरौ	२.४.१२८
२९	विहीनहीने वा	१.२.५५
१२३	वीप्सार्थात्तदचि सुपो मस्तु	२.२.१
७१	वुश्च रुत्रैक्षे	१.४.७
३५	वृन्त इदेङ्	१.२.८६
३४	वृन्दारकनिवृत्तयोः	१.२.७९
३५	वृष्टिपृथङ्मृदङ्गनप्तृकवृष्टे	१.२.८३
१९१	वेअडः खचेः	३.१.३९
२७	वेङ्गुदशिथिलयोः	१.२.४६
५१	वेतस इति तोः	१.३.३२
१९८	वेपेराअम्बाअज्झौ	३.१.८१

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
११९	वेव्वे विषादभयवारणे	२·१·५६
१६५	वेट्ठेः	२·४·५६
४७	वैकादौ गः	१·३·१४
१२६	वैतत्तदः	२·२·१४
२०४	वोज्जो वीजेश्च	३·१·१२०
५७	वो भस्य कैटभे	१·३·६४
६३	व्याकरणप्राकारागते कगोः	१·३·९३
१८७	व्याप्रेराअड्डः	३·१·१३
३००	व्रजेर्वञ्जः	३·४·६०
१६६	शकगे	२·४·६३
१९१	शकेस्तरतीरपारचआः	३·१·३७
१६२	शतृशानचोः	२·४·४२
१८१	शदेर्झडपक्खोडौ	२·४·१४४
१०५	शनैसो लिङअं	२·१·२२
२२	शय्यादौ	१·२·२६
१५	शरत्प्रावृट्	१·१·५०
११	शरदामत्	१·१·३६
४	शषसां शुः	१·१·७
२२७	शषोः सः	३·२·४७
१४३	शसा वो च	२·३·४
१२७	शस्येत्	२·२·२०
५	शिति दीर्घः	१·१·१५
९	शि श्लुङ नपुनरि तु	१·१·२८
४७	शीकरे तु भहौ	१·३·१७
७०	शुल्के ङ्गः	१·४·३
१५४	शुष्यादेरविर्वा	२·४·१२
३३	शृङ्गमृगाङ्कमृत्युघृष्टमसृणेषु वा	१·२·७६
२२१	शेषं प्राकृतवत्	३·२·२६
२३१	शेषं प्राग्वत्	३·२·६७

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
२३०	शेषं शौरसेनीवत्	३·२·६२
३०६	शेषं संस्कृतवत्	३·४·७१
८६	शेषादेशस्याह्लोऽचोऽखोः	१·४·८६
८	शेषेऽच्यचः	१·१·२२
६१	शोः सल्	१·३·८७
८३	शोर्लुक् खोः स्तम्बसमस्तनिस्पृहपरस्परश्मशानश्मश्रौ	१·४·७५
१८	शोर्लुप्तयवरशोर्दिः	१·२·८
१२९	शो शु स्त्रियां तु	२·२·३२
३७	शौण्डगेषु	१·२·९७
३०४	शौरसेनीवत्	३·४·६९
८३	श्चस्य हरिश्चन्द्रे	१·४·७६
७३	श्चेर्वृश्चिके ञ्चुर्वा	१·४·१८
८२	श्नष्णस्नह्नह्लक्ष्णां ण्हः	१·४·६९
१२९	श्निशिशिङ जश्शसोः	२·२·३१
१२९	श्नुगनपि सोः	२·२·२९
८१	श्मष्मस्मह्मामस्मरश्मौ म्हः	१·४·६७
२४	श्यामाके मः	१·२·३७
१८८	श्रमे वावम्फः	३·१·२३
१८०	श्लाघः सलाहः	२·४·१३४
२०५	श्लिषोऽवआससामग्गापरिअन्ताः	३·१·१२६
१२३	श्लुग्जश्शसोः	२·२·३
७८	श्लेष्मबृहस्पतौ तु फोः	१·४·४६
७१	ष्कस्कोर्नाम्नि	१·४·६
७२	ष्टः	१·४·१४
२३०	ष्ठवः ठुक्कनत्थूनौ	३·२·६१
२२६	ष्टौ स्टम्	३·२·४०

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
७८	ष्पस्पोः फः	१.४.४४
२०१	संगमोऽभिडः	३.१.१००
३	संज्ञा प्रत्याहारमयी वा	१.१.३
१३४	संज्ञायामरः	२.२.५१
१९७	संतपां झंखः	३.१.७६
१८९	संधुक्षणोऽवहुम्मे	३.१.२४
२०३	संदिशोऽप्पाहः	३.१.११२
१९०	संनाम आद्दङः	३.१.३५
५	संयुक्तं स्तु	१.१.१२
२५	संयोगे	१.२.४०
१३	संस्कृतसंस्कारे	१.१.४५
४	सः समासः	१.१.८
२२५	सः सगोः संयोगेऽग्रीष्मे	३.२.३५
१०	स आयुरप्सरसोः	१.१.३४
२९६	सतम्याश्च	३.४.५३
२०	सप्तपर्णे फोः	१.२.१३
२५६	समं समाणु	३.३.४०
१४	स्तमदामशिरोनभो नरि	१.१.४९
७	संधिस्त्वपदे	१.१.१९
१६५	समुदो लर्	२.४.५७
१९४	समो गलः	३.१.५९
११७	संभावने अइ च	२.१.४४
११८	संभाषणरतिकलहे रे अरे	२.१.४९
२८५	सर्वंगात् ङि हिं	३.४.२६
१३७	सर्वादेर्जसोऽतो डे	२.२.६२
१०	सशाशिवि	१.१.३३
२५८	सह सहुं	३.३.४४
२०९	साअड्ढाणच्छकड्ढाच्छा-अञ्छाणञ्छाः कृषेः	३.१.१०९
७४	साध्वसे	१.४.२७
६	सानुनासिकोऽचारं ङित्	१.१.१६
१८६	सारः प्रहुः	३.१.९
१९०	साहट्टसाहरौ संवृः	३.१.३०
१९१	सिञ्चसिम्पौ सिचेः	३.१.४२
३	सिद्धिर्लोकाच्च	१.१.१
१७१	सिप्पः सिचस्निहोः	२.४.८५
१५२	सिध्यास्सेसि	२.४.२
६२	सिरायां वा	१.३.९१
१५३	सिना ल्सि	२.४.९
१२४	सुंतो भ्यसः	२.२.७
१४१	सुनैस इणमो इणं	२.२.८८
२९३	सुपा तुम्हासु	३.४.४२
२९५	सुपाम्हासु	३.४.५०
१४२	सुप्यदसोऽमुः	२.२.९०
४	सुप्स्वादिरन्त्यहला	१.१.४
३१	सुभगमुसलयोः	१.२.६३
२८१	सुससोः	३.४.१७
२७७	सुस्सुहो ङसः	३.४.९
८२	सूक्ष्मे	१.४.७०
३१	सूक्ष्मेऽद्रोतः	१.२.६६
३७	सैन्धवशनैश्चरे	१.२.९४
१२६	सोः	२.२.१३
३८	सोच्छ्वासे	१.२.१००
८२	सो बृहस्पतिवनस्पत्योः	१.४.७४
१२५	सोर्लुक्	२.२.९
१९१	सोल्लपउल्लौ पचेः	३.१.३८

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
१६१	सोस्तु हि	२.४.३७
२२४	सौ पुंस्येलतः	३.२.३०
२९०	सौ युष्मदस्तुहुं	३.४.३७
२९३	सौ हउं	३.४.४५
२२४	स्कः प्रेक्षाचक्षेः	३.२.३४
७१	स्कन्दतीक्ष्णशुष्के तु खोः	१.४.१०
७७	स्तः	१.४.४०
७२	स्तम्बे	१.४.११
७७	स्तवो थो वा	१.४.३८
२१	स्तावकसास्ने	१.२.१८
७०	स्तोः	१.४.१
३१	स्तौ	१.२.६५
१७८	स्त्यः समः खा	२.४.१२४
७२	स्त्यानचतुर्थे च तु ठः	१.४.१३
२८२	स्त्रियां केर्हि	३.४.२०
२८७	स्त्रियां डहे	३.४.३०
१६	स्त्रियामिमाञ्जलिगाः	१.१.५३
१६२	स्त्रियामी च	२.४.४३
६४	स्त्रीभगिनीदुहितृवनितानामित्थीबहिणीधूआविलयाः	१.३.९७
२२६	स्थर्थौ स्तम्	३.२.४१
१७८	स्थष्ठकुकुरौ	२.४.१२६
७१	स्थाणावहरे	१.४.९
६१	स्थूले रलृतश्चौत्	१.३.८३
९१	स्निग्धे त्वदितौ	१.४.१०३
६२	स्नुषायां ण्हः फोः	१.३.८९
८९	स्नेहाग्न्योर्वा	१.४.९७
१८०	स्पृशिञ्छिवालुक्खफरिसफासफंसालिहच्छिहान्	२.४.१३२
१७३	स्पृहदूञोः सिहदूमौ णिचोः	२.४.९२
७३	स्पृहादौ	१.४.२२
४९	स्फटिके	१.३.२५
६४	स्मरकट्वोरीसरकारौ	१.३.१००
२९९	स्यस्य सो लृटि	३.४.५८
९०	स्याद्भव्यचैत्यचौर्यसमे यात्	१.४.१००
२०३	स्रंसेर्ल्हंसडिम्भौ	३.१.११६
९२	स्रुघ्ने रात्	१.४.१०७
२२५	स्रोः श्नौ	३.२.३६
२३	स्वपि	१.२.२८
२०	स्वप्नादाविल्	१.२.११
२७५	स्वम्यम उत्	३.४.२
१२१	स्वयमोऽर्थे अप्पणा	२.१.५०
२५	स्वरस्य बिन्दुमि	१.२.३९
१२	स्वरेभ्यो वक्रादौ	१.१.४२
१३१	स्वसृगाड्डाल्	२.२.४१
२४९	स्वार्थे डुः पुनर्विनाध्रुवमः	३.३.२६
१०५	स्वार्थे तु कश्च	२.२.१८
५२	हः कातरककुदवितरितमातुलिङ्गे	१.३.३८
१०	हः क्षुत्ककुभि	१.१.३१
२२४	हगोऽहंवयमोः	३.२.३१
२२०	हञ्जे चेट्याह्वाने	३.२.१९
११८	हणः शृणोतेः	३.१.१८
११५	हद्धि निर्वेदे	२.१.३५
१३१	हरिद्राच्छाये	२.२.३९
६०	हरिद्रादौ	१.३.७८

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
११८	हरे क्षेपे च	२·१·५०
२०	हरे त्वी	१·२·१५
९०	हर्षामर्षश्रीह्रीक्रियापरामर्श-कृत्स्नदिग्घयार्हे	१·४·९९
१५७	ह्रा सों मिमोमु मे वा	२·४·२६
१५६	हल ईअ	२·४·२३
१२	हलि ङञणनाम्	१·१·४१
१६८	हलोऽक्	२·४·६९
३०३	हल्ड्रस्यैङुः	३·४·६७
९३	ह्रश्च महाराष्ट्रे ह्रोर्व्यत्ययः	१·४·१११
३१	ह्रश्चौत्कुतूहले	१·२·६४
२०४	हसेर्गुञ्जः	३·१·१२३
६१	हस्य घो बिन्दोः	१·३·८६
८५	हस्य मध्याह्ने	१·४·८१
१९४	हासेन स्फुटतेर्मुरः	३·१·६०
२८२	हिं भिस्सुपोः	३·४·१९
१२४	हिंतोत्तोदोदु ङसिस्	२·२·६
१२४	हिं हिँ हि भिसः	२·२·५
१०२	हित्थह्रास्खलः	२·१·७
२९५	हि थास्सिपोः	३·४·५२
१५७	हिस्सा हित्था मुमोमस्य	२·४·२७
२७९	हि हे ङिङस्योः	३·४·१३
२२०	हीमाणहे निर्वेदविस्मये	३·२·१७
२१९	ही ही वैदूषके	३·२·१६

पृष्ठाङ्कः		क्रमाङ्कः
११७	हुं पृच्छादाननिवारणे	२·१·४२
२८०	हुं भ्यसः	३·४·१४
२९७	हुं मस्मह्ङोः	३·४·५६
१८५	हु के	३·१·४
११८	हु खु निश्चयविस्मयवितर्के	२·१·५४
२९३	हु थध्वमोः	३·४·५४
२८३	हुमाम्भ्यसोः	३·४·२२
१८५	हुरचिति	३·१·५
२०५	हुल्लो लक्ष्यात् स्खलेः	३·१·१२९
२७०	हुहुरुघिग्घिगाः शब्दचेष्टा-नुकृत्योः	३·३·५७
१९	हे दक्षिणस्य	१·२·९
२८१	हो जसामन्त्र्ये	३·४·१८
१८५	होहुवहवा भुवेस्तु	३·१·१
४	हो ह्रस्वः	१·१·५
९३	ह्रो ह्रोर्वा	१·४·११७
९३	ह्रदे द्रह्योः	१·४·११५
१३२	ह्रस्वलीदूतः	२·२·४६
३०३	ह्रोः स्तोरुच्चारलाघवम्	३·४·६५
१७७	ह्लादेरवच्छलणिचश्च	२·४·११९
८१	ह्रो ल्हः	१·४·६६
७९	ह्नः	१·४·५१

परिशिष्टं तृतीयम्

छन्दश्छायापन्नत्वेनाभिमतः सूत्रपाठः

प्रथमोऽध्यायः

[प्रथमः पादः]

सिद्धिर्लोकात्[१] चानुक्तमन्यशब्दानुशासनवत्[२] ।
संज्ञा प्रत्याहारमयी वा[३] सुप्स्वादिरन्त्यहला[४] ॥ १ ॥

ह्रो ह्रस्वो[५] दिर्दीर्घः[६] शषसाः शुः[७] सः समासे[८] आदिः खुः[९] ।
गो गणपरो[१०] द्वितीयः फुः[११] संयुक्तं स्नु[१२] तु विकल्पे[१३] ॥ २ ॥

प्रायो लिति न विकल्पः[१४] शिति दीर्घः[१५] सानुनासिकोच्चारं ङित्[१६] ।
बहुलं[१७] दिह्रौ मिथः से[१८] संधिस्त्वपदे[१९] न य[२०]णगेङः[२१] ॥ ३ ॥

शेषेऽच्यच[२२]स्तिङो[२३] लोपो[२४]ऽन्त्यहलोऽश्रदुदि[२५] निर्दुरि वा[२६] ।
अन्तरि च नाचि[२७] शिम्लुङ् नपुनरि[२८] त्वविद्युति स्त्रियामाल्[२९] रो रा[३०] ॥ ४ ॥

हः क्षुत्ककुभि[३१] धनुषि वा[३२] सदाशिषि[३३] स आयुरप्सरसोः[३४] ।
दिक्प्रावृषि[३५] शरदामत्[३६] तु सक्खिणभवन्तजम्मणमहन्ताः[३७] ॥ ५ ॥

यत्तत्सम्यग्विष्वक्पृथको मल्[३८] मोऽचि वा[३९] बिन्दुल्[४०] ।
हलि ङञणनमां[४१] स्वरेभ्यो वक्रादौ[४२] क्त्वासुपोस्तु सुणात्[४३] ॥ ६ ॥

लुङ् मांसादौ[४४] संस्कृतसंस्कारे[४५] ङे तु किंशुके[४६] वर्गेऽन्त्यः[४७] ।
विंशतिषु त्या श्लोपल्[४८] स्नमदामशिरोनभो नरि[४९] शरत्प्रावृट्[५०] ॥ ७ ॥

अक्ष्यर्थकुलाद्या वा[५१] क्लीबे गुणगाः[५२] स्त्रियामिमाञ्जलिगाः[५३] ।

[द्वितीयः पादः]

निष्प्रती ओत्परी माल्यस्थो[१]र्वादे[२]र्लुगव्यय- ॥ ८ ॥

त्यदाद्यात्तदचो[३] वालाव्वरण्ये[४]ऽपेः पदा[५]दितेः[६] ।
तोऽचः[७] शोर्लुस्यवरशोर्दि[८]र्हे दक्षिणेऽस्य[९] तु समृद्ध्यादौ[१०] ॥ ९ ॥

स्वप्नादाविल्[११] पक्वाङ्गारललाटे तु[१२] सप्तपर्णे फोः[१३] ।
मध्यमकतमे च[१४] हरे त्वी[१५] उल् ध्वनिगवयविष्वचो वोः[१६] ज्ञो णो- ॥ १० ॥

[ऽ]भिज्ञादौ[१७] स्तावकसास्ने[१८] णा वा चण्डखण्डिते[१९] प्रथमे प्थोः[२०] ।
आर्यायां र्यः श्वश्र्वामूल्[२१] आसारे तु[२२] तोऽन्तर्येल्[२३] ॥ ११ ॥

पारावते तु फो[२४]त्कखल्लीद्वारमात्रचः[२५] शय्यादौ[२६] ।
त्वार्द्रे उदोत्[२७]त्स्वपि[२८] ओदाल्यां पङ्क्तौ[२९] फोः परस्परनमस्कारे[३०] ॥ १२ ॥

पद्मे मि[३१] त्वपौ[३२]वीत्स्वल्वाटस्त्यानयोरात[३३] इत्तु सदादौ[३४] ।
आचार्ये चो इश्च[३५] श्यामाके मो[३६] न वाक्ययोस्खातादौ[३७] ॥ १३ ॥

घञि वा[३८] स्वरस्य बिन्दुमि[३९] संयोगे[४०] त्वेदितो[४१] मिरायां लित्[४२] ।
मूषिकबिभीतकहरिद्रापथिपृथिवीप्रतिश्रुत्यत्[४३] ॥ १४ ॥

रस्तित्तिरा[४४]वितौ तो वाक्यादौ[४५] वेङ्गुदशिथिलयोः[४६] ।
उ युधिष्ठिरे[४७] द्विनीक्षुप्रवासिषु[४८] तु निर्झरद्विधाकृञोरोत्वा[४९] ॥ १५ ॥

ईतः काश्मीरहरीतक्योलॉलौ[५०] गभीरग इत्[५१] ।
वा पानीयग[५२] उल् जीर्णे[५३] तीर्थे हू[५४]त्विहीनहीने वा[५५] ॥ १६ ॥

एल्पीठनीडकीदृशपीयूषविभीतकेदृशापीडे[५६] ।
त्वद्रुत उपरिगुरुके[५७] मुकुलादौ[५८] रो भ्रुकुटिपुरुष इ[५९]त्क्षुत ईत्[६०] ॥ १७ ॥

दोदोनुत्साहोत्सन्नऊच्छसि[६१] दुरो रलुकि तु[६२] सुभगमुसलयोः[६३] ।
इश्चौत्कुतूहले[६४] स्तौ[६५] सूक्ष्मे[६६]ऽद्वोतोऽल्दूकूल[६७] ईदुद्व्यूढे[६८] ॥ १८ ॥

उल् कण्डूयहनूमद्वातूले[६९] वा मधूक[७०] इदे- ।
नूपुर[७१] ओल् स्थूणातूणमूल्यतूणीरकूर्परगुडूची- ॥ १९ ॥

कूष्माण्डीताम्बूली[७२]त्वृतोऽता[७३]द्वा मृदुत्वमृदुककृशासु[७४] ।
इल् कृपगे[७५] शृङ्गमृगाङ्कमृत्युधृष्टद्युम्नमसृणेषु वा[७६] पृष्ठे- ॥ २० ॥

[ऽ]नुत्तरपद[७७] उद् वृषभे[७८] वुर्वृन्दारकनिवृत्तयो[७९]र्ऋतुगे[८०] ।
गौणान्त्यस्ये[८१]दुन्मातु[८२]र्वृष्टिपृथङ्मृदङ्गनप्तृकवृष्टे[८३] ॥ २१ ॥

तु बृहस्पता[८४]वुदूदोल्मृषि[८५] वृन्त इदेत्[८६] ढिराद्दते[८७]र्दृसेऽ रि ।
सा[८८] केवलस्य[८९] रिर्दृश्यक्सक्विप्टू[९०]तुऋजुऋणऋषिऋषभे वा[९१] ॥ २२ ॥

क्लृप्त इलि[९२] चपेटाकेसरदेवरसैन्यवेदनास्वेचस्त्वित्[९३] ।
सैन्धवशनैश्चरे[९४] त्वात्सरोरुहमनोहरप्रकोष्ठातोद्या- ॥ २३ ॥

[ऽ]न्योन्ये वश्च क्वोः[९५] कौक्षेयक उत्[९६] शौण्डगेषु[९७] गव्यउदाईत्[९८] ।
ऊ स्तोके वा[९९] सोच्छ्वास[१००] ऐत्व एत्[१०१] अइ तु वैरादौ[१०२] ॥ २४ ॥

दैत्यादौ[१०३] नाव्यावो[१०४] गौरव[१०५] आत्पौरगे चाउत्[१०६] ।
उच्चैर्नीचैसोरअ[१०७] ई धैर्ये[१०८] वा पुआव्याद्याः[१०९] ॥ २५ ॥

[तृतीयः पादः]

एत्साज्झला त्रयोदशागेऽचः[१] कद्ले तु[२] कर्णिकारे फोः[३] ।
नवमालिकाबदरनवफलिकापूगफलपूतर ओल्[४] ॥ २६ ॥

तु मयूरचतुर्थचतुर्थीचतुर्दशचतुर्गुणमयूखो–।
लूखलसुकुमारोतूखललवणकुतूहले[५] निषण्ण उमः[६] ॥ २७ ॥

अस्तोरखोरचः[७] प्रायो लुक्कगाचजतदपयवां[८] नात्पः[९] ।
यश्रुतिरः[१०] कामुकयमुनाचामुण्डातिमुक्तके मो ङ्लुक्[११] ॥ २८ ॥

खोऽपुष्पकुब्जकर्परकीले को[१२]ऽछागशृंखलकिराते ।
लकचा[१३] वैकादौ गः[१४] खोः कन्दुकमरकतमदकले[१५] ॥ २९ ॥

पुन्नागभागिनीचन्द्रिकासु मः[१६] शीकरे तु भहौ[१७] ।
ऊत्वे दुर्भगसुभगे वो[१८] निकषस्फटिकचिकुरे हः[१९] ॥ ३० ॥

खघथधभां[२०] धः पृथकि तु[२१] चोः खचितपिशाचयोः सल्लौ[२२] ।
झो जटिले[२३] टोर्बडिशादौ लः[२४] स्फटिके[२५] लरङ्कोठे[२६] ॥ ३१ ॥

डः कैटभशकटसटे[२७] ठः[२८] पिठरे ह्स्तु रश्च[२९] ठो लल् डो–।
[ऽ] नुडुगे[३०] टो डो[३१] वेतस इति तोः[३२] प्रतिगेऽप्रतीपगे[३३] दंशदह्योः[३४] ॥३२॥

दम्भदरदर्भगर्दभदष्टदशनदग्धदाहदोहददोला–।
दण्डकदने तु[३५] तुच्छे चच्छौ[३६] टल् त्रसरवृन्ततूवरतगरे[३७] ॥ ३३ ॥

हः कातरककुदवितस्तिमातुलिङ्गे तु[३८] वसतिभरते वा[३९] ।
लो निम्बपलितयो[४०]र्दोहदप्रदीपशातवाहनातस्याम्[४१] ॥ ३४ ॥

रल् सप्तत्यादा[४२]वद्रुमे कदल्यां[४३] कदर्थिते खोर्वः[४४] ।
पीते ले वा[४५] डो दीपि[४६] ढः पृथिव्यौषधनिशीथे[४७] ॥ ३५ ॥

प्रथमशिथिलमेथिशिथिरनिषधेषु[४८] र्णो दिना रुदिते[४९] ।
णो वातिमुक्तके[५०] गर्भिते न[५१] आदेस्तु[५२] नापिते ण्हः[५४] पो वः[५५] ॥ ३६ ॥

फः पाटिपरिघपरिखापरुषपनसपारिभद्रेषु[५६] ।
नीपापीडे मो वा[५७] रल् पापर्द्धौ[५८] प्रभूते वः[५९] ॥ ३७ ॥

फस्य भहौ वा[६०] बो वो[६१] कूवयौ कबन्धे[६२] बिसिन्यां भः[६३] ।
वो भस्य कैटभे[६४] त्वभिमन्यौ मो[६५] मन्मथे[६६] तु ढो विषमे[६७] ॥ ३८ ॥

यो जतीयानीयोत्तरीयकृत्येषु[६८] ज्जुम्मयटि[६९] ।
छायायां होऽकान्तौ[७०] यष्ट्यां लल्[७१] कतिपये वहवौ[७२] ॥ ३९ ॥

अर्थपरे तो युष्मदा[७३]देर्जो[७४] म्वौ बृहस्पतौ तु बहोः[७५] ।
रो डा पर्याणे[७६] लो जठरवठरनिष्ठुरे[७७] हरिद्रादौ[७८] ॥ ४० ॥

किरिबेरे डः[७९] स्नोः करवीरे णो[८०] लो ललाटे च[८१]
कोहलकाहललाङ्गूले वा[८२] स्थूले रलूतश्चौत्[८३] ॥ ४१ ॥

बो मः शबरे[८४] नीवीस्वप्ने वा[८५] ह्रस्य घो बिन्दोः[८६] ।
शोः सल्[८७] प्रत्यूषदिवसदशपाषाणे तु हः[८८] स्नुषायां ण्हः[८९] फोः ॥ ४२ ॥

छल् षट्शमीसुधाशावससपर्णे[९०] सिरायां वा[९१] ।
लुक् पादपीठपादपतनदुर्गादेव्युदुम्बरेऽचान्तर्दः[९२] ॥ ४३ ॥

व्याकरणप्राकारागते कगो[९३]रेवमेवदेवकुल- ।
प्रावारकयावज्जीवितावटवर्तमानतावति वः[९४] ॥ ४४ ॥

ज्योर्दनुजराजकुलभाजनकालायसकिसलयहृदयेषु[९५] ।
अपतौ घरो गृहस्य[९६] स्त्रीभगिनीदुहितृवनितानां- ॥ ४५ ॥

मित्थीबहिणीधूआविलआ[९७] उभयाधसोरवहहेट्ठौ[९८] ।
मलिनधृतिपूर्ववैडूर्याणां मइलदिहीपुरिमवेरुलिआः[९९] ॥ ४६ ॥

स्मरकट्वोरीसरकारौ[१००] बाहिंबाहिरौ बहिसः[१०१] ।
कूरो गौणेषद्[१०२] एण्हि एत्ताहे इदानीमः[१०३] ॥ ४७ ॥

तिर्यक्पदातिशुक्तेस्तिरिच्छिपाइक्कसिप्पि[१०४] गोणाद्याः[१०५] ।

[चतुर्थः पादः]

स्तो[१]र्वा रक्ते गः[२] शुल्के ङ्गः[३] कः शक्तमुक्तदष्टमृदुत्व- ॥ ४८ ॥
रुग्णेषु[४] क्ष्वेडकगो खल्[५] क्कस्कोर्नाम्नि[६] वुश्च स्वृक्षे[७] ।
क्षः[८] स्थाणावहरे[९] स्कन्दतीक्ष्णशुष्के तु खोः[१०] स्तम्भे ॥ ४९ ॥

स्थो[१२]ऽस्पन्दे स्त्यानचतुर्थे च तु ठः[१३] ष्टो[१४] विसंस्थुलास्थ्यघनार्थे[१५] ।
चः कृत्तिचत्वरे[१६] त्योऽचैत्ये[१७] श्चेर्वृश्चिके ञ्चुर्वा[१८] ॥ ५० ॥

उत्सवभ्रक्षोत्सुकसामर्थ्ये छो वा[१९] क्षमायां कौ[२०] ।
क्षण उत्सवे[२१] स्पृहादौ[२२] थ्यश्चत्सप्सामनिश्चले[२३] चर्य्यर्या ॥ ५१ ॥

ज[२४]स्त्वाभिमन्यौ जञ्जौ[२५] ध्यह्योर्झल्[२६] साध्वसे[२७] ध्वजे[२८] वेन्धौ[२९] ।
र्तस्याधूर्तादौ टः[३०] प्रवृत्तसंदष्टमृत्तिवृत्तेष्टा- ॥ ५२ ॥

पत्तनकदर्थितोष्टे[३१] वा न्तन्धौ मन्युचिह्न[३२]योर्डल् फो- ।
र्मर्दितविच्छर्दच्छर्दिकपर्दवितर्दिगर्तसंमर्दे[३३] ॥ ५३ ॥

ढोऽर्धर्द्धिश्रद्धामूर्ध्नि तु[३४] दग्धविदग्धवृद्धिदंष्ट्रावृद्धे[३५] ।
पञ्चदशदत्तपञ्चाशति णो[३६] ज्ञम्नोः[३७] स्तवे थो वा[३८] ॥ ५४ ॥
रो ह्रश्चोत्साहे[३९] स्तः[४०] पर्यस्ते टश्च[४१] वात्मभस्मनि पः[४२] ।
ड्मक्मोः[४३] ष्पस्पोः फो[४४] भीष्मे[४५] श्लेष्मबृहस्पतौ तु फो[४६]म्मों मो[४७]न्मः[४८] ॥५५॥
ताम्राम्रयोर्म्बं[४९] ऊर्ध्वे भो वा[५०] ह्लो[५१] वश्च विह्वले[५२] काश्मीरे ।
म्भो[५३] लो वार्द्रे[५४] र्यः सौकुमार्यपर्यस्तपर्याणे[५५] ॥ ५६ ॥
अररीअरिज्जमाश्चर्ये[५६] डेरो ब्रह्मचर्यसौन्दर्ये च[५७] ।
वा पर्यन्ते[५८] धैर्ये र[५९]स्तूर्यदशार्हशौण्डीर्ये[६०] ॥ ५७ ॥
बाष्पे होऽश्रुणि[६१] कार्षापणे[६२] न वा तीर्थदुःखदक्षिणदीर्घे[६३] ।
कूष्माण्ड्यां ड्श्च तु ल[६४]स्त्वथ्वद्व्वां क्वचिच्छजझा[६५] ह्लो ल्हः[६६] ॥ ५८ ॥
ग्मष्मस्मह्मामस्मररश्मौ म्हः[६७] पक्ष्मणि[६८] श्णष्णस्न-।
ह्नक्ष्णां ण्हः[६९] सूक्ष्म[७०] आश्लिष्टे लधौ[७१] ठढौ स्तब्धे[७२] ॥ ५९ ॥
सो ढो रश्चारब्धे तु[७३] सो बृहस्पतिवनस्पत्योः[७४] ।
शोर्लुक् खोः स्तम्बसमस्तनिःस्पृहपरस्परश्मशानश्मश्रौ[७५] ॥ ६० ॥
श्चस्य हरिश्चन्द्रे[७६] कगटडतदपःकःपशोरुपर्यद्रे[७७] ।
लवरामधश्च[७८] मनयां[७९] धात्रीद्रे रस्तु[८०] हस्य मध्याह्ने[८१] ॥ ६१ ॥
ज्ञो ञोऽविज्ञाने[८२] द्वोर्द्वारे[८३] रात्रौ[८४] रितो द्विरवल्[८५] ।
शेषादेशस्याह्रोऽचोऽस्रो[८६]दीर्घात्[८७] कर्णिकारे णो वा[८८] ॥ ६२ ॥
धृष्टद्युम्ने[८९] वा से[९०] प्रमुक्तगे[९१] दैवगेषु[९२] तैलादौ[९३] ।
पूर्वमुपरि वर्गयुजः[९४] प्राक्श्लाघाप्लक्षशार्ङ्गे ङ्लोत्[९५] ॥ ६३ ॥
क्ष्मारत्नेऽन्त्यहलः[९६] स्नेहाग्न्योर्वा[९७] शीर्षतप्तवज्रेष्वित्[९८] ।
हर्षामर्षश्रीह्रीक्रियापरामर्शकृत्स्नदिष्ट्यार्हे[९९] ॥ ६४ ॥
स्याद्भव्यचैत्यचौर्यसमे यात्[१००] लादक्लीबेषु[१०१] नात्स्वप्ने[१०२] ।
स्निग्धे त्वदितौ[१०३] कृष्णे वर्णे[१०४]ऽर्हत्युश्च[१०५] तन्व्याभे[१०६] ॥ ६५ ॥
क्ष्मे रा[१०७]देकाचि श्वःस्वे[१०८] वा छद्मपद्ममूर्खद्वारे[१०९] ।
ईल् ज्यायां[११०] हश्च महाराष्ट्रे होर्व्यत्ययो[१११] लनोरालाने[११२] ॥ ६६ ॥
वाराणसीकरेण्वो रणो[११३]र्ललाटे डलो[११४] र्ह्रदे दह्योः[११५] ।
चलयोरचलपुरे[११६] ह्यो ह्योर्वा[११७] लघुके लहो[११८] रलोर्हरिताले[११९] ॥ ६७ ॥
दर्वीकरनिवहौ दव्वीरयणिहवौ तु[१२०] गहिआद्याः[१२१] ।

[प्रथमोऽध्यायः समाप्तः]

द्वितीयोऽध्यायः

[प्रथमः पादः]

मन्तमणवन्तमाआलुआलइरइल्लउल्लइन्ता मतुपः[1] ॥ ६८ ॥

वतुपो डित्तिअमेतल्लुक् चैतद्यत्तदः[2] किमिदमश्च ।
डेत्तिअडित्तिलडेद्दह[3]मिकः पथो णस्य[4] खस्य सर्वाङ्गात्[5] ॥ ६९ ॥

छस्यात्मनो णओ[6] हित्थहाखलः[7] केर इदमर्थे[8] ।
राजपराङ्गिक्कडक्कौ डे[9]खओ युष्मदस्मदोऽणो[10]र्व वतेः[11] ॥ ७० ॥

तैलस्यानङ्कोलाड्डेल्ल[12]स्त्वस्य तु डिमात्तणौ[13] दो त्तो ।
तस[14] एकाद्दः सि सिआ इआ[15] हुत्तं कृत्वसो[16] भवे डिल्लोल्लड्[17] ॥ ७१ ॥

स्वार्थे तु क[18]श्चोपरेः संख्याने ल्ल्[19] नवैकाद्वा[20] ।
मिश्राड्डालिअश्[21] शनैसो डिअं[22] मनाको डअं च वा[23] रो दीर्घात्[24] ॥ ७२ ॥

डुमअडमअौल् भुवो[25] लो वा विद्युत्पत्रपीतान्धात्[26] ।
त्वादेः स[27] इरः शीलाद्यर्थस्य[28] तुमत्तुआणतूणाः क्त्वः[29] ॥ ७३ ॥

वरइत्तगास्तृनार्थे[30]ऽव्यय[31]मभ्युपगमे आम[32] ।
तं वाक्योपन्यासे[33] णइ चेअ चिअ च्च एवार्थे[34] ॥ ७४ ॥

हद्धी निर्वेदे[35] दर अर्धेऽल्पे वा[36] किणो प्रश्ने[37] ।
मिव पिव विव विअ व व्व इवार्थे[38] किर इर हिर किलार्थे[39] ॥ ७५ ॥

अम्हो आश्चर्ये[40]ऽव्वो पश्चात्तापसूचनादुःख- ।
संभाषणापराधानन्दादरखेदविस्मयविषादभये[41] ॥ ७६ ॥

हुं पृच्छादाननिवारणे[42] वणे निश्चयानुकम्प्यविकल्पे[43] ।
संभावने अइ घा[44]नन्तर्ये णवरिअ[45] केवले णवर[46] ॥ ७७ ॥

हन्द गृहाणार्थे[47] हन्दि विकल्पविषादसत्यनिश्चयपश्चा- ।
त्तापेषु च[48] संभाषणरतिकलहे रे अरे[49] हरे क्षेपे च[50] ॥ ७८ ॥

थू कुत्साया[51]मू गर्हाविस्मयसूचनाक्षेपे[52] ।
पुणरुत्तं कृतकरणे[53] हु खु निश्चयविस्मयवितर्के[54] ॥ ७९ ॥

णवि वैपरीत्ये[55] वेव्वे विषादभयवारणे[56] ।
आमन्त्रणे वेव्वे च[57] वा सख्या मामि हला हले[58] ॥ ८० ॥

दे संमुखीकरणे च[59] ओ पश्चात्तापसूचने[60] ।
अण णाइं नञर्थे[61] निश्चयनिर्धारणे वले[62] ॥ ८१ ॥

मणे विमर्शे[63] माइं मार्थे[64]ऽलाहि निवारणे[65] ।
लक्षणे जेण तेण[66] त्वोदवापोता[67] उ ओ उपे:[68] ॥ ८२ ॥

प्रत्येकमः पाडिएक्कं पाडिक्कं[69] स्वयमप्पणा[70] ।
एक्कसरिअं झटिति संप्रति[71] इहरा इतरथा[72] मुधा मोर- ॥ ८३ ॥
उल्ला[73] अयि ऐ[74] उअ पइये[75]जेराः पादपूरणे[76] प्याद्याः[77] ।

[द्वितीयः पादः]

वीप्सार्थात्तदचि सुपो मस्तु[1] अमः[2] श्लुग्जश्शसो[3] णशाम[4] हिं हिँ ॥ ८४ ॥
हि भिसो[5] हिंतो त्तो दो दु ङसिस्[6] सुंतो भ्यसो[7] दिदोत्तोदोदु ङसौ[8] ।
सोलुंक्[9] ङसोऽस्त्रियां सर्[10] ङेर्मिर[11]त्तो डो विसर्गः[12] सो:[13] ॥ ८५ ॥
वैतत्तदो[14] ङसेः श्लुक्[15] ङेर्डे[16] ङसिसो हि[17] टो डेणल्[18] ।
दिर्वा भ्यसि[19] शस्येत्[20] भिस्भ्यस्सुपी[21]दुतोर्दि[22] चतुरो वा[23] ॥ ८६ ॥
पुंसो जसो डउ डओ[24] डवो उतो[25] णो शसश्च[26] नृनपि ङसिङसोः[27] ।
टो णा[28] श्नुगनपि सो[29]र्मंङ्लुगसंबुद्धेर्नपः[30] श्नि शिं शिङ् जस्शस्[31] ॥८७॥
शो श्नु स्त्रियां त्वा[32]दीतः सोश्च[33] ङसेः शशाशिशे[34] टाङिङसाम्[35] ।
नातः शा[36] पुंसोऽजातेर्ङीर्वा[37] प्रत्यये[38] हरिद्राच्छाये[39] ॥ ८८ ॥
किंयत्तदोऽस्वमामि सुपि[40] स्वसृगाड्डाल्[41] डोश्लुकौ तु संबुद्धेः[42] ।
ऋदन्ताड्डो[43] नाम्नि डरं[44] टापो डे[45] ह्रस्वलीदूतः[46] ॥ ८९ ॥
क्विप[47] उदृतां त्वस्वमामि[48] आरः सुपि[49] मातुराअरा[50] संज्ञाया- ।
मर[51] आ सौ वा[52] राज्ञ[53]ष्टो णा[54] जश्शस्ङसिङसां णोश्[55] ॥ ९० ॥
णोणाङिष्विदना ज[56] इणममामा[57] भिस्भ्यसाम्सुप्स्वीत्[58] ।
ङस्ङसिटां णोणोर्डेण्[59] पुंस्याणो राजवच्चानः[60] ॥ ९१ ॥
टो वात्मनो णिआ णइआ[61] सर्वादेर्जसोऽतो डे[62] ।
ङेस्त्थस्सि[63]म्म्यनिदमेतदस्तु किंयत्तदः स्त्रियां च हिममाम्[64] ॥ ९२ ॥
डेसिं[65] किंतद्भ्यां सश्[66] किंयत्तद्भ्यो ङस्[67] ईतः से- ।
सार्[68] ङिरिआ डाहे डाला काले[69] म्हा ङसेः[70] किम्मो डीसङिणो[71] ॥ ९३ ॥
डो तद[72] इदमेतत्किंयत्तद्भ्यष्टो ङिणा[73] क्वचित्सुपि तदो णः[74] ।
अतसि च किमो त्क[75] इदम इमः[76] पुंसि सुना त्वयं स्त्रियामिमिआ[77] ॥९४॥

अत्सुर्ङसिङस्से[७८] टाससि ण[७९] इहेणं ङ्यमा[८०] न त्थः[८१] ।
क्लीबे त्वमेदमिणमिणमो[८२] किं किं[८३] तदिदमेतदां से सिं ॥ ९५ ॥
तु ङसामा[८४] एत्तो एत्ताह ङसिनैतदः[८५] थें ङेल्[८६] ।
एत्तो म्मावदितौ वा[८७] सुनैस इणमो इणं[८८] तः सौ सो- ॥ ९६ ॥
[ऽ]क्लीबे तदश्च[८९] सुप्यदसोऽमुः[९०] अहह्वा सुना[९१] इआओ म्मौ ।

[तृतीयः पादः]

युष्मत्सुना तुवं तुं तुमं तुहा[१]मा तुमे तुए च[२] जसा भे ॥ ९७ ॥
तुब्भे तुय्हे उय्हे तुब्भ[३] शसा वो च[४] टा भे ते ।
दे दि तुमं तुमइ[५] ङिटाम्यां तुमए तुइ तुए तुमाइ तुमे[६] ॥ ९८ ॥
तुब्भ तुहिंतो तुम्ह ङसिना[७] तु तुइ ङिम्ङसौ[८] तुव तुम तुह ।
तुब्भ[९] भिसा भे तुब्भेहुब्भेहुय्हेहि तुय्हेहि[१०] ॥ ९९ ॥
उम्होय्ह तुय्ह तुब्भ भ्यसि[११] तुब्भोब्भोय्ह तइ तुहं तुह तुम्हं ।
तुव तुम तुमे तुमाइ तुमो दे ते दि ति तु इ ए ङसो[१२]म्हाण ॥ १०० ॥
तुब्भं तुब्भाण तुमाण तुवाण तुहाण तुब्भ वो भे त्वामा[१३] ।
वा ब्भो म्हज्झौ[१४] अस्मत्सुनाम्हि हमहअमहं म्म्यम्मि[१५] ॥ १०१ ॥
मो भे वअं जसा[१६]म्हे अम्हो अम्ह[१७] णे च शसा[१८] ।
मं णे णं मि मिमं ममममिह अहं मम्ह अम्ह अमा[१९] ॥ १०२ ॥
मि मइ ममाइ मए मे ङिटा[२०] ममं णे मआइ ममए टा[२१] ।
णे अम्हे ह्मम्हाह्मम्हे अम्ह भिसा[२२] मइ मम मह मज्झ ङसौ[२३] ॥ १०३ ॥
अम्ह मम भ्यसि[२४] अम्हं मज्झं मज्झ मइ मह महं मे च ङसा[२५] ।
अम्हे अम्हो अम्हाण ममाण महाण मज्झाण ॥ १०४ ॥
मज्झाम्हाम्हं णे णो आमा[२६] अम्म मम मज्झ मह ङिपि[२७] चतुरो ।
जस्शस्भ्यां चउरो चत्तारो चत्तारि[२८] तिण्णि त्रेः[२९] ॥ १०५ ॥
दोण्णि दुवे बेण्णि द्वे[३०]दो बे टादौ च[३१] ति त्रेः[३२] ण्ह ।
ण्हं संख्याया आमोऽविंशतिगे[३३] द्विवचनस्य बहुवचनम्[३४] ॥ १०६ ॥
ङेसो ङम्[३५] तादर्थ्ये ङेस्तु[३६] वधाड्डाइ च[३७] क्वचिदसादेः[३८] ।
अस्टासो ङिप्[३९] ङसिङस्टाश्च[४०] ङिपोऽस्[४१] लुक्यङोर्यस्य तु[४२] ॥ १०७ ॥

[चतुर्थः पादः]

लटस्तिसाविजेच्[१] सिप्थास्से सि[२] मिर्मिविटौ[३] मिन्नौ ।
न्ति न्ते इरे[४] थध्वमित्थाहचौ[५] मो मसु मस्महिङ्[६] ॥ १०८ ॥
अत एवैच् से[७] त्वस्तेम्हं म्हो म्हि ममोमिना[८] सिना सि[९] तिङास्थि[१०] ।
णिजदेदावावे[११] शुष्यादेरविर्वा[१२] भ्रमेराडः[१३] ॥ १०९ ॥
लुगाविल्भावकर्मक्ते[१४]ऽदेल्लुक्यात्खोरतस्तु मौ[१६] ।
मोममुष्विच्च[१७] क्ते[१८] एच्च क्त्वातुंतव्यभविष्यति[१९] ॥ ११० ॥
वा लड्लोट्छतृषु[२०] ज्जाज्जे[२१] भूतार्थस्य सी हीअ ।
ही[२२] हल ईअो[२३]ऽहेस्यासी तेना[२४]स्तेर्भविष्यति हिरादिः[२५] ॥ १११ ॥
ह्यास्सा मिमोमुमे वा[२६] हिस्सा हित्था मुमोमस्य[२७] ।
स्च्छ दशिगम इजादौ हिलुक् च वा[२८] भिदिविदिच्छिदो डेच्छ[२९] ॥ ११२ ॥
डोच्छ वचिमुचिरुदिश्रुभुजो[३०] ढं मेश्छात्ततः[३१] कृदो हं[३२] सं[३३] त्वि- ।
ज्जाहिङ[३४] एकस्मिन्प्रथमादेर्विध्यादिषु दु सु मु[३५] बहौ न्तु ह मो[३६] ॥ ११३ ॥
सोस्तु हि[३७] लुगिज्जहीज्जस्विज्जे[३८]ऽतो लङ्लृटोश्च ज्जज्जारौ[३९] मध्ये ।
न्ताजन्ता[४०]न्माणन्तौल् च लृङः[४१] शतृशानचः[४२] स्त्रियामी च[४३] ॥ ११४ ॥
धेर्तुतव्यक्त्वासु ग्रहे[४४]रन्त्यस्य वचिमुचिरुदिश्रुभुजां डोत्[४५] ।
ता हो दृशा[४६] आ भूतभविष्यति च कृञो[४७] नमोद्विजरुदां वः[४८] ॥ ११५ ॥
चर्नृतिमदिव्रजां[४९] छर्गमिष्यमासां[५०] रुधो न्धम्भौ[५१] ।
युधबुधगृधक्रुधसिधमुहां च ज्झो[५२] जर्खिदां[५३] छिदिभिदो न्दः[५४] ॥ ११६ ॥
ढः कथिवर्धां[५५] वेष्टेः[५६] समुदो लर्[५७] खादधावि लुक्[५८] रःसृजि[५९] डः ।
सीदपति[६०] मीलेः प्रादेर्ह्व तु[६१] चलस्फुटे[६२] शकगा[६३] उवर्णस्यावः[६४] ॥ ११७ ॥
थोरेङ्[६५] अरउ[६६]ररि वृषां[६७] रुषगेऽचोदि[६८]र्हलोऽक्[६९] त्वनतो[७०]ऽचोऽचां[७१] णो ।
इश्च चिजिपूश्रुधूस्तुहुलूस्यो[७२] वर्भावकर्मणि तुवर्यग्लुक् च[७३] ॥ ११८ ॥
मर्चे[७४]रन्त्यस्य हनखनो[७५]र्दुहलिहवहरुहां भरत उच्च[७६] दहे- ।
र्झर्[७७] बन्धो न्धो[७८] रुध उपसमनो[७९]र्द्ध गमिगा[८०] ईर हकृतृज्राम्[८१] ॥ ११९ ॥
अर्जेर्विढप्प[८२] आरभ आढप्पो[८३] णप्पणज्जौ ज्ञः[८४] ।
सिप्पः सिचस्निहो[८५]र्वाहिप्पो व्याहृ[८६]ग्रहेर्घेप्पः[८७] ॥ १२० ॥

छिप्यः स्पृशते[८८]र्दीसल् दृशो[८९]र्वंवेलुंब[९०] ईअज्जौ यक्[९१] ।
स्पृहवृभोः सिहवूमौ णिचो[९२]र्निवृपतोर्णिहोडो वा[९३] ॥ १२१ ॥

धवलोद्घटोदुंमोग्गौ[९४] भ्रमवेष्टयोस्तालिअण्टपरिआलौ[९५] ।
रावो रञ्जयते[९६]स्तुलिडोल्योरोहामरंखोलौ[९७] ॥ १२२ ॥

आसंघः संभावे[९८]र्पेरल्लिवपणामयच्चुप्पाः[९९] ।
गुलुगुञ्छोत्थंघोव्वेल्लोल्लाला उन्नमेः[१००] प्रकाशेर्णुव्वः[१०१] ॥ १२३ ॥

णिहुवः कमे[१०२]र्नशेर्विप्पगालणासवपलावहारवविउडाः[१०३] ।
वल आरोपे[१०४]र्विरिचेरोलुण्डोल्लुण्डपल्लत्थाः[१०५] ॥ १२४ ॥

कम्पेर्विच्छोलो[१०६] रोमन्थेरोग्गालवग्गालौ[१०७] ।
प्लावेरोंव्वालपव्वालौ[१०८] मिश्रेर्मीसालमेलवौ[१०९] ॥ १२५ ॥

छदेर्नूमनुमोव्वालडक्कपव्वालसन्तुमाः[११०] ।
अव्वुक्कवोक्कौ विज्ञापेः[१११] परिवाडो घटे[११२] दंशे- ॥ १२६ ॥

र्दावदक्खवदंसाः[११३] प्रस्थापेः पेट्ठवपेण्डवौ[११४] ।
यापेर्जवो[११५] विकोशेः पक्खोडो[११६] गुण्ठ उद्धूलेः[११७] ॥ १२७ ॥

तड आहोडविहोडौ[११८] ह्लादेरवअच्छलणिचश्च[११९] ।
निमेर्निम्मवनिम्माणौ[१२०] आल्लीक्कोऽल्लिः[१२१] क्रियः कीणः[१२२] ॥ १२८ ॥

केर्च वेः[१२३] स्थः समः खा[१२४] ध्मो धुमोदः[१२५] स्थष्ठकुकुरौ[१२६] ।
णिरप्पथक्कठाचिट्ठाः[१२७] विस्मरः पम्हसवीसरौ[१२८] ॥ १२९ ॥

कृपौ णिजवहो[१२९] जाणमुणौ ज्ञो[१३०] धो दह श्रदः[१३१] ।
स्पृशिष्छिवालुक्खफरिसफासफंसालिहच्छिहान्[१३२] ॥ १३० ॥

फक्कस्थक्कः[१३३] श्लाघः सलाहः[१३४] थिप्पस्तृपो[१३५] भियो भाबिहौ[१३६] ।
भुजिरण्णभुंजकम्मसमाणचमढच्चड्डुजेमजिमान्[१३७] ॥ १३१ ॥

जृम्भोऽवेर्जम्भा[१३८] जुअजुञ्जजुप्पा युजे[१३९] र्जनो जाजम्मौ[१४०] ।
उत्थल्ल उच्छले[१४१] घूर्णेर्घुम्मपहल्लघोलघुलाः[१४२] ॥ १३२ ॥

लिम्पो लिपः[१४३] शदेर्झडपक्खोडौ[१४४] नेः सदेर्मज्जः[१४५] ।
पुच्छः प्रच्छे[१४६]र्गण्ठो ग्रन्थे[१४७]स्तुवरजअडौ त्वरे[१४८]रतिङि तुरः[१४९] ॥१३३॥

तूरः वातृतिकि[१५०] पर्यस् पल्लट्टपलोट्टपल्हत्थाः[१५१] ।
मृद्नातेर्मलपरिहट्टखुड्डुपण्णाडचड्डमड्डमड्डाः[१५२] ॥ १३४ ॥

दक्षिरोअक्खणिअच्छावअच्छचआवअज्झपुलअपुलोअ- ।
देक्खावअक्खपेच्छावआसपासणिअसच्चवावक्खान्[१५३] ॥ १३५ ॥

झरपज्झरपच्चड्डुक्खिरणिड्डुअणिव्वलाः ।
क्षरेः[१५४] काशेरवाद्वासो[१५५] न्यसेर्णिमणुमौ[१५६] ग्रहे- ॥ १३६ ॥
र्णिरुवारगेण्हवलहरपंगाहिपच्चुआः ।

[द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः]

तृतीयोऽध्यायः

[प्रथमः पादः]

हेहुवहवा भुवेस्तु[१] पृथक्स्पष्टे णिव्वडः[२] प्रभौ हुप्पः[३] ॥ १३७ ॥

हू क्ते[४] हुरचित्या[५]ग्राक्षिक्वामाइग्घणिज्झराव्वुत्ताः[६] ।
रा वेर्लिथो[७] निना छिक्कणिलुक्कणिलिअलिक्कलुक्कणिरुग्घाः[८] ॥ १३८ ॥

सारः ग्रहुः[९] प्रसुरुवेल्लपयल्लौ[१०] महमहो गन्धे[११] ।
झरझूरसुमरविम्हरभरभलल्ढपअरपम्हुहाः स्मरतेः[१२] ॥ १३९ ॥

व्याप्रेराअड्डो[१३] निस्सुर्णीहरणीलदाडवरहाढाः[१४] ।
जाग्रेर्जग्गः[१५] पट्टघोट्टडल्लपिज्जाः पिबे[१६] र्धुवो ॥ १४० ॥

धूभो[१७] हणः शृणोते[१८]र्म्लै र्वापव्वाऔ[१९] कृञः कुणः[२०] ।
काणेक्षिते णिआरो[२१] निष्टम्भे णिट्ठुहः[२२] श्रमे वापंफः[२३] ॥ १४१ ॥

संदाणोऽवष्टम्भे[२४] णिव्वोलो मन्युनौष्ठमालिन्ये[२५] ।
गुल्लश्चाटौ[२६] पअल्लो लम्बनशैथिल्ययोः[२७] क्षुरे कम्मः[२८] ॥ १४२ ॥

णीलुञ्छो निष्पाताच्छोटे[२९] साहट्टसाहरौ संवुः[३०] ।
ओहीरोग्घौ निद्र[३१] उद्ध ओरुम्मावसुऔ[३२] रुवो ॥ १४३ ॥

कंअहंटौ[२३] कोक्कवोक्कौ व्याहृः[२४] संनाम आदृङः[२५] ।
ओहोसरावतरेस्तु[२६] शकेस्तरतीरपारचआः[२७] ॥ १४४ ॥

सोल्लपउलौ पचे[२८]र्वेअडः खचे[३९]र्णिव्वलो मुचेर्दुःखे[४०] ।
अवहेडमेल्लणिल्लुंछोसिक्कदिसडरेअवछण्डाः[४१] ॥ १४५ ॥

सिञ्चसिम्पौ सिचे[४२] रचेर्विडविड्डावहोग्गहाः[४३] ।
केलाअसारवसमारोवहत्थाः समारचेः[४४] ॥ १४६ ॥

मस्जेराउड्डणिउड्डबुड्डखुप्पा[४५] अनुव्रजतेः ।
पडिअग्गो[४६] वञ्चेर्वेहववेलवजूरवोम्मच्छाः ॥ १४७ ॥

रोसाणोसुसलुहलुञ्छपुञ्छफुसफुस्सघसहुला मार्ष्टेः[४८] ।
मञ्जेर्वेमअमुसुमूरमूरपविरंजसूरसूडकरंज- ॥ १४८ ॥

निरंजविरा[४९] गर्जेर्बुक्को[५०] डिक्को वृषे[५१] तिजेरोसुक्कः[५२] ।
आरोलवमालौ पुञ्जेः[५३] कम्मवमुपभुजि[५४]र्विडवमर्जिः[५५] ॥ १४९ ॥

लज्जेर्जीहो[५६] राजेः सहरेहच्छज्जरिराग्घाः[५७] ।
घटेर्गढः[५८] समो गलो[५९] हासेन स्फुटतेर्मुरः[६०] ॥ १५० ॥

मण्डेष्टिविडिक्करिडचिंचचिंचिल्लचिंचआः[६१] ।
तुडेस्तुक्कणिलुक्कोल्लूरोक्खुडलुक्कतोडखुट्टखुडान्[६२] ॥ १५१ ॥

घुसलविरोलौ मन्थे[६३]र्ढंसोऽथंघौ विवृतिकृष्योः[६४] ।
णीहर आक्रन्दे[६५]रोअंदोद्दालौ छिदेराङः[६६] ॥ १५२ ॥

णिल्लूरलूरणिव्वरणिच्छल्लदुहावणिज्झोडाः[६७] ।
अट्टः क्वथेः[६८] कथेर्वज्जरपज्जरसग्घसाससाहचव- ॥ १५३ ॥

जंपपिसुणबोल्लोप्पाला[६९] दुःखे णिव्वरो[७०] निषेधेर्हक्कः[७१] ।
जूरः क्रुधे[७२]र्विसूरश्च खिदे[७३]स्तड्डवविरल्लतड- ॥ १५४ ॥

तड्डास्तने[७४]र्निरः पद्यतेर्वलः[७५] संतपां झंखः[७६] ।
ओअग्गसमाणौ व्यापिसमाप्त्यो[७७]र्णीरवो बुभुक्ष्याक्षिप्त्योः[७८] ॥ १५५ ॥

क्षिपेरड्डक्खपरिहुलघत्तच्छुहफेल्लणोल्लसोल्लगल्लत्थान्[७९] ।
उत्क्षिपेरुत्थंघोस्सिक्कहक्खुवाल्लत्थगुलुगुंछ- ॥ १५६ ॥

उब्भुत्तान्[८०] वेपेराअम्बाअज्झौ[८१] विरणडौ गुपेः[८२] ।
पच्चार वेलव उपालम्भेः[८३] खउरपड्डुहौ ॥ १५७ ॥

क्षुमेः[८४] प्रदीपेः संधुक्काब्भुत्तेअवसंधुमाः[८५] ।
अल्लिअ उपसर्पेः[८६] कमवसलिसलोट्टाः स्वपे[८७]र्वडवडो विलपेः ॥ १५८ ॥

रभिराको रम्भढवौ[८९] भाराक्रान्ते नमेर्णिसुढः[९०] ।
उब्भाववेल्लणीसरकोड्डुमसक्खुड्डुखेड्डुमोट्टाअ- ॥ १५९ ॥

किलिकिंचा रमेः[९१] पडिसा परिसाम शमेः[९२] लुभेः संभावः[९३] ।
आक्रामिरोहावोत्थारच्छुन्दान्[९४] विश्रमेर्णिव्वा[९५] ॥ १६० ॥

ढुण्ढुल्लढुमढंढल्लभमाडभम्मभमुड- ।
तलअंटझंटगुमटिरिटिल्लपरीपर- ॥ १६१ ॥

घमचक्कमभमडघसझंपढुसा भ्रमेः [९६] ।
गमिरणुवज्जअवज्जसअक्कुसउक्कुसअइच्छअई- ॥ १६२ ॥

अवहरअवसेहवडअवरिअलवरिअल्लवोल्लणिरिणास- ।
वच्छड्डुणिणणिम्महपच्छंदणिलुक्करंभणीणिवहान्[९७] ॥ १६३ ॥

प्रत्यागमागमाभ्यागमां पल्लोट्टाहिपच्चुओम्मच्छाः[९८] ।
रिहरिग्गौ प्रविशेः[९९] संगमोऽभिभड[१००]डिप्पणिड्डुहौ विगलेः[१०१] ॥ १६४ ॥

णिवहणिरिणासणिरिणिज्जरोंचचड्डाः[१०२]पिंषेर्वेलेवंफः[१०३] ।
भ्रंशेः पिडपिट्टचुक्चुल्लपुट्टपुडा[११४] भषे- ॥ १६५ ॥

बुंक्कः[१०५] पूरेरग्घवाग्घाडाहिरेमाग्गुमोद्धुमाः[१०६] ।
आहाहिलंघवच्चाहिलक्खमहसिहचिल्लुंपचंपाः कांक्षेः[१०७] ॥ १६६ ॥

नशिरवहरावसेहणिवहपडिसासेहणिरिणासान्[१०८] ।
साअड्ढाणच्छकड्ढाच्छाअंछाणंछाः कृषे[१०९]रसा-॥ १६७ ॥

वक्खोड[११०] उल्लसेरूसलोसुंभारोअणिल्लस- ।
गुंजोल्लपुलआआः[१११] संदिशोऽप्पाहो[११२] ग्रसेर्घिसः[११३] ॥ १६८ ॥

भासेर्भिसः[११४] प्रतीक्षेर्विहिरविरमालसामआः[११५] स्रंसे- ।
ल्हंसडिंभौ[११६] म्रक्षेश्चोप्पडो[११७] विसट्टो दले[११८]स्त्रसेर्वजडरौ[११९] ॥ १६९ ॥

वोज्जो वीजेश्च[१२०] गवेषेर्ढंढल्लसमेसढुंढुल्ल- ।
ढंढोला[१२१]स्तक्षेश्चञ्छरंपरंफा[१२२] हसेर्गुंजः ॥ १७० ॥

दहिरहिऊलालुक्खौ[१२४] विकसेः कोआसवोसट्टौ[१२५] ।
श्लिषोऽवआससामग्गापरिअंता[१२६] जुगुप्सते- ॥ १७१ ॥

ईंगुन्छक्षुणगुंछा[१२७] वलग्गाचडमारुहेः[१२८] ।
झुल्लो लस्यात्स्खले[१२९]र्णांहोऽवाद्गाहो[१३०] गुम्मगुम्मडौ ॥ १७२ ॥

मुहे[१३१]रप्पुण्णगाः क्तेन[१३२] धातवोऽर्थान्तरेष्वपि[१३३] ।

[द्वितीयः पादः]

दस्तस्य शौरसेन्यामखावचोऽस्तो[१]ऽधः क्वचि[२]त्तावति त्वो- ॥ १७३ ॥

र्थो[३] थो ध[४] इहहचोर्हस्य[५] भुवो भो[६]ऽन्त्यादिदेति मो णो[७] र्यो य्यः[८] ।
पूर्वस्य पुरव[९] इअदूणौ क्त्वः[१०] कृगमो डदुअ[११] इदानीमो ॥ १७४ ॥

ल्दाणिं[१२] तस्मात्ता[१३] र्णं नन्वर्थे[१४]ऽम्महे हर्षे[१५] ।
ही ही वैदूषके[१६] हीमाणहे निर्वेदविस्मये[१७] ॥ १७५ ॥

एवार्थे य्येव[१८] हञ्जे चेट्याह्वाने[१९]ऽतो ङसेर्दुदोश्[२०] ।
आस्वावामन्त्र्य इनो नो[२१] मो[२२] भवतां[२३] भविष्यति स्सि[२४]रिचेचो- ॥१७६॥

र्दैट्[२५] शेषं प्राकृतव[२६]न्मागध्यां शौरसेनीवत्[२७] ।
स्वाङ्गाहो ङस[२८] आमो ङित्[२९] सौ पुंस्येल्लतो[३०] हगेऽहंवयमोः[३१] ॥ १७७ ॥

छोऽनादौ श्चः[३२] क्षः ≍कः[३३] स्कः प्रेक्षाचक्षे[३४] सः सषोः संयोगे- ।
[ऽ]ग्रीष्मे[३५] स्तोः श्तौ[३६] न्यण्यज्ञञां ञ्ञ्[३७] जो व्रजे[३८]र्जयद्यां यः[३९] ॥ १७८ ॥

ष्टष्ठौ स्टं[४०] स्थर्थौ स्तं[४१] चिष्ठस्तिष्ठस्य[४२] नो नणोः पैशाच्याम्[४३] ।
न्यण्यज्ञां ञ्ञ्[४४] राज्ञो ञ्ञो वा चिञ्[४५] तल् तदोः[४६] शषोः सो[४७] लो ळः[४८] ॥१७९॥

दुस्तिर्याद्दशगे[४९] यंखष्टां रिअसिनसिटाः क्वचित्[५०] टोस्तु तु[५१]यः ।
पो हृदये[५२] टा नेन तदिदमो[५३]र्नाए स्त्रियां[५४] ङसेस्तोतुरातः[५५] ॥ १८० ॥

तद्दिजेय्य[५६] एय्य एव भविष्यति[५७] इय्यो यकः[५८] कृञो डीरः[५९] क्त्वा ।
तूनं[६०] ष्ट्वः ट्ठूनत्थूनौ[६१] शेषं शौरसेनीवत्[६२] ॥ १८१ ॥

न प्रायो लुक्कादिच्छल्षट्शम्यन्तसूत्रोक्तम्[६३] ।
रो लस्तु चूलिकापैशाच्यां[६४] गजडदबघझढधभाम् ॥ १८२ ॥

कचटतपखछठथफाल्[६५] अन्येषामादियुजि न[६६] शेषं प्राग्वत् ।

[तृतीयः पादः]

प्रायोऽपभ्रंशेऽचोऽच्[१] अचोऽस्तवोऽस्तौ कखतथपफा ॥ १८३ ॥

गघदधबभान्[२] तु मो र्व्व[३] ह्रो र्म्भं[४] रोलुक्यधः[५] क्वचिदभूतोऽपि ।
विपदापत्संपदि द इ[७] कथंतथायथि डिहडिधडिमडेमाः था- ॥ १८४ ॥

देर्[८]र्दादेर्डैहो याद्दक्ताद्दक्कीदृगीदृशां[९] डहसोऽताम्[१०]।
यावत्तावत्युंमहिंमा वादे[११]र्डेत्तुलडेवडा- ॥ १८५ ॥

वियत्कियति च व्यादेर्वतुपो[१२] डेत्तहे अलः[१३]।
यत्तदोर्डैत्तु[१४] कुत्रात्रे च डेत्थु[१५] त्वतलौ प्पणम्[१६] ॥ १८६ ॥

तव्यस्य एव्वइएव्वउएव्वाः[१७] क्त्व इ इउ इवि अवि[१८]।
एप्प्येप्पिण्वेव्येविणु[१९] तुम एवमणाणहमणहिं च[२०] गमे- ॥ १८७ ॥

स्त्वेप्पेपिण्वेप्प्योरेलुक्[२१] तृनोऽणअल्[२२] छस्य युष्मदादेर्डारः[२३]।
अणि जणु नं नइ नावइ नाइ इवार्थे[२४] तणेण रेसिं रेसि ॥ १८८ ॥

तेहिं केहिं तादर्थ्ये[२५] स्वार्थे डुः पुनर्विनाध्रुवमः[२६]।
डेंडावश्यमः[२७] परमेकशसोर्डडि[२८] अडडुल्लाः ॥ १८९ ॥

स्वार्थिकक्लुक् च[२९] तद्योगजाश्च[३०] डीतः स्त्रियां[३१]मदन्ताड्डा[३२]।
इदतोऽति[३३] इदानीमेव्वहिं[३४] एव जि[३५] एवमेम[३६] नहि नाहिं[३७] ॥ १९० ॥

प्रत्युत पच्चलिउ[३८] एवमेवेमइ[३९] समं समाणु[४०] किल किर[४१]।
पम्पिमाप्राइमप्राउप्राइवप्रायसो[४२] दिवा ॥ १९१ ॥

दिवे[४३] सह सहुं[४४] मा मं[४५] कुतः कउ कहंतिहु[४६]।
अथवा मनागहवइ मणाउ[४७]मितसेत्तहे[४८] पश्चात् ॥ १९२ ॥

पच्छइ[४९] ततस्तदा तो[५०] त्वनुसाहावन्यथासर्वौ[५१]।
किं काइंकवणौ[५२] उत्तविच्चवुत्ता विषण्णवर्त्मोक्ताः[५३] ॥ १९३ ॥

अत्खुः परस्परस्या[५४]न्याद्दशस्याश्चाइसाववरा-।
इसौ[५५] वहिल्लगाः शीघ्रादीनां[५६] हुहुरुघिग्घिगाः ॥ १९४ ॥

शब्दचेष्टानुकृत्यो[५७]रनर्थका घइमादयः।

[चतुर्थः पादः]

दिहौ सुपि[१] स्वम्यत उ[२]दोत्सौ पुंसि त्वे[३] भिसि[४] ॥ १९५ ॥

टि[५] ङिनेश्च[६] ङसेर्हेंहू[७] भ्यसो हुं[८] सुस्सुहो ङसः[९]।
आमो हं[१०] टो णानुस्वारौ[११] एं चेदुतो[१२] हि हे ङिङसेर्हुं[१३] ॥ १९६ ॥

भ्यस[१४] आमो हं च[१५] ङसो लुक्[१६] सुपसो[१७]र्हो जसामन्त्र्ये[१८]।
हिं भिस्सुपोः[१९] स्त्रियां ङे[२०]र्डस् ङस्योर्हे[२१] हुमाम्भ्यस[२२] उदोतौ ज- ॥ १९७ ॥

श्शस[२३] इं नपि[२४] कान्तस्यात उं स्वमोः[२५] सर्वगाड्ङि हि[२६] ङसि हंम्[२७]।
तु किमो डिहे[२८] ङसः सुश् यत्तत्किम्भ्यः[२९] स्त्रियां डहे[३०] यसत् ॥ १९८ ॥

ध्रुं ग्रुं स्वमो[३१]रिदम इमु नपुंसके[३२] एतदेह एहो एहु ।
स्त्रीनृनपि[३३] जश्शसोरेइ[३४] ओइ अदस[३५] इदम आअः[३६] ॥ १९९ ॥

सौ युष्मदस्तुहुं[३७] तुम्हे तुम्हइ जश्शसो[३८]र्भिसा तुम्हेहिं[३९] ।
ङ्यम्टा पइं तइं[४०] तुज्झ तुध्र तउ ङसिङसा[४१] सुपा तुम्हासु[४२] ॥ २०० ॥

तुम्हहमाम्भ्यस्भ्या[४३]मस्मदोऽम्हहं[४४] सौ हउं[४५] मइं ङ्यम्टा[४६] ।
ङस्ङसिसा महु मज्झा[४७]म्हइमम्हे जश्शसो[४८]र्भिसाम्हेहिं[४९] ॥ २०१ ॥

सुपाम्हासु[५०] ल्टो हिं वा झश्यो[५१]र्हिर्थास्सिपो[५२][सहम्याश्च]हुं थ- ।
ध्वमो[५३]हं मिबिटो[५४]हुं मस्महिङो[५५]रिदुदेत्स्वहेः[५६] ॥ २०२ ॥

स्यस्य सो लृटि[५७] पर्यासौ भुवो पहुच्च[५८] व्रजेर्वञ्जः[५९] ।
ब्रूञो ब्रुवः[६०] क्रियेः कीसु[६१] प्रस्सगृण्हौ दृशिग्रहोः[६२] ॥ २०३ ॥

तक्षाद्याश्छोल्लादीन्[६३] होस्तोरुच्चारलाघवं[६४] बिन्दो- ।
रन्ते[६५] हलस्यैको[६६] लिङ्गमतन्त्रं[६७] शौरसेनीवत्[६८] ॥ २०४ ॥

तद्व्यत्ययश्च[६९] शेषं संस्कृतवद्[७०] भाडगास्तु देश्याः सिद्धाः[७१] ।

[तृतीयोऽध्यायः समाप्तः]

चतुर्थं परिशिष्टम्

अपभ्रंशपद्यसूची

Index of Apabhrams'a Stanzas

[*The figures indicate the number of the stanza in III. iii-iv*]

अइतुंगत्तणु जं थणहं–१५३
(हे. ३९०·१)
अगलिअनेहनिवट्टाहं–१०२
(हे. ३३२·१)
अग्गिएं उण्हउँ होइ जगु–१०९
(हे. ३४३·१)
अज्जु वि नाहु महु ज्जि घरि–९४
(हे. ४२३·३)
अन्ने ते दीहर लोअण–६३
(हे. ४१४·१)
अब्भा लग्गा डुंगरिहिँ–१६१
(हे. ४४५·१)
अम्मिएँ सत्थावत्थेहिं–२
(हे. ३९६·२)
अम्मि पओहर वज्जमा–२६
(हे. ३९५·५)
अम्हे थोवा रिउ बहुअ–१४३
(हे. ३७६·१)
अह रखसि जाइट्ठिअएँ–७७
(हे. ४२२·१७)
अह विरलपहाउ जि–१११
(हे. ३४१·२)
अंगहिँ अंगु न मिलिउँ–५८
(हे. ३३२·२)
अंबणु लाइवि जे गया–१४२
(हे. ३७६·२)
अंसुजलें प्राइव गोरिअहें–६४
(हे. ४१४·३)
आअइँ लोअहोँ लोअणइँ–१३१
(हे. ३६५·१)
आअहिँ जम्महिँ–१४६
(हे. ३८३·३)
आअहोँ दड्ढकलेवरहोँ–१३४
(हे. ३६५·३)
उअ कणिआरु पफुल्लिअउ–५
(हे. ३९६·५)
एइ ति घोडा एह थलि–१००
(हे. ३३०·४)
एउँ गृण्हेप्पिणु ध्रुं मइं–२२
(हे. ४३८·१)
एक्क कुडुली पंचहिँ रुद्धी–७८
(हे. ४२२·१२)
एक्कमेक्कउँ जइ वि पेक्खइ–९१
(हे. ४२२·५)
एक्कसि सीलकलंकिअहं–४६
(हे. ४२८·१)
एक्कहिँ अक्खिहिँ सावणु–
(हे. ३५७·२)
एक्कु कइइ वि न आवहि–७४
(हे. ४२२·१)
एत्तउँ बोप्पिणु सउणि ठिउ–१५४
(हे. ३९१·१)

एत्तहें मेह पिअंति जलु–५६
(हे. ४१९·४)
एसी पिउ रूसेसुँ हउँ–६१
(हे. ४१४·४)
एह कुमारी एहो नरु–१३०
(हे. ३६२·१)
ओ गोरीमुहणिज्जिअउ–११
(हे. ४०१·२)
कमलइँ मेल्लिवि–१२३
(हे. ३५३·१)
कहिँ ससहरु कहिँ मअरहरु–८४
(हे. ४२२·७)
कंतु जं सीहहों उवमिअइ–५९
(हे. ४१८·२)
कंतु महारउ हलि सहिए–१२७
(हे. ३५८·१)
कुंजर सुमरि म सल्लइउ–१४९
(हे. ३८७·१)
कुंजरु अन्नहँ तरुवरहं–८८
(हे. ४२२·८)
केम समप्पउ दुट्ठु दिणु–१०
(हे. ४०१·१)
खग्गविसाहिउँ जहिँ लहहुँ–१४८
(हे. ३८६·१)
खज्जइ न कसरेक्कहिं–९३
(हे. ४२३·२)
खेड्डयं कयमम्हेहिं–८३
(हे. ४२२·९)
गअउ सु केसरि–९०
(हे. ४२२·१५)
गंग गमेप्पिणु जो मरइ–३३
(हे. ४४२·२)
गंपिणु वाणारसिहि नर–३२
(हे. ४४२·१)
गिरिहें सिलायलु–११२
(हे. ३४१·१)
गुणहिँ न संपइ कित्ति पर–४५
(हे. ३३५·१)
चलेंहिँ चलंतेंहिँ लोअणेंहिँ–८१
(हे. ४२२·१४)
चंचलु जीविउ ध्रुवु मरणु–४३
(हे. ४१८·३)
चंपअकुंपलमज्झि–३६
(हे. ४४४·४)
चूडुल्लउ चुण्णीहोइसइ–१५७
(हे. ३९५·२)
जइ केंवइ पावीसु पिउ–४
(हे. ३९६·४)
जइ तुह तुट्टउ नेहडा–१२६
(हे. ३५६·१)
जइ पवसंतें सहुँ न गय–६५
(हे. ४१९·३)
जइ पुच्छह घर वड्डाइं–१३१
(हे. ३६४·१)
जइ भग्गा पारक्कडा–७
(हे. ३७९·२)
जइ सु न आवइ दूइ घरु–७१
(हे. ३६७·१)
जइ सो घडिदि प्रयावदी–२०
(हे. ४०४·१)
जहिँ कंडिज्जइ सरिण सरु–१२५
(हे. ३५७·१)
जं दिट्ठउँ सोमग्गहणु–१
(हे. ३९६·१)

आइज्जइ तहिँ देसडइ–६८
(हे. ४१९·२)
आउ म जंतउ पल्लवह–५४
(हे. ४२०·१)
आम न विवडइ कुंभअडि–१८
(हे. ४०६·१)
आमहिँ विसमी कज्जगइ–१७
(हे. ४०६·३)
जिब्भिंदिउँ नायउ वसि करहुं–४४
(हे. ४२७·१)
जिम जिम वंकिम लोअणहं–१३
(हे. ३४४·१)
जिम तिम तिक्खा लेवि–१५६
(हे. ३९५·१)
जिम सुउरिस तिमँ घग्घलइँ–७५
(हे. ४२२·२)
जीविउँ कासु न वल्लहउँ–१२८
(हे. ३५८·२)
जे छड्डेविणु रअणनिहि–८६
(हे. ४२२·३)
जेत्तहँ तेत्तहँ वारि घरि–१९
(हे. ४३६·१)
जेप्पि असेसु कसाअवलु–२९
(हे. ४४०·१)
जेप्पि चएप्पिणु सअल धर–३१
(हे. ४४१·२)
जे महु दिण्णा दिअहडा–१०३
(हे. ३३३·१)
जेवडु अंतरु पट्टणगामहं–१९
(हे. ४०७·१)
जो गुण गोवइ अप्पणा–१०७
(हे. ३३८·१)
जो पुणु मणि जि–८५
(हे. ४२२·१३)
ढोल्ला एँह परिहासडी–४१
(हे. ४२५·१)
ढोल्ला महँ तुहुँ वारिआ–९८
(हे. ३३०·२)
ढोल्ला साँवला–९७
(हे. ३३०·१)
तउ गुणसंपइ तुज्झ मदि–१४१
(हे. ३७२·१)
तणहँ तइज्जी भंगि न वि–१०८
(हे. ३३९·१)
तरुणहो तरुणिहो–११७
(हे. ३४६·१)
तरुहुँ वि वक्कलु–११३
(हे. ३४१·२)
तं तेत्तिउँ जलु सायरहो–१६०
(हे. ३९५·७)
तिलहँ तिलत्तणु ताउँ पर–१६
(हे. ४०६·२)
तुच्छमज्झहेँ तुच्छ–१२०
(हे. ३५०·१)
ते मुग्गडा हराविआ–७३
(हे. ४०९·१)
तुम्हेँहिँ अम्हेँहिँ जं किअउँ–१३६
(हे. ३७१·१)
दइवु घडावइ वणि–११४
(हे. ३४०·१)
दहमुहु भुवणभअंकरु–१०१
(हे. ३३१·१)
दिअहा जंति झडप्पडहिँ–१५२
(हे. ३८८·१)

दिवेंहिँ विढत्तउँ खाहि वढ–७९
(हे. ४२२·४)
दूरुड्डाणें पडिउ खलु–१०६
(हे. ३३७·१)
देवं दुक्करु णिअअधणु–३०
(हे. ४४१·१)
देसुच्चाडणु सिहिकढणु–२३
(हे. ४३८·२)
धवलु विसूरइ–११५
(हे. ३४०·२)
न किर खाइ न पिअइ–६०
(हे. ४१९·१)
पइँ मइँ बेहिँ वि–१३७
(हे. ३७०·३)
पइँ मुक्काहँ वि वरतरु–१३९
(हे. ३७०·१)
पइँ मेल्लंतिहेँ महु मरणु–१३८
(हे. ३७०·४)
पहिआ दिट्ठी गोरडी–५१
(हे. ४३१·१)
पाइ विलग्गी अंत्रडी–१६२
(हे. ४४५·२)
पिअसंगमि कउ निद्दडी–५५
(हे. ४१८·१)
पिउ आगअउ–५२ (हे. ४३२·१)
पुत्तें जाएं कवणु गुणु–१५९
(हे. ३९५·६)
पेक्खेविणु मुहुँ जिणवरहं–३९
(हे. ४४४·३)
पेम्मडि पच्छायावडा–९६
(हे. ४२४·१)
प्रंगणि चिट्ठदि नाहु–१२९
(हे. ३६०·१)
प्राइम मुणिहँ वि भंतडी–६२
(हे. ४१४·२)
प्रिअ एवहिँ करेँ सेल्लु करि–१५१
(हे. ३८७·३)
फोडेन्ति जे हिअडउँ–४९
(हे. ३५०·२)
बप्पीहा काइँ बोल्लिएण–१४५
(हे. ३८३·२)
बप्पीहा पिउ पिउ करवि–१४४
(हे. ३८३·१)
बम्ह तेँ विरला के वि नर–६
(हे. ४१२·१)
बलिअब्भत्थणि महुमहणु–१४७
(हे. ३८४·१)
बाह विछोडवि जाहि तुहुँ–२८
(हे. ४३९·३)
बिट्टिए मइँ भणिअ तुहुँ–९९
(हे. ३३०·३)
बिंबाहरि तणु रअणवणु–९
(हे. ४०१·३)
भग्गउँ देक्खिवि निअअबलु–१२४
(हे. ३२४·१)
भण सहि विहुअउँ तेम–१२
(हे. ४०१·४)
भमर म रुणझुणि–१३५
(हे. ३६८·१)
भमरा एत्थु वि लिंबडइ–१५०
(हे. ३८७·२)
भल्ला हुआ जु मारिआ–१२१
(हे. ३५१·१)
भाईरहि जिम भारइ–११८
(हे. ३४७·१)

मइँ जाणिउँ पिअविरहिअहँ–१४
(हे. ४०१·५)
मइँ जाणिउँ बुड्डीसु हउँ–९२
(हे. ४२३·१)
मइँ भणिअउ बलिराउ–१५
(हे. ४०२·१)
मइँ वुत्तउ तुहुँ धुर धरहि–७२
(हे. ४२१·१)
महु कंतहों गुट्ठट्ठिअहों –६७
(हे. ४१६·१)
महु कंतहोंबि दोसडा–४८
(हे. ३७९·१)
महु हिअउँ तइँ–१४०
(हे. ३७०·२)
माणि पणट्ठइ जइ ण तणु–६६
(हे. ४१८·४)
मुहकबरिबंध तहेँ सोह–३७
(हे. ३८२·१)
रक्खइ सा विसहारिणी–२७
(हे. ४३९·२)
रविअत्थमणसमाउलेंण–३८
(हे. ४४४·१)
वच्छहे॑ गिण्हइ फलइँ–१०५
(हे. ३३६·१)
वलआवलिणिवडणभऍण–४०
(हे. ४४४·२)
वायसु उड्डावंतिअऍ–११९
(हे. ३५२·१)
विप्पिअआरउ जइ वि पिउ–११०
(हे. ३४३·२)
विरहाणलजालकरालिअउ–७०
(हे. ४१५·१)
विरहाणलजालकरालिअउ–४७
(हे. ४२९·१)
विहवि पणट्ठइ वंकुडउ–६९
(हे. ४१८·६)
विहवे कस्सु थिरत्तणउँ–८२
(हे. ४२२·६)
विहि विणडउ पीडंतु गह–८९
(हे. ३८५·१)
व्रासु महारिसि एउँ भणइ–८
(हे. ३९९·१)
सत्थावत्थहँ आलवणु–८०
(हे. ४२२·१६)
सव्वु करेप्पिणु–३
(हे. ३९६·३)
सरिहिँ न सरेहिँ न सर–७६
(हे. ४२२·१०)
संगरसऍहिँ वि जो–११६
(हे. ३४५·१)
संता भोग जु परिहरइ–१५५
(हे. ३८९·१)
संदेसें काइँ तुम्हारेण–३५
(हे. ४३४·१)
साअरु उप्परि तणु धरइ–१०४
(हे. ३३४·१)
सामिपसाउ सलज्जु पिउ–५०
(हे. ४३०·१)
सावसलोणी गोरडी–५७
(हे. ४२०·३)
साहु वि लोउ तडप्फडइ–२१
(हे. ३६६·१)
सिरि चडिआ खंति–१६३
(हे. ४४५·३)

सिरि जरखंडी लोअडी—९५
(हे. ४२३·४)
सीसि सेहरु खणु—१६४
(हे. ४४६·१)
सुंदरसव्वंगाउ विला—१२२
(हे. ३४८·१)
सुमरिज्जइ तं वल्लहउँ—४२
(हे. ४२६·१)
सोएवा पर वारिआ—२४
(हे. ४३८·३)
सोसउ म सोसउ च्चिअ—१३३
(हे. ३६५·२)
हत्थि मारणउ—३४
(हे. ४४३·१)
हरि नच्चाविउ पंगणइ—५३
(हे. ४२०·२)
हिअइ खुडुक्कइ गोरडी—१५८
(हे. ३९५·४)
हिअडा जइ वेरिअ घणा—२५
(हे. ४३९·१)
हिअडा पइँ बहु बोल्लिअउँ—८७
(हे. ४२२·११)

पञ्चमं परिशिष्टम्

देश्यशब्दसूची

[अस्यां सूच्यां प्रथमं स्थूलाक्षरैर्देश्यशब्दः, तदनन्तरं प्रस्तुतग्रन्थस्य पृष्ठाङ्कः, ततो गीर्वाणभाषया देश्यशब्दस्य अर्थाः, ततः कंसयोर्मध्ये मध्यमाक्षरैः हेमचन्द्राचार्यविरचिताया देशीनाममालाया बोधकं दे, अथवा हेमचन्द्राचार्यविरचितस्य प्राकृतव्याकरणस्य बोधकं हेव्या इत्यक्षरम्, ततः तत्रत्यरूपभेदार्थभेदयोर्निर्देशः, ततो वर्गाङ्कः श्लोकाङ्कश्च]

अ

अइरजुवई ६६ अचिरयुवति. (दे–१·४८)
अइराणी ३२६ इन्द्राणी (दे–१·५८)
अइरिप्पो ३१४ कथाबन्धः (दे–अइरिंपो १२६)
अउज्झहरो ९७ रहस्यभेदी (दे–१·४२)
अकासिअं २०७ पर्याप्तम् (दे–अकासि १·८)
अकंडतलिमो ३३४ अपरिणीतः, निष्प्रेमा (दे–१·६०)
अक्कन्तो २०९ प्रवृद्धः (दे–अक्कंत १·९)
अक्कसालो ३२७ बलात्कारः (दे–अक्कसाला १·५८)
अक्कोडो ३२५ अजः, छागः (दे–१·१२)
अक्को ३१० दूतः (दे–१·६)
अक्खणवेलं ३३२ निधुवनम्, प्रदोषः (दे–१·५९)
अक्खवाआ ३१२ दिक् (दे–अक्खवाया १·३५)
अगंडिगोहो ३३१ यौवनोत्कटः (दे–अगंडिगेहो १·४०)
अगिला ३२२ अविच्छिन्नस्वररोदनम् (दे–अगिला अवज्ञा १·१७)
अग्गिआओ ९९ इन्द्रगोपः (दे–१·५३)
अङ्किअं २०९ आलिङ्गितम् (दे–१·११)
अच्छं ३३६ अत्यर्थम्, शीघ्रम् (दे–१·४९)
अच्छिवडणं ९७ निमीलनम् (दे–१·३९)
अच्छिविअच्छी १०९ परस्पराकृष्टिः (दे–१·४१)
अच्छिहरुल्लो १०८ द्वेष्यः (दे–१·४१)
अजडो ९४ अजडः शीघ्रकारित्वात्
अजणिकं ३१४ सायंभोजनम्
अज्जमो ९९ ऋजुः
अज्झसिअं २१२ उत्कृष्टम् (दे–१·३०)
अज्झसिअं २१५ दृष्टम् (दे–१·३०)
अज्झोलिआ ३२७ पुनः पुनर्या दुह्यते धेनुः (दे–अज्झोली दुग्धदोह्या धेनुः १·७)
अट्टणो ११२ आर्तज्ञः
अट्टट्टो २१२ यातः (दे–१·१०)
अट्टलो ३२३ अनपराधः
अडअणा १०८ असती (दे–१·१८)
अडउज्झिअं ३१९ विपरीतरतम् (दे–१·४२)
अडा ३१० प्रलम्बाः केशाः

अड्डो ३१७ आरामः
अड्डिम्म ३२१ अतिरिक्तम्
अणम्मापल्लई ३११ पुनरुक्तम्
अणडो ९४ अनृतम् (दे–अणाडो १·१८)
अणरड्ड ६६ नववधूः
(दे–अणुवहुआ १·४८)
अणरामअं ३१८ अरतिः
(दे–अणरामओ १·४१)
अणत्तं ३१९ निर्माल्यम् (दे–१·१०)
अणह्प्पणअं ३११ भर्त्सितम्
(दे–१·४८)
अणिकज्जो २०६ अनवस्थितः
(दे–४·११)
अणिर्अं ३२४ मुखम् (दे–अणिई १·५१)
अणुअज्झिओ ३१० प्रयातः, प्रति-
जागरितः (दे–अणुवज्जिअं १·४१)
अणुअत्थं ३३० प्रकामम्
अणुदिवं ९८ दिनमुखम् (दे–१·१९)
अणुसूआ ११४ आसन्नप्रसवा
(दे–१·२१)
अण्णइओ ११० सर्वत्रार्थे तृप्तः
(दे–१·१९)
अण्णं २१४ आरोपितम्
अण्णओ ३३६ धूर्तः, देवरः, युवा
(दे–१·५१)
अण्णसअं २११ आस्तृतम्
अण्णोलो ३१९ दिनमुखम्
(दे–अणोलयं १·१९)
अत्तिहरी ९५ आर्तिहरी संतर्पणशीलत्वात्
(दे–१·३५)
अत्थक्कं ६८ अकाण्डम् (हेव्या–२·१७४)
अद्धघरणी ३१० नववधूः
अन्तरिज्जं ११० रशना, कटिसूत्रम्
(दे–१·१५)
अपुण्णं २०६ आक्रान्तम्
(दे–अप्फुण्णं पूर्णम् १·२०)
अप्पुण्णं २१० परिपूर्णम्
(दे–अप्फुण्णं १·२०)
अब्बा ६८ अम्बा
अब्बुद्धसिरी ९८ मनोरथाधिकफल-
प्राप्तिः (दे–१·४२)
अब्भपिसाओ ३२२ अभ्रपिशाचः, राहुः
अमअणिग्गमो ३३० शशी, चन्द्रः
(दे–१·१५)
अमआ ६६ असुराः (दे–१.१५)
अमलो ३२८ ध्वस्ततेजाः
अमारो ३३८ नदीमध्यद्वीपम्, कमठः
अरणी ६९ सरणिः, मार्गः, रथ्या
अरलं ३१६ चीरी, कीटकविशेषः
(दे–१·५२)
अरलाओ ३३६ चिरिका, मशकः
(दे–अरलाया १·३६)
अरलो ३३६ चिरिका, मशकः
(दे–१·५३)
अलमञ्जुलो ३१७ अलसः (दे–१·४६)
अलवलवसहो १११ धूर्तः, दुष्टः, पृष्ठवाही
बलीवर्दः (दे–अलमलो १·२५)
अलिअल्लिका ३१८ कस्तूरी (दे–१·५६)
अलिआ ४० आली, सखी (दे–१·१६);
३३६ पितृष्वसा, कनिष्ठसोदरस्य
वधूः (दे–१·१६)
अलिणो ३१५ वृश्चिकः (दे–१·११)
अलिसारं ३१९ क्षीरम्
(दे–अलिआरं १·२३)
अलुओ ३१० कृतपरिचयः (दे–१·१२)

अह्रुत्थी ३३८ अ ग द म्, अ ला र्ग
(दे-१·५४)
अह्लिल्लो १०७ भ्र म रः
(दे-अह्लल्लो १.१३)
अह्ली ३१३ व्याघ्रः
(दे-अलिअली, अरिअली १·५६)
अवअणिओ ३१९ अन्त्यः (दे-१·४४)
अवअण्हं ३०९ उ लू ख ल म्
(दे-अवअण्णो १·२६)
अवआरो ३२६ लो क या त्रा (दे-अवयारो माघ्यामुत्सवविशेषः १·३२)
अवऊढं ३२९ व्यलीकम्
(दे-अवगूढं १·२०)
अवकुम्माणिका ३२५ विलासः
अवगद्दो २१३ आक्रान्तम्
अवडओ ३१७ आरामः
(दे-१·२०; १·५३)
अवडाहिअं २१२ उत्कुष्टम्
(दे-१·४७)
अवडुअं ३३२ उलूखलम्, विसंस्थुलम्
(दे-अवडुओ १·२६)
अवडुक्किअं ११० कूपाद्यवटेषु निपतितम्
(दे-अवडक्किओ १·४७)
अवज्झसो ३२७ कटिः
(दे-अवज्झसं १·५६)
अवरिज्जं १०९ अद्वितीयम् (दे-अवरिज्जो अद्वितीयः १·३६); ३१४ उत्तरीयम्
अवसरिओ ३२२ विरहः
अवहट्टो २०९ दर्पितः (दे-१·२३)
अवहडं ३२० मुसलम् (दे-१·३२)
अवहोओ ९६ विरहः (दे-१·३५)

अवंगो ३२० अपामार्गः
(दे-आवंगो १·६२)
अवाहिओ २१३ अभ्यासितम्
अविअं २०९ उक्तम् (दे-१·१०)
अविणयवई ९४ अविनयपतिः
(दे-१·१८)
अविरिक्कं ३१४ सायंभोजनम् (दे-अवरिक्को क्षणरहितः, निरवसरः १·२०)
असक्किओ २०९ सक्तः (दे-१·५५)
असंगअं ३२१ प्रावरणम्
(दे-असंगयं १·३४)
असारा ३०७ कदली (दे-१·१२)
अहक्खो ३२७ स्ने ह र हि तः
(दे-अअंखो १·१३)
अहिअलो ९६ क्रोधः (दे-१·३६)
अहिरिओ ३२० विच्छायः
(दे-अहिरीओ १·२७)
अहिरेइअं २१० परिपूर्णम्
अहिसिओ १०९ ग्रहशङ्कया रुदितः
(दे-१·३०)
अहिहरअं ३२२ देवगृहम्
(दे-अहिहरं १·५७)
अहेल्लो ३११ ईश्वरः (दे-अहिल्लो १·१०)
अहोरणं ३१४ उत्तरीयम् (दे-१·२५)
अंगवलिज्जं ३२९ त नु च ल न म्
(दे-१·४२)
अंगुत्थलं ३२७ अङ्गुलीयकम्
(दे-१·३१)
अंगुलिअं ३१९ इ क्षु श क ल म्
(दे-अंगलिअं १·२८)
अंजणइसिआ ३१९ तापिच्छम्
(दे-१·३७)

अंजणिआ ३१९ तापिच्छम्
(दे-१·३७)
अंतल्ली ३३२ उदरम्, ऊर्मिमध्यम्
(दे-अंतेल्ली १·५५)
अंबडो ३२५ निष्ठुरः (दे-१·१६)

आ

आअड्डिआ ३३२ परायत्ता, नववधूः
(दे-आअड्डिअं १·६८)
आअरं ३२० मुसलम्
(दे-आअरं उदूखलम् १·७४)
आअलणं ३१४ रतिगृहम्
(दे-आलयणं १·६६)
आअल्लो ३२२ केशबन्धनम्
(दे-आमोडो ! १·६२)
आअं ३१६, ३३३ दधि (दे-आअं दीर्घम्, अतिदीर्घम्, मुसलम्, विषमम्, कालायसम् १·७३)
आआसतलं ९७ हर्म्यपृष्ठम् (दे-१७२)
आइप्पणं २११ पिष्टम् (दे-१·७८)
आओ ६५ आपः (दे-१·७)
आडम्बरो ३३८ पटहः
आडोरो ३०६ श्वपचः
(दे-आणूवो ! १·६४)
आणको ३२५ तिर्यक्
(दे-आणिक्कं तिर्यक्सुरतम् १·६१)
आणन्दवडो ९७ नववध्वा रक्ताक्तवस्त्रम्, प्रथमरजस्वलाया रक्ताक्तः पटः (दे-१·७२)
आणुअं ६८ आननम् (दे-१·६२)
आदओ ३२९ आदर्शः
(दे-अद्दाओ १·१४)
आमल्लअं ३३१ धम्मिल्लरचना
(दे-आमेलो ! १·६२)
आमेलो ३२२ केशबन्धनम् (दे-१·६२)
आरक्खो २०९ वृद्धिगतः, गृहायातश्च
(दे-१·७५)
आरनालं ९६ कमलम् (दे-१·६६)
आरंतिओ ३१५ मालाकारः
(दे-आरंमिओ १·७१)
आरंदरं ३३० संकटम् (दे-१·७८)
आरिल्लो ३१५ बन्धः (दे-१·६३)
आरेइअं २०९ मुकुलितम्; मुक्तम्, भ्रान्तम्, पुलकितम् (दे-१·७७)
आरोग्गिअं २१० परिपूर्णम् (दे-१·६९)
आलत्थओ ३१५ केकी, मयूरः
(दे-आलत्थो १·६५)
आलोलं ३२२ केशबन्धनम्
आलसो ३१५ वृश्चिकः
(दे-आलासो १·६१)
आवसणं ३१४ रतिगृहम्
(दे-आलयणं १·६६)
आविअं २०९ प्रोतम् (दे-१·७६)
आसंघो ६७ आस्था
आहुडं ११३ सीत्कारः
(दे-आहुडं १·७४)
आहविओ २१४ चूर्णितम्
आहित्थो २०७ क्रुद्धः, गलितः
(दे-१·७६)

इ

इक्कुसी १२६ नीलाब्जम्
(दे-इक्कुसं १·७९)
इच्छाउत्तो ३१७ योगिनीसुतः, ईश्वरः

इल्ली ३३४ वर्षत्राणम्, सिंहः, व्याघ्रः
(दे–१·८३)
ईदग्गिधूमं ९८; ३२४ तुहिनम्
(दे–१·८०)

उ

उअआरो ३३२ ग्रामः, संघः
उअक्किअं २१४ पुञ्जीकृतम् (दे–१·१०७)
उअहारी ३१६ दोहनकारी
(दे–१·१०८)
उइत्तणं ३०८ निवसनम्
(दे–उईतणं १·१०३)
उक्कग्गो २०६ अनवस्थितः
उक्कट्टी ३१२ कूपतुला (दे–उक्कंदी १·८७)
उक्कासं २१२ उत्कृष्टम्
(दे–उक्कासिअं १·११४)
उक्कासारो ३१६ भीरुः
उक्कासिअं २१४ रणलब्धम्
(दे–१·११४)
उक्किअं २१२ प्रसृतम्
उक्कुण्डं २१३ विप्रलब्धः
(दे–उक्कुंडो १·९१)
उक्खण्डिअं २१४ त्रुटितम्
(दे–१·११२)
उक्खिण्णं २०६ अवकीर्णम्
(दे–१·१३०)
उग्गाहिओ २११ निपुणगृहीतः विरचितश्च (दे–उग्गाहिअं १·१०४)
उग्गालो ३१५ तनुस्रोतः, सुस्वल्पजलप्रवहणम् (दे–ओग्गालो १·१५१)
उग्गाहिअं २०८ उत्क्षिप्तम्
उग्घओ २१३ विस्तीर्णः
(दे–उग्घाओ १·१२६)

उग्घक्कं २०७ प्रलपितम्
उच्चप्पो २१० आरूढः (दे–१·११०)
उच्चल्लो २१५ दृष्टः
उच्चंडं ३२१ शौर्येण क्रियते यच्चरितम्
(दे–उच्चडं १·१०६)
उच्चंडिगो ३३३ निःसीमः, अधिकप्रमाणः
(दे–उच्चड्डिओ १·१०६)
उच्चंतो ३१९ गाढः
(दे–उच्चत्थो दृढः १·९७)
उच्चाडनं ३३३ उपवनम्, शीतम्
(दे–उच्चाडो विपुलः १·९७)
उच्चुल्लो २०७ उद्विग्नः
(दे–उच्चुल्लं १·१२७)
उच्छड्डिअं २१२ मुषितम्
(दे–उच्छडिअं १·११२)
उच्छण्डिअं २०९ शरादिव्यथितम्, अपहृतम् (दे–१·११२)
उच्छलओ ३१३ गृहम्
(दे–उत्थलिअं १·१०७)
उच्छुण्णं २१० परिपूर्णम्
उच्छुरिअं २१३ आपूर्णम्
(दे–उच्छुरं १·९०)
उच्छुल्लो २१३ अध्यासितम्; २१५ विधारितः (दे–१·१३१)
उच्छूरणं २०७ उच्छिष्टम्
(दे–उद्धरणं १·१०६)
उज्जणिअं २०८ वक्रितम्, निम्नीकृतम्
(दे–१·१११)
उज्जरिअं २०८ शुष्कम्, निम्नीकृतम्
(दे–१·१३३)
उज्जल्लो ९८ बहुबलवान्
(दे–१·१५४); २११ अध्यासितम्
(दे–१·९७; हेम्या–२·१७४)

उज्झोगलं ३२५ भटः (?)
उज्झमाणं २११ पलायितम्
(दे–उज्झमणं १·१०३)
उज्झरिओ २१३ विस्तीर्णः
(दे–उज्झरिअं १·१३३)
उज्झं ३२३ अरम्यम् (दे–ओज्झं १·१४८)
उड्डाहिअं २०८ उ त्क्षि प्त म्
उड्डो ३१५ कूपादिखनकः (दे–१·८५)
उणिआ ३१४ कृसरा, यवागूः
(दे–उण्हिआ १·८८)
उत्तप्पो २१३ अध्यासितम् (दे–१·१३१)
उत्ताणफलं ३०८ एरण्डः
(दे–उत्ताणपत्तयं १·१२०)
उत्तालो ३२३ गर्वितः (दे–उत्तप्पो ?
१·१३१)
उत्तिरिविडिअं ३२१ उपर्युपरिस्थानम्
(दे–उत्तिरिविडी १·१२२)
उत्थल्लपत्थल्ला १०९ पार्श्वयुगापवृत्तिः
(दे–१·१२१)
उत्थिअं ३१४ रणलब्धम्
उद्दच्छिओ २११ निषिद्धः
उद्दणो ९६ उद्वदनः (दे–१·९९)
उद्दाणो ३३३ कुररः, सगर्वः, प्रतिशब्दः
(दे–उद्दाणा चुल्ली १·८७)
उद्दारिअं २१२ उत्खातम्
(दे–उद्दरिअं १·११०)
उद्दालिअं २११ र ण द्रु त म्
(दे–उद्दलिअं १·१००)
उद्दो ३३३ ककुदम्, जलमानुषः,
दान्तपृष्ठः (दे–उद्दं १·१२३)
उद्धओ २०७ श्रान्तः
(दे–उद्धाओ १·१२४)
उद्धच्छो २१३ लिप्तम्
(दे–उद्धत्थो १·९६)
उद्धरिअं २०६ अर्दितः
(दे–उद्दरिअं १·१००)
उद्धुमाअं २१० परिपूर्णम्
उद्धुसिअं २०९ रोमाञ्चितम्
उद्धूलिअं २१२ अवनतम्
उप्पक्किआ ३१५ रजकी
(दे–उप्फुंकिआ १·११४)
उप्पड्डिअं २१३ नष्टम्
उप्पहं ३१३ गृहम्
उप्पा ३२१ मण्यादेर्मार्जनम्
(दे–ओप्पा १·१४८)
उप्पालओ ३२१ रणरणकम्
उप्पिअं २०७ हृतं रोषितं वियुक्तं च
(दे–उप्पित्थं ? १·१२६)
उप्पिणिरं ३२२ शून्यम्
उप्पित्थो २०७ त्रस्तः, क्रुद्धः
(दे–१·१२६)
उप्पिंगरिआ ३२१ हस्तोत्क्षेपः
(दे–उप्पिंगालिआ करोत्साहः
१·११८)
उप्पिंजलं ३१३ रतम, काकः, रजः
(दे–१·१३५)
उप्पुलपोलिअं ३२१ कौतुकेन त्वरा
(दे–उच्चुलउलिअं १·१२१)
उप्फेसो ३३८ भीतिः, सद्भावः
(दे–१·९४)
उब्बालो २१३ अ ध्या सि त म्
(दे–ओब्बालो १·१०२)
उब्भग्गो २०७ मु ण्डि तः
(दे–उब्भग्गो गुण्ठितः १·९५)

उब्भालणं २१० परिपूर्णम्
(दे-१·१०३)
उम्मच्छं २०१ असंबद्धं क्रोधेन भणया च भणितम् (दे-१·१२५)
उम्मण्ठो २०७ उद्धतः (दे-१·१२४)
उम्मरिअं २०८ उन्मूलितम् (१·१००)
उम्मलं २१० घनीभूतम् (दे-१·९१)
उम्मल्ला ३१४ तृष्णा (दे-१·९४)
उम्मल्लो ३३३ भूपतिः, सान्द्रम्
(दे-१·१३१)
उम्मुहो ९६ उन्मुखः (दे-१·९९)
उरओ ६९ ऋजुः
उरणी ३२३ पशुः (दे-उररी १·८८)
उरुसोल्लो २०६ प्रेरितः (दे-उरुसोल्लं १·१०८)
उलुकुसिअं २०९ रोमाञ्चितम्
(दे-उलुकसिअं १·११५)
उलुहंतो ३१३ काकः (दे-१·१०९)
उलुहुण्डियं २१४ हेषितम्
(दे-उलुउण्डिअं १·११९)
उलुहुलिओ २१० अवितृप्तः
(दे-उलुहलिओ १·११७)
उल्लिकं २१२ दुश्चेष्टितम्
उल्लुक्को २०६ त्रुटितः (दे-१·९२)
उल्लुण्डिअं २०७ क्षिप्तम्; २१४ रणलब्धम् (दे-१·१०९)
उल्लुसिअं २०९ रोमाञ्चितम्
(दे-उल्लसिअं १·११५)
उल्लूढो २१० आरूढः (दे-१·१००)
उवउज्झो ११२ उपकारी (दे-१·१०८)
उवलंडंतो ३१५ चूडावल्यम्
(दे-उवलमत्ता १·१२०)
उवसड्डो ३१४ सारथिः
उवसेरो ३१४ रत्यार्हः (दे-उवसेरं रतियोग्यम्! १·१०४)
उव्वत्तालं ३२२ अविच्छिन्नस्वररोदनम्
(दे-उव्वेत्तालं १·१०१)
उव्वसो २१० गलितः, विरक्तः
(दे-१·१२९)
उव्विलं २०७ चकितम्, क्लान्तम्
(दे-उप्पित्थं ? १·१२९)
उव्वेलं ३१४ कौशलम्
उस्सा ३२२ गावः
उंचाडइओ ३३७ हुंकृतम्, गर्जनम्
उंडलं ३३१ मञ्चः (दे-१·१२९)

ऊ

ऊआ ६६ यूका (दे-१·१३९)
ऊढं २०८ त्यक्तम्
ऊणंदिअं ४० आनन्दितम्
(दे-१·१४१)
ऊसअं २०९ उपधानीकृतम्
(दे-१·१४०)
ऊसलिअं २०९ रोमाञ्चितम्
(दे-१·१४१)
ऊसविअं २०७ उद्भ्रान्तम्
(दे-१·१४३)
ऊससिअं २०९ उपधानीकृतम्
ऊसाअंतो ३०८ खेदेन शिथिलः
(दे-ऊसाअंतो १·१४१)
ऊसारो ३१५ गर्तः (दे-१·१४०)
ऊसुंभिअं ११२ रुद्धगलरोदनम्
(दे-१·१४१)

प

पक्कघरिल्लो ३१८ देवरः (दे–१·१४६)

पक्कमुहो ३३२ निर्धनः (?), अघनः (दे–१·१४८)

पक्कलो (पक्कलो ?) ११२ प्रबलः

पक्कसाहिल्लो ३३० यः समसुषितः (दे–१·१४६)

पक्कंगं ३०६ चन्दनम् (दे–१·१४४)

पराणी ३२६ इन्द्राणी (दे–१·१४७)

पलविलो ९७ वृषः, धनवान्

ओ

ओअग्घिअं २०७ आघ्रातम् (दे–ओअग्गिअं १·१७२)

ओअल्लो ९८ अपसारः, कम्पः, २०९ छन्नः (दे–१·१६५)

ओआमिअं २०८ अभिभूतम् (दे–ओहाइओ १·१५९)

ओइल्लयं २१३ विप्रलब्धः (दे–ओइल्लं १·१५८)

ओक्खलिअं २१४ त्रुटितम् (दे–ओक्खंडिअं १·११२)

ओग्गिवो ३१० नीहारः (दे–ओग्गीओ १·१४९)

ओच्छल्लो ३११ चोरः (दे–उच्छट्टो, ओच्छट्टो १·१०१)

ओज्जरो ११३ भीरुः (दे–ओज्जल्लो १·१५४)

ओज्झरिअं २१२ प्रक्षिप्तम्, विक्षिप्तम् (दे–उज्झरिअं १·१३८)

ओट्टुअं २०८ अभिभूतम्

ओत्थअं २११ अवसन्नम् (दे–ओत्थओ १·१५१)

ओत्थरिअं २१४ रणलब्धम् (दे–ओत्थरिओ १·१६९)

ओन्दुरो ४० उन्दुरः; ३३८ मूषिकः

ओप्पं २१० मृष्टम् (दे–ओप्पा १·१४८)

ओमहिअं २१४ पुरस्कृतम्

ओमिसं २०७ अमवृत्तम्

ओरम्पिअं २१४ त्रुटितम् (दे–१·१७१)

ओरल्ली ३१२ गभीरदीर्घरवः (दे–१·१५४)

ओरिल्लं ३३० पश्चात् (दे–ओरिल्लो अचिरकालः १·१५५)

ओलअणं ३३३ दयिता, नववधूः (दे–ओलइणी १·१६०)

ओलुकी ३०९ चक्षुःस्थगनक्रीडा (दे–ओलुंकी छन्नरमणम्, नंष्ट्वा यत्र शिशवः क्रीडन्ति १·१५३)

ओलेहडो २०८ प्रवृद्धः, अन्यासक्तः (दे–१·१७२)

ओवाअओ ९९ अस्तकालः, अपातपः (दे–१·१६२)

ओसक्किओ २१५ मुक्तः (दे–ओसक्की १·१४९)

ओसण्णो २०६ त्रुटितः (दे–१·१५६)

ओसत्तं २१२ अवनतम्

ओसत्थो ३२९ परिरम्भणम्

ओसरिओ २०८ आकीर्णः, अक्षिनिकोचात्संकुचितः (दे–१·१७१)

ओसविअं २११ अवसन्नम् (दे–ओसण्विअं १·१६८)

ओसा ३०९ नीहारः (दे–१·१६४)

ओसाओ ३१५ पीडा (दे–१·१५२)
ओसायणं ६५ आपोशनम् (दे–१·६४)
ओसिक्खओ ३१८ गतिविघातः
(दे–ओसिक्खिअं १·१७३)
ओहट्टं ३२६ नीवी, अवगुण्ठनम्
(दे–ओहट्टो १·१५३)
ओहरणं २०७ आघ्रातम् (दे–१·१७४)
ओहल्ली ११४ अपसृतिः
ओहंसं ३०६ चन्दनम् (दे–ओहरिसं चन्दनघर्षणशिला १·१६९)
ओहिअं ३०७ अधोमुखम्
(दे–ओहुरं ? १·१५७)
ओहित्थं ३३६ रभसम्, विषादः
(दे–१·१६८)

क

कइलवइल्लो ३२२ स्वेच्छोत्थायी बलीवर्दः (दे–२·२५)
कउलं ३३० गोमयखण्डम् (दे–२·७)
कउहं ३१७ नित्यम् (दे–२·५)
ककुडं ६७ ककुदम्
कक्कालं ६९ कङ्कालः, शरीरास्थि
कक्खडो ६७ कर्कशः (दे–२·११)
कज्जं ११० कार्यम् (दे–२·२)
कच्छरं ३०९ कर्दमः (दे–कच्छरो २·२)
कडअल्ली ३३३ कण्ठः, कर्णिका
(दे–२·१५)
कडप्पो ६८ कलापः समूहः (दे–२·१३)
कडसी ३१७ श्मशानम् (दे–२·६)
कडं (पडं ?) ३१५ पश्चिमाङ्गणम्
कडंतरं ३३० शूर्पादिजीर्णभाण्डम्
(दे–२·१९)
कडंतरिअं २०६ छिन्नम्, छिद्रितम्
(दे–२·२०)
कडंतं ३२० मुसलम् (दे–२·५१)
कडिल्लं १०९ गहनम्, दौवारिकः, कटिवस्त्रम्, निर्विवरम्, विपक्षः, आशीः (दे–२·५२)
कडो २०९ उपरतः, क्षीणः (दे–२·५)
कणआ ३१६ नीवी
कणइल्लो १०७ शुकः (दे–२·२१)
कणई १०८ लता (दे– २·५)
कण्णारामं ३२१ अवतंसः
कण्णोविआ ३३८ चञ्चुः, अवतंसः
(दे–कण्णोल्ली २·५७)
कत्तं ६७ कलत्रम्
कत्थइ ६९ क्वचित्
कन्दोट्टं ९७ उत्पलम् (दे–२·९)
कप्परिअं २१४ आरोपितम् (दे–२·२०)
कमडो ३३८ भिक्षापात्रम्
कमढो ३३२ दधिकलशी, पिठरम्
(दे–२·५५)
कमणी ११० निश्रेणिः, सोपानम्
(दे–२·८)
कमलं १०० आस्यम्, कलहः
(दे–२·५४)
कमलो ३११ चोरः (दे–कलमो २·२०)
कमिओ २०६ उपसर्पितः (दे–२·३)
करअडी ३१९ स्थूलवस्त्रम्
(दे–करयरी २·१६)
करइल्लो ३०७ शुष्कमहीजः (दे–२·१७)
करमो २०९ क्षीणः (दे–२·६)
करंडो ३३२ शार्दूलः, वायसः
(दे–करडो २·५५)

करमरी १११ हठहृता स्त्री
(दे-२·१५)
करलं ३१९ अवशुष्कम् (दे-करिल्लं ? २·१०)
कराइणी ३१७ शाल्मलिः (दे-२·१८)
करिल्लं ६६ करीरम्
करोडो ३१२ काकः, नालिकेरः, वृषः
(दे-२·५४)
कलबू ६७ अलाबूः
कलिमं ९७ उत्पलम् (दे-२·९)
कली ३२८ शात्रवः (दे-२·२)
कलेरं ६९ करालम् (दे-२·५३)
कल्लं ३३८ कल्यम्
कल्लो ३२० ह्रीः, लज्जा
कव्वालं ३३२ कर्मस्थानम्, वेश्म
(दे-२·५२)
कहेडो ३३१ तरुणः (दे-२·१३)
कहोडो ३१६ तरुणः (दे-कहेडो२·१३)
कंकअसुकओ ३११ अल्पसुकृतलभ्यः
(दे-जंकअसुकओ ३·४५)
कंठमल्लं ३२९ यानपात्रम् (दे-२·२०)
कंठिओ ३२९ द्वाःस्थः (दे-२·१५)
कंठो ३२९ सूकरः (दे-२·५१)
कंडद्दिणारो ३१२ वृतिविवरम्
(दे-कंठद्दीणारो २·२४)
कंडपडवं ३२९ तिरस्करिणी
(दे-कंडपडवा २·२५)
कंपरं ३३१ विज्ञानम् (दे-कंबरो२·१३)
काअपिउला ११३ कोकिला
(दे-२·३०)
काअरो ९९ कातरः (दे-२·५८)
काअंजी ३१३ परिहासः
(दे-कायंदी २·२८)

काणड्डी ३११ परिहासः
(दे-काणड्डी २·२८)
कामकिसोरो ३२० गर्दभः (दे-२·३०)
कारा ३२८ रेखा (दे-२·२६)
कारिमं ११३ कृत्रिमम् (दे-२·२७)
कालं ९८ तमिस्रम् (दे-२६)
कालणो ३२५ पुमान्
(दे-कालओ धूर्तः २·२८)
कालिआ ३३३ ऋणवृद्धिः, कायः,
अम्बुदः (दे-२·५८)
कालिंबअं ३३२ शरीरम्, अम्बुदः
(दे-कालिंबो २·५९)
काहल्ली ३३२ व्ययकरणम्, भ्राष्ट्रम्
(दे-२·५९)
काहिलो ३२८ वत्सपालकः (दे-२·२८)
किकिडी ३०९ सर्पः
(दे-किंकिंडी २·३२)
किण्हं ३३३ सितांशुकम्, सूक्ष्मम्
(दे-२·५९)
किमिघरवसणं ९४ कौशेयम्
किरिकिरिआ ११० कर्णोपकर्णिका,
कुतूहलम् (दे-किरिइरिआ २·६१)
किरी ३३८ वराहः
किरो ४० किरिः, वराहः (दे-२·३०)
किवडी ३३६ पार्श्वद्वारम्, पश्चिमाङ्गणम्
(दे-किविडी २·६०)
किवाडो ३११ स्खलितः
(दे-किंवोडो २·३१)
किलिणी ३१५ प्रतोली, रथ्या
(दे-किलणी २·३१)
किंजुक्खो ३२९ शिरीषः
(दे-किंजक्खो २·३१)

कीलं ३१६ स्तोकम् (दे–२·२१)
कीला ३१० नववधूः (दे–२·३३)
कुई ३२३ बलाका
कुकुला ३१० नववधूः (दे–२·३३)
कुच्छिणी ३१२ वृतिविवरम्
(दे–कुच्छिलं २·२४)
कुच्छिमई ११२ गर्भवती (दे–२·४१)
कुट्टमिओ ३१६ महिषः
(दे–कट्टमिओ २·१५)
कुट्टारो ३३१ चर्मकारः
(दे–कुट्टाओ २·३७)
कुडओ ११३ लतागृहम् (दे–२·३१)
कुडक्को ११३ लतागृहम् (दे–२·३१)
कुडुको १०९ लतागृहम् (दे–२·३१)
कुडुम्बिअं ११० सुरतम्
(दे–कुडुम्बिअं २·४१)
कुडुंगो १०९ लतागृहम् (दे–२३१)
कुडुं ६८ कुतुकम् (दे–२·३३)
कुणिआ ३१२ वृतिविवरम् (दे–२·२४)
कुद्दो २१३ आक्रान्तम् (दे–कुद्दं २·३४)
कुम्मणो १०८ म्लानः (दे–२·४०)
कुरुडो ३३२ अनघः, निपुणः
(दे–कुरुडो २·६३)
कुरुल्लो ३३२ अनघः, निपुणः
(दे–२·६३)
कुल्लो ३३५ असमर्थः, ग्रीवा, विच्छिन्न-
पुच्छः (दे–२·६१)
कुल्हो ३२५ शृगालः (दे–२·३४)
कुविलो ३११ चोरः
(दे–कुंभिलो २·६९)
कुसुमालो ३११ चोरः (दे–२·१०)
कुहणी ३१५ रथ्या
(दे–कुहिणी २·६२)

कुहिणं ३११ कूर्परम्
(दे–कुहिणी २·६२)
कुंगो १०९ लतागृहम् (दे–२·३१)
कुंडं ३२८ हव्यधमः, अग्निः (दे–२·३३)
कुंडिओ ३२६ ग्रामेशः (दे–२·३७)
कुंतो ३१७ शुकः (दे–२·२१)
कुंभी ३२३ सुवर्णादिकमन्तर्निधाय बहि-
र्बद्धं कर्पटकखण्डम् (दे–कुंटी बन्ध-
निबद्धं द्रव्यम् २·३४)
कूरं ३०८ भक्तम् (दे–२·४३)
केआ ३१६ केली (दे–केआ रज्जुः२·४४)
केड्डो ३३६ व्यापनम्, फेनः, स्यालः,
दुर्बलः
केंजू ३३२ रज्जुः, असती, कन्दः
(दे–केआ ? २·४४)
कोअप्पं ३२२ अलीकहितकरणम्
(दे–२·४८)
कोज्झरिअं २१० पूरितम्
(दे–कोज्झरिअं २·५०)
कोट्टी ३३३ स्खलना, दोहविषमा गौः
(दे–२·६४)
कोडिल्लो ११२ पिशुनः (दे–२·४०)
कोणो ३३५ गर्वितः, निर्दयः
(दे–२·४५)
कोण्णाअं ३०८ म्लानम्
कोत्थरं ३३१ विज्ञानम् (दे–२·१३)
कोत्थुअवत्थं ३१६ नीवी
(दे–कुत्थुहवत्थं २·३८)
कोप्परो ३३६ वर्णसंकरः, जालकम्
कोप्पो ९६ अपराधः (दे–२·४५)
कोलंबं ३१६ पिठरम्
(दे–कोलंबो २·४७)

कोलीरं ६७ कुरुविन्दम् (दे–२·४६)
कोसलो ३१६ नीवी (दे–कोसलं २·३८)
कोसिओ ३२९ कुविन्दः

ख

खट्टंगो ३१६ छाया (दे–खट्टंगं २·६८)
खड्डइअं २१० संकुचितम् (दे–२·७२)
खडरिअं ३०८ कलुषम् (दे–खरडिअं रूक्षम् २·७९)
खड्डं ६७ खेलम्; ३०८ श्मश्रु (दे–२·६६)
खड्डिको ३२६ सौनिकः (दे–खट्टिको २·७०)
खण्डिओ २१५ मद्यासक्तः (दे–२·७८)
खज्जोओ ९९ खद्योतः, तारका (दे–२·६९)
खन्धमसो ९९ भुजः (दे–२·७१)
खन्धलट्ठी ९९ भुजः, स्कन्धस्य यष्टिः (दे–२·७१)
खप्परो ३२३ रूक्षः (दे–२·६९)
खप्पिअं २१० परिपूर्णम् (दे–खरिअं २·६७)
खब्बणो ३०८ दक्षः (दे–खवो, खव्वो वामकरः २·७७)
खरडिओ ३२३ रूक्षः (दे–खरडिअं २·७९)
खरुण्णा ३२३ विषमा भूः
खल्लिरिआ १०८ संकेतः (दे–२·७०)
खल्लिरी ३०८ संकेतः (दे–२·७०)
खवड्डिअं ३३० प्रतिहतगमनम् (दे–२·७१)
खवलिओ २१० कुपितः (दे–२·७२)

खव्वो ३३३ वामहस्तः, गर्दभः (दे–२·७७)
खसिअं २१३ आपूर्णम्
खंजणो ३३४ खञ्जरीटः, कर्दमः (दे–२·६९)
खंडीधारा ३१८ अत्युष्णोदकधारा (दे–खंधीधारो २·७२)
खंदजी ३०८ स्थूलेन्धनवह्निः (दे–खंदग्गी २·७०)
खिक्खिणी ३१७ शृगाली (दे–२·७४)
खुडिआ ३२७ स्वल्परतम् (दे–खुड्डिअं २·७२)
खुड्डओ ६८ क्षुल्लकः (दे–२·७४)
खुड्डं ३२७ स्वल्परतम् (दे–२·७४)
खुरहखुडी १११ प्रणयकोपः (दे–खुरुडुक्खुडी २·७६)
खुलुखी ३३५ मिथ्याघटमानम् (दे–खुंखुणी ? २·७६)
खेआलुअं ३२६ हासः, हासे सति हसितम् (दे–खेआलू निःसहः, असहन इत्यन्ये २·७७)
खेडं ३३८ ग्रामस्थानम्
खोडो ३१३ धार्मिकः (दे–२·८०)
खोड्डी ३०९ दासी (दे–खोट्टी २·७७)
खोहत्तं ३२३ पाणिभ्यामाहतं जलम्

ग

गअणरई ३०८ मेघः (दे–२·८८)
गअसाउल्लो ११० विरक्तः (दे–गयसाउलो २·८८)
गज्जणसद्दो ३२३ मृगनिषेधरवः (दे–२·८८)

गज्जिलिओ १०९ स्पृष्टेऽङ्गे हासः, पुलकः (दे–गंजोल्लिअं २·१००)
गञ्जोलो ११२ पीडितः (दे–गंजिल्लो २·८३)
गणसमो ३१३ गोष्ठ्यां रतः (दे–२·८६)
गत्तडी ११३ गायिका (दे–२·८२)
गद्दहो ३१९ कुमुदम् (दे–गद्दहं २·४३)
गन्धपिसाओ ३०७ गान्धिकः (दे–२·८७)
गन्धुत्तमा ३३८ सुरा
गमरोट्टं ३१९ शेखरकम्
गमिअं २११ अवधृतम्
गलत्थलिओ २०६ प्रेरितः (दे–२·८७)
गल्लं ६८ गण्डम्
गहकल्लोलो ३२२ ग्रहकल्लोलः, राहुः
गहणं ३२८ निर्जलस्थानम् (दे–२·८२)
गहणी ३१४ बन्दी (दे–२·८४)
गहरो ६९ गृध्रः (दे–२·८४)
गहिआ ९४ काम्यमाना (दे–२·८५)
गहिल्लो ६६ ग्रहिलः
गहेरो ३१४ बन्दी (दे–गहरो गृध्नः २·८४)
गंजं ३३० गण्डः (दे–गंजो गल्लः २·८१)
गामरेडो १११ योऽन्तर्भुक्त्वा ग्रामं भुंक्ते (दे–गामरोडो २·९०)
गामहणं ६६ ग्रामस्थानम् (दे–२·९०)
गावी १०९ गौः
गांडी ३०६ मञ्जरी
गिंडिली ३२४ ऐक्षवं दलम्, इक्षुखण्डम् (दे–गंडीरी २·८२)
गुडिओ २१० संनद्धः
गुञ्जणिअं २०६ संघटितम् (दे–गुजेल्लिअं २·९२)
गुत्थिअं २०८ उन्मूलितम्
गुप्पी ३३० इच्छा (दे–गुम्मो २·९०)
गुमिलो ११० मूढः; २१५ मूढः स्खलितः आपूर्णश्च (दे–गुमिलं २·१०२)
गुम्मइओ २१० आपूरितः, स्खलितः, आमूलात्संचलितः, मूढः, विघटितः (दे–२·१०३)
गुम्मिओ २१४ मूलोत्सन्नः
गुलिअं २०८ मथितम्
गेड्डा ३२६ यवः (दे–गेड्डं २·१०४)
गोच्चअं ३२९ प्रतोदः (दे–गोच्चओ २·९७)
गोजा ३०७ कलशी (दे–गोआ २·८९)
गोड्डं ३०७ स्तनयोरुपरि रचितो वासोग्रन्थिः (दे–गेंठुअं २·९३); ३०९ पङ्कः, कर्दमः (दे–गोड्डं २·१०४)
गोणिक्को ६६ गोनीकः, गवामयनम्, गवां समूहः (दे–गोणिक्को २·९७)
गोणो ६५ गौः (दे–२·१०४)
गोत्तण्हाणं ३२६ पित्रो र्जलाञ्जलिः (दे–२·९३)
गोप्पी ३०६ बाला
गोरम्पडिआ ३१९ गोधा (दे–गोरंफिडी २·९८)
गोरिहिअं २०७ त्रस्तः
गोरो ३३७ ग्रीवा, अक्षि, सीता (दे–गोरा २·१०४)
गोला ६५ गोदा; ३३२ गौः, नदी (दे–२·१०४)

गोविओ ३२६ अल्पजल्पनः (दे–२·९७)
गोसण्णो ९८ मूर्खः (दे–२·९७)
गोसो ६६ गोसर्गः, प्रत्यूषः (दे–२·९६)
गोहो ३२७ ग्राम्यजनाग्रणीः (दे–२·८९)
गोंडी ३०६ मञ्जरी (दे–गोंठी २·९५)
गोंजलं १३० ग्रैवेयम्
गोंजी ३०६ मञ्जरी (दे–२·९५)

घ

घग्घत्थणं ३१० खेदः
(दे–घुग्घुच्छणयं २·११०)
घग्घरं ३२५ जघने वस्त्रविशेषः
(दे–२·१०७)
घडिअघडा ११० गोष्ठी (दे–२·१०५)
घडी ११० गोष्ठी (दे–२·१०५)
घणंवाहिओ ३२५ इन्द्रः
(दे–घणवाही २·१०७)
घरअन्दं ९७ दर्पणः, मुकुरम्
(दे–२·१०७)
घायणो ६७ गायनः (दे–२·१०८)
घुग्घुरुडो ३१४ राशिः
(दे–घुंघुरुडो २·१०९)
घुग्घुस्सिअं २०९ अशङ्कं भणितम्
(दे–२·१०९)
घुसिअअं २०९ अन्विष्टम्
(दे–घुसिअं २·१०९)
घुसिणिअं २०९ अन्विष्टम्
(दे–२·१०९)
घुसिमं ६६ घुसृणम्
घोलिअं ३३४ हठात्कृतम्, शिलातलम्
(दे–२·११२)

च

चउक्कं ६९ चतुष्पथ (दे–३·२)
चक्कग्गहो ३२० मकरः
(दे–पक्कग्गहो ६·२३)
चक्कडिअं २१० प्रीणितम्
(दे–चक्खडिअं ३·६)
चक्कलं ११३ परिवर्तुलम् (दे–३·२०)
चक्खिअं २१५ आस्वादितम्
चच्चा ९९ चर्चा, तलाहतिः (दे–३·१९)
चच्चिक्को ९८ स्थासकः, चार्चिकः
(हैव्या २·१७४)
चडआणा ३१३ कुन्तलाः
(दे–चडो ३·१)
चडिआसो ३१४ आटोपः
(दे–चडिआरो ३·५)
चण्टिअं २०९ छन्नम्
चण्डिक्को १०८ कोपः (दे–३·२)
चण्डिज्जो १०८ पिशुनः, कोपः
(दे–३·२०)
चदुरूढो ३०८ शातवाहनः
(दे–चउरचिंधो ३·७)
चन्दोज्जं ९७ कुमुदम् (दे–३·४)
चप्पलओ १०८ मिथ्याबहुभाषी
(दे–३·२०)
चप्फलं ३२५ मिथ्यावचः (दे–३·२०)
चवेडी ९८ करसंपुटाघातः (दे–३·३)
चलणाओहो ४० चरणायुधः, कुक्कुटः
(दे–३·७)
चंचरिओ ४१ चञ्चरीकः, भ्रमरः
(दे–३·६)
चंचुप्परं ११३ मिथ्या
(दे–चंचप्परं ३·४)

चंदवडाआ ३१० अर्धमावृतदेहा (दे-३·७)
चारवाओ ३२४ ग्रीष्मवातः (दे-३·९)
चारो ३३७ इच्छा, बन्धनम् (दे-३·२१)
चिक्कं ४० स्तोकम् (दे-३·२१)
चिक्खअणो १११ असहनः
चिक्खिल्लं १०९ कर्दमः (दे-चिक्खल्लो ३·११)
चित्तओ ३११ व्याघ्रः
चित्तलं १०९ रम्यम् (दे-३·४)
चित्तविओ २०८ परितोषितः
चिप्पंडी ३३७ व्रतम्, उत्सवविशेषः
चिमिणं २०९ रोमाञ्चितम् (दे-चिमिणो ३·११)
चिरओ ३२८ कुल्या, अल्पा कृत्रिमा सरित् (दे-चिरिचिरा-चिरिचिरा ३·१३)
चिरिआ ३२६ कुटी (दे-चिरया ३·११)
चिरिक्का ३२७ चार्मणं वारिभाण्डम् (दे-३·२१)
चिरिचिरिआ ९५ चिरिचिरीति ध्वनिर्यस्याः (दे-३·१३)
चिलिचिडिआ ९५ चिलिचिलीतिध्वनिर्यस्याः (दे-३·१३)
चिल्लो ३११ बालः (दे-३·१०)
चुक्को ३१३ मुष्टिः (दे-३·१४)
चुच्चुलिअं ३१९ चुलकम् (दे-चुंचुलि ३·२३)
चुट्टी ३३१ शिखा (दे-चोट्टी ३·१)
चुडुली ३२३ उल्का (दे-३·१५)
चुप्पो ३२३ मेदुरः (दे-चुप्पो सस्नेहः ३·१५)
चुल्लो ३११ बालः (दे-३·२२)
चुल्लोडओ ३२० ज्येष्ठः (दे-३·१७)
चुंचुणिआ ३३५ मुष्टिद्यूतम्, यूका, समर्थः (दे-३·२३)
चुंचुमालिओ ३१७ अलसः (दे-चुंचुमाली ३·१८)
चुंचुलिआरो ३२० चुलकम् (दे-चुंचुलिपूरो ३·१८)
चुंदिणी ३३१ कुमारी
चेडो ३११ बालः (दे-३·१०)
चेंडा ३३३ शिखा, नवमालिका (दे-३·३९)

छ

छट्टा ६७ छटा
छट्टो ३०७ मर्म (दे-वट्टा ? ७·३१)
छवडी ३१६ चर्म (दे-३·२५)
छाआ ३३७ भ्रमरी (दे-छाया ३·३४)
छाइल्लो १०९ रूपवान्; ३२० वैदग्ध्यवान् (दे-३·३५)
छाहो ३१९ गगनम् (दे-छाही ३·२६)
छिक्कं २११ स्पृष्टम्; २१२ क्षुतम् (दे-३·३६)
छिच्छअणो ३२४ असोढा (दे-छिक्कोअणो ३·२९)
छिच्छई १०८ असती
छिच्छओ ९५ अक्षिक्षतः नयनप्रीत्यनर्हत्वात् (दे-३·१७४)
छिच्छि ६६ धिक् धिक्
छिच्छिणरमणं ३०९ चक्षुःस्थगनक्रीडा (दे-छिंछटरमणं ३·३०)
छिण्णालो ९५ सदाचारच्छिन्ना लात्यादत्त इति

छिण्णो ९५ छिन्नः स्मरशरच्छिन्नत्वात् (दे-३·२७)
छिल्लं ९९ छिद्रम् (दे-३५)
छिविअं ३१८ इक्षुशकलम् (दे-३·२७)
छिविओ ३०९ चयः, समूहः (दे-छिवओ ३·३९)
छिहंडहिल्लो ३१९ दधि (दे-सिहंडहिल्लो बालो, दधिसरः, मयूरः ८·५४)
छिंछोली ३१५ तनुस्रोतः, स्वल्पजलप्रवहणम् (दे-३·२७)
छुप्पलयं ३१९ शेखरकम् (दे-चुप्पलो-चुंभलो शेखरः ३·१६)
छुहइच्छिआ ३३७ द्वेष्या, अस्पृश्या (दे-छोभमाइत्ती ? ३·३९)
छूहिअं २१३ पार्श्वपरावृत्तम् (दे-३.३०)
छेओ ३२० विदग्धः
छेणो ६७ स्तेनः
छेत्तसोवणी ३३१ क्षेत्रजागरः (दे-छेत्तसोवणयं ३·३२)
छेलिआ ३२५ अल्पपुष्पा स्रक् (दे-छेली ३·३१)
छोहो ३०९ समूहः (दे-३·३९)

ज

जअंदणं ३३७ अगुरुः, कुङ्कुमम् (दे-३·५२)
जच्छन्दो ६८ स्वच्छन्दः (दे-३·४३)
जणउत्तो ९६ ग्रामप्रधाननरः (दे-३·५२)
जणणहरो ९६ यज्ञहरः, राक्षसः (दे-३·४३)
जमणं ३१५ बालशिखा (दे-जवणं ३·४१)
जम्बालं ६८ शैवालम् (दे-३·४२)
जयणं ३३८ भयसंहननम्
जरण्डो १०९ वृद्धः (दे-३·४०)
जवणं ३३४ हयः, शशिवदना (दे-जवणं हलशिखा ? ३·४१)
जवो ३२५ पुमान्
जहणारोहो ९७ ऊरुः (दे-३·४४)
जहणूसुअं ९८ जघनांशुकम् (दे-३·४५)
जंघामओ ११३ दूतः (दे-३·४२)
जंघालुओ ११३ दूतः (दे-३·४२)
जंपेक्खिरमग्गिरओ ११० यद् दृष्टं तद्याचते (दे-३·४४)
जंभणंभणो ११३ स्वैरभाषणः (दे-जंभणवो ३·४४)
जंभलो ३२० मूर्खः (दे-३·४१)
जाई ३१७ मदिरा, सुरा (दे-३·४५)
जिग्घिअं २०७ आघ्रातम् (दे-३·४६)
जीविअमई ३२४ कामुकाकर्षिणी मृगी (दे-जीवयमई ३·४६)
जुअणो ११३ युवा
जुण्णो ३२० वैदग्ध्यवान् (दे-३·४७)
जुत्तिअं २०८ क्षिप्तम्
जोअणा ९९ तारका (दे-३·५०)
जोइओ ९९ ज्योतिरिङ्गणः, खद्योतः (दे-३·५०); ३१६ व्याघ्रः (दे-जोडिओ ३·४९)
जोइक्खो ९९ ज्योतिष्कः (दे-३·४९)
जोइसो ९९ तारका (दे-३·५०)
जोई ९८ विद्युत्, ज्योतिः (दे-३·४९)

जोओ ९५ चन्द्रः (दे-३·४०)
जोडो ९९ तारका (दे-३·४९)
जोव्वणजोअं ३१२ जरा
(दे-जोव्वणवेअं ३·५१)
जोव्वणणी ३१२ जरा
(दे-जोव्वणोवयं ? ३·५१)
जोव्वणिरं ३१२ जरा
(दे-जोव्वणणीरं ३·५१)

झ

झडी ३१० गुल्मः (दे-झडी निरन्तरवृष्टिः ३·५३)
झण्टिअं २१० प्रहृतम् (दे-३·५५)
झत्थो २१२ गतः (दे-झत्थं ३·६१)
झसिअं २०८ पर्यस्तम् (दे-३·६२)
झरओ ३३० सुवर्णकारः (दे-३·५४)
झरंको ३२३ तृणमनुष्यः (दे-३·५५)
झलरी ३११ गुल्मः
झसुरं ३३५ ताम्बूलम्, अर्थः
(दे-३·६१)
झसो ३३४ गम्भीरः, तटस्थः, दीर्घः, अवशः (दे-३·६०)
झंटिलिआ ३११ चंक्रमणम्
(दे-झंटलिआ ३·५५)
झंडली ३२३ असती (दे-३·५४)
झंडुली ३२३ असती (दे-३·६१)
झाडं ३०६ लतादिगहनम् (दे-३·५७)
झुत्ति ३१० स्रोतः (दे-३·३८)
झुत्ती ३२८ रजस्वला (दे-३·५८)

ट

टंको ३३५ खड्गः, छिन्नः, जंघापातः, तटम्, खनित्रम् (दे-४·४)
टोंबरो ४० तुम्बुरुः (दे-४·३)

ठ

ठाणिज्जं ११२ गौरवम् (दे-४·५)
ठाणो ३१३ अहंकारः (दे-४·५)
ठेणो ३३५ स्थासकः, चरः, चोरः

ड

डक्खरो ३३१ युवा, तरुणः
(दे-पडिक्खरो क्रूरः ? ६·२५)
डड्ढो २०७ ग्रस्तः
डब्बो ३३० वामकरः (दे-४·६)
डसरी ३३६ उष्णजलम्, स्थाली
(दे-डहरी ? ४·७)
डहरो ३११ बालः (दे-४·८)
डंको ३१३ काकः (दे-ढंको ४·१३)
डंडरं ३२२ ईर्ष्याकलहः
(दे-ढंढरो ४·१६)
डंडरिआ ३०९ कर्दमः
(दे-ढंढरिओ ४·१५)
डंडसिओ ३१९ ग्रामतरुः
(दे-ढंढसिओ ४·१५)
डंडा ३०९ कर्दमः (दे-ढंढो ४·१६)
डंभिओ ६८ दाम्भिकः (दे-४·८)
डाली ३१३ शाखा (दे-४·९)
डिढओ २०८ जलान्तः पतितः
(दे-ढिढयं ४·१५)
डिवओ ३३० वामकरः
डिंसा ३३७ आतङ्कः, त्रासः
डुलरयं ३०७ कपर्दीनां भूषा, कपर्दिकाभिः कृतमाभरणम् (दे-उल्लरयं १·११०)

डेडुरी ३१८ क्रीडा
डेड्डुरो ६९ दर्दुरः (दे-४·९)
डेंडी ३२३ बलाका (दे-ढेंकी ४·१५)
डोअलो ६९ लोचनम् (दे-४·९)
डोअणो ६९ लोचनम् (दे-४·९)
डोक्को ३१३ कूपतुला (दे-डोओ ४·११)
डोबरुओ ३२७ गुरुहारिकः
डोलो ६९ लोचनम् (दे-४·११)
डोंगी ३३३ रथ्या, स्थासकः (दे-४·१३)

ढ

ढेक्कुणो ६७ मत्कुणः
(दे-ढेंकुणो ४·१४)

ण

णज्झरं २१० दलितम्; ३१९ विमलम्
(दे-णज्झरो ४·१९)
णडिओ २१५ वञ्चितः (दे-४·१०)
णडुलं ३३३ विनतः, दुर्दिनम्
(दे-४·४७)
णढरी ३३० क्षुरिका
णन्दिणी ९४ धेनुः (दे-४·१८)
णलुअं ३३७ वृतिविवरम्, कर्दमितम्, निमित्तम्, प्रयोजनम् (दे-णलयं ४·४६)
णंदणो ३२७ कर्मकृत् (४·१९)
णाओ ३२३ गर्वितः (दे-४·२३)
णामुक्कसिअं ३१३ कार्यम् (दे-४·२५)
णालं २०७ त्रस्तः
णिअंधणं ९८ परिधानम् (दे-४·३)
णिअंसणं ३१० परिधानम्
(दे-४·३८)
णिआणिका ३२५ कुतृणलुञ्चनम्
(दे-४·३५)
णिआरं ३३२ ऋजुः, रिपुः, प्रकटः
(दे-णिआरं रिपुगृहम् ४·२९)
णिउक्कणो ३३६ वायसः, मूकः
(दे-४·५१)
णिउक्को ११२ तूष्णीकः, मूकः
(दे-४·५१)
णिउ[प]त्तउ ३१७ शाल्मलिः
णिकज्जो २०६ अनवस्थितः (दे-४·३३)
णिक्कडो ६७ निश्चलः, ६७ निश्चयः
(दे-४·२९)
णिक्कसरिओ ३११ गलितसारः
(दे-णिक्खसरिओ ४·४१)
णिक्खो ३३१ चोरः, सुवर्णम्
(दे-४·४५)
णिग्गिण्णो २११ निर्गतः (दे-४·३६)
णिग्घट्टो ३१० कौशलोपेतः
(दे-णिग्घट्टो ४·३४)
णिग्घोरो ३१५ निर्दयः (दे-४·३७)
णिच्चणिओ २१५ जलधौतः
णिच्छड्डो ३१५ निर्दयः
(दे-णिच्छुंडो ४·३७)
णिज्झरं २१३ जीर्णं खिन्नं च
(दे-णिज्झरं ४·२६)
णिज्झाओ ३३२ पुष्पप्रकरः, उपकारः
(दे-४·३४)
णिज्जो २०८ सुप्तः (दे-४·२५)
णिडो ३१७ पिशाचः (दे-४·२५)
णिप्फंसो ६७ निस्त्रिंशः
णिम्मिओ २१५ स्थापितः
णिम्मीसुओ ९७ युवा, निःश्मश्रुकः
(दे-णिम्मंसू ४·३२)

णिरासो ६७ नृशंसः
(दे–णिराहो ४·३७)
णिरिक्को ३११ चोरः (दे–णिरक्को ४·४९)
णिरिक्को २१४ नतः (दे–णिरिंको ४·३०)
णिरुत्तं २१५ निश्चितम् (दे–४·३०)
णिवच्छणं ३१० अवतारणम्
(दे–४·४०)
णिव्वाओ ३२३ प्रस्वेदः (दे–४·३४)
णिव्वूढो २०७ उद्धतः (दे–४·३३)
णिलापा ३३१ पतद्ग्रहः, पात्रम्
(दे–णिलंको ४·३१)
णिलुंको ३३१ पतद्ग्रहः, पात्रम्
(दे–४·३१)
णिविड्डो २०७ सुप्तोत्थितः
(दे–णिविद्धो ४·४८)
णिव्वहणं ६६ उद्वहनम्, विवाहः
(दे–४·३९)
णिव्विट्टं ३३५ रत्यारभटः, समुचितः
(दे–४·३४)
णिसुड्ढो २०७ निपातितः (दे–४·३६)
णिस्सीमिओ २१४ निर्वासितः
णिहलं ३१८ कूलम्
(दे–णिहणं कुलम् ? ४·२७)
णिहसो ३१८ वल्मीकम् (दे–४·२५)
णिहुअं ९७ निधुवनम्, सुरतम्
(दे–४·५०)
णिहुणं ३२० व्यापारः (दे–४·२६)
णिंदणिआ ३२५ कुतृणलुञ्चनम्
(दे–णिंदिणी ४·३५)
णीसङ्को ९७ वृषः (निःशङ्कः)
णीसारो ३२३ मण्डपः (दे–४·४१)
णेलच्छिआ ३१२ कूपतुला
(दे–णेलिच्छी ४·४४)

णेलच्छो ३३५ षण्ढः, पण्डितः
(दे–४·४४)
णेवच्छणं ३१० अवतारणम्
(दे–४·४०)
णेव्वं ३२९ तीव्रम् (दे–णिव्वं ककुदं व्याजः ४·४८)
णेसरो ३२७ सूर्यः (दे–४·४४)

त

तग्गं ३२८ सूत्रम् (दे–५·१)
तडहडिओ २०६ अनवस्थितः
(दे–तडफडिअं ५·९)
तड्डो ३३६ पिशाचः, शलभः (दे–५·३८)
तणसोल्लं ४० तृणशूकम्, मल्लिका
(दे–५·६)
तणेसी ६९ तृणराशिः (दे–५·३)
तण्णाअं १११ आर्द्रम्
(दे–तण्णायं ५·२)
तत्तिल्लो ११२ तच्छीलः (दे–५·३)
तत्ती १११ तत्परता (दे–५·२०)
तत्तुडिल्लं ३३१ सुरतम् (दे–५·६)
तमणी ३२३ लता, व्यधिकरणम्
(दे–तमणी भुजः ५·२०)
तम्बकिमी ९९ इन्द्रगोपः (दे–५·६)
तम्बकुसुमं ९५ कुरबकं कुरण्टकं च
(दे–५·९)
तरिड्डी ३१० अनुष्णो वायुः
(दे–तिरिड्डी उष्णवातः ५·१२)
तलपत्तं ३२४ योनिः, वराङ्गम्
(दे–तलवत्ती ५·२१)
तलप्फलं ३१० शालिः
(दे–तलप्फलो ५·७)

तलं ६५ तल्पम् (दे–५·१९)
तलारो १८ तलवरः, पुराध्यक्षः
(दे–५·३)
तलिमो ३३४ गृहोर्ध्वभूमिः, वासगृहम्, कुट्टिमम्, भ्राष्ट्रम्, शय्या
(दे–५·२०)
तल्लं ६५ तल्पम्; ३३८ कासारः
(दे–५·१९)
तल्लडं ६५ तल्पम् (दे–तलं-तल्लं ५·१९)
तहल्ली ३३० अपसृतिः
(दे–तहलिआ गोवाटः ५·८)
तंडं ३०८ शिरोहीनम् (दे–५·१९)
तामरो ३२६ सुन्दरः
(दे–तामरं रम्यम् ५·१०)
तारत्तरो ३१८ मुहूर्तः (दे–५·१०)
तालफली ३०९ दासी
(दे–तालप्फली ५·११)
तिक्खालिअं २११ शातम्, तीक्ष्णितम्
(दे–५·१३)
तित्तिरिओ ३३० निरन्तरम्
(दे–तित्तिरिअं स्नानार्द्रम् ५·१२)
तित्ती ३१३ सारः; ३१६ स्तोकम्
(दे–तित्ती सारम् ५·११)
तिमिच्छाहो ३३० पथिकः
(दे–५·१३)
तिविडी ३०८सूची (दे–पुटिका तिविडा सूचीति केचित् ५·१२)
तिंगआ ३०८ पुष्परजः
(दे–तिंगिआ ५·१२)
तिंगिच्छी ३०८ पुष्परजः
(दे–तिगिच्छी ५·१२)
तुच्छअं २१५ रञ्जितम् (दे–५·१५)
तुण्हिक्कं ३३५ मृदु, निश्चलः
(दे–तुण्हिक्को ५·१५)
तुरी ३३६ उपकरणम्, तूलिका, शून्यम्
(दे–५·२२)
तुंगी ३११ रात्रिः (दे–५·१४)
तुंबिल्लि ३३५ मधुपटलम्, उलूखलम्
(दे–५·२३)
तेआलीसा ६७ त्रिचत्वारिंशत्
तेवण्णा ६६ त्रिपञ्चाशत्
तोमरिओ ११४ शस्त्रप्रमार्जकः
(दे–५·१८)
तोमरी ३२५ लता (दे–५·१७)
तोलणो ३२५ पुमान् (दे–५·१८)
तोलो ३३६ पिशाचः, शलभः
(दे–टोलो ४·४)

थ

थक्को ३२६ प्रसञ्जनम्
(दे–थक्को अवसरः ५·२४)
थमिअं २१२ विस्मृतम् (दे–५·२५)
थलओ ३२३ मण्डपः (दे–५·२५)
थसलो ३२६ पृथुः (दे–थसलो ५·५८)
थासो ३२७ पृथुः (दे–थसो ५·२५)
थिरण्णेसो ९६ चपलहृदयः
(दे–५·२७)
थेट्टो ३१३ गृहम्
थेणिल्लअं २११ हृतम्
(दे–थेणिल्लिअं ५·३२)
थेरोसणं १७ अम्बुजम् (दे–५·२९)
थेवो ६५ स्तोकः, ९५ बिन्दुः
(दे–५·२९)
थोओ ३२० रजकः (दे–५·३२)

थोक्को १५ स्तोकः (दे–५·२९)
थोवो १५ स्तोकः (दे–५·२९)
थोहं ३३० बलम् (दे–५·३०)

द

दअरो ३३५ पिशाचः, ईर्ष्या
दअं ३३४ उदकम्, शोकः
(दे–दयं ५·३३)
दड्ढाली ११३ दववर्त्म, दवाग्निमार्गः
दमदंडो ३२२ भ्रमरः
दरमत्ता ३२७ बलात्कारः (दे–५·३७)
दरवल्लहो ९९ कान्तः (दे–५·३७)
दरंदरो ३१४ उल्लासः (दे–५·३७)
दलिअं ३३७ दारु, अङ्गुलिः,
कूणिताक्षः (दे–५·५२)
दंडवर्ण ३२१ आज्यम्
दावो ३३३ दासः, गर्दभः
(दे–दाओ प्रतिभूः ? ५·३८)
दिरिआ ३२४ कामुकाकर्षिणी मृगी
दुक्खित्तो ३०७ कम्पः
दुग्गं ६९ दुःखम् (दे–५·५३)
दुग्गुच्छं २११ भ्रमितम्
दुग्घोट्टो १०७ द्विपः (दे–५·४४)
दुद्दहणो ३११ चोरः
दुद्दोलणा ११४ दुग्धापि या दुह्यते गौः
(दे–दुद्दोलणी ५·४६)
दुप्परिअल्लं ३०७ अशक्यम्
(दे–५·५५)
दुब्भो ३२२ भ्रमरः (दे–धंगो ? ५·५७)
दुम्मइणी १११ कलहपरा (दे–५·४७)
दुहअं २१४ रणलब्धम्
(दे–दुहओ ५·४५)
दुदुमिअं २०८ रसितम् (दे–५·४५)
दूणावेढं ३३६ अशक्यम्, तडागः
(दे–५·५६)
दूणो १०७ द्विपः (दे–५·४४)
दूसलं ३२५ उद्वेगः (दे–५४३)
दूसलो ६८ दुर्भगः (दे–५·४३)
देवरिअं ३१२ सुतजन्मनि तूर्यम्
(दे–थेवरिअं ५·२९)
दोग्गं ६६ युग्मम् (दे–५·४९)
दोग्घोट्टो १०७ द्विपः (दे–५·४४)
दोडि ३१४ सायंभोजनम्
दोवेलि ३१४ सायंभोजनम् (दे–५·५०)
दोणणिजन्तो ९५ चन्द्रः (दे–५·५१)
दोसारअणो ९५ चन्द्रः
दोसिणी ६७ ज्योत्स्ना (दे–५·५०)
दोसो ९९ कोपः (दे–५·५६)
दोहणी ३०९ कर्दमः (दे–५·४८)
दोहासलं ३२७ कटिः (दे–५·५०)

ध

धणिआ ६६ धन्या, प्रियतमा
(दे–५·५८)
धणी ३११ पर्याप्तिः, गुप्तिः (दे–५·६२)
धमो ३२५ विलासः
धम्मअं ३२४ रक्तबलिः, पुरुषोपहारः
(दे–५·६३)
धसलं ३२७ पृथु (दे–५·२५)
धारा ३२६ रणमुखम् (दे–५·५९)
धारावासो १०० दर्दुरः (दे–५·६३)
धिरत्थु ६६ धिगस्तु
धुअराओ १०० भ्रमरः
(दे–धुअगाओ ५·५७)

घुङ्की ३३७ मौनम्, मुखसंभेदः
घुत्तो २१३ आक्रान्तम् (दे–५·५८)
घुरिअं ३२७ पृथु (दे–५·६२)
घुंघुमारा ३२६ इन्द्राणी (दे–५·६०)
धूमद्धमअहिसीओ ९६ कृत्तिकाः (५·६२)
धूमरी १०९ तुहिनम् (दे–५·६१)
धोरणी ११३ पंक्तिः

न

नलिअं ६७ निलयः (दे–णलिअं ४·२०)
निअत्थं ३०९ परिहितम्, वस्त्रम् (दे–णिअत्थं ४·३३)
निङ्गुरिआ ३०९ भाद्रपदसितदशम्या-मुत्सवविशेषः (दे–णिङ्गुरिआ ४·४५)
निहेलणं ६७ निलयः (दे–णिहेलणं ४·५१)

प

पअरो १०० प्रवरः, अर्थपरः
पअलाओ ९६ फणी, सर्पः (दे–६·७२)
पइओ २१३ विस्तीर्णः (दे–पइअं भर्त्सितम् ६·६४)
पइण्णो २१३ आक्रान्तम् (दे–६·७)
पइरेकं ३३६ एकान्तः, शून्यम् (दे–६·७१)
पउडं ३१३ गृहम् (दे–६·४)
पउलिअं ३०८ शूलप्रोतं मांसम् (दे–६·२९)
पऊढं ३२६ दीर्घमन्दिरम् (दे–६·४)
पक्खुडिअं २१५ प्रस्फुरितम् (दे–पक्खडिअं ६·२०)
पक्कणं ३३६ अतिशोभावत्, भग्नम्, श्लक्ष्णम् (दे–पक्कणी ६·६५)
पक्कं २११ पिष्टम् (दे–पक्को ६·६४)
पग्गोज्झो ३०९ समूहः (दे–पग्गोज्जो ६·१५)
पच्चलं ३३७ असहनः, समर्थः (दे–पच्चलो ६·६९)
पच्चावेणिओ २११ संमुखागतः (दे–पच्चोवणी ६·२४)
पच्चुअं ३२७ दीर्घम् (दे–पच्चुहिअं ? ६·२५)
पच्चुच्छाहणं ३१७ सुरा (दे–पच्चुच्छुहणी ६·३५)
पच्चुडरिअं २०९ प्रत्युद्गतम् (दे–उच्चुलउलिअं ? १·१२१)
पच्चूहो ३२७ सूर्यः (दे–६·५)
पज्जा ३१० अधिकारः (दे–६·१)
पज्जामुरो ३११ प्रवयाः वृद्धः
पञ्चावण्णा ६६ पञ्चपञ्चाशत्
पट्टं ३२८ अंशुकम्
पडअसाइमा ३२५ शबरमूर्धनि पत्रपुटी
पडड्डाली ३१८ क्रीडा
पडमा ११३ दूष्यपटगृहम् (दे–पडवा ६·६)
पडं ३०७ ग्रामसीमास्थानम्
पडंसुगा ३१८ ज्या, मौर्वी (दे–पडंसुआ ६·१४)
पडिअग्गिअं २१५ वर्धापितम्, परि-भुक्तम् (दे–६·७४)
पडिओ ३३२ बन्दी, आचार्यः (दे–पडिअज्झओ ? ६·३१)
पडिकिआ ३१२ प्रतिकृतिः (दे–पडिक्कओ प्रतिक्रिया ६·१९)

पडिक्खरो ९५ प्रतिकूलः (दे–६·१८)
पडिच्छिरो ३१७ सदृशः (दे–पडिच्छिरो ६·२०)
पडिणिअंसणं ३१२ निशि प्रावरणम् (दे–६·३६)
पडिपल्लिलो ३०७ विहितपूजः (दे–पडिएल्लिओ ? ६·३२)
पडिरिग्गअं २१० भग्नम् (दे–पडिरंजिअं ६·८२)
पडिवेसो ३१२ विक्षेपः (दे–६·२१)
पडिसाओ ९४ घर्घरकण्ठः (दे–६·१७)
पडिसारिअं २११ स्मृतम् (दे–६·३३)
पडिसिद्धी ६८ प्रतिस्पर्धा (दे–६·७७)
पडिसोत्तो ९५ प्रतिकूलः (दे–६·१८)
पडिहत्थो २१३ आपूर्णम् (दे–६·१९); ३२८ प्रतिक्रिया (दे–६·१९; ६·२८ वचनमिति सातवाहनः)
पडीरो ३२९ चोरसंहतिः (दे–६·८)
पडुज्जुवई ३१२ तरुणी (दे–पडुजुवई ६·३१)
पडोहरं ३१६ पश्चिमाङ्गणम् (दे–६·२२)
पड्डुल्लो ३१८ अधनः (दे–पच्चलो असहनः ? ६·६९)
पड्डो ३३० वामकरः
पणओ ३०९ कर्दमः (दे–६·७)
पण्डरङ्गो ९९ महेश्वरः (दे–६·२३)
पण्णवण्णा ६६ पञ्चपञ्चाशत् (दे–६·२७)
पत्तणं ३३४ बाणफलम्, शरपुंखम् (दे–६·६४)
पत्तण्णी ३१५ रथ्या

पत्तलं ३०८ तीक्ष्णम् (दे–६·१४)
पत्थणं ३१९ स्थूलवस्त्रम्
पत्थरं ९८ पादताडनम् (दे–पत्थरा ६·८); ३१८ ज्या, मौर्वी (दे–पत्थरं ऋजु ६·१०)
पत्थरी ३३५ शयनम्, संहतिः (दे–पत्थारी ६·६९)
पत्थेवाअं ६६ पाथेयम्
पप्फाडो ३३० अग्निविशेषः (दे–६·९)
पब्भारो ३३६ संघातः, गिरिगुहा (दे–६·६६)
पम्हलो ९९ केसरः (दे–६·१३)
पम्हुट्ठो ३०८ प्रमुषितः, प्रमृष्टः
पम्हुरं ३२० अपमृत्युः (दे–६·३)
परट्ठो २१५ भीतः, पतितः, पीडितः
परभत्तो ९८ भीरुः, निष्पीडः (दे–परिब्भंतो ६·७१)
परिअट्टलिअं २१० परिच्छिन्नम् (दे–६·३६)
परिअडी ३१० मूर्खः (दे–६·७३)
परिअड्डिअं २१० प्रकटितम्
परिअम्मिअं २१२ अलंकृतम्
परिअंभओ ३२७ कर्मकृत्
परिआली ३२९ भोजनभाण्डम् (दे–परिअली ६·१२)
परिक्खाइअअं २१२ परिक्षीणम्
परिच्चूडं २०८ उत्क्षिप्तम्
परिहाइअं २०६ परिक्षीणम् (दे–परिहाओ ६·२५)
परिहालो ३०७ जलनिर्गमः (दे–६·२९)
परेओ ९८ परेतः, पिशाचः (दे–६·१२)
पलं ३२३ प्रस्वेदः (दे–६·१)

पलसू ३२६ सेवा (दे–६·३)
पलहिअओ १०८ मूर्खः
पलट्टजीहो ९७ पर्यस्तजिह्वो गुह्यहरः (दे–६·३५)
पलुवाअं ३२७ क्षेत्रम् (दे–६·२६)
पलुविअं ९० लाक्षारक्तम् (दे–६·१९)
पल्लोट्टं २०८ पर्यस्तम् (दे–६·३५)
पल्हत्थं २०८ पर्यस्तम्
पविरंजिओ २१२ स्निग्धः (दे–६·७४)
पव्वक्को ३३६ काण्डम् , नखम् , शिशुमृगः (दे–६·६९)
पव्वंचलक्को ३१९ अशक्तः (दे–पच्चबलोको आसक्तः ६·३४)
पसवडक्कं ३१८ अवलोकः (दे–६·३०)
पसंडी ३१७ कनकम् (दे–६·१०)
पसाइमा ३२५ शबरमूर्धनि पत्रपुटी (दे–पसाइआ ६·२)
पसुल्लो ३३६ काकोलः, जारः
पहट्टं २०६ अविरतदृष्टम् (दे–पहट्टो दृप्तः ६·९)
पहट्टो ९६ प्रधृष्टः, गर्वी (दे–६·९)
पहणी ३१६ संमुखागतिनिरोधः (दे–६·५)
पहम्मो ३२९ देवखातम् (दे–पहम्मं ६·११)
पहेणयं ३३७ उत्सवः, भोज्यम् (दे–६·७३)
पहोइअं २०७ पर्याप्तम्–(दे–६·२६)
पंगुरणं ६७ प्रावरणम् (दे–६·४३)
पंडारो ३१८ गोपः (दे–पेंडारो ६·५८)
पाउरणं ६७ प्रावरणम्; ९८ कवचः (दे–पाउरणी ६·४३)
पाओ ९६ फणी, सर्पः (दे–६·३८)
पाडलं ३२९ अब्जम् ३३८ कमलम् ; (दे–पाडलो ६·७६)
पाडलो ३३५ हंसः, वृषः (दे–६·८६)
पाडहुओ १०९ प्रतिभूः (दे–पाड्डहुओ ६·४२)
पाडिअज्झो ३२७ वधूं पतिगृहात्पितृगृहं नेता (दे–६·४३)
पाडिग्गहो ३२७ विश्रामः (दे–पाडिअग्गो ६·४४)
पाडुंकी ३२४ मणिशिबिका (दे–६·३९)
पाढा ३३८ शोभा
पाणट्ठी ३१५ रथ्या (दे–पाणद्धी ६·३९)
पाणाअओ ३०७ श्वपचः (दे–६·३८)
पाणाओ ३१८ पाणिहृया घातः (दे–पाणाली ६·४०)
पाणो ३२६ चाण्डालः (दे–६·३८)
पादुग्गो ३०८ सभ्यः (दे–पाउग्गिओ ६·४२)
पारक्कं २११ अभिपीडितम् (दे–६·७७)
पारमरो ३२३ रक्षः (दे–पारंपरो६·४४)
पारावरो ३२४ वातायनम् (दे–६·४३)
पासणिओ १०९ साक्षी (दे–६·४१)
पासण्णो ३३६ वेश्मद्वारम् , तिरश्चीनम् (दे–पासल्लं ६·७६)
पासाणिओ १०९ साक्षी (दे–६·४१)
पासावओ ९६ गवाक्षः (दे–६·४३)
पासो ९६ अक्षि (दे–६·७५)
पाहिआवडा ३१२ ललना
पिउच्छा ९९ सखी; ११४ पितृष्वसा (दे–६·४९)
पिउसिआ ११४ पितृष्वसा

पिच्छल्लं ३०७ लज्जा
(दे–पिच्छिली ६·७४)
पिडिल्लिको ३१२ क्रूरः
पिणाओ ३२७ बलात्कारः (दे–६·४९)
पिण्डइअं २१४ प्रशान्तम् (दे–६·५४)
पिप्पिडिअं ११० यत्किंचित्पठितम्
(दे–६·५०)
पिव्वं १०८ जलम् (दे–६·४६)
पिल्लरी ३३१ घर्मः (दे–६·७९)
पिहुणं ३१९ पुच्छम् (दे–पेहुणं ६·५६)
पिंजरो ३३५ हंसः, वृषः
पिंजलं ३१४ प्रमाणम्
पिंजुरुओ ३१८ भेरुण्डः (पक्षी)
(दे–पिंजरुडो ६·५०)
पिंडरवो ३१४ तैलादीनां विक्रेता वणिक्
(दे–पेडइओ कणादिविक्रेता
६·५९)
पीडरई ३१२ चौर्येण वधूः (दे–६·५१)
पुअई ३२६ चाण्डालः
पुअंडो ३३१ तरुणः (दे–६·५३)
पुआई ४० पिशाचः उन्मत्तश्च
(दे–६·४०); ३३१ तरुणः
(दे–६·८०)
पुआइणिआ ४१ पिशाचिनी, उन्मत्ता,
दुःशीला (दे–६·५४)
पुइओ ३२६ चाण्डालः
पुडइणी ३३८ नलिनी
पुण्णाली १०८ असती (दे–६·५३)
पुरिल्लदेवा ९८ दैत्याः (दे–६·५५)
पुप्फी ११४ पितृष्वसा (दे–पुप्फा ६·५२)
पुल्ली ३१३ व्याघ्रः (दे–६·७९)
पुंडरिआ ३१२ उत्कलिका
(दे–पुरुपुरिआ ६·५५)

पुंसुलं ३०९ विसंवादः
पूणो ३२३ गर्वितः
पेआलं ३१३ प्रमाणम् (दे–६·५७)
पेक्किअं २०९ वृषरटितम्
पेज्जलिअं २०३ संघटितम्
(दे–पेज्जलं प्रमाणम् ६·५७)
पेट्टं ३२२ उदरम् (दे–६·६०)
पेण्डइअं २११ पिण्डितम्
(दे–पेंडं ६·८१)
पेलवं ३२९ मार्दवम्
पेसणआरी ९५ दूती (दे–६·५९)
पेंडओ ३३१ तरुणः (दे–६·५३)
पेंडलो ३१८ रसः (दे–६·५८)
पोअग्गो ३१२ निर्भयः (दे–पोअंडो
६·३१)
पोइओ ३२७ ज्योतिरिङ्गणः, खद्योतः
(दे–पोइओ कान्दविकः, खद्योत
इत्यन्ये ६·६३)
पोट्टलिकं ३२३ सुवर्णादिकमन्तर्निधाय
बहिर्बद्धं कर्पटकखण्डम्
पोरत्थो ९९ मत्सरी (दे–६·६२)
पोरवग्गो ३२७ विश्रामः
(दे–पाइअग्गो ६·४४)
पोलिओ ३२६ सौनिकः (दे–६·६२)

फ

फलसं ३२० कार्पासः (दे–फलही ६·८२)
फंसुलो २१५ मुक्तः (दे–फसुलो ६·८२)
फुड्डं २०८ स्पृष्टम्
फुलंधओ १०७ भ्रमरः (दे–फुल्लंधुओ
६·८५)
फेणवडो ३१६ वरुणः (दे–फेणबंधो
६·८५)

ब

बइल्लो ६७ बलीवर्दः (दे-६·९१)
बक्करो ३१३ परिहासः (दे-बक्करं ६·८९)
बन्दिणो ११२ बन्दी
बन्धोल्लो ११२ मेलकः (दे-६·८९)
बब्बरी ३३१ धम्मिल्लरचना (दे-६·९०)
बम्हहरं ९६ कमलम् (दे-६·९१)
बम्हाणी ३१९ गोधा (दे-बम्हणी ६·९०)
बम्ही ६८ वाणी
बलवट्टी ३३४ व्यायामसहा, सखी (दे-६·९१)
बलामोडी ११३ बलात्कारः (दे-६·९२)
बव्वाडो ३०८ दक्षिणो हस्तः (दे-६·८९)
बहलं ३०९ कर्दमः (दे-६·८९)
बहुजाणो ९८ चोरो धूर्तश्च (दे-बहुणो ६·९७)
बहुधारिणी ३१० नववधूः (दे-वहुधारिणी ७·५०)
बहुरा ३१७ शृगाली (दे-बहुरावा ६·९१)
बहुराणो ३०८ असिधारा (दे-बहुराणा ६·९१)
बंकडो ३२५ अजः, छागः
बंहलो ११२ अपस्मारः
बाउल्ली ११३ पुत्रिका, कुमारीक्रीडोचिता सालभञ्जिका (दे-६·९२)
बिम्बोवणअं ३३५ क्षोभः, उपधानम्, विकारः (दे-६·९८)
बुकणो ३१३ काकः (दे-६·९४)
बुड्डिरो ११० महिषः
बुलुबुलो ६६ बुद्बुदः (दे-बुलंबुला ६·९५)
बोडो ३३३ धार्मिकः, यती (दे-६·९६)
बोब्बुरं ३०८ श्मश्रु (दे-६·९५)
बोल्लो ३१८ कलकलः (दे-बोलो ६·९०)
बोंदी ३३३ रूपम्, शरीरम्, वचनम् (दे-६·९९)

भ

भग्गलअं ३१९ अप्रियम् (दे-भंभलं ६·११०)
भच्चो ११४ भगिनीसुतः
भट्टिओ ९८ विष्णुः (दे-६·१०)
भद्दसिरी ३०६ चन्दनम् (दे-६·१०२)
भल्लुंकी ३१७ क्रोष्ट्री, शृगाली (दे-६·१०१)
भसआ ३१७ शृगाली (दे-भसुआ ६·१०१)
भसत्तो ३३७ वह्निः, दीप्तः
भंगोठणं ३२१ भणितम्
भंडो ३२५ सुतासुतो दौहित्रः (दे-६·१०९)
भंहलओ ३२० मूर्खः (दे-भंभलो (६·११०)
भाअलो ३२४ जात्यतुरगः (दे-६·१०४)
भाइरो ११३ भीरुः (दे-६·१०७)
भाउज्जा १०८ भातृवधूः (दे-६·१०३)
भाउलं ३१६ आषाढे कात्यायन्या उत्सवविशेषः (दे-भाउअं ६·१०३)

भावई ३०७ गृहिणी (दे–भावइआ धार्मिकगृहिणी ६·१०४)
भिङ्गं ९८ कृष्णम् (दे–४·१०४)
भित्तरं ३२० गृहद्वारम् (दे–६·१०५)
भित्तं ३२० गृहद्वारम् (दे–६·११०)
भूयो ३३० यन्त्रवाहकः (दे–६·१०७)
भेज्जलो ११३ भीरुः (दे–६·१०७)
भेज्जो ११३ भीरुः (दे–६·१०७)
भेली ३३७ चेटी, आज्ञा (दे–६·११०)
भोइओ ९९ ग्रामेशः (दे–६·१०८)
भोट्टणो ३०७ भृतकः (दे–भुत्तूणो, भोत्तूणो ६·१०६)

म

मइओ २१३ विस्तीर्णः (दे–मइअं भर्त्सितम् ६·११४)
मइमोहिणी १०० सुरा (दे–६·११३)
मइलपुत्ती १०७ पुष्पवती
मई ३१७ मदिरा, सुरा (दे–६·११३)
मग्गो ३३० पश्चात् (दे–६·१११)
मघोणो १०८ मघवा
मडप्फरो ११४ मधुपरः (दे–मडप्फरो ६·१२०)
मड्डुलो ३२३ गर्वितः
मड्डा ३२७ बलात्कारः (दे–६·१४०)
मड्डो ३१७ अलसः (दे–मट्टो ६·११२)
मणिणाअहरो ३२९ वार्धिः, समुद्रः (दे–मणिणायहरं ६·१२८)
मज्झिमगंडं ३२३ उदरम् (दे–६·१२५)
मत्तली ३२७ बलात्कारः (दे–६·११३)
मत्तवालो ११३ मत्तः (दे–६·१२२)
मद्दोली ९५ मदः, कामपरंपराकारणत्वात् (दे–६·१४२)
मप्पा ३३० आज्ञा
मब्भक्खरं ३१७ सुरा
मम्मक्को ११४ गर्वः; ३३४ गर्वः, उत्कण्ठा (दे–मम्मक्का ६·१४३)
मम्मणं ३३५ अव्यक्तं वचः, रोषः (दे–मम्मणो ६·१४१)
मरट्टो ३१५ गर्वः (दे–६·१२०)
मराली ९५ दूती (दे–६·१४२)
मरालो ३३४ सुन्दरः, अलसः, मसृणः (दे–६·११२)
मरुल्लो ३२९ भूतः (दे–६·११४)
मरो ३४४ केशसंचयः (दे–६·१४०)
मलइओ ३३४ हतः, तीक्ष्णः
मलओ ३१५ गिर्येकदेशः (दे–६·१४४)
मलहलो ३१८ कलकलः (दे–मलहरो ६·१२०)
मलो ३२३ प्रस्वेदः (दे–६·१११)
महई ३२३ पितृमन्दिरम् (दे–महणं ? ६·११४)
महल्लो ११२ मुखरः; ३३२ मुखरः, राशिः, विस्तीर्णः, (दे–६·१४३)
महानडो ३३८ रुद्रः
महाबिलं ३३८ गगनम्
महारअणं ३२५ वस्त्रम्
महालक्खो ३३१ तरुणः (दे–६·१२१)
महालवक्खो ४१ महालयपक्षः (दे–६·१२७)
महिंडं ३०९ कर्दमः (दे–महेड्डो ६·११९)

मडुयालिअं २१४ निर्वासितः (दे–६·१२५)
मंजरो ६९ मार्जारः
मंतक्खरं ३०८ लज्जा (दे–मंतक्खं ६·१४१)
मंथरं ३३५ कुटिलं, बहु, कुसुम्भम् (दे–६·१४५)
माअली ३२९ मृदुः (दे–माइली ६·१२९)
माइन्दो ४० माकन्दः (दे–१२८)
माउआ ९९ सखी (दे–६·१४८)
माउच्छा ११२ मातृष्वसा (दे–६·१३१)
माउसिआ ११२ मातृष्वसा (दे–माअलिआ ६·१३१)
माडा ३०८ समकालम्
माणंसी ११२ मायावी, मनस्वी (दे–६·१४७)
मादलिआ ३२० माता (दे–६·१३१)
माभाइ ११४ अभयम् (दे–६·१२९)
मामा ३१३ मातुलभार्या (दे– ६·११२)
मामी ३१३ मातुलभार्या (दे–६·११२)
माला ३१४ ज्योत्स्ना (दे–६·१२८)
माला ३२२ डाकिनी (दे–माला ज्योत्स्ना ६·१२८)
माहिवाओ ४० माघवातः (दे–६·१३१)
मिओ २१५ विघटितः
मिलाओ ३२७ बलात्कारः (दे–मिणायं ६·११३)
मुकुंडी ३११ जूटः (दे–मुक्कुंडी ६·११७)
मुग्गुओ ३२४ नकुलः (दे–मुंगुसो, मुग्गसो ६·११८)
मुचमुंडो ३११ जूटः (दे–मुक्कुरुडो राशिः ! ६·१३६)
मुम्मिअं २१४ शीलितम्
मुरई ३२३ असती (दे–६·१३५)
मुरुओ २०६ त्रुटितः (दे–मुरिअं ६·११५)
मुरुंडी ३१७ शृगाली (दे–मुरुंडिआ ६·१०१)
मुल्लिअं २१४ शीलितम्
मुव्वहइ ६६ उद्वहति
मुहत्थडी ३२९ मुखेन पतनम् (दे–६·१३६)
मुहरोमराई ९५ भ्रूः श्मश्रूर्वा (दे–६·१३६)
मुहलं ११३ मुखम् (दे–६·१३४)
मुहिअं ३२२ मृषाकरणम् (दे–६·१३४)
मुहुलो ३१४ बन्दी
मुंकुरुडो ३१४ राशिः (दे–मुक्कुरुडो ६·१३६)
मुंगुरुडो ३१४ राशिः
मुंडी ३२५ नीरङ्गी, अवगुण्ठनशीलः (दे–६·१३३)
मूसलं ४१ मांसलम् (दे–६·१३७)
मेक्खं ३१२ पार्श्वक्षिप्तावम्
मेठिअं ३१३ गृहम्
मेहुणिआ १०८ मातुलात्मजा, स्याली (दे–६·१४८)
मोओ २१२ गतः (दे–६·१४८)
मोडी ३१७ भगिनी
मोरअं ३२० अपामार्गः

मोरत्तओ ३०७ श्वपचः (दे-६·१४०)
मोरद्दं ३२० अपामार्गः (दे-मउरंदो ६·११८)
मोरो ३०७ श्वपचः (दे-६·१४०)

र

रअणिअं ९७ कुमुदम् (दे-७·४)
रइलक्खं ९८ रतिलक्ष्यम्, जघनम् (दे-७·१३)
रड्ढी ३०८ प्रधानम् (दे-७·२)
रल्ला ३२६ प्रियंगवः (तृणधान्यम्) (दे-७·१)
रसाओ १०८ भ्रमरः (दे-रसाऊ ७·२)
रंजणं ३३७ कुण्डम्, घटः
रंभडिआ ३१९ गोधा (दे-रप्फडिआ ७·४)
राअल्लो ३२६ प्रियंगवः (दे-राअला ७·१)
राडी ३२५ रणम् (दे-७·४)
राला ३२६ प्रियंगवः (दे-७·१)
राहो ३२५ प्रियः, शोभितः, मलिनः, सनाथः, विसंस्थुलः (दे-७·१३)
रिग्गो ३२८ प्रवेशः (दे-७·५)
रिञ्छोली ११२ ऋक्षालिः, नक्षत्रमाला (दे-७·७)
रिट्ठो ४० अरिष्टो दैत्यः काको वा (दे-७·६)
रिमिणो १०८ रोदनशीलः (दे-७·७)
रुअरुइआ ११४ उत्कलिका (दे-७·८)
रुमिल्लं २०८ अभिलषितम्
रूवसिणी ११० रूपवती (दे-७·९)
रेक्किअं ११५ आक्षिप्तम् (दे-रेंकिअं ७·१४)
रेणं ३०९ कर्दमः (दे-रेणी ७·९)
रोडी ३३१ इच्छा, मतिः (दे-७·१५)
रोप्पलो ३२४ वातायनम्
रोरली ३२४ कृष्णश्रावणचतुर्दशी; ३१८ कलकलः (दे-७·१५)
रोलो ३२८ दरिद्रः (दे-रोरो रङ्कः ७·११)
रोहं ३३२ इच्छा, मतिः (दे-रोहं प्रमाणम् ७·१६)
रोहिआ ३२४ मणिशिंबिका (दे-रोडी ७·१५)

ल

लअणं ३३५ तनुः, कोमलः (दे-लयणं ७·२७)
लअणा १०८ लता (दे-७·२७)
लअणी १०८ लता (दे-७·२७)
लक्कुडो ६७ लगुडः (दे-७·१९)
लक्खिओ २१५ विघटितः
लडहा १११ विलासवती (दे-७·१७)
लज्जालुइणी १११ लज्जावती
लम्बा ९६ केशाः (दे-७·२६)
लम्मिक्को १११ चोरः (दे-लंपिक्खो ७·१९)
ललं ३२८ स्पृहान्वितम् (दे-७·२६)
लवओ २०८ सुप्तः
लसअं ३२८ विटपिक्षीरम् (दे-लसकं तरुक्षीरम् ७·१८)
लसुअं ३२२ तैलम् (दे-७·१८)
लहरी ३३८ तरङ्गः, प्रवाहः

लाइअं ३१३ अजिरार्धम्, भूषणम्, गृहीतम् (दे-७·२७)
लाइल्लो ३१४ बलीवर्दः (दे-७·११)
लासअविम्हओ ३१५ केकी, मयूरः (दे-लासयविहओ ७·२१)
लाहिल्लो १०९ लम्पटः
लिलो ३२९ यज्ञः (दे-लीलो ७·२३)
लिहओ २०८ सुप्तः (दे-लिहिओ ७·२८)
लिंको ३११ बालः (दे-७·२२)
लुक्को २०८ सुप्तः (दे-लुंको ७·२८)
लुच्छी ३१३ कुन्तलाः
लुंबी ३३७ लता, स्तबकः (दे-७·१८)
लोट्टो २११ अत्यासक्तः स्मृतश्च (दे-लोढो ७·२९)
ल्हिक्को २१२ गतः

व

वअलो ३१८ कलकलः (दे-वयलो ७·८४)
वअलो ३२८ वटः (दे-वयडो ७·३५)
वइरोडो ९४ जारः (दे-७·४१)
वई ३१० मर्यादा
वउवलओ ३२१ विषरहितो भुजगः (दे-वइवलओ ७·५१)
वककडं ३२५ मेघतिमिरम् (दे-७·३५)
वक्कलिअं २१४ उत्सङ्गितम् (दे-वक्कलयं ७·४६)
वग्गोवओ ३२४ नकुलः (दे-वग्गोओ ७·४०)
वग्घसिअं ३२५ रणम्
वज्जा ३१० अधिकारः (दे-७·३१)
वट्टाविअं २११ समापितम्
वड्डप्पं ३३५ लतागृहम्, सततपवनः, हिमवर्षः (दे-७·८४)
वड्डलसरो ३१८ जपवान्
वडंबो ६६ विडम्बना (दे-७·९५)
वड्डइओ ३३१ चर्मकारः (दे-वड्ढइओ ७·४४)
वड्डुअरो ६८ बृहत्तरः
वढो ६८ वटः (मूर्खः ?)
वणपक्कसावओ ३२२ शरभः (दे-७·५२)
वणाई ६५ वनराजिः (दे-वणई ७·३८)
वत्ती ३१० मर्यादा (दे-७·३१)
वद्दलं ३२५ मेघतिमिरम् (दे-७·३५)
वन्द्रं ४० वृन्दम् (हैव्या-२·७९)
वप्पओ ३०७ मारः
वप्पओ ३३१ चातकः कुमारश्च (दे-वप्पीओ ७·४०)
वप्पिअं २१० परिपूर्णम्
वप्पिओ ११२ केदारः (दे-वप्पिणो ७·८५)
वप्पिवअं ३२७ क्षेत्रम् (दे-वप्पिणो ७·८५)
वप्पीहो चातकः कुमारश्च (दे-वप्पीहो ६·९०)
वप्पो ३३४ भूतगृहीतः, बलाधिकः (दे-७·८३)
वरइत्तो १०७ नूतनवरः (दे-७·४४)
वरण्डो १११ वरणः, प्राकारः (दे-७·८५)
वलअणी ३२७ वृतिः (दे-७·४३)
वलविओ ३१८ जपवान्
वलिअं ३१८ ज्या, मौर्वी (दे-वलिआ ७·३४)
वलुंकी ३२८ कर्कटी
वलुंकं ३२८ भीषणम्

वल्लुरो ३३४ महः, महिषः, तरुणः, क्षेत्रम्, अरण्यम् (दे-वल्लरं ७·८६)
ववहओ ३२८ द्विजः
ववहिओ २१२ उन्मत्तः
वसतुंडो ३१३ काकः (दे-वसभुद्दो ७·४९)
वहओ ३२४ मणिकारः (दे-वेअडिओ ? ७·७७)
वहिओ ६७ मथितः
वहुज्जा १०८ कनीयसी श्वश्रूः (दे-वहुव्वा ? ७·४०)
वहुणिआ ११३ ज्येष्ठभ्रातृवधूः (दे-वहुण्णी ७·४१)
वहुहाडिणी ११४; ३३१ या वध्वा उपरि परिणीयते (दे-७·५०)
वंठो ३३५ निःस्नेहः, अकृतविवाहः, भृत्यः (दे-७·८३)
वंजरो ६९ मार्जारः
वाअडो १०७ शुकः
वाउत्तो ३२२ विटः (दे-७·८८)
वाउल्लो १०८ प्रलपिता (दे-७·५६)
वाडी ६६ वृतिः (दे-७·४३)
वाडुंबी ३१७ अश्वालंकारः (दे-पाडुच्ची ६·३९)
वाणो ३२६ चाण्डालः (दे-६·३८)
वामरोरो ४० वामलूरः वल्मीकम्
वामलूरो ३३८ वल्मीकम्
वामो २१३ आक्रान्तम् (दे-७·४७)
वारिज्जो ११२ विवाहः (दे-७·५५)
वालप्पं ३२२ पुच्छम् (दे-७·५७)
वालिओ ३२३ गर्वितः
वावडो ९८ कुटुम्बी व्यापृतः (दे-७·५४)

वासी ३११ शिखा (दे-पासी ६·३७)
वासुली ३२९ पंक्तिः (दे-७·५५)
विआलो ३११ चोरः (दे-७·९०)
विउलं ३१९ क्षीरम्
विउलो २११ आविग्नः (दे-विओलो ७·६३)
विक्खिण्णो २१४ अवकीर्णः (दे-विक्खिण्णं ७·८८)
विच्छुओ ३१७ पिशाचः
विच्छेओ ३२२ विलासः (दे-७·९०)
विज्झडो ३०९ समूहः (दे-विच्छड्डो ७·३२)
विडत्तं २११ अर्जितम्
विडप्पं ३२२ राहुः (दे-७·६५)
विड्डुरं ६८ विस्तारः
विड्डिरिआ ३११ रात्रिः (दे-विड्डिरिल्ली ७·६७)
वित्तई ३२३ गर्वितः (दे-७·९१)
विद्दूणा ३०७ लज्जा (दे-७·६५)
विप्पओ ३३६ चीरी, उन्मत्तः (दे-विप्पयं ? ७·४९)
विप्पत्ती ३३० व्रतम्, उत्सवविशेषः
विमइओ २१३ विस्तीर्णः (दे-विमइअं ७·७१)
विरणिअं ३२२ आर्द्रम् (दे-विरल्लिअं ७·७१)
विरिचिरो १०७ धाराविरेचनशीलः (दे-विरिंचिरो ७·९३)
विरुअं ६५ विरुद्धम् (दे-७·६३)
विसग्गो ६७ व्युत्सर्गः
विसारो ९६ सैन्यम् (दे-७·७२)
विसिढो ३३४ विरतः, विसंस्थुलः (दे-विसढो ? ७·६२)

विस्तुओ २१२ उन्मत्तः
विहलो ३१८ ज्या, मौर्वी
विहाडणो ९९ अनर्थः (दे-७·७१)
विहिमिहिओ २०६ विकसितः (दे-विहसिग्गिअं ७·६१)
विहुंडुओ ६७ विधुंतुदो राहुः (दे-७·६५)
वीची ६८ वीची
वीलणी ३२६ पिच्छिलम् (दे-वीलणं ७·७३)
वीली ६८ वीची
वेआलं ३२८ अन्धकारः (दे-वेआलो ७·९५)
वेइल्लो ३३४ तनुः, शिथिलः, आविद्धः, ऊर्ध्वीकृतः, विसंस्थुलः (दे-वेइल्लो ७·९५)
वेक्खासओ ३१६ विरूपः
वेक्खासो ३१६ विरूपः (दे-विक्खासो ७·६३)
वेट्ठिओ २१५ वेष्टितः
वेडिओ ३२४ मणिकारः (दे-७·७७)
वेलूणी ३०७ लज्जा (दे-वेलूणा, वेलणयं इति केचित्, ७·६५)
वेडो ३०८ श्मश्रु (दे-बेड्डा ६·९५)
वेणिअं १११ वचनीयम् (दे-७·७५)
वेणुसाओ १०० भ्रमरः (दे-७·७८)
वेप्पो ३१० पिशाचाक्रान्तः (दे-७·७४)
वेलंबो ६६ विडम्बना (दे-७·९५)
वेला ३१० मर्यादा
वेलू ३११ चोरः (दे-७·९४)
वेलूरा ३०८ लज्जा (दे-वेलूणा ७·६५)
वेल्लरिआ ९६ वल्लरी (दे-७·३२)
वेल्लरी १११ विलासवती (दे-७·७६)
वेल्लवं ३३२ विलासः, लता (दे-वेल्लहलो ? ७·९६)
वेल्लहलो १०७ कोमलो विलासी च (दे-७·९६)
वेल्लाइअं २१० संकुचितम् (दे-७·७५)
वेल्ली ९६ वल्ली (दे-७·३१)
वेंडं ३१४ सुरापिष्टम् (दे-वेंढसुरा कलुषा सुरा ७·७८)
वोक्कअं ३३६ अनिमित्तं तात्पर्यम्
वोग्गिण्णं २१२ अलंकृतम्
वोद्दही ३३१ तरुणी (दे-वोद्रहो७·४०)
वोलीणो २१५ अतिक्रान्तः
वोसट्टो २०६ विकसितः (दे-वोसट्टं ८·८१)
वोसिरणं ६६ व्युत्सर्जनम्

स

सअराहं ३०८ झटिति (दे-सयराहं ८·११)
सअली ३१७ शृगाली
सइकोडी ४० शतकोटिः
सइदिट्ठं ३०९ मनोरथेनैव संघटना (दे-८·९१)
सइलंतं ३०९ मनोरथेनैव संघटना (दे-सइलंभं ८·१८):
सइलासिओ १०८ मयूरः (दे-८·२०)
सइसिलिप्पो ३३१ युवा तरुणः (दे-सइसिलिंबो स्कन्दः कुमारः ८·२०)
सउलिओ २०६ प्रेरितः (दे-सउलिअं ८·१२)

सकण्णं ३३२ आर्द्रम्, अल्पम्, चापम्, प्रचुरम्
सखरो ३३० गृध्रः
सग्गओ २१५ मुक्तः (दे–सग्गहो-संगहो ८·४)
सग्गहो १०० मुक्तः (दे–८·४)
सच्छिहो ३१८ सदृशः (दे–सच्छहो ८·९)
सडा ३१० प्रलम्बाः केशाः (दे–सढा ८·४६)
सढअं ३१९ कुमुदम् (दे–सढयं ८·३)
सणिओ ३२५ साक्षी (दे–८·४७)
सण्णिअं ३२२ आर्द्रम् (दे–८·५)
सत्ती ३३३ बन्धनम्, वचनम्, इच्छा, शिरःस्रक् (दे–८·१)
सत्थो २१२ गतः (दे–८·१)
सत्थरो ६८ संस्तरः (दे–८·४)
सद्दालं १०७ नूपुरम् (दे–८·१०)
सप्पत्तिआ ३०६ बाला (दे–संपत्तिआ ८·१८)
सबिसं ३१७ मदिरा (दे–सविसं ८·४)
समराइअं २११ पिष्टम्
समुद्दणवणीअं ९५ चन्द्रः (दे–८·५०)
समुद्दहरं ९५ अम्बुगृहम् (दे–८·२१)
सरली ३१६ चीरी (दे–८·२)
सराहओ ३०९ सर्पः (दे–८·१२)
सराहो ३३० दर्पोद्धुरः (दे–८·५)
सरिवओ ३१६ हंसः (दे–सेरवओ ८·४८)
सरिवाओ ३२१ आसारः (दे–८·१२)
सरिसाहुलो ११० सदृशः (दे–८·९)
सरी ३३७ प्रशस्ताकृतिः, दीर्घः (दे–८·२)
सरेवाओ २१६ हंसः (दे–सेरवओ ८·४८)
सहउत्थिआ ९५ सहोत्थिता दूती (दे–८·९)
संकरो १०० रथ्या (दे–८·६)
संखोडी ३११ व्यतिकरः (दे–संघोडी ८·८)
संगा ३१६ वल्का, प्रग्रहः (दे–८·२)
संगोलं ६८ संघातः (दे–८·४)
संघयणं ६७ संहननम्, शरीरमित्यर्थः (दे–८·१४)
संचारी ९५ दूती
संचुल्लो ३१२ पिशुनः (दे–संभुल्लो ८·७)
संडी ३१७ वल्का, प्रग्रहः (दे–८·२)
संपुओ ३१० पिशाचाक्रान्तः (दे–सिंपुअं ८·३०)
संफ ३१९ कुमुदम् (दे–८·१)
संफाली ३२९ पंक्तिः (दे–८·५)
संविड्डाणा ३२२ आभिजात्यम् (दे–सत्तिअणा ८·१६)
संसोसिओ २१५ चूर्णितः भीतः आरूढः उद्विग्नश्च
साइआ ६९ सारिका
साउल्लो ११२ अनुरागः (दे–७·५५)
साणिअं २११ शातम् (दे–साणइअं ८·१३)
सामरी ६८ शाल्मलिः (दे–सामरा ८·२३)
सामली ६८ शाल्मलिः (दे–८·२३)
सारोवही ३०७ लज्जा
साही ३१५ रथ्या (दे–८·६)

साहुली ११०;३३७ वस्त्रम्, शाखा, भ्रूः, सखी, सदृशः, बाहुः (दे-८·५२)
सिअणअं ३१७ श्मशानम् (दे-सीअणअं ८·५५)
सिञ्जिरो ९९ ध्वनिः
सिट्टा ३१० सुप्तनासिकानादः (दे-सिढा ८·२९)
सिणी ३०७ लज्जा
सिण्ठो ३१५ केकी मयूरः (दे-सिंढो ८·२०)
सिण्हा ३१० नीहारः (दे-८·५३)
सिप्पं ३३७ तिलकः, शिरोभूषणम् (दे-८·२८)
सिप्पी ६८ सूची
सिलिंपो ३११ बालः (दे-सिलिंबो ८·३०)
सिहडो ३१० सु प्त ना सि का ना दः (दे-सिबार्डा ? ८·२९)
सिहण्डहिल्लो १११ बालः (दे-सिहंडहल्लो ८·५४)
सिहिणं ९६ स्तनम् (दे-७·३१)
सिंदीरं ३३१ नूपुरम् (दे-८·१०)
सिंदूरिआ ३२१ राज्यम् (दे-सिंदुरयं ८·५४)
सिंधुवणओ ३१५ हुताशः, (दे-सिंदुवणो अग्निः ८·३२)
सिंहलओ ३२१ वस्त्रादेर्धूपस्य यन्त्रम् (दे-सीहलयं ८·३४)
सीउग्गं १११ हिमकाले दुर्दिनम्
सीउल्ली १११ हिमकाले दुर्दिनम्
सीसक्कं ६८ शिरःपत्रम् (दे-८·३४)
सीहली ३३३ शिखा, नवमालिका (दे-सीहलिआ ८·५५)

सुई ३२८ बुद्धिः (दे-८·३६)
सुज्झओ ३३४ रजकः, नापितः (दे-८·५६)
सुज्झुओ ३२० रजकः (दे-सुज्झओ ८·५६)
सुढिओ २०६ श्रान्तः (दे-८·३६)
सुण्हसिओ १११ निद्रालुः (दे-८·३९)
सुदारुणी ३२९ चाण्डाली (दे-सुदारुणो ८·३९)
सुदुम्मणिआ ३१४ रूपवती (दे-८·४०)
सुलोसो ३२० कौसुम्भनिवसनम् (दे-सुलसं ८·३७)
सुव्विजा ३२१ माता (दे-सुव्विआ ८·३८)
सुहरओ ९७ दारिकागृहं चटकश्च (दे-८·५९)
सूरक्को ९६ दीपः (दे-८·४१)
सूरज्जओ ९७ दिवसः (दे-८·४२)
सूरल्ली १०७ मध्याह्नः (दे-८·५७)
सेआलिआ ३२५ दूर्वा (दे-सेआली ८·२७)
सेआलो ३२६ ग्रामेशः (दे-८·५८)
सेओ ३२८ विनायकः (दे-८·४२)
सेट्ठी ३२६ ग्रामेशः (दे-८·४२)
सेवालं ६७ जम्बालम् (दे-८·४३)
सोअणो ३२१ मल्लः (दे-सोवणो ८·५८)
सोअं ३२१ स्वापः (दे-८·४४)
सोआलो ३२१ उपयाचितकम् (दे-सेआलुओ ८·४४)
सोज्झिओ ३३० निद्रालुः
सोत्ती १०९ तरङ्गिणी, नदी (दे-८·४४)
सोमालं ३०७ मांसम् (दे-८·४४)

सोरी ३२६ शौनिकः
(दे–सउरी शाकुनिकः ८·८)
सोलं ३०७ मांसम् (दे–८·४४)
सोवणं ३२१ अन्तःपुरम् (दे–८·५८)
सोहिल्लं २११ पिष्टम्

ह

हट्टमहट्टो ९७ स्वस्थः (दे–८·६५)
हडहडं ११२ अनुरागः (दे–८·७४)
हड्डुवं ३१६ कलहः (दे–भंडणं ६·१०१)
हणं ३११ दूरम् (दे–८·५९)
हत्थरं ३३० साहाय्यम् (दे–हत्थल्लो ८·६१)
हत्थं ३१२ शीघ्रम् (दे–८·३९)
हम्मिणं ३०९ चक्षुःस्थगनक्रीडा
(दे–गंदीणी २·८३)
हरणं ३२५ वस्त्रम्
हरं ३२८ तृणम्
हलबोलो ३१८ कलकलः (दे–८·६४)
हलुप्फलिअं २१२ त्वरितम्
(दे–८·५९)
हलबोलो ३१८ कलकलः (दे–८·६४)
हालो ३०८ शातवाहनः (दे–८·६६)
हासिअं २०८ दत्तम्
हिक्का ३१५ रजकी (दे–८·६६)
हिज्जो ६७ ह्यः
हित्तं ३२३ असती
हित्थो २०७ त्रस्तः (दे–८·६७)
हिमोरं ६८ हिमोदरम्
हिल्ला ३१५ सिकताः (दे–हिला-हिल्ला ८·६६)
हिंडोली ३१५ केदारस्य रक्षणयन्त्रम्
(दे–हिंडोलं·हिंडोलयं ८·६९)
हिंबिआ ३३० यत्रैकं पदमुत्क्षिप्य शिशुः क्रीडति (दे–हिंबिअं एकपद-गमनक्रीडा ८·६८)
हीरणा १११ त्रपा (दे–८·६७)
हीसमणं २१४ उन्नतं उत्तमं चुम्बितं च
(दे–८·६८)
हुडुमा ३२० पताका (दे–हुड्डुमो ८·७०)
हुरुहुण्डिअं २१२ अवनतम्
हुलिअं ४० लघुशीघ्रमित्यर्थः
हुलुविआ ३२८ प्रसवपरा
(दे–हुलुव्वी ८·७१)
हुमो ३२९ लोहकारः (दे–८·७१)
हेआलं ३२८ अहिभोगाहस्तेन निवारणम् (दे·८·७२)
हेक्किअं २१४ उन्नतम्, उत्तमं चुम्बितं च
हेरिम्बो ४० हेरम्बः (दे–८·७२)
हेला ३२२ अविच्छिन्नस्वररोदनम्
(दे–हेला वेगः ८·७१)
हेलुअं २१२ क्षुतम् (दे–८·७२)
हेसिअं २०८ रसितम्

षष्ठं परिशिष्टम्

धात्वादेशसूची

(अ) संस्कृत–प्राकृत

[अस्यां सूच्यां प्रथमं स्थूलाक्षरैः संस्कृतधातुरूपम्, ततः कंसयोर्मध्ये भावकर्मणि रूपनिर्देशः सोपसर्गकसंस्कृतधातुनिर्देशो वा, ततः प्राकृतभाषायामुपलभ्यमानाः तस्य आदेशाः, ततः अध्यायाङ्कः, पादाङ्क सूत्राङ्कश्च ॥ (अप.) अपभ्रंशे]

अर्ज्–विढव ३·१·५५

अर्जय्–(भावकर्मणि) विढप्प २·४·८२

अर्पय्–अल्लिव, पणाम, चच्चुप्प २·४·९९

अस्–(नि+अस्) णिम, णुम २·४·१५६; (परि+अस्) पल्लट्ट, पल्लोट्ट, पल्हत्थ २·४·१५१

आप्–(वि+आप्) ओअग्ग ३·१·७७; (सम्+आप्) समाण ३·१·७७

ईक्ष्–(प्रति+ईक्ष्) विहिर, विरमाल, सामअ ३·१·११५

कथ्–वज्जर, पज्जर, सग्घ, सास, साह, चव, जप्प, पिसुण, बोल्ल, उव्वाल ३·१·६९; (दुःखं कथ्) णिव्वर ३·१·७०

कमय्–णिहुव २·४·१०२

कम्पय्–विच्छोल २·४·१०६

कस्–(वि+कस्) कोआस, वोसग्ग ३·१·१२५

काशय्–(प्र+काशय्) णुव्व २·४·१०१

कास्–(अव+कास्) वास २·४·१५५

कांक्ष्–आह, अहिलंघ, वच्च, अहिलक्ख, मह, सिह, विलुम्प, चम्प ३·१·१०७

कृ–कुण ३·१·२०; (काणेक्षितं कृ) णिआर ३·१·२१; (विष्टम्भं कृ) णिट्ठुह ३·१·२२; (श्रमं कृ) वावम्फ ३·१·२३; (अवष्टम्भं कृ) संदाण ३·१·२४; (मन्युनौष्ठमालिन्यं कृ) णिव्वोल ३·१·२५; (चाटु कृ) गुलल ३·१·२६; (लम्बनं कृ, शैथिल्यं कृ) पअल्ल ३·१·२७; (क्षुरविषयं कृ) कम्म ३·१·२८; (निष्पतनं कृ, आच्छोटनं कृ) णिलुञ्छ ३·१·२९; (खुट्शब्दं कृ) खुडुक्क (अप.) ३·४·६४; (घडघडशब्दं कृ) घुडुक्क (अप.) ३·४·६४

कृप्–अवहावे, अवहावय (२·४·१२९)

कृष्–साअड्ढ, अणच्छ, कड्ढ, अच्छ, आअञ्छ, आणञ्छ ३·१·१०९; (असिं कृष्) अक्खोड ३·१·११०

क्रन्द्–(आ + क्रन्द्) णिहर ३·१·६५

क्रम्–(आ + क्रम्) ओहाव, उत्थार, छुन्द ३·१·९४; चम्प (अप.) ३·४·६४

क्री–कीण २·४·१२२; (वि + क्री) विक्के २·४·१२३

क्रुध्-जूर ३·१·७२

क्वथ्-अट्ट ३·१·६८

क्षर्-झर, पज्झर, पच्चड्ड, खिर, णिट्टुअ, णिव्वल २·४·१५४

क्षि-णिज्झर ३·१·६

क्षिप्-अड्डक्ख, परि, हुल, घत्त, छुह, फेल्ल, णोल्ल, सोल्ल, गल्लत्थ ३·१·७९; (आ + क्षिप्) णिरव ३·१·७८; (उद्+क्षिप्) उत्थग्घ, उसिक्क, हक्खुव, अल्लत्थ, गुलुगुञ्छ, अब्भुत्त ३·१·८०

क्षुभ्-खउर, पड्डुह ३·१·८४

खच्-वेअड ३·१·३९

खिद्-विसूर ३·१·७३

गर्ज्-बुक्क ३·१·५०; (वृषकर्तृकं गर्ज्) ढिक्क ३·१·५१

गम्-अणुवज्ज, अवज्जस, अक्कुस, उक्कुस, अइच्छ, अई, अवहर, अवसेह, वडअ, वरिअल, वरिअल्ल, वोल्ल, णिरिणास, वच्छड्ड, णिण, णिम्मह, पच्छन्द, णिलुक्क, रम्भ, णि, णिवह ३·१·९७; (प्रति+आ+गम्) पल्लोट्ट ३·१·९८; (आ + गम्) अहिपच्चुअ ३·१·९८; (अभि + आ + गम्) उम्मच्छ ३·१·९८; (सम् + गम्) अब्भिड ३·१·१००

गल्-(वि + गल्) णिट्टुह, ढिप्प ३·१·१०१

गवेष्-घत्त, गमेस, ढुण्ढुल्ल, ढण्ढोल ३·१·१२१

गाह्-(अव + गाह) वाह ३·१·१३०

गुप्-विर, णड ३·१·८२

ग्रन्थ्-गण्ठ २·४·१४७

ग्रस्-घिस ३·१·११३

ग्रह्-णिरुवार, गेण्ह, वल, हर, पग्ग, अहिपच्चुअ २·४·१५७; (भावकर्मणि) घेप्प २·४·८७; गण्ह (अप.) ३·४·६३

घट्-गड ३·१·५८; (सम् + घट्) गल ३·१·५९

घटय्-परिवाड २·४·११२; (उद् + घटय्) उग्ग २·४·९४

घूर्ण्-घुम्म, पहल्ल, घोल, घुल २·४·१४२

घ्रा-(आ + घ्रा) आइग्घ ३·१·६

चल्-(उद् + चल्) उत्थल २·४·१४१

छादय्-नूम, नुम, उच्चाल, ढक्क, पव्वाल, संतुम २·४·११०

छिद्-णिल्लूर, लूर, णिव्वर, णिच्छल्ल, दुहाव, णिज्झोड ३·१·६७; (आ + छिद्) ओअन्द, उद्दाल ३·१·६६

जन्-जा, जम्म २·४·१४०

जुगुप्स्-दुगुञ्छ, झुण, दुगुच्छ ३·१·१२७

जृम्भ्-जम्भा २·४·१३८

ज्ञा-जाण, मुण २·४·१३०; (भावकर्मणि) णप्प, णज्ज २·४·८४

ज्ञापय्-(वि+ज्ञापय्) अव्वुक्क, वोक्क २·४·१११

तन्-तड्डव, विरल्ल, तड, तड्ड ३·१·७४

तप्-(सम्+तप्) झंख ३·१·७६

तक्ष्-चच्छ, रम्प, रम्फ ३·१·१२२; छोल्ल (अप.) ३·४·६४

ताडय्–आहोड, विहोड २·४·११८
तिज्–ओसुक्क ३·१·५२
तुड्–उल्लुक्क, णिल्लुक्क, उल्लूर, उक्खुड, लुक्क, तोड, खुट्ट, खुड ३·१·६२
तुलय्–ओहाम २·४·९७
तृ–(अव+तृ) ओहर, ओसर ३·१·३६
तृप्–थिप्प २·४·१३५
त्रस्–वज्ज, डर ३·१·११९; वोज्ज ३·१·१२०
त्वर्–तुवर, जड २·४·१४८; तूर २·४·१५०
दल्–विसट्ट ३·१·११८
दर्शय्–दाव, दक्खव, दंस २·४·११३
दह्–अहिऊल, आलुङ्ख ३·१·१२४; झलक्क (अप.) ३·४·६४
दिश्–(सम्+दिश्) अप्पाह ३·१·११२
दीप्–(प्र+दीप्) संधुक्क, अब्भुत्त, तेअव, संधुम ३·१·८५
दृ–(आ+दृ) संनाम ३·१·३५
दृश्–ओअक्ख, णिअच्छ, अवअच्छ, वज्ज, अवअज्झ, पुलअ, पुलोअ, देक्ख, अवअक्ख, पेच्छ, अवआस, पास, णिअ, सच्चव, अवक्ख २·४·१५३; (भावकर्मणि) दीस २·४·८९; पस्स (अप.) ३·४·६३
दोलय्–रक्खोल २·४·९७
द्रै–(नि + द्रै, द्रा) ओहिर, उग्घ ३·१·३१
धवलय्–दुम २·४·९४
धा–(श्रद् + धा) सद्दह २·४·१३१
धू–(धूञ् कम्पने) धुव ३·१·१७
धूलय्–(उद् + धूलय्) गुण्ठ २·४·११७
ध्मा–(उद् + ध्मा) उद्धुमा २·४·१२५
नम्–(भाराक्रान्तः नम्) निसुड ३·१·९०
नमय्–(उद् + नमय्) गुलुगुञ्छ, उत्थंघ, उल्लाल, उब्भाल २·४·१००
नश्–अवहर, अवसेह, णिवह, पडिसा, सेह, णिरिणास ३·१·१०८
नाशय्–विप्पगाल, नासव, पलाव, हारव, विउड २·४·१०३
पच्–सोल्ल, पउल्ल ३·१·३८
पद् (निस् + पद्) वल ३·१·७५
पा–(पिब्)–पट्ट, घोट्ट, डल्ल, पिज्ज ३·१·१६
पातय्–णिहोड २·४·९३
पिष्–णिवह, णिरिणास, णिरिणिज्ज, रोञ्च, चड्ड ३·१·१०२
पुञ्ज–आरोल, वमाल ३·१·५३
पृ–(वि + आ + पृ) आअड्ड ३·१·१३
पॄ–अग्घव, अग्घोड, अहिरेम, अग्गुम, अद्धुम ३·१·१०६
प्रच्छ्–पुच्छ २·४·१४६
प्लावय्–ओम्वाल, पव्वाल २·४·१२८
फक्क्–थक्क २·४·१३३
बुभुक्ष्–णिरव ३·१·७८
ब्रू–ब्रुव (अप.) ३·४·६१
भञ्ज्–वेमअ, मुसुमूर, मूर, पविरज्ज, सूर, सूड, करञ्ज, निरञ्ज, विर ३·१·४९
भष्–बुक्क ३·१·१०५
भावय्–(सम्+भावय्) आसंघ २·४·९८
भास्–भिस ३·१·११४

भी–भा, बिह (बीह) २·४·१३६

भुज्–अण्ण, भुज्ज, कम्म, समाण, चमढ, चड्ढ, जेम, जिम २·४·१३७; (उप+भुज्) कम्मव ३·१·५४

भू–हो, हुव, हव ३·१·१; णिव्वड ३·१·२; (प्र+भू) हुप्प ३·१·३; (पर्याप्तौ भू) पहुच्च (अप.) ३·४·५९

भ्रम्–ढुण्ढुल, ढुम, ढण्ढल्ल, भमाड, भम्म, भमुड, तलअण्ट, झण्ट, गुम, टिरिटिल्ल, परि, पर, घम, चक्कम, भमड, घस, झम्प, ढुस ३·१·९६

भ्रमय्–तालिअण्ट २·४·९५

भ्रंश्–पिड्ड, पिट्ट, छुक्क, छुल्ल, पुट्ट, पुड ३·१·१०४

मण्डय्–टिविडिक्क, रिड, चिञ्च, चिञ्चिल्ल, चिञ्चअ ३·१·६१

मन्थ्–घुसल, विरोल ३·१·६३

मस्ज्–आउड्ड, णिउड्ड, बुड्ड, खुप्प ३·१·४५

मिश्रय्–मीसाल, मेलव २·४·१०९

मी–(निर्+मी) निम्मव, निम्माण २·४·१२०

मुच्–अवहेड, मेल्ल, णिल्लुञ्छ, उसिक्क, दिसड, रेअव, छण्ड ३·१·४१; (दुःखं मुच्) णिव्वल ३·१·४०

मुह्–गुम्म, गुम्मड ३·१·१३१

मृज्–रोसाण, उग्घुस, लुह, लुञ्छ, पुञ्छ, फुस, फुस्स, घस, हुल ३·१·४८

मृद्–मल, परिहट्ट, खुड्ड, पन्नाड, चड्ड, मड्ड, मढ २·४·१५२

म्रक्ष्–(मृक्ष्) चोप्पड ३·१·११७

म्लै–वा, पव्वाअ ३·१·१९

यापय्–जव २·४·११५

युज्–जुञ्ज, जुज्ज, जुप्प २·४·१३९

रच्–विडविड्ड, अवह, उग्गह ३·१·४३; (सम् + आ + रच्) केवलाअ, सारव, समार, उवहत्थ ३·१·४४

रञ्जय्–राव २·४·९६

रभ्–(आ + रभ्) रम्भ, ढव ३·१·८९; (भावकर्मणि) आढप्प २·४·८३

रम्–उब्भाव, वेल्ल, णिसर, कोट्टुम, सक्खुड, खेड्ड, मोट्टाअ, किलिकिञ्च ३·१·९१

राज्–सह, रेह, छज्ज, रिर, अग्घ ३·१·५७

रु–रुञ्ज, रुण्ट ३·१·३३

रुध्–उत्थंघ ३·१·६४

रुह्–(आ + रुह्) वलग्ग, चड ३·१·१२८

रेचय्–(वि + रेचय्) ओल्लुण्ड, उल्लुण्ड, पल्लत्थ २·४·१०५

रोपय्–(आ + रोपय्) वल २·४·१०४

रोमन्थय्–ओग्गाल, वग्गाल २·४·१०७

लप्–(वि + लप्) झंख ३·१·७६; वडवड ३·१·८८

लभ्–(उप + आ + लभ्) पच्चार, वेलव ३·१·८३

लस्–(उद् + लस्) ऊसल, ऊसुम्भ, आरोअ, णिल्लस, गुञ्जोल्ल, पुलआअ ३·१·१११

लस्ज्–जीह ३·१·५६

लिप्–लिम्प २·४·१४३

ली–(आ+ली)–अल्लि २·४·१२१; (नि+ली) ल्हिक्क, णिलुक्क, णिलिअ, लिक्क, लुक्क, णिरग्घ ३·१·८; (वि+ली) विरा, विराअ ३·१·७

लुभ्–संभाव ३·१·९३

ल्हाद्–अवअच्छ २·४·११९

ल्हादय्–अवअच्छ २·४·११९

वञ्च्–वेहव, वेलव, जूरव, उम्मच्छ ३·१·४७; (भावकर्मणि) उब्भ २·४·९०

वल्–वम्फ ३·१·१०३

वा–(उद्+वा) ओरुम्मा, वसुआ ३·१·३२

विकोशय्–पक्खोड २·४·११६

विश्–(प्र+विश्) रिह, रिग्ग ३·१·९९

वीज्–वोज्ज ३·१·१२०

वृ–(सम्+वृ) साहट्ट, साहर ३·१·३०; (नि+वृ–णिच्) णिहोड २·४·९३

वृत्–(वि+वृत्) ढंस ३·१·६४

वेप्–आअब्ब, आअज्झ ३·१·८१

वेष्टय्–परिआल २·४·९५

व्रज्–(अनु+व्रज्) पडिअग्ग ३·१·४६; वञ्ज (अप.) ३·४·६०

शक्–तर, तीर, पार, चअ ३·१·३७

शद्–झड, पक्खोड २·४·१४४

शब्दाय्–धुट्टुअ (अप.) ३·४·६४

शम्–पडिसा, परिसाम ३·१·९२

श्रम्–(वि+श्रम्) णिव्वा ३·१·९५

श्रु–हण ३·१·१८

श्लाघ्–सलाह २·४·१३४

श्लिष्–अवआस, सामग्ग, परिअन्त ३·१·१२६

श्वस्–(निस् + श्वस्) झंख ३·१·७६

सद्–(नि + सद्) मज्ज २·४·१४५

सिच्–सिञ्च, सिम्प ३·१·४२; (भावकर्मणि) सिप्प २·४·८५

सिध्–(नि + सिध्) हक्क ३·१·७१

सृ–(प्र + सृ) उवेल्ल, वअल्ल, महमह ३·१·१०; (निः + सृ) निहर, निल, दाढ, वरहाढ ३·१·१४

सृप्–(उप + सृप्) अल्लिअ ३·१·८६

स्खल्–(लक्ष्यात् स्खल् हुल) ३·१·१२९

स्त्यै–(सम् + स्त्यै) खा २·४·१२४

स्था–निरप्प, णिरप्प, थक्क, ठा, चिट्ठ २·४·१२७; (उद् + स्था) उट्ठ, उक्कुर २·४·१२६

स्थापय्–(प्र + स्थापय्) पेट्ठव, पेण्डव २·४·११४

स्ना–अब्भुत्त, ण्हा ३·१·६

स्निह्–(भावकर्मणि) सिप्प २·४·८५

स्पृहय्–सिह, तूम २·४·९२

स्पृश्–छिव, आलुक्ख, फरिस, फास, फंस, आलिह, छिह २·४·१३२; (भावकर्मणि) छिप्प २·४·८८

स्फुट् (हासेन स्फुट्) मुर ३·१·६०

स्मृ–झर, झूर, सुमर, विम्हर, हर, हल, लुढ, पअर, पम्हुह ३·१·१२; (वि + स्मृ) पम्हस, वीसर २·४·१२८

स्रंस्–ल्हस, डिम्भ ३·१·११६

स्वप्–कमवस, लिस, लोट्ट ३·१·८७

हस्–गुञ्ज ३·१·१२३

हृ–(प्र + हृ) सार ३·१·९; (वि + आ + हृ) वोक्क, कोक्क, ३·३·३४; कोक्क ३·१·३४; (वि + आ + हृ) (भावकर्मणि) वाहिप्प २·४·८६

(आ) प्राकृत–संस्कृत

[अस्यां सूच्यां प्रथमं स्थूलाक्षरैः प्राकृतधात्वादेशनिर्देशः, ततः कंसयोर्मध्ये संस्कृते समानार्थकं धातुरूपम्, ततः त्रैविक्रमीयशब्दानुशासनस्य अध्यायाङ्कः पादाङ्कः सूत्राङ्कश्च ।]

अ

अइच्छ–(गम्) ३·१·९७
अई–(गम्) ३·१·९७
अक्कुस–(गम्) ३·१·९७
अक्खोड–(असिं कृष्) ३·१·११०
अग्गुम–(पृ) ३·१·१०६
अग्घ–(राज्) ३·१·५७
अग्घव–(पृ) ३·१·१०६
अग्घोड–(पृ) ३·१·१०६
अच्चुक्क–(वि + ज्ञापय्) २·४·१११
अच्छ–(कृष्) ३·१·१०९
अट्ट–(कथ्) ३·१·६८
अडुक्ख–(क्षिप्) ३·१·७९
अणच्छ–(कृष्) ३·१·१०९
अणुवज्ज–(गम्) ३·१·९७
अण्ण–(भुज्) २·४-१३७
अद्दुम–(पृ) ३·१·१०६
अप्पाह–(सम् + दिश्) ३·१·११२
अब्बुत्त–(प्र + दीप्) ३·१·८५
अब्भिड–(सम् + गम्) ३·१·१००
अब्भुत्त–(उद् + क्षिप्) ३·१·८०
अहुत्थ–(उद् + क्षिप्) ३·१·८०
अल्लि–(आ + ली) २·४·१२१
अल्लिअ–(उप + सृप्) ३·१·८६
अल्लिव–(अर्पय्) २·४·९९
अवअक्ख–(दृश्) २·४·१५३
अवअच्छ–(ह्लाद्, ह्लादय्) २·४·११९; (दृश्) २·४·१५३
अवअज्झ–(दृश्) २·४·१५३
अवआस–(दृश्) २·४·१५३; (श्लिष्) ३·१·१२६
अवक्ख–(दृश्) २·४·१५३
अवज्जस–(गम्) ३·१·९७
अवसेह–(गम्) ३·१·९७; (नश्) ३·१·१०८
अवह–(रच्) ३·१·४३
अवहर–(नश्) ३·१·१०८; (गम्) ३·१·९७
अवहावे–(कृप्) २·४·१२९
अवहेड–(मुच्) ३·१·४१
अहिऊल–(दह्) ३·१·१२४
अहिपच्चुअ–(आ + गम्) ३·१·८९; (ग्रह्) २·४·१५७
अहिरेम–(पृ) ३·१·१०६
अहिलक्ख–(कांक्ष्) ३·१·१०७
अहिलंघ–(कांक्ष्) ३·१·१०७

आ

आअच्छ–(कृष्) ३·१·१०९
आअज्झ–(वेप्) ३·१·८१
आअड्ड–(वि+आ+पृ) ३·१·१३
आअम्ब–(वेप्) ३·१·८१
आइग्घ–(आ + घ्रा) ३·१·६
आउड्ड–(मस्ज्) ३·१·४५
आढप्प–(आ + रभ्) २·४·८३
आणच्छ–(कृष्) ३·१·१०९

आरोअ-(उद् + लस्) ३·१·१११
आरोल-(पुञ्ज्) ३·१·५३
आलिह-(स्पृश्) २·४·१३२
आलुक्ख-(स्पृश्) २·४·१३२; (दह्) ३·१·१२४
आसंघ-(सम् + भावय्) २·४·९८
आह-(कांक्ष्) ३·१·१०७
आहोड-(ताडय्) २·४·११८

उ

उक्कुर-(उद् + स्था) २·४·१२६
उक्कुस-(गम्) ३·१·९७
उक्खुड-(तुड्) ३·१·६२
उग्ग-(उद् + घटय्) २·४·९४
उग्गह-(रच्) ३·१·४३
उग्घ-(नि + द्रै) ३·१·३१
उञ्च-(वञ्च्) २·४·९०
उट्ठ-(उद् + स्था) २·४·१२६
उत्थग्घ-(उद् + क्षिप्) ३·१·८०
उत्थल-(उद् + चल्) २·४·१४१
उत्थंघ-(रुध्) ३·१·६४; (उद् + नमय्) २·४·१००
उत्थार-(आ + क्रम्) ३·१·९४
उद्दाल-(आ + छिद्) ३·१·६६
उद्धुमा-(उद् + ध्मा) २·४·१२५
उब्बुस-(मृज्) ३·१·४८
उब्भाव-(रम्) ३·१·९१
उम्मच्छ-(वञ्च्) ३·१·४७; (अभि + आ + गम्) ३·१·९८
उल्लाल-(उद् + नमय्) २·४·१००
उल्लुक्क-(तुड्) ३·१·६२
उल्लुड-(वि + रेचय्) २·४·१०५
उल्लूर-(तुड्) ३·१·६२

उवहत्थ-(सम् + आ + रच्) ३·१·४४
उवेल्ल-(प्र + सृ) ३·१·१०
उव्वाल-(कथ्) ३·१·६९; (छादय्) २·४·११०
उव्वेल्ल-(उद् + नमय्) २·४·११०
उसिक्क-(मुच्) ३·१·४१; (उद् + क्षिप्) ३·१·८०

ऊ

ऊसल-(उद् + लस्) ३·१·१११
ऊसुम्भ-(उद् + लस्) ३·१·१११

ओ

ओअक्ख-(दृश्) २·४·१५३
ओअग्ग-(वि + आ + आप्) ३·१·७७
ओअन्द-(आ + छिद्) ३·१·६६
ओग्गाल-(रोमन्थय्) २·४·१०७
ओरुम्मा-(उद् + वा) ३·१·३२
ओल्लुड-(वि + रेचय्) २·४·१०५
ओव्वाल-(प्लावय्) २·४·१०८
ओसर-(अव + तॄ) ३·१·३६
ओसुक्क-(तिज्) ३·१·५२
ओहर-(अव + तॄ) ३·१·३६
ओहाम-(तुलय्) २·४·९७
ओहाव-(आ + क्रम्) ३·१·९४
ओहिर-(नि + द्रै) ३·१·३१

क

कड्ढ-(कृष्) ३·१·१०९
कमवस-(स्वप्) ३·१·८७
कम्म-(क्षुरविषयं कृ) ३·१·२८; (भुज्) २·४·१३७

कम्मव-(उप + भुज्) ३·१·५४
करञ्ज-(भञ्ज्) ३·१·४९
किलिकिञ्च-(रम्) ३·१·९१
कीण-(क्री) २·४·१२२
कुण-(कृ) ३·१·२०
केवलाअ-(सम् + आ + रच्) ३·१·४४
कोआस-(वि + कस्) ३·१·१२५
कोक्क-(वि + आ + हृ) ३·१·३४
कोट्टुम-(रम्) ३·१·९१

ख

खउर-(क्षुभ्) ३·१·८४
खा-(सम् + स्त्यै) २·४·१२४
खिर-(क्षर्) २·४·१५४
खुट्ट-(तुड्) ३·१·६२
खुड-(तुड्) ३·१·६२
खुडुक्क-(अप.) (खुद्शब्दं कृ) ३·४·६४
खुड्ड-(मृद्) २·४·१५२
खुप्प-(मस्ज्) ३·१·४५
खेड्ड-(रम्) ३·१·९१

ग

गड-(घट्) ३·१·५८
गण्ठ-(ग्रन्थ्) २·४·१४७
गण्ह-(अप.)-(ग्रह्) ३·४·६३
गमेस-(गवेष्) ३·१·१२१
गल-(सम् + घट्) ३·१·५९
गल्लत्थ-(क्षिप्) ३·१·७९
गुञ्ज-(हस्) ३·१·१२३
गुञ्जोल्ल-(उद् + लस्) ३·१·१११
गुण्ठ-(उद् + धूलय्) २·४·११७
गुम-(भ्रम्) ३·१·९६
गुम्म-(मुह्) ३·१. १३१
गुम्मड-(मुह्) ३·१·१३१
गुलल-(चाटु कृ) ३.१·२६
गुलुगुञ्छ-(उद् + क्षिप्) ३·१·८०
गुलुगुञ्छ-(उद् + नमय्) २·४·१००
गेण्ह-(ग्रह्) २·४·१५७

घ

घत्त-(क्षिप्) ३·१·७९; (गवेष्) ३·१·१२१
घम-(भ्रम्) ३·१·९६
घस-(मृज्) ३·१·४८; (भ्रम्) ३·१·९६
घिस-(ग्रस्) ३·१·११३
घुडुक्क-(अप.)-(घडघडाशब्दं कृ) ३·४·६४
घुम्म-(घूर्ण्) २·४·१४२
घुल-(घूर्ण्) २·४·१४२
घुसल-(मन्थ्) ३·१·६३
घेप्प-(ग्रह्) २·४·८७
घोट्ट-(पा) ३·१·१६
घोल-(घूर्ण्) २.४·१४२

च

चअ-(शक्) ३·१·३७
चक्कम-(भ्रम्) ३·१·९६
चच्चार-(उप + आ + लभ्) ३·१·८३
चच्चुप्प-(अर्पय्) २·४·९९
चञ्छ-(तक्ष्) ३·१·१२२
चज्ज-(दृश्) २·४·१५३
चिट्ठ-(स्था) २·४·१२७
चड-(आ + रुह्) ३·१·१२८

चड्डु-(भुज्) २·४·१३७; (मृद्) २·४·१५२; (पिष्) ३·१·१०२
चमढ-(भुज्) २·४·१३७
चम्प-(कांक्ष्) ३·१·१०७; (अप.)-(आ + क्रम्) ३·४·६४
चव-(कथ्) ३·१·६९
चिञ्च-(मण्डय्) ३·१·६१
चिञ्चअ-(मण्डय्) ३·१·६१
चिञ्चिल्ल-(मण्डय्) ३·१·६१
चिल्लुम्प-(कांक्ष्) ३·१·१०७
चोप्पड-(म्रक्ष्) ३·१·११७

छ

छज्ज-(राज्) ३·१·५७
छण्ड-(मुच्) ३·१·४१
छिप्प-(स्पृश्) २·४·८८
छुक्क-(भ्रंश्) ३·१·१०४
छुन्द-(आ + क्रम्) ३·१·९४
छुल्ल-(भ्रंश्) ३·१·१०४
छुह-(क्षिप्) ३·१·७९
छोल्ल-(अप.)-(तक्ष्) ३·४·६४
छिव-(स्पृश्) २·४·१३२
छिह-(स्पृश्) २·४·१३२

ज

जड-(त्वर्) २·४·१४८
जप्प-(कथ्) ३·१·६९
जम्भा-(जृम्भ्) २·४·१३८
जम्म-(जन्) २·४·१४०
जव-(यापय्) २·४·११५
जा-(जन्) २·४·१४०
जागृ-(जग्गा) ३·१·१५
जाण-(ज्ञा) २·४·१३०

जिम-(भुज्) २·४·१३७
जीह-(लस्ज्) ३·१·५६
जुञ्ज-(युज्) २·४·१३९
जुज्ज-(युज्) २·४·१३९
जुप्प-(युज्) २·४·१३९
जूर-(क्रुध्) ३·१·७२
जूरव-(वञ्च्) ३·१·४७
जेम-(भुज्) २·४·१३७

झ

झड-(शद्) २·४·१४४
झण्ट-(भ्रम्) ३·१·९६
झम्प-(भ्रम्) ३·१·९६
झर-(स्मृ) ३·१·१२; (क्षर्) २·४·१५४
झलक्क-(अप.)-(दह्) ३·४·६४
झंख-(संतप्, निःश्वस्, विलप्) ३·१·७६
झूण-(जुगुप्स्) ३·१·१२७
झूर-(स्मृ) ३·१·१२

ट

टिरिटिल्ल-(भ्रम्) ३·१·९६
टिविडिक्क-(मण्डय्) ३·१·६१

ठ

ठा-(स्था) २·४·१२७

ड

डक्क-(छादय्) २·४·११०
डण्डल्ल-(भ्रम्) ३·१·९६
डण्डोल-(गवेष्) ३·१·१२१
डर-(त्रस्) ३·१·११९

डल्लु–(पा) ३·१·१६
डव–(आ + रम्) ३·१·८९
डिक्क–(वृषभकर्तृके गर्जे) ३·१·५१
डिप्प–(वि + गल्) ३·१·१०१
डिम्भ–(स्रंस्) ३·१·११६
डुण्डुल्ल–(गवेष्) ३·१·१२१; (भ्रम्) ३·१·९६
डुम–(भ्रम्) ३·१·९६
डुस–(भ्रम्) ३·१·९६

ढ

ढंस–(वि + वृत्) ३·१·६४

ण

णज्ज–(ज्ञा) २·४·८४
णड–(गुप्) ३·१·८२
णप्प–(ज्ञा) २·४·८४
णि–(गम्) ३·१·९७
णिअ–(दृश्) २·४·१५३
णिअच्छ–(दृश्) २·४·१५३
णिआर–(काणेक्षितं कृ) ३·१·२१
णिउड्ड–(मस्ज्) ३·१·४५
णिच्छल्ल–(छिद्) ३·१·६७
णिज्झर–(क्षि) ३·१·६
णिज्झोड–(छिद्) ३·१·६७
णिट्टुह–(निष्टम्भं कृ) ३·१·२२
णिड्डुअ–(क्षर्) २·४·१५४
णिड्डुह–(वि + गल्) ३·१·१०१
णिण–(गम्) ३·१·९७
णिप्पा–(वि + श्रम्) ३·१·९५
णिब्बल–(क्षर्) २·४·१५४; (दुःखं मुच्) ३·१·४०
णिम–(नि + अस्) २·४·१५६
णिम्मह–(गम्) ३·१·९७
णिरग्घ–(नि + ली) ३·१·८
णिरप्प–(स्था) २·४·१२७
णिरव–(बुभुक्ष् ; आ + क्षिप्) ३·१·७८
णिरिणास–(गम्) ३·१·९७; (पिष्) ३·१·१०२; (नश्) ३·१·१०८
णिरिणिज्ज–(पिष्) ३·१·१०२
णिरुवार–(ग्रह्) २·४·१५७
णिलिअ–(नि + ली) ३·१·८
णिलुक्क–(गम्) ३·१·९७; (नि+ली) ३·१·८
णिलुञ्छ–(निष्पतनं कृ, आच्छोटनं कृ) ३·१·२९
णिल्लस–(उद् + लस्) ३·१·१११
णिल्लुक्क–(तुड्) ३·१·६२
णिल्लुञ्छ–(मुच्) ३·१·४१
णिल्लूर–(छिद्) ३·१·६७
णिवह–(गम्) ३·१·९७; (पिष्) ३·१·१०२; (नश्) ३·१·१०८
णिव्वड–(भू) ३·१·२
णिव्वर–(छिद्) ३·१·६७; (दुःखं कथ्) ३·१·७०
णिव्वोल–(मन्युनौष्ठमालिन्यं कृ) ३·१·२५
णिसर–(रम्) ३·१·९१
णिहुर–(आ + क्रन्द्) ३·१·६५
णिहुव–(कमय्) २·४·१०२
णिहोड–(नि + वृ; पत्) २·४·९३
णुम–(नि + अस्) २·४·१५६
णुव्व–(प्र + काशय्) २·४·१०१
णोल्ल–(क्षिप्) ३·१·७९

त

तड-(तन्) ३·१·७४
तड्ड-(तन्) ३·१·७४
तड्डव-(तन्) ३·१·७४
तर-(शक्) ३·१·३७
तलअण्ट-(भ्रम्) ३·१·९६
तालिअण्ट-(भ्रमय्) २·४·९५
तीर-(शक्) ३·१·३७
तुवर-(त्वर्) २·४·१४८
तूर-(त्वर्) २·४·१५०
तेअव-(प्र + दीप्) ३·१·८५
तोड-(तुड्) ३·१·६२

थ

थक्क-(फक्क्) २·४·१३३; (स्था) २·४·१२७
थिप्प-(तृप्) २·४·१३५

द

दक्खव-(दर्शय्) २·४·११३
दंस-(दर्शय्) २·४·११३
दाढ-(निस् + सृ) ३·१·१४
दाव-(दर्शय्) २·४·११३
दिसड-(मुच्) ३·१·४१
दीस-(दृश्) २·४·८९
दुगुच्छ-(जुगुप्स्) ३·१·१२७
दुम-(धवलय्) २·४·९४
दुहाव-(छिद्) ३·१·६७
दूम-(स्पृह्) २·४·९२
देक्ख-(दृश्) २·४·१५३

ध

धुद्दुअ (अप.)-(शब्दाय्) ३·४·६४
धुव-(धू) ३·१·१७

न

नासव-(नाशय्) २·४·१०३
निम्मव-(निर् + मी) २·४·१२०
निम्माण-(निर् + मी) २·४·१२०
निरञ्ज-(भञ्ज्) ३·१·४९
निरप्प-(स्था) २·४·१२७
निल-(निस् + सृ) ३·१·१४
निसुड-(भाराक्रान्तः नम्) ३·१·९०
निहर-(नि + सृ) ३·१·१४
नुम-(छादय्) २·४·११०
नूम-(छादय्) २·४·११०

प

पअर-(स्मृ) ३·१·१२
पअल्ल-(लम्बनं कृ, शैथिल्यं कृ) ३·१·२७
पउल्ल-(पच्) ३·१·३८
पक्खोड-(शद्) २·४·१४४; (विकोशय्) २·४·११६
पग्ग-(ग्रह्) २·४·१५७
पच्चड्ड-(क्षर्) २·४·१५४
पच्छन्द-(गम्) ३·१·९७
पज्जर-(कथ्) ३·१·६९
पज्झर-(क्षर्) २·४·१५४
पट्ट-(पा) ३·१·१६
पडिअग्ग-(अनु + व्रज्) ३·१·४६
पडिसा-(नश्) ३·१·१०८; (शम्) ३·१·९२
पड्डुह-(क्षुभ्) ३·१·८४
पणाम-(अर्पय्) २·४·९९
पब्भाड-(सूद्) २·४·१५२
पम्हुस-(वि + स्मृ) २·४·१२८

पम्हुह–(स्मृ) ३·१·१२
पर–(भ्रम्) ३·१·९६
परि–(भ्रम्) ३·१·९६; (क्षिप्) ३·१·७९
परिअन्त–(श्लिष्) ३·१·१२६
परिआल–(वेष्टय्) २·४·९५
परिवाड–(घटय्) २·४·११२
परिसाम–(शम्) ३·१·९२
परिहट्ट–(मृद्) २·४·१५२
पलुट्ट–(परि + अस्) २·४·१५१
पल्लत्थ–(वि + रेचय्) २·४·१०५
पलाव–(नाशय्) २·४·१०३
पल्लोट्ट–(परि + अस्) २·४·१५१; (प्रति + आ + गम्) ३·१·९८
पल्हत्थ–(परि + अस्) २·४·१५१
पविरञ्ज–(भञ्ज्) ३·१·४९
पव्वाअ–(म्लै) ३·१·१९
पव्वाल–(प्लावय्) २·४·१०८; (छादय्) २·४·११०
पस्स (अप.)–(दृश्) ३·४·६३
पहल्ल–(घूर्ण्) २·४·१४२
पहुच्च–(पर्याप्त्यर्थे भू) (अप.) ३·४·५९
पार–(शक्) ३·१·३७
पास–(दृश्) २·४·१५३
पिज्ज–(पा) ३·१·१६
पिट्ट–(भ्रंश्) ३·१·१०४
पिड्ड–(भ्रंश्) ३·१·१०४
पिसुण–(कथ्) ३·१·६९
पुच्छ–(मृज्) ३·१·४८; (प्रच्छ्) २·४·१४६
पुट्ट–(भ्रंश्) ३·१·१०४
पुड्ड–(भ्रंश्) ३·१·१०४
पुलअ–(दृश्) २·४·१५३
पुलआअ–(उद् + लस्) २·१·११९
पुलोअ–(दृश्) २·४.१५३
पेच्छ–(दृश्) २.४.१५३
पेट्ठव–(प्र + स्थापय्) २.४.११४
पेड्डव–(प्र + स्थापय्) २.४.११४

फ

फरिस–(स्पृश्) २.४.१३२
फंस–(स्पृश्) २·४·१३२
फास–(स्पृश्) २·४·१३२
फुस–(मृज्) ३·१·४८
फुस्स–(मृज्) ३·१·४८
फेल्ल–(क्षिप्) ३·१·७९

ब

बुक्क–(गर्ज्) ३·१·५०; (भष्) ३·१·१०५
बडबड–(वि + लप्) ३·१·८८
बल–(ग्रह्) २·४·१५७
बुड्ड–(मस्ज्) ३·१·४५
बुव (अप.)–(ब्रू) ३·४·६१
बिह (बीह)–(भी) २·४·१३६
बोल्ल–(कथ्) ३·१·६९

भ

भमड–(भ्रम्) ३·१·९६
भमाड–(भ्रम्) ३·१·९६
भम्म–(भ्रम्) ३·१·९६
भमुड–(भ्रम्) ३·१·९६
भा–(भी) २·४·१३६
भिस–(भास्) ३·१·११५
भुञ्ज–(भुज्) २·४·१३७

म

मज्ज–(नि + सद्) २·४·१४५
मड–(मृद्) २·४·१५२
मड्ड–(मृद्) २·४·१५२
मल–(मृद्) २·४·१५२
मह–(कांक्ष्) ३·१·१०७
महमह–(प्र + सृ) ३·१·११
मीसाल–(मिश्रय्) २·४·१०९
मुण–(ज्ञा) २·४·१३०
मुर–(हासेन स्फुट्) ३·१·६०
मुसुमूर–(भञ्ज्) ३·१·४९
मूर–(भञ्ज्) ३·१·४९
मेलव–(मिश्रय्) २·४·१०९
मेल्ल–(मुच्) ३·१·४१
मोट्टाअ–(रम्) ३·१·९१

र

रक्खोल–(दोलय्) २·४·९७
रम्प–(तक्ष्) ३·१·१२२
रम्फ–(तक्ष्) ३·१·१२२
रम्भ–(गम्) ३·१·९७; (आ + रभ्)
३·१·८९
राव–(रञ्जय्) २·४·९६
रिग्ग–(प्र + विश्) ३·१·९९
रिड–(मण्डय्) ३·१·६१
रिर–(राज्) ३·१·५७
रिह–(राज्) ३·१·५७; (प्र + विश्)
३·१·९९
रुञ्ज–(रु) ३·१·३३
रुण्ट–(रु) ३·१·३३
रेअव–(मुच्) ३·१·४१
रेह–(राज्) ३·१ ५७
रोञ्च–(पिष्) ३·१·१०२
रोसाण–(मृज्) ३·१·४८

ल

लिक्क–(नि + ली) ३·१·८
लिम्प–(लिप्) २·४·१४३
लिस–(स्वप्) ३·१·८७
लुक्क–(नि + ली) ३·१·८; (तुड्)
३·१·६२
लुढ–(स्मृ) ३·१·१२
लुञ्छ–(मृज्) ३·१·४८
लुह–(मृज्) ३·१·४८
लूर–(छिद्) ३·१·६७
लोट्ट–(स्वप्) ३·१·८७
ल्हस–(स्रंस्) ३·१·११६
ल्हिक्क–(नि + ली) ३·१·८

व

वअल्ल–(प्र + सृ) ३·१·१०
वग्गाल–(रोमन्थय्) २·४·१०७
वच्च–(कांक्ष्) ३·१·१०७
वच्छड्ड–(गम्) ३·१·९७
वज्ज–(त्रस्) ३·१·११९; (अप.)–
(व्रज्) ३·४·६०
वज्जर–(कथ्) ३·१·६९
वडअ–(गम्) ३·१·९७
वम्फ–(वल्) ३·१·१०३
वमाल–(पुञ्ज्) ३·१·५३
वरहाड–(निस् + सृ) ३·१·१४
वरिअल–(गम्) ३·१·९७
वरिअल्ल–(गम्) ३·१·९७
वल–(आ + रोपय्) २·४·१०४;
(निर् + पद्) ३·१·७५
वलग्ग–(आ + रुह्) ३·१·१२८
वसुआ–(उद् + वा) ३·१·३२
वा–(म्लै) ३·१·१९

वापम्फ–(श्रमं कृ) ३·१·२३
वास–(अव + कास्) २·४·१५५
वाह–(अव + गाह्) ३·१·१३०
वाहिप्प–(वि + आ + हृ) २·४·८६
विउड–(नाशय्) २·४·१०३
विक्के–(वि + क्री) २·४·१२३
विच्छोल–(कम्पय्) २·४·१०६
विडव–(अर्जय्) ३·१·५५
विडविड्ड–(रच्) ३·१·४३
विढप्प–(अर्जय्-भावकर्मणि) २·४·८२
विप्पगाल–(नाशय्) २·४·१०३
विम्हर–(स्मृ) ३·१·१२
विर–(भञ्ज्) ३·१·४९; (गुप्) ३·१·८२
विरमाल–(प्रति + ईक्ष्) ३·१·११५
विरल्ल–(तन्) ३·१·७४
विरा–(वि + ली) ३·१·७
विराअ–(वि + ली) ३·१·७
विरोल–(मन्थ्) ३·१·६३
विसट्ट–(दल्) ३·१·११८
विसूर–(खिद्) ३·१·७३
विहिर–(प्रति + ईक्ष्) ३·१·११५
विहोड–(ताडय्) २·४·११८
वीसर–(वि + स्मृ) २·४·१२८
वेअड–(खच्) ३·१·३९
वेमअ–(भञ्ज्) ३·१·४९
वेलव–(वञ्च्) ३·१·४७; (उप + आ + लभ्) ३·१·८३
वेल्ल–(रम्) ३·१·९१
वेहव–(वञ्च्) ३·१·४७
वोक्क–(वि + ज्ञापय्) २·४·१११; (वि + आ + हृ) ३·१·३४
वोज्ज–(वीज्) ३·१·१२०; (त्रस्) ३·१·१२०
वोल–(गम्) ३·१·९७
वोसग्ग–(वि + कस्) ३·१·१२५

स

सक्खुड्ड–(रम्) ३·१·९१
सग्घ–(कथ्) ३·१·६९
सच्चव–(दृश्) २·४·१५३
सद्दह–(श्रद् + धा) २·४·१३१
समाण–(भुज्) २·४·१३७; (सम् + आप्) ३·१·७७
समार–(सम् + आ + रच्) ३·१·४४
सलाह–(श्लाघ्) २·४·१३४
सह–(राज्) ३·१·५७
संतुम–(छादय्) २·४·११०
संदाण–(अवष्टम्भं कृ) ३·१·२४
संधुक्क–(प्र + दीप्) ३·१·८५
संधुम–(प्र + दीप्) ३·१·८५
संभाव–(लुभ्) ३·१·९३
संनाम–(आ + दृ) ३·१·३५
साअड्ढ–(कृष्) ३·१·१०९
सामअ–(प्रति + ईक्ष्) ३·१·११५
सामग्ग–(श्लिष्) ३·१·१२६
सार–(प्र + हृ) ३·१·९
सारव–(सम् + आ + रच्) ३·१·४४
सास–(कथ्) ३·१·६९
साह–(कथ्) ३·१·६९
साहट्ट–(सम् + वृ) ३·१·३०
साहर–(सम् + वृ) ३·१·३०
सिञ्च–(सिच्) ३·१·४२
सिप्प–(सिच्) ३·१·४२; (सिच्; स्निह्) २·४·८५

सिह–(स्पृह्) २·४·९२; (कांक्ष्) ३·१·१०७
सुमर–(स्मृ) ३·१·१२
सूड–(भञ्ज्) ३·१·४९
सूर–(भञ्ज्) ३·१·४९
सेह–(नश्) ३·१·१०८
सोल्ल–(क्षिप्) ३·१·७९; (पच्) ३·१·३८

ह

हक्क–(नि + सिध्) ३·१·७१
हक्खुव–(उद् + क्षिप्) ३·१·८०
हण–(श्रु) ३·१·१८
हर–(ग्रह्) २·४·१५७; (स्मृ) ३·१·१२
हल–(स्मृ) ३·१·१२
हव–(भू) ३·१·१
हारव–(नाशय्) २·४·१०३
हुप्प–(प्र + भू) ३·१·३
हुल–(क्षिप्) ३·१·७९; (मृज्) ३·१·४८
हुल्ल–(लक्ष्यात् स्खल्) ३·१·१२९
हुव–(भू) ३·१·१
हो–(भू) ३·१·१

सप्तमं परिशिष्टम्

भरतमुनिनिबद्धं प्राकृतभाषाणां स्वरूपम्

[१७. ७-२५; ५९-६३]

एओआरपराणिअ अंआरपरं च* पाअए णत्थि।
वसआरमज्झिमाणि अ कचवग्गतवग्गणिहणाई ॥ ७ ॥
वच्चंति कगतदयवा लोपं, अत्थं च से वहंति सरा।
खघथधभा उण हत्तं उवेंति अत्थं अमुंचंता ॥ ८ ॥
उप्परहुत्तरआरो हेट्ठाहुत्तो* अ पाअए णत्थि।
मोत्तूण भद्दवोद्दहपद्दहृद्दचन्द्दधा*ईसु* ॥ ९ ॥
खघथधभाण हआरो मुहमेहकहावहूपहूएसु।
कगतदयवाण णिच्चं बीयम्मि ठिओ सरो होइ ॥ १० ॥
छ इति षकारो नित्यं बोद्धव्यः षट्पदादियोगेषु।
किलशब्दान्त्यो रेफो भवति तथा खु त्ति खलुशब्दः ॥ ११ ॥
ड इति च भवति टकारो भटकटककुटीतटाद्येषु।
सत्वं च भवति शषयोः सर्वत्र, यथा विसं संका ॥ १२ ॥
अस्पष्टश्च दकारो भवत्यनादौ तकार इतराद्यः।
व*डवातडागतुल्यो भवति डकारोऽपि च ल*कारः ॥ १३ ॥
[व*धमधुशब्दे च तथा धकारवर्णो हकारतां याति।
शठपाठपीठिकादिषु ठकार]वर्णोऽपि ढत्वमुपयाति।
सर्वत्र च प्रयोगे भवति नकारोऽपि च णकारः ॥ १४ ॥
आपानं आवाणं भवति पकारेण वत्वयुक्तेन।
अयथातथादिकेषु तु थ*कारवर्णो व्रजति धत्वम् ॥ १५ ॥
परुषं फरुसं विद्यात्पकारवर्णोऽपि फत्वमुपयाति।
यस्तु मृतः सोऽपि मओ, यश्च मृगः सोऽपि हि तथैव ॥ १६ ॥
ओकारत्वं गच्छेदौकारश्चौषधादिषु नियुक्तः।
प्रचलाचिराचलादिषु भवति चकारोऽपि तु यकारः ॥ १७ ॥
अपरस्परनिष्पन्ना ह्येवं प्राकृतसमाश्रया वर्णाः।
संयुक्तानां तु पुनर्वक्ष्ये परिवृत्तिसंयोगम् ॥ १८ ॥

The * mark indicates that the text printed in GOS edition has been emended by me.

श्चप्सत्सथ्याः छ इति तथा भ्यह्यध्या भवन्ति तु झकाराः ।
ष्टः ठः, स्तः त्थः, ष्मो म्हः, क्ष्णो ण्हः*, ष्णो ण्हः, क्षः खकाररूपोऽपि ॥१९॥

आश्चर्यं अच्छरिअं, निश्चयमिच्छन्ति णिच्छयं च त*था ।
वत्सं वच्छं च त*था अप्सरसं तद्वदच्छरअं ॥ २० ॥

उत्साहो उच्छाहो पथ्यं पच्छं च विज्ञेयम् ।
तुभ्यं तुज्झं मह्यं मज्झं विन्ध्यश्च भवति विंझो त्ति ॥ २१ ॥

दष्टो दट्ठो त्ति तहा हस्तोऽपि च भवति हत्थो त्ति ।
ग्रीष्मो गिम्हो त्ति तथा श्लक्ष्णं सण्हं सदा तु विज्ञेयम् ॥ २२ ॥

उष्णं उण्हं यक्षो जक्खो पल्लंको* भवति पर्यङ्कः* ।
विपरीतं ह्मयोगे ब्रह्मादौ स्याद् बृहस्पतौ फत्वम् ॥ २३ ॥

यक्षो भवति च जक्खो भीष्मो भिम्हो त्ति विज्ञेयः ।
उपरिगतोऽधस्ताद्वा भवेत्ककारादिकस्तु यो वर्णः ।
स हि संयोगविहीनः शुद्धः कार्यः प्रयोगेऽस्मिन् ॥ २४ ॥

[एवमेतन्मया प्रोक्तं किंचित्प्राकृतलक्षणम् ।
शेषं देशीप्रसिद्धं च ज्ञेयं विप्राः प्रयोगतः ॥ २५ ॥]

× × ×

गङ्गासागरमध्ये तु ये देशाः संप्रकीर्तिताः ।
एकारबहुलां भाषां तेषु तज्ज्ञः प्रयोजयेत् ॥ ५९ ॥

विन्ध्यसागरमध्ये तु ये देशाः श्रु(स्थि ?)तिमागताः ।
नकारबहुलां तेषु भाषां तज्ज्ञः प्रयोजयेत् ॥ ६० ॥

सुराष्ट्रावन्तिदेशेषु वेत्रवत्युत्तरेषु च ।
ये देशास्तेषु कुर्वीत चकारप्रायसंश्रयाम् ॥ ६१ ॥

हिमवत्सिन्धुसौवीरान् ये जनाः समुपाश्रिताः ।
उकारबहुलां तज्ज्ञस्तेषु भाषां प्रयोजयेत् ॥ ६२ ॥

चर्मण्वतीनदीतीरे ये चार्बुदसमाश्रयाः ।
ओकारबहुलां नित्यं तेषु भाषां प्रयोजयेत् ॥ ६३ ॥

Above is the text in Bharata's Nāṭyaśāstra (XVII, 7–25; 59–63) on the principal Prakrit and on some characteristics of its dialects. I give below the description of the Prakrit language as found there.

Vowels—The following vowels are not found in Prakrits, viz., ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ऐ, औ and विसर्ग.

Consonants—The following consonants are not found in Prakrits, viz., ङ, ञ, न, श, ष.

Treatment of single (and non-initial or medial?) consonants:

(1) Non-initial क, ग, त, द, य and व lose their vocalic element, the vowel left carrying the sense of the word.

(2) Non-initial ख, घ, थ, ध and भ are changed to ह.

Illustrations of (2) मुख = मुह; मेघ = मेह; कथा = कहा; वधू = वहू; and प्रभूत = पहूअ.

(3) ष (initial) is changed to छ; षट्पद् = छप्पअ.

(4) ट (non-initial) is changed to ड; भट = भड; कटक = कडअ; कुटी = कुडी and तट = तड.

(5) श and ष (initial as well as non-initial) are changed to स; विष = विस; शङ्का = संका.

(6) ठ changed to ढ; शठ = सढ; पाठ = पाढ; पीठ = पीढ.

(7) न (initial as well as non-initial) is changed to ण everywhere.

(8) प (non-initial) is changed to व; आपान = आवाण.

(9) ड (non-initial) is changed to ल; वडवा = वलवा; तडाग = तलाअ.

(10) च (non-initial) is changed to य; प्रचल = पयल; अचिर = अइर; अचल = अयल.

(11) Non-initial द becomes soft and pronounced with a light vocalic sound (अस्पष्ट or लघुप्रयत्न, corresponding to लघुप्रयत्नतरयश्रुति of Hemacandra).

(12) Miscellaneous words : किल = किर; खलु = खु; यथा = जधा; तथा = तधा; परुष = फरुस; मृत or मृग = मअ; औषध = ओसह.

Treatment of conjunct consonants:

(1) रेफ as first or second member of a conjunct consonant is not found in Prakrits except in the following words : भद्र, वोद्रह, ह्रद, ग्रह, चन्द्र and धात्री.

(2) श्च = छ; आश्चर्य = अच्छरिअ; निश्चय = निच्छअ.

(3) प्स = छ; अप्सरस् = अच्छरा.

(4) त्स = छ; उत्साह = उच्छाह.

(5) थ्य = छ; पथ्य = पच्छ.

(6) र्य = ज्ज ; तुर्यं = तुज्जं.
(7) ह्य = ज्झ ; मह्यं = मज्झं.
(8) ध्य = झ ; विन्ध्य = विंझ.
(9) ष्ट = ट्ठ ; दष्ट = दट्ठ.
(10) स्त = त्थ ; हस्त = हत्थ.
(11) ष्म = म्ह ; ग्रीष्म = गिम्ह.
(12) क्ष्ण = ण्ह ; श्लक्ष्ण = सण्ह.
(13) ष्ण = ण्ह ; उष्ण = उण्ह.
(14) क्ष = क्ख ; यक्ष = जक्ख.
(15) ह्म = म्ह ; ब्रह्मा = बम्हा.
(16) र्य = ल्ल ; पर्यङ्क = पल्लंक.
(17) स्प = प्फ ; बृहस्पति = बहप्फइ.
(18) ज्ञ = ञ्ञ ; यज्ञ = जञ्ञ.
(19) ष्म = म्ह ; भीष्म = भिम्ह.
(20) क्र or र्क = क्क ; अर्क = अक्क ; शक्र = सक्क.

At the end of the treatment of Prakrit Grammar, a manuscript of Bharata's Nāṭyaśāstra adds :

एवमेतन्मया प्रोक्तं किंचित्प्राकृतलक्षणम् ।
शेषं देशीप्रसिद्धं च ज्ञेयं विप्राः प्रयोगतः ॥

In stanzas 59–63 of the same adhyāya, Bharata states certain dialectal peculiarities of the Deśabhāṣās which deserve notice :

(1) ए (at the end of a masculine noun in Nom. case?) is found in regions between गङ्गा and सागर (Magadha?).

(2) उ (as above) is found in regions of हिमवान् and सिन्धुसौवीर (a characteristic of Apabhraṃśa?).

(3) ओ (as above) is found in the regions चर्मण्वती and अर्बुद mountains (a characteristic of Śaurasenī?).

(4) न is found in place of ण in regions between विन्ध्य and सागर (a characteristic of Paiśācī?).

(5) च (a clear palatal sound?) is found in regions like सौराष्ट्र, अवन्ती and river वेत्रवती (a characteristic of the influence of Prācyā or Paiśācī?).

त्रुटिशोधनम्

[प्राधान्येन त्रिविक्रमप्राकृतशब्दानुशासनस्था एव त्रुटयोऽत्र निर्दिष्टाः ।]

पृष्ठम्	सूत्रम्	अशुद्धम्	शुद्धम्
१४	१·१·४७	अङ्गणं । अंगणं	अङ्गणं अंगणं
१४	१·१·४७	अन्तरं अन्तरं	अन्तरं अंतरं
५७	१·३·६३	भिसिन्यां भः	बिसिन्यां भः
६२	१·३·८८ (टि)	M T पच्चूसो	M. T पच्छूसो
,,	१·३·८९	ण्ह फोः	ण्हः फोः
७९	१·४·५२	वश्च विह्वले	भश्च विह्वले
९१	१·४·१०१	किलितं	किलिन्तं
९२	१·४·१०७	स्नुष्ने रात्	स्नुष्ने रात्
९२	१·४·१०७	स्नुघ्ने संयु°	स्नुष्ने संयु°
१००	पुष्पिका	प्रथमोध्यायस्य	प्रथमाध्यायस्य
१०२	२·१·३	°डित्तिलएहहम्	°डित्तिलडेहहम्
१२९	२·२·२९	श्नुगनपि सोः	श्लुगनपि सोः
१४५	२·३·१२	°दितुइए ङसा	°दितितुइए ङसा
१७५	२·४·१०४	वल आरोपे	वल आरोपेः
१६१	२·४·४२	घूर्णेघुम्म°	घूर्णेर्घुम्म°
१९४	३·१·५४	कम्मवमुपभुजि	कम्मवमुपभुजिः
२०७	(४६)	णिव्वूठो	(४६) णिव्वूढो
२५३	३·३·३२	तदन्तणाम्नः	तदन्ताणाम्नः
२८२	३·४·२०	स्त्रियां केर्हि	स्त्रियां केर्हिं

पृष्ठम्	सूत्रम्	अशुद्धम्	शुद्धम्
२८४	३·४·२३	सुन्दरसर्वाङ्गयो	सुन्दरसर्वाङ्गीः
२८७	३·४·३०	परस्य ङसो	परस्य ङ्सो
३०१	३·४·६४	चुड्डुलउ	चूड्डुलउ
३२०	(४०२)	(४०१)	(४०२)
३४९	९७	°विलया:	°विलआ:
३६०	४२	°क्यङोर्यस्तु	क्यङोर्यस्य तु
३७२	४५	६२७	२२७
३७५	१८	२८२	२८१

वीर सेवा मन्दिर
पुस्तकालय
काल नं० 2~~4~~ 2 2
~~1~~ ~~1~~ 171 वैद्य
लेखक Vaidya, P.L.
शीर्षक Prakrit Grammar of Trivikra